



श्री सहस्रनामः

# ॥ रत्नसमुच्चय ॥

श्री सरस्वतीयानन्दानन्द, जयपुर

## ॥ रायविलास ॥

संग्रहकर्ता श्रीताभुजीमहाराज,

पोत्र

उपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः

श्रीरामलालजी रुद्धिसारजीगणिः

—ॐॐॐॐ—

छायाके प्रगट कर्ता.

शिष्य पं। क्षेमचंद्र चि। पेमचंद्र चि। अमरचंद्र

(इसका सर्व एक इन तीनोंका है)

पुस्तक मिलणेका ठिकाणा

श्रीरानेर महा व्यासरे पास पं। क्षेमचंद्र मुनिः

चि। पेमचंद्र अमरचंद्र विद्यागान्ध.

मुंबई विचले भोईवाडे धीचिंतामणजीक

मंदिर मेरुता पास

संग १९६० दिनि वामो नुदी ५-तने १९०१

ज्ञानि मुषाकर प्रेम-मुंबई.



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मुंबई पायथोनी पास शान्ति सुधाकर प्रेसमें

चीमनलाल सांकलचंद मारफतीयाने

मुद्रित कीया.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

## ॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

### ॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजगन्नाथस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रज्ञवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशार्ङ्गचक्रवर्तिः, तत्पट्टे ६ श्रीयशोचक्रवर्तिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंज्ञतविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीज्ञानाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीधूलचक्रवर्तिः, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहस्तिस्वरजी ज्ञये सो वीरजगवानसे १३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवन्तीसुकमालकू प्रतिबोधके धर्मका बहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रौरु सूरिमंत्रका जाप कीया तवसे कोटिकगच्छ प्रसिद्ध ज्ञया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वघर बने प्रज्ञावीक विद्यासिद्ध ज्ञये इनोसे वज्रशाखा प्रसिद्ध जई, तेसेइ १८ पट्टपर श्रीजिनचंद्रसूरी हुये इनोसे चंद्रकुल प्रसिद्ध ज्ञया, इस तरे पट्टानुपाट जगवानसे ३८ में श्रीउद्योतनसूरिः ज्ञये सो एक तो निजशिष्य उर इसरा साधुजके ८३ अपने विद्यार्थी शिष्योको आचार्यपद दिया तवसे ८४ गच्छ ज्ञया, यह ८४ गच्छोके आचार्य बने प्रज्ञावीक धर्मोद्योतक जए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाठधारी आबूजीतीर्थ प्रगटकर्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः ज्ञये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः ज्ञये सो अणदलपुरपट्टणमें डर्लजराजाकी सन्नामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटणके राजाने खरतर विरुद्ध दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके ऊ लज्जलायमान । अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जिसमें खर कहीये बने कठोर इस वास्ते खरतर विरुद्ध पाया,

कोटिकगञ्ज वज्रशाखा चंडकुल खरतर विरुद्ध एसें ४ जेद नवदी  
 कित शिष्यकूं कहणा सरू जया, इनोके ४१ में पट्ट दिल्लीके बाद  
 साह प्रतिबोधक जीवहिंसा तुभाणेवाले श्रीमालमहतिषाण गोत्र  
 प्रतिबोधक श्रीजिनचंडसूरिजी जये, फेर इनोके पट्ट ४२ में इनोके  
 लघुभ्राता श्रीस्थंजणातीर्थ नर नवांगवृत्ति प्रगटकर्त्ता श्रीअन्नयदेव  
 सूरिः जये, तत्पट्टे ४३ में अठारे हजार वागनीश्रावक प्रतिबोधक  
 श्रीजिनवल्लभसूरिः युगप्रधान जये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रज्ञावीक  
 युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिः जये जिनों चितोर नर उज्जयणी  
 वज्रखंजसे साठीतीन कोटी विद्यान्नायकी पुस्तक निकालके साध  
 कर बावनवार चोसठ योगणी एक लाख तीस हजार घर राजन्य  
 वंशीयोंको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर नसवाल बणाया, उस  
 वखत तीनसे गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारी लूणिया राखेचा  
 सावणसुखा ठाजेरु इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इस वखत  
 सातसे करीब होगये हे, वह गुरूका गुण लिख नहीं सकते, वह  
 आज तक बने दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध हे, तत्पट्टे ४५  
 में मणीधारी दिल्लीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दि-  
 खलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंडसूरिः जये जिनों  
 का दिल्लीके जरबजारमें दाग जया वना चमत्कार देख बादसाहा-  
 दिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी जये, अनुक्रमे  
 ५० में पट्टपर महाप्रज्ञावीक कुशलसूरिःजी जये, सो आचार्यपद  
 पायके बावनवीर चोसठयोगणीकूं वसकर संघमें बनेर उपगार  
 किये, गूजरमल बोधरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पंखीरूप  
 सें उहां जाकर दरियावमें तिराई एसें परमोपकारी अंतमें फागुण  
 वदि अमावशकों स्वर्गवाश जये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्र-  
 गट होय प्रथम दर्शण दिया, तिसपीठे जक्तजोकोका उपगार

जगत् करणे लगे इस वास्ते श्रीसंबने अपने आचार्यको इष्टैव समझके सर्व नगर गाममें चरणमूर्ति स्तूत्र स्थापन कर दादा जीके नामसे वंदन पूजन करणे लगे, सर्व जगे दादागुरुका जश प्रख्यात जया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी जये, इनोके पाटानुपाट ६१ में श्रीजिनचंद्रसूरि जये, जिनोने अकबर बादशाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका वताणा इत्यादि दिखाकर अमारि बुद्धोपणा फिरवाई, सर्व वेपधारियोंकी हिंजुस्थानमें रक्षा करवाई, क्रियाबुद्धार कर पतितोंको गंडा गह्वकी व्यवस्था करमचंद्र चठावतकी वीनतीसे सर्व समवानुमार बांधी, इनोके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरि, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिन राजसूरि, इनोके समयमें आचार्य गह्व सागरचंद्रसूरिसे जया, इनोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरि, इनोके समय रंगविजयसूरिसे रंगविजय गह्व जया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंद्रसूरि, इनोके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तरपट्टे ६७ में श्रीजिनजक्तिसूरजी जये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनलाजसूरजी जये, इनोके पट्ट ६९ में श्रीजिनचंद्रसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनहर्षसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौजाग्यसूरिजी जये, इनोके समयमें महेंद्रसूरिजीसे मंजोवरागह्व जया, इनोके ७२ में पट्ट श्रीजिनहंससूरिजी जये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरि जये, इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्तिसूरिजी वर्त्तमान विजयराज्यै ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्त्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिव श्रीजिनकुशलसूरिः महाराजके शिष्य महोपाध्याय श्रीकैमकीर्तिगणिः जीने-जं । यु । प्र । ज । श्रीजिनपद्मसूरिः जीके वखतमें साधुलोक आचार्यमहाराजके पासमें बहोत थामे रहे नर वनेर ज्ञानवंत क्रियावंतों नर जगे चतु-

मांस करणें जेजेगये, थोमे वहोत रहेथे सो ज्ञी गोचरी अंनिल्ल  
 जूमी बलेगयेथे उस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी  
 ही बैठेथे, श्रीजीका अंनिलजूमिका हाथ धुलाणेकूं उठै, अपने वि-  
 द्यापाठकजीका एसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप  
 विराजो समयका वमा अपरवलीपणा हे सो गठमें साधू वहोत  
 कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे उठे, दादासाहिबके वखत  
 कैसेर ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसेर पंक्ति वि-  
 द्यमान थे, अब यह गठ किसदशाकूं पोहचा हे, थोमा समुदाय,  
 जिसमें सुपात्र तो वहोतही थोमे हैं, तब उपाध्यायजीने कहा म-  
 हाराज यह वृहज्ज खरतरमें किसी बातकी कमी नही रहेगी  
 अज्ञी गुरुदेवकी कृपासें यतीर होजायगें, एसा कह दादासाहि-  
 बका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे,  
 गुरुके ध्यानमें लीन जये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह क-  
 रणेकूं जारहीथी, साधूमुनिराजकूं बैठे देख पाशमें आके वंदन  
 नमस्कार कर गुरुके सन्मुख बैठ गये, श्रीउपाध्यायजीने शांतरज्ञ  
 का ज्ञरा वैराग्यमई उपदेश दिया सो उन पांचसें राजपूतोंने वि-  
 वाहकी वांग ठोम दीक्षा ली, दादासाहिबने देवशक्तीसें सबोको  
 धर्मोपगरण वेष दिया, इन सबोको लेकर श्रीआचार्य पास आये,  
 सूरिश्वरने कहा, हेमाजी, धामकीधाम लेआये, उपाध्यायजीने  
 कहा तथास्तु, मेरे शंतानी हेमधाम नामहीसे प्रसिद्ध रहे,  
 उस दिनसें वृहत्साखा हेमधाम विस्तारजावकूं प्राप्त जई.  
 यह साखाकी उत्पत्ती संवत् विक्रम तेरेसेंमें सीवाणची  
 देशमें जई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध  
 हे, इस साखामें बनेष विद्वान होते चलेआये जिनोके बनाये  
 अनेक प्रकारण काव्य न्याय टीका वगैरह विद्यमान हे, उस शाखा

मैत्रपाध्याय श्रीनैममूर्तिजीज्ञप्तिः तत् शिष्यः ३ । श्रीहेममालि  
कजीज्ञप्तिः तत् शिष्यः । पंमित प्रवर श्रीविनयन्नद्रजिज्ञप्तिः तत्  
शिष्यः श्रीपं । प्र । लब्धिहर्षजिज्ञप्तिः तत् शिष्यः पं । प्र । श्रीधर्म  
शीलजिज्ञप्तिः (श्रीसाधूजी) तच्छिष्यः पं । प्र । श्रीकुशलनिधानजि  
ज्ञप्तिः तद्विषयोपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीरुदिसारगणजिह्वसंगृहीतः  
रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविलास तद्विष्यः पं । प्र । हमासौजाग्यमुनिः  
चि । पेमचंद्र चि । अमरचंद्रकी तरफसे यह ग्रंथ सब जीवोंके उ-  
पगारार्थ पढनेके उपाया । श्रीवीकानेरमें सं । १९९९ की ज्येष्ठ  
वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ  
स्थापन करी हे इसमें मदत देणेवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीका-  
नेरमें दिया ॥

- ४१ रु । श्रीनम्रसेठजी चांदमलजी ढढां.  
११ रु । श्रीमगनमलजी मंगलचंद्रजी जावक.  
११ रु । श्रीसदारामजी गोलठा.  
११ रु । मानमलजी केसरीचंद्रजी साम.  
११ रु । श्रीचूनीलालजी गोलठा.  
१० रु । श्रीराजरूपजी देवचंद्रजी नाहटा.  
७ रु । श्रीआसकरणजी वरढिया.  
११ रु । श्रीवादरमलजी जसकरणजी रामपुरिया.  
११ रु । श्रीतिरदारमलजी तातेर.  
२५ रु । श्रीबालचंद्र कनीराम आज्ञरु मुमईवाला.  
३ रु । श्रीवठराजजी नाहटा.

आगे जो विवेकी श्रावक इस पाठशालाके मदत देंगे तो  
ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगे, जतीलोकोंके केशवक शिष्य जैनपं  
मित तत्वज्ञानी वष जायेंगे, जैनउपदेशक बधेगें, जे जो नही पं

हते हैं उनको हरतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढ़ाणेकें उद्यमवंत  
 करणा यह काम श्रावक सातपिता नर गुरुलोकका हे, इस नही  
 पढ़ाणेके सबब जैनके ज्ञेपधारी नर ज्ञेपधारणीयां अनेक कुर्मोंके  
 वश नरकके पात्र नर धर्मकूं लजाते हे, क्यों की दशवी-  
 कालके सूत्रमें लिखा हे ( ॥ सूत्रं पढमं नाणं तउ दया ॥ ) पढ़-  
 ती सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीठै दया पाव सकता हे ॥ ज्ञा-  
 नीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजै गृहस्थ एसा  
 कहते हैं हमारे ज्ञावे विगमे तो क्या नर सुधरे तो क्या, हय नतो  
 इनोंको गुरुकरके मानेमें न अन्नवस्त्र देंगे, देंगेतो मानरहित कंग-  
 लोकी तरे ॥ हम पढ़ाणेकी क्यों कोसीस करें ॥ उत्तर ॥ यह स-  
 मजसे तो जैनधर्म अभावश चंडताकूं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसे  
 जैनधर्मसे पूनमचंद्रता कसे उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेक विलाशादि  
 श्रावकाचार ग्रंथोंमें एसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें ध-  
 र्मसें जृष्टज्ञये धर्माचार्यकूं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो वदला ऊतरे,  
 दस बीस आदमी एकठे होकर निंदा करणेसें विगारका सुधार नही  
 होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जम विद्यावृद्धि हे, स्वज्ञाव कोई  
 किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चै हे, तथापि कारणसें  
 कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढ़णा हे कार्य सो अठी क्रिया चोथा  
 पांचला ठा सातमा गुणठाणा चढाेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास  
 करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोका हे सो विचारणा  
 प्रश्न । हम जतियोंको धर्माचार्य नही मानते ? ॥ उत्तर ॥ कोइ  
 कतग्री अपणे पितासे पिताजाव न रक्के तो उसका क्या कोइ कर  
 सकता हे लेकिन संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, ए-  
 सेइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोश्वालादि जैनवर्गके धर्माचार्य  
 तो जतीही हे, जतियोंसें पढते हैं, धर्म सुणते हे सामायक पोसा

पद्मिकमणा करते हैं, मंदिरोंमें गायन पूजा चोपी आदि वाचते हैं यह तो चलता उपगार है, उर जतियोंके वनेरोंने तुमारे वनेरोंको चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया है, यह उपगार सबसे वना है. ॥ प्रश्न ॥ एसोंको तो हम मानते है लेकिन सुशाणे पढाणेवाले तो कम उर धर्म लजाणेवाले बहोत जिनोको कैसे माने? ॥ उत्तर ॥ सच्च है, इस वातका निर्णय हमने आगे लिखा है सो वांचो, एक श्रावककी ॥ प्रश्न ॥ - जतीलोक चेला क्यों करते हैं इनोसे यथार्थ धर्म पलता नही? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ धर्म तो यथाख्यात चारित्रकूं कहा है सो तो वज्ररूपजनाराच संहरण विन्नेद होतेइ गया, सामायक वेदोपस्थापनी यह दोष रहा, जिसमें जी उत्सर्ग उर अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग सूत्रोंमें वांचणे योग्य ठहरगया, आपसमें कषायकी चोकनीका वरतावा देखके मध्यस्थ हो के रहे, आरंभत्यागकी हमेसां बुद्धि रहे पंचमकालमें बोही साधु है, जतियोंके चेला बशाणेमें इतना फारदा है—मिष्यात्वकुलसे जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रमका पाप ज्ञानपढे बाद आपसेही ठोरुदेणा, केश्यक इनोमें चोथा पांचमा ठठा सातमादि गुणठाणे चढणा, श्रावगवर्गका इस जव परजव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाज परजावकूं सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थकर गोत्रकर्म वांचता है, थोमेमें विचारणा ॥ प्रश्न—जिनोकूं पढाया नही उर गुरुमरे बाद गुरुके कमाये धनसे पापारंभ करे तो वह पाप चेलेका गुरुकूं जरूर लगे या नही? उत्तर—जिस मातापिताने मरणके वखत सर्व परिग्रह बोसिराय दिया उनोको पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारंभ सो करणेवालेकूं लगेगा, मातापिताकूं नही, यह जैनधर्मका



मर्म है, मातापिता गुरु शुभ्र अनुष्ठान सिखलाते हे संतान वेसा करे तो जरूर शुभ्रफल मिले, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सिखलाते नही इस वास्ते करै करावै अनुमोदे जसकूं पाप लगे ॥

बोकानेर वडे उपासरे पास जैनविद्याशालामें उ० । श्रीराम-  
लालजीगणिः पं । क्षेमचंदजी मुनि पास इतनी पुस्तकें मिलेगी.

	रु.	आ.
रत्नसमुच्चय	५	०
सौख्येचाणक्य स्वरोदय ज्ञाषा	१	०
ब. अरुणावतीस। दादासाहिबपूजा	०	४
मू. तिर्मंगलका अदत्तुत ग्रंथ सिद्धमूर्ति०	०	५
सर्व पूजामहोदधि खस्तरगह्व तपगह्वकी	४	०
आ. कव्यवहारालंकार	१	५

## विज्ञापन.

॥ अथ वर्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवन्त रूपवन्त नर-विद्यावन्त सुशी-  
लही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्ष-  
णवाला दूसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसँही होणा,  
फेर हमेंसा शास्त्राज्यासी होणा, बहोत प्रमादवन्त नहीं होणा, देश  
क्षेत्र काल जाव मुजब सदा गच्छी सारसंज्ञालसँ जैनधर्मके दीप-  
क होणा, वेजा चलणसँ यतीयोंकों दृढकणा, उनोंके मन मुजब  
नही चलणे देणा, लांगित पुरुषकी संगत नही करणी, उन्नय  
काल प्रतिक्रमण करणा, अन्नदकके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य  
जाप करणा, देवदर्शन नर आपनाचार्यादि पन्डितेहण करणा, जती  
जतणीकू शुद्ध परंपरागम वेप नर संघ तारीफ करे एसे मार्गमें  
प्रवर्त्तणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकू गणादही करणा,  
स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अथै सुशील पन्डितो  
की सोदबत करणी, क्लमावन्त नी होणा, समय नी सोचणा, उ-  
पदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य नर  
पन्डितकू देणा, स्वार्थके वश मूर्ख नर अयोज्ञ नर बुद्धिहीन अव-  
स्थावृद्ध कलहकारकू न देणा, अपणे२ गच्छके अधिष्टायक क्षेत्रपा-  
ल मानज्ज्रादिकके साहायसँ धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रा-  
दिक विद्या लब्धिलसँ संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रज्ञावीक  
होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोंके पढने नर पढाणेवाले होणा,  
बुद्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

आदि तपके कर्ता, शिष्यादि वर्गकें सुविहित मार्गमें चलाणा, गठ के धोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुभ अनुष्ठानके कर्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्तमान त्यागीसाधुओंके कर्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोके जंमार नहीं हे उहां पुस्तक लिखवाके जंमार करवाणा, अपनी निश्रयें हजारो रुपके पुस्तक लिखवाके श्रावकों पास लेणा यह साधुलंका धर्म नही, फकत अपनेसें उठे उर नित्य पढिलेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वांचनेकुं चहीये तो ज्ञानजंमारसें लेकर पीठा देणा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिसर वस्तुकी आवश्यकता होय सो उहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रत करवादेणा, अथवा दुसरे क्षेत्रोके समर्थ श्रावकोंसे करवाके जेजादेणा, गृहस्थोंसें वैयावच्च कराणी नही, ठती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, जंघाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंक्तोंहींसे तो पहली ज्ञान पढे उर फेर कृतघ्नी होकर उनही की पीठी हीलणा उर निंदा करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्षक उर बीजभूत जतीही हे क्योंकी जतियोंकेही प्रतिबोधक लसवाल पोरवाल उर श्रीमात्वादि श्रावक हैं, फेर इन जतियोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस परुते समयमेंनी होतेआए हे, तपा सत्यविजयजी जिनके संतानमें बूटे-रायजी उर आत्मारामजी वगरे जये हे, खरतर अमृतधर्मजी उपाध्यायजी कृमाकड्याणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगरे जये हैं उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणदावजी किरपाचंदजी ज्ञायचंदजी

वगेरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीनोंकी जन्म इन पुरुषोंके जतीही हे इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोकी खाण हे, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीजी प्रमादी उद्ये गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते हे उर आजकलके साधूजी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्त्ती हे इस वास्ते केइयक तो गंते दीप लगाते हे केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोमें जाव करके पंचम गुणघाणी हे केइयक चतुर्थ गुणघाणी, इसी तरे साधुंके मुजबदी शुभ जावसंयुक्त जतियोके जाव आश्री गुणघाणा समजणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीजगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुभ बलवान हे, लोचादि कायकेस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे, देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कपायकी बहुलता आजकल साधुंमें ज्यादा देखणेमें आता हे, गणेशवालोंने आपसमें द्वेष रखते हे, खरतर तथा तपोके जी देखणेमें आता हे, जब कपाय विद्यमान हे तो सिद्धिपद केलें सभेगा बलीहारी उनहींकी हे जिनोंके कपायकी चोकनी त्यागी हे. किं बहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मण वणिक् राजपूत जाट वगेरे उत्तम जाती का चेला तीन चार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेणा यावत् वारे वर्ष तकका उपरांत ऊमरवाला पढता नही उर बहोत गेटा लेणेसें धाय रखणी होती हे उसकी पालगेट करणेकूं तब बहोतसे कमजात अणणी एवकूं विपाणेकूं निंदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूंसें बात नही निकालते मूर्खोंके क्रदणेसें सोना पीतल नही बणता, उष्टोंका स्वजा

वही होता है सो गुणमें उगुण निकालते है, जर्तृहर लिखता है-  
 सूरवीरकुं निर्दंड कहते है गमखाणेवालेकुं मरोकम केते है ब्रह्म-  
 चारीकुं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत है, खैर ऐसे चलेकुं मुखपाठ  
 जैनधर्मका अवश्य कर्त्तव्य गुणाना नित फेर अहर वांचने सि-  
 खाणा अहर जमाणे वोखवा पाटी लिखाणी फेर कोश व्या-  
 करण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्यानुसार सीखाकर जी-  
 वविचारादि षट् प्रकरण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चौल-  
 पट्टा मुंहपत्ती उथा मांजा चेहर पांगरणी स्वेत हथेसां रखणा, म-  
 स्तकके वाल केचीसैं कतराणे या उस्तरेसैं मुंजाणा, पादस्त्राण स्वे-  
 त वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण कांटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर  
 देश आश्री पहरणें दक्षिण पूर्वमें प्रायें नही उहां एसा उपसर्ग  
 नही देश विरुधके कारण त्याज्य है, प्रवचनसारोध्यार ग्रंथमें का-  
 रणविशेष साधुंको पादस्त्राण पहरणेकी आज्ञा है, पुस्तक लि-  
 खणा पातरे पाटी वगेरे रंगणा गूथणा तिरपणीके मोरे बणाणे  
 माला बणाणी ठोकरे पढाणा मंत्रविद्यामें उशलाता रखणी सो जी  
 जिनधर्मके अन्यके नहीं, रातकुं चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख  
 यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखत परिक्रमणा करणा, उन्ती शक्ते  
 सच्चित्त त्यागणा, राजदंभे लोकजंभे एसे रस्ते नही चलणा, कुलम-  
 र्याद लोपणा नही, चित्तमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके वरखि  
 लापनसा पीणेवालेकी संगत नही बेठणा, कुविसनीयोके संगतसे  
 लंठन लगता है, श्रावक जो द्रव्य देवें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थ-  
 यात्रा चेला लेणा उनोकुं खिलाणा पिलाणा पंक्तोकों रुजगार देके  
 चलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी स्वमाय  
 पापोंकी गही सुकृतकी अनुमोदना कर सब दोसराके परजव सा-  
 वणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्तव्य ॥

॥ सुलज्जबोधी श्रावकोंके इकीस गुण सिद्धांतोंमें लिखा है, उस गुणोंक धारणा चाहिये. गणांगसूत्रमें साधुओंकी प्रतिपाल करनेसे श्रावकोंक मातापिता तुल्य जगवंतने कदा दे, बालक कसूर नही करे तोत्री मातापिता अपने शंतानपर अंतरंगसे कत्री द्वेष नही करते हैं, इसी तरे श्रावकोंक साधुओंकोसे वर्त्तना चाहिये, जेप्रधारीसाधुओंमें कोइ तरेकी एव दीखपने तो एकांतमें हितशिक्षा देके तुम्हाणा चाहिये, नहीं माने तो बालकक धमकावे जैसे धमकाणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नही दीखेतो कर्मोंकी विचित्रता समझके एसोंकी संगत न करे, जैनधर्मक लजावै एसी एव कोइ नही होय नर शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल जाव के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय नर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानी नारायणरूपणकी तरे जरूर करणी, नर जिनधर्मक लजावै एसा होयतो उहांसे रुकसत करादेणा. जिनमंदिर नर उपासरेकी आवंद खरचकी सारसंज्ञाल जरूर करे, विनासंज्ञाल किये बहोतसे मंदिर उपासरेकी तजवीजें धिगर रही हे, जंमार लोक खागये हे, उती शक्ते इस बातका खयाल हरतरेसे करे, अपना लरुका लरुकीयोंक संसारविद्या नर धर्मकी मजबूती करणेक पम्कमणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार नर जैनन्यायशास्त्री अक्षर वचपणसे सिखलाणा चाहीये देव गुरु नर वनेर अकलवंतोंकी संगत करवाणी चाहिये, विरादरीमें सनातन कुलमरजादसे जो विपरीत आचारणा करे उसकी देखदेख आप न करणा, वणे-जहांतक उणोंको न्री रोकणा, विद्यमान अंग्रेजी इडम लरुकोंक सिखलावे तो पहली जैन न्यायसे हुसियार कर पीठे सिखलाणा क्योकी इस अंग्रेजी इडमकी ज्यादा किताबोंके पढणसे पीठे नसु

कं सत्य सनातन दयाधर्मका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा उर अंग्रेजीमें चौथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमें ढढा गुलाबचंदजीकों हम धन्यवाद देतें हैं इस वजे वेलासक पढे उर पढावै, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती उर तारीफ जिसने समजा हे वोही जाणता हे उर लसनकूं मुसककी खसबो कब लग सकती हे, जिनोंको संसारमें अज्ञी बहोत जवभ्रमण करणा बाकी रहा हे उनोंको जैनधर्म किस्ती तरे रुचता नही. कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ न्यारे हे मानेजी तो कोन सच्चा उर कोण जूठा ? ( उत्तर ) हे जव्य हमने पेस्त-रही लिखा हे न्याय जो जैनका सात जंगरूप हे उसकूं समजा उर वस्तुन पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता हे. ( प्रश्न ) इतनी बुद्धि उर परिश्रम तो करणेवाले थोमे हैं सो एसा न्याय पढके निश्चय करे सहजमें निश्चय कैसे होय ? ( उत्तर ) जो इतना नही समजो तो जो रुषजदेवजीसे लेकर आज दिनतक जो सनातन जैनधर्म चलता आया हे वोही जैनधर्म सच्चा हे वीचर में अल्पज्ञोने अहंकारके वस मनोकाद्विपत फंदसे एक नय पकरके अपने मत खने किये हे, षट्शास्त्री चौदेपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार जगवान् जड्बाहुस्वामी उमास्वाती ज्ञाप्यकार जिन-जद्रगणी कृमाश्रमण इत्यादि पंचांगीकार जो समुद्र सरिषे बुद्धीके धणी उनोंने जिस वातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समजणा, श्रावगधर्मवालों पर वना उपगार स्तनप्रज्ञसूरि उर दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया हे सो केइयक पापारंज की वार्ते तो इस जातीके कायदेसेही बंध होगई हे, जैसे मद्यका पोणा उर मांसादि अन्नक खाणा लेकिन आजकल कर्मके वस धीरेइ एसे उत्तम कुलमें निरखुडीयोने अधोगतीकी समक बां-

धर्म पर मुस्तेद हुये सुणनेमें आते हे, चिंतामणीरत्न समान जैन धर्म पाय के निरज्जाग्यकी तरे क्यों हाथसें फेरते हो पीठे पठतावा होगा थोभे दिनकी जिंदगानी हे, मदिरा पीणेमें वावन उंगुण हे एतेइ मांतमें देखो जैनतत्वादर्श ज्ञापायंथ, यही चीज अग्री होती तो तुमारे वन्देरे लाखों राजपूत इत चीजोंकों क्यों ठोमते नर मुसलमीनोंकों जो धर्मकायदेसें इत बातकी सकत मनाई हे इत्यादि, किं बहुना ॥ जैनपाठशालाउ स्थापन करणी पढनेवालोंको अन्न वस्त्रादिसें सत्कार करणा चाहियै, जैनकोममे संप नही हे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पं-दित तो दुस्मन जो अग होता है मूर्ख हितकारी जो कामका नही, विद्यावान सब काम विचारकेही करता है मूर्खके विनाका-रण द्वैप नर अहंकारीपणा होता हे वाकी तो कवियोंनें कहा हे-  
 दुहा ॥ सज्जन जाके सो नही, दुस्मन नही पचास ॥ जयानी जयके क्या किया, जार मरी नव मास ॥ ? ॥ श्रावक जितनी चीज अपणे उपजोगमें लेता हे सो सब उत्तम चीजका दान करता हे एक स्त्री वर्जके उस करके जन्मांतरमें लक्ष्मीकी एश्वर्यता जाग कर संसारका पार पुन्यानुबंधी पुन्यसें पाता हे मुक्तिपंथ जाते हुये जीवकूं पुन्य बोलाउरूप हे, अन्न वस्त्र उपयी सज्या पात्रादिकसाधुनंकों देवे, देवके निमत अष्टद्वय गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजानंतें दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगैरे ऊजमणें दान करे, सा-धर्मी तथा जैनपंथितोंकूं नगदद्रव्य वस्त्र जोजनादिक यथायोग्य दान करै, तीर्थकर जगवान जो संवत्सरी दान देते हैं, दानधर्म मुख्य हे जगवतीजीमें ग्रहस्थिता अन्नंगद्वार कहा हे, जगवतीसू-त्रमें तीन गुरु कहे हे सिद्धगुरु ? जो कारीगरी सिखलावे सो, क-लागुरु २ जो लिखणा पढणादि उ२ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु



३ सामायिक परिष्कारणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेश दे के मुक्ति  
 पंथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य ज्ञात्री करे ॥ अब  
 चउजंगी लिखते हैं ॥ सम्यग्ज्ञानवत देसेविराधक । १ । कष्टरूप  
 क्रियां करणेवाला देशेआराधक । २ । ज्ञान उर क्रियारहित सर्व-  
 विराधक । ३ । ज्ञान उर सत्क्रियावत सर्वेआराधक । ४ । ॥ इति  
 पात्रिगुरु निर्णयः ॥ विशेष श्रावकोके करणे योग्य कर्त्तव्य देखणा  
 होय तो हमारा उपाया श्रावग व्यवहारालंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोके कर्त्तव्य ॥

मारवाडमें प्राये जैनमंदिर जोगवन्दी पूजते हैं उनमें इस  
 वखत प्राये मिथ्यात्वी बहोत सम्यक्ती बहोतही कम हे, गुजरातमें  
 जो जोजक जैनमंदिर पूजते हैं सो सब जैन हैं जिनोंको अन्य  
 देशमें गंधर्व कहते हैं. ( प्रश्न ) पूर्वोक्त जोजकोंने जैनधर्म कवसें  
 बोला हे ? ( उत्तर ) पहले श्रीरुषभदेवजीमें जोगवंश स्थाप-  
 नकर अपने कुलके प्रोहित बनाये, पीठे जरतजीने ब्राह्मणवंश  
 स्थापन करा, राजा सूर्यवशने जोगवंशीयोको पूज्य जाण जिनमं-  
 दिरकी सारसंज्ञाल सोपी लेकिन जिनमंदिरका चढापा मंदिरके  
 कूटपर धरायाजाताआ जैनधर्मी होखेसे बलिदान जोगवंशी नही  
 खातेथे वो सब पंखी जानवर खायाकरते, इनको अनेक तरेसे पर्व  
 महोत्सव पर डब्य वस्त्र जोजनादिकसे राजा उर प्रजा सब सत्कार  
 करतेथे वो सब नवमें दशमें जगवानके अंतरमें मिथ्याधर्मी होगये  
 बाद कच्ची कोइ जैन कच्ची मिथ्यात्वी एसे होते चले आये, जब २४  
 से वर्ष पहले नुसीबामे जैनधर्म फैला तब राजाके पुरोहित राज-  
 पूतोके संग जोगवंशी फेर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलदेव प-  
 मार वगेरोंने ज्ञात्री उर बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारी-  
 पक्षा साथमें ब्राह्मण जाण सुप्रत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

संवत् वारेसेमें रामानुज मायवांचारी वगेरोंने विष्णु संप्रदाय नि-  
 काली, उसही जमानेमें अनेक राजन्ववंशीयोंको दादा वत्सूरजा  
 ने लाखों उत्सवाल फेर वणायें, तब राजवीयोंने गुरुसे अरज की  
 इस दयाधर्मके प्रज्ञावसे निर्दयीपणा हम लोकोंमें होगा नही राज्य  
 तो सदा थिर रहणां नही आगे हम लोकोंका अर्हवाल क्या होगा,  
 गुस्ने कहा जो जिनमंदिरोंकी प्रती नर जंतीगुरुकी सेवा अन्नह  
 त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहां  
 तक पाटेंका मालक राजा नर सर्व थाटका मालक तुमलोक रहोगे  
 तथास्तु वरदान एसाह प्रया, राजानोंने अपणें जाई स्वजनवर्गी  
 उत्सवालोकें प्रधान हांकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथा-  
 योग्य सुंप्रत क्रिया, तवसे २२ सौं रजवासीमें उत्सवालोकका राज्या-  
 धिकार वणा तवसे उत्सवालोंने महरवानी रखके विष्णुमंदिर शि-  
 वालयादिकोका पूजारीपणा जी जोजकोंको सोंपा बंध जोगवंशी  
 फेर पीवै वारेस मिथ्यात्वी वणवेठे, विद्याहीनता होणेंसे सब तरे  
 की हीणता होगई आखिरको लोक ब्राह्मण जोजकोंको कर्म कर  
 करके मानणे लगे पूज्यभाव उठगया; जो कज्जी जोजकलोक एसा  
 समजतें होंगे की हम तो अबलसेही शैव वैष्णव थे ( उत्तर )  
 यह समजकी जूल हे हम पहली लिखदिया हे जैनधर्मकी बहु-  
 लायतमें प्रजा जैन रही, बोधोकं अमल बोद्ध, शांख्यादिकोके अ-  
 मलमें सांख्य, इत्यादि बातें तवारीकोसें जी पाईजाती है लेकिन  
 जैनधर्म नर मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका हे इतना जोज-  
 कोंको जरूर समजणा चाहिये जो तुमलोक सदां मिथ्याधर्मो हो-  
 ते तो राजा उपलक्षेव पंमारादिक परमजैन तुमारा लोंगा नर बहु-  
 मान उत्सवंश पर कज्जी नही लगाते, मिथ्याधर्मियोंका जोर उत्स-  
 वाल जैनोपर कब लग सकनाथा इतनेमेंही समजणा, पीवैसें

विष्णुमंदिरोकी पूजा नर राजा वगेरोकी देखादेख संग दोष लगा, उसवालोंने तिथि नहीं करी बध गया, इस तरेही बढो-तसें उसवंशी जी खुसामदीसे दुसरा धर्म धारलिया तुमकों क्या कह सकतेथे, खैर इस बातोंसे हमारे कुब मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन अब हम आगे लिखते हैं उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे, लोकीक कहणावट जी हे “ जिसकी खावे बाजरी जिसकी जरणी हाजरी ” उसमें हरज करणेसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अंतरंगजत्कीसें जिनमंदिरमे जानू देणा, वरतन मलणा, अंगदूहणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विगर जिनमूर्तीका स्पर्श नही करणा, पूजा एसी साफ करणी सो आसपास मैल जरा जी नही रहणे देणा, दीपक जलाणेमें ढकणा वगेरे देकर जीवरक्षा करणी, जल शुद्ध बाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री ब-होतही विवेकसें रखणा, देवड्यकी चोरी नही करणी, दूकमें हरकत मालणा नही, देव नर गुरूकी सेवा करणेसें तुम्हें सेवमपद मिला हे, जो ज्ञावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोंके वश जो श्रद्धा नही आवै तो जिसकी ब दोलत रोटी आदि सइकमों रूपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य उपासरे के जरीये तुम्हें सइकमों रूपे आवक देते हैं वो सब देवगुरूका प्रताप समज इन दोनोंकी सेवा तन मनसें बजाया करो ॥ अलंविस्तरेण ॥

ऊपर ठ उपदेश मने लिखे हे कोइ कठोर लबज लिखा होय तो माफी मांगताहूं सरलज्ञावसें लिखा हे द्वेषसें नही ॥

इस ग्रंथके भाषणेमे काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय सो सुधारके वांचे या गुरूसें शुद्ध करालेवे में मनशु-द्धिसें सर्व संघसें कृपा मांगताहूं सकन तो सदा गुणयाहीही होते-

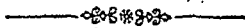
हैं, उनका मैं सदा आज़ार मानता हूँ ॥ यतः ॥ तथापि क्रियत  
 ग्रंथ, संतिपद्यपि दुर्जना ॥ नहिदस्युज्जयाल्लोको, दैन्यवानिद्वर्त्तते ॥  
 ॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह तो ज़ी करता हूँ यद्यपि डुरजन बहोत हे  
 चोरोके रुसैं लोक कंगाल नही वण वेठते तेसे ? मेंने अपने  
 हाथसे लिखकर मुंबई जेजकर शिष्यवर्गोंके कहणेसे इसमें सं-  
 ग्रह मेंने अनेक ग्रंथोंसे किया हे, बहोत चीजें पं । प्र । श्रीअवी-  
 रचंइजीमुनिःसे लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संघय हे,  
 रूपदेवजीका आदिअक्षर । र । महावीरस्वामीका । म । इन दोनोंसे  
 चणा जो । राम । उनोके मध्यवर्ती सब जगवंतोके गुणोका विलास  
 इसवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे ॥

॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सर्वईया ॥

दाशानुदाशाइवसर्वदेवाः, यदीयपादाब्जतलेलुगंति ॥ मरु-  
 स्थलीकल्पतरुःसजीया, ज्जुगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंताम-  
 णिः कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्तिजन्म्याःकिमुकामगव्या ॥ प्रसीदतःश्री  
 जिनदत्तसूरैः, सर्वेपदाहस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनचयोगिनी,  
 नचधराधीशस्यनोशाकिनी ॥ नोवेत्ताल पिशाचराहलगणाः, नोरो-  
 गशोगोज्ञयं नोमारीनचविग्रहः, प्रचृतयः प्रीत्याप्रणत्पुञ्जैः ॥ य-  
 स्तेश्रीजिनदत्तसूरि, गुरवोनामाकरंध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ स-  
 र्वईया ॥ बावन वीर किये अपने वश, चौसठ योगण पाय ल-  
 गाई ॥ भाइण साइण व्यंतर खेचर, चूतरुपेत पिशाच पुलाई ॥  
 बीज तरुक्क करुक्क जटक्क, अटक्क रहै जु खटक्क न फाई ॥ कहे भ्र-  
 मसीह लंघै कुण लीह, दीयै जिनदत्तकी एक डुहाई ॥ १ ॥ इति ॥  
 राजै शुंज गौरगौर, एसो देव नही और ॥ दादौ दादौ नामसें, ज-  
 गत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही जाव आय, पूजै लस्क लोक पाय ॥  
 प्यासनकूं रांनमांजि, पाणी आन पायो हे ॥ वाट घाट शत्रु वाट,

हाट पुर पाटणमें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसी-  
 ह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करै, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम तुं  
 कहायो हे ॥ १ ॥ कुशल अंग उठरंग, कुशल वणिजै व्यापारै, कु-  
 शल देव देहरे, कुशल घन राजड्वारे ॥ पुन्य प्रसाये कुशल कुशल  
 श्रीसंघ जणीजै, वाहण आवै कुशल कुशल घर २ गाईजै ॥ जिन-  
 चंद्र सूरि पुह पट्टधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि  
 प्राय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वरु संसार  
 कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गल माल लब्धि घर कुशलै  
 आवै ॥ कुशलै घन वरसंत कुशल घन धन्नरुवन्नो, कुशलै घोमां  
 अष्ट कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरसो नाम सदगुरुतणो कुशलै जम  
 रलियामणो, जट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर ३  
 होय वधामणो ॥ १ ॥

# रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



ग्रंथोका नाम.	पृष्ठांक.
१ अकारं विंशसंयुक्तादि मंगलाचरण	१
२ स्वरचर्णा	२
३ वर्णव्यंजनमाला	३
४ शिक्षावाक्य	३
५ संधिसूत्र	४
६ हितोपदेश	५
७ त्रिं जिन नाम सौखे सती नाम	७
॥ प्रतिक्रमण सूत्र प्रारंभ ॥	
८ नवकारमंत्र	१०
९ थापनाचार्यजीकी तेरेपदिलेहण	१०
१० खमासमण	१०
११ सुगुरुने ज्ञाता सुखपुत्रा	११
१२ सुदपती पदिलेहणके पञ्चीस बोल	११
१३ श्रंगकी पञ्चीस पदिलेहण	११
१४ सामायकका पञ्चखाण	१२
१५ इरियावहि	१३
१६ तस्सउत्तरी	१३
१७ अन्नबूससिएणं	१३
१८ लोगस्त	१४
१९ वेसणोसंदिस्ताउं	१४

२०	राई प्रतिक्रमण विधि...	...	...	१५
२१	सकलतीर्थनमस्कार ...	...	...	१५
२२	जंकिचिंनामति० ...	...	...	१५
२३	नमोऽनुणं ...	...	...	१५
२४	जावंति चैश्चाई ...	...	...	१६
२५	जावंति केवि साहू ...	...	...	१६
२६	परमेष्ठिनमस्कार ...	...	...	१६
२७	उपसर्गहरस्तोत्र ...	...	...	१६
२८	जयवीयराय ...	...	...	१७
२९	पद्मिक्रमण ठायवेका अवसर ...	...	...	१७
३०	सर्वस्त्ववि ...	...	...	१८
३१	इह्यामिठामि ...	...	...	१८
३२	वंदणवत्तियाए ...	...	...	१८
३३	पुरस्करवरदी ...	...	...	१९
३४	सिद्धाणांबुद्धाणं ...	...	...	१९
३५	वेयावच्चगराणं ...	...	...	२०
३६	संभासाप्रमार्जन ...	...	...	२०
३७	सुगुरुवांदणा ...	...	...	२०
३८	देवसियं आलोउं ...	...	...	२१
३९	रात्रि संबंधी अतिचार आलोयण ...	...	...	२१
४०	अठारे पापस्थानक आलोयण...	...	...	२२
४१	श्रावकवंदित्तासूत्र ...	...	...	२३
४२	वंदित्तासूत्र पीठेकी विधि ...	...	...	२६
४३	अपुठिउमि ...	...	...	२६
४४	आयरिय उवझाए ...	...	...	२६

४५	आवश्यककीमुहपत्ती	...	...	२७
४६	सकल तीर्थ नमस्कार	...	...	२७
४७	परसमय तिमरतराणि	...	...	२८
४८	संसारदावाकी स्तुति...	...	...	२९
४९	काञ्चनसर्गमें स्तुतिका पृथग् पाठ	...	...	२९
५०	अढाङ्गैसु दीवसमुद्दे	...	...	३०
५१	जय२ त्रिभुवन० सीमंधर चैत्यवंदन	...	...	३१
५२	सीमंधर स्तवन ॥ श्रीसीमंधर साहिवा...	...	...	३१
५३	सीमंधर स्तुतिकी एक गाथा महीमंथनं	...	...	३२
५४	सिद्धाचलजीका चैत्यवंदन जय२ नाञ्जिनरिदनंद	...	...	३२
५५	सिद्धाचल स्तवन ॥ सिद्धाचलगिरि ज्ञेय्या रे	...	...	३२
५६	सिद्धाचलशुद्ध शेत्रुंजगिरिनमीये रूपजदेवपुंरुकी	...	...	३३
५७	पम्बिहण विधि	...	...	३३
५८	सामायक पारनेकी विधि	...	...	३४
५९	जयवं दसनजहो	...	...	३४
६०	संध्याकालसामायक विधि	...	...	३५
६१	देवसी पम्बिकमण विधि	...	...	३६
६२	जयतिहुअण	...	...	३६
६३	जयमहायश	...	...	४०
६४	महावीर स्तुति॥मूरति मनमोहन कंवण को०	...	...	४०
६५	स्तुति कहरां पोठेकी विधि	...	...	४१
६६	श्रुतदेवताकी स्तुति...	...	...	४३
६७	क्षेत्रदेवताकी स्तुति...	...	...	४३
६८	वरकनक	...	...	४३
६९	नमोस्तु वर्द्धमानाय...	...	...	४४



७०	श्रीजिनबिंब जुहारो रे ज्ञविका ॥ स्तवन	४४
७१	तिस पीठे कानसग्ग करणेकी विधि ...	४५
७२	थंजणापार्श्वनाथका चैत्यवंदन ॥ श्रीसेढो०	४६
७३	थंजणयद्विपाससामिणो ... ..	४६
७४	दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी आराधना ...	४७
७५	दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी आराधना	४७
७६	चनकसाय चैत्यवंदन ... ..	४७
७७	लघुशांतिस्तवन ... ..	४८
७८	कमलदल स्तुति ... ..	४९
७९	कल्याणकमला गेहं ॥ स्तुति... ..	४९
८०	सकलकुशलवल्ली ॥ स्तुति ... ..	५०
८१	सर्व जिन स्तुति ॥ दर्शनात् डुरि० ...	५०
८२	आदिजिन स्तुति ॥ सुवर्ण वर्षी गजराजगामिनं	५०
८३	सोलम जिनवर शांतिनाथ स्तुति चैत्यवंदन	५०
८४	प्रह शम प्रणमुं ॥ नेमनाथ स्तुति चैत्यवंदन	५०
८५	पुरसादाणी पास नाह ॥ स्तुति चैत्यवंदन...	५१
८६	वंदू जगदाधार ॥ महावीर स्तुति चैत्यवंदन	५१
८७	अथ पाहिकादि प्रतिक्रमण विधि ...	५१
८८	वृहदतिचार ... ..	५२
८९	अतिचारके पीठैकी विधि ... ..	६३
९०	जुवनदेवता स्तुति ॥ चतुर्वर्णाय संवाय...	६४
९१	दस पञ्चखाण ... ..	६५
९२	पञ्चखाणोकी आगार संख्या ... ..	६९
९३	पञ्चखाणके आमारींका अर्थ ... ..	६९
९४	साधू प्रतिक्रमण सूत्र चत्तारिमंगलं ...	७२

९५	परकीसूत्र ...	...	...	...	७६
९६	अठपहरी पोसेकी विधि	...	...	...	९०
९७	पोसदहा पञ्चस्काण ...	...	...	...	९१
९८	चोवीस श्रंमिला करणेका पाठ	...	...	...	९२
९९	श्रंमिलाकहाकरणा ...	...	...	...	९३
१००	पांचे शक्रस्तवे देववंदण विधि...	...	...	...	९३
१०१	पञ्चस्काण पारणेकी विधि	...	...	...	९५
१०२	राइ संशारा विधि ...	...	...	...	९८
१०३	पोसद पारणेकी विधि	...	...	...	९९
१०४	दिन जग्यां पीठै पोसद लेणेकी विधि ...	...	...	...	१००
१०५	रात्री चोपुहरी पोसेकी विधि...	...	...	...	१०२
१०६	ठाणेकमणें चंकमणे...	...	...	...	१०३

॥ देववांदणेमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके

प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

१०७	दूजकी शुइ ॥ मही मंमणं ...	...	...	...	१०३
१०८	पांचमीकी शुइ ॥ पंचानंतक०...	...	...	...	१०४
१०९	आठमकी शुइ ॥ चोवीसे जिनवर...	...	...	...	१०४
११०	मौनएकादशी स्तुति ॥ अरस्य प्र० ...	...	...	...	१०५
१११	पार्श्वजिन स्तुति ॥ ईईकि चतुर्दशीकी...	...	...	...	१०५
११२	निरुपम सुखदायक ॥ नवपद स्तुति ...	...	...	...	१०६
११३	वलि२ हूं ध्याऊं ॥ पञ्जूपण स्तुति ...	...	...	...	१०६
११४	सुर असुर वंदिय ॥ नेमजिन स्तुति ...	...	...	...	१०७
११५	पापायांपुर चारुः॥ दीपमालिका स्तुति...	...	...	...	१०८

॥ शुई संग्रह ॥

११६	पंचविदेह विपे विहरंता॥वीसविहरमान स्तुतिः१०८	...	...	...	१०८
-----	---	-----	-----	-----	-----

११७	समदमोत्तम वस्तुमहापणं ॥ पार्थ्वस्तुतिः	१०९
११८	वरमुत्तियहार ॥ रुषन्नस्तुति ...	१०९
११९	प्रणमुं परमपुरुष ॥ रुषन्नस्तुति ...	१०९
१२०	विश्वनायक लायक ॥ अजितजिन थुइ...	११०
१२१	यदंद्दिनमनादेव० वर्द्धमानस्तुति ...	११०
१२२	वीरंदेनं० वीरजिन थुइ ...	१११
१२३	मुरति मनमोहन० वीर थुई ...	१११
१२४	चनवीस जिन पंचकळ्याणक स्तुति ...	१११
१२५	श्रीशैत्रुंजमंरुण आदिदेव ॥ सेत्रुंज थुई...	११२
१२६	गिरनार शिखरपर० नेमजिनस्तुति ...	११२
१२७	सुख समकितदायक० शीतलजिनथुई...	११३
१२८	मिल चोविह सुरवर० समवसरणस्तुति...	११३
१२९	सेत्रुंजगिर नमियै ॥ चैत्रीपूनमस्तुति ...	११४
१३०	समरुं सुखदायक० नवपदस्तुति...	११४
१३१	शिवसुख दाता ॥ वीसस्थानकस्तुति ...	११५
१३२	अरिहंत सिद्ध पवयण० वीसस्थानक थुई	११५
१३३	अनुपमगुण आगर० नवपद स्तुति ...	११६
१३४	विमलाचल मंरुण जिनवर ॥ शैत्रुंजय स्तुति	११६
१३५	शांतिजिनेसर जगअलवेसर ॥ शांतिनाथ थुइ	११७
१३६	मन सुध वंदो ज्ञावे ज्ञवियण ॥ सीमंधर स्तुति	११८
१३७	पंच अनंत महंत गुणाकर० पंचमी स्तुति	११८
१३८	अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा ॥ अग्यारस स्तुति	११९
१३९	जयकारी जिनवर वासुपूज्य ॥ रोहणी स्तुति	११९
१४०	प्रथम तीर्थंकर आदिजिनेश्वर ॥ परकी चौदशस्त	१२०

॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

१४१	अजित शांत स्तव प्रथम ... ..	१२०
१४२	उद्धासिक्कम ॥ द्वितीय स्तव लघुअजित शांति	१२५
१४३	नमिक्कण ॥ तृतीय स्तव ... ..	१२६
१४४	तंजयत्त ॥ गणधर स्तुति चतुर्थ स्तव ...	१२८
१४५	मयरहियं ॥ गुरुपारतंज्य ॥ पंचम स्तव	१३०
१४६	सिग्गमवहरिज्ज ० षष्ठ स्मरणं ... ..	१३१
१४७	उवसग्गहरं स्तोत्र ॥ सप्तम स्मरणं ...	१३२
१४८	ज्जक्कामर स्तोत्र ... ..	१३३
१४९	वन्नी शांति ॥ ज्ञो ज्ञो ज्ञव्या ... ..	१३७
१५०	जिनपंजर स्तोत्र ... ..	१४१
१५१	किंक्कप्पत्तरु ० वन्ना नवकार ... ..	१४२
१५२	तिजयपट्टत्त ॥ शततिजिन स्तोत्र ...	१४५
१५३	दोसावहारदस्को ॥ नवग्रह ० पा ० ...	१४६
१५४	जगद्गुरु नमस्कृत्य ॥ शांति स्तोत्र ...	१४६
१५५	कट्टयाणमंदिर स्तोत्र ... ..	१४८
१५६	रूपिमंरुल स्तोत्र .... ..	१५१
१५७	लघुजिनसहस्रनाम ... ..	१५५
१५८	महिम्न स्तोत्र ! ... ..	१५८

॥ अथ तुट्ठकर चैत्यवंदन ॥

१५९	सिद्धो त्रिक्काय चक्की ॥ सेत्रुंज चैत्यवंदन	१६२
१६०	श्रीसेट्ठीतट मेरु धाम ॥ थंज्जणापार्थ्व चैत्यवंद ०	१६१
१६१	वंदू जिनवर वीहरमान ॥ सीमंधरजिन चै ०	१६३
१६२	पूरव देसे दीपतो ॥ शिखरगिरी चैत्यवंदन	१६३
१६३	प्रथम महेश्वर पद्मनाभ ॥ पद्मनाभजिन स्तुति	१६३

१६४	अवामावामार्घे ॥ पार्श्व स्तुति ॥ ...	१६३
१६५	अविरलशब्दघनोघा ॥ सरस्वती स्तुति...	१६३
१६६	दर्शनं देवदेवस्य ॥ सर्वजिन वंदन स्तुति	१६४
१६७	जाषामई दोहा ॥ वंदनस्तुतिरूप॥हत्याजेहसुल.	१६४
१६८	श्रीअरिहंत नदार कांति ॥ नवपद चैत्यवंदन	१६५

॥ अथ वना स्तवन संग्रह ॥

१६९	सुगण सनेही साजण श्रीसीमंघर स्वामि	१६५
१७०	सफल संसार ॥ दूजका वना स्तवन ...	१६६
१७१	प्रणसुं श्रीगुरु पाय ॥ पंचमीका वना स्तवन	१६८
१७२	पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी ॥ पंचमी लघु स्त.	१७०
१७३	अमल कमल० अष्टमी लघु स्तवनं ...	१७१
१७४	विमलजिन सहारे तुमसुं प्रीत ॥ विमलजिन स्त.	१७२
१७५	समवसरण वैठा जगवंत ॥ मूनइग्यारस स्त०	१७२
१७६	सारदमात नसूं शिरनामी ॥ शांतिनाथ स्तवन	१७३
१७७	चौरासी आसातनाका स्तवन...	१७५
१७८	चोवीसजिन देहमान स्तवन ...	१७६
१७९	चोवीसजिन आयुप्रमाण स्तवन ...	१७७
१८०	त्रेसठ शलाकापुरुष स्तवन ...	१७८
१८१	श्रीविमलाचल शिरतिलो ॥ संत्रुज स्तवन	१८०
१८२	सिध्याचल मंनणस्वाम्नी हे ॥ सिध्याचल स्त०	१८१
१८३	रुषज्जिनेसर दिनकर साहिव ॥ स्तवन	१८२
१८४	वीर सुलोमोरी वीनती ॥ अभावसका म, स्त.	१८३
१८५	चोवीस दंभक स्तवन ...	१८५
१८६	शरियावही मिठामिडुकर संख्या स्तवन	१८८
१८७	पंच समवाय स्तवन...	१९०

१८८	चौदे गुणगणा स्तवन	...	...	१९५
१८९	नव तत्व ज्ञापागर्भित स्तवन...	...	...	१९९
१९०	दंरुक ज्ञापागर्भित स्तवन	...	...	२०३
१९१	जीवविचार ज्ञापागर्भित स्तवन	...	...	२०६
१९२	समवशरण विचारगर्भित स्तवनं	...	...	२१०
१९३	सुण२ सेत्रुंजगिरिस्वामी ॥ रूपज्ञदेव स्त०			२१२
१९४	पासजिनेसर जगतिलो ॥ दशमीका पार्श्वस्त०			२१३
१९५	मंगल कमला कंद ए ॥ अजित शांति स्त०			२१५
१९६	मुंहपत्ती पन्डितेक्षण स्तवनं	...	...	२१८
१९७	आलोयण दंरु स्तवनं	...	...	२१९
१९८	नंदीश्वर वाचन जिनालय स्तवनं	...	...	२२२
१९९	अढार्द्धीप वीस विहरमान स्तवनं	...	...	२२३
२००	जात्रीनाज्ञाज्ञात्राजीनी जात्रा करण्यो			२२७
२०१	सकल शाश्वता चैत्य नमस्कार स्तवन...			२२८
२०२	जविजन पूजो रे शीतल जिनपती ॥ स्तवन			२३०
२०३	म्हारे धरमजिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो ॥ धर्म जिन स्तवन	...	...	२३१
२०४	राणपुरो रलियामणो ॥ राणपुरा स्तवन...			२३२
२०५	समकित द्वार गुंजारे पेसतां ॥ दर्शन, आ, स्त,			२३३
२०६	आदिजिनेसर अरज सुणीजै ॥ स्तवनं	...	...	२३३
२०७	देवचंदजी कृत अजितजिन स्त० ज्ञानादिक गुण			२३४
२०८	वे कर जोम्ही वीनवूंजी ॥ आलोयण स्तवन			२३५
	॥ आनंदघनजी कृत स्तवनं ॥			
२०९	रूपज्ञ जिनेसर प्रीतम मादरो...	...	...	२३७
२१०	पंथिफो निहाळूं रे बीजा जिनतणो रे...			२३८

२११	शंभुदेव ते धुर सेवो सवे रे...	...	२३ए
२१२	अग्निनंदन जिन दरशन तरसियै	...	२३ए
२१३	सुमति चरण कज आतम अरपणा	...	२४०
२१४	शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी	...	२४०
२१५	मनमो किमही न बाजे हो कुंभु जिन...	...	२४१
॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन प्रतिक्रमणके ॥			
२१६	श्रीशंखेसर पास जिनेस जेटिये	...	२४२
२१७	मनमोहन माहाराज	...	२४२
२१८	जयकारी जिनराज...	...	२४३
२१९	वालेसर मुऊ वीनती गोमीचा	...	२४३
२२०	अरज सुणीजै अंतरजामी	...	२४४
२२१	प्यारी पासकी देखी मूरति०	...	२४४
२२२	श्रीचिंतामण पासजी	...	२४४
२२३	जीवन धारा तेवीसमा जिनरायरे	...	२४५
२२४	सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो...	...	२४६
२२५	मोरा पास जिनराज	...	२४६
२२६	जिनजी महिर करीने राज	...	२४७
२२७	तूं मेरे मनमें प्रभू तूं मेरे दिलमें	...	२४७
२२८	मार्ग देशक मोक्षनो ॥ दीवाली निर्वाण स्त०	...	२४८
२२९	सैत्रुंज शषन्न समोसरया ॥ तीर्थमाला स्त०	...	२४८
२३०	आज आपे चालो सहिया ॥ सिद्धाचल स्त०	...	२४९
२३१	महावीरस्वामीका पारणा	...	२५०
२३२	पद्मावती जीवरास खमाणा ॥ हिवराणीपद्मा०	...	२५२
२३३	वाणी ब्रह्मा वादनी ॥ गोमीजीका वृध्यस्तवन	...	२५४
२३४	धम्मो मंगल सुक्किठं ॥ मंगलीक	...	२५९

२३५	आत्मरक्षा स्तोत्र ... ..	२५९
२३६	सुखकारण ज्ञविषण ॥ नवकार वंद ...	२६०
२३७	सेवो पास संखेसरो मन सुधै... ..	२६१
२३८	बोर जिनेसर केरो सीस ... ..	२६१
२३९	शोल सती वंद ॥ आदिनाथ आदिदेई...	२६२
२४०	गौतम स्तवन ॥ जय२ मंगल निधान ...	२६३
२४१	मुनिज्ञेय वर्णन स्तवन ... ..	२६४
२४२	जवसे श्रद्धा शुद्ध जई ॥ अरिहंत स्तवन	२६४
२४३	श्रावककी करणी ॥ श्रावक तुं ठठे० ...	२६४
२४४	गौतमस्वामीका रास... ..	२६६
२४५	सेत्रुंज रास ॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी ...	२७२
२४६	शिखरजीका रास ... ..	२७०
२४७	मुनिमालका ... ..	२९१
२४८	त्रिभूजिन स्तवन ... ..	२९५

॥ अथ सिद्धायसंग्रह माला ॥

२४९	उपदेशमाला पोसद् सिद्धाय ॥ जगचुन्मामणीमू३२ए७	
२५०	राइ संयारा पोसद् सिद्धाय ॥ निस्तही०	३००
२५१	निंदावारक सिद्धाय ... ..	३०१
२५२	शीतासती सिद्धाय ॥ जलजलती मोलती०	३०२
२५३	अनाथीरूपि सिद्धाय ॥ श्रेणिक रयवानी०	३०३
२५४	प्रतिक्रमण सिद्धाय ॥ कर पन्तिक्रमणो जावसुं	३०३
२५५	मांगलिक सरणा चार ... ..	३०४
२५६	ढंढणरूपि सिद्धाय ... ..	३०५
२५७	श्रीजिन वाणी रे धन्ना ॥ धन्ना रूपिसिद्धाय	३०६
२५८	देव दाणव तीर्थकर ॥ कर्मसिद्धाय ...	३०७



... ॥ अथ सर्व तपस्या विधि ॥

३०७	सत्तरसयको गुणानो...	...	...	३७७
३०८	सत्तरसय तप स्तवन...	...	...	४०३
३०९	कम्मपयकी तप गुणानो...	...	...	४०५
३१०	कम्मपयकी स्तवन ...	...	...	४०७
३११	नवकार तप स्तवन ...	...	...	४०९
३१२	नवकार तप विधि ..	...	...	४११
३१३	पंच कल्याणक तप स्तवन ...	...	...	४१२
३१४	रुषिमंजुल सुणणेकी पूजणेकी विधि ...	...	...	४१५
३१५	जगवंतके नव अंगपूजन डुहा ...	...	...	४१५
३१६	शिक्षाका डुहा ५ ...	...	...	४१६
३१७	नवपदोका नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा थुई.	...	...	४१७
३१८	शंस्कृतवद् चतुर्विंशति जिन स्तुति ...	...	...	४२५
३१९	नवपद वृद्ध स्तवन ॥ सुरमणी शम सहुमंत्र०	...	...	४२८
३२०	नवपद स्तवन ॥ तीर्थनायक जिनवरू रे	...	...	४२९
३२१	नवपद ध्यान धरो रे जविका ॥ स्तवन	...	...	४३०
३२२	जीया चतुरसुजाण नव० स्तवन ...	...	...	४३०
३२३	जिन नित नमो नित नमो नमो ॥ स्तवन ...	...	...	४३०
३२४	नितप्रति प्रणामुं ॥ नवपद थुई ...	...	...	४३०
३२५	अथ जैती संयुक्त नवपद उली करण विधि	...	...	४३१
३२६	अथ तपस्या ग्रहणकरणेकुं गुरु पाशजाणेकी वि.	...	...	४४८
३२७	उलीकी संक्षेप ऊजमणा विधि ...	...	...	४४९
॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥				
३२८	प्रथम चैत्रमास पर्वाधिकार प्रथम १ उलीतप	...	...	४५०
३२९	अष्टापद उली करण विधि: मंजुलविधि स. द्वि. १.	...	...	४५१

३३०	महावीरस्वामी जन्मकल्याणक पर्व तीसरा	४५४
३३१	चैत्रीपूनम पर्वधिकार पर्व ४ देववंदन वि०स०	४५४
३३२	चैत्रीपूनम स्तवन ... ..	४५६
३३३	मंशेश्वर तपस्या करण विधि ... ..	४५७
३३४	वैशाखमास पर्वधिकार आखातीज ...	४५८
३३५	ज्येष्ठ कृष्ण १३ श्रीशांति पर्वधिकार ...	४५९
३३६	आषाढमास १४ पर्वधिकार ... ..	४५९
३३७	श्रावणमासमें वृटकर तपस्याधिकार ...	४६०
३३८	जाइवमासमें पर्युपण पर्वधिकार ...	४६५
३३९	आश्विनमासमें उली पर्वधिकार ...	४६७
३४०	कार्तिकमासमें ४ पर्वधिकार... ..	४६७
३४१	दीपमाला गुणनो करण विधि... ..	४६८
३४२	ग्यानपंचमी पर्वधिकार ... ..	४६९
३४३	ग्यानपंचमी देववंदन विधि ... ..	४६९
३४४	ग्यानका वरुा चैत्यवंदन शुद्ध ... ..	४६९
३४५	श्रीआचारांगसूत्र सिद्धाय ... ..	४७१
३४६	श्रीसुषगडांगसूत्र सिद्धाय ... ..	४७२
३४७	श्रीगणानंगसूत्र सिद्धाय ... ..	४७२
३४८	श्रीसमवायांगसूत्र सिद्धाय ... ..	४७३
३४९	श्रीजगवतीसूत्र सिद्धाय ... ..	४७४
३५०	श्रीज्ञातासूत्र सि० ... ..	४७५
३५१	श्रीत्रिपाशकदशासूत्र सि० ... ..	४७६
३५२	श्रीअंतगद्दशासूत्र सि० ... ..	४७६
३५३	श्रीअणुत्तरोववाइ सूत्र सि० ... ..	४७७
३५४	श्रीप्रश्नव्याकर्णसूत्र सि० ... ..	४७७

३५५	श्रीविपाकसूत्र सि० ...	४७८
३५६	इग्यारे अंग वर्णन सि० ...	४७९
३५७	मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी ॥ ज्ञानका स्त०	४७९
३५८	श्रुत अतहि जलो ॥ जिनागमस्तवनं ...	४८०
३५९	कार्तिक चतुर्मास पर्वाधिकार...	४८०
३६०	कार्तिक १५ पर्वाधिकार ...	४८०
३६१	सिद्धगिरि स्त० ते दिन क्यारे आवस्यै...	४८२
३६२	नमो रे नमो सेत्रुंजगिरी ॥ स्तवनं ॥ ...	४८२
३६३	अंग ऊमाहो मोने अतिघणो ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८३
३६४	जात्रा निनाणूं करियै ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८४
३६५	जाव धर धन्य दिन० सिद्धगिरि स्त० ...	४८५
३६६	मार्गशिरमास पर्वाधिकार मौनएकादशी	४८५
३६७	मौन ११ देहसे कल्याणक गुणनो ...	४८६
३६८	पौषमासे वदि १० पर्वाधिकार ...	४९०
३६९	माघमासे मेरुत्रयोदशी पर्वाधिकार ...	४९१
३७०	फाल्गुनमासे पर्वाधिकार ...	४९२
३७१	द्रव्यहोली जावहोली अधिकार ...	४९२
	॥ होली स्तवन संग्रह ४७ ॥	
३७२	होरी खेलिये नर बहुरन० ...	४९५
३७३	जय बोलो पाश जिनेशरको ...	४९६
३७४	मधुवनमें जाय सची होरी ...	४९६
३७५	यादव मन मेरो हर लियो रे ...	४९६
३७६	इक सुणले नाथ अरज मोरी ...	४९६
३७७	सांवरो सुखदाई जाकी तिव ...	४९७
३७८	नेना हरखाई आज तेरी सू० ...	४९७

३७९	एसें फागुण मस्त मंहीनें चलोरी	...	४९७
३८०	नेम स्यामसें कहियो मोरी ...	...	४९७
३८१	होरी खेलो रे जविकं मन थिर करके ...	...	४९८
३८२	होरीके खेलइया तूं तो प्रजु०...	...	४९८
३८३	वाके ममताने धूम मचाई ...	...	४९८
३८४	समकित विन जीव जगत जटक्यो	...	४९९
३८५	विसरे मत नाम प्रजुजीको ...	...	४९९
३८६	नेम निरंजन ध्यावो रे ...	...	४९९
३८७	गढ गिरनारकी तलइटी ...	...	४९९
३८८	धन राजुल तेरो जांगरी ...	...	५००
३८९	एसी होरी तो हो रही चंपानगरमें	...	५००
३९०	बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी ...	...	५००
३९१	एसे प्रजु नेमनाथ मेरे दिल बसियां	...	५०१
३९२	संजव जिन सुखकारी हो लाला	...	५०१
३९३	सारो सौरठ देश दिखावो रसिया	...	५०२
३९४	जिनराज जुहारो, क्या बेठे जव दारो रे	...	५०२
३९५	मनमोहन गजगतकी कामनी...	...	५०३
३९६	रंग लग्यो गुरु ज्ञान...	...	५०३
३९७	चिदानंद खेल फाग...	...	५०३
३९८	होरी खेलो नेमसें धायर ...	...	५०४
३९९	मेरी घटकी गागरिया रंगसें जरी	...	५०४
४००	बावो रूपज बेठे अलवेसर ...	...	५०४
४०१	गिरराजकूं हमारी वंदना रे ...	...	५०४
४०२	दरशन कियो आज सिखर गिरको	...	५०५
४०३	सिद्धगिरीजीको दरशण करले ...	...	५०५

४०४	मौढे अपणे रंगमें रंगदे ...	५०५
४०५	मेरे पारस प्रज्जुजीके रंगमंरुपमें ...	५०५
४०६	रंग मज्यो जिनद्वार चावो खेलिये होरी	५०६
४०७	नेमजीसें कहियो मोरी ...	५०६
४०८	माहाराजा तोरे मंदिरमें वरसे रंग ...	५०६
४०९	तोरी अंगिया वणी हे सुरंग ...	५०६
४१०	चित्तमणि चित्त ध्यावो रे ...	५०६
४११	मत मारो पिचकारी रे ...	५०६
४१२	नेम मिले तो वातां कीजिये ...	५०७
४१३	आतमतत्व विचारो ज्ञानसें ...	५०८
४१४	लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी ...	५०८
४१५	दर्शन विन जीव संसार जन्म्यो ...	५०८
४१६	मत गोमो माने यूँही रे कोइ चूक बतावो	५०९
४१७	अटक्यो चित्त हमारो री जिनच० ...	५०९
४१८	मंगल राजै गिरनार... ...	५१०
४१९	मंगलकलश ...	५१०

### ॥ तपस्याविधि स्तवन संग्रह ॥

४२०	पांच कल्याणक टीप ...	५१०
४२१	पांच कल्याणक विधि ...	५१३
४२२	पखवासेको स्तवन... ...	५१४
४२३	पखवासा तप विधि... ...	५१६
४२४	दश पञ्चरूपाण स्तवन ...	५१६
४२५	दश पञ्चरूपाण तप विधि ...	५१९
४२६	वीश स्थानक तप स्तवन ...	५१९
४२७	वीश स्थानक तप करण विधि ...	५२१

४२८	वीश स्थानक गुणना नर काजसग्न प्रमाश	५२२
४२९	वीश स्थानक मंरुल पूजन विधि	५२४
४३०	रोहणी तप स्तवन...	५२९
४३१	रोहणी तप विधि	५३१
४३२	ठम्मासी तप स्तवन...	५३३
४३३	ठम्मासी तप विधि...	५३४
४३४	वारे मासी तप स्तवन	५३४
४३५	वारे मासी तप विधि	५३५
४३६	अठारस लब्धि स्तवन	५३६
४३७	अठारस लब्धि तप विधि	५३८
४३८	चौदे पूर्व स्तवन	५३८
४३९	चौदे पूर्व तप विधि...	५४०
४४०	तिलक तप स्तवन	५४१
४४१	तिलक तप विधि	५४२
४४२	शोलिये तपका स्तवन	५४३
४४३	शोलिये तपकी विधि	५४३
४४४	पैतालीश आगम तप विधि तथा गुणना	५४४
४४५	पैतालीश आगम स्तवन	५४५
४४६	इग्यरै गणधर तप विधि	५४८
४४७	११ गणधर नाम गुणना	५४८
४४८	सर्व तपस्या गुरु पास ग्रहण करण विधि	५४९
४४९	सर्व तपस्या पारण विधि	५५१
४५०	उपधान तप स्तवन...	५५१
४५१	संघ मालारोपण विधि:	५५३
४५२	संवमालाकी देववन्दन विधी	५५४

४५३	उपधान तप नित्यकर्तव्यता ... ..	५५७
४५४	उपधान तप विधि ... ..	५५९
४५५	उपधान तप प्रवेश विधि ... ..	५६१
४५६	उपधान तप उत्क्षेप विधि ... ..	५६२
४५७	वाचना विधि: ... ..	५६३
४५८	तप संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधि ... ..	५६३
४५९	पद्मिपुत्रा विगय तप पारण विधि: ... ..	५६३
४६०	कृमाश्रमणादि प्रज्ञात संध्या पदिलेहण विधि: ... ..	५६४
४६१	उपधान तप विवरण गाथा ... ..	५६६
४६२	रुषिमंमल मंमलपूजा विधि ... ..	५६६
४६३	शांतिके पूजा विधि: ... ..	५६८
४६४	पंचतीर्थी आरती ... ..	५७०
४६५	चक्रेश्वरी आरती ... ..	५७१
४६६	चोपम खेलण सिझाय ... ..	५७१
४६७	सेत्रुंज खेलण सिझाय ... ..	५७२
	॥ राग रागणी सरस स्तवन संग्रह १०१ ॥	
४६८	टुक निजर महर्दी क० ... ..	५७२
४६९	लोक चवदके पार किनारे ... ..	५७३
४७०	सखी सब बनठन ... ..	५७३
४७१	हो जिन तेमँ दरशापर० ... ..	५७३
४७२	म्हारा रुषज्ज जिनंढने ग० ... ..	५७३
४७३	मन लीनो हमारो जिन चरणारे ... ..	५७४
४७४	अजित२ जिन ध्यान ... ..	५७४
४७५	यह अरजी मौरी सहीयां ... ..	५७४
४७६	मुजरो मानी लीजे हो गो० ... ..	५७४

४७३	तुं मैना प्रभु इण दिल वसणावे	...	५७४
४७४	हम जाणत हे तुम तारोगे	... ..	५७५
४७५	पंथीना पंथ चलेगो	... ..	५७५
४७६	तेवीशमा जिनराज जोमे धारे कोण जुमेगो	...	५७६
४७७	केसें काज सेरे माहाराजविन केसें०	...	५७६
४७८	राजरी बधाई चाजैवै	... ..	५७६
४७९	मोतनकीमाला जिनगल सोहे...	...	५७६
४८०	रहे तुम आज क्युं जीवन डुराय	...	५७६
४८१	हे माय बांकनी करमगति जाय न कही	...	५७६
४८२	म्हांने प्यारो लागेवै जी धारो उपदेश	...	५७६
४८३	मेरो पिया परसंग रमत हे	... ..	५७७
४८४	वरपित वचन ऊरी०	... ..	५७७
४८५	या घरीमें रंग०	... ..	५७७
४८६	चिहुं नर वदरिया वरसे	... ..	५७७
४८७	मोरवा पपइया बोले	... ..	५७८
४८८	समज नर जीवण धारो	... ..	५७८
४८९	मत कर मान गुमान	... ..	५७८
४९०	निश दिन जोउं धारी वाटनी०	...	५७८
४९१	आज तो हमारे जाग्य वीरप्रभु आए हे	...	५७९
४९२	बावरो रे आज मनवो मेरो	... ..	५७९
४९३	रूपज विहारी धारीतो ठवि न्यारी हो	...	५७९
४९४	सुण मन होनहार न टरे रे	... ..	५७९
४९५	सहियोरी मिल चालो प्रभु पूजन काज...	...	५८०
५००	मनवा जिनंद गुण गाय रे	... ..	५८०
५०१	चलो देखोरी मधुवनको राव...	...	५८०



५०२	राखूं रे हमारा घटमें	...	...	५००
५०३	तेरे दरशको चाह लग्यो	...	...	५००
५०४	थारे मुखमारी हो वारी राज...	...	...	५०१
५०५	एसी विध तेने पाई रे	...	...	५०१
५०६	मोहि अपणो कर जाणो प्र०	...	...	५०१
५०७	वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें	...	...	५०१
५०८	जोर जयो अब जाग बावरे	...	...	५०१
५०९	जाग रे सब रैण विहाणी०	...	...	५०१
५१०	सांवरो सलूनो सखी...	...	...	५०१
५११	आज रुबज घर आवै	...	...	५०३
५१२	अंगण कलष फड्योरी	...	...	५०३
५१३	जुगेने मोरा आतमराम	...	...	५०३
५१४	जज मन नानिनंदन देव	...	...	५०३
५१५	आवो नेम रह जावो सदन	...	...	५०४
५१६	कीरतीवाग मन प्रेम लाग	...	...	५०४
५१७	अधम जग काम जये अगीवान	...	...	५०४
५१८	प्रभु तेरी सूरतिया लागे जखी...	...	...	५०५
५१९	आयो सही अब जाबं कहां	...	...	५०५
५२०	धरु२ पल२ ढिन२ निशदिन...	...	...	५०५
५२१	सुमतानें क्या कर कारा रे	...	...	५०६
५२२	तुम तो जले विराजो जी ॥ शिखर गिरि स्त०	...	...	५०६
५२३	शिखर गिरिंइ जुहारो ॥	...	...	५०६
५२४	सांवरिया में दीगो दरश तिहारो ”	...	...	५०७
५२५	त्रिभुवन नायक वीरजी ॥ पावापुरी स्तवन	...	...	५०७
५२६	निरख हीया हरख जरे ॥ चंपापुरी स्तवन	...	...	५०८

५१७	में सुव देखयो गोनीपारसको...	...	५८९
५२८	किरपा करो रे गोनीपाश जिनेसर	...	५८९
५२९	मुजरा साहिव मुजरा साहिव...	...	५८९
५३०	घंट वाजै घननननन...	...	५९०
५३१	निरंजन सांझ्यां रे ...	...	५९०
५३२	एसे सहर विच कोनसा दिवान हे	...	५९०
५३३	आय रहो दिलवागमें	...	५९०
५३४	रहोर रे यादव दो घनिया	...	५९०
५३५	विराजो बंगलामें	...	५९१
५३६	किण देखा हमारा स्वामी	...	५९१
५३७	अवधू सो जोगी गुरु मेरा	...	५९१
५३८	अवधू एसो ज्ञान विचारी	...	५९१
५३९	हंसा तूं मानसरोवर वासी	...	५९२
५४०	बेरश नही आवै अवसर०	...	५९२
५४१	ये जिनजोके पाये लाग रे	...	५९३
५४२	चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो	...	५९३
५४३	अवधू निरपह विरला कोई	...	५९३
५४४	चलणा जरूर जाकुं ताकुं केसा सोचना	...	५९३
५४५	समऊ परी मोहे समऊ परी...	...	५९४
५४६	जलांजी मेरो नेम चढयो गिरनार	...	५९४
५४७	रतना सफल जई मेंतो गुण०	...	५९४
५४८	राजुत्र पुकारे नेम पिया	...	५९४
५४९	कोन कित्तीको मित्त	...	५९५
५५०	आदीतर जिनराज ...	...	५९५
५५१	गोनी गाईये मन रंग	...	५९५

५५२	हारे हूं तो मोह्यो रे लाल ... ..	५९५
५५३	प्रज्जुजी से लागो मारो नेह ... ..	५९६
५५४	खतरा दूर करणा ... ..	५९६
५५५	रे जीव जिनधर्म कीजीये ... ..	५९६
५५६	सोइर सारी रैन गमाई ... ..	५९७
५५७	चंदा प्रज्जुजीसे ध्यान रे ... ..	५९७
५५८	ते शिवपुर गये रहे रे ... ..	५९७
५५९	म्हारे जले रे ऊगो बै धामो आजनो रे	५९७
५६०	धन२ ते दिवाली मारे आजनी रे ... ..	५९८
५६१	धन३ आजूनो दिन रलियामणो रे ... ..	५९८
५६२	म्हारे आज आनंद वधामणा रे ... ..	५९८
५६३	सवालाख टकानी जाय एक घन्टी ... ..	५९८
५६४	आवो२ने प्यारा नेम अम धर ... ..	५९९
५६५	मनमोहन पारस प्यारारे ... ..	५९९
५६६	मेरे मन जावनकी बबि नीकीजी ... ..	६००
५६७	साहिब सुगुण सुपारससे ... ..	६००
५६८	सांवरिया पासजी सुख दीजे... ..	६००
५६९	तुम जजो रुषज प्रज्जु प्यारा जग० ... ..	६०१

॥ अथ लावण्या संग्रह ३४ धन १० ॥

५७०	अगरुदूं२ वजै चौधमा ... ..	६०२
५७१	आखातीजकी लावणी ... ..	६०४
५७२	दीवालीकी लावणी ... ..	६०५
५७३	सीमंधरजिन लावणी ... ..	६०६
५७४	अजीमगंजमें सांवरियाजीकी लावणी	६०७
५७५	नेमनाथ मेरी अरज सुणीजै ... ..	६०८

५७६	तुम जपो मंत्र नवकार ॥ जिनदाशादि कृतधन	६०९
५७७	चल चेतन अब उठकर० ... ..	६१०
५७८	तुम जजो जिनेसर देव ... ..	६११
५७९	तुं कुमति कलेसण नार लगी क्युं केहे...	६१२
५८०	तुम तजो जगतका ख्याल ... ..	६१२
५८१	दे गया दगा दिलदार ॥ नेमजीकी लावणी	६१३
५८२	मुलक बीच मगसो पारसका... ..	६१४
५८३	सुकुतकी वात तेरे हाथ रती ना रही रे...	६१५
५८४	तुम तज कर राजुध नार ... ..	६१५
५८५	आप समऊका घर नहीं पाया ... ..	६१६
५८६	नमुं२ में गुरु नियंघकूं ... ..	६१७
५८७	करूं२ में ऐसे सदगुरु ... ..	६१७
५८८	तजूं२ में उन कुगुरुकूं ... ..	६१८
५८९	यो जिनदाश जूठो रे जूठो ... ..	६१८
५९०	जब तन दोस्ती हे इह मस्ती ... ..	६१८
५९१	अरज हमारी सुणो दीनपति... ..	६१९
५९२	मुक्ति जाणेकी निगरी ... ..	६१९
५९३	अनुभव पद निगरी... ..	६२१
५९४	नेमकी जान बणी ज्ञारी ... ..	६२२
५९५	नेमनाथजीका चोमासा ॥ ठाई घटा ग०	६२३
५९६	सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ...	६२४
५९७	सऊ शोले सिणगार दुई दुसियार ...	६२६
६९८	चंदावदनी मुखसें कहती गिरनारीकुं० ...	६२७
६९९	कोइ देख्या रे हो सांवलिया सादिव ...	६२८
६००	सुणजो वातां राव सदाशिव... ..	६२८

६०१	कैशरीयानाथजीकी माहात्मकी लावणी	६२९
६०२	पार्श्वप्रभु आरती लावणी ... ..	६३४
६०३	आदि जिनेस कीयो पारणो ... ..	६३५
६०४	अजितनाथजीकी लावणी ... ..	६३५
६०५	पिया मेरा गिरनार सिधाए ॥ ने० ला० ... ..	६३६
६०६	दीवाली स्तवन ॥ धन२ मंगल एह सकलदिन	६३७
६०७	मारे दीवाली थई आज प्रभु मुख जोवाने	६३७
६०८	पोढोश जी रूपन्न विहारी ... ..	६३८
६०९	कीजे मंगल च्यार आज घर० ... ..	६३८
६१०	सिद्धाचल गिर जेटो रे जविजन ... ..	६३८
६११	जगतमें नवपद जयकारी ॥ लावणी ... ..	६३९
६१२	ध्यान धरो नवपदका चेतन ... ..	६४०
६१३	चलो सखी जिन मंदिरमें जग नवपद...	६४०
६१४	सांवरो लागे प्यारो प्रभु मनमोहनगारो ॥ होरी	६४१
६१५	आज सुरंग घन वरसत होरी... ..	६४२

॥ अथ बारे मासा ॥

६१६	मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें ... ..	६४२
६१७	नेमनाथजीका बारेमासा ... ..	६४४

॥ स्तोत्र गुटकर संस्कृतबंध ८ ॥

६१८	सकल मंगल केलि० शीतल० स्तोत्र ... ..	६४६
६१९	विशद गुण विचित्रं० पार्श्व० स्तोत्र ... ..	६४६
६२०	यस्य ज्ञान दया० शंखेश्वरपार्श्व स्तोत्र...	६४७
६२१	लक्ष्मी निदानं० पार्श्व० स्तोत्र ... ..	६४७
६२२	गोमीग्रामे० शंखेश्वरपार्श्व स्तोत्र ... ..	६४८
६२३	विशदसद्गुण० पार्श्व स्तोत्र ... ..	६४८

६२४	श्रीमत्पार्श्वजिनेश्व० पार्श्व स्तोत्र	...	६४९
६२५	आद्य श्रीरूपज्ञ० चतुर्विंश० स्तोत्र	...	६४९
६२६	मंगलाष्टक स्तोत्र	... ..	६५०
६२७	परमात्मा स्तोत्र	... ..	६५१
६२८	नमस्कार स्तोत्र	... ..	६५१

॥ अथ तपगद्य सामाचारी ॥

६२९	पुण्य प्रकाश आख्योपण स्तवन	...	६५२
६३०	जरहेसरनी सिद्धाय...	... ..	६५९
६३१	मन्दजिणाणं सिद्धाय	... ..	६६०
६३२	सकल तीर्थ वंदना	... ..	६६०
६३३	सकलार्हत्स्तोत्र	... ..	६६१
६३४	शांतिकर स्तोत्र	... ..	६६३
६३५	सीमंधर चैत्यवंदन ॥ सीमंधर परमात्मा		६६४
६३६	श्रीसीमंधर जग धणी	... ..	६६५
६३७	सिद्धगिरी चैत्यवंदन ॥ विमल केवल०	...	६६६
६३८	श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र	... ..	६६६
६३९	परमात्मा चैत्यवंदन० परमेश्वर परमात्मा		६६६
६४०	सुणो चंदाजी सीमं० सीमंधर स्तवन	...	६६६
६४१	आंखर्माथे में आज० सेत्रुंजा स्तवन	...	६६७
६४२	विमलाचल नित वंदिये ॥ स्तवन	...	६६७
६४३	पंचतीर्थ संस्कृतवद स्तवन	... ..	६६८
६४४	नेम राजुल सिद्धाय ॥ पित्रजी२ नाम	...	६६८
६४५	आऊखो तूटाने सांधो० सिद्धाय	...	६६९
६४६	आदि देव अरिहंत नमूं ॥ पंचतीर्थ चैत्यवं०		६७०
६४७	दुविध धर्म जिन न० दूज चैत्यवंदन	...	६७०

६४८	त्रिगुणे वैठा वीर जिन ॥ ग्यानपंचमी चैत्यवं०	६७०
६४९	महा सुदि आठमने० अष्टमी चैत्यवंदन	६७१
६५०	शाशन नायक वीरजी० इग्यारश चैत्यवंदन	६७२
६५१	सीमंधर जिनवर स्तुति० ... ..	६७२
६५२	श्रीसीमंधर देव सुहंकर ॥ शोय ...	६७२
६५३	दिन सकल मनोहर ॥ बीजनी शोय ...	६७३
६५४	श्रावण सुदि दिन पंचमी ए ॥ पांचमनी शोय	६७३
६५५	मंगल आठ करी० आठमनी शोय ...	६७४
६५६	एकादशी अति रूवनी ॥ इग्यारश शोय	६७५
६५७	स्नातस्या प्रति० चवदशनी शोय ...	६७५
६५८	कळयाणकंदनी शोय... ..	६७६
६५९	श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ० शोय ...	६७६
६६०	महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी ॥ शोय	६७७
६६१	पंचैदिय संवरणो ... ..	६७७
६६२	सामाश्यवयजुत्तो ॥ सामायक पारवागाथा	६७८
६६३	सागरचंदो ॥ पोसह पारवा गाथा ...	६७८
६६४	जगचिंतामणि चैत्यवंदन ... ..	६७८
६६५	अतीचारनी ८ गाथा... ..	६७९
६६६	विशाललोचन स्तुति ... ..	६७९
६६७	सुयदेवया जगवई ॥ स्तुति ... ..	६८०
६६८	जीसे खित्ते साहू ॥ क्षेत्रदे० स्तुति ...	६८०
६६९	सामायक लेवा विधि ... ..	६८०
६७०	सामायक पारवा विधि ... ..	६८१
६७१	दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८१
६७२	राई प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८२

६७३	परकी प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८५
६७४	चन्द्रमाशी प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८७
६७५	संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि ... ..	६८७
६७६	परिलेहण करवानी विधि ... ..	६८७
६७७	पञ्चस्काण पारवानी विधि ... ..	६८८
६७८	पुरस्कलवद् विजये लयो ॥ श्रीमंधर स्तवन	६८८
६७९	बीज तिथीनो स्तवन वमो ॥ प्रणमी शार०	६८९
६८०	पंचमी वृद्ध स्तवन ॥ सुत सिद्धार्थ० ...	६९०
६८१	आठमनुं वृद्ध स्तवन ॥ मारे गम ध० ...	६९६
६८२	एकादशी वृद्ध स्तवन ॥ जगपतिनायक०	६९८
६८३	माहावीरस्वामीनुं हालरिथुं ... ..	७०१
६८४	निंदा म करज्यो कोईनी० सिझाय ...	७०३
६८५	देववांदवानो विधि ... ..	७०४
६८६	ज्ञानविमलजी कृत चन्द्रमाशी देववंदन...	७०४
	आदिनाथ चै० श्रौय स्तवन ... ..	७०४
	अजितनाथ चैत्यवंदन, श्रौय ... ..	७०५
	संज्ञवनाथ, अज्ञिनंदन चैत्यवंदन श्रौय...	७०६
	सुनतिनाथ, पद्मप्रज्ञ, सुपार्श्वनाथ चै० श्रौय	७०७
	चंद्रप्रज्ञ, सुविधिनाथ, सितलनाथ चै० श्रौ०	७०८
	श्रीश्रेयांस, वासुपूज्य, विमलनाथ चै० श्रौ०	७०९
	धर्मनाथ, शांतिनाथ चै० श्रौय स्तवन...	७१०
	कुंश्रुनाथ, अरनाथ, महिनाथ चै० श्रौय	७११
	मुनिसुव्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ चै० श्रौय	७१३
	पार्श्वनाथ चैत्यवंदन श्रौय स्तवन ...	७१४
	महावीरस्वामी चैत्यवंदन श्रौय स्तवन	७१६



शाश्वता अशाश्वताजिन चैत्यवंदन श्रौय	७१७
नीलमती रायण तरु तले ॥ सिध्वाचल स्तवन	७२०
नेम निरंजन देव के ॥ गिरनार स्तवन...	७२०
आवो आवोने राज अर्बुदगिरी स्तवन...	७२२
अष्टापदगिरी जात्रा करणकुं ॥ अष्टा० स्तवन	७२२
समेतशिखरगिरी जेटीये रे ॥ शि० गि० स्त०	७२३
६८४ सत्तरजेदी जिन पू० पर्यूषण श्रौय ...	७२४
६८८ नेमनाथजी वारेमाशो ॥ शीयाले खाटूं०	७२४
६८९ अपठरा करती आरती जिन आगे ...	७२६
६९० पहली तो समरुं हो० नेम राजेसती सिझाय	७२६
६९१ गोतमस्वामी पूठा करी ॥ मुक्ति वर्णन सिझाय	७२८
६९२ नेमनाथजीरो सिलोको ... ..	७२९

॥ अथ चोढालीया संग्रह ॥

६९३ विजयसेठ विजयासेवाणी चोढा० ...	७३१
६९४ इखुकार राजा जृगु प्रोहितरो चो० ...	७३३
६९५ दान शील तप ज्ञाव चोढालीयो ...	७३६

॥ अथ ठंद संग्रह ॥

६९६ सेवो वीरनें चित्तभां नित्य धारो० ...	७४३
६९७ नवकार ठंद ॥ वंठित पूरे विविधपर० ...	७४५
६९८ घघरनीसाणी ॥ सुख संपत्ति० ...	७४७

॥ दादा गुरुदेव स्तवन संग्रह ॥

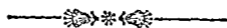
६९९ विलशै रुद्रि समृद्धि० ... ..	७५१
७०० वर लाभ विलाश० श्रीजिनदत्त० ...	७५२
७०१ रिसह जिनेसर० कुशलसूरि० ...	७५३
७०२ आयो सहु श्रीसंघ ... ..	७५४

७०३	सदगुरुजी थे सांजलो	...	...	७५५
७०४	दादा चिरंजीवो	...	...	७५६
७०५	गाजै जिनकुशल गनालै	...	...	७५६
७०६	सदाइ मेरे श्रीजिनकुशल गुरु	...	...	७५७
७०७	आयोश जी समरंता दादो०	...	...	७५७
७०८	जाया नक्तिसूं पूर रहो रे	...	...	७५८
७०९	पूजो नवि हितसुं कुशल सुरिंद	...	...	७५८
७१०	आज करो रे उवाह श्रीजिनकुशल	...	...	७५८
७११	में निरख्या गुरु महाराज	...	...	७५९
७१२	चरणकी चरणकी वारीजा०	...	...	७५९
७१३	अव मोहि दरशण दीजै कु०...	...	...	७६०
७१४	कुशल गुरु कुशल करो नरपूर	...	...	७६०
७१५	सदगुरु पूजण जावस्यां	...	...	७६०
७१६	श्रीसदगुरुजीसैं वीनती रे	...	...	७६१
७१७	सदगुरु दीनदयाल...	...	...	७६१
७१८	सुगुरु मेरी वेनियां पार०	...	...	७६२
७१९	देख्या में दरश तिहारा	...	...	७६३
७२०	सदा सदाइ कुशल सुरिंद०	...	...	७६३
७२१	जिनकुशल सुरिंद गुरु सदा नमो	...	...	७६४
७२२	वत्रपती थारे पाय नमें जी	...	...	७६४
७२३	सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी...	...	...	७६४
७२४	सदगुरुके चरण चित लाय२...	...	...	७६५
७२५	होरी खेलो नविक सदगुरुके संग	...	...	७६५
७२६	गुरु पूज रचो रे सुजानी	...	...	७६५
७२७	सदगुरुजीके द्वार मची होरी...	...	...	७६६

७१८	केसैश् अवसरमें गुरु रस्की लाज०	...	७६६
७२९	श्रीजिनकुशल सूरीसर साहिब...	...	७६६
७३०	श्रीगणधर गुरु कुशल सूरिंदके	...	७६६
७३१	कुशल गुरु देखके दरशाण	... ..	७६७
७३२	कुशल गुरु दरशन दीजे हो	... ..	७६७
७३३	पूजो नजो रे नार्ई...	... ..	७६७
७३४	हूंतो अरज करुं करजोरुनें	... ..	७६७
७३५	सांगानेर विराजै	... ..	७६८
७३६	सद्गुरुजी म्हाराण लावणी	... ..	७६८
७३७	मोरी सखी सहेढ्यांण लावणी	...	७६९
७३८	कामित कांमगवी ॥ श्रीजिनचंड० स्तवनं		७७०
७३९	श्रीसौजाग्य सूरी स्तवनं	... ..	७७०
	॥ देशना वधावा संग्रह ॥		
७४०	वीरजी दिये ठे देशना रे	... ..	७७१
७४१	गुणनिधि श्रीजिनचंड मुणिंदा	...	७७१
७४२	श्रीजिनचंड सूरीसरु	... ..	७७२
७४३	एहवा सद्गुरु वांदिये	... ..	७७३
७४४	सुखकर स्वामी श्रीतीर्थिकरु रे	...	७७३
७४५	मोतीयने मेह वरसीयो	... ..	७७५
७४६	जिनशासन जयकारी ॥ गुंढली	...	७७५
७४७	सुणिये सद्गुरु देशना ए सहियां ॥ गुंढली		७७६
७४८	सुगुरु म्हारा ज्याजनी पर तारो	...	७७७
७४९	वृहत् खरतर गच्छ सुद्ध सिद्धांत सामाचारी		७७७

॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

## ॥ रत्नसमुच्चय ॥



### ॥ मंगलाचरण ॥



ॐकारं विंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायंति योगिनः ॥

कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

### ॥ कवित ॥

ॐकार उदार अगम्भ अपार । संसारमें सार पदारथनांमी ॥

सिद्धिः समृद्धिः सरूप अनूप । भयो सबही सिर नूप सुधामी ॥

मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें । जाकुं कियो धुर अंतरजांमी ॥

पंचही इष्ट वसे परमेष्ट । सदा भ्रमसी करै ताहि सलामी ॥ १ ॥

नमो निसदिस नमायके सोस । जपो जगदीश सही सुखदाता ॥

जाकी जगतमें कीरति जागत । भागतहे सब ईत असाता ॥

इंद नरिंद दिणिंद फुणिंद । नमाएहें वृंद आनंद विधाता ॥

धोरी धरम्मको धीर धराधर । ध्यान धरे भ्रमसी गुण ध्याता ॥२॥

### ॥ अथ गुरुमहिमा नमस्कार ॥

महिमा जिणकी महिमें १ । जिनदीनो महा इक ग्यान नगीनो ॥

दूर भग्यो भ्रम सो तम देखत । पूर जग्यो परकास नगीनो ॥

देतहि देतहि दूनो वधै । अरु जग्योहि खूटत नांहि खजीनो ॥

एसो पसाय कियो धर १ । भ्रमसो पदपंकज लीनो ॥१॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥

सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥

विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥

सरस्वती मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥

हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरं सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा ।

रागे आए लागे पाए जागे मोटी माईहे ॥

चंगी रंगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।

हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकूं गाईहे ॥

हंसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।

लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥

सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।

एसी माता शाता दानी धर्मसीहें ध्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ इ उ ऊ रु ऋ नृ ए ऐ उ औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क । झ ॥ क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ कृ गृ तृ दृ ष्टृ जृ वृ ष्टृ शृ सृ ह्र ॥ क्य ख्य ग्य घ्य ज्य व्य व्य व्य व्य एय त्य व्य ध्य न्य प्य ज्य म्य र्य व्य र्य व्य स्य ह्य क्ष्य ॥ क्र प्र ब्र ज्र ल्र द्र प्र्र अ्र ब्र श्र स्र ह्र ॥ क्क्व एक्क्व त्क्व द्व्क्व न्व्क्व म्व्क्व स्क्व श्व्क्व ष्व्क्व र्व्क्व ॥ क्क्व श्र्क्व ष्क्व ष्क्व ॥ क्क्व ग्क्व ध्क्व ञ्क्व एक्क्व झ्क्व न्क्व श्क्व ष्क्व स्क्व ॥ क्क्व ख्क्व ग्क्व घ्क्व ङ्क्व ॥ क्क्व र्क्व भ्क्व म्क्व ङ्क्व ॥

ढ ढ इ ढ ण न त्य ञ ह ढ न्न ॥ प्प प्फ व्य ञ्प म्म व्य र ल्ल  
 व श्श प्प स्स ॥ ज्य त्स्स्य प्ल ॥ १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ ।  
 ७ । ८ । ९ । १० । १ । १००००० ॥ १००००० ॥ १०००००  
 ॥ १०००००० ॥

स्वस्तिश्रो कृष्णवृहस्पति । षिन्द्राङ्गास्युश्च स्वस्करा ॥  
 पृथ्वीभृद्वल्गुश्रेष्ठात्म । त्रम्यास्तेहृद्यज्ञसिदा ॥

॥ अथ शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥  
 अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥  
 विद्वत्त्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥  
 स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥  
 पंक्तिच गुणा सर्वे । मूर्खे दोषा हि केवलं ॥  
 तस्मात्मूर्ख सहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥  
 नक्षत्रज्ञूपणं चंद्रो । नारीणां ज्ञूपणं पतिः ॥  
 पृथिव्या ज्ञूपणं राजा । विद्या सर्वस्य ज्ञूपणं ॥ ४ ॥  
 माता शत्रुः पिता वैरी । वालो येन न पाठितः ॥  
 न शोचते सन्नामध्ये । हंसमध्ये वको यथा ॥ ५ ॥  
 लालयेत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि तारुयेत् ॥  
 प्राप्ते तु पौरुशे वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥  
 वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खशतान्यपि ॥  
 एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणोपि च ॥ ७ ॥  
 अविद्यं जीवितं ज्ञून्यं । दिशः ज्ञून्यास्त्ववांधवा ॥  
 पुत्रहीनं गृहं ज्ञून्यं । सर्वज्ञून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥  
 न च विद्या समो वंधु । न च व्याधिसमो रिपुः ॥  
 न चापत्यसमः स्नेहो ॥ न च दैवात्परंबलं ॥ ९ ॥  
 किं तथा क्रियते धेन्वा । यानसूतेन दुग्धदा ॥

कौऽर्धःपुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न ज्ञेयमात् ॥ १० ॥

उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकौपाय न ज्ञांतये ॥

पयःपानञ्जुंगानां । केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥

मातृवत्परदारश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥

आत्मवत्सर्वज्ञूतानि । विद्वन्ते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्दशादौस्वराः दशसमाना  
तेषांद्वाद्वान्योऽन्यस्यसवर्णो पूर्वोह्रस्वः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वर्जो-  
नामी एकारादीनिसंध्यहराणि कादीनिव्यंजनानि तेवर्गापंचपंच  
वर्गाणांप्रथमद्वितियौ शषसश्चघोषाः घोषवंतोऽन्ये अनुनासिकाः उ-  
त्रणनमाः अनतस्त्राः यस्त्रवाः उष्माणः शषसहाः अःइतिविसर्ज-  
नीयः कःइतिजिह्वामूलीयः पःइत्युपष्मानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्व-  
परयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरं व्यंजनं परं वर्णं नयेत् अनतिक्रमयत्-  
विश्लेषयेत् लोकोपचारात्ग्रहणसिद्धिः इतिसंधौसूत्रतः प्रथमश्चरण-  
समाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अहतो भगवंतं इंद्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥

आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥

श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । रत्नत्रयाराधकाः ॥

पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं । कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलं कुर्वंतु )

एहजो पंचपरमेष्ठिपदहे सो हमेसां तुमञ्जव्यजीवोंकूं मंगलकरो, के-

सेकहे पंचपरमेष्ठि (अहंतो जगवंत इंद्रमहिता) प्रथम परमेष्ठि श्री

अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवैरियोंकों हणो सो अरिहंत कहीजै,

फेर श्री अरिहंत केसेहे, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहे फेर अरि-

हंत केसेकहे जगवंतहे जगजब्दके अनेकार्थ कोषमें चौदे

अर्थदे ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६  
 रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य  
 १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसे दो अर्थकू वर्जकर बाकी १५  
 अर्थ अरिहंत जगवंतमेंदे एकतो सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो  
 टालकै फेर श्री अरिहंत जगवंत कैसेकहें ( इंद्रमहिता ) चोसठ इं-  
 द्रोसें पूजनीक वारेगुणोसें विराजमानहै सो वारे गुण एतेहें प्रथ-  
 मतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहै रोग उर पत्नीना उर मैलर-  
 हित वना खसवोदार सरीर होताहै १ सासोश्वासमें कमलके  
 फूल जैसी खसवो होतीहै २ लोही उर मांस गत्रके दुध जैसा  
 स्वेत होताहै ३ आहार नीहारकी विधि अदृश्य होतीहै अर्थात् चर्म  
 चहुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह च्यार अतिशयगुण जन्मसेंही  
 होताहै उर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न जये वाद होताहै अशो-  
 कवृद्ध १ जगवानके सरीरसें वारेगुणा ऊंचा होताहै जिसकी गथा  
 बैठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहै १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोके स-  
 मूह गोमे पर्यंत पंचरंगेफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे  
 गिरे । बीट नीचा रहे पांखनी ऊपर रहे २ । ( दिव्यध्वनि ) एक  
 योजन तक देवता मनुष्य तिर्यंच सब जीव अपणी २ ज्ञापामें  
 यथावस्थित समजे एसा उनोंको मालम देवेके जगवान हमारी  
 बोलीमेंही उपदेश दे रहेहें सोही वात सिद्धांतोंमें कहाज्नीहै ॥  
 गाथा ॥ एगाइंगिराणोगे । संदेहेदेहिणंसमंछित्ता ॥ त्रिदुअणमणुं-  
 सासंता । अरिहंताहुंतिमेसरणं १ । ३ ॥ श्वामर ४ जगवानके  
 दोनों तरफ इंद्र चम्बर ढोलता रहे ४ ॥ आतनश्च ५ जगवंतके बैठ-  
 णेकू इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासण रहै ५ ॥ ज्ञामंरुलं  
 ६ जगवानके पितामी भामंरुल रहे जिससें जव्यजीव जगवानके  
 तरफ देखसके जगवंतके च्यारमुख व्यासंदितामें दीखाइदेवे भग-  
 वान पर्वदिशामें मुख करके बैठे उर तीन दिसामें जगवंतकी प्र-



तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन भगवानके अतिशयसे  
 च्यारोंहीदिसामें बारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेजये दि-  
 खाइदेवे ६ ॥ उंडुनी ७ आकाशमें देव ते देवउंडुनीवाजिप्र वजावे  
 ७ ॥ रातपत्रं ८ जगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन ठत्र  
 रहै ८ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे ऐसे अरिहंत देवाधिदेव  
 चोतीस अतिशय विराजमान पैंतीस वचनगुण सोजित एकहजार  
 आठ लक्षणमलंकृत अठारे दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलो-  
 क्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्त्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें के-  
 वलज्ञान केवलदर्शनसे लोकालोकका ज्ञाव देखतेजये पृथ्वीमंजल-  
 पर ज्ञव्यजीवोंके मनोरथ पूरणथके विचरतेहैं ऐसे अनंत गुणसे  
 विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमें सदा मंगल करो ? ॥  
 ( सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता ) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार  
 हुज कैसेकहें श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्टकों शुक्लध्यानरूप  
 अग्निसे ज्ञस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तजये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अ-  
 नंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक  
 जयादिकसे रहित चवदै राजलोकमें सब जीवोंके मनोगतभाव एकस-  
 मयमें जाणते नर देखतेथके लेकिन आत्मगुणोंमे मग्न रहेजये ऐसे  
 श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ ( आचार्या-  
 जिनशासनोन्नतिकरा ) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नम-  
 स्कार हुज कैसेकहे श्रीआचार्यमहाराज बत्तीसगुणोंसे विराजमान  
 मुक्तिमार्गके साधक कर्मशत्रूकेविराधक पंचाचारपालक अबुधजीव-  
 प्रतिबोधक कृमागुणजंभार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिन-  
 शासनके उन्नतिके करणेवाले ऐसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहा-  
 राज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ ( पूज्याजपाध्यायका श्रीसि-  
 द्धांतसुपाठका ) चोथे परमेष्ठिपदमें श्रीजपाध्यायमहाराजकूं नम-  
 का हुज कैसेकहे श्रीजपाध्यायमहाराज द्वादशांगी सूत्रार्थके जा-

एकार नयनिक्षेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेपढाणेवाले २५ गुणोंसे विराजमान ऐसे श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ४ ॥ ( मुनिवराःरत्नत्रयाराधकाः ) पंचम परमेष्ठिपदमें सरव साधूमुनिराजजी केसेकहें श्रीसाधूमुनिराज ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ इन तीन रत्नोंके आराधक पांचे सुमतेसमता तीने गुप्ते-गुप्ता वक्तायके पीहर कुरकीसंबल चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक ऐसे सब साधूमुनिराज सत्ताईस गुणोंसे सोजित श्रीसंघमें सदा मंगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोके कल्याणार्थे ॥

## ॥ अथविंशतिजिननाम ॥

॥ अतीतचोवीसी ॥

- |                    |                        |
|--------------------|------------------------|
| १ श्रीकेवलज्ञानीजी | २ श्रीनिर्व्वाणीजी ॥   |
| ३ श्रीसागरजी       | ४ श्रीमहायसजी          |
| ५ श्रीविमलदेवजी    | ६ श्रीसर्वानुभूतिजी    |
| ७ श्रीश्रीधरजी     | ८ श्रीदत्तस्वामीजी     |
| ९ श्रीदामोदरजी     | १० श्रीसुतेजनाथजी      |
| ११ श्रीस्वामीजी    | १२ श्रीमुनिसुव्रतजी    |
| १३ श्रीसुमतिनाथजी  | १४ श्रीशिवगतिजी        |
| १५ श्रीअस्तागजी    | १६ श्रीनमिश्वरजी       |
| १७ श्रीअनिलनाथजी   | १७ श्रीयशोधरजी         |
| १८ श्रीकृतार्थजी   | १८ श्रीजिनेश्वरजी      |
| १९ श्रीशुद्धमतीजी  | १९ श्रीशिवकरजी         |
| २० श्रीस्यन्दनजी   | २० श्रीसंप्रतिस्वामीजी |

॥ वर्त्तमानचोवीसी ॥

- |                   |                    |
|-------------------|--------------------|
| १ श्रीऋषभदेवजी    | २ श्रीअजितनाथजी    |
| ३ श्रीसंज्ञवनाथजी | ४ श्रीअजिनंदनजी    |
| ५ श्रीसुमतिनाथजी  | ६ श्रीपद्मप्रज्ञजी |

७ श्रीसुपार्श्वनाथजी	८ श्रीचंद्राप्रभूजी
८ श्रीसुविद्यनाथजी	१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रेयांसजी	११ श्रीवासुपूज्यजी
१३ श्रीविमलनाथजी	१४ श्रीअनंतनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी	१६ श्रीशांतिनाथजी
१७ श्रीकुंभुनाथजी	१८ श्रीअरनाथजी
१९ श्रीमद्विनाथजी	२० श्रीमुनिमुत्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी	२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्श्वनाथजी	२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी	२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीसुपार्श्वजी	४ श्रीश्वयंप्रभूजी
५ श्रीसर्वानुभूतिजी	६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीहृदयप्रभुजी	८ श्रीपेढालजी
९ श्रीपोट्टिलप्रभूजी	१० श्रीशतकीर्त्तिदेवजी
११ श्रीसूत्रतनाथजी	११ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कषायदेवजी	१४ श्रीनिष्फुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी	१६ श्रीचित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी	१८ श्रीसंवरनाथजी
१९ श्रीयसोधरजी	२० श्रीविजयनाथजी
२१ श्रीमद्विप्रभूजी	२१ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी	२४ श्रीभद्रंकरजी

॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमंधरजी	२ श्रीयुगमंधरजी
३ श्रीबाहूजी	४ श्रीसुबाहूजी
५ श्रीसुजातजी	६ श्रीस्वयंप्रभूजी

७ श्रीऋषभाननजी	८ श्रीअनन्तवीर्यजी
९ श्रीसूरप्रज्ञजी	१० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी	१२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रवाहजी	१४ श्रीऋजुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रज्ञजी	१६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी	१८ श्रीमहाज्ञद्रजी
१९ श्रीदेवयशजी	२० श्रीअजितवीर्यजी

॥ च्यारसाश्वतातीर्थकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी	२ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिपेणजी	४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव ज्वन्ति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी	२ चंदनवालाजी
३ श्रीराजीमतीजी	४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी	६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी	८ श्रीशीताजी
९ श्रीसुज्ञद्राजी	१० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी	१२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीदवदंतीजी	१४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रज्ञावतीजी	१६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि बडी २ सतियोंको त्रिकाल २ वंदना ॥

॥ ॐपरमोष्ठिने नमः ॥

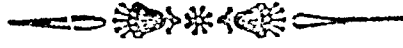
॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ एमो  
आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवञ्चायाणं ॥ ४ ॥ एमो दोए सव्वसा  
हूणं ॥ ५ ॥ एमो पंच एमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥  
॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ए ॥  
इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन वेर गुण के थापनाजीकी थापना  
करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥  
चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सदहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥  
॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पावुं ॥ १ ॥ प  
लावुं ॥ २ ॥ अनुमोडुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥  
॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकर-  
णसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीठें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने  
खना हो के तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इत्थामि खमासमणो वंदिनुं जावणिज्जाए निसीहिआए म  
एण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शांता सुखपृष्ठा ॥

॥ इच्छकार जगवन् सुहराइ, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निरा  
वाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोठोजी ? स्वामी शांता ठेजी ? इति ॥

॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारे गुरु कहे दे-  
वगुरु प्रसाद ॥

॥ पीठें नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अष्टुठि  
ठमि कहे पीठें खमासमण देकें इच्छाकारेण संदिस्तह जगवन्  
सामायिक लेवा मुहपत्ती पम्लिलेहुं ? गुरु कहे, पम्लिलेह. पीठें इच्छं  
कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पम्लिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सर्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥  
मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं. यह चार बोल  
मुहपत्ती खोलती विरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ द्वष्टिराग ॥ ३ ॥ परि  
हरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कदीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥  
॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान  
॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पम्लिले-  
हण नावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्र-  
विराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥  
कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंरुं ॥ १ ॥ वचनदंरुं ॥ २ ॥ काय-  
दंरुं ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पम्लिलेहण जिमणे हाथसे करणी  
॥ यह पच्चीस बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पच्चीस पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या  
॥ ३ ॥ ए तीनुं नीलाने मस्तकें परिहरुं ॥

॥ रुद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शाता गारव ॥ ३ ॥

ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशब्द ॥ १ ॥ नियाणाशब्द ॥ २ ॥ मित्रादंसण-

शब्द ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंजे परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लौज ॥ २ ॥ ए दोय मावे खंजे परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन मावे

हाथे परिहरुं ॥

॥ जय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंठा ॥ ३ ॥ ए तीन

जिमणे हाथे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेजकाय ॥ ३ ॥ ए

तीन मावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाजकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥ ३ ॥

ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुहपत्ति पन्निखेहणा संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीठें खमा होय कें इच्छामि खमासमणका पाठ कहे कें

इच्छाकरेण संदिस्सह जगवन् ॥ सामायिक संदिस्सावुं ? गुरु कहे

संदिस्सावेह ॥ पीठें इच्छं कहे कें फेर खमासमण दे कें इच्छाप ॥

५ ॥ सामायिक ठानुं ? गुरु कहे ठाणह ॥

॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देर थोमो जुकी तीन नव-

कार गणी इच्छाकरेण संदिस्सह जगवन् पसान करी सामायिक

दंरुक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंतें

सामाइयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चख्खाण ॥

॥ करेमि जंतें सामाइयं, सावळं जोगं पच्चख्खामि ॥ जाव

नयमं पज्जुवात्तामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेषं वायाए काएणं,

न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते पन्निक्कमामि निंदामि गरिहामि  
अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठे खमासमण दे के इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्  
इरियावहियं पन्निक्कमामि ॥ गुरु कहे पन्निक्कमह, पीठे इच्छं कही ॥  
इच्छामि पन्निक्कमिञ्चं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अय इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ इरियावहियं पन्निक्कमा  
मि ॥ इच्छं इच्छामि पन्निक्कमिञ्चं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए  
॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे वीयक्कमणे इरियक्कमणे  
॥ उता उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कन् संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे  
मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया वेइंदिया तेइंदिया चउरिंदि  
या पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अज्जिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टि  
या परिचाविया ॥ किलाभिया उदविया ठाणाउ ठाणं संकामिया  
जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्समिञ्चामि उक्कन् ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अय तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायञ्चित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं  
॥ विसद्धीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ णिग्वायणवाए ॥ ठामि  
काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अय अन्नत्य उससिण्णं ॥

॥ अन्नञ्च उत्तसिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जंजाइएणं  
उहुएणं वायनिसग्गेणं जमलिए पित्तमुञ्जाए ॥ १ ॥ सुद्धुमेहिं अंगतंचा  
लोहिं ॥ सुद्धुमेहिं खेजतंचालेहिं ॥ सुद्धुमेहिं दिविसंचालेहिं ॥ २ ॥ एव  
माइएहिं आगारेहिं ॥ अज्जग्गो अविराहित्ठ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो  
॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं जगयंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥  
तावकायं ठाणेणं मोणेणं जाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इ  
ति ॥ ए ॥ इहां चार नचकार अथवा एक लोगस्सको काउस्सग्ग



करे. पीठें एमो अरिहंताणं कहे कें कानस्सग्ग पारकें सुखसैं प्रगट  
लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिब्बये जियो ॥ अरिहंते  
कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसन्न मज्जिअं च वंदे ॥  
संनव मज्जिणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च  
चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंत वासु  
पुज्जं च ॥ विमल सणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥  
कुंथुं अरं च मद्धिं ॥ वंदे सुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ  
नेमिं ॥ पासं तह वड्ढमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अज्जिअुआ ॥ वि  
हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिब्बय  
रामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंडिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उ  
त्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिद्धाज्जं ॥ समाहिवर सुत्तमं दित्तु ॥ ६ ॥  
चंदेसु निम्मलयर ॥ आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागस्वरगंजीरा  
॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सबलोए० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीठें खमासमण देइ इच्चा० ॥ जगवन् बैसणो संदि  
स्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीठें इच्चं कहे कें वली खमा-  
समण दे कर ॥ इच्चा० ॥ जगवन् बैसणो ठानं ? गुरु कहे  
ठाएह ॥ फेर इच्चं कहे कें खमासमण दे कर इच्चा० ॥  
ज० ॥ सिज्जाय संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीठें  
इच्चं कहे कें वली खमासमण दे कर इच्चा० ॥ ज० ॥ सिज्जाय  
करुं? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कें इच्चा खमे हो कर  
आठ नवकार कह कर सज्जाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे  
तो खमासमण दे कें इच्चा० ॥ ज० ॥ पांगरणो संदिस्सावुं ? गुरु  
कहे संदिस्सावेह ॥ पीठें इच्चं कह कर खमासमण दे कर इच्चा० ॥  
० ॥ पांगरणो पस्सिग्घानं? गुरु कहे पस्सिग्घाएह ॥ पीठें इच्चं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसासहित श्रावक  
वांटे तो "वंदामो" ऐसो कहे. और जो कोई दूसरो वांटे तो, सि  
धाय करेह, ऐसै कहे ॥ इति प्राज्ञातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा ॥ ज्ञ ॥ चैत्यवंदन  
करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीठें इच्छं कही जयउ सामि जैयेंउ सामि  
इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थंकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेतुंजि उज्जति ॥  
॥ पढु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंरुण ॥ १ ॥ जरुअबेह  
मुणिसुव्वय, महुरिपास उह डुरिय खंरुण ॥ अवरविदेहिज तिठ-  
यर, चिहुंदिंसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंडु जिण  
सवेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं पढम संघयणि ॥ उंकोसउ सत्त-  
रिसउ, जिणवराण विहरंत लप्पई ॥ नवकोमीहिं केवलिण, कोरि  
सहस्त नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोमीहिं  
वरणाण ॥ समणह कोमी सहस्त डई, धुणिज्जइ निच्च विहाण  
॥ १ ॥ तत्ताणवइ सहस्ता, लख्खा उप्पन्न अठ कोमीउ ॥ चउ-  
सय णयासीया, तिच्चुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोरि सयं,  
पणवीसं कोरि लख तेवन्ना ॥ अठवीस सहस्ता, चउसय अठ-  
सिया पन्निमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिठं ॥ सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥  
जाइं जिणविंवाइं ॥ ताइं सवाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिइंताणं, जगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तिः

ङगराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरि-  
 सवरपुंरुरीआणं, पुरिसवरगंधहठीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोग-  
 नाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अज्ज-  
 यदयाणं, चख्खुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं  
 ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसा-  
 रहीणं, धम्मवरचान्तरंतचक्रवट्ठीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरणाण  
 दंसण धराणं, विअट्ट ठउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं  
 तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं सोअगाणं ॥ ८ ॥ सबन्नूणं  
 सबदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरुख्वय मघावाह मपुणारा-  
 वित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं,  
 जिअ ज्ञयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ जविस्संति  
 णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सब्बे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उट्ठेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सव्वाइं  
 ताइं वंदे ॥ इहसंतो तउ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहू ॥ जरेहेरवय महाविदेहे अ ॥  
 सब्बेसिं तेसिं पणउ ॥ तिविहेण तिरंरु विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुज्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसह-  
 रविसनिन्नासं ॥ मंगलकद्धाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंमंतं  
 ॥ कंठे थारेइ जो सथा मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ उठ जरा  
 जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठ्ठ दूरे संतो ॥ तुअ पणामो वि बहु-  
 होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न उख्ख दोहग्गं ॥

॥३॥ तुह लम्नते लखे ॥ चिंतामणि कम्पपायवप्रहिए ॥ पार्वतिः  
 अविग्धेणं ॥ जीवा अथरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संश्रुतं महायसः  
 ॥ जतिप्ररनिप्ररेण हिअएण ॥ ता देव दिऊ वोहिं ॥ जवे जवे  
 पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पजावतं जयवां।  
 जवनिव्वेउ मग्गा, एउसारिआ इउ फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धञ्चा  
 उ ॥ गुरुजणपूआ परउकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोतवय, ए सेवणा  
 आजव मखंका ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीअराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीठें  
 खमासमण दे के इच्छा ॥ ज. ० ॥ कुसुमिण दुसुमिण राई पाय  
 छित्त विसोहणउं कानस्तग्ग करं ? गुरु कहे करेह पीठें इउं कह  
 कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायछित्त विसोहणउं करेमि कान  
 स्तग्ग ॥ अन्नउ उलसिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे के सोखे नव  
 कार अथवा चार लोगस्तका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन  
 कर के कानस्तग्ग करे ॥ पीठें एमो अरिहंताणं कह कर कान  
 स्तग्ग पारीके मुखसे एक लोगस्तका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें  
 गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो कानस्तग्गमाहे ॥ सागर  
 वरगंजीरा ॥ पर्यंत चितवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अब पन्निक्कमणां ठावकेका अवसर हुवा ॥ जव खमासम  
 ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि के वांदिथे ॥ १ ॥ खमासमण  
 देइ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिके वांदिथे ॥ २ ॥ खमासमण देइ  
 जंगम युगप्रधान वर्तमान जट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले के वां  
 दिथे ॥ ३ ॥ खमासमण देइ के सर्व साधुजीकुं वांदिथे ॥ ४ ॥ इत  
 तरे चार खमासमणसे पन्निक्कमणां ठावी गोमालीथे वैठ के मस्त  
 क नमाय कर दोनु हाथे सुहपत्ती सुहने दे कर ॥ सबस्तविराइय

॥ इत्यादि पाठ कहे, परंतु इञ्जाकारेणसंदिस्सह इञ्चं इस माफक  
न कहे ॥

॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ उच्चिंतिअ उप्पासिय दुच्चिठिअ इञ्जा  
कारेण संदिस्सह जगवन् इञ्चं ॥ तस्स मिञ्चामि दुक्कमं ॥ इति  
॥ १८ ॥ सबेरका देवसिके ठिकाने राश्यं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीठै नमुत्तुणं कह केँ खमा होय केँ ॥ करेमि जंते सा  
माश्यं सावच्चं जोगं पच्चस्कामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीठै इ  
ञ्चामि कानस्सग्गं जो मे राइत्तं ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इच्छामिगामि ॥

॥ इञ्चामि गामि कानस्सग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो क  
उ ॥ काइत्तं वाइत्तं माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अक  
रणिज्जो ॥ उच्चान् ॥ दुच्चिंतिउ अणायारो ॥ अणिञ्चिअवो ॥ अ  
सावगपानग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥  
तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गु  
णवयाणं ॥ चउन्हं सिस्कावयाणं ॥ बारसवियस्स सावगधम्मस्स ॥  
जं खंमिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिञ्चा मि दुक्कमं ॥ इति ॥ इ  
हां देवसियंके ठिकाने राश्यं कहेनां ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीठै तस्सउत्तरी० ॥ अन्नत्त उससिएणं कह कर चारित्रशु  
द्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका कानस्सग्ग करी  
पारि केँ दर्शन शुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत  
चेइआणं ॥ करेमि कानस्सग्गं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना  
सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स  
म्माण वत्तिआए ॥ बोहिलात्त वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्वाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वद्धमाणी  
ए ठामि काउस्तग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीठें अन्नठ० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्तका  
काउस्तग्ग करके पारके ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुस्करदी० ॥  
सुयस्त जगवत्त करेमि काउस्तग्गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो  
लिखते हैं ॥

॥ अथ पुस्करदी ॥

॥ पुस्करदीवद्धे, धायइत्तमे अ जंबुदीवेअ ॥ जरेदे रवय  
विदेहे, धम्माइगरे नमंतामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपम्लविद्धं, सणस्त  
सुरगणनरिंदमदिअस्त ॥ सीमाधरस्त वंदे, पप्फोमिअ मोहजाल  
स्त ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्त, कद्धाण पुस्खलवि  
सादसुहावहस्त ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्त, धम्मस्त सार  
मुवल्लभ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेत्तो पयत्त णमो जिणमए, नंदी  
सया संजमे ॥ देयं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्तमूअ ज्ञावच्चिए ॥  
लोगो जत्त पइत्ति जगमिणां, तेलुकमच्चा सुरं ॥ धम्मो वद्धत्त सा  
सत्त विजयत्त, धम्मुत्तरं वद्धत्त ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्त ज  
गवत्त करेमि काउस्तग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर  
अन्नठूससिएणं कह के आठ नवकार अथवा दो लोगस्तका काउ  
स्तग्ग करे. काउस्तग्गके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे, सो आ  
गे लिखेंगे. पीठें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु-  
वगयाणं, नमो सया सबसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं  
देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी  
रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवत्तहस्त वद्धमाणस्त ॥ सं  
सारसागरत्त, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिन सेव सिहरे,

दिसका नाणं निसीहिआ जस्त ॥ तं धम्मचक्रवट्टिं, अरिठनेमिं न  
मंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चनवीसं  
॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिलंतु ॥ ५ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्महिठि समाहिगराणं ॥  
इति ॥ करेमि कानस्सग्गं ॥ अन्नठण ॥ इति ॥ २३ ॥

॥ पीठें संभासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र  
वादणां निमित्तें मुहपत्ती पम्बिलेहुं ? गुरु कहे पम्बिलेह ॥ मुहपत्ती  
पम्बिलेहे, पीठें वादणां दे, तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उजा हुआ आधा नीचा नम कर  
इठामि खमासमणो वंदिउं जावणिजाए निसीहिआए अणुजा-  
णह मे मिउग्गहं, इतना पाठ कह कर जूमि प्रमार्जन करता  
हुआ निसीहि कह कें कठुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संभासा  
प्रमार्जन कर कें उक्कम वेठ के नावे हाथमें मुहपत्ती ले कें नावे  
कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निह्वाम पूंजी, मुहपत्ती आगे  
परख कें तिसके मध्य जगमें गुरुचरणकी कल्पना कर कें ॥ अहो  
कायं इत्यादि आवर्त कर कें कठुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि  
कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो जे किलामो  
इत्यादि पाठ कहे, पीठें फेर ॥ जत्ता जे ॥ इत्यादि आवर्तन कर  
कें खमा होकें पीठें पगसें जूमि पूंजता हुआ अवग्रहसें बाहिर  
निकलकें स्वस्थान पर आवे, उहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ  
सर्व कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इठामि खमासमणो वंदिउं, जावणिजाए निसीहिआए  
॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं,  
खमणिज्जो जे किलामो ॥ अप्पकिउंताणं बहु सुत्तेण जे, दिवसो

वश्कंतो जन्ता जे जवणिऊं च जे, खामेमि खमासमणो ॥ देव-  
 सिअं वश्कन्मं आवसिआए, पन्किमामि खमासमणाणं ॥ देव-  
 सिआए, आसायणाए ॥ तितीसन्नयराए जं किंचि मिआए, मण-  
 डुक्काए, वयडुक्काए कायडुक्काए कोहाए, माणाए, मायाए, लो-  
 न्नाए, सव्वकालिआए, सव्व मिओवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए ॥  
 आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्स खमासमणो पन्किमामि ॥  
 निंदामि गरिइमि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें  
 आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउं वश्कंतो, तथा  
 चउमासीयें चउमासीउं वश्कंतो, परकीयें परको वश्कंतो, संवड-  
 रीयेसंवडरीउं वश्कंतो ॥ एसीतरेपाठकहेनां ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अय देवसियं आलोउं ॥

॥ इआकारेण संदिस्सइ जगवन् देवसियं आलोउं इअं ॥ आ-  
 लोएमि, जो मेण ॥ इति ॥ १५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥  
 ॥ पीठें रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समइ आलोवे, सो क-  
 हेते हैं ॥

॥ अय आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय  
 ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख  
 तेजकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पति-  
 काय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख वेइं-  
 द्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख  
 देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे  
 लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें,  
 माइरे जीवें जे कोइ जीव हएयो होय, हणाव्यो होय, हणातां  
 प्रत्ये जलो जाण्यो होय, ते सबेहुं मन वचन कायार्थे करी मिआ  
 मि डुक्कं ॥ इति ॥ १६ ॥



॥ अथ अदारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥  
 मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया  
 ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥  
 ॥ अज्ञ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैगुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥  
 परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशब्द  
 ॥ १८ ॥ ए अदारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय,  
 सेवता प्रत्ये जलां जाण्यां होय, ते सबे हुं मनं, वचनं, कायार्ये  
 की तस्स मिञ्जा मि डुक्कं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नव  
 करवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादा  
 नोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, जक्त  
 कथा करी होय, और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्युं  
 होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायार्ये करके, दि  
 वस अतिचार आलोयणे कर के पन्निक्कमणामे आलोउं ॥ तस्स  
 मिञ्जा मि डुक्कं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रजातके पन्निक्कमणेमें  
 दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ पीठे सबस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ कहे, तिहां  
 इञ्जाकाण ॥ जण ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रा-  
 यचित्त मागे ॥ गुरु कहे पन्निक्कमह ॥ पीठे इञ्जं तस्स मिञ्जामि  
 डुक्कं कह के संमासा प्रमार्जन कर के आसन पर बैठे के जि-  
 मणा गोमा उंचा रख के मावा गोमा नीचे कर के ऐसें कहे कि  
 जगवन्! सूत्र जणुं? तव गुरु कहे जणेह ॥ पीठे इञ्जं कहि के तीन  
 नवकार अरु तीन वार करेमि जते ॥ जण के इञ्जामि पन्निक्क  
 मिञ्जं जो मे राइउं इत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तंच गरिहामि

पर्यंत वंदिता सूत्र कहे, सो लिखते हैं ॥ पीठें खनां हो कें अणुवि-  
 उमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदितुं सव सिद्धे, धम्मायुरिए अ सवताहू अ ॥ इत्थामि  
 पन्निक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्त ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,  
 नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ वायरो वा, तं निंदे  
 तं च गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावजे बहुविहे  
 अ आरंजे ॥ कारावणे अ करणे, पन्निक्कमे देवसियं सव्वं ॥ ३ ॥  
 जं वड्ढमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्तेहिं ॥ राणेण व दोसेण  
 व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं-  
 कमणे अणात्तेणे ॥ अत्तिउणे अ निउणे, पन्निक्कमे ॥ ५ ॥ संका  
 कंख विगिंठा, पसंस तह संथवोकुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्त इआरे,  
 पन्निक्कमे ॥ ६ ॥ उक्काय समारंजे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा  
 ॥ अत्तवाय परठा, उत्तयवा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुव-  
 याणं, गुणवयाणं च तिएह मइयारे ॥ सिक्काणं च चउएहं, पन्नि-  
 क्कमे ॥ ८ ॥ पढमे अणुवयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउं ॥  
 आयरिअ मप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह वंध उविठेए,  
 अइ जारे जत्त पाण बुठेए ॥ पढमं वयस्त इआरे, पन्निक्कमे ॥  
 १० ॥ वीए अणुवयंमि, परिथुलगअलिअ वयण विरईउं ॥ आया-  
 रिअमप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्त दारे,  
 मोसुवएसे अ कूरुलेहे अ ॥ वीयं वयस्त इआरे, पन्निक्कमे ॥  
 १२ ॥ तइए अणुवयंमि, थूलग परदच्चहरण विरईउं ॥ आयरिअ  
 मप्पसत्ते, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहरप्पत्तणे, तप्पनिरूवे  
 विरूढ गमणे अ ॥ कूरुतुल कूरुमाणे, पन्निक्कमे ॥ १४ ॥ चउठे  
 अणुवयंमि, निउं परदारगमण विरईउं ॥ आयरिअ मप्पसत्ते, इत्थ  
 पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अरांग वीवाहं तिउव

अगुरागे ॥ चञ्च वयस्स इअरे, पम्किम्मे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए  
 पं, चमंमि आयरिअ मप्पसत्तंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्त पमाचप्पसं  
 गेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्तू, रूप्प सुवन्ने अ कुविअ परि-  
 माणे ॥ डुपए चञ्चप्यंमि, पम्किम्मे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परि-  
 माणे, दिसासु उट्टं अहेअ तिरिअं च ॥ बुद्धिसइअंतरद्दा, पढमंमि  
 गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ  
 गंधमल्ले अ ॥ उवन्नोग परिज्जोगे, बीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते  
 पम्बिद्वे ॥ अपोल डुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुत्तोसहि ज्ञरक्खणया,  
 पम्किम्मे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणत्तानी, ज्ञानी फोमी सुवज्जए  
 कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस वित्तविसयं ॥ २२ ॥  
 एवं खु जंतपिच्चणं, कम्मं निच्चंठणं च दवदाणं ॥ सरदह तत्ताव  
 सोसं, असई पोसंच वज्जिजा ॥ २३ ॥ सत्तग्गि मसल जंतग, तण  
 कठे मंत मूल ज्ञेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पम्किम्मे० ॥ २४ ॥  
 न्हाणू वट्टण वन्नग, विलेवणे सदळ्ळव रसगंधे ॥ वत्तालण आजरणे,  
 पम्किम्मे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुकुइए, मोहरि अहिगरण ज्ञोग अइ-  
 रित्ते ॥ दंमंमि अणठाए, तइयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे  
 डुप्पणिहाणे, अणवठाणे तथा सइ विहुणे, ॥ सामाइअ वित्तहकए,  
 पढमे सिक्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सदे रूवे अ  
 पुग्गलखेवे ॥ देसावगा सियंमि, बीए सिक्कावए निंदे ॥ २८ ॥  
 संथा रुच्चारविही, पमाय तह चेव ज्ञोयणात्तोए ॥ पोसह विहि  
 विवरीए, तइए सिक्कावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निरिक्खणे, पि-  
 हिणे ववएस मत्तरे चेव ॥ कात्ताइक्कम दाणे, चञ्चै सिक्कावए  
 निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सअ डुहिए सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा  
 ॥ राणेणव दोसणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु  
 विज्जागो, न कड तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे,

तं निदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ  
 आसंस पन्नेगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मअ दुऊ मरणंते ॥ ३३ ॥  
 काएण काइअस्स, पन्निक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणत्ता माणसि-  
 अस्स, सबस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिक्काणा,  
 रवेसु सन्ना कत्ताय दंसेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो  
 अ तं निदे ॥ ३५ ॥ सम्महिंठ जीवो, जइ विहुपावं समायेरे  
 किंचि ॥ अप्पोसि होइ वंयो, जेण न निदंघसं कुणइ ॥ ३६ ॥  
 तं पिहुसपन्निक्कमणं, सप्परिआवं सत्तत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवत्तामेइ,  
 वाहिच्च सुसिक्किञ्च विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुण्णयं, मंत मल  
 विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निद्विसं ॥ ३८ ॥  
 एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निदंतो,  
 खिप्पं हणइ सुसावत्तं ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्तो, आलोइअ  
 निदिय गुरुत्तासे ॥ होइ अइरेग लहुत्तं, उहरिअ जरुव जारवहो  
 ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावत्तं जइवि बहुरत्तं होइ ॥  
 उक्काण मंत, किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलो-  
 अणा बहुविहा, नयसंज्जरिआ पन्निक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तर-  
 गुणे, तं निदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि  
 पन्नत्तस्स ॥ अप्पुठ्ठिमि आरा, हणाए विरत्तमि विराहणाए ॥  
 तिविहेण पन्निक्कंतो, वंदामि जिणे चत्तवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति  
 चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय  
 पाव पणासणीइ, ज्वसयसदस्स महणाए ॥ चत्तवीस जिण वि-  
 णिग्गय कदाइं, वोत्तंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिदंता,  
 सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्महिंठो देवा, दिंतु समाहिं च  
 बोदिं च ॥ ४७ ॥ पन्निस्सिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पन्निक्क-  
 मणे ॥ असददणे अ तदा, विचरीय परुवणाए अ ॥ ४८ ॥ खा-  
 मेमि सब जीवि, सधे जीवा खमंतु मे ॥ मित्तीमे सब जूएसु, वेरं

मङ्गलं न केणइ ॥ ४ए ॥ एव महं आलोइअ, निदिअ गरहिअ डुगं-  
ठिअं सम्मं ॥ तिविहेण पणिकंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५०  
॥ इति ॥ १ए ॥ इहां प्रजातके पणिकमणमें देवसिके ठीकाने राइयं  
कहना ॥

॥ पीठें दो वादणां देकर अवग्रहमांदिअकाज कहे ॥ इञ्जा-  
का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अणुठिअमि अण्ठिअतर ॥ राइयं खामेमि ?  
गुरु कहे खामेह ॥ संजासा प्रमार्जन पूर्वक गोमादी बैठ के, वे  
वांह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाअसूं मुखें देई, दक्षिण हाअ  
गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो अको जंकिंचि अण्ठिअतियं ॥ इत्यादि  
संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अणुठिअ ॥

॥ इञ्जाकरेण संदिस्सह जगवन् अणुठिअमि अण्ठिअतर देव-  
सिअ खामेअं ॥ इअं खामेमि देवसियं जंकिंचि अण्ठिअतियं जत्ते  
पाणे विणए वेअ्रावञ्जे आलावे संलावे उञ्जासणे ॥ समासणे अंतर  
जासाए उवरिजासाए ॥ जं किंचि ॥ मङ्गविणय परिहीणं सुहु-  
मंवा वायरं वा ॥ तुप्रे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिञ्जामि  
डुक्कं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिञ्जामि डुक्कं कहे, पीठें वे वादणां देई  
जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसैं अवग्रह बाहिर आय के आय-  
रिय उवजाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवजाए ॥

॥ आयरिअ उवजाए, सीसे साहमीए कुलणै अ ॥ जे  
मे कथा कसाया, सवे तिविहेण खामेमि ॥ ? ॥ सबस्स समण  
संवस्स, जगवन् अंजलिं करिअ सीसे ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि  
सबस्स अहयंपि ॥ १ ॥ सबस्स जीवरासिस्स, जावन् धम्मो निदिअ  
चित्तो ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि सबस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीठें करेमि जंतें इष्टामि गमि काजस्तगं तस्तुत्तरी० ॥

श्रीमहावीर स्वामी उमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काज-  
स्तगं अन्नू० ॥ कहि कें काजस्तग करे, काजस्तगमें श्रीवीर-  
रुत उमासी तप चिंतवन करे ॥ चौवीश नवकार अथवा उ  
लोगस्तका काजस्तग करे, काजस्तग पारिकें प्रगट लोगस्त कहे ॥

॥ ठेठ आवश्यककी मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहु  
॥ मुहपत्ती पमिलेही वे वांदणां देई सकल तीर्थनाम लक्ष नम-  
स्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोकं रविशशिज्वने, अंतराणां निकाये,  
नक्षत्राणां निवासे ग्रहणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्न-  
गेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थकराणां प्रतिदि-  
वसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे  
कुंभले हस्तिदंते, वस्कारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैपथे नीलवंते ॥  
शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥  
श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्वुदे पावके वा, सम्भते तारके  
वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सहाद्रौ वैजयंते विमल-  
गिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आषाढे मेदपाटे कि-  
तितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे  
विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च ज्ञोटे ॥ श्री०  
॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयनि निपथे मेखले पिञ्जले वा,  
नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ माहाले  
कोशले वा विगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥  
अंगे बंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौमे चौमे मुरंमे  
वरतरद्रविमे उद्वियाणे च पौंमे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविणकवलये

कान्यकुब्जसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुरव्या गजपुरमश्रु-  
 रापत्तने चोक्तयिन्यां, कौशंब्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्या  
 च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे ऋद्विले ताम्रलिप्त्यां ॥  
 श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णादीनीरतीरे,  
 शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलने चूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये  
 वने वा स्थलजलविषमे पुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ “श्री-  
 मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाळमलौ जंबुवृक्षे, चौकान्ये चैत्यनंदे  
 रतिकररुचके कौसले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ  
 व्यंतरे स्वर्गलाके, ज्योतिर्लोके ऋवंति त्रिभुवनवलये यानि चैत्या-  
 लयानि” ॥ ए ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः,  
 प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं ऋक्तिज्ञाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-  
 तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिश्चैः  
 प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥  
 इति ॥ ३१ ॥

पीठें गुरुमुखें पञ्चस्काण करि कै ॥ इत्थामोनि सद्धियं कहि  
 कै गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीठेंणमो खमासमणाणं णमोऽईत्सिद्धा० ॥ कह कर.  
 परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणिं ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, ऋवसागर वारि तरण वरतरणिं  
 ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार  
 विहारकारि, दुरन्तजावारिगणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा  
 वो, ऋवावहं मोहऋरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ,  
 संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-  
 रागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलऋरखोज्जालीढलोला-  
 ल्लमालां, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलऋविकारांगार

विच्चित्तिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥  
३३ ॥ अथवा संसारदावांनी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥  
माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ ज्ञा-  
वावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोककमलावलिमालितानि ॥  
संपूरिताजिनतलोकतमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि  
तानि ॥ २ ॥ बोधागार्धं सुपद पदवी नीरपूराजिरामं, जीवाहिंसा-  
विरल्लहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेत्तं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं,  
सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥ आमूला लोलधूली बहुल  
परिमला लीढलोलालिमाला. ऊंकारा रावसारा मलदलकमलागार-  
ज्जमीनिवासे ॥ वायासंज्ञारसारे वरकमलकरे तारहाराजिरामे, वा-  
णीसंदोहदेहे नवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा ज्ञानी, शक्रस्तव कहे. पीठें स्वभा हो  
कर अरिहंत चेइयाणं करेमि काञ्जस्तग्गं ॥ वंदणवत्तिआएण अन्नवूण  
॥ इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ काञ्जस्तग्गमाहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक  
प्रथम काञ्जस्तग्ग पारी नमोऽर्हत्तिःशाण कही ॥ एक गाथा स्तुति  
कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वत्तेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरूपम,  
नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंठण सेवित, पञ्चमावइ धरणिंद ॥  
प्रह ऊठी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक  
जण कहे ॥ दूसरे सब काञ्जस्तग्गमाहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीठें  
णमो अरिहंताणं कहि कें काञ्जस्तग्ग पारे ॥ इत तरे आगे पण  
जाणणां ॥ पीठें लोगस्त कहे ॥ सबलोए अरिहंत चेईआणं वंदण-



वृत्ति० ॥ अन्नब्रू० ॥ इत्यादि कहि कें ॥ एक नवकारका काजस्तग्ग  
करी पारि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयद्वइ, कणयाचल अन्निराम ॥ मानुषोत्तर  
नंदी, रुचक कुंमल सुखठाम ॥ न्रुवणेशुर व्यंतर, जोइस विमाणी  
नाम ॥ वरें ते जिणवर, पूरो मुज मन काम ॥ २ ॥

॥ पीठें पुस्करवदीवद्धे कहि कें सुयस्त जगवन्त० वंदण०  
अन्नब्रू० कही ॥ एक नवकारका काजस्तग्ग पारि कें ॥ त्रीजी  
स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, बार नपंग ठ ठेद ॥ दस पयन्ना  
दाख्या, मूल सूत्र चउत्तेद ॥ जिन आगम षड्द्रव्य, सप्त पदारथ  
जुत्त ॥ सांजलि सईहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं ॥ कहि कें वेयावच्चगराणं ॥  
अन्नब्रू० कही ॥ एक नवकारका काजस्तग्ग करी पारि कें एमो-  
इहत्सिद्धाणं कहि कें चौथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पञ्चमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट,  
दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनजक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख  
सुजस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीठें नीचा बैठ कें एमोब्रूणं ॥ कहि कें ॥ तीन खमा-  
समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांदि ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें  
मुहपत्तो देई अट्टाइजेसु कहे हैं, सो लिखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अट्टाइजेसु ॥

॥ अट्टाइजेसु ॥ दीव समुदेषु ॥ पन्नरससु कम्मचूमीसु ॥  
जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुत्तपग्गिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा ॥  
अट्टारसहसस सालंगधारा ॥ अक्कयायारचरित्ता ॥ ते सब्बे सिरसा  
मणसा मठएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीठें स्थिरता हुवे तो स्वमासमण  
तीन वखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्तद जगवन् ॥ चैत्यवंदन करूं  
जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय  
लय करुणा शान्त दांत, ज्वि जनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद  
वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत-  
जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥  
त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किं-  
चिनाम तिष्ठं ॥ नमोऽनूणं जावंति चेऽथा जावंत केवि साहू ॥  
॥ नर एमोऽर्द्विस्तद्वाचार्योपाध्याय सर्वसाधुच्यः ॥ तक कहि कै  
सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग बालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिवा, वीनतनी अवधार लाल रे ॥  
परम पुरुष परमेस्वर, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥  
केवल ज्ञान दिवाकर, ज्ञांगे सादि अनंत लाल रे ॥ ज्ञासक लो-  
कालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र  
चक्रोस्वरु, सुर नर रदे कर जोरु लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा,  
अणदूता इक कोरु लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर  
वसे, मुज मन दंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आ-  
शरो, जव जव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उवारण  
वो तुम्हें, दूर दरो जव दुःख लाल रे ॥ कहे जिनदर्प मया करो,  
देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३७ ॥

॥ पीठें जयवीरराय० वंदनवक्तियाए० ॥ अन्न० कदि

कें ॥ एक नवकारका काजस्तग करे ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा०  
कही ॥ एक शुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंरुणं पुष्पसोवन्न देहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥  
महाणंदलत्ती बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तिष्ठरायं ॥ १ ॥ इम  
होज धिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो  
लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाञ्जि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरुण ॥ जय जय  
प्रथम जिणंद चंद, जव दुःख विहंरुण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद,  
वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषन्न जिणोसर ॥  
अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुऊ पद पंकज  
प्रीति धर, निशिदिन नमत कळयाण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिष्ठं०  
॥ एमोत्तुणं ॥ जावंति चेऽत्राई० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ एमो-  
ऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुच्यः तक कहि कें श्री सिद्धाचल-  
जीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि ज्ञेव्यां रे ॥ धन्य ज्ञाग्य हमारं ॥ विम-  
लाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोद्यो, कहेतां न आवे  
पारा ॥ रायण रूख समोसर्वा स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध०  
॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट  
द्रव्यसें पूजो ज्ञावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर  
देशयो हुं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धरण  
विरुद्ध तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ ज्ञाव  
जक्तिसें प्रभू गुण गावे, अपना जन्म सधारा ॥ जात्रा करि  
जविजन शुभ ज्ञावें, नरक तिर्थच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥  
अठारे ज्यासी मास आषाढे, वदि आठम जोमवारा ॥

प्रभुके चरण परतापसिंहमें, कृमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५॥

॥ पीठें जयवीरराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नबू० ॥ कहिकें  
एक नवकारकाकानस्सग करी ॥ पारिकें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहिकें ॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, रूपनदेव पुंरुकीक ॥ शुभ्र तपनो  
महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिगुं  
चैत्यवंदनाक ॥ करियें जिन आगत, टाली वचन अलीक ॥ ? ॥  
इति ॥ ४१ ॥ पीठें फुरसद होवे तो पन्निहेहण करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ पन्नि-  
लेहण संदिस्सां ? गुरु कहे, संदिस्साएह ॥ बीजे खमासमणें ॥  
॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पन्निहेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥  
पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्निहेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणें  
अंग पन्निहेहण संदिस्सां ॥ अंगपन्निहेहण करुं, कहीके धोतियुं  
कणदोरो पन्निहेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार जगवन् पसां  
करी पन्निहेहण पन्निहेहावो जी. एम कही ॥ थापनाचार्य  
पन्निहेह ररेके, अने जो गुर्वादिक थापनाचार्य पन्निहेहे, तो  
पण खमासमण देई आग्या मागे, पीठें खमासमण देई  
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पन्निहेहुं ? गुरु कहे पन्निहेहेह  
॥ पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्निहेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इ-  
च्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उहि पन्निहेहण संदिस्सां ॥ उही पन्नि-  
लेहण करुं ॥ एम कही कंवल वस्त्रादि पन्निहेहे ॥ पीठें पोपध-  
शाला प्रमाजीं काजो, विधिगुं परठवी खमासमण देई इरियावही  
पन्निक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोज्जी  
दृष्टिपन्निहेहण तो अवश्य करणी ॥ अवज्जी प्राये एही करते दि-  
खते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीठें सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पन्निहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायवो, पीठें यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आचारो न मोत्तवो ॥ पीठें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊज्जो अको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमालीयें बेसी मस्तक नमावी ॥ ज्ञयवं दसस्रज्जदो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दसस्रज्जदो ॥

॥ ज्ञयवं दसस्र ज्जदो, सुदंसणो श्रुत्तिज्जद वयरोय ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया ज्ञावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अज्जिग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ उज्जमज्जो मूढमणो, कित्तिय मित्तंपि संज्जरइ जीवो ॥ जं च न संज्जरामि अहं, मिच्चामि उक्कमं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं वायाइ ज्ञासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिच्चामि उक्कमं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधवो, सेसो संसार फलहेऊ ॥ ५ ॥ सामायिक विधे लीधुं विधे कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, वत्तीस दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायायें करी मिच्चामि उक्कमं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीठें पन्निहेहण करे, इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकं सुहराइ पूठै ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिढले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पन्डिलेहे, जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपन्डिलेहण करे ॥ पीठें गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी जूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती पन्डिलेहुं ? गुरु कहे पन्डिलेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पन्डिलेहे ॥ पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक संदिस्ताजं ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक ठाजं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत अई तीन नवकार गुणी कहे, इच्छकार जगवन् ! पसाठ करी सामायिक दंरुक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंते सामाश्यं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुज्ञापण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ इरियावहियं पन्डिकमामि ? गुरु कहे पन्डिकमेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ इच्छामि पन्डिकमिजं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहियं पन्डिकमी ॥ एक लोगस्सका कानस्सग्ग करी, एमो अरिहंताणं कही, कानस्सग्ग पारी मुखें प्रगट लोगस्स कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पन्डिलेहि वांदणां देई कहे, इच्छाकार जगवन् ! पसाज करी पञ्चस्काण करावोजी, पीठें गुरु, दिवस चरिम पञ्चस्काण करावे ॥ गुरु अज्ञावें थापनाचार्य समकें अथवा स्वमुखें, अथवा वेनेरा साधर्मी मुखें पञ्चस्के ॥ अने जो तिबिहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ता पन्डिलेहि पञ्चस्काण करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चन्द्रबिहार उपवास हुवे, तो पञ्चस्काण करवुं ठे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नहिं पन्डिलेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीठें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

ऋ० ॥ सिद्धाय संदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, पीठें इहं कही  
 वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ऋ० ॥ सिद्धाय करुं ?  
 गुरु कहे करेह ॥ पीठें इहं कही ॥ खमासमण देई ॥ उक्तो अको  
 मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पीठें खमासमण देई  
 ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ऋ० ॥ वेसणुं संदिस्तानं ? गुरु० संदिस्तावेह  
 ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ऋ० ॥ वेसणुं ठानं ?  
 गुरु कहे, ठाएह ॥ पीठें इहं कही जो शीत काळादि हुवे तो  
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ऋ० ॥ पांगरणुं संदिस्तानं ?  
 गुरु कहे, संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥  
 ऋ० ॥ पांगरणुं पन्निघानं ? गुरु कहे पन्निघाएह ॥ पीठें इहं  
 कही शुभ ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पन्निक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ऋ० ॥  
 चैत्यवन्दन करुं ? गुरु कहे करेह, पीठें इहं कही ॥ जय तिहुयण कहे  
 ॥ जिसमें परकी तथा चउमासी तथा संवत्तरीके रोज तीस गाथा  
 कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा  
 पिठानीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे हैं.  
 अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्क जय जिण धन्नं तरि, जय  
 तिहुअण कट्ठाणकोस डुरिअक्करि केसरि ॥ तिहुअण जण अविदं-  
 धियाण नुवणत्तय सामिअ, कुणसुसुहाइं जिणेस पास थंनणय  
 पुरिअ ॥१॥ तइं समरंत लहंति जत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धम्म सुवन्न  
 हिरण पुसण जणनुंजहि रज्जहि ॥ पिक्कहि मुक्क असंखसुक्क तुह  
 पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्क सुक्कहि कुण महजिण ॥  
 २ ॥ जरज्जर परिजुस वसणहुव सुकुट्ठिण, चक्कुरकीणखणखुस

निरसञ्चित्रसूत्रिण ॥ तद् जिण सरणरसायणेण लहुं हुंति पुणसव,  
 जय धसंतरि पास महवि तुहुं रोगहरो जव ॥ ३ ॥ विजाजोइस  
 मंततंतसिद्धिअपयत्तिण, नुवणभुअ अठविह सिद्धि सिद्धि तुह  
 नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तजवि जण होइ पवित्तज, तं ति-  
 हुअण कल्लाणकोस तुहं पास निरुत्तज ॥ ४ ॥ खुद्द पवत्तइ मंत  
 तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिजवग्गविगंजइ ॥  
 डुत्तियसत्त अणत्त घत्त निघारइ दयं करि, डुरिअईं हरत्त सुपासदेव  
 डुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाअंनेइं जीमदप्पुहर सुरवर,  
 रकस जक फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिजइखुद्द  
 पसुजोइणि जोइअ, इयतिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ  
 ॥ ६ ॥ पत्तिअ अत्त अणत्तहित्तजत्तिप्रर निप्रर, रोमंवं चिअचारु-  
 काय किस्सरनरसुरवंर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल परक्कालिअ  
 कलिमलु, सो नुवणत्तयसामि पास महमदत्त रिजवलु ॥ ७ ॥ जय  
 जोइअमणकमलत्तसलत्तय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद  
 नुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेइणि वारिवाह जयजंतुपिआमह,  
 अंत्तणयत्तिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहु विहवएणुअवएणु  
 सुएणु वसिजत्तपसहि, मुक्कथम्मुकामत्तकाम नर नियनियसत्तहि ॥  
 जं जायइ बहु दरिसणत्त बहु नामं पत्तित्त, सो जोइ अमण  
 कमलत्तसलसुह पास पवत्त ॥ ९ ॥ जयविम्वल रणज्जणिरदसण  
 अरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयणविसएणुसुएणुगग्गिरगिरकरुणय ॥  
 तइंसइसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, महविजाविसज्जसइ पास  
 जय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइंपासविविअसंतनित्तपत्तंतपविसिय,  
 वाहपवाहपवूढरूढ डुहदाहसुपुलइय ॥ मएणूहिंमएणसत्तएण पुसअ-  
 प्पाणंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥  
 तुह कल्लाणमहेसुयंठटंकारवपिद्धिअ, वत्तमत्तमहत्तजत्तिसुरवरगं-  
 जुद्धिअ ॥ हल्लुप्फलिअ पवत्तयंति जवणेहिमहूत्तव, इय तिहुअण



आणांदचंद जय पाससुहुअव ॥ १२ ॥ निम्नल केवल किरणनिय-  
 रविहुरिअ तमपहयर, दंसिअ सबलषयउविठरिअ पदात्तर ॥ क-  
 लिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरइं निरुहर  
 पासनाह न्रुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त  
 माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमन्नवोह कंदलदलइरेणि ॥ जायइ-  
 फलत्तरत्तरिय हरिय उहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह  
 दिसिपास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कक्षाणवद्धिनद्धूरि-  
 यउहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग डुग्गइग्ग वारणुं ॥ जय जंतुह-  
 जणएणतुद्धजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयत्त पास जय  
 जंतु पिआमह ॥ १५ ॥ न्रुवणारस्सनिवात्त दग्गिअपरदरिसणदेवय,  
 जोइणिपूअणखित्तवाल खुदासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ  
 अविंसंठुलचिठहिं, इय तिहुअण वणासिंह पास पावाइ पणासहिं  
 ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नहयल, फलिणी  
 कंदलदलतमाल निद्धुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संस-  
 ग्गअग्गजिअ, जय पच्चक्कजिणेस पास अंत्तणय पुरठिअ ॥ १७ ॥  
 महमणत्तरलपमाणेय वायाविविसंठुल, नियत्तणुरवि अविणयसहाव  
 आलसविहिलंघलु ॥ तुहमाहप्पमाणदेव कारुस्सपवत्तन, इयम-  
 इमाअवहीरपासपालहिविलवंतन ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिणणेयकलु-  
 णुकिंकिंवनजंपिन, किं वनचिठिनकिठडेवदीणयमविलंबिन ॥ का-  
 सुनकियनिप्पल्ललद्धुअझेहिंउहत्तइं, तहविन पत्तनताण किंपि पइं  
 पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिह तुहुं माय वप्प तुहुं  
 मित्तपियंकरु, तुहुं गइं तुहुं मइं तुंहिज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु  
 ॥ इत्तं उहत्तरत्तारिअवरान रानलनिग्गण, लीणत्त तुह कमक-  
 मल सरणजिणपालहि चंगण ॥ २० ॥ पइंकिविकयनीरोय-  
 लोयकिविपावियसुहसय, किविमइंमंतमहंतकेवि किविसाहियसि-  
 वपय ॥ किवि गंजिअरिनवग्गकेविजसयवलिअ न्रुअल, मइं अवही-

रदिकेणपास सरणागयवञ्च ॥ ११ ॥ पञ्चवयारनिरीहनाहनिष्पेस  
 पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त सम-  
 चित्तवित्तिनयनिंदअसममण, मा अवहीरिअजुग्गउविमइं पासनिरं-  
 जण ॥ १२ ॥ इत्तं बहुविदइहत्तगत्तुहुं इहनासणपरु, इत्तं  
 सुयणहकरुणिकगण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ इत्तंजिण पासअसामि-  
 सालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं ऊखंतइय पासन  
 सोहिअ ॥ १३ ॥ जुग्गाजुग्ग विजागनाहनहुजोअणतुहसम, जव-  
 णुवयारसु हावजाव करुणारसत्तम ॥ समविसमह किंघण नएइ  
 जुविदाहुसमंतन, इय इहबंधव पासनाह मइं पास श्रुणंतन ॥  
 १४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि असविकिविजुग्गय, जं जोइयनव-  
 याऊकरइत्तवयारसमुजाय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिणं  
 चत्त, तो जुग्गनअहमेव पासपालहिमइं चंगत्त ॥ १५ ॥ अहअ-  
 णुविजुग्गयविसेसकिविमएहि दीणह, जं पासविजवयाऊकरइ  
 तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कद्धाणुजेण जिण हुम्ह पसीयह,  
 किं अणुण तंचेवं देव मामइंअवहीरह ॥ १६ ॥ तुह पण नहु  
 होइ विहल जिणजाणत्त किं पुण, इत्तं इत्तिन्त निरुसत्तत्तइक्कहु  
 उत्सुयमण ॥ तं मएत्त निमित्तेण एण एत्तंविज्जइ लअइ, सच्चं जं  
 उत्तिकयवसेण किं उंवरु पच्चइ ॥ १७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह  
 मइं अप्पपयासित्त, किज्जत्त जं नियरूवसरिसुनमुणुंउहुं जंपित्त ॥  
 अणुण ण जिणजगत्तुहसमोविदस्सिआदयात्त, जइअवगिहासि  
 तुंदिजअहहकिंहोइसहयात्त ॥ १८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ  
 पाइणवेवंवित्त, तत्तजाणुंजिणपास तुम्ह इत्तंअंगीकरिअत्त ॥ इयम-  
 हइत्तिअ जं न होइ सातुहत्तहावण, रक्कंतह नियकित्तिणे य जु-  
 क्कइअवहीरण ॥ १९ ॥ एवमहारिहत्तदेवइयंइवणमहूत्त, जं  
 अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिइत्त ॥ इय मइं पंति-  
 यसुपासनाइअत्तणयपुरिअ, इय मुणिवरसिंरि अत्तयदेव विस्सवह

आणिंदिअ ॥ ३० ॥ इति श्रीस्तंजनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्त-  
वनम् ॥

पीठै जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाज्ञाग जय चिंतिय  
सुह फलय ॥ जय समठ परमठजाणय, जय जय गुरु गिरिम  
गरु ॥ जय डुहत्त सत्ताण ताणय, अंजणयठिय पासजिए ॥ ज-  
वियह ज्जीम जवठु, जव अरणं ताणं तं गुण ॥ तुज्जति संज  
नमोठु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीठै शक्रस्तव कह केँ खमा हो कर अरिहंत चेश्याणं०  
॥ करेमि कानस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ अन्नञ्जू० ॥ इत्यादि पाठ  
कह केँ कानस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक कान-  
स्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो  
लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ  
नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंठन, सात हाथ तनु  
मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब कान-  
स्सग्गमें रहे अके सुने. पीठै एमो अरिहंताणं कह केँ कानस्सग्ग  
पारे. इसीतरें आगे पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीठै लोगस्स कह कर सबलोए अरिहंत चेश्याणं वंद-  
णवत्ति० ॥ अन्नञ्जू० ॥ कहि केँ एक नवकारका कानस्सग्ग करे.  
पारि केँ उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित ज्ञर  
अजिनव सुरतरु कंद ॥ जवियएनें तारे, प्रवहण सम नि-

शिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमं विशवा वीस ॥ यह दूसरी  
गाथा कहि के कान्तस्तग पारे. पाँठे पुरकारवरदी० वंदणवत्तिआए०  
अन्नहू० कहि के, एक नवकारका कान्तस्तग कर के, पारि के उक्त  
स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथे करि आगम, जारुया श्रीजगवंत ॥ गणधरने  
गूढया, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न  
शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शु० सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥  
यह गाथा कहि के सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नहू० ॥  
कही कान्तस्तग पारी उक्त स्तुतिकी चौथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धाधिकदेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट घूरे,  
पूरे आश अशेन ॥ अहोनिश कर जोनी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे  
गुण गण इम, श्रीजिनलज्ज सुरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन  
स्तुतिः ॥ यह चौथी स्तुति कहि के वैठ के नमोज्ञानं कहे, पाँठे एक  
खमासमण देई के आशाचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. प ठे  
श्रीजपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमणदे कर श्रीवर्त्तमान आ-  
चार्यजीका नाम ले के मिश्र चौथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र  
इती तरे कह कर गोमालीये वैठ के मस्तक नमावी सद्यस्तवि  
देवसिय० इत्यादि कह कर तस्त मिश्रामि बुद्धनं कहे, परंतु 'इ-  
द्याकारेण संदिस्तह इत्तं' ए पद न कहे ॥

॥ पाँठे खमे हो कर करेमि जेते सामाश्यं ॥ इद्यामि ठामि  
कान्तस्तगं जो मे देवसिन्नं ॥ तस्तुत्तरि० ॥ अन्नहू० ॥ इत्यादि  
कहि के, आठ नवकारका कान्तस्तग करे. कान्तस्तगमाहे आजूरा  
चन प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, एमो अरिहंताणं कही  
कान्तस्तग पारि के प्रगट लोगस्त कहे ॥

॥ पीठें संमासा प्रमार्जित पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पन्विलेहुं ? गुरु कहे पन्विलेहेह. पीठें मुहपत्ती पन्विलेहि कें वांदणां देवे. पीठें अवग्रहमांहिज उजो थको इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ देवसियं आलोउं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीठें इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कह कें अतिचार आलोवे. पीठें सबस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांमने इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तब गुरु पन्विकमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीठें इच्छं तस्स मिञ्चामि डुक्कमं कहि कें संमासा प्रमार्जित प्रमार्जित जूमिये आसन पर बैठ कें जगवन् ! सूत्र जणुं एसा कहे. तब गुरु कहे जणोह. पीठें इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि जंतो जणाने इञ्चामि पन्विकमिजं जो मे देवसिउं इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीठें खम हो कर अप्पुडिन्मि आराइणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांहिज खमा हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्पुडिन्मि अप्पितर देवसियं खामेनं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठें इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीठें विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय नवधाय इत्यादि जण गाथा कहिकें करेमि जंतो सामाइयं इञ्चामि गामि कानस्सग्गं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि कानस्सग्गं अन्नन्नु० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सव कानस्सग्ग करी पारि कें पीठें दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सबलोए अरिहंत चेश्याणं ॥ वंदणवत्ति० अन्नन्नु० ॥ कें कें एक लोगस्सका कानस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुस्करवरदीवहे कहि कें सुयस्स जगवन् ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नन्नु०

॥ कहि कें एक लो०स्सका काउस्सग करे, पीठें पारि कें सिद्धार्ण  
 बुद्धार्ण० कहि कें वेयावच्चगराणं न कदे, पीठें सुयदेवयाए  
 करेमि काउस्सगं अन्नञ्जू० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग करे,  
 पीठें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग पारिकें एमो  
 अर्हत्सिद्धा० कहि कें श्रुत देवताकी स्तुति कहे, गुरु हुवे तो गुरु  
 कहे, और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग पारे, श्रव श्रुतदे  
 वंताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णाशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥ श्रुतदेवी  
 सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीठें खित्तदेवयाए, करेमि  
 काउस्सगं ॥ अन्नञ्जू ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्ववी,  
 परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताको स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाङ्गां  
 साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीठें खमा हुवा एक नवकार कही, संभासा प्रमार्जि  
 उकमूथैठ कें उठे श्रावश्यककी मुहपत्ती पम्निखेहुं? गुरु कहे पम्निखेहेह.

॥ पीठें मुहपत्ती पम्निखेही विधिजुं दो वांदणां देइ ठैं वर-  
 कनक कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ ठैं वरकणय संख विट्टुम, मरगय घण सन्निहं विगय  
 मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सव्वासर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥  
 ठैं ज्ञवणवय वाण मंतर, जोइसवात्तविमाण वासीय ॥ जे केवि  
 उठेदेवा, ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥१॥ पञ्चस्काण नदिं लिया  
 होय तो करे ॥ सामायिक चोइसठो पम्निक्कमणां, वांदणां, काउ-

देवसि पायञ्चित्त विशुद्धि निमित्तं कान्तस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेह. पीठेँ इच्चं कहि केँ देवसि पायञ्चित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि कान्तस्सग्गं अन्नन्नूण ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका कान्तस्सग्ग करे, पारी केँ लोगस्स कहे.

॥ पीठेँ खमासमण दे कर इच्चाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ खु-  
दोवद्वव उमावणत्तं करेमि कान्तस्सग्गं ॥ अन्नन्नू० ॥ इत्यादि कहा।  
शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका कान्तस्सग्ग करे, पारि केँ  
प्रगट लोगस्स कहे. पीठेँ खमासमण देई ॥ सज्जाय संदिस्साजं फेर  
खमासमण देई सज्जाय करुं? तीन नवकार गुणीजे. पीठेँ खमा-  
समण देई केँ ॥ इच्चा० ॥ सं० ॥ जगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥  
ऐसा कह कर अंजणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते है ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या-  
जयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिजिर्जलैः शिव  
फलं स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनो-  
चांढितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावच्छीशिरोमणिः ॥  
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीठेँ नमोऽनुणसेँ लेकेँ जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीठेँ  
खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि अंजणयठिय पास सामिणो०'  
इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयठियपाससामिणो ॥

॥ श्री अंजणयठियपाससामिणो सेस तिठसामीणं ॥ तिठ  
समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सधेसिं ॥ १ ॥ एत महं सरणत्तं,  
कान्तस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ जतीए गुण सुद्धियस्स, संघस्स समुन्नय  
निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीधंजना पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउ-  
स्तगं ॥ पीठे खेने हो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोग-  
स्तका काउस्तग करि के पीठे पारी प्रगट लोगस्त कही के ॥  
श्रीखरतरगञ्ज सिणगारहारजंगम युगप्रधान ञट्टारक दादाजी श्री  
जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूमामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि  
काउस्तगं ॥ अन्नवू० कहि के, एक लोगस्तका काउस्तग करे,  
पीठे प्रगट लोगस्त कह के

॥ श्रीखरतरगञ्ज सिणगारहार जंगमयुग प्रधान ञट्टारक दा-  
दाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूमामणिजी आराधवा निमित्तं  
करेमि काउस्तगं ॥ अन्नवू० कहि के एक लोगस्तका काउस्तग  
करे. पीठे प्रगट लोगस्त कहि घैठ के मावो गोमो उंचो करि के  
खमासमण देई के, इच्छा० ॥ सं० ॥ ञ० ॥ चैत्यवंदन कहं जी.  
ऐसे कहि के चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउकसाय ॥

॥ चउकसाय पद्मिञ्जलूरण, उज्जय मयण वाण मुसुमूरण  
॥ सरस पियंगु वज्रु गय गामिञ्ज, जयञ्ज पास चुवणत्तय सामिञ्ज  
॥ १ ॥ जसु तणु कंति करुप्पत्तिणिञ्ज, सोहइ फणमणि किरणा  
विद्धञ्ज ॥ नंनव जलहर तन्निञ्जय लंठिय, सो जिणु पासु पयञ्जय  
वंठिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो ञगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः आ-  
चार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसु-  
पाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं  
कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीठे नमुञ्जणसे ले के जयवीरराय पर्यंत कहि के परकी  
घनमासी अरु संवहरिके रोज तो बनी शांति सुणे, परंतु औ



दिनोमें बौटी शांति गुण, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः  
शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ लुमिति निश्चितव-  
चसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते,  
यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्ति-  
समन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय  
॥ ३ ॥ सर्वाभरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ ज्ञुवन-  
जनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघना-  
शन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह ज्ञूतपिशाच, शाकि-  
नीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोग-  
कृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम्  
॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥  
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि  
च संघस्य, जद्र कल्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतु-  
ष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ ज्ञव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि !  
सत्त्वानाम् ॥ अज्ञय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥  
९ ॥ ज्ञक्तानां जन्तूनां, गुणावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृ-  
ष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां,  
शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति यशो, वर्द्धिनि !  
जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज  
रोगरणजयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिज्यः ॥ १२  
॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, करु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं  
कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ जग-  
वति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरु कुरु जनानाम् ॥

उमिति नमो नमो हौं, ह्रीं हूं ह्रः यः कः ह्रीं फट् फट् स्वाहा ॥१४॥

एवं यन्नामाकार, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां,  
नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-

विदर्शितः स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिजय विनाशी, शांत्यादिकरश्च  
जक्तिप्रताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति ज्ञावयति वा

यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥

उपसर्गाः क्षयं यांति, विद्यंते विघ्नवद्भयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति,

पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण

कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१९॥ इति ॥

॥ पीठे चिराकका अथवा बीजलीका चांदणा पन्ना होय तो

इरियावहिं० तस्मुत्तरी० अन्नबू० कहिं के, एक लोगस्सका कान-

स्सग करे, पीठे प्रगट लोगस्स कही पूर्वलो परे सामायिक पारे,

पीठे एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी पम्कमण

विधिः संपूर्णः ॥

॥ अय कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्जसमगौरी ॥

कमले स्थिता जगत्ता, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-

दिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु ज्जुवनदेवी,

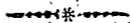
शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः

साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, ज्ञूयान्नः सुखदायिनं ॥

३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंभान्निधं

पार्थ, सदा ध्यायामि मानसे ॥



॥ अथ छुटक चैत्यवंदनस्तुतिलिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवह्नी, पुष्करावर्त्तमेधो, डुरिततिमिरञ्जानुः,  
कल्पवृक्षोपमानः ॥ नवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स नवतु  
सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन ० ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनादुरितध्वंसी, वंदनादिञ्चितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः  
श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम्  
॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि नक्त्या रुषन्नं जिनोत्तमम् ॥  
३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन  
वरण शरीर कांपि, अतिशय अन्निरामी ॥ अचिरा अंगज विश्व-  
सेन, नरपति कुलचंद्र ॥ मृगलंठन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद  
॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंभित आण ॥ एक मनं  
आराधतां, लहिये कोमि कड्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादव-  
कुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी  
जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे  
सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लहुं ए, अमृत पद अन्निराम ॥  
तास क्कमा कड्याण मुनि, निशिदिन नमत कड्याण ॥ ५ ॥ इति  
श्रीनेमिनाथ ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नभिये मन रंग ॥ नील वरण  
अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ कामित पूरण कल्प साख, वामा-  
सुत सार ॥ श्रीगोमी पुर स्वामि नाम, जपिये निरधार ॥ त्रिज्जु-  
वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां  
एहनं, प्रगटे परम कढ्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा  
मरणादि रूप, जव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात,  
त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिज्जुवन विख्यात  
॥ अमृतरूपे राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ कृमाप्रमुख कढ्याण  
मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर ० ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिकमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत दैवसिक पडिकमी ॥ १ ॥  
खमासमण देई देवसी आलोश्यं पडिकंता ॥ इच्छा ० ॥ सं ० ॥  
ज ० ॥ पक्षिय मुहपत्ती पडिलेहुं ? चउमासीएं चउम्मासियं मुह-  
पत्ती, संवहरीये संवहरी मुहपत्ती पडिलेहुं ? एम कहे. पीवें गुरु  
कहे, पडिलेहेह ॥ पीवें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देई, मुहपत्ती  
पडिलेही, वांइणां देई, तिहां परकीमें परको वडकंतो ॥ चउमासी  
पडि ० ॥ चउमासीन वडकंतो संवहरीमें संवहरो वडकंतो. एम  
यथायोगे कहे ॥ पीवें गुरु कहे. पुण्यवंतो देवसीने स्थानके पा-  
क्षिक ॥ चउमासिक सांवहरिक जणजो. ठीक जयणा करजो.  
मधुर स्वरे पडिकमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांजलेमें  
सावचेत रहेजो, पीवें सघलादी तदत्ति कहे ॥ पीवें ऊगी ॥  
इच्छाका ० ॥ सं ० ॥ ज ० ॥ संबुद्धा खामणेषां ॥ अभ्रुञ्जिभि अप्रि-

तर पस्त्रियं ॥ ३ ॥ स्वामेजुं ? गुरु कहे, स्वामेह ॥ पीठै मस्तके  
 अंजलि करतो थको, इच्छं स्वामेमि पस्त्रियं ॥ ३ ॥ कहा, गोमालीयें  
 बेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करो, मुहपत्ती  
 मुखें देई ॥ पस्त्रियें पनरसहं दिवसाणं पनरसहं राईणं जं किंचि-  
 अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे, चउमासें चउहं मासाणं अ-  
 ष्हं पस्त्राणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि  
 कहे. संवत्तरीयें डुवालसहं मासाणं चउवीसहं पस्त्राणं तिन्निसय-  
 सठिराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारे गुरु  
 पण मिच्छामि डुक्कं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता हुवे तो पा-  
 र्त्रियें तीन, चउमासीयें पांच, संवत्तरीयें सात साधुने स्वमावे ॥  
 ॥ पीठै उठी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥  
 पस्त्रियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीठै इच्छं आलोएमि, जो  
 मे पस्त्रिन ॥ ३ ॥ अइयारोकड, इत्यादि सूत्र ज्ञानी ॥ संक्षेपे  
 अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवत्तरी, अतिचार आलोवे, सो  
 लिखते हैं ॥

॥ अथ बृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥  
 आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १,  
 दर्शनाचार २, चारित्रार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच  
 विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर,  
 जाणतां अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी  
 मिच्छामि डुक्कं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए वहमाणे. उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अथ तदुभयं अष्टविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-  
मांहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान  
हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-  
कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव  
वांदणे पडिक्कमणे सिद्धाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने  
मात्रे अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्यो,  
भणीनें वोसार्यो, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे दांडी अण-  
पडिलेही, वसती अणसोधी, असिद्धाई अणोझा कालवेलामाहि  
दशवेकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वद्यां पखें भण्यो  
ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा  
सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना दुई,  
पग लागो थूंक लागो ओसोसे मूक्यो कनें छतां आहार नोहार  
कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो  
विणसतो उवेख्यो, छती शकें सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें  
मद्यर वह्यो, अत्रज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां  
प्रदेष मत्सर अंतराय अपघात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-  
ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञानः ए पांच ज्ञानतणी असहहणा  
कीधी, कोई तोतडो वोवडो हस्यो, वितर्क्यो आपणा जाणपणा  
तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषडड जिको अतिचार  
पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, वादर, जाणता, अजाणतां, दुवो होय, ते  
सहु मन वचन कायाई करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संक्रिय निक्कंखिअ, निधितिगिद्या अमृदुदित्तो अ ॥  
उववूह थिरीकरणे, वच्चल पभावणे अष्ट ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे  
विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नही,

सघलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे  
 विषे निःसंदेह बुद्धि धरो नही. चारित्रिया साधु साधवी तणां मल-  
 मलीन गात्र देखी दुगंछा उपजावी, मिथ्यात्वीतणो पूजा प्रभावना  
 देखी, मूढदृष्टिपणो कीधी, संघमांह गुणवंततणो अनुपबृंहणा अ-  
 स्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी. संघमांहे थिरीक-  
 रण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधी, देवद्रव्य विनाशिउं,  
 विणसंतुं उवेखीउं, छती शक्ते सार संभाल न कीधी, साधर्मिकशुं  
 कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी,  
 गुरुप्रते तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं  
 ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठवको लागो, मुखतणी  
 बाफ लागी, ठवणारिय हाथयकी पडीओ, पडिलेहवो वीसारयो,  
 नवकरवालोंने पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तोहिं ॥ एस  
 चरित्तायारो, अठविहो होइ नायवो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भा-  
 सासमिती २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिरखेवणासमिती  
 ४, उच्चारपासवणखेलजलसंधाणपारिडावणीयासमिती ५. मनोगुप्ति  
 १, वज्जसंघे अतिचार २, यगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी  
 ओयरण अतिचार ३, तणे सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे  
 दर्शनाचरो होय, ते र विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

विधि आ तणे धर्म श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्री  
 जाणतां अ —संका कंस विगिठा, पसंस तह  
 मिच्छामि अष्टद्विडो अ ॥ परिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान  
 देव गुरु धर्म तणे नही, प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र  
 ॥ कल्पिय धर्यो ना. आकांक्षा:-ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक  
 ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगें आ-  
 तंके इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी  
 भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र  
 चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र  
 शोख्यां, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली बलेव माहीपूनिम अजा-  
 पडिवो प्रेतबीज गोरत्रीज विणायगचोथ नागपांचम झूलणाछठ  
 शीलसातम ध्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस व-  
 त्सवारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक,  
 जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां घर  
 बाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान  
 दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां  
 थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकिष्ठाः—धर्म-  
 संबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर  
 विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें  
 न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी,  
 कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुआ मिथ्यात्वी तणी  
 प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति माडी, दाक्षिणलगे तेहनो धर्म  
 मान्यो ॥ श्रोसमकितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि  
 सूक्ष्म, वादर, जाणतां अजाणतां हुआ होय, ते सहू मन, वचन,  
 कायाई करी मिथ्यामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह  
 बंध छविचेए, अइभारे भक्तपाण बुझेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें  
 रीशवशें गाढो धाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन पांच्यां, घणे भारे  
 पोड्या, निर्लीछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-



नियम जे कोई अजाणे भांगो, एक गमा संकोडी बीजी गमा वधारी, विस्मृति लगे अधिक भूमि गया, पाठवणी आधी मोकली ॥ छठे दिग्ब्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण ब्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहंती पन्नरे, एवं वीश अतिचारा ॥ सञ्चिते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे० सञ्चित तणे नियम लीधे अधिक सञ्चित लीधुं, तथा सञ्चित मली वस्तु अपक्वाहार दुपक्वाहार तुञ्चौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला उंबी पहुंक काकडी भडथां कीधां, सुल्यां धान प्रमुख भक्षण कीधां ॥ सञ्चित दव्व विगई, पाणह तंबोलवन्न कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंम दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या. बावीस अभक्ष, बत्तीस अनंतकायमांहि आडुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची आंबली गोल्हां खाधां, चोमासा प्रमुखमांहे वासी कठोलनी रोटी खाधी. त्रिहुं दिवसनुं दही लीधुं, मधु महुडां माखण माटी वैगण पीलू पीचू पंपोटा पीपी विष हीम करहा घोल वडां अणजाण्यां फल टोंवरुं अथाणुं आमणबोर काचुं मीठुं, तिल खसखस काचां कोठिंबडां खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगबगती वेलार्ये व्यालू कीधुं, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मादान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत वाणिज्ये, लस्क वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये, जंत पीलणकम्मे, निहंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कर्म, पांच सामान्य, महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या, धाणी चणा पक्वान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा

कीधा कराव्या, तिलादिक संचीया, फागुण मास उपरांत राख्यां, कूकडा सूडा प्रमुख पोण्या, अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कंदुपे कुकुइए० ॥ कदर्प लगे विटनी परे हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूरखपणा लगे कुणहोने असंवद्ध वाक्य बोल्या, खांडा कटारो कुसि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक संज करी मेल्या, माग्यां आप्यां, कणक वस्तु दोर लेवराव्यां, अनेरो कांइ पापोपदेश दीयो, अंगोल नाहण, दांतण, पगधोअण पाणी तेल अधिक आप्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांड कूकडा, मिढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगे अदेखाई चिंतवी माटी मीठुं कण कपासिया काजविण चांप्या, तेह उपर वयठा, आले वनस्पति खुंदी, छास पाणी विरस तेल गुल आम्लवेतरस वेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते मांहि कीडो कंथुआ माखी उंदर गिरोलो प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेतें वांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगे एकने रुद्धि परिवार वांछी एकने मृत्युहाणि विमासी आठमा अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणि-हाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोळ्युं, काय अण पडिलेहुं हलाव्युं, छती वेलाइं सामायिक न लीधुं, सामायिक लई उघाडे मुख बोल्या, ऊंय आवी कोधी, बीज दीवा तणां उजाही लागी. कण कपासोया माटी मीठुं नील फूल

हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यची आभडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अण पूरुं पारिउं पारुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणं पैसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाइ रुवाणुवाइ वहिया पुग्गल खेत्ते ॥ नियमित भूमिकामांहिवाहिर थको कांइ अणाव्युं, आप कन्हाथी वाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चार विही, पमाय तह चेष भोअणा भोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिलां दिवसें शोव्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अण पडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार व्रण चोसिरामि वोसिरामि न कहुं. पोसहशालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी बोसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय चाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तगा संघट्ट परिताप उपइव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भगवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंघ्या, अविधि संथारुं पाथरुं, काल वेलायें पडिकवणुं न कीधुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावो, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारंयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नही ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निरुक्वणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा व्रतें असूझतुं धान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा

तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेब्बा, मन्नरलगे दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साध-  
र्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही ॥ वारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥  
इहलोका संसप्पजगे परलोगासंसप्पजगे जीविआसंसप्पजगे मरणा संसप्पजगे कामभोगासंसप्पजगे इहलोक मनुप्यभव मान महत्व लोक तणी सेवा ठकुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछयां. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीव वा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार वारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमू णोयरिया, अणसण कहीये उपवास, ते पर्वतियि छती शक्त कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंठसी मूठसी साढपोरसि पुरिमद्ध एकासणो वेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पञ्चस्काण पारवां वीसारीं, वेसतां नवकार भण्यो नही, ऊठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुंपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायञ्चितं विणओ० गुरुकनें मन सुद्धें आलोयणा लीधीं नही, गुरुदत्त प्रायञ्चित तप लेखा शुद्ध पुह-  
चाडयुं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मो प्रतें विनय साचव्यो नही; वा-  
चना पृष्ठना परावर्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिजाय

कीधी नहीं, धर्मध्यान शुद्धध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त  
लोगसस दस वीसनोकाउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतरतप विषइयो ० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ,  
परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायघो वीरि-  
यायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक  
दान शील तप भावना प्रसुख धर्म कृत्यतणे विषे मन वचन  
कायतणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रूडां पंचाङ्ग खमासमण न दीघां,  
बेठां पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो ० ॥

॥ नाणाइ अट्ट अइ वय, समसंलेहेण पण पनर कम्मसेसु ॥  
बारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं  
करणे ० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य बत्तीस अनंत काय बहुबीज  
भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीघां, नित्यकृत्य देवपूजा  
सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीघां, जीवाजीवादि वि-  
चार सद्वहिया नहीं, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी,  
प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह  
५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११,  
कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अर-  
तिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. ए अठारह  
पापस्थानकमांहि जे कांइ कीधो कराव्यो अनुमोघो ॥ एवं प्रकारें  
श्रावक धर्म श्रो सम्यक्तत्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो अतिचार  
मांहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां  
अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिञ्चामि दु-  
क्कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पीठें सबस्सवि परिक्रय ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्सह  
 पर्यंत कहे. तेवारे गुरु कहे. चउत्तेण पन्निक्कमह, चउमासे उठेण  
 पन्निक्कमह. संवउररिये अठमेण पन्निक्कमह. इच्छं तस्स मिच्छामि उक्कमं  
 कही. छादशावर्त्त वांदणां देवे. पीठें इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन्,  
 देवसियं आलोइयं पन्निक्कंता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेणं, अप्पुच्छिमि  
 अप्पित्तरपरिक्रयं ॥ २ ॥ खामेज्जं? गुरु कहे खा० ॥ पीठें इच्छं खामेमि  
 परिक्रयं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिच्छामि  
 उक्कमं देई खमावे, पीठें वे वांदणां देई. जगवन्! देवसियं आलोइयं  
 पन्निक्कंता परिक्रयं ॥ ३ ॥ पन्निक्कमावह? गुरु कहे सम्मं पन्निक्कमह. पीठें  
 इच्छं कही करेमि जंते सामाइयं ॥ इच्छामि गामि कानस्सग्गं जो मे परिक्रुत्तं  
 ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नवू० ॥ कही ॥ कानस्सग्ग करे, गुरु,  
 पाखीसूत्र कहे, ते सांजले, अने गुरुअकी जूदा पन्निक्कमता हुवे, तो  
 एक श्रावक खमासमण देई कहे. जगवन्! सूत्र जणुं? गुरु कहे,  
 जणेह. एसो वचन मनमें धारी ॥ इच्छं कही, उज्जो अको, हाथ जोम्ही  
 मुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें  
 धिंतवतो वंदित्तु सूत्र गुणे. वीजा श्रावक करेमि जं ते० इच्छामि  
 गामि कानस्सग्ग तस्सुत्तरी० अन्नवू० कही कानस्सग्गमें रहा  
 सुणे. सूत्रप्रांते णमो अरिहंताणं कही. कानस्सग्ग पारी, उज्जा  
 अका तीन नवकार गुणी वेसे. पीठें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि  
 जं ते कही, इच्छामि पन्निक्कमिजं जो मे परिक्रुत्तं ॥ ३ ॥ इत्यादि  
 कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पन्निक्कमे देवसियं सबं ॥ एहने ठिकाणें  
 पन्निक्कमे परिक्रयं, चउम्मासियं संवउरियं सबं कहे. पीठें उज्जी, अप्पु-  
 छिमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी, खमासमण देई इच्छा०  
 ॥ सं० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं,  
 कानस्सग्ग करूं? गुरु कहे करेह. पीठें इच्छं कही, करेमि जंते

सामा० इच्छामि ठामि कान्तस्सग्गं तस्सु० अन्नत्तू० इत्यादि कही,  
 पाखीयें बार लोगस्स चन्नुमासियें वीस लोगस्स संबद्धरीयें चालीस  
 लोगस्सतो कान्तस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, कान्तस्सग्ग करी.  
 पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्ती पम्बिलेही, बे वांदणां देई इच्छा०  
 ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ समाप्ति स्वामणेणं ॥ अप्पुठ्ठिओमि अप्पिंतर प-  
 स्सियं ॥ ३ ॥ स्वामेज्जं ? गुरु कहे स्वामेह. पीठें इच्छं स्वामेमि पं-  
 स्सियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्व कइयो. तिम कहे, पीठें इच्छाका० ॥  
 सं०॥ज्ञ०॥पाखी॥३॥ स्वामणां स्वामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार बेर  
 स्वमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त  
 स्वामणां स्वामेह, पीठें श्रावक एक स्वमासमण देई. मस्तक नीचुं  
 नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार बार कहे, पीठें गुरु कहे  
 निच्छारग पारगाहोह. पीठें श्रावक कहे. इच्छं इच्छामि अप्पुसठिं कही,  
 गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आं-  
 बिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे  
 हजार सज्जाय करी, एक उपवासनी पेटें पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें  
 दैवसिक ज्ञणजो. एम चन्नुमासे ए सर्व दुगुणो कहणो, संबद्धरीयें  
 त्रिगुणो कहणो. पीठें जिणें तप कीधो हुवे ते पइठियं कहे, न  
 कीधो हुवे ते तहत्ति कहे ॥ पीठें बे वांदणां देई, अप्पुठ्ठिओमि अ-  
 प्पिंतर देवसियं स्वामेमि इत्यादि कहे. पीठें बे वांदणा देई. आय  
 रिय उवप्पाए० तीन गाथा कहे, इम आगे सर्व विधि दैवसिक  
 षडिकमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो कान्तस्सग्ग  
 करी स्तुति कहे. पीठें जवण देवथाए करेमि कान्तस्सग्गं. इत्यादि  
 विधे जवनदेवताको कान्तस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ श्रुतदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय लंघाय, देवी ज्वनवासिनी ॥ निहत्य डरि-  
 तान्येषा, करोतु सुखमहायम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काञ्चस्सग्ग करे, तथा तीने पवे वडा स्तवनं  
अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा  
पञ्चमणो पूरो हुवा पीठे एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हस्ति-  
दा० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, बीजा सर्व सुणे, जिएने  
रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांजले ॥ इति  
पाक्षिकादि तीन पडिकमणविधि ॥

॥ अथ दस पञ्चखाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संजारे, सो इस तरे पञ्चखाण  
करे ॥ उग्गए सूरें नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पञ्चखाण चउद्विहंपि  
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णजोगेणं सहसागारेणं  
महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं विगइउ पञ्चकाइ. अण्णजोगेणं  
सहसागारेणं लेवालेवणं गिद्धिसंसिषेणं उखित्तविवेगेणं  
पनुच्चमस्सिणं पारिषावणियागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्ति-  
यागारेणं देसावगासियं जोगपरिजोगं पञ्चकाइ. अण्णजोगेणं  
सहसागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥  
इति नवकारसी पञ्चकाण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संजारे नहिं, सो विगइका उर  
देसावगासिकका आगार न पञ्चके. निकेवल नवकारसी आदिक  
पञ्चकाण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरें नमुक्कार सहियं पञ्चकाइ ॥ चउद्विहंपि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नव-  
कारसी पञ्चकाण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुंठसी पञ्चकामि, उग्गए सूरें चउद्विहंपि आहारं  
असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० ॥ सहसा० ॥ पण्णकालेणं दिसा  
मोइणं ॥ साहुवयणेणं सब० विगइउ पञ्चकामि. इत्यादि पूर्वकी



परें कहणां ॥ इति पोरिसी पञ्चस्काण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साह पोरसीका पञ्चस्काण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पञ्चस्काइके ठिकाने इहां साहपोरसिं पञ्चस्काइ कहणां ॥ इति साह पोरसिपञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरें उग्गए पुरिमहं अचहं वा पञ्चस्काइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० ॥ सह० ॥ पञ्च० ॥ दिसामो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सब० ॥ विगइउ पञ्चस्काइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमहपञ्चस्काण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साह पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उग्गए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पञ्च० दिसा० साहु० सब० एकासणं विआसणं वा पञ्चस्काइ, उविहं ति विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअपुढाणेणं पारि० मह० सब० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासण विआसण पञ्चस्काण ॥ आ० ० ॥

॥ पोरसिं साह पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उग्गए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्स० सह० पञ्चस्का० दिसा० साहु० सब० एकासणं एगढाणं पञ्चस्काइ, उविहं ति विहं चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह० सागारिआगारेणं गुरुअपुढाणेणं पारिढाव० मह० सब० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलढाणा पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साह पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उग्गए सूरें चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अस्स० सह० पञ्च० दिसामो० साहु० सब० आयंबिलं पञ्चस्काइ, अस्स० सह० लेवालेवेणं गिहउसंसिढेणं उरिक्त्तविवेणं पारिढा० मह० सब० एकासणं पञ्चस्काइ, ति विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्स० सह०

सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअपुढालेणं पारिघां महं  
सव्वं वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंविह पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साह पोरसिं वा पञ्चस्खाइ. उग्गएं सूरे चउव्विहंपि  
आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्सउं सहं पञ्चं दिसां  
साहुं सव्वं ॥ निव्विगइयं पञ्चस्खामि. अस्सं सहं लेवालेवेणं  
गिहउसंसिठेणं उस्खित्तविवेगेणं पनुच्चमस्खिएणं पारिं महं सव्वं  
एकासणं पञ्चस्खाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अस्सं  
सहं सागां आउट्टं गुरुं पां महं सव्वं देसावगासियं  
जोगपरिजोगं पञ्चस्खामि. अस्सं सहं महं सव्वं वोसिरामि  
॥ इति नीवी पञ्चस्खाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ सूरे उग्गए अन्नतठं पञ्चस्खामि. चउव्विहंपि आहारं असणं  
पाणं खाइमं साइमं अस्सं सहं महं सव्वं देसावगासियं  
जोगपरिजोगं पञ्चस्खामि. अस्सं सहं मं सव्वं वोसिरामि ॥  
इति चउव्विहार उपवास पञ्चस्खाण ॥ ९ ॥

॥ सूरे उग्गए अन्नतठं पञ्चस्खामि. तिविहंपि आहारं असणं  
खाइमं साइमं अं सहं पाणहार पोरसिं साह पोरसिं पुरिमह  
अवढं वा पञ्चस्खाइ अस्सं सहं पञ्चं दिसां साहुं सव्वं  
देसावगासियं जोगपरिजोगं पञ्चस्खामि. अं सं मं सव्वं वो-  
सरामि ॥ इति तिविहार उपवास पञ्चस्खाण ॥

॥ पोरसिं साहुं पोरसिं पुरिमहुं अवढं वा पञ्चस्खामि. उग्गए  
सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अं सहं  
पञ्चं दिसां साहुं सव्वं एकासणं एगघाणं दत्तियं पञ्चस्खामि.  
तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्सं सहं  
सागां गुरुं महं सव्वं विगइत्तं पञ्चस्खामि. इत्यादि पूर्ववत्.  
देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपञ्चस्खाणं ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वाइ, चनुव्विहंपि आहारं असणं पाणं  
खाइमं साइमं अण्णं सह० मह० सब्बं वोसिरइ ॥ इति दिव-  
सचरिमं पञ्चख्वाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वामि डुविहंपि आहारं असणं खाइमं  
अण्णं सह० मह० सब्बं वोसिरामि, देसावगासियं पूर्ववत् ॥ इति  
दिवसचरिमं डुविहारं पञ्चख्वाण ॥ ११ ॥

॥ पाणहारं दिवसचरिमं पञ्चख्वामि अन्नं सह० मह०  
सब्बं वोसिरामि ॥ इति पाणहारं उपवासरो पञ्चख्वाण ॥ १२ ॥

॥ जवचरिमं पञ्चख्वाइ तिविहंपि चनुव्विहंपि आहारं असणं  
पाणं खाइमं साइमं अन्नं सह० मह० सब्बं वोसिरइ ॥ आगार  
॥ ४ ॥ जवचरिमं, दो आगारकात्ती होय ॥ इति जवचरिमं पञ्चख्वाण ॥

॥ तथा इमहिजं गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुखं अ-  
ज्जियहं पञ्चख्वाणकेत्ती ए चार आगारं, अन्नं सह० मह० सब्बं  
वोसिरइ ॥ पांचमो चोदपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अ-  
ज्जियहं पञ्चख्वाण ॥

॥ अहसां जंते तुह्माणं समीवे देसावगासियं पञ्चख्वामि  
दव्वं खित्तं कालं ज्ञावणं दव्वणं देसावगासियं खित्तणं उठ-  
वा अण्णं कालं मुहुत्तथारणाप्रमाणं जावनियमं पञ्चख्वामि  
ज्ञावणं जावगहेणं न गहिज्जामि ठलेणं न ठलिज्जामि अण्ण-  
केवि रायकेण वा एसो परिणामो न पन्निवज्जइ ता अज्जिग्गहं  
अण्णं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सब्बसमाहिवत्तिया-  
गारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पञ्चख्वाण ॥

॥ तथा साधु पञ्चस्काणं करे, तव देसावगासी नही पञ्चस्के,  
अरु तिविहारं उपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासणं प्रमुखमें  
पाणस्सकाठं आगारं पञ्चस्के सो दिखावे हैं, पाणस्स लेबाणेण वा

अत्रेवामेण वा अत्रेण वा बहुलेण वा ससिन्नेण वा असिन्नेण वा  
वोसिरइ ॥

॥ अथ पञ्चखाण आगार संख्या ॥

॥ दोषेव नमुक्कारो आगार उच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त  
पुरमिद्धे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गढाणस्सत्त, अठेवय आ-  
यंविळंमि आगारा ॥ पंच वयत्ताठे, उप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥  
पंच चत्तरो अत्तिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पं-  
चत्त, इवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पञ्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहियं पञ्चखाण चत्तविहंपि आहारं ॥  
अर्थः—इहां गुरु कहे पञ्चखाणइ, शिष्य कहे पञ्चखामि, पञ्चखाणका  
अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना. जेसें सूरज नदय हुआ  
पीठे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पञ्चखाण मुहुर्त्त कहते  
दो घन्टी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पाहूं नहीं. तहां  
तक चत्तवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो  
च्यार प्रकारका आहार इस मुजव दे. असन कहते अन्न, चावल,  
गहूं, मुंग, घणा, ज्वार, वगैरे सब अनाज सातू गहूं जवकूं आदि  
लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लड्डू वगैरे सब  
तरेका पकवांन सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राव  
घाट सब पतली उर नरम वस्तु हींग वेसण सूंफ लूण लेंधवादिक  
इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥ १ ॥ पाणं इसका अर्थ आठण  
जवोदक तुषोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प-  
काय ॥ २ ॥ खाइमं कहते खादिम सूखनी नालेर खजूर द्राख सेक्या  
अनाज आंश केला काकनी अखरोट खारक विदाम वगैरह सब  
जातका मेवा सब जातका फल खाइमं जाणना ॥ ३ ॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबूल सुंठि मिरच पींपर हरमे बहेना आंबला तुलसी कसेला  
 काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविमंग अजमा  
 अजमोद कुलेंजन कवावचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया  
 कुंजटिआ पांसुपारी पोहकरमूल जवालाकीजर वावची वांवल-  
 ढाल धवठालि खेजमेकीठालि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु  
 जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींबकीठालि जरु  
 पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूमेकीठालि चंदन-  
 कीराख रोहिणीकीठालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया  
 चिरमी कयर बोरकीजर इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब ठो-  
 रणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो  
 इच्छा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे, पञ्चखाणका अर्थ जाणे  
 विगर जो पञ्चखाण करे सो अंधा पञ्चखाणहे इस वास्ते संक्षेप  
 मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे, जिस पञ्चखाणमें जितना आगार  
 होय सो रखकर हमारे पञ्चखाणहे, अन्नठणान्नोगेणं कहिये अना-  
 न्नोग टालके किया जो पञ्चखाण, अत्यंत जूल जाणेंसें कोइनी  
 चीज जूलके मुंमे मालदी होय लेकिन जाणे बाद तत्काल उसी  
 वखत पीठा नाख देवे तो पञ्चखाणमें जंग नही, नर जाणे बाद  
 जकण करे तो पञ्चखाण निश्चे जंग होय ॥१॥ पञ्चकालेणं कहते  
 कालकी प्रचन्नता, आकाशमें गर्द ऊरती होय आकाशमें बहल  
 ठाये होय तेसेइ पहामकीनट आजावे सूरज नही दीखे तब ज-  
 रमसुं पञ्चखाणका वखत पूरा हुवा जाणकर न्नोजन करे तो व्रत  
 जंग नही ॥२॥ दिसामोहेणं कहतां दिसा जूलकर पूरबकूं पच्छिम  
 जाणकर पञ्चखाणका काल पूरा हुये विगर न्नोजन कर लेवे तो  
 व्रत जंग नही ॥३॥ सहस्सागारेणं कहतां सहसात्कार बहोत उताव  
 लके योगसें अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते घी वगैरेका ठीटा

मूंमें गिर जाय तो व्रत जंग नही ॥४॥ साधूवयणेषां कइतां साधूके  
 वचनसें उग्घाम्ना पोरसीआदिक जरम संयुक्त सुणकर पञ्चस्काणका  
 काल पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो व्रत जंग नही ॥५॥ सब  
 समादिवत्तियागारेणं कइतां पञ्चस्काणका काल पूरा होणसें पहली  
 अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी थिरता रहे  
 नही आर्चरौद्र ध्यान होय तब उसका रोग मिटाणे वास्ते ओपधादिक  
 पण्य देवे वा आप लेवे तो पञ्चस्काण जंग नही ६ महत्तरागारेणं  
 कइतां पञ्चस्काणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा  
 निर्जराका कारण अथवा हरकितीसें वण नही आवे एसा जो चैत्य  
 संघादिकका प्रयोजन होणसें पञ्चस्काणका काल पूरण जये विगर  
 ही जोजन कर लेवे तो व्रत जंग नही ७ सागारीआगारेणं कइतां  
 गृहस्थ देखतां साधू जोजन करे नही एसी ॥ जिनराजकी आज्ञा  
 हे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पञ्चस्काण कर जोजन  
 करणे वेगहे उस चखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब  
 साधू उस ठिकाणसें उठकर उर ठिकाणे जाकर जोजन करे तो  
 व्रत जंग नही उर गृहस्थकूं इसमें एसा आगार हे जिस पुरुपकी  
 निजर लगती होय तो उस पुरुपके आणसें एकासणेवाला उठकर उर  
 ठिकाणे जाकर जोजन करे तो व्रत जंग नही ॥ ८ ॥ आउट्टणपसारेणं  
 कइतां पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणसें थोमासा आसन  
 चल जाय तो व्रत जंग नही ॥९॥ गुरु अष्टुठाणेषां कइतां आपका गुरु  
 आणसें तथा आपसें कोइ वना पुरुय आणसें विनयके वास्ते जोजन  
 करतां एकाशनादिकमें आसन ठोरु खमा हो जावे तो ज्ञी व्रत जंग  
 नही ॥१०॥ पारिधावणियागारेणं कइतां सब पञ्चस्काणमें यह आगार  
 साधुकाहे जिस आहारके परठणसें बहुत जीवकी विराधना होती  
 जाणकर गुरु कहे यह आहार परठे मत सरस आहार हे तब

एकाग्रनादि व्रतधारी साधू गुरुके आह्वानसे दूसरी वस्तुतरी आहार करे तो व्रत जंग नहीं ॥ १ १ ॥ लेवालेवेणं कहतां जोजन करणेका थाल प्रमुख ज्ञानन उसके अंदर घृतादिक विगय द्रव्यका अंसलगाजयाहे उसकूं हाथ वगेरेसे पूठ माला उस परजी किंचित्त्वे मालम सालगारहे उसमें आर्यविलादि व्रतवाला जोजन कर लेवे तो व्रत जंग नहीं ॥ १ २ ॥ उस्वित्तविधेगेणं कहतां आर्यविलादि पञ्चस्वखाणमें नहीं खाणे योग्यजो विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणे योग्य द्रव्यसे हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत जंग नहीं लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसे उठाव सके नहीं ऐसे द्रव्यसे फरस हुआ होय तो उसके खाणेसे व्रत जंग नहीं ॥ १ ३ ॥ गिहत्प्रसंसिठेणं कहतां जोजन पुरषे जिससेती एसी कुम्ठी आदि देकर ज्ञानन विगय प्रमुख द्रव्यसे वेमालम खरनी होय प्रत्यक्ष निजरसे कदाचित्मालम न होय तब जो उसही वासणसे जोजन पुरसे तो ज्ञानी व्रत जंग नहीं १ ४ पडुच्चमुखिवएणं कहतां सर्वथा लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसे वेमालम चोपमणेमें आयाहे लेकिन घृतादिकका स्वाद नहीं मालम देता हे तो नीची पञ्चस्वखाणमें उस द्रव्यकूं खाणेमें आवे तो व्रत जंग नहीं उर जो धारविगय लेवे तो व्रत जंग होय ॥ १ ५ ॥ इति पन्ने पञ्चस्वखाणका आगारार्थ संपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्वारिमंगलं अरिहंतामंगलं सिद्धामंगलं साहूमंगलं केवल्लिपसात्तो धम्मोमंगलं १ चत्वारिलोगुत्तमा अरिहंतालोगुत्तमा सिद्धालोगुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवल्लिपसात्तो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्वारिसरणं पवज्जामि अरिहंतेसरणंपवज्जामि सिद्धेसरणंपवज्जामि साहूसरणंपवज्जामि केवल्लिपसात्तं धम्मंसरणंपवज्जामि ३ इत्थामि पणिकमिउं

पगामसिद्धाए निगामसिद्धाए संधाराउवट्टणाए परियट्टणाए आउंठः  
 णाए पसारणाए उप्पइयासंघट्टणाए कइए कक्कराईए ठोए जंजाइए  
 आमोसेससर स्कामोसे आउलमानलाए सोअणवत्तियाए इत्थोविप्प-  
 रियासिआए दिठीविप्परियासिआए मणाविप्परियासियाए पाण-  
 जोयणाविप्परियासिआए जोमेदेवसिउ अइयारोकउ तस्समिच्चामि-  
 डुककं पन्निक्कमामि गोयरचरिआए जिखायरिआए उग्घारुकवारु उ-  
 ग्घारुणाए साणावत्तादारा संघट्टणाए मंनोपाहुनिआए वलिपाहु-  
 निआए ठंवणापाहुनिआए संकिएसइस्तागारे आणेसणाए पाणेस-  
 णाए आणजोयणाए पाणजोयणाए वीअजोयणाए हरियजोयणाए  
 पञ्चाक्कम्मियाए पुराक्कम्मियाए अदिठहमाए दगसंसठहमाए रबसंसठ-  
 हमाए पारिसाम्भियाए पारिठावणिआए उहासणजिस्काए जंउ-  
 ग्गमेणं उप्पायणेसणाए अपरिश्रुदं पन्निग्गहिअं परिचुत्तंवा जंनप-  
 रिठवणिअं तस्समिच्चामिडुककं पन्निक्कमामि चानकालं सिद्धायस्त-  
 अकरणयाए उज्जलकालं जंनोवगरणस्त अप्पन्निखेइणाए अप्पमज्जा-  
 णाए उप्पमज्जाणाए अइक्कमे वइक्कमे अइयारे अणायारे जो मे देव-  
 सिउ अइयारो कउ तस्स मिच्चामि डुककं पन्निक्कमामि एगविहे-  
 असंजमे पन्निक्कमामि दोहिं वंधणेहिं रागबंधणेणं दोसबंधणेणं  
 पन्निक्कमामि तिहिं दंमेहिं मणदंमेणं वयदंमेणं कायदंमेणं  
 पन्निक्कमामि तिहिं गुत्तोहिं मणगुत्तोए वयगुत्तोए कायगुत्तोए  
 पन्निक्कमामि तिहिं सल्लेहिं मायासल्लेणं नीयाणासल्लेणं मिच्चदं-  
 सणसल्लेणं पन्निक्कमामि तिहिं गारवेहिं इत्थीगारवेणं रसगारवेणं  
 सांयागारवेणं पन्निक्कमामि तिहिं विराइणाहिं नाणविराइणाए  
 दंसणविराइणाए चारित्तविराइणाय पन्निक्कमामि चउहिं क-  
 साएहिं कोइकसाएणं माणकसाएणं मायाकसाएणं लोहकसाएणं  
 पन्निक्कमामि चउहिं ससाहिं आहारससाए जउससाए मेहुणससा



ए परिग्गहससाए पन्निक्कमामि चउहिं विगहाहिं इत्थिकहाए जत्त-  
 कहाए देसकहाए रायकहाए पन्निक्कमामि चउहिं जाणेहिं अट्टेषां  
 जाणेसां रुद्धेसांजाणेसां धम्मेषांजाणेसां सुक्केसांजाणेसां पन्निक्कमामि  
 पंचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए पारताव-  
 णीआए पाणायवायकिरियाए पन्निक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं  
 सद्धेसां रुद्धेसां रसेसां गंधेसां फालेसां पन्निक्कमामि पंचहिं महद्धएहिं  
 पाणाइवायानुविरमसां मुसावायानुवेरमसां अविन्नादाणानुवेरमसां  
 मेहुणानुवेरमसां परिग्गहानुवेरमसां पन्निक्कमामि पंचहिं समिइहिं  
 इरिआसमिइए ज्ञासासमिइए एसणासमिइए आयाणजंरुमत्तनि  
 खेवणासमिइए उच्चारपासवण खेवजल्लसंघाणपारिठावणियासमि-  
 इए पन्निक्कमामि गहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएसां आउकाएसां  
 तेउकाएसां वानुकाएसां वणस्सइकाएसां तस्सकाएसां पन्निक्कमामि  
 गहिं लेसाहिं किन्हलेसाए नीललेसाए कानुलेसाए तेउलेसाए प-  
 नुमलेसाए सुक्कलेसाए पन्निक्कमामि सत्तहिं जयठाणेहिं अठहिं म-  
 यठाणेहिं नवहिं बंजचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं  
 उवासगपन्निमाहिं बारसहिं त्तिरुपन्निमाहिं तेरसहिं किरियाठ-  
 णेहिं चउहासहिं जूयगामेहिं पसरसहिं परमाइम्मिणहिं सोलसएहिं  
 गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अबंजे इगुणवीसाए ना-  
 यच्चयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इकवीसाए सब्बेहिं बावीसाए  
 परीसहेहिं तेवीसाए सुयगरुज्जयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पच्चवी-  
 साए ज्ञावणाहिं ठव्वीसाए दसाकप्पववहारासां उद्देशणकालेसां सत्ता-  
 वीसाए अणगारगुणेहिं अठवीसाए आयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए  
 पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअठणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं  
 वत्तीसाए जोगसंगहेहिं तित्तीसाए आसायणाए अरिहंतासां आसाय-  
 णाए सिद्धासांआसायणाए आयरिआसांआसायणाए उवञ्चायासांआ-

सायणाए साहूणंआं साहूणोणंआं सावयाणंआं सावियाणंआं दे  
 वाणंआंसायं देवीणंआं इहलोगस्सआं परलोगस्सआं केवलपन्न-  
 सस्सधम्मस्सआं सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआं सवपाणञ्चूअजी-  
 वसत्ताणंआं कालस्सआं सुअस्सआं सुयदेवयाएआसां वायणा  
 रिअस्सआं जंवाइइं वच्चाभेलिअं हीनस्करिअं अच्चस्करिअं पयदीणं  
 विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुहुदिअं, हुहुपन्निअं अकालेक-  
 उतज्जाअं कालेनकअसज्जाअं असज्जाइए सज्जाइयं सज्जाइए नसज्जा-  
 इयं तस्स मिअमि हुक्कअं एमो चअवीसाए तित्थयराणं उतज्जाइ-  
 माहावीरपक्कवसाणाणं इणभेव निगंअं पावयणं सअं अणुत्तरं के-  
 वलियं पन्निपुसं नेआअयं संसुअं सअज्जणं सिद्धिमगं मुत्तिमगं  
 निज्जाणमगं निव्वाणमगं अवितहमविसंअि सव्वडुक्कपदीणमगं  
 इत्थविआजीवा सिअंति बुअंति मुअंति परिनिअयंति सव्वडुक्खाण-  
 मंतकरंति तंधम्मं सइहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अ-  
 णुपालेमि तंधम्मं सइहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालितो अणु-  
 पालितो तस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अणु अत्थमि आराहणाए  
 विरअमि विराइणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि  
 अअं परिआणामि वंअंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं  
 उवसंपज्जामि अअणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं  
 परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिअत्तं परिआणामि सम्मत्तं  
 उवसंपज्जामि अओहिं परिआणामि वोहिं उवसंपज्जामि अमगं प-  
 रिआणामि मगं उवसंपज्जामि जं संअरामि जं च न संअरामि जं  
 पन्निक्कामि जं च न पन्निक्कामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स  
 अइयारस्स पन्निक्कामि समणोइं संजय विरथ पन्निहय पच्चरुवाय  
 पावकम्मं अनियाणो विअसंपन्नो मायामोसविवज्जित्थं अइहाइक्कत्तु  
 दीवसमुहेसु पन्नरत्तकम्मञ्जमीसु ॥ जावंतिकेविसाह, रयहरपागुअ

परिग्रहधारा ॥ पंचमहव्यधारा, अघार सहस्त सीलंगधारा ॥  
 अस्वव्याधार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥  
 खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे ॥ मिति मे सव्व जूएसु,  
 वेरं सव्वं नकेणई ॥ १ ॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय दुगंछियं  
 सम्मं ॥ तिविहेण पम्किंतो, वंदामि जिणेचउवीलं ॥ २ ॥ इतिश्री  
 साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

### ॥ अथ पस्वी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिठंकरे अतिठे, अतिठसिद्धेय तिठसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजि-  
 णेयरिसी, महरिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरथणसायर,  
 अविरातिऊणं तिन्निंसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणा-  
 भिसुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥  
 खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया महवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं  
 करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवठिउतं, महव्वय उ-  
 च्चारणं काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा-  
 पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछट्ठा तंजहा सव्वानं पाणाइ-  
 वायाओ वेरमणं सव्वानं मूसावायाउं वेरमणं सव्वानं अदिन्नादाणाउं  
 वेरमणं सव्वानं मेहुणाउं वेरमणं सव्वानं परिग्गहाउं वेरमणं सव्वानं-  
 राइभोयणाउं वेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउं-  
 वेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चस्सामि से सुहुमं वा वायरं वा तसं  
 वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा  
 पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं  
 मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्नंसमणु  
 जाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि  
 से पाणाइवायाए चउव्वहे पन्नते तंजहा दव्वउं खित्तउं कालउं  
 भावउं दव्वउणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा

इवाए सयल्लोए कालञ्जणं पाणाइवाए दियावा राञ्जवा भावञ्जणं  
 पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्त धम्मस्स केवल्लि  
 पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सञ्चाहिड्ढियस्स विणयमूलस्स खंती-  
 पहाणस्स अहिरस्ससोवस्सियस्स उवसमप्पभवस्स नव वंभचेर गुत्तस्स  
 अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुल्लवीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स  
 संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि-  
 त्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविस्वाइयस्स  
 संसारपारगामियस्स निव्वान गमण पञ्जवसाणफलस्स पुव्वि अन्नाण  
 याए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-  
 गंदोस पडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगास्व-  
 गरुयाए चउक्कसानवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-  
 सोख्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-  
 वान कञ्जवा कारिञ्जवा कीरंतोवा परेहिं समणुन्नान्तं तं निंदामि ग-  
 रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प-  
 ड्डपन्नं संवरेमि सव्वं पाणाइवायं जावजीवाए अणिस्सिउहिं नेव  
 सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-  
 यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं  
 साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खू-  
 णीवा संजयविरय पडिहय पच्चस्काय पावकम्मे दियावा राञ्जवा एगोवा  
 परिस्तागञ्जवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खल्लु पाणाइवायस्सवेरमणे  
 हिएसुहे स्वमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सवेसिं पाणाणं  
 सव्वेसिं भूयाणं सवेसिं जीवाणं सवेसिं सत्ताणं अटुस्कणयाए अ-  
 सोयणयाए अज्जरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-  
 णियाए अणुद्वणयाए महत्ते महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु-  
 चिन्ने परमंसिदेसिए पसत्ते तं टुस्ककयाए कम्मस्कयाए मोहस्क

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए तिद्धु उवसंपज्जिताणं विहरामि  
 पढमे भंते महव्वए उवडिडमि सब्बात्त पाणाइवायात्तवेरमणं ॥ १॥  
 अहावरेदोब्बेभंते महव्वए सुसावायात्तवेरमणं सब्बं भंते सुसावायं  
 पच्चस्सामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं सुसंवाइत्था  
 नेवनेहिं सुसंवायाविद्या सुसंवायंतेवि अभेनसमणुजाणमि  
 जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न क-  
 रोमि न कारोमि करंतंपि अन्नंसमणुजाणामि तस्स भंते पडि-  
 क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि से सुसावाए चउ-  
 व्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वत्तं खित्तत्तं कालत्तं भावत्तं दव्वत्तं सुसा-  
 वाए सब्बदव्वेसु खित्तत्तं सुसावाए लोएवा अलोएवा कालत्तं  
 सुसावाए दियावा रात्तवा भावओणं सुसावाए रागेणवा  
 दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसात्तस्स  
 णस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि-  
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव वंभवेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिस्का-  
 वित्थियस्स कुस्कीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपस्सकालियस्स चत्तदो-  
 सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलस्सकणस्स पंचमहव्व-  
 यजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविस्संबाइयस्स संसारपारगामियस्स  
 निव्वानगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अ-  
 बोहिए अण्णभिगमेणं अभिगमेणवा पमाणं रागदोसपडिबद्धयाए  
 बालयाए मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसात्तवग-  
 णं पंचेदियवसट्ठेणं पडिपुत्तभारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहं  
 वाभवे अत्तेसुवा भवग्गहणेसु सुसावाओ भासिओवा भासाविओवा  
 भासिज्जंतो वा पेरेहिं समणुत्ताओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिवि-  
 हेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संवरोमि अणागयं  
 पच्चस्सामि सब्बं सुसावायं जावजीवाए अणिसिद्धिं नेवसयंसुसंवाइ

द्या नेवन्नेहिं मुसंवायाविद्या मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा  
 अरिहंतसखिखयं सिद्धसखिखयं साहूसखिकयं देवसखिकयं अप्पसखिकयं  
 एवं इवइ भिखुवा भिखुणोवा संजयविरयपडिइय पच्चख्वाय पा-  
 वकम्भे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा  
 एस खल्लु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए  
 पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं स-  
 व्वेसिं सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-  
 याए अपोडणयाए अपरियावणयाए अणुहवणयाए महत्ते महागुणे  
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्ते तं दुख्खखयाए  
 कम्मखयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उव-  
 संपज्जत्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिउमि सव्वाउ मुसा-  
 वायाओषेरमणं २ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाउवेरमणं  
 सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चख्खामि से गामेवा नगरेवा रत्तेवा अप्पंवा  
 बह्णुवा अणुवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं अदिन्नं  
 गिण्हिजा नेवग्गेहिं अदिन्नं गिण्हाविजा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंन-  
 समणुजाणामि जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए कारणं  
 न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावजीवाए  
 तस्स भंते पट्टिक्कामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से  
 अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भा-  
 वओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणद्वारणिच्चेसु दव्वेसु खित्तओणं  
 अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रत्तेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा  
 राउवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इ-  
 म्मस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिठ्ठियस्स वि-  
 णयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरत्तसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स  
 नववंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरुखावित्तियस्स कुरुत्तीसंबलस्स

निरगिगसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स नि-  
 विव्वारस्स निविच्चीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचि-  
 यस्स अविंसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाण  
 फलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं  
 अभिगमेणवा पप्पाएणं रागदोसपडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए  
 मंदयाए किड्डयाए तिगाएवगरुयाए चउक्कसाडवगएणं पंचेदियवसट्टेणं  
 पडिपुन्नभारियाए सावासुक्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअत्तेसुवा भवग्ग  
 हणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा धिप्पंतंवा परेहिंसमणुन्ना  
 ओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अ  
 इयं निंदामि पडुप्पन्नंसंबरेमि अणागयं पच्चस्कामि सबं अदिन्नादा  
 णं जावज्जोवाए अणिसिअओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं  
 अदिन्नं गिन्नाविच्चा अदिन्नं गिन्नंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा  
 अरिहंतसखिखयं सिद्धसखियं साहूसखियं देवसखियं अप्पसखियं  
 एवं हवइ भिखूवा भिखुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चस्काय पाव  
 कम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमा  
 णेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आ  
 णुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं  
 जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुखणयाए असोयणयाय अजूरणवाय  
 अतिप्पणयाय अपीडणाय अपरियावणियाय अणुहवणयाय महत्ते  
 महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्ते तं  
 दुक्कस्सयाय कम्मस्सयाय भोहरक्कयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय  
 त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अणुठ्ठिओमि स्  
 व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते मह-  
 व्वए मेहुणाओवेरमणं सबं भंते मेहुणं पच्चख्खामि से दिव्वा मा-  
 णुसंवा तिरिख्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविच्चा नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविद्या मेदुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं  
 तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंमि अ-  
 न्नंनसमणुजाणामि तस्त भंते पडिक्कमाभि निंदाभि गरिहामि ।  
 अप्पाणं वोसिरामि से मेदुणे चउबिहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ  
 कालओ भावओ दव्वओणं मेदुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्त-  
 ओणं मेदुणे उट्टलोएवा अड्डोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मे-  
 दुणे दियावा राओवा भावओणं मेदुणे रागेणवा दोसेणवा जंपि-  
 यमए इमस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालखणस्स संचा-  
 हिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरत्नसोवन्नियस्स उव-  
 समप्पभवस्स नववंभचेरयुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स  
 कुब्बीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुण-  
 गाहियस्स निव्वत्तीलखणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिय-  
 स्स अविस्वाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपच्चावसाण-  
 फलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अ-  
 भिगमेणवा पमाएणं रागदोसप्रडिबद्धयाए थालयाए मोहयाए मंद-  
 याए किहयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेदियवसट्टेणं  
 पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खभणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा  
 भवग्गहणेसु मेदुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविच्चंतोवा परेहिं समण-  
 न्नाओ तंनिंदाभि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का-  
 एणं अइयं निंदाभि पडुप्पन्नंसंवरोमि अणागयं पच्चख्खामि सव्वंमेदुणं  
 जावजीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेदुणंसेविद्या नेवन्नेहिंमेदुणंसे-  
 वाविजा मेदुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खि-  
 यं सिद्धसख्खियं साहुसख्खियं देवसख्खियं अप्पसख्खियं एवं हव-  
 ङ्गभिख्खुवा भिख्खुणीवा संजयधिरयपडिहयपच्चस्कायपावकम्मं दि-  
 याया राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा



एसखलु मेहुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगाभिए पार-  
 गामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिं-  
 सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए  
 अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्वणयाए महत्ते महायुणे  
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्ते तंदुख्खस्सयाए  
 कम्मस्सयाए मोहस्सयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उव-  
 संपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ-  
 मेहुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं  
 सव्वं भंते परिग्गहं पच्चस्सामि से अप्पंवा वडंवा अणुंवा थूलंवा चित्त-  
 मंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहं  
 परिगिण्हविच्चा परिग्गहंपरिगिन्नंतंवि अन्नेनसमणुजाणामि जा-  
 वज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकार-  
 वेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि  
 निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपस्सत्ते  
 तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचि-  
 ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्ने-  
 सुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे  
 अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स  
 केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालस्सणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स  
 खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नववंभचेरगु-  
 त्तस्स अप्पयसाणस्स भिक्खवाचित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरिग्गि-  
 सरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स  
 निव्वित्तीलस्सणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स अविस्वाइयस्स संसारपा-  
 र्गामियस्स निव्वाण गमण पच्चवसाणफलस्स पुर्विअन्नाणयाए अस-  
 वणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मंदयाए किहयाए तिगारव-  
 गरुयाए चउकसाउवगएणं पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-  
 सोक्कमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-  
 हिउवा गाहाविउवा चिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदामि गरि-  
 हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुप्प-  
 न्नंसंवरोमि अणागयंपच्चक्कामि सबंधपरिग्गहं जावज्जोवाए अणिसि-  
 उहिं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हविद्या परिग्गहं-  
 परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्ध-  
 सक्खियं साहुसक्खियं देवसखियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिख्खूवा भि-  
 ख्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चस्काय पावक्कम्मे दियावा राउवा  
 एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखल्लुपरिग्गहस्स-  
 वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सबेसिं  
 पाणाणं सबेसिंभूयाणं सबेसिंजीवाणं सबेसिंसत्ताणं अदुख्खणयाए  
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-  
 णियाए अणुद्वणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने  
 परमरिसिदेसियपसत्ते तंदुस्सक्कयाए कम्मस्सक्कयाए वोहिलाभाए सं-  
 सारुत्तारणाए त्तिक्कट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महव्वए  
 उवहिउमि सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं ५ अहावरेल्लहे भंते महव्वए रा-  
 इभोयणाउवेरमणं सबंधं भंते राइभोयणं पच्चक्कामि सेअसणंवा पाणंवा  
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइंभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराइंभुंजाविद्या राइंभुं-  
 जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जोवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं  
 वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंसमणुजाणामि  
 तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवासिरामि से राइ-  
 भोयणे चउच्चिहेपस्सत्ते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं  
 राइभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राइभोयणे-

णान् ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिन् जुत्तोयुत्तोठिञ्जसमणधम्मे पंच-  
 मं वयमणुरस्के विरयामो परिग्गहान् ॥ १६ ॥ आलियविहारस-  
 मिन् जुत्तोयुत्तोठिञ्जसमणधम्मे छं वयमणुरस्के विरयामो राईभोयणा  
 न् ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिन् जुत्तोयुत्तोठिञ्जसमणधम्मे तिविहे-  
 णपडिक्कंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिञ्चत्तं  
 एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोयुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-  
 वच्चजोगमेगं सम्मत्तं एगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वए-  
 पंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियज्ञाणाइंअट्टरूहाइं परिवञ्चंतो-  
 युत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तंधम्मं दोन्नियज्ञाणाइं-  
 धम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हा-  
 नीलाकाऊ तिनियलेसाऊअप्पसत्थानं परिवञ्चंतोयुत्तो रक्खामि-  
 महव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिनियलेसाउसुप्पसत्थानं उव-  
 संपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविऊ  
 वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविन् रक्खामिमहव्वएपंच  
 ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवञ्चंतो  
 युत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं-  
 संबरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥  
 पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्णवेमहादोसे परिवञ्चंतोयुत्तो रक्खामि-  
 महव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेदियसंबरणं तहेवपंचविहमेवसच्चायं उवसंप-  
 न्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायबहिं छप्पिय-  
 भासानंअप्पसत्थानं परिवज्जंतोयुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥  
 छविहमप्पितरियं वज्जंपियछविहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामि-  
 महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयठाणाइं सत्तविहंचेवनाणविप्पंगा परिव-  
 चंतोयुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहं-  
 सत्तिक्यामहव्वयणा उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अठमयथाणां अष्टकम्नाइंतेसिबंधिच परिवर्द्धंतोगुत्तो रस्वामि  
 महव्वएपंच ॥ ३४ ॥ अष्टयपवयणमाया दिष्टा अवविहनिष्टिअणेहिं उवसं  
 पन्नोजुत्तो रस्वामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणां संसार-  
 बायनवविहाजीवा परिवर्द्धंतोगुत्तो रस्वामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ न  
 व्रवंभचेरगुत्तो दुनवविहंवंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रस्वामिम  
 हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परि  
 वज्जंतोगुत्तो रस्वामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिष्ठाणा दस  
 चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रस्वामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥  
 आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रस्वामि  
 महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंपतिदंडविरत्तं तिगरणसुद्धोतिसच्छनिसल्लो ति  
 विहेण पडिकंतो रस्वामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चैयंमहव्वयउच्चारणं  
 थिरत्तं सच्चुद्धरणं थिइवलंससाउ साहणघोपावनिवारणं निकायणा  
 भावविसोही पडागाहरणं निज्जुहणा राहणा गुणाणं संवरजोघोःप  
 सव्वघाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमघो उत्तमघो एसखलुत्तित्यं  
 कोरेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिउ पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय  
 संजमं उवइसिउं तिच्चुक्क सक्कयंठाणं अणुवगया नमोत्थुते सिद्धुद्ध  
 मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय न  
 मोत्थुते महयं महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहउ नमोत्थुते भग  
 वउ चिक्कट्टु इच्चैसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इच्चामोसुत्तकित्तणं  
 काउं नमोतेसिखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भग  
 वंतं तंजहा सामाइयं चउवोसव्वउ वंदणयं पडिक्कमणं काउसगो पच्च  
 र्खाणं सव्वेहिं विण्यंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअउ  
 सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भ  
 गवंतेहिं पन्नत्तावा परुवियावा तेभावे सदहामो पत्तियामो रोएमो  
 फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सदहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपख्वस्त अंतोचउमासीए अंतो  
 संवखरस्त जंवाइयं पढियं परियद्वियं पुत्रियं अणुपेहियं अणुपालियं  
 तंदुख्वख्वयाए कम्मख्वयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्ता  
 रणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपख्वस्त जंनवाइयं नप  
 ढियं नपरियद्वियं नपुत्रियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले संतेवो  
 रिए संतेपु रिसक्कारपरिकमे तस्त आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरि  
 हामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्पुठेमो अहारिहं तवोकम्मं  
 पायच्चित्तंपडिवच्चामो तस्तमिच्चामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जे  
 हिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं  
 कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं  
 जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद  
 थुअ तंदुलवेयालियं चंदा विच्चयं पमायप्पमायं वीयरगसुयं विहार  
 कप्पो चरणविसोही आउरपच्चस्खाणं महापच्चस्खाणं सव्वेहिंपिए  
 यंमि अंगवाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअठ्ठे सग्गंथे सन्नि  
 जुत्तीए ससंगहणीए जेयुणावा भावावा अरिहंतोहिं भगवंतेहिं प  
 न्नत्तावा परुवियावा तेभावे सहहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो  
 पालेमो अणुपालेमो तेभावेसहहंतोहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं  
 अणुपालंतेणं अंतोपख्वस्त जंवाइयं पढियं परियद्वियं पुत्रियं अणु  
 पेहियं अणुपालियं तंदुख्वख्वयाए कम्मख्वयाए मोहखयाए बोहि  
 लाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि अंतोप  
 ख्वस्त जंनवाइयं नपढियं नपरियद्वियं नपुत्रियं नाणुपेहियं नाणुपा  
 लियं संतेवले संतेवोरिए संतेपुरिसक्कारपरिकमे तस्त आलोएमो प  
 डिक्कमामो निंदामो गरिहामो वउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अप्पुठे  
 मो अहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पडिवच्चामो तस्तमिच्चामिदुक्कडं न  
 मोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगवाहिरियं उक्कालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरायणाइं दसाउं कृष्णोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं  
 जंबुद्वीवपन्नत्तो सूरपन्नत्तो चंदपन्नत्तो दोवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमा  
 णपविभत्तो महाल्लियाविमाणपविभत्तो अंगचूलिया वंगचूलिया वि  
 वाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए  
 वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्टाणसुए समुट्टाणसुए नागपरियाव  
 लियाउं निरयावलियाउं कप्पियाउं कप्पवडिसयाउं पुप्फियाउं पुप्फु  
 लियाउं बहोदसाउं आसीविसभावणाउं दिट्ठीविसभावणाउं चारणसु  
 मिणभावणाउं महासुमिणभावणाउं तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहंपिएयं  
 मि अंगवाहिए उकालिए भगवंते ससुत्ते सअत्ते सग्गंथे सन्निजुत्तीए  
 ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परुवि  
 यावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो  
 ते भावेसद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं  
 अंतोपरुखस्स जंवाइयं पट्ठियं परियट्ठियं पुच्चियं अणुपेहियं अणुपा  
 लियं तंदुरुखखयाए कम्मखखयाए मोहखखयाए बोहिलाभाए सं  
 सारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपरुखस्स जंन  
 चाइयं नपट्ठियं नपरियट्ठियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते  
 व्वले संतेवीरिए संतेपुरिसकारपरिक्रमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो  
 निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहमो अकरणयाए अणुट्ठेमो अहारिहं  
 तवोकम्मं पायच्चित्तंपडिवज्जामो तस्स मिट्ठामिदुक्कडं नमोतेसिंखमास  
 मणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडंगं भगवंतं तंजहा आयारो  
 सूयगडो ठाणो समवाउं विवाहपन्नत्तो नायाधम्मकहाउं उवासगद  
 साउं अंतगडदसाउं अणुत्तरोववाइअदसाउं पएहावागरणं विवाग  
 सुयं दिट्ठिवाउं सुदिट्ठिसुहाउं सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे  
 भगवंते ससुत्ते सअत्ये सग्गंथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जेगुणा  
 वा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परुवियावा तेभावे स

द्वहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्व  
 हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो  
 पख्वस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुब्बियं अणुपेहियं अणुपालियं तं  
 दुख्खस्सकयाएकम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए  
 त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपख्वस्स जंनवाइयं नपढियं नप  
 रियट्टियं नपुब्बियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिसे  
 क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो  
 विसोहेमो अकरणयाए अप्पुठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्चित्तं पडिव  
 ज्जामो तस्समिञ्चामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणंजेहिंइमंवाइयं दुवाल  
 संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टं  
 ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिञ्चामिदुक्कडं ॥ सुय  
 देवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंधायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिं  
 सुयसागरेभत्ती ? इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥



॥ अथ अष्पुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाठली घण्टियें निद्रा दूर करिने, पंचपरमैष्टि स्म-  
 रण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसअकी प्रथम दिवसें पन्नि-  
 लेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशालायें थाप-  
 नाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी,  
 जूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पीठें ख-  
 मासमण देई, ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ पोसह मुहपत्ती पन्नि-  
 लेहुं ? गुरु कहे, पन्निखेहेह. इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती  
 पन्निखेहे. पीठें उज्जो अई, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ०  
 ॥ पोसह संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह, पीठें इच्छं कही, ख-  
 मासमण देई. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ पोसह गानं ? गुरु कहे

ठाएह, पीठें इच्छं कही खमासमण देई उज्जो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार जगवन् पसाज करी, पोसह दंरुक उच्चरावो ? गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठें करेमि जंते पोसहं ॥ इहांसें ले के अप्पाणं वोत्तिरामि ॥ तक कहे अत्र पोसहका पञ्चखाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अय पोसहका पञ्चकाण प्रारंभः ॥

॥ करेमि जं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसजं सबजं वा, संरीरसकार पोसहं, सबजं वंजवेर पोसहं, सबजं अद्यावार पोसहं, सबजं चजविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पञ्चखामि, जावदिवसं अहो-रत्तिं वा पञ्जुत्रासामि, डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्त जं ते पक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोत्तिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञापण करतो उच्चरे ॥ पीठें एक खमालमणें ॥ इच्छाकाण ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती पम्पिलेहुं ? गुरु कहे, पम्पिलेहेहं. बीजी खमासमण देई मुहपत्ती पम्पिलेहे. पीठें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्ताजं ? सामायिक ठाजं ? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊज्जो थको तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जंते उच्चरी दोय खमासमणें वेसणो संदिस्ताजं ? वेसणो ठाजं ? कही, पीठें दोय खमासमणें सिद्धाय संदिस्ताजं ? सिद्धाय करुं ? कही खमासमण देई ऊज्जो थको, आठ नवकारनो सिद्धाय करे. शीतादि परिसहे दोय खमासमणें, पांगरणुं संदिस्ताजं ? पांगरणुं पम्पिघाजं ? कहे. ए सर्व सामायिक-विधि पूर्वें कह्यो थे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष थे. पहिलां इरियावही पम्पिकमी थे, तेमाटे इहां सामायिक दंरुक उच्चरंयां पीठें इरियावही नही पम्पिकमीजे ॥ पीठें चैत्यवंदन, जयवीरराय



सूधी करी कुसुमिण दुस्समिण कानस्सग्ग करे, पीठे पम्किम्मण-  
वेत्तासीम सिञ्चाय ध्यान करे. पीठे पूर्वोक्त रीते पम्किम्मण करे,  
पण इतरो विशेष के चारे शुइये देव वांघ्या पीठे खमासमण देई  
कहे ॥ इञ्जाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ बहुवेलं संदिस्सानं ? गुरु कहे,  
संदिस्सावेह. पीठे इञ्जं कही खमासमण देइ कहे. इञ्जाका० ॥  
सं० ॥ ज्ञ० ॥ बहुवेलं करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीठे इञ्जं कही,  
तीन खमासमणे श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीनपाध्यायजी मिश्र  
२, त्रीजे सर्वसाधु वांघी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नम-  
स्कार जणे, जो पम्फिलेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं  
चैत्यवंदनादि करी, सिञ्चाय करे. हवे पम्फिलेहण वेला पम्फिलेहण  
करे. ते विधिपूर्वे आ ग्रंथना ३३ पृष्ठमां लिख्यो वे तो पण संके  
पे फेर लखीये ठैबे. दोय खमासमणे, इञ्जाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ०  
॥ पम्फिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पम्फिलेहे. पीठे दोय खमा-  
समणे अंग पम्फिलेहण संदिस्सानं ? अंग पम्फिलेहण करुं ?  
कहे. पीठे गुरुवचने इञ्जं कही. धोतियो कणदोरो पम्फिलेही  
वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इञ्जकार जगवन् ! पसान करी, प-  
म्फिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पम्फिलेही स्थापे,  
अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पम्फिलेहे, तो पण खमासमण देई  
उक्त रीते आग्या मागे. पीठे खमासमण देई ॥ इञ्जाका० ॥ सं०  
॥ ज्ञ० ॥ उपधि मुहपत्ती पम्फिलेहुं ? गुरु कहे, पम्फिलेहेह  
पीठे इञ्जं कही, मुहपत्ती पम्फिलेही दोय खमासमणे ॥ इञ्जाका०  
॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ उही पम्फिलेहण संदिस्सानं ? गुरु कहे, संदिस्स  
वेह. उही पम्फिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगादे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ अ

गाढे मध्ये उच्चारें पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आगाढे दूरे उच्चारें  
 पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे  
 ॥ ४ ॥ आगाढे मध्ये पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पा-  
 सवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारें पासवणे अहि-  
 यासे ॥ ७ ॥ आगाढे मध्ये उच्चारें पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आ-  
 गाढे दूरे उच्चारें पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पास-  
 वणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मध्ये पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥  
 आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उ-  
 च्चारें पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पास-  
 वणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणे अणहि-  
 यासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥  
 अणागाढे मध्ये पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पास-  
 वणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारें पासवणे अ-  
 हियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारें पासवणे अहियासे ॥ २०  
 ॥ अणागाढे दूरे उच्चारें पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे  
 आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मध्ये पासवणे अ-  
 हियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए  
 श्रंमिलपन्निरेहण पाठ कऱ्या ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं :

॥ ६ श्रंमिला शय्यपाके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम  
 पासे ३, पन्निरेहे ॥ ६ श्रंमिलां दरवजेके ज्जीतर पासे दहिणें ३,  
 वामें ३ पन्निरेहे ॥ ६ श्रंमिलां दरवजेके बाहर दोनुं पासे पन्निरेहे  
 ॥ ६ श्रंमिलां लिहां उच्चार प्रत्नवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ  
 पन्निरेहे ॥ इति २४ श्रंमिलां पन्निरेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीठें इच्छं कही, कंवल वस्त्रादि पन्निरेही पोसद्द-शाला प्र

मार्जी काजो विधिं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही पम्किमे, इहां आचार दिनकरमें कह्यो ठे. दोय खमासमणें इच्छा काण ॥ सं० ॥ ज० ॥ वसती संदिस्ताजं ? वसती पम्किलेहुं ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे, इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाकाण ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय संदिस्ताजं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह. बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीठें इच्छं कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, जणे, गुणे, वखाण सुणे. इम करतां पूर्ण पदुर दिन चढ्यां, नग्घाडा पोरिसी अथवा, बहुपम्पिपुन्ना पोरिसी कही, खमासमण देई, इरियावही पम्किमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पम्किलेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छं कही, मुहपत्ती पम्किलेही पान जोजन पात्र पम्किलेही राखे. पीठें सिधाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्तही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्र स्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वारं नमस्कार करी, जूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रजुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें बेसे. पीठें ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे. पीठें नमोस्तुणं कहे. खमासमण देई इरियावही पम्किमे. एक लोगस्तनो कानस्तग करे. मुखें लोगस्त कहे. संमासा प्रमार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई नमस्कार कहे. "जं किंचि नाम तिष्ठं" इत्यादि कही पीठें नमोस्तुणं कहे. उजो अई अरिहंत चेईयाणं करेमि कानस्तगं वंदणवत्ती ॥

अन्नबू० कही, एक नवकारनो कान्तस्तग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीठें लोगस्त० सब्वलोए अरि० वंदणव० अन्नबू कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीठें पुस्करवरदी० सुअस्त जग० वंदण० अन्नबू कही एक नवकार० पारी तीसरो थुईकी गा० पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नबू० इत्यादि कथन पूर्वक चोथी थुईकी गाथा कहे कर, वैठकें नमोबूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इती तरें चार थुइयें देव वांदी वेसैं ॥ नमोबूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीठें स्तवन कहे, पीठें जयवीरराय कही. नमोबूणं सब्वे तिविद्देणं वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पांचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो ठे. तथा चैत्यवंदन वृहज्जाप्यमें एम कह्यो ठे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसैं देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही “ जावंति चेश्याइं ” गाथा जणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोबूणं कही जयवीरराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीठें निस्तही पूर्वक पोसहशाला मदि आवी, इरियावही पम्किमे. पीठें सिद्धाय ध्यान करे, जो तिविद्धार उपवास कियो हुवे, तो पञ्चखाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकू पञ्चस्काण पारे ॥

॥ हवे पञ्चखाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पम्किमे. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पञ्चखाण पारवा मुहपत्ती पम्किलेहुं ? गुरु कहे, पम्किलेहेह ॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पम्किलेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥

ॐ० ॥ पाणहार अमुक पञ्चखाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि का  
यवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

ॐ० पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीठें तद्वत्ति  
कही, अमुक पञ्चखाण चञ्चविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी  
पञ्चखाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं,  
जं च न आराहियं, तस्स मिठामि उक्कमं, कही ॥ चैत्यवंदन करे.  
क्षणमात्र सिज्जाय करी यथासंज्ञवें अतिथिसंविज्ञाग करी पाणीपीवे ॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पञ्चखाण  
पारी आहार करे. पीठे आसण बैठो अकोहीज दिवस चरिम  
पञ्चखे, पीठें इरियावही पम्पिकमी चैत्यवंदन करे, ए चैत्यवंदन  
आहार संवरण निमित्तें ठे ॥ इति पञ्चखाण पारणेका विधि ॥

॥ पीठें जो बहिर्नूमि जावणो हुवे, तो आवस्तही कही  
उपयोगी अको, निर्जीव अंमिले जई; अणुजाणह जस्सुग्गहो कही  
पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे,  
प्राशुकजले शुद्ध अई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मल  
मूत्र वोसिरावी, पोसहशाखायें निस्तही पूर्वक पेसी इरियावही प  
म्पिकमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॐ० ॥ गमणा  
गमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीठें इच्छं कही गमणाग  
मण आलोवे ॥ ते इम आवस्तही करी, प्राशुक देशें जई, संमा  
सा पूंजी, अंमिलो पम्पिलेही, उचार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्तही  
करी, पोसहशाखायें आव्यो ॥ आवंति जंतेंहिं जं खंमियं, जं विरा  
हियं, तस्स मिठामि उक्कमं, एम कही बेसे. पीठें पम्पिलेहण वेला  
सीम सिज्जाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाठले पहुरे इरियावही पम्पिकमी खमासमण देई  
कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ॐ० ॥ पम्पिलेहण करुं ? गुरु कहे करेह.

इष्टं कही दूजे खमासमणे इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाला प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जह. पीठे इष्टं कही, मुहपत्ती पन्डितेही दोय खमासमणे अंग पन्डितेहण संदिस्तां ? अंग पन्डितेहण करुं ? कहे. पीठे गुरु वचने इष्टं कही मुहपत्ती पन्डितेही दंदासणो पूंजणी प्रमुखत्वे प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीठे काजो गुरु करी, उररी एकांतें विखरतो परवशी इरियावही पन्डिकमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इष्टकार जगवन् पत्ताज करी पन्डितेहणां पन्डितेहावोजा ॥ पीठे स्थापनाचार्य पन्डितेही स्थापे. गुरुसमीपे अथवा थापनाचार्य समीपे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पन्डितेहुं ? गुरु कहे, पन्डितेहेह. पीठे इष्टं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पन्डितेहे. पीठे दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्धाय संदिस्तां ? सिद्धाय करुं ? उक्त रीते कृणमात्र सिद्धाय करी त्रिविहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु साखें पाणिहार पञ्चके ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो चांदणां दोय देई, पञ्चकाण करे, पीठे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पन्डितेहण संदिस्तां ? व्रजे खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिलां पन्डितेहुं ? गुरु वचने इष्टं कही, दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वेसणो संदिस्तां वेसणो ठां ? कही वेसे. वस्त्र कंबलादि पन्डितेहे. पूंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पन्डितेहे. उपवासी तो ठे तेमाटे सर्व पाठो कन्डितेधो धोतीधो कणदोरो पन्डितेहे, उपधानवाही प्रमुख नोजन कीधो हुवे तो कन्डितेहणां पन्डितेहणां. पीठे वस्त्र कंबलादि पन्डितेहे. ए विशेष ठे ॥ पीठे कालवेला सीम सिद्धाय ध्यान करे. पीठे उच्चार प्रश्रवण २४ थंमिला पन्डितेहे, जो चन्द्रदश हुवे, तो पांखी चन्द्रमासी पन्डिकप्रणो करे, संवत्तरीये

संवहरी पन्तिकमणो करे. तिहां देवसी पन्तिकमणो पूर्वे लिख्यो  
ठे, तिमहज करे, पण इतरौ विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो  
एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीठें " ठाणे कमणे चंकमणे " इ  
त्यादि पाठ कहे. खुद्दोवद्व कान्तस्तग्ग किर्या पीठें दोय खमासम  
णें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सिधाय संदिस्तां ? सिधाय करुं ?  
कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिधाय करै ॥ इति ॥

॥ पाठिकादि तीन पन्तिकमणविधि आगें एही पुस्तकमें  
लिख गये हैं. वहासैं जान लेनां.

॥ हवे पन्तिकमणो हुवा पीठें साधुको वेयावच्च करी पौरसी  
सीम सिधाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसज्ज  
कहेतो थको, जूमि प्रमाजें थंमिल स्थानकें जई, देहशंका निवारै  
प्रश्रवण बोसिरावी, स्वस्थानकें आवे. जगवन् ! बहु पन्तिपुत्रा पो  
रसी एम कही खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे, पीठें राई  
संधारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संधारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राई संधारा  
मुहपत्ती पन्तिकेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीठें इच्छं कही, खमास  
मण देई मुहपत्ती पन्तिकेहे. एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
ज० ॥ राई संधारो संदिस्तां ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं०  
॥ ज० राई संधारो ठावुं ? पीठें गुरु वचनें इच्छं कही, चउकसाय  
पन्तिमल्लुत्तरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीरराय सूधी  
चैत्यवंदन करे. जूमि प्रमाजी, संधारो उत्तर पट्टो पाथरे. पीठें  
शरीर प्रमाजी निस्तही निस्तही एम कही संधारे बेसी, तीन  
नवकार तीन करेमि जंते ऊच्चरी ॥ एमो खमासमणाणं, गोयमा  
ईणं महामुणीणं, 'अणुजाणह जिठिजा अणुजाणह परम गुरु'

इत्यादि राइ संथारा गाथा ज्ञानी, वाम हाथ सिरायें देई : सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवानो फेर, तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेर, जो देइ शंकार्ये छुठे, तो पूर्वोक्त विधे देइशंका निवारी, इरियावही पन्किमे ॥ पीठें जघन्ये पण तीन गाथानी सिधाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ इवे रात्रिने पाठिले पदोर ऊगी, नवकारादि गुणी, इरियावही पन्किमे. खमासमण देई कुसुमिण दुस्तुमिण काउस्तगग करी, पूर्वोक्त विधे सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पन्किमे. पीठें दोयखमासमणें सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार गुणी, पन्किमण वेला सीम सिधाय करे. पन्किमण वेला हुवां पन्किमणो पूर्वली परे करे, पण इतरो विशेष ठे, के राइ आलोयां पीठें संथारा उवळणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पन्किमणो करी पन्किमेदण वेलायें पूर्वोक्त विधे पन्किमेदण करी, धर्मशाला पूंजी काजो ऊवरी इरियावही पन्किमे. दोय खमासमणें सिधाय संदिस्तावी, उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करे. पीठें पोसइ पारे ॥

॥ अय पोसइपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुद्दपत्ती पन्किमेदे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसइ पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायबो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसइ पारयुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्यो. पीठें तद्वत्ति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उजो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुद्दपत्ती पन्किमेदे, पीठें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं ? गुरु कहे पुणोवि कायबो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयुं ? गुरु कहे आ-



यारो न मोत्तवो. पीठें तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उन्नो थको हाथ जोड्यां- मुहपत्ती मुखें दियां थकां तीन न वकार गुणी संमासा पमिलेहे. गोमादायें बेसी मस्तक नमावी, " जयवं दसन्नजहो " इत्यादि ज्ञावनारूप गाथा कहे. पीठें पोसहना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविज्ञागव्रत साचवण निमित्तें साधु ज्ञणी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु पण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीठें साधुनें जे आहार दीयो, तेहनोहीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीछें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरथकी निश्चित अई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण पमिलेही, कचरो विधिजुं परठवी इरियावही पमिक्रमे. खमासमण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुहपत्ती पमिलेहे, आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वे लिखा है. तिमहिज जाणवो. पण दिवस पोसहहीज करणो हुवे, तो पोसह दंभक उच्चरतां जावदिवसं पज्जुवासामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पंठें सामायिक विधि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिणउस्तमिण कानस्तग्ग करी पमिक्रमणो करी दोय खमासमणें बहुवेळं संदिस्सावे १, अने जो पूर्वें पमिक्रमणो गुरु साथें करयो हुवे, तो पमिक्रमणानें अंतें पमिलेही राख्यां जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेळं संदिस्सावे १, तथा जो गुरुसैं जूदो पमिक्रमणो करयो हुवे, तो गुरुपासैं आवी पोसह सामायिक सर्व विधि करी, आलोचना स्वामणादि निमित्तें मुहपत्ती पमिलेही वे वांदणां

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राश्यं आलोचं ? गुरु कहे, आ-  
 लोएह, पीठें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका०  
 ॥ सं० ज० ॥ अमुद्धिन्मि अघ्नंतर, राश्यं खामेमि ? गुरु कहे  
 खामेह, पीठें सव पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पन्तिकमणामें न-  
 वकारसी पञ्चख्यो थो तेमाटें पीठें गुरु सार्वे पञ्चस्काण उपवासनो  
 करे, पीठें दोय खमासमणें बहुवेळें संदिस्तावे ॥ ए तीन प्रका-  
 रका विकल्प जाणनां. हवे पन्तिकेहण तो पूर्वे करी ठे, तो पण  
 आदेश मागवो, ते एम खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ पन्तिकेहण संदिस्तां ? बीजे खमासमणें पन्तिकेहण करूं ?  
 कही मुद्दपत्ती पन्तिकेहे, पीठें इमहीज दोय खमासमणें अंग पन्ति  
 केहण संदिस्तावी मुद्दपत्ती पन्तिकेहे, पीठें वली खमासमण देई  
 इच्छकार जगवन् ! पसाज करी पन्तिकेहण पन्तिकेहावो जी. एम  
 कहे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उ  
 पधि मुद्दपत्ति पन्तिकेहुं ? कही कोई वस्त्र अणपन्तिकेह्यो राख्यो  
 हुवे, तो पन्तिकेहे, नहीं तो वली आसण पन्तिकेहे, दोय खमास  
 मणें सिध्दाय संदिस्तावी उपदेशमाला प्रमुख सिध्दाय करे, आगें  
 सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है, तिमहीज जाणवी,  
 पण इहां अठ पुहरी पोसह तो पाठली रातें वली सामायिक न  
 लेवे, जिणें दिवस संबंधी चउ पुहरी पोसह लीथो हुवे, ते पाठले  
 पुह पञ्चस्काण क्रिया, प.ठें दोय खमासमणें उही पन्तिकेहण सं  
 दिस्तां ? उही पन्तिकेहण करूं ? कहे, पण अंमिला पद न कहे.  
 अने अंमिला नहीं पन्तिकेहे. यद्द निःकेवल दिन संबंधी पोसह अ  
 हण करणेमें विशेष विधिही, सो वंताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह  
 यद्दणविधिः ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊच्चरयो है, पीठें संध्यानी पन्विलेहण करतां रात्रि पोसहनो जाव थयो, तो पञ्चस्काण कियां पीठें दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पन्विलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंरुक उच्चरे. तिहां जाव रत्तिं पञ्जुवासामि एम पाठ उच्चरे, पीठें सामायिक विधि पूर्व लिख्यो तिम करे पण सामायिक ऊच्चरयां पीठें दोय खमासमणें सिध्याय संदिस्तावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्तावी, पांगरणो संदिस्तावी, पीठें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥

॥ नही थंमिलां पन्विलेहण संदिस्तावं नही थंमिलां पन्विलेहण करुं? गुरु कहे, करेइ. इच्छं कही उपधि पन्विलेहे, आगें सर्व क्रिया पूर्व लिखी तिम जाणवी, तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो जाव थये, पाठले पहर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमाजीं हुवे, तो सरयो, नही तो वसती प्रमाजीं, काजो परिठवी सर्व उपगरण पन्विलेही श्रियावही पन्विकमे, पीठें चउविहार पञ्चस्काण करी दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पन्विलेही दोय खमासमण देई पोसह संदिस्तावे, फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंरुक उच्चरे. तिहां दिवसेसरत्तिं पञ्जुवासामि कहे, संध्या हुवे, तो रत्तिं पञ्जुवासामि कहे. पीठें बिहुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पन्विलेहे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि जंतें उच्चरे. दोय खमासमण देई सिध्याय संदिस्तावी, आठ नवकार कहे, फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्तावी सीतादिकें बे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्तावे. पीठें बे खमासमण देई, अंग

पन्डितेहण संदिस्तावी, मुहपत्ती पन्डितेहे. फेर वे स्वमासमण वेई, उही थंमिदां पन्डितेहण संदिस्तावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पन्डितेहे. जो सर्व उपगरण पन्डितेह्यां हुवे, तो पण थं नक गून्यता टालवा जणी वली आसण पडिलेही, पडिकमण वे सा सीम सिधाय ध्यान करे, पोवै उच्चार प्रश्रवणना २४ थंमिदा पडिलेही पडिकमणो करे. तथा पाठलो राते वली सामायिक न लेवे. इतनां निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ गणोक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ गणोक्कमणे चंकमणे आउते अणाउते ॥ हरिअकायसंघटे वीयकायसंघटे थावरकायसंघटे उप्पइयासंघटे सबस्सवि देवसिअ, उच्चित्तिअ, उग्गासिअ, उच्चिडिअ ॥ इच्चाकारेण संदिस्सह, इच्चं तस्स मिच्चा मि उक्कं ॥ १ ॥ संयाराउवट्टशकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी, पसारणकी, उप्पइयासंघट्टणकी, अच्चस्कुविसयकायकी, सबस्स विराअ, उच्चित्तिअ, उग्गासिअ, उच्चिडिअ, इच्चाकारेण संदिस्सह, इच्चं तस्स मिच्चा मि उक्कं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंरुणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महानंद लब्धी बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तिउरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा लेह जीवाण जाया, जवस्संति ते सब ज्जाण ताया ॥ तदा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाण ॥ २ ॥ डुरुत्तार संसार कुडार पोयं, कलंका वली पंकपस्साल

तायं ॥ मणौवंडियञ्चे सुमंदारकपुं, जिणंदागमं वंदिमो सुमहर्षं  
॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणंजोजलीणा, कलारूव लावस सोहग्ग  
पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि णिच्चं पि जाणं, सिरी न्जारई देहि मे  
सुह्नाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानकर्म, पंचानुत्तरसीमदिव्य  
पदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि  
तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांठनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम्  
॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच  
सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचरुषीकनिर्जयमथो प्राप्ता  
गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतचृतां तीर्थकराः शंकराः ॥२॥  
पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकृतं  
पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाज्जं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी,  
पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां  
परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, जक्तानां जविनां गृहेषु ब-  
हुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रहो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न  
पञ्चालिका, पंचम्यादितपोवतां जवतु सा सिद्धाधिका त्रायिका  
॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चनुवीसे जिनवर, प्रणमं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करिये,  
चंद्रप्रज्जुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिम चंद ॥ दीठां  
डुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रज्जु  
जीना पाय ॥ इंद्राणी अपह्वर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर  
दीपे मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ महोह्वव, करता होडाहोड  
॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरे, जाणी लाज अपार ॥ चनुमासे रहिया,

भणधर मुनि परिवार ॥ न्नवियण्णे तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध  
साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं, क  
रिये व्रत पञ्चस्काण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥  
आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कळयाण ॥ जिनसूखसूरि कहे,  
इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मद्धेर्जन्म  
व्रतमपमलं केवलमलं ॥ वल्लैकादश्यां सदसि लसद्ब्रह्ममहसि,  
क्षितौ कळयाणानां कृपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वद्रभ्रेण्या  
गमनगमनैर्नूनिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥  
जिनानामप्यापुः कृणामतिसुखं नारकसदः, क्षितौ ॥ २ ॥ जिना  
एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तृणामिति च विदि  
तं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुजवेयुर्वहुमुदः, क्षि० ॥ ३ ॥  
सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखि  
लज्जवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तृणां विदधति सुखं विस्मि  
तहृदः, क्षितौ ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ ईंईंकि धपमप, धुधुमि धोंधों, ध्रसकिधर, धपधोरवं ॥  
वोंवोंकि वों वों, दाग्दिदि दाग्दिदिदि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणवं ॥  
ऊज्जिंज्जैकि ज्जैज्जै, ऊणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर  
शैल शिखरे, जवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि  
श्रौंगिनि, किटति गिगुरुदांधुधुकि धुटनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण,  
रणकि णेंणें, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ ऊज्जिंज्जैकि ज्जैज्जै, ऊणण र  
णरण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितक  
लमल, मुकलमीश, महेजिनाः ॥ २ ॥ उकि वेंकि वेंवें, उहेंकि उ

ह्रिक, ठह्रिपट्टा, ताज्यते ॥ तललोक लोलों, त्रैपि त्रैपिनि, मँपिँपि  
 नि, वाद्यते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ, धुंगि धुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल  
 रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुञ्चवे ॥ ३॥  
 पुंदांकि पुंदां, पुषुद्दि पुंदां पुषुद्दि दोंदों, शंवेरे ॥ चाचपट चषपट,  
 रणकि ऐंऐं मणण मँँ, मँवेरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस,  
 सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु  
 शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी  
 जी, करुणासागर निजगुण आगर शुभ्र समता रस धामी जी ॥  
 श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगें जी, ते मानव  
 श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज  
 पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम,  
 नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहियें, अविचल  
 पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणें ए नीति  
 प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास  
 जगीशें जी ॥ नजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें  
 जी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥  
 इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख नदारो जी ॥ ३ ॥  
 विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्रेसरि देवी जी ॥ नवपद से  
 वक नविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गच्छ ना  
 यक सद्गुरु, श्रीजिननक्ति मुनिंदा जी ॥ तासु पत्तार्ये इणपरि  
 पत्तणे, श्रीजिनलाज सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद० ॥

॥ अथ पञ्जूसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गांजं जिनवर वीर, जिनपर्व पञ्जु

सण, दारुणां धरमनी शीर ॥ आपाढ चौमासें हूँती दिन पंचास,  
 षड्भक्तमण संवञ्चरी करिये त्रण उपवास ॥ १ ॥ चञ्चवीशे जिनवर  
 पूजा सत्तर प्रकार, करिये जले जावे करिये पुण्य जंकार ॥ वलि  
 चैत्र प्रवासें फिरतां लाज अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महि  
 मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनाये वंचाय, श्रीकल्प  
 सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अंगर  
 उस्केव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि सा  
 हम्मीवञ्चल करिये वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शी-  
 लधार ॥ अरुदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध  
 कहे जिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूपणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमह्यअज्ञोन्नितं, धन  
 सधनश्याम शरीर सुंदर शंख लठन शोन्नितं ॥ शिवादेवि नंदन  
 त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनारं गिरिवर शिखरं  
 वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदे श्रीआदिजिनवर  
 वीर जिन पावापुरे, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय  
 गिरिवरे ॥ समेतशिखरे वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू,  
 चञ्चवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघे सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार  
 अंग उपांग वारे दश पयन्ना जाणिये, ठ छेद अंध प्रसन्न अज्ञा  
 चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग चार उदार नंदीसूत्र जिन  
 मत गाइये, एह वृत्ति चूर्णी जाप्य पेंतालीश आगम ध्याइये  
 ॥ ३ ॥ डहुं दिसें बालक दोय जेहने सदा जवियण सुखकरू,  
 डख हरे अंवा लुंब सुंदर डरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंरुण  
 नेमि जिनवर चरणपंकज सेविये, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो  
 अंवा देविये ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंरुण श्रीनेमि० ॥



॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्येकपर्यासनः, द्दमापालप्र  
 जुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरणे  
 तूर्यारकांते शुभ्रे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्र  
 जुम् ॥ १ ॥ यज्ञर्जागमनोन्नव व्रतवरज्ञानाकरात्तिकरणे, संजूयाशु  
 सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् कृणात् ॥ श्रीमन्नाज्जिन्नादिवीरच  
 रमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यने  
 नांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाज्जिघ,  
 स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचवांचक्रुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनै  
 कसमये सम्यग्दृशां नूस्पृशां, नूयाज्जावुककारकप्रवचनं चेतश्चम  
 त्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थज्ञावनपरा सिद्धायिका देव  
 ता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन  
 चंडगीस्सुमतिनो ज्ञव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने  
 शार्दूलविक्रीमितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरण-  
 कमल तसु नामूं सीस । अहनिस समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पं  
 च मेरुपासे ऊलकंता । सोहे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर ठे  
 जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥ २ ॥ गणहर कहिय  
 डुवालस अंग । आनक वीस ज्ञण्या तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे  
 आणे रंग । ते नर पाभे सुक्क अजंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी च  
 ठवीस । पूरे मुऊ मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे ।  
 तिहुअण ज र मन वंठिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलतद्गुणं ॥ न  
गरजेसलमेरविभ्रूषणं । जजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरे-  
श्वरनभ्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुहजंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थकराः सुख-  
कास्का । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जि-  
नशासनं । विपुलमंगलकेलिविज्ञासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका ।  
फलति तस्य मनोरथमालिका ॥ ३ ॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी ।  
जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु-  
सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियहारसुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं ॥ पंकव-  
ठप्पयदेवगणं । सिरिअबुय वंदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसि-  
यपायजुआ घणामोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिञ्चलजीवदया ।  
मम हुंति जिनागमसुरकसया ॥ २ ॥ पणधंगिमहातमरोरहरं । क-  
द्धाणपयोरुहवुद्धिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जि-  
नागममन्धिकरं ॥ ३ ॥ सिरिइंदसमुज्जलगायंलया । सुहजाणविणम्मि-  
यएगलया ॥ असुरिंदसुरेदसुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुणेसुस-  
या ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमात्तमपद धारीजी । प्रथम-  
जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिन-  
राज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेसर लोकदिने-  
सर, आतमसंपद जूपोजी ॥ १ ॥ पांच नरत वलि पांचे एरवत,  
पंच विदेह मऊरोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिव-  
पद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, आस्ये इषाही प्रका-

रोजी । संप्रति काले वीस विदेहे, बंडु बहु सुखकारोजी ॥ १ ॥  
 अरथे श्रीजिनराज वखाण्या, गूण्यां श्रीगणधारोजी । अंग डुवाखस  
 अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय अंग  
 प्रमाणे, जिहां पट्ठव्य विचारोजी । ते आगम मन श्रुद्ध आराध्यां,  
 तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्रेसरिदे  
 वोजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी द्यो, वंठित नित सेवीजी  
 ॥ कळ्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजि  
 नचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र  
 णामे देव अने देविंद ॥ जवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद ।  
 श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अति  
 शय बलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणि  
 त रुद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक बंडु जिन चोवी  
 स ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन ज्ञापित सिद्धांत । स्वाद्वादन  
 यादिक हेतुयुक्ति नवि ज्ञांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सह  
 नाणी । सुणिये नित जविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणनी  
 साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥  
 साचे मन समरे ते सुख लाज्ज अपारी । जिनलाज्ज पयंपे होज्यो  
 जयप्रकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोज्ञारी ॥

॥ यदंहिनमतादेव । देहिनःसंति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु  
 वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नात्रे  
 यजिनादिजिनपति ॥ नौमि यच्चचनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःस्के  
 च्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुणायतो जिनाः । सदर्थतो यच्चयंति

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥  
 ३ ॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सहदेवतान्निः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यता  
 ज्निः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । ज्ञव्यान् जनान्नयतु नित्य  
 ममङ्गलेज्यः ॥ ४ ॥ इत्तिमहावीरस्तुति अणोज्जारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीवन्दसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वन्दे ? जैनाः पादा युष्मान् पांतु १ जैनं  
 वाक्यं ज्ञूयाद्भूत्यै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी  
 स्त्रीवन्दसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन  
 त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंठन सात हाथ तनु मान, दि  
 नश् सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वं-  
 दित पद अरविंद, कामित ज्ञरपूरण अजिनव सुरतरुकंद ॥ जवि  
 यणने तारे प्रवहणसमं निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रशामुं विसवा  
 चीस ॥ २ ॥ अरथे करि आगम ज्ञारख्या श्रीजगवंत, गणधर, ते  
 गूंच्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके  
 एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धाधि  
 का देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥  
 अह्निसि कर जोमी सेवे सुरनर इंद, जंपे गुणगण इम श्रीजिन  
 लाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाज्ञेयं संज्ञवं तं, अजियसुविदयं, नंदणं सुवयवा ॥ सु  
 प्पासं पञ्चमनाहं, सुविधशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं ध  
 र्मशांतिं, विमलअरिजिनं, मह्लिकुंशुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं,  
 नमिमविनमिसौ, पंच कट्याण एसु ॥ १ ॥ गध्रे हाणेषु जम्भे,

वय गहणखणे, केवले लोयकाले, पन्नाशिवाणठाले, पंगवण समए  
 संयुआ जावसारं ॥ देवेहिं दाणवेहिं, जवणवणसए, वितरे किंन  
 रोहिं, । तं मझं दितु मोरुं, सयलजिनवरा, पंच कळ्याण एसु ॥२॥ हेउं  
 तित्थंकराणं, जमिहअणुवमं, जावतित्थंकरंतं । सवन्नूणं च पासां,  
 अहमविनियमा, जायए सवकालं ॥ अन्नपत्तिएहिं, नियगममहणं  
 धीयअंकूररूवं । अवावाहं जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कळ्याण एसु  
 ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहवा । सवन्नूणामाणमं  
 वा, वरकमलकरा, रोहिणीउत्तअंवा ॥ पन्नत्ती उत्तपन्नमा, धणइसर  
 णई, खित्तगेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गहगणसईया, पंच क  
 ळ्याण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकळ्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंण आदिदेव । हूं अहनिस समरूं तास सेव  
 ॥ रायणतल पगलां प्रभूतणा । पूजि सफल फल सोहामणा ॥१॥  
 तेवीस तीर्थकर समवसरया । विमलाचल ऊपर गुण जख्या ॥ गिरि  
 करणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोहम  
 सांमी उपदिस्या । जंबुगणवरने मन वस्या ॥ पुंनरगिरि महिमा  
 जे मांहा । ते आगम समरूं मनउवाह ॥ ३ ॥ चक्रेसरि गोमुख क  
 वरुयक । मन वंठित पूरण कळपवृक ॥ सिद्धक्षेत्रसिद्धरे सहदेव  
 ता । जणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीसत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण । दीक्षा वर केवल  
 ज्ञान अने निरवाण ॥ जसु तीन कळ्याणक सुखकर सुरतरुकंद । तसु  
 जवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अवावय चंपा पावापुर  
 शुभ ठाण । आइम बारम जिण चउवीसम जिणजाण ॥ अजिता  
 दिक वीसे पुहता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमुं अधिक

उच्छ्वास ॥ २ ॥ जिणवर मुख हूँती सुणि त्रिपदी ततकालि । ग  
 णधारक गूँया द्वादश अंग विशाल ॥ नयजंग पदारथ सत्त  
 नव तत्त । जवियणने तारे सायर जिम बोहित्य ॥ ३ ॥ चक्क  
 रि अंवा पन्नमादेवि प्रत्यक् । श्रीसंघ मनोरथ पूरे वासुरवृद्ध ॥ ध्या  
 वे सुख पावे श्रीजिनलाज सूरिस । जिनवर सुप्रसादे आस फले  
 सुजगीस ॥ ४ ॥ इतिनेमजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तुतिः ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतरुकंद । दृढरथ नृप रां  
 णी नंदाकेरो नंद ॥ जद्विलपुर स्वामी फेरे जवना फंद । चित चो  
 खे नमिये श्रीशीतलजिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत दुआ होस्ये अ  
 नंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहुं जवणे ठवणा  
 सासय असासय हुंत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्रीअरिहंत ॥ २  
 ॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग पविठ । नयजंग निरक्षेपा स्या  
 द्वाद मितसिठ ॥ जविजन उपगारी जारी जिन उपदेश । श्रुत  
 श्रवणे सुणतां नासे कोरि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजक् असोका सा  
 सन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥  
 चिंता डुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिन  
 लाजसूरिस ॥ ४ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ समवसरणविचारगर्भित स्तुतिः ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगमो सार । अढी गाउ  
 उंचो पिहुलो जोयण पार ॥ विच कनकसिंहासन पदमासन सुख  
 कार । श्रीतीरथनायक वैसै चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन ठत्र सिरो  
 वर चामर ढोले इंद । देवंडुजि वाजे जाजे कुमति फंद ॥ जा  
 मंरुल पूंठे जलके जाण दिनंद । तिहुअण जन जवि मन मोहे  
 सयल जिनंद ॥ २ ॥ इत्य जाव सुठवणा नाम निक्षेपा च्यार ।

जिण गणहर ज्ञाख्या सूत्र सिद्धांत मऊर ॥ जिनवरनी पदिमा  
जिन सरखी सुखकार । शुभ्र ज्ञावे वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥  
डुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । ज्वहेद कृपाणी मीठी  
अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिवूजो ज्वि प्राणी । सुय  
देवि पसाये पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेत्रुंजगिरि नमिये रूपजदेव पुंरुरीक । शुभ्र तपनी म  
हिमा सुण गुरुमुख निरञ्जीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य  
वंदनीक । करिये जिन आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र  
स्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस । अकृत गिणतीसे चढता तिम  
चालीस ॥ पंचासनी पूजा ज्ञाषइ इम जगदीस । तेहिज नित प्र  
णमूं स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पकनी पूनम चेत्र मास  
शुभ्र वार । विधिसेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोढे  
वरसलग धरिये ज्ञान उदार । करतां नर नारी पामे ज्वनो पार  
॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्रेसरिदेवी से  
विय नर सुरवंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जंपे  
गणनायक श्रीजिनलाजसूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद  
महिमा ज्ञाषी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्ज्व सातमथी नव  
दीस । नव आंबिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरि  
हंत बलि सिद्ध आचारज उवझाय । मुनि दरसन तिम बलि नाण  
चरण तव आय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हज्जार । सहु  
जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ वारस अरुठचीस पण वी  
स संग वीस सार । समसठ इक्कावन सितर पञ्चास प्रकार ॥ इण

संख्या कान्तसग परदक्षा परिणाम । आगम ज्ञापित विधि इम  
कीजे अन्निराम ॥ ३ ॥ चक्षेसरिदेवी तिम विमलेसर जस्क । श्री  
पालतणीपर पूरे वंठित सुस्क ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र जवि  
प्राणी । जिनदर्प वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अजिनव कामी  
जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामीजी ॥ आनक  
वीसे आगम ज्ञणिया वीतराग गुण ज्ञुक्ताजी । जे नर अंतर आ  
तम ध्यावे सिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन  
सूरी शिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र  
ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत  
तिष्ठ ज्ञूपोजी । ए पद निज जवि ज्ञावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो  
जी ॥ २ ॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें ज्यार सया उपवासोजी  
। इयज्जावसे विधि परकासे तीर्थकर पद खासोजी ॥ तीजे जव  
वर वीस आनकनी सेव करे ज्य प्राणीजी । समकित वीजे जे  
निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल  
हे मोठो श्रीसुरदेवि सदाईजी । खरतर गढ जिन आज्ञाधारी पा  
ठोधर वरदाईजी ॥ जिन सौजाग्यसूरिंद पसायें हंस सूरिंद गुण  
गावेजी । संघ सकलकं सानिधकारी मन वंठित फल पावेजी ॥  
४ ॥ इति श्रीवीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज शिवराण । उवजाय सादू  
नाण दंसण विनय पढाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम  
जिनज्ञाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसे गण ॥ १ ॥ उ  
च्छे जिनवर एकतो सित्तर धीर । बलि काल जघन्ये जिनवर



वीस गंजीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे  
 थानक आराधी गुणमाल ॥ १ ॥ आवश्यक वे वेला जिनवंदन  
 त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ काउसग  
 गुण स्तवना पूजा प्रजावना सार । इम शासन वञ्जल करतां ज  
 वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जस्क  
 जस्कणी सुरपती वेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे  
 मन रंग । देवचंड आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुक सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥  
 नवपदमांहे मुख्य वखाण्या रुषजादिक जिनचंदाजी ॥ ज्ञाव धरी  
 ने जे ज्ञवि वंदे वेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो  
 पावो सुक अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवद्याया सकल  
 मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सं  
 ज्ञारीजी ॥ नवमै ज्ञव ज्ञवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी ।  
 वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे ज्ञाखीजी ॥ २ ॥ छ्दस आठ ठ्तीसे  
 गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । सरुसठ इक्कावन वलि जैती  
 सितर पञ्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम  
 श्री नव दिहसैंजी । तेरसहस नव पदनो गुणनो नव आंवल नव  
 विहसैंजी ॥ ३ ॥ विमलयक चक्रेसरीदेवी रिध सिध वंठित दाता  
 जी । नली नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर  
 गञ्ज जिन आज्ञाकारी पाटोधरपद नुक्ताजी । जिन सौजाग्यसूरिंद  
 पसाये हंससूरिंद गुण नुक्ताजी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंरुन जिनवर आदिज्जिणंद । निरमम निरमोही  
 केवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणू वार धरी आनंद । सेत्रुंजगि-

रिसिखरे समवसरथा सुखकंद ॥ १ ॥ इण चनवीसीमां रूपजादिक  
जिनराय । वलि काल अर्ताते अनंत चोवीसी थाय ॥ ते सवि इण  
गिरवर आवी फरसी जाय । इम ज्ञावी काले आवस्ये सवि मुनि-  
राय ॥ २ ॥ श्रीरूपजना गणधर पूंरुकीक गुणवंत । द्वादस अंग  
रचना कीधी जेण महंत ॥ सव आगममाहे सेत्रुंज महिम महंत  
। ज्ञाखी जिन गणधर सेवो करि थिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्रेसरि गोमुह  
कवरु पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण थापे इंड उदार ॥ देवचंड-  
गणि ज्ञाखे जविजनने आधार । सव तीरथमाहे सिखाचल सिरदार  
॥ ४ ॥ इतिसेत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर जग अलवेसर अचिरा उदर अवतरियाजी  
। विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु हथणापुर सुख करियाजी ॥ इत  
उपड्व मारि विकारी शांति करी संचरियाजी । जे जवि मंगल  
कारण घ्यावे ते हुय गुणगण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्तमान जिन सव  
सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी । वारे चक्री नव नारायण नव  
प्रतिचक्री आनंदोजी ॥ रामादिक जे पुरप सलाका वंदत पाप निक-  
दोजी । इय निक्षेपे जिनसम जाणो काटे जवजय उंदोजी ॥ २  
॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी ज्ञाखीजी । इय  
भाव विहुं जेदे पूजा महानिसीथे साखीजी ॥ विषय निवृत्ती सत्  
आरंजे विनय तपी ते जाणोजी । गुजयोगे नहि आरंजकारी जग  
वड अंग प्रमाणोजी ॥ ३ ॥ थापना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने  
सुखकारीजी । कारणथी सव कारज सीजे जिनवर आज्ञा धारीजी  
॥ श्रीजिनकीर्ति सूरेश्वर गहपति पाठक श्रीरुद्धिस्तारीजी । सम-  
कित्तधारी देव सदाई सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीशांति-  
नाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुख बंदो ज्ञावे ज्ञवियण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसें  
धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति  
सत्यकि नंदन वृषज्जलंबन सुखदायाजी । विजय ज्ञली पुखलावइ  
विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूया  
होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस वि-  
ख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी ।  
ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥  
अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी । मोह मिथ्यात  
तिमिरजर नासन अजिनव सूर समाणीजी ॥ ज्ञवोदधि तरणी  
भोक्क निसरणी नय निह्येप पहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय  
समाणी आराधो ज्ञविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासणदेवी सुरनर सेवी  
श्रीपंचागुली माईजी । विघन विरारण संपत्तिकारण सेवकजन  
सुखदाईजी ॥ त्रिज्जुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति स-  
चाईजी । सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनहर्ष सहाईजी ॥ ४  
॥ इतिश्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम  
पंचम तपविधि वायक ज्ञायक ज्ञाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांबन  
लांबित वंठित दान सुदह । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु बंदो ध्यावो  
ज्ञविजन पद ॥ १ ॥ पुरण पंच महाश्रव रोथक बोधक ज्ञव्य उदार  
। पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेडिय  
दम सिव पहुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर ज्ञवियण  
उपर सुधिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम  
गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित ज्ञाजत मद पंच वाण

॥ पंचम काल तिमरजरमांहे दीपकसम सोजंत । पांचम तपफल  
मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम से-  
वाकारक जे नरनार । निरमल पांचम तपना धारक तेह जणी  
सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुक अमंद । श्री  
जिनलाज सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुखिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञान-  
पंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमद्वि जनम  
व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस भिगसर सुदि उत्तम अवधार ।  
ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक  
अधिक गुण धार । इग्यारे वारे प्रतिमा देसक धार ॥ इग्यारे डुगुणा  
दोय अधिक जिनराय । मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥  
२ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । बलि गुणनो गुणिये  
विधिसेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान ।  
इक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर चुवण  
चण सम्यग् दरसणवंत । जिनचंड सुसेवक बेयावच्च करंत ॥ श्रीसंध  
सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कल्याण  
॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादशीस्तुति ॥

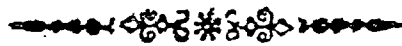
॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल  
प्राख्यो श्रीजगवंत ॥ नरनारी जावे आराधो तप एह । सुख संपत ली-  
ला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ रूपजादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार ।  
जिनमुख परकासे बेठी परखदा वार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो  
उपवास । मन वंठित लीला सुंदर जोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो  
बोड्यो लाज अनंत । विधसुं परमारथ साथे सुधो संत । इखदो

इग तेहनो नासि जाय सब दूर । बलि दिन ७ अंगे वाधे अधिको  
नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण । सौभाग्य  
सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर ७ महोच्चव नित नवला  
स्त्रिणगार । जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ परखी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गच्छ  
चोरासी जेहने आप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चोदस  
कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम ७ संशय  
जाय ॥ १ ॥ चउबीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, क  
ल्पसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजाण ॥ इण पर ठाम ७  
तुम देखो चउदस परकी होय, जूला कांइ जमो तुम प्राणी साचो  
जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चउदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख,  
जविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी जाख ॥ आवश्यक  
सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर  
बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो  
मन वंठित फल होय, जे जे आज्ञा सूधी पाले ज्यांनो विधन ह  
रेय ॥ सेवक इणपर करे वीनती सूधो समकित पाय, खरतरगच्छ  
मंमण कुमति विहंमण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति परकी  
चोदस शुद्ध संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसवन्नयं, संतिं च पसंतसवंगयवावं ॥ जय  
गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणकरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगय मंगुल ज्ञावे, तेहं विनलतवनिम्मल सहवे ॥ निरुवम महप्प  
 ज्ञावे, थोत्तामि सुदिठ सप्पावे ॥ ५ ॥ गाहा ॥ सब डुरक्कप्पसंतीणं,  
 सब पावप्पसंतीणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिय संतीणं ॥ ३ ॥  
 सिलोणो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं  
 ॥ तद्द य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥  
 मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कयरं, अ  
 जिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजियस्त य संति  
 मद्दा मुणिलोवि अ संतिकरं, सययं मम निवुइ कारणयं च नमं  
 सणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ डुरक्कवारणं, जइअ विम  
 ग्गइ सुक्ककारणं ॥ अजियं संतिं च ज्ञावत्तं, अजियकरे सरणं पव  
 ऊहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय ज  
 रमरणं, सुर असुर गरुल जुयगवई, पयय पणिवइअं ॥ अजिय म  
 ह्मविअ, सुनय नय निजणमज्जयकरं, सरणमुवसरिअ जुवि दिवि  
 ज, महिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम  
 नित्तम सत्तधरं, अऊव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संति  
 अरं पणमामि दमुत्तम तिठयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं  
 दिसत्त ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्तिपुवपत्तिवं च वरहत्ति मत्तय प  
 सत्त विठ्ठन्न संश्रियं अिर सरिअ वत्तं मयगल लीलायमाण वर गंध  
 हत्ति पत्ताण पत्तियं संश्रवारिहं हत्तिहत्त वाहुं धंतकणग रुअग नि  
 रुवहय पिंजरं पवर लक्कणो वचिअ तोम्म चारु रूवं सुइ सुद्धम  
 णात्तिराम परम रमणिकु वरदेव डंडुहि निनाय महुरयर सुद्धगिरं  
 ॥ ९ ॥ वेढत्तं ॥ अजियं जिआरिगणं, जिअ सबजयं जवो हरिउं ॥  
 पणमामि अहं पयत्तं, पावं पसमेत्त मे जयवं ॥ १० ॥ रात्तालुद्ध  
 त्तं ॥ कुरु जणदय हत्तिणात्तर नरीसरो पढमंतत्त महाचक्कव  
 ट्ठिओए महप्पज्ञावो जो धाहत्तरि पुरवर सहस्सवर नगर णिगम

धुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणोहिं, तो देव वहुहिं पयल पणभिअ  
 स्सा ॥ जस्त जगुत्तमसासणयस्सा, जत्तिवसागयपिंदिअआहिं ॥  
 देव वरहरसा बहुआहिं, सुरवर रङ्गुण पंदिअआहिं ॥ ३० ॥  
 ज्ञासुरयं ॥ वंस तद् तंति ताल मेलिए तिउक्कराजिराम सह मी  
 सएकए अ, सुइसमाणणेअ सुइ सज्ज गीअ पाय जालयंदिअहिं ॥  
 वलय मेहला कलावनेउराजिराम सह मीसए कए अ देवनट्टिआहिं  
 ॥ हाव ज्ञाव विप्लमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंग हारएहिं वंदिआय  
 जस्तते सुविक्रमाकमा ॥ तयं तिलोअ सब सत्त संतिकारयं पसंत  
 सब पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायणं ॥  
 बत्त चामर पणागजूअ जव मंदिआ, जयवर मगर तुरय सिरिवह  
 सुलंठणा ॥ दीव समुद्द मंदरदिसागयसोहिआ, सञ्चिअ वसह सी  
 हसिरिवहसुलंठणा ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहावलठा समप्पइठा,  
 अदोस डुठागुणेहिं जिठा ॥ पसावसिठा तवेण पुठा, सिरीहीं इठा  
 रिसीहीं जुठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसवपावया,  
 सवलोअहिअ मूल पावया ॥ संधुआ अजिअ संति पावया, हुंतु  
 मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिया ॥ एवं तव बल वि  
 उदं, धुअं मए अजिअ संति जिणजुयलं ॥ ववगय कम्म रयमलं,  
 गइं गयं सासयां विमलां ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, सु  
 रक सुहेण परमेण अविस्सायं ॥ नासेउं मे विस्सायं, कुणअ परि  
 साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ तं मोएउ अनादिं, पावेउअ नं  
 दिसेयमज्जिनंदिं ॥ परिसाइवि सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे  
 नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्किअ चान्मासिय, संवहरिए अवस्त  
 ज्जिअवो ॥ सोअवो सवेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥  
 जो पढइ जोअनिसुणइ, उज्जउ कालंपि अजिअ संतिअयं ॥ न हु  
 हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इह परम

प्रयं, अहवा कितिं सुविद्यमानं च्रुवणे ॥ तां तेलुकुद्धरणे; जिणव  
 यणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति श्रीवृहदजितशांतिस्त  
 वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशांतिस्मरणम् ॥

॥ उच्चासिक्क मनस्क निग्गयपहा दंमञ्जलेपांशिणं, वंदारुण  
 दिसंत इव पयं निवाणमग्गावलिं ॥ कुंदिंडुज्जद दंतकंति मिसन  
 नीदंत नाणंकुरु, केरे दोविडु इज्ज सोलसः जिणे ओसामि खेमंकरे  
 ॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलोहिं, खय समय समीरं जो  
 जणिज्जा गर्हए ॥ सहल नहय लंवा लंधए जो पएहिं, अजिअम  
 हव संतिं सो समञ्जे उणेउं ॥ २ ॥ तहविहु बहुमाणु छासज्जत्ति  
 अरेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमहव अचिंता  
 एंतसामञ्जत्तिं, फलहइ लहु सबं वंविअं णिञ्चिअं मे ॥ ३ ॥ सव  
 लजयहिआणं नाममित्तेण जाणं, विहरइ लहु डुवा निदोघट्टथं  
 ॥ नमिरसुर किरीडू गिग पायारविंदे, समय मजिअ संती ते जिं  
 णिंदे जिंवे ॥ ४ ॥ पसरइ चरकित्ती वट्टए देहदित्ती, विलसइ  
 च्रुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमत्ति होइ संसारत्ति, जिणजुअ  
 पयज्जत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं च्रू  
 रिदिबंगहारं, फुरुणरसज्जावो दारसिंजारसारं ॥ अणमिसरमणीज  
 हंसणत्ते अज्जीया, इव पुणमणि वंधा कास नट्टोवयारं ॥ ६ ॥  
 धुणह अजिअसंती ते कया सेस संती, कणयरयपसंगा उज्जए जा  
 णिमुत्ती ॥ सरज्जस परिंज्जा रंज्जनिवाणलत्ती, घणथणधुसि णिक्कु  
 प्पंकपिंगीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयजंगं वट्टणिञ्चं अणिञ्चं, सइसइ  
 षज्जिलप्पा लप्पमेगं अणेगं ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्धं तु जेसिं,  
 वयण मवय णिज्जं ते जिणे संज्जरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए  
 ताव मोहंधयारं, जमइजय मससं तावमिञ्चत्तवसं ॥ ९ ॥ फुरइ फुरुप



वंता एतणाणं सुपूरो, पयम मजिअसंती जाण सूरु न जाव ॥ एण  
 अरि करि हरि तिणहु एहंबु चोरा हिवाही, समर ममर मारी रुद  
 खुदो वसग्गा ॥ पलय मजिअसंती कित्तेणे ऊत्तिजंती, निविमतरत  
 मोहा न्जरालुंखिअ व ॥ १० ॥ निचिअडुरिअदारु दित्तजाणग्गि  
 जाला, परिगय मिव गोरं, चिंतिअं जाण रूवं ॥ कणय निहसरेहा  
 कंतिचोरं करिजा, चिरअरि मिह लब्धिं गाढसंघंनिअव ॥ ११ ॥  
 अरुविनिवन्निआणं पन्निवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण  
 गुत्ति ठियाणं ॥ जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च जाणं, जणयइ  
 लहु संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिस्सं पक्क  
 पाइक्कपुस्सं, सयलपुहवि रज्जं ठद्धिअं आण सज्जं ॥ तण मिव पन्नि  
 लग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवस्सा हुंतु ते मे पसस्सा ॥ १३ ॥  
 ठणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं, अणन्नरनमिरीहिं मुठिगिज्जोद  
 रीहिं ॥ ललिअ जुअलयाहिं पीण सोणिठणीहिं, सयसुर रमणीहिं  
 चंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस्स किन्नि न्जकुठ गंठि कासाइसार,  
 खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसण्ठी कुञ्चिक  
 साइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरु  
 डुहतासे पस्सिए चाणमासे, जिणवर दुग्घुत्तं वञ्चरे वा पवित्तं ॥  
 पठइ सुणइ सिआ एह जाएइ चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण धा  
 एह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे  
 सर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कीसर ॥ तिठंकर सोल  
 सम संति जिणवद्धह संशुअ, कुरु मंगल मम हर सुडुरिअमखिलं  
 पि शुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूमामणि किरणरंजिअं मुणि  
 णो ॥ चलयजुअलं महाअय, पणासयां संअवं बुढं ॥ १ ॥ समिय

कर चरण नह मुह, निवुक्त नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुठ महारोः  
 गानल, फुलिंग निदृष्ट सवंगा ॥ १ ॥ ते तुह चलणा राहण, स  
 लिलंजलिसेय बुद्धिय ज्ञाया ॥ वण दवदह्वा गिरिपा यव व पत्ता  
 पुणो लंठिं ॥ ३ ॥ उवाय खुप्रिय जलनिहि, उप्परु कळोल ज्ञी  
 सणारावे ॥ संजंत जय विसंतुल, निद्यामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥  
 अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पास जिण  
 चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुअ  
 वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ रुप्पंत मुद्धमिय  
 बहु, ज्ञीसरणरव ज्ञीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं,  
 निवाविअ सयल तिहुअणाज्जोअं ॥ जे संजरंति मणुआ, न कुणइ  
 जलणो ज्ञयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत जोग ज्ञीसण, फुरिआरुण न  
 यण तरल जीहालं ॥ उग्गज्जुअं नवजल य, सज्जहं ज्ञीसणायारं  
 ॥ ८ ॥ मन्नंत कीरु सरिसं, दूर परिबुद्ध विसम विस वेगा ॥ तुह  
 नामस्कर फुरुसि द्द, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अरुवीसु जि  
 ल्ल तकर, पुलिंद सदल सदज्ञीमासु ॥ जयविहुर बुन्नकायर, उल्लु  
 रिअ पहिअ सज्जासु ॥ १० ॥ अविदुत्तविह वसारा, तुह नाह प  
 णाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं  
 ॥ ११ ॥ पळ्ळलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह  
 कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंजजलाज्जोअं ॥ १२ ॥ पणाय ससंज  
 म पञ्चि, नहमणिमाणिक्क पन्निअ पन्निमस्त ॥ तुह वयण पहरण  
 धरा, सीहं कुंरुपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल वंतमुसलं, दीह  
 करुन्नाल वट्ठि उवाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजल  
 हरारावं ॥ १४ ॥ ज्ञीमं महागइंदं, अज्जासन्नंपि ते नवि गिणंति  
 ॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समच्छीणा ॥ १५ ॥ स  
 मरम्मितिकं खग्गा, जिग्घाय पविद्ध उडुय कवंथे ॥ कुंतविणिज्जि

न्न करि कल, ह मुक्कसिक्कार पनरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर  
 रिण, नरिंद निवहा ज्जमा जलं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण,  
 पासजिण तुह प्पजावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,  
 चोरारि मइंद गय रण ज्जयाइं ॥ पास जिणनाम संकि, तणेण  
 पसमंति सवाइं ॥ १८ ॥ एवं महा ज्जयहरं, पास जिणिंदस्त संथ  
 वमुआरं ॥ ज्जविय जणाणंदयरं, कद्धाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥  
 राय ज्जय जक्क रक्कस, कुसुमिण डुस्सजण रिक्क पीमासु ॥ सं  
 जासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो  
 अ निसुणाइं, ताणं कइणो य माणातुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिण,  
 सयल जुवणाच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृ  
 तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयज्ज जय तिठं, ज्जमिठ तिठ्ठाहि वेण वरिण ॥  
 सम्मं पवत्तिअंज्ज, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सय  
 लक्खेसा, निहय कुलेसा पसठ सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिठ,  
 स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निदहकम्म बीआ, बीआपरमि  
 षिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु डुब्बाणि तिठ  
 स्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आय  
 रिआ तह तिठं, निहय कुतिठं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय  
 गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पन्निणीय कए,  
 वणिंतु सब्बस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाणसाहुणिज्जिअ, साहूणं जणिअ  
 सब्ब साहज्जा ॥ तिठप्पजायगाते, हवंतु परमिठिणो जइणो ॥ ६ ॥  
 जेणाणुगयं नाणं, निव्वाणफलं च चरणमविहवइ ॥ तिठस्स दंसणं  
 तं, मंगलमुवणेज्ज सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निठ्ठमो सुअधम्मो, समग्ग  
 ज्जवंगि वग्ग कथ सम्मो ॥ गुणमुठ्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

ह दिसन्न ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो, संपाविञ्च ञ्चवसत्त . सिवस  
 म्मो ॥ नीसेस किलेसहरो, हवन्न सया सयल संघस्त ॥ ९ ॥  
 गुणगण . गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिञ्चस्त ॥  
 सिरिवद्धमाण पडुपय, मिञ्चस्त कुसलं समग्गस्त ॥ १० ॥  
 जियपन्निवरकाजस्का, गोमुह मायंग गयमुह पमुस्का ॥ सिरि  
 वंत्त संति सहिआ, कय मयरस्का सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंवा  
 पन्निहयन्निवा, सिद्धा सिद्धाअया पवयणस्त ॥ चक्केसरि वइरुद्धा  
 संति सुरा दिसन्न सुस्काणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उदित्तु  
 संघस्त मंगलं विज्जलं ॥ अद्युत्ता सहिआन्न, विस्सुअ सुयदेवयान  
 समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रस्का, जस्का चत्तवीस सासण  
 सुरावि ॥ सुहन्नावा संतावं, तिञ्चस्त सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि  
 णपवयणंमि निरया, विरहा कुपहाज सब हासधे ॥ वेयावच्च गरा  
 विञ्च, तिञ्चस्त हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुत्समग्ग,  
 विहिअ ञ्चवाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो  
 सुहं दिसन्न ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पवय वासि  
 देव देवीन्न ॥ जिण सासण विआणं, उदाणि सवाणि निहणंतु  
 ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासस्कि, त्वालयया नवग्गहा सनस्कत्ता ॥  
 जोइणि राहुग्गहका, लपास कुलिअह पहेरेहिं ॥ १८ ॥ सहका  
 ल कंटएहिं, सविठ्ठिवेहिं कालवेलाहिं ॥ सबे सबन्न सुहं, दिसंतु  
 सबस्त संघस्त ॥ १९ ॥ ञ्चवणवइ वाणमंतर, जोइस वमोणिआ  
 य जे देवा ॥ धरणिंद सक सहिआ, दलंतु उरिआइं तिञ्चस्त ॥ २० ॥  
 चक्कं जस्त जलंतं, गइइ पुरन्नपणासिअ तमोहं ॥ तंतिञ्चस्त ञ्च  
 गवन्न, नमो नमो चद्धमाणस्त ॥ २१ ॥ सो जयन्न जिणो वीरो,  
 जस्त ऊविसासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपइसासणं कुप, ह नासणं  
 सब ञ्चय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसत्तसेण पमुहा, हयञ्चय नि

वहा दिसंतु तिष्ठस्त ॥ सव्व जिणाणं गणिहा, रिणो एहं वंठिअं  
 सव्वं ॥ १३ ॥ सिरि वद्धमाण तिष्ठा, हिवेण तिष्ठं समप्पिअं जस्त  
 ॥ सम्मं सुहम्म सामी, दिसत्त सुहं सयल संघस्त ॥ १४ ॥ पय  
 इएअदिआ जे, जहाण दिसंतु सयल संघस्त ॥ इयरसुरा विहु स  
 म्मं, जिणागणहर कहिय कारिस्त ॥ १५ ॥ इय जो पढइ तिसंजं,  
 दुस्सअं तस्त नत्ति किंपि जए ॥ जिणादत्ताणाएठिन्, सुनिठ्ठिअघा  
 मुही होई ॥ १६ ॥ इति श्री गणायरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणं

॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामकं पंचमं स्मरणम् ॥

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं ॥  
 सुगुरुजण पारतंतं. उवहिव्व शुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय  
 मोह जोहा, निहय विरोहा पणठ संदेहा ॥ पणयंगि वग्ग दाविअ,  
 सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहा, समत्त पर  
 तिष्ठ जणिय संखोहा ॥ पन्निजग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्त  
 सत्तोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्तवाहा, हय दुह दाहा सिवंब तरु  
 साहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, खीरोदखिणुव्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सु  
 गुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पव्वज्जा ॥ सिवसुह  
 साहण सज्जा, जयगिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्जसुहम्म प्पमुहा,  
 गुणगण निवहा सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसंजं नामं, नामं  
 न पणासइ जिणाणं ॥ ६ ॥ पन्निवज्जिअ जिण देवो, देवायरिउ डुरंत  
 जवहारी ॥ सिरि नेमचंद सूरि, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥  
 सिरि वद्धमाण सूरि, पयमीकय सूरि मंत माहप्पो ॥ पन्निहय कसाय  
 पत्तरो, सरय ससंकुव्व सुहजणत्त ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्पर, ए  
 पच्चलो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर सिद्धसिद्धं, तज्जाणत्त पणव  
 सुगुणजणत्त ॥ ९ ॥ पुरत्त उद्धह महिव, छहस्त अणहिद्ध वारुए  
 पयं ॥ मुक्कावि आरिऊणं, सीहेणव दव्वद्धिं गिया ॥ १० ॥ ६

समञ्चैरयं नितिवि, प्फुरंतु सञ्चंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरैणव सूरि  
 जिणो, सरेण हयमद्विथ दोसेण ॥ ११ ॥ सुक्कश्च पत्त किन्ती, पय  
 मिथ गुत्ती पसंत सुदमुत्ती ॥ पदय परवाइ दिन्ती, जिणचंद जई  
 सरो मंती ॥ १२ ॥ पयमिथ नवंग सुत्तव, रयणुक्कोसो पणासिथ  
 पउसो ॥ जवजीथ मविथ जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥  
 ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा करणबंधु रोधणिथ  
 ॥ तिरि अन्नयदेव सूरि, मुणिपवरो परंम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय  
 सावय संतासो, हरि व सारंग जग्ग संदेहो ॥ गय समय दप्प द  
 लणो, थासाइथ पवर कवरसो ॥ १५ ॥ जीमजव काणणमिथ,  
 दंसिथगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुत्तं, सूरी जिणव  
 छहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरठिथ सच्चरणो, चउरणुत्तं प्पहाणं  
 सच्चरणो ॥ असममयरायं महणो, उद्धमुहो सदइ जस्त करो ॥  
 ॥ १७ ॥ दंसिथ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिथ सावत्तं जत्तं  
 ॥ गुरुगिरि गरुत्तं सरद्वि, सूरि जिणवच्छहो होत्ता ॥ १८ ॥ जुग  
 पवरागम पीत्त, सपाणि पीणय मणाकयां ज्जवा ॥ जेण जिणवच्छ  
 हेणं, गुरुणा तं सव्वा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिथ पवर पवयणं, तिं  
 रोमणी वूढ उव्वह खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, व सदइ सत्ताणतां  
 णकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महीणं, सुगुरुणं पारत्तं मुव्वइ ॥  
 जयइ जियइ जिणदत्त सूरी, तिरि निलत्तं पणय मुणितिलत्तं ॥  
 २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीपठ्यस्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरत्त विग्घं, जिणवीराणाणु गामि संघस्त ॥  
 तिरि पासजिणो थंजण, पुरत्तं निठ्ठिआनिठो ॥ १ ॥ गोयम सुं  
 हम्म पमुहा, गणवणो विद्विथ ज्जव सत्तसुहा ॥ तिरि वद्धमाण  
 जिणति, व सुत्तयंतं कुयंतु सया ॥ २ ॥ सकाइणो सुराजे, जिण

वैयावञ्च कारिणो संति ॥ अत्रहरिञ्च विग्घ संघा, हवंतु ते संघसंति  
 करा ॥ ३ ॥ सिरि अञ्जणय छिञ्च पा, ससामि पयपञ्चम पणय पा  
 णीणं ॥ निह्वलिञ्च डुरिञ्च विंदो, धरणिंदो हरण डुरिञ्चाइं ॥ ४ ॥  
 गोमुहपमुक्क जस्का, पमिहय पमिवस्क पस्क लस्का ते ॥ कयसुगु  
 ण संघ रस्का, हवंतु संपत्त सिवसुस्का ॥ ५ ॥ अप्पमिचक्का पमुहा,  
 जिण सासण देवयान जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु  
 संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासञ्चउर, पुरठिठ वद्धमाण  
 जिण ज्ञतो ॥ सिरि बंज संति जस्को, रस्कण संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥  
 खित्तगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया तान् ॥ निवुइ पुर प  
 हियाणं, ज्जवाण कुणंतु सुस्काणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विदि  
 पहरि उच्चिण कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सबहा ह  
 रण विग्घाणि ॥ ९ ॥ तिठवइ वद्धमाणो, जणोसरो संगण सुसंघेण  
 ॥ जिणचंदो ज्ञयदेवो, रस्कण जिणवद्धहो पहुमं ॥ १० ॥ सो  
 जयण वद्धमाणो, जिणोसरो णेस रुव हयतिमिरो ॥ जिणचंदा ज्ञय  
 देवा, पहुणो जिणवद्धहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवद्धह पाए,  
 ज्ञयदेव पहुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणोसरव, ढमाण तिठस्स  
 बुद्धिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥  
 मणसा वयसा वजसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्त  
 गणे नाणाणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअसिय वायपए,  
 नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति षष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तमं स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसह  
 रविसनिष्पासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ ज्ञवेज्जे  
 पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्त  
 वनं सप्तमं स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रज्ञाणा, मुद्योतकं दलितपापत  
 मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं जवजले  
 पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, उ  
 हृतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचिन्हैरुदारैः, स्तो  
 त्र्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्दुम् ॥ २ ॥ युगम् ॥ बुद्ध्या विना  
 पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिविगतत्रपोऽहम् ॥ वा  
 लं विहाय जलसंस्थितमिन्द्रविंश, मन्यः क इच्छति जनः सहसा  
 ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद् शशांककांतान्, कस्ते क  
 मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कटपांतकालपवनोऽस्तनक्रचक्रं, को  
 वा तरीतुमलमंबुनिधिं जुजाज्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तवं ज  
 क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवी  
 र्यमविचार्य मृगोमृगेंडं, नाज्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्  
 ॥ ५ ॥ अटपश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वन्नक्तिरेव सुखरीकुरुते  
 वलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचात्रक  
 लिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन जवसंततिसंनिवहं,  
 पापं कृणात्कथमुपैति शरीरजाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनी  
 लमशेषमाशु, सूर्याशुज्जिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति  
 नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारज्यते तनुधियापि तव प्रज्ञावात् ॥  
 चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदविंडः  
 ॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि  
 जगतां धुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रज्ञैव,  
 पद्माकेरेषु जलजानि विकाशजांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं ज्वन  
 नूपणजून नाथ, जूनैर्गुणैर्जुवि जवंतमज्जिपुवंतः ॥ तुड्या ज्ञेति  
 ज्वतो ननु तेन किं वा, जूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥



॥ १० ॥ दृष्ट्वा ज्वंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति  
 जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं  
 जलनिधेरशितुं क श्चेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिन्निः परमाणु  
 जिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत् ॥ तावंत एव खलु तेप्य  
 एवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं क  
 ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्रितयोपमानम् ॥ विंबं  
 कलंकमलिनं क निशाकरस्य, यद्वासरे ज्वति पांडुपलाशकटपम्  
 ॥ १३ ॥ संपूर्णमंरुलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव  
 लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति  
 संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाजि,  
 नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कटपांतकालमरुतां चलि  
 ताचलेन, किं मंदराडिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमव  
 र्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न  
 जातु मरुतां चलित्ताधलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः  
 ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सदसा  
 युगपज्जांति ॥ नांजोधरोदरनिरुद्धमहाप्रज्ञावः, सूर्यातिशायिमहि  
 मासि मुनींश्च! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं,  
 गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विश्राजते तव मुखाज्जमन  
 छपकांति, विद्योतयज्जागदपूर्वशशांकविंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु  
 शशिनाहि विवस्वता वा, युष्मन्मुखैडुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ नि  
 ष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्ज्वन्नारनत्रैः  
 ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विज्ञाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिह  
 रादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु  
 कावशकले किरणाकलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव  
 दृष्ट्वा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन ज्वता नु

विद्येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ज्ञवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्री  
 सां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी  
 प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति ज्ञानि सदस्त्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन्त  
 यति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांसः  
 मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलक्ष्य जयन्ति  
 मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींश्पन्थाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं वि-  
 ज्ञुमर्चित्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं  
 विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति संतः ॥ २४ ॥  
 बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिवोधात्, त्वं शंकरोऽसि ज्ञुवनत्रयशंकः  
 रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव जग-  
 वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुज्यं नमस्त्रिजुवनार्तिहराय नाथः  
 तुज्यं नमः क्लितितलामलजूपणाय ॥ तुज्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व-  
 राय, तुज्यं नमोजिनज्ञबोदधिज्ञोपणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयो-  
 ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥  
 दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीकितो  
 ऽसि ॥ २७ ॥ ज्ञैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माज्जाति रूपममलं  
 जवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोद्धसत्किरणमस्ततमोवितानं, विवं रवेरिव  
 पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमगूखशिखाविचित्रे, वि-  
 ब्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ विवं वियद्विलसदंशुलताविता-  
 नं, तुंगोदयाङ्गिशिरसीव सदस्त्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचाम-  
 रचारुशोभं, विब्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशु-  
 चिनिर्जरवारिधार, मुञ्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौजम् ॥ ३० ॥ उत्र-  
 त्वयं तव विज्जातिशशांककांत, मुञ्चैः स्थितं स्थगितज्ञानुकरप्रता-  
 पम् ॥ मुक्ताकलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयन्निजगतः परमेश्वर-  
 त्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्धे मनवपंकजपुंजकांती, पर्युद्धतन्नखमयूखः

शिखाजिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेऽ धत्तः, पद्मानि त  
 त्र विद्युधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिने  
 ऽ, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रजा दिनकृतः प्रह  
 तांधकारा, तादृकुतोयद्गणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्रयोत  
 न्मदाविलविलोककपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐ  
 रावताज्जमिज्जमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा जयं जवति नो जवदाश्रिता  
 नाम् ॥ ३४ ॥ जिह्वेज्जकुंजगलडुज्ज्वलशोणितान्क, मुक्ताफलप्रकर  
 जूषितजूमिजागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति  
 क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पान्तकालपवनोऽस्तदह्निकल्पं,  
 दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु  
 खमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं  
 समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्राम  
 ति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः  
 ॥ ३७ ॥ बलगतुरंगगजगर्जितनीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि जू  
 पतीनाम् ॥ उद्यद्देवाकरमधूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु  
 जिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रजिह्वगजशोणित वारिवाह, वेगावता  
 रतरणातुरयोधनीमे ॥ युद्धे जयं विजितहुर्ज्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पाद  
 पंकजवनाश्रयिणो लज्जन्ते ॥ ३९ ॥ अंजोनिधौ कुञ्जितनीषणन  
 ऋचक्र, पाठीनपीठजयदोल्बणवामवाशौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितया  
 नपात्रा, स्त्रासं विहाय जवतः स्मरणाद्भ्रजन्ति ॥ ४० ॥ उडूतनी  
 षणजलोदरज्जारज्जुग्नाः, शोण्यां दशामुपगताञ्जुतजीविताशाः ॥  
 त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या जवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः  
 ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगमकोटिनिघृ  
 ष्टजंघाः ॥ त्वन्नामसंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विग  
 तबंधजया जवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेऽल्लुगराजइवानलाहि, संग्राम

वारिधिमहोदरबंधनोद्यम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति जयं जियेव,  
 यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेऽ  
 गुणेर्निबद्धां, जक्त्या मया रुचिरवर्णाविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो  
 य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४  
 ॥ इति जक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ ज्ञो ज्ञो ज्ञव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वं मेतत्, ये या  
 त्रायां त्रिज्जुवनगुरोरार्हतां जक्तिज्ञाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु ज्वताम  
 र्ददादिप्रज्ञावा, दारोग्यश्रीघृतिमतिकरी क्लेशत्रिध्वंसदेतुः ॥ १ ॥  
 ज्ञो ज्ञो ज्ञव्यलोका इह हि ज्ञरतैरावतविदेहसंज्ञवानां, समस्तती  
 र्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं श्रवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः  
 सुधोपाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरैः सह समागत्य सविन  
 यमर्द्धन्नट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्मान्निपेकः,  
 शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन  
 गतस्त पंथाः ॥ इति ज्ञव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं वि  
 धाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं  
 इति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं १, प्रीयं  
 तां २, जगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रै  
 लोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोक्येश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥  
 ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायज्ञ ४, विम  
 ल ५, सर्वानुज्जति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०,  
 स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग  
 १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जि  
 नेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४,  
 एते अतीत.

## ॥ चतुर्विंशतितर्थकराः ॥

॥ ॐ श्रीरुषज्ञ १, अजित २, संज्ञव ३, अज्ञिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रज्ञ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रज्ञ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मद्धि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाज्ञ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रज्ञ ४, सर्वानुज्ञति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोद्धिल ९, शत कीर्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कपाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मद्धि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, ज इंकर २४.

॥ एते ज्ञावित्तीर्थकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा ज वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयडुर्जिह्वकान्तरेषु दुर्गमार्गेषु र कंतु दो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाज्ञि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुयीव ९, दृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, ज्ञानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंज १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुस्तीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रज्ञावती १९, पद्मा

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति वर्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंगुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, पण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, जूकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितवला २, डुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, जूकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंदा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १९, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंतिते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रहसि २, वज्रशृंगला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोढ्या १३, अच्युता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः पौरुषविद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ महाश्वंसूर्यी गारकबुधवृहस्पतिशुक्रशनिश्ररराहुकेतुसहिताःसलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

यश्च ज्वंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रत्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिवंधु  
 वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो ज्वंतु ॥ अस्मिंश्च जूमं  
 म्ले आयतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस  
 र्गव्याधिदुःखदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्जवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिरू  
 द्विवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः ज्वंतु ॥ सदाप्राङ्मूर्तानि दुरितानि पापा  
 नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा ज्वंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना  
 आय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाञ्ज  
 र्चितां ह्ये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे  
 गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उ  
 न्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःखप्रदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्,  
 नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा  
 जसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेष्वांतिम् ॥ ४ ॥  
 श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्जवतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्जवतु, श्रीराज  
 संनिवेशानां शान्तिर्जवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्जवतु, ॐ स्वाहा  
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शान्तिः प्रतिष्ठा  
 यात्रास्नात्रावसानेषु, शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू  
 पवासकुमुमांजलिसमेतः, स्नात्रर्पाठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचि  
 वपुः पुष्पवस्त्रश्रंदनाञ्जरणालंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां  
 कंठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति  
 ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तो  
 त्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणज्ञाजोहि जिनाज्जिषेके ॥ १  
 ॥ अहं तिष्ठयरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह  
 शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसमं जवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु  
 सर्वजगतः, परहितनिरता ज्वंतु जूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं,  
 सर्वत्र सुखी ज्वंतु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः कथं यान्ति, विद्यंते वि

प्रवक्ष्यामः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति  
श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हन्नयो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं  
अर्हं सिद्धेन्नयो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येन्नयो नमो  
नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेन्नयो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अ  
र्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुन्नयो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच  
नमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं जवति  
मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ क  
मलप्रज्ञसूरींशो, ज्ञापते जिनपंजरम् ॥ ३ ॥ एकजक्तोपवासेन, त्रिकालं  
यः पठेद्विदं ॥ मनोज्ञिलपितं सर्वं, फलं स लज्जते ध्रुवं ॥ ४ ॥ जू  
शय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोज्जविवर्जितः ॥ देवताये पवित्रात्मा, य  
एमासैर्लज्जते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्रुर्लजाटके  
॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुचन्दं  
मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वा  
र्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनक्षेत्री, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अं  
गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षे,  
दाक्षेयीं विजितेंद्रियः ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवि  
त् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवीं परमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थ  
रुत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं जगवानर्हं,  
त्राकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥  
११ ॥ रूपज्ञो मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संज  
वः कर्णयुगलं, नासिकां चान्निन्दनः ॥ १२ ॥ उष्टौश्रीसुमती र  
क्षेत्, दंतान्पद्मप्रज्ञो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रज्ञो  
विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रे



यांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्ते,  
 वनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोऽपुदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाम्निमंमलं  
 ॥ १५ ॥ श्रीकुंभुर्गुह्यकं रक्ते, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिरूपृष्टिवं  
 शं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्तेत्, श्रीनेमि  
 श्वरणद्वयं ॥ श्रीपाशर्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥  
 पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्तेदशेवपापेभ्यो, वी  
 तरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे इमशाने वा, संग्रामे शत्रुसंक  
 टे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, जूनप्रेतजयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे  
 प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपी  
 दिते ॥ २० ॥ माकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहणाहिते ॥ नद्युत्ता  
 रेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुद्गाय, यः  
 स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लज्जते सुखसंपदं ॥ २२ ॥  
 जिनपंजरनामेदं, यः स्मरंत्यनुवासरं ॥ कमलप्रन्नराजेंड, श्रियं ल  
 लज्जते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुद्गाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेत  
 ज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सःकमलप्रन्नाख्यां, लक्ष्मीं मनोवाञ्छित  
 पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपद्मनीयवरेण्यगन्त्रे, देवप्रन्नाचार्य्यपदाब्जदं  
 सः ॥ वार्दीञ्चूनामणिरेषजैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रन्नाख्यः  
 ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

## ॥ अथ स्तोत्रोमैस्तोत्रलिखणा ॥

॥ अथ वडानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कप्पत्तरु अयाण चिंतउ मणञ्जितरिं, किं चिंतामणि  
 कामधेनु आराहो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसांतर लंयउ,  
 रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघन ॥ चवदे पूरव सार युग लद्धउ  
 ए नवकार, सयल काज महियल सरे उत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ के

वलि ज्ञासिय रीत जिके नवकार आराहे, जोगवि सुख अणंत  
 अंत परम प्यसाहे ॥ इण जाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु  
 परि, इण जाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो  
 जपे अर्चित चिंतामणि एह, समरण पाप सवे टले रिद्धि सिद्धि  
 नियगेह ॥ १ ॥ निय सिर ऊपर जाण मज्ञ चिंतवै कमल नर,  
 कंचणामय अठदल सहित तिहां माहे कनकवर ॥ तिहां वेठा अ  
 रिहंतदेव पञ्चमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पदरेवि पठम पय  
 चिते नियमणि ॥ निवारय चञ्च गइ गमण पामिय सासय सुख,  
 अरिहंत जाणे तुम लहो जिम अजरामर मुख ॥ ३ ॥ पनर जे  
 य तिहां सिद्ध वीय पद जे आराहे, राते विष्णुमणो वन्ननिय सो  
 हग साहे ॥ राती घोती पदर जपै सिद्धिं पुढे दिसि, तयल लोय  
 तिह नरहि होइ ततखिणसेवसि ॥ मूलमंत्र वशीकरण अवर स  
 हू जगधंद, मणमूली उग्रय करे बुद्धि हीण जानंघ ॥ ४ ॥ दक्षिण  
 दिसि पंखनी जपे नमो आयरिआणं, सोवनवन्नह सीस सहित  
 उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे लाज ऊपर जे ध्यावे, पदरे  
 पीलावत्थ तेह मन वंठिय पावै ॥ इण जाणे नव निधि हुवेए  
 रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर उच्च सिर  
 जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवजाय सीस पाठंता पञ्चिम, आराहिजे  
 अंग पुढ धारंत मणोरम ॥ पञ्चिम दिसि पंखनीय कमल ऊपर सु  
 हजाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रस्के  
 विष्टुर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल  
 सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व साधु उत्तर विज्ञाग सामला वड्या, जि  
 ण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिण ॥ मण वयण काएहिं  
 जपे जे एके जाणै, पंचवन्न तिहां नाण जाण गुण एह पमाणे ॥  
 अनंत चोवीरी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोकारो पद दिसिअ  
 गणेहिं, सब पावप्पणासणो पद जपनेरेहिं ॥ वायव दिसि जाएद  
 मंगलाणं च सवेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं वि  
 सि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लह  
 जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रजाव धरणिंद हुइ  
 पायालह सामी, समलीकुपर उपन्न जित्त सुर लोयह गामी ॥  
 संबल कंबल बे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव अयो  
 नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंठिय करे जोगी लियो मसा  
 ण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ ठीके वैठ  
 चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह  
 नामी ॥ वाठरू आचारंत बाल जल नदी प्रवाहे, वीध्यों कंठही  
 उयर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सवे सरे इरत परत  
 विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौ  
 धाम संकट टले राजा वसि होवे, तिठंकर सो होइ लाख गुण वि  
 धिसुं जोवे ॥ साइण डाइण जूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि  
 व्याधि अहतणी पीरते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सवे  
 नासै एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय जाण करंत ॥  
 ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण  
 ठनमठ एह गुण पार न जाणुं ॥ जिम सत्तुंजय तिठराज महिम  
 उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिठंकर  
 गणहर पणिध चवदह पूरब सार, इण गुण अंत न को कहे गुण  
 गिरुठ नवकार ॥ १२ ॥ अरु संपय नव पय सहित इणसठ लह  
 अरकर, गुरु अरकर सत्तैव इह जाणो परमरकर ॥ गुरु जिण वट्टह  
 सूरि जणे सिव सुखह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु डुक्क  
 निवारण ॥ जल अल महियल वनगहण समरण हुवै इक चित्त, पंच

परमेष्टि मंत्रह तणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि  
महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मंत्र संपूर्ण ॥

॥ अथ शक्ति जिन स्तोत्र ॥

॥ तिजय पदुत्त पयासं । अथ महापामिहेर जुत्ताणं ॥ सम  
य खित्त विवाणं । सरेमि चक्कं जिणं दाणं ॥ १ ॥ पणवीसाय अस्सिआ ।  
पनरस पन्नास जिनवर समूहो ॥ नासेत्त सयल डुरियं । ज्ञविवाणं  
ज्जत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणवाला विय । तीसा पन्नत्तरी जिणवरिं  
दा ॥ गद्धजूअ रस्क साइणि । घोरुवसगं पणासेइ ॥ ३ ॥ सत्तरि पण  
तीसा विय । सबी पंचेव जिण गणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरकरि  
। चौरारि महाज्जयं हरत्त ॥ ४ ॥ पण पन्नाय दसेवय । पन्नवी तहय  
चेव चालीसा ॥ रस्कंतु मे शरीरं । देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५  
॥ ॐ हरहुंहुः सरसूंस । हरहुंहुः तहय चेव सरसूंसः ॥ आलिहिय  
नाम गर्भं । चक्कं किर सव्वत्तं ज्जइ ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती । व  
ज्जासंखला तहय वज्जअंकुत्तिआ ॥ चक्केसरि नरदत्ता । कालि महाका  
लि तहय गौरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाज्जवाला । माणविषरुद्ध तहय  
अद्युत्ता ॥ भाणत्ति महमाणसिआ । विज्जा देवीत्त रस्कंतु ॥ ८ ॥ पंचदस  
कम्मजूमिसु । उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ॥ विविद्ध रयणाणवत्तो ।  
वसोद्धिअं हरत्त डुरिआइं ॥ ९ ॥ चत्ततीस अइसय जुत्ता । अथ  
महापामिहेर कयसोद्धा ॥ तिज्जयर गयमोद्धा । जाए अथा पयत्तेण  
॥ १० ॥ ॐ वर कणय संख दिट्ठुम । मरगय घण रुत्तिइं विगय  
मोद्धं ॥ सत्तरि सयं जिणाणं । सव्वामर पृश्यं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥  
ॐ भ्रुवणवइ वाणमंतर । जोइत्तवासी विमाणवासीअ ॥ जे केवि  
५६ देवा । ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं  
। फल हेलिदिक्कणखादिअंपीयं ॥ एगंतरगद्धमुग्गय । साइणि ज्ञयं  
पणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरि सयं जंतं । सम्मं मंतं डुवार पणि

लिहियं ॥ डुरिआरि विजयतंतं । निघ्नंतं निचमच्चेह ॥ १४ ॥  
॥ इति शतति जिन स्तोत्रं ॥

॥ अथ नवग्रह गर्भित पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ दोसावहार दस्को, नालियायरवियासिगोपसरो ॥ रयणत्तय  
स्स जणत्तं, पासजिणो जयत्त जय चक्कु ॥ १ ॥ कय कुवल्लय प  
म्बोहो, हरणं किय विग्गहो कला निलत्त ॥ विहियारविंद मह  
णो, दीयरत्तं जयत्त पासजिणो ॥ २ ॥ कंतीइ निज्जिणंतो, सि  
दूरं पुहवि नंदणो कूरो ॥ जय जंतुअमअवक्को, सुमंगलो जयत्त  
पहुपासो ॥ ३ ॥ उप्पलं दल नीलरुइ, हरिमंरुल संघुत्तं इलानंदो  
॥ रयणियरदारत्तंमह, बुहोपसीइज्ज पासजिणो ॥ ४ ॥ नाहियवाय  
वियट्ठो, नायत्तो नागरायकय पूत्त ॥ सिरि पासनाह देवो, देवाय  
रित्तं सुहं दिसत्त ॥ ५ ॥ राया वट्टं समुज्जलं, तणुप्पहा मंरुलो म  
हात्तूइ ॥ असुरेहिं नमिज्जंतो, पासजिणंदो कवी जयत्त ॥ ६ ॥  
तिमिरासि समारूढो, संतो डुखावहो जयंम्मि थिरो ॥ बहुलतमा  
सरिस सिरी, जय चक्कु सुत्तं जयत्त पासो ॥ ७ ॥ कवलीकय दो  
सायर, मायंरुहं अहो तणु विमुक्कं ॥ लोआ न्तरणी ज्ञयं, पास  
जिणं सत्तमं सरह ॥ ८ ॥ डुरिआइं पासनाहो, सिंहावमालीनहो  
ज्वणकेत्त ॥ दूरंतम रासीत्तं, सत्तम ठाण वित्तं हरत्त ॥ ९ ॥ इअ  
नवग्रह थुइ गघ्नं, जिणपहसूरीहिं गुंफियं थवणं ॥ तुह पास पढइ  
जोत्तं, असुहावि गहा न पीरंति ॥ १० ॥ इति नवग्रह गर्भित  
पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन गर्भित नवग्रह शांति स्तोत्रम् ॥

॥ जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सहुरुत्नाषितं ॥ गृहशांतिं प्र  
वक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंदाः खेचराज्ञेयाः, पूज  
नीया विधिक्रमात् ॥ पुष्पैर्विलेपनैर्धूपैः, नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥

पद्मप्रज्ञस्य मार्त्तम, श्रृङ्खंश्रृङ्खप्रज्ञस्य च ॥ वासुपूज्यं जूमिपूत्रां, बु  
 धोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्माराः, शांतिःकुंशुर्नमिस्त  
 था ॥ वर्द्धमानो जिनेज्ञाणां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ रूपज्ञां  
 जितसुपार्था, श्राजिनंदनशीतलौ ॥ सुमतिः संज्ञवः स्वामी, श्रेयांस  
 श्र वृद्धस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्वरः ॥  
 नेमिनाथे जवेद्वाहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्थवयोः ॥ ६ ॥ जनोंल्लग्रे च  
 राशौ च, पीरुयंति यदा ग्रहाः ॥ तदा संपूजयेद्दीमान्, खेचरैः सं  
 हितान् जिनान् ॥ ७ ॥ पुष्पं गंधादिजिर्घ्रूपैः, फलनैवद्यसंयुतैः ॥ व  
 र्णसदृशदानैश्च, वासोजिर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ आदित्यसोममंगल,  
 बुधगुरुशुक्राः शनैश्वरो राहुः ॥ केतुप्रमुखाः खेटाः, जिनपतिपुरतोव  
 तिष्टंतु ॥ ९ ॥ जिननामरुतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्णकैः ॥ स्तुताश्च पू  
 जिता जक्त्या, ग्रहाः संतु सुखावदाः ॥ १० ॥ जिनानामग्रतः  
 स्थित्वा, ग्रहाणां सुखदेतवे ॥ नमस्कारशतं जक्त्या, जपेदष्टोत्तरं  
 शतम् ॥ ११ ॥ जद्वाहुहवाचेदं, पंचमः श्रुतकेवली ॥ विद्याप्रज्ञाव  
 तः पूर्वाद्, ग्रहशांतिविधिर्मतः ॥ १२ ॥ इति चतुर्विंशतिजिनग  
 ध्रित नवग्रहशांति स्तोत्रम् ॥

॥ सूर्यग्रह क्रूर होय तो १ पद्मप्रज्ञकी माला फेरणी.  
 चंड । २ चंदाप्रज्ञकी ॥ मंगल । ३ श्रीवासुपूज्यजी ॥ बुध । ४ श्री  
 विमलनाथजी, अनंतनाथजी, श्रीधर्मनाथजी, श्रीभरनाथजी, श्री  
 शांतिनाथजी, श्रीकुंशुनाथजी, श्रीनमीनाथजी, श्रीमहावीरस्वामी  
 ॥ वृद्धस्पति । ५ श्रीरूपज्ञदेवजी, श्रीश्रजितनाथजी, श्रीसुपार्थ  
 नाथजी, श्रीश्रजिनंदनजी, श्रीशीतलनाथजी, श्रीसुमतिनाथजी,  
 श्रीसंज्ञवनाथजी, श्रीश्रेयांसजी ॥ शुक्र । ६ सुविधिनाथजी ॥  
 शनीश्वर । ७ श्रीमुनिसुव्रतजी ॥ राहु । ८ नेमनाथजी ॥ केतु  
 । ९ मल्लिनाथजी, पार्थनाथजी ॥ रंग मुजव दान गुरुमुपात्रज्ञ

क्ति करणी माला पूर्वोक्त फेरणी पूजा जिनेश्वरकी द्रव्ये उं  
जावे करणी ॥

॥ अथ कल्याणमंदिर स्तोत्रं ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यन्नेदि, ज्जीताज्जयप्रदमनिंदितमंहि  
पद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमज्जिनम्य जिने  
श्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत  
मतिर्न विज्जुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कम्मठस्सयधूमकेतो, स्तस्या  
हमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥३॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव  
वर्णयितुं स्वरूप, मस्माद्दशाः कथनधीश ज्वंत्यधीशाः ॥ घृष्टोपि  
कौशिकशिशुर्यदिवा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः ॥  
३ ॥ मोहक्यादनुज्वन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न  
तव क्षमेत ॥ कल्पान्तवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेतकेन ज  
लधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अज्युद्यतोस्मि तव नाथ जनाशयोऽपि,  
कर्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजवाहुयुगं  
वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिना  
मपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं ज्वति तेषु ममावकाशः ॥  
जातातदेवमसमीहितकारितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणो  
ऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचित्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते, नामापि पाति  
ज्वतो ज्वतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाधे, प्रीणाति  
पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ दृष्टिर्नि त्वयि विज्जो शिथि  
लीज्वंति, जंतोः क्षणेन निविमा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो जुजंगमे  
मया इव मध्यजाग, मज्यागते वनशिखंदिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मु  
च्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेऽ, रौडैरुपश्वशतैस्त्वयिवीक्षितेपि  
॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपला  
यमानैः ॥९॥ त्वं तारकोजिन कथं ज्विनां त एव, त्वामुद्दहंति ह

दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेपनून, मंतर्गतस्य म  
 रुतः स किलानुज्ञावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रचृतयोऽपि हतप्रज्ञाव  
 वाः, सोऽपि त्वयारतिपतिः कृपितः कृणेन ॥ विध्यापिता हुतच्युजः  
 पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्ज्ञेवाक्येन ॥ ११ ॥ स्वामि  
 न्नतुल्यगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथकहो हृदये दधानाः  
 ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाषवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा  
 प्रज्ञावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता  
 स्तदा वत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोपत्यमुत्र यदि वा शिशिरा  
 पिलोके, नीलझुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां यो  
 गिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेपयंतिहृदयांनुजकोशदेशे ॥  
 पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्य संज्ञवि पदं ननु कर्णिकायाः  
 ॥ १४ ॥ ध्यानाङ्गिनेश जवतो जविनः कृणेन, देहं विहाय परमा  
 त्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलाडुपलज्ञावमपास्य लोके, चामीकरत्व  
 मन्निरादिव धातुज्ञेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिन यस्य विज्ञाव्यसे  
 त्वं, ज्ञेयैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यवि  
 वर्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुज्ञावाः ॥ १६ ॥ आत्मा म  
 नीपन्निरयं त्वदज्ञेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेऽ जवतीह जवत्प्रज्ञावः ॥  
 पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, किं नाम नो विपविकारमपाकरो  
 ति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विज्ञो हरिहरा  
 दिविद्या प्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिन्निरीश सितोपि शंखो, नो गृ  
 ह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ घर्मोपदेशतमये सविद्यानुज्ञा  
 वा, दास्तां जनो जवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अच्युजते दिनपतौ  
 स महोरुहोपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥  
 चित्रं विज्ञो कथमवाङ्मुखवृतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृ  
 ष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदवा मुनीश, गच्छंति नूनमथाव हि



बंधनानि ॥ १० ॥ स्थाने गज्जीरहृदयोदधिसंज्ञवायाः, पीयूषतां  
 तव गिरः समुदीरयन्ति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंगन्नाजो, ज्ञव्या  
 ब्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ ११ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्यसमु  
 त्पतंतो, मन्ये वदन्ति शुचयः सुरचामरौघाः ॥ येऽस्मै नतिं विदधते  
 मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धजावाः ॥ १२ ॥ श्यामं  
 गज्जीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह ज्ञव्यशिखंमिनस्त्वाम्  
 ॥ आलोकयन्ति रजसेन नदंतमुच्चै, श्रामीकराङ्गिरसीव नवांबुवा  
 हम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितियुतिमंरुलेन, लुप्तदृष्टविरगो  
 कतरुवन्नूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां  
 ब्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ ज्ञोक्तोः प्रमादवधूय ज्ञजध्वमे  
 न, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगत्र  
 याय, मन्ये नदन्नज्ञिनःसुरकुंडुज्जिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु ज्ञ  
 वता ज्ञवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताक  
 लापकलितोच्चुसितातपत्र, व्याजान्निधा धृततनुर्ध्रुवमच्युपेतः ॥  
 ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिहितेन, कांतिप्रतापयशसामिव सं  
 चयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालश्रयेण ज्ञगवन्नज्ञि  
 न्नोविज्ञासि ॥ २७ ॥ दिव्यसृजोजिन नमलिदशाधिपाना, मुत्सृज्य  
 रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयन्ति ज्ञवतो यदि वा परत्र,  
 स्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विप  
 राह्मुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थिव  
 निपस्य सतस्तवैव, चित्रं विज्ञो यदसि कर्मविपाकगून्यः ॥ २९ ॥  
 विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाक्करप्रकृतिरप्यक्षिपिस्त्व  
 मीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति वि  
 श्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्ज्ञारसंज्ञृतनज्ञासि रजांसि रोषा, दुग्धा  
 पितानि कमठेन शठेन यानि ॥ वायापि तैस्तव न नाथ हताह

ताशो, यस्तस्त्वमीजिरयमेव परं डुरात्मा ॥ ३१ ॥ यज्ञैर्जुर्जित  
 घनौघमदन्नजीमं, ब्रह्मन्मिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्त  
 मथ दुस्तरवारि दध्ने, ते नैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥  
 ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंरु, प्रालंबनृन्नयदवक्रविनिर्यदग्निः ॥  
 प्रेतव्रजः प्रतिज्वंतमपीरितोयः, सोऽस्याऽजवत्प्रतिज्वं जवदुःखहे  
 तुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएव जुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति वि  
 धिवद्विभुतान्यकृत्याः ॥ जक्तयोद्धसत्पुलकपद्मलदेहदेशाः, पादह  
 यं तव विज्ञो जुवि जन्मजाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारजववारिनि  
 धौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु  
 तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्भिर्गहरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥  
 जन्मांतरेपि तव पादशुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदह  
 स ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराजवानां, जातो निकेतनमहं मथि  
 ताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं वि  
 ज्ञो सकृददि प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामन  
 र्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महि  
 तोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतति मया विधृतोऽसि जक्तया ॥  
 जातोऽस्मि तेन जनवांधवदुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न  
 ज्ञावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारु  
 ण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥ जक्तया नते मयि महेश द्यां विधाय,  
 दुःखाकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं श  
 रण्य, मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्र  
 णिधानबंध्यो, वध्योऽस्मि चेज्जुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥  
 देवैर्बन्ध विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विज्ञो जुवनाधिनाथं  
 ॥ त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनीहि, सीदंतमद्य जयदव्यसनांशु  
 राशः ॥ ४१ ॥ यद्यस्तिनाथ जवदंहिसरोरुहाणां, जक्तेः फलं कि

मपि संततिसंचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्यं ज्ञूयाः,  
 स्वामी त्वमेव ज्ञुवनेऽत्र जवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहिताधयो  
 विधिवज्जिनेऽ, सांज्ञोत्ससत्पुलककंचुकितांगजागाः ॥ त्वद्विंबनिर्मल  
 मुखांबुजवद्दलद्वया, ये संस्तवं तव विज्ञो रचयन्ति ज्ञव्याः ॥ ४३ ॥  
 जननयन कुमुदचंद, प्रज्ञास्वराः स्वर्गसंपदो ज्ञुक्त्वा ॥ ते विग  
 लितमलनिचया, अचिरान्मोहं प्रपद्यन्ते ॥ ४४ ॥ इति श्रीक  
 ल्याणमंदिरस्तोत्रं ॥

॥ अथ रुषिमंडल स्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ आद्यंताकरसंलक्ष्यं, मकरं व्याप्य यत् स्थितं ॥ अग्निज्वा  
 लासमं नाद, विंदुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं, म  
 नोमलविसोधकं ॥ देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥ २ ॥  
 अर्हमित्यकरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, स  
 र्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोर्हद्भ्य इशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्यो न  
 मोनमः ॥ ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः, जपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः  
 सर्वसाधूभ्यः ॥ ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ नमः त्वदृष्टिभ्यः । चा  
 रित्रेभ्यो नमोनमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत, दर्हदाद्यष्टकं शुभ्रं ॥  
 स्थानेष्वष्टसु विल्लस्तं, पृथग् बीजसमन्वितं ॥ ६ ॥ आद्यं पदं शिखां  
 रक्ते, त्परं रक्तेत्तु मस्तकं ॥ तृतीयं रक्तेत्रेदे, तुर्थं रक्तेच्च नासिकां  
 ॥ ७ ॥ पंचमं तु मुखं रक्तेत्, षष्ठं रक्तेच्च घंटिकां ॥ नाभ्यंतं सप्त  
 मं रक्ते, इकेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांतः, सरेफाद्यव्य  
 पंचषान् ॥ सप्ताष्टदशसर्थीकान्, श्रितोविंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥  
 पूज्यनामाकरा आद्याः, पंचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेभ्यो नमो मध्ये  
 ॥ ह्रीं सांतदसमलंकृतः ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं हूः हं हें हैं ह्रौं  
 ह्रः असिआजसा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः । जंबुवृक्षधरो दीपः,  
 कारोदधिसमावृतः ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्टः, काष्ठाधिष्टैरलंकृतः ॥ ११ ॥

तन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तारं, स्तारा-  
 मंजलमंजितः ॥ १२ ॥ तस्योपरि सकारांतं, वीजं मध्यास्य सर्वगं ॥  
 नमामि विंशतिर्द्वयं, ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं  
 शांतं, बहुलं जाड्यतोऽज्ञितं ॥ निरीहं निरहंकारं, सारं सारतर-  
 घनं ॥ १४ ॥ अनुक्तं शुभ्रं स्फीतं, सात्त्विकं राजसंमतं ॥ तामसं-  
 चिरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीतमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं  
 निरसं परं ॥ परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च,  
 त्रिवर्णं तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥  
 संकलं निष्कलं तुष्टं, निर्धृतं प्रातिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं  
 वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥  
 ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्द्धदारुण्यस्तु-  
 वर्णातः, सरेफो विंडुमंजितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-  
 मालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् वीजे स्थिताः सर्वे, वृषज्ञायां जिनो-  
 त्तमाः ॥ वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥  
 नादश्रंङ्गसमाकारो, विंडुतीक्ष्णसमप्रज्ञः ॥ कलारुणसमासांतः, स्वर्णाग्निः  
 सर्वतो मुखः ॥ २२ ॥ शिरसंलीनईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥  
 वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंजलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रज्ञपुष्पदंतौ,  
 नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ विंडुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ  
 ॥ २४ ॥ पद्मप्रज्ञवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ सिरिई स्थिति-  
 संलीनौ, पार्श्वमद्भोजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्व, हर-  
 स्थाने नियोजिताः ॥ मायावीजाक्षरं प्राप्ता, श्रुतुर्विंशतिरर्द्धतां ॥ २६ ॥  
 गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवाजिताः ॥ सर्वदा सर्वकालेऽपि, ते ज्ञवंतु  
 जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यज्ञकं, तस्य चक्रस्य या विज्ञा ॥  
 तयाञ्चादितसर्वाङ्ग, मामांद्दिनस्तम्बाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य य०  
 मामांद्दिनस्तुराकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० मामांद्दिनस्तुलाकिनी ॥ ३० ॥

देव० मामांहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांहिनस्तु-  
 शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव०  
 मामांहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांहिसंतुपद्मगा ॥ ३५ ॥  
 देवदे० मामांहिनस्तुहस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांहिसंतुराक्षसा  
 ॥ ३७ ॥ देवदे० मामांहिसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांहिसं-  
 तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांहिसंतुडुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे०  
 मामांहिसंतुनूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुञ्जा, तस्या या  
 न्नुविलब्धयः ॥ तान्निरञ्चुयतज्योति, रहं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥  
 पातालवासिनो देवा, देवान्मूपीठवासिनः ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे  
 रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥  
 ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूत-  
 वेत्तालाः, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेऽप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रजा-  
 वतः ॥ ४५ ॥ नैह्री श्रीश्र धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंकी सरस्वती,  
 जयांवाविजया नित्या, क्लिन्नाजितामदङ्वा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-  
 बाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौडी, कला  
 काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तते या जग-  
 त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कार्तिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो  
 गोप्यः सुदुः प्राप्यः, श्रीरुषिमंरुलस्तव ॥ ज्ञापितस्तीर्थ, जगत्-  
 त्राणकृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वन्हौ, जले दुर्गे गजे हरौ  
 ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यत्र-  
 ष्टा निजं राज्यं, पदत्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीत्रष्टा निजां लक्ष्मीं,  
 प्राप्नुवंति न संशयः ॥ ५१ ॥ ज्ञार्यार्थी लज्जते ज्ञार्यी, पुत्रार्थी लज्जते  
 सुतं ॥ वित्तार्थी लज्जते वित्तं, नरःस्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णो  
 रूपे पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः,  
 गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ नूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गजके मुग्धि वा

जुञ्जं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वज्ञीतिविनाशकं ॥५४॥ जूतैः प्रे  
 तैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुञ्जैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्धै, मुच्यते नात्र  
 संशयः ॥ ५५ ॥ जूर्जुवः स्वस्त्रयीपीठः, वर्तिनः शाश्वता जिनाः ॥  
 तैःस्तुतैर्वदितैर्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्यं महा  
 स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिश्रपाल्ववासिनेदत्ते, बालहत्या  
 पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावर्ती ॥  
 अष्टसादस्त्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं  
 प्रातः, र्ये पठन्ति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो वेदे, प्रज्वन्ति न चापदः ॥  
 ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे  
 नन्महातेजो, जिनविंशं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्दते विवे,  
 ज्ञवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनन्दितः ॥  
 ६१ ॥ विश्ववंद्यो ज्ञवेध्याता, कड्याणानि च सोश्रुते ॥ गत्वां  
 स्थानं परं सोपि, ज्ञूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा  
 स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाङ्गापात्, लज्जते पदमु-  
 त्तमं ॥ ६३ ॥ इति ऋषि मन्त्रल स्तोत्रं ॥ क्लेषकश्चोकनिराकृत्य  
 मूलयंत्रकड्यानुसारेण लिखितं गणि । श्लोकमाकड्याणोपाध्यायै  
 तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्त्रे तस्यैव ना  
 मानि । मौक्तिसौक्तान्निलापया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुः । निर्वि  
 कल्पो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्तमो निरंजनः ॥  
 २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः ॥ निर्जयो निरहं  
 कारो । निर्विकारोश्च निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजः शांतः । नि-  
 ज्ञयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मा निष्कलप्र-  
 च्युः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशब्द

प्रतिमश्लेष, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो  
 नैष्ठकः शब्दवर्जितः ॥ अनिद्यो महपूतात्मा । जगत् शिखरशेखरः ॥ ६  
 निःशब्दो गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोपि योगात् शुभ  
 प्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्ध । अर्चितः  
 ह्यो विष्णुः ॥ अमुर्त्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः ॥ ८  
 अनिद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो ऋवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथः  
 बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान  
 लोचनः ॥ अठेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्यविवर्जितः ॥ १० ॥  
 अजेयसर्वतो ऋडः । निष्कषायो ऋवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ।  
 वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहजानंद । अवाङ्मानस  
 गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंत  
 विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्मवर्जितो महात्मानः  
 लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्यावायो वरः शंभुः । विश्ववेद  
 पितामहः ॥ सर्वभूतहितो देव । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनंद  
 दरूपचैतन्यो । ऋगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्य  
 क्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥  
 गौरवादित्रयाहूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अत्रयः प्राप्तकैव  
 ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र  
 दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ स  
 वैशः सतसुखावासः । जिनेडो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरम  
 ज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोजगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्य  
 कारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौडः । सर्वज्ञो मदनान्तकः ॥ ईश्वरो  
 भुवनाधीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं ।  
 विसुक्तो मुक्तिवद्धनः ॥ योगीडो नादिसंसिद्धः । निरोहो ज्ञानगोच  
 रः ॥ २१ ॥ सदाशिवां चतुर्वक्रः । सत्सौख्यस्त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्रः

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोष्टमूर्त्तिकः ॥ ११ ॥ सर्वतापुत्रनैर्बन्धः ।  
 सर्वपापनिवार्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वज्ञूतदितंकरः ॥ १३ ॥  
 स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः । पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानन्द ।  
 चैतन्यश्चैत्यवैज्जवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देवः । मुक्तिस्थो मह  
 तांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महा  
 देवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाज्ञावो महादर्शः । म  
 हामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा  
 रमकः ॥ महर्दिको महावीर्यो । महान्तिरुपदस्थितः ॥ २७ ॥ महा  
 पूज्यो महाबन्धो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंसो ।  
 महामहिमं अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसं बोधः । एकानेकवि  
 निश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥ २९ ॥ महासूरो  
 महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाह  
 यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारो मारनिहंतो । निष्कामो विषयाच्यु  
 तः ॥ जगवंतामहाभ्रांतो । शान्तिकल्याणकारकः ॥ ३१ ॥ परमात्मा  
 परंज्योतिः । परमेष्ठी परमेश्वरः ॥ परमात्मा परानन्द । परंपरमश्रा  
 त्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ ना  
 कृतिं नाक्षरो वर्णा । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्त  
 जसंबोधः । संसारवेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्मजित्  
 धर्मनायकः ॥ ३४ ॥ बोधसत्सु जगद्वन्धो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥  
 स्वयंभूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विज्जवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो  
 महातातः । रूपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपर्णो । देवदेवेश  
 नायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो जवविध्वंसी । योगिनी ज्ञानगोचरः ॥  
 जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् जव्यसं  
 बन्धः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्र  
 काशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्जो जगत्स्वामी । इन्द्र्यन्धः सुरर्चितः ॥ नि



षप्रपंचो निरातङ्गो ॥ निःशेषकेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक  
संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र  
शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुनः ॥  
ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यन्ते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीज  
ङ्घाहुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्णं ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥महिम्नः पारन्ते परमविदुषस्ते जिनपरं । गणागीर्वाणानाम  
पि गुणगुरौर्गंतुमनलम् ॥ नलम्भं लम्भं त्वाधिपमिहनयैस्सर्वकलनं  
। नुवन्निः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वागमृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रातः स्तोतुं  
किल निरवकाशोप्यहमिहो । द्यतप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनघोश्चावच  
वचः । गृणीयां सह्यं तत्तनुञ्चुव इवेष्टार्थप्रतिज्ञूपदोपास्ते पार्श्वान्न  
यजनयित्र्याशिवमम ॥ २ ॥ त्वकांशामासूनोधुतनिघनमूनोयवसु  
ना । सुनामन्नोडुनो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोज्ञानो च्चु  
वनन्नवने नो वृषन्नरं । व्यथांमोहादेनोरयमथनतेनोत्कटविपत् ॥ ३ ॥  
सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । जगन्नय्यारामेमरकुरुहवामे  
यजिनपाः ॥ हतोयाह्यग्रामे शितरसमकामेषुविजयी । त्वमर्काली  
ज्ञामे डुरमदजधामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चित्तरमपारे  
ञ्चुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ ध्रुतारेकेतारे  
क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे द्विद्वारे न्नवदहनवारे कुरुकृपां  
॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्सारान  
हिमिधुनमाराव्ययविज्ञो ॥ ज्वलञ्चस्योदारान्विषधरकुमाराधिपतिता  
। मनुक्रोशागारावतुजिनमहाराजसन्नवान् ॥ ६ ॥ दिशश्रीमान्दे  
वन्नजविहितसेवः कुशलता, लताजातेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥  
तन्नालाज्ञोमेवः परिकरिहरेवत्सलसदा, सदानंदकेवल्यचलपदमेवस्तु  
तिरुते ॥ ७ ॥ कजन्माहंकायंकिरवगणहंकीर्तिधवलं, कुबेरेज्यं

कूडाव्रततिपरशुकेतकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकेलरवंकौशलकरं  
 ददानंकेकहोपमसुरमरालंनुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगार्त्रं  
 ज्वकुशकदात्रंसुहृदयै रहोरात्रंघ्रात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रज्ञो पवित्रं  
 सच्चित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंयैर्मित्रंस्तुतपुरुपवित्रंसरणकम्  
 ॥ ९ ॥ वदान्यस्वच्छन्दंद्दृगुदकज्वैः पीतममलै रिहावन्यांधन्याः स  
 फलजनुपस्तेखलुमत्ताः इमेवन्याः सत्वाइवतुसदसव्यक्तिविकला ज्ञ  
 चारण्येदन्तकथमपिज्वंत्वंनददसुः ॥ १० ॥ नजानेहंनेतः कुमततिमर  
 प्रावृतदृशां गतिर्मूर्तिदृक्षाणादरहरज्वित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य  
 जिमतफलोत्सर्जनपरां त्वदाख्यांनोचिंतामणिमिवज्जन्तेस्तविधयः  
 ॥ ११ ॥ त्वमेवेशेदानींमयिवितनुतात्कामपिरुपां जवास्ताघोदत्व  
 त्तलनिपतितं प्रोद्धरतराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर  
 णः शरण्योसिश्रेयान्प्रज्जुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयत्वंधीरस्वा  
 धरितकनकाहार्यमहिमा हिमालीप्रान्त्याब्धि प्रतिजटगज्जीरत्ववि  
 दितः दितःप्रत्यूहालिः शुज्जमत जगत्यावनजिना जिनाशीनश्रीरः  
 कुमतिवसुधासीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविज्जदोधिंपरमपुरुषः सिद्धिन  
 गरीं गरीयः साम्नःज्यंगणधरमहामात्रमहितः हितः कर्तृकर्मण्येकरि  
 पुवलंघ्नज्जयमहा माहतीर्थेशश्रीजरमतुलमाप्तः पृथुमहाः ॥ १४ ॥  
 महाराज स्तुत्योडुरिततरुसिन्दुरतिलको लकोनः पालाकः सकलज्ज  
 विनांमोहशमनः मनस्यश्रान्तं भेवरसरसिकादभ्यइवसन् वसज्जी  
 यात्पार्श्वप्रज्जुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीज्ञोलोकोत्तरपदं  
 सुपेतःसकलवि । ह्यवित्रंदोपालोयवसलवनेप्राप्तविज्जवः ज्वध्वस्त्यै  
 नस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोत्रिश्वख्यातैरनिशमवदातैर्गुण  
 गणैः ॥ १६ ॥ पद्यचतुष्कंसिंहावलोकबंधुरम् ॥ ज्वन्तंसद्योग प्रधि  
 तपदवीचारिनिवहा अजस्त्रंविश्रामंप्रलिदधतिविश्वेश्वरसमे इदंस्थाने  
 यन्तिप्रसृमरसितोस्त्रंखलुखगाः कलावन्तंकिंनश्रुतमतसदाचारनि

रताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोषान्तकनुरुप्रकाशोधतमसं हरद्वौकंकुर्व  
 न्नमलकमलोद्भासमयकम् प्रबोधं व्यातन्वनिततः करतः पंकदलनो ज  
 गच्चक्रुः पार्श्वोदिशतुकुशलमेसमयज्ञः ॥ १८ ॥ नितान्तं सन्तापं स  
 मतनुमतां व्यन्नमृतगुः कलाग्निः संपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो  
 षेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरइहा वताहामापुत्रः सपदिविपदस्तार  
 कपतिः १ए स्फुरंत्यासिं डुरं निजतनुरुवाचारुप्रकृति महीजन्मातहा  
 त्ययप्रभृतिदुःखाग्निजलदः बुधोबोधस्फीतिंदददविरतं राजतनयो च  
 यातीतो लोके तनुजवनमाप्नोति बलवान् ॥ २० ॥ घरादित्येशानः शु  
 ज्ञरुविज्ञो गौरकरणः सदापायाद्यैमासुरगुरुरपायाज्जिनपतिः स्थिरः  
 स्फारश्लोकस्तुतिसमुच्चितो ज्ञानुतनय स्तमो विघ्नध्वंसी नकुशलकरः  
 केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठो न्येज्यस्त्रिदसविसरेज्यो वरतया सि  
 लोकेशो नूनं त्रिजगदवनात्वं कमलज्ञः सुयोगीन्स्वान्तामलकमलज  
 न्माधिवसना चतुर्वक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्यास्युपदिशन् ॥ २२ ॥  
 प्रतीतोदैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्परार्धश्रीयोगात्कमलनेलपेसो  
 सिन्नगवन् ननाकश्चिश्वातिशयन्नरवित्तस्त्रिज्जुवने ज्ञवाहृहो गीतः  
 परमपुरुषो तोहरिहयैः ॥ २३ ॥ महेशानो सित्वं त्रिज्जुवनजनैकाधि  
 पतया शिवः शश्वन् नृणां परमपददानैकसुविधेः असित्वं सर्वज्ञः सकल  
 जगदर्थौघकलना न्नशूलीनोचोश्रेणचपशुपतिर्नो विषमदृक् ॥ २४ ॥  
 अवाप्तः श्रेयः श्रीप्रवितरणललाविदलिता दितेया अहोलीरुहमहि  
 मत्तारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसन्नः कृतकुमतज्जः सुमनसां हिताया  
 शेपाणां सुकृतपदवीत्वं ककथयन् ॥ २५ ॥ जिनेंशहोरात्रं बहु विपदम  
 त्रं धृतमरं कलत्रं येनात्र कसहरिहरादिः सुरगणः सकर्षांनाकसर्पामित  
 चरितताधूर्त्तनिवहं प्रतारीसदोषः मित्तसततरोषः स्थितिहतः ॥ २६ ॥  
 समग्रामग्रामप्रजवज्जयदो बोधरहितः सरुज्जव्यधेवी पुरुडुरितकृत्मा  
 नकलितः पुरामोहान्नुतश्चिरमिहसज्ञहीनमहितः तदेवो आद्यत्वं कथ

मपिसमासादिमयकाः ॥ २७ ॥ प्रज्ञोकिंवामेतैरन्निमतविधानैलसतरै  
 रपासोपास्यस्तंखलुजिनवरेण्योनवरतम् मनोविम्भेत्वत्यदनजयुगले  
 सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिंप्रणयकरुणामिष्टसुदृशा ॥ २८ ॥ अदब्रंद  
 चांसिन् इविणन्नरमडीसदृशं विहायेनाप्रतंधरसिकिलरत्नत्रयमहो  
 दधत्सौवर्णानामुपरिनलिनानाक्रमयुगं पुनर्निर्लोचनांधुरिसमतिमद्भि  
 स्त्वमुदितः ॥ २९ ॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्यंसुवरण त्रयी  
 मध्यं मेघोदधिधरणवास्तोप्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल  
 द्दमांशिदधत कुतस्तेनैराग्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ ३० ॥ चलं  
 प्राज्यंराज्यंविदितविज्ञवापास्यलपतोः महानंदानन्तामहदधिपतेनश्व  
 रतरम् कतेनिर्गैथत्वंप्रशमरसवाद्देस्त्यसुमतांमहच्चित्रंचित्तेजनयतित  
 वेदंतुचरितं ॥ ३१ ॥ निकामार्थोत्सृष्ट्या ततवनदवृष्ट्यातिशयितं जगद्वा  
 रिद्वाग्निं स्मकिलजिनविद्यापयसियः त्रिशुद्धयाध्यायन्तस्तवचरणयु  
 ग्मं सुहादया नतर्प्यं स्वेष्टासैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ ३२ ॥ जग  
 त्येकाधारादितनरककारानिलयतः समुद्धर्तुंजंतून्परिवृढसमंतूनपिकि  
 ल तवत्रातर्ज्जन्माजनिजननमुख्याकगणहृत् ऋषेवेशस्तोर्थोपिचनिरु  
 पमानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अहीशस्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना  
 मनाक्यस्येद्रक्तोयदिधदनुगंमद्यसनिंतं नितंभ्विन्यान्वोतः सपदिकुरु  
 तेतंस्वपसमं समाङ्गल्यंवाथप्रज्ञवतिनकः स्वामिकृपया ॥ ३४ ॥ प्र  
 लापायावृद्धास्तवगुणगणाज्ञान्तिविशदा खिलोकीजूजानेसुरैपयमणे  
 ज्ञानवश्व रसज्ञानांकोव्याप्यमलधिपणोनव्यधिपणो नतानीष्टेसख्या  
 तुमदरपरावर्धंतुसरदां ॥ ३५ ॥ नमस्तुच्यंसंसृत्यतनुतटिनीतारणतरे  
 नमस्तुच्यंन्नीमामवसमददन्तावजहरे नमस्तुच्यंसूक्तातिमधुरिमदासी  
 कृतसुधा समुद्रायामुद्भुदवसिततुच्यंजिननमः ॥ ३६ ॥ पादेयाद्  
 मद्दिमालयायसुमनः सन्दोदशुभ्रुपितां ह्रिद्वद्वायकलिच्छिदेजगवते  
 ऋष्यावलीहेतवे लोकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्रायविश्वत्रयी मित्राय

कणदोदयायसततंश्रीपार्श्वतुन्यंनमः ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीमिः  
 ठन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्ररमा न्नरनिर्जिततारकराजगणः कृतव  
 कणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकदारवहे ॥ ३८ ॥ तोटकठन्द ।  
 न्नवदमलपदाम्भोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलिःप्रार्थये  
 हम् वितरविततबोधयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुषरम्यंत्वामचिन्त्य  
 स्वरूपम् ॥ ३९ ॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा  
 दप्रसादसन्नुषंरघुनाथदासम् मांशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्त पद्मावती  
 प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकृद्गुरुनामगर्भैवसंततिलका  
 वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रभुस्तवः ॥ अहार्येषुस्तम्बेरमशशिमितेहायन  
 यरे नन्नोमासकृष्णेगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु  
 नाथाहामुनिना स्तवोवामासूनोरचित्तद्विखितोमोदन्नरतः ॥ १ ॥  
 इतिश्री पार्श्वप्रन्नोमहिम्नस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

## ॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धो विज्ञाश् चक्री नमि विनमि ॥ मुणी पुंरुरीठ मु  
 निंदो । वादी पञ्जुन्न संबो न्नरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो  
 कोमी पंच इविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणगे विम  
 लगिरिमहं तिठमेयं नमामि ॥ १ ॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ सिवां ॥

॥ अथ श्रीथंभणापार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, थंनणपुर ठाम ॥ सुरतरु सम  
 सिरि पास सांम, राजे अन्निरांम ॥ १ ॥ विबुधेसर सिरि अन्नय  
 देव संठवियाणं दिय थुइ जलसिरिय नील वण, फण पल्लव मं  
 मिय ॥ २ ॥ सुर नर सुह कुसुमावलीए, सिवफल दायक जाण ॥  
 आराहत्तं जदि एग मण, पावो पद कळयाण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमाण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला  
कात दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति  
वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥  
पूर्व विदेह विराजता ए, पुंफुरीकनी जाण ॥ प्रभु द्यो दरसन सं  
पदा, कारण पद कळ्याण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरव दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर निच । तीरथ सिख  
र समेतको । चाहूं दरसन चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम वारम प्रभु ।  
बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर ण गिरवरे । शिव पुढता सु  
जगीस ॥ २ ॥ सुणिये णपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वांण ॥  
जविजन जेटो जगतसुं । तीरथ करण कळ्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेसर पदमनाज । समहं सुखकारी ॥ जावी  
जिनवर जरदखित्त । मंण मणिधारी ॥ १ ॥ लांछन वर्ण सुदेह  
मांन । थिति आयु प्रमाण ॥ परमेसर सिरि वर्द्धमांन । जिनराज  
समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जाण ॥  
जावी जिनवर जेटिये । कारण पद कळ्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अयामा वामाद्ये सकलमुज्जयः कालघटना । द्विया चूतं  
रूपं जगदज्जिघेयं जवतिय ॥ चवंतर्मत्रं मे स्मरहरमयं सेंडुममलं  
निराकारं शश्वङ्गप नरपते सिव्यतु सते ॥ १ ॥ अविजलशदधनोघा  
। प्रहालितसकलचूतलकलंकाः ॥ मुनिजिरुयासिचचरणा । सर  
स्वती हरतु मे उरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं  
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेन्द्राणां । साधूनां वंदनेन  
च ॥ न तिष्ठति चिरं पापं । विद्महेस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अथ प्रह्ला  
दितं गात्रं । नेत्रे च सफली कृते । मुक्तोऽहं सर्वपापेभ्यो । जिनेन्द्र  
सर्व दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर  
पूज्या वही, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो,  
सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनेसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥  
॥ २ ॥ जीवना जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा  
नमै परजा नमै, आण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे वागमें,  
वेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंडमा, त्यूं सोजे महाराज ॥ ४ ॥  
जगमें तीरथ दो वना, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि रूपन्न समो  
सरया, उण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो  
सन रही लोन्नाय ॥ ज्यूं महदीके पातमे, लाली लखी न जाय  
॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अज  
हु न वावरे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते सांड पंखियां,  
वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच जरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार  
॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ रुद्रि बुद्धि  
सोहे दीजिये, दिन २ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेशरियानाथके,  
केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लामले, वसे पहाणा बीच ॥ १० ॥  
इस रागको नांम कड्याण हे, प्रजुजीको नांम कड्याण ॥ सकल  
सज्जा कड्याण हे, जब प्रगटी राग कड्याण ॥ ११ ॥ सोरठ राग  
सुहामणी, सुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं ज्यूं रात गलंतमी, त्यूं त्यूं  
सीठी थाय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोनियो, लाखां ऊपर कोना  
भरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोरु ॥ १३ ॥

दया गुणारी बेलमी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव  
मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु बेलमी, सेपी  
आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंमन जई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत  
संत आतम गुण नूप ॥ आचारज उवघ्राय साधु समतारस धाम,  
जिन ज्ञाखित सिद्धांत सुद्ध अनुभव अन्निराम ॥ १ ॥ बोधवीज  
गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद  
अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परभव आणंद लगमांदि प्रसिद्धो, चिंतामणि  
सम जास जोग बहु पुन्ये लक्षे ॥ तिहुअण सार अपार एह महि  
मा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संजारो ॥ ३ ॥ सिद्ध  
चक्र पद सेवतां ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कढ्याणनिधि  
प्रगटे चेतन नूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिर्थोका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक  
जगगुरु मुऊ आशाविशराम ॥ पूरव विदेहे विजय जली पुष्कला  
वई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥  
धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण  
धरे जिहां जिनवर ज्ञाण ॥ धन ते जविजन जे रहे प्रभु ताहरे  
परसंग, वंदनकमल निरखी नित्य माणे उत्तव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु  
मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणो सांजल कान, मित्तवाने उलसे मन मा  
हरुं धरुं एक ध्यान ॥ जगति जुगति करवानी ठे मुऊ सधली  
जोरु, पण प्रभु लग पंहुंचीजे तेह नहि पग दोरु ॥ ३ ॥ आरु  
रुंगर अति घणां विचवहे नदियां पूर, किम मुऊथी अवराये प्रभुंजी  
एटली दूर ॥ आंखरुली जळजे करे जोयवा मुख जिनराज, पां



रुखी पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटमली वहतो  
 कोई न मिले सेंगू साथ, कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ  
 ॥ जाणूं शशहर साथें कहूं संदेशा जेह, पण अलगो अई ऊपरि  
 वामे निकले तेह ॥ ५ ॥ जो कोई रीतें प्रभुजी तुमथी एथ अवाय,  
 तो इण जरतना वासी नविजन पावन थाय ॥ साहिवनी तो सुन  
 जर सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फल प्रति जोय  
 ॥ ६ ॥ अलगो हुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना  
 आवे हियने खिण खिण चित्त ॥ हुं हुं सेवक तुं ठे माहरो आत  
 मराम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां लगी ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ साचे  
 दिलथी मुऊशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रभु करजो मोपरि  
 महिर अठेह ॥ दूसम काल तणो डःख टालो दीन दयाल, पालो  
 विरुद संजालो निज सेवकशुं कृपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग  
 थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर ठतां नवि थाय  
 निराश ॥ केई वसे प्रभु पासें केई वसे ठे दूर, राजमहिरनी रीतें  
 सकलने जाणे हजूर ॥ ९ ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वा  
 मि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजे  
 एक पलक जो थाये प्रभु तुऊ संग, लाज उदयजिन चंड लहे नित  
 प्रेम अन्नंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामि सीमंधरा तुह्य  
 जगते जणुं ॥ जेटवा पायकमल जाव हियने घणो, करिय सुप  
 साय जे वोनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुह्यशुं कूम अरिहंत शुं राखिये,  
 जिस्थो अठे तिस्थो कर जोरि करि जांखिये ॥ अति सबल मुऊ  
 हिये मोह माया घणी, एक मन जगति किम करूं त्रिजवन धणी  
 ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगने, रीश चटको चढे

लोचन वयरी नमे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम  
 अरिदंत तूं हीयमे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियमे  
 अनेरो धरूं, मूढ मन रीऊवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिदंत  
 जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥  
 कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहूं, मन तणी वात अरिदंत कि  
 एने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुंरंक  
 करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं,  
 धर्म न कराय प्रजु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिदंत तूं देव बीजो  
 नहिं, एह आधार जग जाणजो अह्न सही ॥ ६ ॥ धण कणय माय  
 पिय पुत्त परियण सहू, इस्यो बोळयो रम्यो रंग रातो वडू ॥ जयो  
 जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तृह्न समोवरु नहिं अवर वा  
 व्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांजलुं, वारवर  
 परपदामांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय उल्लुं,  
 किम करूं ठाम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ ज्ञोलिना जगति तूं चित्त  
 हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रजु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नामें मन  
 वयण तन उल्लसे, दूरथी दूकना जेम हियमे वसे ॥ ९ ॥ ज्ञल  
 ज्ञलो एणि संसार सदु ए अठे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पठें  
 ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त  
 आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेदशुं  
 नेह जे वात तुह्न जी कहे ॥ तुह्न पय जेटवा अति छणो टलवलुं,  
 पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी  
 आज्ञ कागल करूं, कीरसागर तणां दूध खनिया जंरूं ॥ तुह्न मि  
 लवा तणा सामि संदेशना, इंड पण लखिय न शकें अठे एवमां ॥  
 १२ ॥ आपणे रंग जरि वात मुख जेटली, उपजे सामि न कहाय  
 मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा राजराजेसरा, वाम ने कोरु प्रजु

पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुब्र ज्वि मोह वश नेह हुवे जेहने,  
 समरिये एणि संसार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल जम  
 रो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतनुं  
 ध्यान हियमे वस्युं, वापहुं पाप हिव रहिय करणे कियुं ॥ ठाम  
 जिम गरुनवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके  
 रही ॥ १५ ॥ पाप में कळ सावळ सहु परिहरी, सामि सीमंधरा  
 तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पालशुं, दुःख जं  
 मार संसार जय टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही,  
 एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवनी मारी जगति जाणी  
 करी, आपजो वापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलशा ॥ एम रुद्विवृद्धि,  
 समृद्धि कारण, डुरित वारण, सुख करो ॥ नवजाय वर श्री, जक्ति  
 लाजे, शुण्यो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी  
 सामि, मया घणी ॥ कर जोनि वलि वलि, वीनवुं प्रभु, पूर आ  
 शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्णा ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप  
 जणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद, केवल  
 न्यान दिणंद ॥ त्रिगुणे गहगह्यो ए, ज्वियणने कह्यो ए ॥ २ ॥  
 न्यान वहुं संसार, न्यान सुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए,  
 साचो सदेह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालोक प्र  
 काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे कियुं ए ॥ ४ ॥ अधिक  
 आराधक जाण, जगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया  
 देशतु ए ॥ न्यानी श्वासोच्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही  
 ए, कोरु बरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोड्या

सूत्र मजार ॥ किरिया ठे सही ए, पण पाठे कही ए ॥ ७ ॥  
 किरिया सहित जो न्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरु  
 ए, शंख दूधें जरयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मजार, पांचमि अक्षर  
 सार ॥ जगवंत ज्ञांखीयो ए, गणधर सांखियो ए ॥ ९ ॥

॥ ढाल दूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांजलो, जिम पामो जवपारो रे ॥  
 श्रीअरिदंत डम उपदिशे, जवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥  
 मिगसर माह फागुण जला, जेठ आपाढ बैशाखो रे ॥ इण पट  
 मासें लीजिये, शुजदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जु  
 हारी देहेरे, गीतारथ गुरु चंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति  
 हुवे तो नंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ वे कर जोनी जावशुं, गुरु मुख  
 करो उपवास्तो रे ॥ पांचमि पम्किमणो करो, पढो पंमित गुरु  
 पास्तो रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन  
 आरंज ढालो रे ॥ पांचमि स्तवन सुई कदो, ब्रह्मचरिज पिण पा  
 लो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी  
 रे ॥ पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुज दृष्टि रे ॥ पां० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उलालानी देशी ॥

॥ दिव जवियण रे पांचमी उजमणो सुणो, घर सारु रे  
 चारु धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य  
 जोगे रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन  
 पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास आवी  
 कीजायें काउस्तगरलो ॥ त्रण ज्ञान दरिस्ण चरण टीकी देड  
 पुस्तक पूजिये, आपना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥  
 १ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति वीटांगणां, पांच पूठां रे  
 मखमन्न सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच मोरा रे लेखण पांच

भजीलणा, वासकूपा रे कांची वारू वतरणां ॥ उल्लाखो ॥  
 वतरणां वारू वलीह कमली पांच जिलमिल अति जली, स्थाप  
 नाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती परुपाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच  
 कोथल पंच नवकरवालिंयां, इण परें श्रावक करे पांचम ऊजमणुं  
 उजवालिंयां ॥ १ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजि  
 यें, घर सारू रे दान वली तिहा दीजियें ॥ प्रतिझानी रे आगल  
 ढोवणुं ढोइयें, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लाखो ॥  
 जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश जृंगार ए, आरति मङ्गलधा  
 ल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखरु अंगलू  
 हणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए  
 ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमानियें रात्रि जोगें  
 रे गीत रसाल गवानीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें,  
 ज्ञान दरिसण रे उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लाखो ॥ साधियें मारग  
 एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक मांहे ज्ञान  
 वंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासतां सुख जे  
 लहे, जे करे पांचमी तप अखंमिंत वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥  
 कलश ॥ एम पांचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेतरो ॥ में  
 शुणयो श्री अरिहंत जगवंत, अतुल बल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री  
 जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसिधो ॥ वाचनाचारिज समय  
 सुंदर, जगति जाव, प्रशंसिधो ॥ १५ ॥ इति श्रीपांचमी वृद्धस्त  
 वन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपांचमी स्तवन ॥

॥ पांचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥  
 पहिलुं ज्ञान ने पठें किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥  
 ॥ १ ॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान वखाणुं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २ ॥  
 मति अठावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि ठ असंख्य प्रकार रे ॥  
 दोय जेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥  
 चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेशुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान  
 समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ  
 प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण  
 पामुं, ज्ञाननो पंचमो जेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गोमी पास ॥  
 सेवा सारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोजागी  
 साहिव मेरा वे, अरिहा सुग्धानी पास जिणंदा वे ॥ ए आंकणी ॥  
 सुंदर सूरति मूरति सोदे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें  
 प्रेखतां मानुं, नव नवि ठविय देखाय ॥ २ ॥ सोजा० ॥ अ० ॥  
 जव डुःख जंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी  
 गुण ताहरा माहंगां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥  
 दूरअकी हुं आचो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिने  
 नहिं साहिवा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रज्जु  
 मुखचंद विलोकित हरपित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे  
 रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥  
 कितके हरिहर कितके ब्रह्मा, कितके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें  
 हुं वसे साहिव, शिवसुखनोही ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ मा  
 ॥ वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणा  
 सी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सत  
 शें बात्रीशें, वदि वैशाख वखाण ॥ आठम दिन जले जावशुं,  
 गरी जात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी

विघ्ननिवारी, परउपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद्र जूहारता, मोरी स  
फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फळयो जी, कवण कनक फळ खाव

॥ गयवर बांध्यो वारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल

जिन महारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिळ्या जी, हिय

हींसे केम ॥ वि० ॥ १ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खर

खावा जाय ॥ आदर साहिवनो लही जी, कुण ल्ये रांक मनार

॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न वते कुण काचनें जी, अलवे पसार हाथ

कुण सुरतरुथी ऊठिनें जी, बावल घाले वाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ दे

अवर जो हुं करुं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज ज्ञवे

ज्ञवे जी, तुंदिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण वेदा जगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत

वारें परषदा बैठी जुनी, मागशिर शुदि इग्यारश वनी ॥ १ ॥ म

द्धिनाथना तीन कळ्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अ

दीक्षा लीधी रूवनी ॥ मा० ॥ २ ॥ नमिने ऊपनुं केवलज्ञान

पांच कळ्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवनी ॥ मा

॥ ३ ॥ पांच ज्ञरत ऐरवत इमहीज, पांच कळ्याणिक हुवे ति

हीज, पंचासनी संख्या परगनी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनगत

गणतां एम, दोढशें कळ्याणक आये तेम ॥ कुण तिथ ठे ए तिथि

जेवनी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाज

नंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखनी ॥ मा०

६ ॥ मौनपणें रद्या श्रीमद्धि नाथ, एक दिवस संयम व्रत सा

॥ मौन तणी परि व्रत इम पनी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसे

लीजिये, चोविहार विधिंशुं कीजिये ॥ पण परमाद न कीजे -धनी  
 ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजे उपवास, जावजीव पण अधिक  
 उच्छ्वास ॥ ए तिथि मोहू तणी पावनी ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं  
 कीजे श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काजसग  
 गुरु पाये पनी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीजे वली, पोथी  
 पूजीजे मन रली ॥ मुगतिपुरी कीजे दूकनी ॥ मा० ॥ ११ ॥  
 मौन इग्यारस महोदुं पर्व, आराध्यां सुख लहिये सर्व ॥ व्रत पञ्च  
 रक्षाण करो आखनी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याशा समे,  
 क.धुं स्तवन सहू मन गप्ते ॥ समयसुंदर कहे करो दाहनी ॥ मा०  
 ॥ १३ ॥ इति श्रांकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गां त्रिभुवनके स्वामी  
 ॥ संतहि संत जपे सब कोइ, जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥  
 सांत जपीने कीजे कांमा, सोइ कांम हुवै अन्निरामा ॥ शांति ज  
 पी परदेश सिखावै, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्जशकी  
 प्रभु मारि निवारी, शांतहि नाम दिथो महतारी ॥ जे नर शांति  
 तणा गुण गावै, रुद्धि अचिंती ते नर पावै ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु  
 शांति सुहाई, ता नरकूं कुठ आरति नांही ॥ जो कठु वंठे सोही  
 पूरे, दात्रिइ दोष मिश्रवामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति  
 प्रकांती, घट २ के नीतर प्रभु वासी ॥ स्वामि सरूप कहा नवि  
 जावै, कहितां मो मन अवरज आवै ॥ ५ ॥ मार दिया सबही ह  
 थियारा, जीता मोहूतणा दख सारा ॥ नारितजी शिवसुं रंग राचै,  
 राज तज्या पिण साद्वि सचै ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजे देवा,  
 कायर कुंशु न एक दणेवा ॥ रुद्धि सहू प्रभु पास लहीजे, निका  
 हारी नांम कहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजक दे सम ज्ञायक, पिण



सेवक सदा सुख दायक ॥ तजि परिग्रह ज्ञेय जग नायक, नाम  
 अतीत सबै विध दायक ॥ ८ ॥ सन्तु मित्र सम चित्त गिणीजै,  
 नाम देव अरिहंत ज्ञणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहीजै, सेवक  
 जाण महा पद दीजै ॥ ९ ॥ सायर जैसा होय गंज्जीरा, दूषण  
 नहि इक मांदि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण  
 न रहै प्रजु एकण ठांमी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रजुनी सब देखै,  
 पिण सुपनो कबहु नवि पेखै ॥ रीस विना बावीस परीतह, सै या  
 जीती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ मांन विना जग आंण मनावै, मा  
 या विना सबसुं मन लावै ॥ लोचन विना गुणरास ग्रहीजै, त्रिहु  
 ज्ञये त्रिगुणो सेवीजै ॥ १२ ॥ त्रिग्रंथपणै सिर बत्र धरावै, नाम  
 जती पिण चमर दुलावै ॥ अज्ञय दांन दाता सुखकारण, आगे  
 चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल ज्ञणीजै, कर्म  
 सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ आपै, लख घरी  
 देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत कहावै, ना कितही  
 कूं सीस नमावै ॥ अकिंचनको बिरुद धरावै, पिण सोवन पंकज  
 पगहावै ॥ १५ ॥ तजि आरंज निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं  
 साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेष नही निगुणा  
 संग वारै ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अदभुत कहिये, तेरे गुणांको पार  
 न लहिये ॥ तूं प्रजु समरथ साहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवक  
 तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुंलोकनणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन  
 दयाला ॥ तूं सरणागत राखण धीरा, तूं प्रजु तारक ठै वरुवीरा  
 ॥ १८ ॥ तुम जैसें वरुज्जागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स  
 वायो ॥ कर जोमो प्रजु वीनवुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं  
 ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तारो, जवसाथरथी पार उतारो  
 ॥ श्रीहृष्यापुर मंरुण सोहे, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसायै, श्रीगुणसागरके मन जायै ॥  
जे नर नारी इक चित गावै, मन वंछित फल निश्चै पावै ॥ २१ ॥  
इति श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासी आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ टाल ॥ बिलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जयर जिण पास जगत्र धणी, सोजा ताहरी संसार  
सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस घणी, करवा सेवा तुम चरण  
तणी ॥ १ ॥ धनर जे न पने जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै  
॥ आसातना चउरसी टालै, साखता सुख तेहिज संजालै ॥ २ ॥  
जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलइ करै गाली जूये रमै ॥ धनुपादि  
कला सीखण ठूकै, कुरलो तंबोल नखे थूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वरु  
खघनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस समारण रु  
धिर क्रिया, चांदीनी नाखै चांमनियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये  
कावो, खावे घांणी फूली खावो ॥ सूवे चेसामण वितरावै, अज  
गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखै,  
नख गाल वपुपना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विह  
चन अपणो कर धन धरणो ॥ ६ ॥ वैतै पग ऊपर पग चढिया, आपै  
घाणा ठमै हुंढणियां ॥ सूकवै कप्परु पप्परु बनियां, नासीय विपै  
नृप जय पनियां ॥ ७ ॥ शोके रोवै विकथा ज कहै, इहां संख्या  
वैतालीस लहै ॥ इथियार घने ने पशु बावै, तापै नाणो परखै रां  
धै ॥ ८ ॥ ज्ञांजी निस्तही जिनगृह पेसे, धरै वत्र ने मंरुपमें  
वेसै ॥ पहिरै वस्त्र अनें पनही, चामर चीजे मन ठाम नही ॥ ९ ॥  
तनु तैल सचित्त फल फूल लियै, नूपण तज आप कुरूप थियै ॥  
दरसणथी सिर अंजली न धरै, इगसामै उत्तरासंग न करे ॥ १० ॥

षोडशो सिरपेच मोरु जोमै, दमिये रमने वेले होमै ॥ सयणासुं  
 जुहार करे मुजरो, करे जंम चेष्टा कहै वचन बुगै ॥११॥ धरे ध  
 रणो जगमे उल्लंघी, सिर गुंथै वांघ पाळंघी ॥ पसारे पग पहरे चावनि  
 यां, पग ऊटक दिरावै दुखनियां ॥ १२ ॥ करदम लूहै मैघुन भंमै,  
 जू आवलि अँठ तिहां ठंमै ॥ उघामे गुऊ करै वचदा, काढे व्या-  
 पार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीर धरै, अंधोले  
 पीवा ठाम जरै ॥ दूषण जिनजवनमें ए दाख्या, देववंदनजाष्यमें  
 जे जाख्या ॥ १४ ॥ सुझानी श्रावण सगति ठतां, आसातन टालै  
 वारसतां, परमाद वसै कोई थायै, आलोयां पाप सहू जायै ॥१५॥  
 तंबोल ने जोजन पांन जूआ, मल मूत्र सयन ल्ही जोग हुआ ॥  
 जूषण पनही ए जयन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर मांहि वसै ॥१६॥  
 इव्यत ने जावत दोय पूजा, एहनाहिज जेद कहा दूजा ॥ सेवा  
 प्रचुनी मन शुद्ध करै, वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥  
 कलश ॥ इम जय्य प्रांणी जाव आंणी, विवेकी शुद्ध वातना ॥  
 जिनबिंब अरचै परी वरजै, चोरासी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थ  
 कर अरजै, नमें जेहने केवली ॥ उवजाय श्री धनसाहि वंदे, जैन  
 शासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्री चोरासी आसातना स्तवनं ॥

॥ अथ चौवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणमुं रूपज्ज जिनेसर पाय, धनुष पांचसै उंची काय ॥ बी  
 जो अजित जिन मुऊ मल वसै, मांन धनुष साढाचारसै ॥ १ ॥  
 तीजो संचव सुख दातार, उंची काय धनुष सो च्यार ॥ अजिनं  
 दन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम  
 सुमतिनाथ जगदांन, धनुष तीनसो देही मांन ॥ पदम प्रचू पूरै  
 मन आस, देह धनुष दोयसे पचास ॥ ३ ॥ सामि सुपारस सत्तम  
 होय, देह प्रमाण धनुष सो दोय ॥ चंद्राप्रचु जिन मुऊ मन वसै, देह

प्रमाण धनुष दोढसे ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, उंच प्र  
 माण धनुष सो एक ॥ शोतलनाथ नमें जंग सवे, देह प्रमाण ध  
 नुष जसु निवे ॥ ५ ॥ श्री श्रेयांस नमूं उल्लसी, उंच प्रमाण धनुष  
 तनु असी ॥ वासपूज्य धारम जिन चंद, मान धनुष सित्तर सुख  
 कंद ॥ ६ ॥ विमलर गुणकर गंजोर, साठ धनुष जसु मान सरीर  
 ॥ अनंत ज्ञान अनंत प्रकाश, देह प्रमाण धनुष पञ्चास ॥ ७ ॥  
 पनरम धरमनाथ जगदीस, मान धनुष जसं पेंतालीस ॥ शांति  
 करण शोलम जिन शांति, देह धनुष चांलीस सोजंति ॥ ८ ॥  
 सतरम कुंथु जिन जगदाधारं, मान धनुष पेंत्रीस उदार ॥ अर अ  
 ठारम दीनदयाल, त्रीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ९ ॥ महि  
 नाथ जिन जगणीसमो, मान पञ्चीस धनुष पय नमो ॥ वीसम  
 मुनिसुव्रत अरिदंत, वीस धनुष तनु मान कहंत ॥ १० ॥ इकवी  
 सन नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बावीसम  
 श्रीनेमजिनंद, इस धन दीपे जाण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री  
 पारसनाथ, नील वरण सांहे नव हाथ ॥ चोवीसमा जिनवर श्री  
 वीर, सात दांथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चो  
 वीस, प्रणमें प्रह शम धरिय जगीस ॥ तां घर रुदि सिद्धि उठ  
 रंग, रंग विनय प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन  
 देहमानं स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं लिख्यते ॥

॥ रूपजदेव प्रणमं जिनराय, लाख चोरासो पूरव आय ॥ वी  
 जो अजित जनु सूत्रे साख, आठ बहुत्तर पूरव लाख ॥ १ ॥ ती  
 र्थकर संजव तीसरो, आठ लाख पूरव साठरो ॥ अजिनंदन पूरे  
 मन आस, आठ लाख पूरव पञ्चास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम  
 जगदीस, आठ लाख पूरव चांलीस ॥ श्री पद्मप्रचूर्नी ए अित

जाण, लाख तीस पूरब परिमाण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरब  
 बीस, दस लाख पूरब चंद्रप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लाख पूरब दोय,  
 एक लाख पूरब शीतल धित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी  
 लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो,  
 वासुपूज्य परमायुष गिणों ॥ ५ ॥ विमल आयु लाख साठ वरीस,  
 वरस अनंत तणो लाख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिणंद,  
 लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस धिति पच्याणवै,  
 श्री कुंभुनाथ तणी संज्रवै ॥ सहस चोरासी अर जिनतणी, मद्धि  
 सहस पचावन ज्ञणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मनिसु  
 व्रत परमान उदार ॥ बीस सहस ननिजिन धित ज्ञणी, वरस स  
 हस नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस  
 बहुत्तर वीरजिणंद ॥ रुषजतणा तेरे अवतार, सात चंड शंती-  
 सर वार ॥ ९ ॥ सुव्रत जव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्ता-  
 बीस ॥ त्रिहुंश जव सतरे जगदीस, सगला जव एकसो अमतीस  
 ॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन्न, गणधर चवदेसै बावन्न ॥  
 सहुने मुनि लाख अठाबीस, सहस ऊपरै अमतालीस ॥ ११ ॥ लाख  
 चमाल ब्याल हजार, षमधिक सहु साधवी सो ज्यार ॥ श्रावक  
 लाख पचावन धुरै, अमतालीस सहस ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोन्नि  
 श्रावका सुजगीस, लाख पांच सहस अमतीस ॥ ए संघ चतुर्विध  
 सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणों ॥ १३ ॥ इति श्री  
 चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सारं ॥ ए देशी ॥

सहुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं,  
 पञ्जणसु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लिखै निसतारं, आपण सफल

प्रवतारं, पामीजै जव पारं ॥ १ ॥ रूपज्ञ अजित संज्ञव अ-  
 न्न, सुमति पदमप्रभु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपात ॥ चंड-  
 नभू नं सुविद्य शीतल जिन श्रेयांस, वासपूज्य जिन सुरमणि,  
 विमल गुणेंकर वास ॥ २ ॥ अनंत घर्म श्री शांति जिनेसर, कुं-  
 थुनाथ अर मद्धि सुदंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए  
 जिन चोवीस ॥ जग वज्रल जगगुरु जगदीस, प्रणामीजै धर प्रेम ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम सुपनगज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम ज्ञरत नरइंद, वीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो  
 उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्रोस, ठढो  
 कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संज्ञूमि सनाथ ॥  
 ५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिपेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय  
 तांम, वारम ब्रह्मदत्त नांम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर वार, क्षेत्र ज्ञरत  
 सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, पोहता सरग मजार ॥ ७ ॥ सं-  
 ज्ञूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ थया सिवगामो, ते  
 प्रणामुं सिरनांमी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जांण, द्विपृष्टि दूसरो, तीजो स्वयंप्रभु जा-  
 णिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमाणिये  
 ए ॥ ९ ॥ ठढो पुरुष पुंनरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नांमे  
 आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह ऊठी ए  
 पिण नमूं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला  
 पांच ठढी गया ए ॥ सातमो पंचमी नैरं, चोथी आठमो, नवमो  
 तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नै ज्ञइ, सुप्रभु सुदर्शन,  
 आनंद नंदन शुभ्र मती ए ॥ रामचंड बलज्जइ, बलदेवी ए नव,  
 आठ थया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलज्जइ ब्रह्म देवलोक,

काल उसप्पणी, जास्यै सिव कृष्ण सासने ए ॥ अथवा निपुलाक  
नाम, तीर्थकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत जणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणे प्रभु रहतां काल सुखे गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वयीव नें तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंज वलय  
प्रह्लाद, रावण जरासिंधु जिसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक  
गति गामिया ए, ते पिण जावि जिनेस केई प्रणसुंमुदा ए ॥ १४ ॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शाति नें कुंथु अरि एह जव एकही, चक्रधर तीर्थकर दोय  
पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत जव जूजूआ, देह तिणसाठ  
पिण जीव गुणसाठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय वलदेव केरा  
पिता, एकहिज आय नव एण लेखै ठता ॥ तीन चक्रधर तणा  
मिलिय वारै टळ्या, एम त्रेसठना तात इकावन मिळ्या ॥ १६ ॥  
तीन चक्रवर्तणी टाल दीजे इसै, माय सहुनी अई साठ लेखे इसै  
॥ एह नररयणनो ध्यांत नित जे धरे, तेह सुरपद लही मोक  
पदवी वरै ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम थुण्या तीर्थकर चक्रीसर वासुदेव वलदेव ए, प्रतिवासु-  
देव सुसेव जेहनी करै सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम  
जगत जयवंतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो  
मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ शलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सैत्रुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला  
धर्म निवारणो, जय जंजण जगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुज मन ऊ  
लट अति घणो, सो दिन सफल गिणोस ॥ स्वामी श्री रिसहेसरू,  
जव नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरंअ विहरता, साधु

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरव निनाणूं वार ॥  
 श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥  
 इण गिरचनमासे रद्या, शिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पांमे  
 शिव सुख साश्वता, गणधर श्री पुंररीक ॥ पुंरगिरि तिण कारणें,  
 जगति करो निरन्नीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू,  
 विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुंज शिखर समोसरया, जे गरुथा गुणवंत ॥  
 श्री० ॥ ६ ॥ श्रावच्चा मुनिवर सुक, सहस्र परिवार ॥ पंथग  
 वथणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांम्व पांच  
 महाबलो, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सोधा सिद्धाचलै, सुर नर  
 करै वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा इण मूंगरै, मुनिवर कोरु-  
 कोरि ॥ पाज चढंता सांज्जै, ते प्रणमूं करजोनि ॥ श्री० ॥ ९ ॥  
 जे वाषण प्रतिबूजवो, ते दरवाजै जोय ॥ गोमुख यक्ष कवच मिली,  
 सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर  
 सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावतां, अविचल लील विलास  
 श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचल स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देसी गरवानी ॥

श्री सिद्धाचल मंरण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजांमी  
 रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनांमी, यात्रीसा जात्रा निनाणूं करिये रे ॥ १ ॥  
 श्रीरूपज्ज जिनेसर राया रे, जिहां पूरव निनाणूं आया रे, प्रज्ज  
 समवसरया सुख दाय ॥ या० ॥ २ ॥ चेत्रो पूनम दिन वखाणो रे,  
 पांच कोरिसुं पूंररीक जाणो रे, जे पांम्या पद निरवाण ॥ या०  
 ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संतै रे, वे वे कोरिसुं साधु संघाते  
 रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मने  
 तोमी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोमी रे, ते वंदो वे कर जोरि



॥ या ० ॥ ५ ॥ इम ज़रतेसरने पाटे रे, अतंख्यात साधु थिर  
 थाटे रे, पांम्या सुगति तशी ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस  
 सुनी परवारे रे, आवच्चा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेजग अणगार  
 ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सीधा बहु यादववंसे रे,  
 ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पांचे पांमव इण गिर  
 आया रे, सीधा नव नारद ऋषिराया रे, वली संव प्रजून कहाय  
 ॥ या० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते  
 रे, इम ज्ञाप्यो श्रीजगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ उज्जल गिर सम नही  
 कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्यां पावन होइ ॥ या०  
 ॥ ११ ॥ एकादारी ने सचित्त पहारी रे, पदचारी ने जूमि संधारी  
 रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम ठहरी जे नर  
 पाले रे, बहुं दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण जय टाले  
 ॥ या० ॥ १३ ॥ धनइ ते नर ने नारी रे, जेटे विमलाचल इक  
 तारी रे, जइये तेहतशी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंड  
 सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण  
 गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिपदं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेव स्तवनं ॥

ऋषभ जिनसर दिनकर साहिव, वीनतनी अवधारो रे ॥  
 जगना तारु ॥ मुऊ तारो जो कृपानिध स्वांमी, जग जसवाद  
 प्रगट ठै ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥  
 निज गुण जोका पर गुण दोषा, आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज० ॥  
 अविनासी अविचल अविहारी, शिव वासी जिनराया रे ॥ ज०  
 ॥ २ ॥ मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हुं तुम चरणे आयोरे ॥  
 ज० ॥ तुम रीजावण हेते ततखिल, नाटक खेल मचायो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥  
 मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्र, तरु साधारण प्रांमी रे ॥ ज० ॥

वरस संख्याता वलि विकलेंडी, वेप धरया डुख धामी रे ॥ ज०  
 ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेडीपलो  
 धारयो रे ॥ ज० ॥ चौवीसे दंभक मांदि जमियो, अरव तो हूं पिण  
 दारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ जव नाटक नित करतो नव नव,  
 हूं तुज आगल नाच्यो रे ॥ ज० ॥ समरथ साहिब सुरतरु सरिखो,  
 निरखी तुजने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुज नाटक  
 देखी रीज्या, तो मन वंठित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीज्या  
 तो मुज जाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥  
 लालच धरि हूं सेवा साहं, तुं डखला नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता  
 सेती सुंम जखेरो, वहिखो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥  
 तुज सरिया साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥  
 तो मुज करमतणी गति अरवली, दोसन कोइ तुमारो रे ॥ ज० ॥ ९ ॥  
 मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥  
 ज० ॥ सुगुण सेवकना वंठित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥  
 ज० ॥ १० ॥ मु० ॥ वर्ष अठारै गुणतालीसै, ज्येष्ट सुदी सोमवारो रे ॥  
 ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन जेट्या, वीकानेर मजारो रे ॥ ज०  
 ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन रूपनदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मेरो वीनती, करजोनी हो कहुं मननी वात  
 ॥ बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिजुवन तात ॥ वी०  
 ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं जम्यो, जव मांहे हो स्वामीसमुझ म  
 जार ॥ डख अनंता में सहा, ते कहितां हो किम आवे पार ॥  
 वी० ॥ २ ॥ पर उरगारी तूं प्रजु, डख जंजे हो जग दीनदयाल  
 ॥ तिण तोरं चरणे हूं आवियो, सामी मुजने हो निज नयण निहाल  
 ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण ऊपरया, तें कीधी हो करुणा मो

रा स्वांम ॥ हुंतो परम जक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं ढीलनो  
 काम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूखपाण प्रतिबूज्या, जिण कीधा हो तुज्  
 ने उपसर्ग ॥ मंक दिवो चंमकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग  
 ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसाळो गुनहीण घणो, जिण बोड्या हो तोरा  
 अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूकी सुप्र  
 साद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण ठै इंडजालियो, इम कहतो हो आ  
 यो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रचुतानो वजी  
 र ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन न्याप्या ताहरा, तें ऊगज्या हो तुज् साथ  
 जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे जवे, शिवगांमी हो तें कीधो कृपाल  
 ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जेरम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी  
 पाल ॥ तिरती मूकी काठली ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥  
 वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर रुषि दूहव्यो, चित चूको हो चारितयो  
 अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा जंमार ॥ वी०  
 ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूकी हो संजमनो जार ॥  
 नंदिषेण पिण ऊधरयो, सुर पदवी हो दीधो अति सार ॥ वी० ॥  
 ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चौवीस ॥ ते  
 पिण आडकुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥  
 १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलगा, रूप देखी हो चित चूका जेह  
 ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तैह ॥ वी०  
 ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखमी, नही पोसो हो नही आदर दीख  
 ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी०  
 ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊधरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥  
 सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरमी वात ॥ वी०  
 ॥ १५ ॥ सूयो संजम नहि पलै, नही तेहवो हो मुज् दरसण  
 ज्ञान ॥ पिण आधार ठै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यान

वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जोवे हो सम विखमी  
 गंम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित  
 कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो डुख  
 जायै दूर ॥ तुम नांमे वंछित फलै, तुम नांमे हो मुऊ आनंद पूर  
 ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंरुन, तीर्थकर  
 चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लंछन, सेवतां सुरतरु समी ॥  
 जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज  
 समयसुंदर ॥ संश्रुण्यो त्रिजुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा  
 वीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करुं अरदास जी ॥ ता  
 रण तरण विरुद तुऊ सांजलि, आयो हूं धर आस जी ॥ पू० ॥ १ ॥  
 इण संसार समुड अथागे, जमियो जवजल मांदिजी ॥ गिलगिचिया  
 जिम आयो गिरुतो, साहिव हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं  
 ज्ञानी तोपिण तुऊ आगे, दीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंरु  
 क हूं जमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते न  
 रकतणो इक दंरुक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच घावर नें  
 तीन विकलेंडी ॥ उगणीस गिणती आण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचें  
 डी तिर्यच ने मानव, एह थयां इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतपी  
 नें बेमाणिक, इम दंरुक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंडी तिर्यच  
 अने नर, परयासा जे होय जी, ए चोविह देवामें ऊपजे, इम देवां  
 गति होय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आउखें नर तिरि, निहचै  
 देव ल आय जी ॥ निज आऊखें सम के उठे, पिण अधिके नत्रि  
 जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ जवनपती के व्यंतर ताई, समूर्धिस तिर्यच

रा स्वांम ॥ हुंतो परम जक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं ढीलनो  
 कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ मूलपाण प्रतिबूज्या, जिण कीधा हो तुज  
 ने उपसर्ग ॥ मंक दिथो चंमकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग  
 ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोळ्या हो तोरा  
 अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूकी सुप्र  
 साद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण वै इंडजालियो, इम कहतो हो आ  
 यो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रजुतानो वजी  
 र ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उयाप्या ताहरा, ते ऊगज्या हो तुज साथ  
 जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे जवे, शिवगांमी हो तें कीधो कृपाल  
 ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जेरम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी  
 पाल ॥ तिरती मूकी काठली ॥ तें तारयो हो तेहनें ततकाल ॥  
 वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर रुषि दूह्यो, चित चूको हो चारितथो  
 अपार ॥ एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा जंमार ॥ वी०  
 ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूकी हो संजमनो जार ॥  
 नंदिवेण पिण ऊपरयो, सुर पदवी हो दीधो अति सार ॥ वी० ॥  
 ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चौवीस ॥ ते  
 पिण आडकुमारनें ॥ तें तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥  
 १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह  
 ॥ समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी०  
 ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखमी, नही पोसो हो नही आदर दीख  
 ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी०  
 ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊपरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥  
 सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरमी वात ॥ वी०  
 ॥ १५ ॥ सूयो संजम नहि पलै, नही तेहवो हो मुज दरसण  
 ज्ञान ॥ पिण आधार वै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यान

वी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नविं जोवेहो सम विखमी  
 ठाम ॥ गिरुवा सदजे गुण करे, स्वांमी - सारो हो मोरा वंठित  
 काम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नामे सुख संपदा, तुम नामे हो डुख  
 जाये दूर ॥ तुम नामे वंठित फलै, तुम नामे हो मुज्ज आनंद पूर  
 ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंरुन, तीर्थकर  
 चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंदह लंठन, सेवतां सुरतरु समो ॥  
 जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज  
 समयसुंदर ॥ संश्रुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा  
 वीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस-दंडक-स्तवनं ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करुं अरदास जी ॥ ता  
 रण तरण विरुद तुज सांजलि, आयो हूं धर आस जी ॥ पू० ॥ १ ॥  
 इण संसार समुद्र अथागे, जमियो जवजल मांदिजी ॥ गिलगिचिया  
 जिम आयो गिरुतो, साहिव हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं  
 ज्ञानी तोपिण तुज आगे, दीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंरु  
 क हूं जमियो ॥ वरणूं तेह चिख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते न  
 रकतणो इक दंरुक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच आवर नें  
 तीन विकलेंडी ॥ उगणीस गिणती आण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचें  
 डी तिर्यच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतप  
 नें वेमाणिक, इम दंरुक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंडी तिर्यच  
 थने नर, परयाता जे दोय जी, ए चोविद देवामें ऊपजे, इम देवां  
 गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आउत्ये नर तिरि, निहचै  
 देव ज आय जी ॥ निज आऊत्ये सम के उत्रे, पिण अधिके नवि  
 जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ जवनपती के व्यंतर ताई, समूर्द्धिम तिर्यच

जी ॥ सरग आठमां तांइ पोहचै, गरज्ज सुकृत संच जी ॥ पू० ॥  
 ॥ ७ ॥ आठ संख्यातै जे गरज्ज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ वादर  
 पृथ्वी नै वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ८ ॥ पर्याप्ता  
 इण पांचे ठामे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण  
 आगै, अधिकांई कहुं हेव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी  
 मांमी सुर, एकेंडी नवि आय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला,  
 मांनवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परै, जीव जमै संसार॥ दोय गति  
 नै दोय आगत जांणियै, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ सं-  
 ख्याते आयु परजापता, पंचेडी तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहि-  
 ज बे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरक लग  
 जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम बीय ॥ गृद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी  
 लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सीमा सा  
 पणी, ठठि लग स्त्री जाय ॥ सातमियें माणस के मावलो ॥ ऊप  
 जै गरज्ज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंभकै,  
 तिरयंच के नर आय ॥ तेपिण गरज्ज ने परयापता ॥ संख्याती  
 जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरया, जे  
 फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्टे जांगे करते कहूं, पिण निश्चै नही को  
 य ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्ति हुवै, बीजी हरि  
 बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थकरपद लहै ॥ चोथीकेवल एव ॥ न० ॥  
 ॥ १८ ॥ पंचम नरकनो सरबविरति लहै, ठठि देसविरत्त ॥ सातमी  
 नरकनो समकितहीज लहै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कर्म परीक्षा करण कुमर चलयो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मानव गति विन मुगति हुवै नही रे, एहनो इम अधिकार

॥आठ संख्यातै नर सहु दंभके रे, आवी लहै अवतार॥मा०॥१०॥  
 तेउ वाऊ दंभक वे तजी रे, बीजा जे वावीस ॥ तिहांथी आया आयै  
 मानवी रे, सुख डुख कर्म सरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच अतं-  
 खी आउपै रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरने मनुष्य हुवे  
 नही रे, अरिहंत ज्ञाख्यो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव  
 तथा बली रे, चक्रवर्त्त ने अरिहंत॥ सरग नरगना आया ए हुवै रे,  
 नर तिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥१३॥ चोविह देव थकी चवि ऊप  
 जै रे, चक्रवर्त्त बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थकर ए हुवै रे, वैमानिकथी  
 वेव ॥ मा० ॥ १४ ॥

॥ दाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देसी ॥

द्विच तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव जमें  
 इण पर जव मांहे करम विशेष ॥ आठ संख्यातो जे नर तिर्यंच  
 निचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ १५ ॥ जिण  
 तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कह्या पदली तिण कारण न कहूं  
 हेव ॥ पंचेडी तिर्यंच संख्यातै आऊखै जेह, ते मरी चिहुंगतिमां  
 जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंडी आठ  
 कहावे, तिहांथी आठ संख्याता नर तिरयंचमें आवे ॥ विकल चवी  
 लहै सरबविरति पिण सुगति न पावै, तेउ वाउथी आयो तेहने  
 समकित नावै ॥ २७ ॥ नारक वरजाने सगलाही जीव संसार,  
 पृथ्वी आठ वनस्पतीमांदि लहै अवतार ॥ ए तीने इहांथी चवि  
 आवै दसे गंभे, थावर विकल तिरौ नरमांहे उतपत पावै ॥ २८ ॥  
 पृथ्वीकाय आद देई दस दंभके एह, तेउ वाऊ मांहे आवी ऊपजै  
 तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेउ वाउ वे जावै, विकलेंडी ते  
 दसमांदि जावै पूठाही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादितणो मिथ्यात्वी  
 जीव एकंत, वनस्पती मांहे तिहां रदियो काल अनंत ॥ पुढवी



पाणी अग्नि अनै चौथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तांइ  
जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंडी तेइंडी अने चौरिंद्री मजारै, संख्याता  
वरसां लगै जमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ जव लगि तां नर  
तिरयंचमें रहियो, हिव मानवजव लहिनै साधुनें वेषमें रहियो  
॥ ३१ ॥ राग द्वेष बूटे नही किम हुवै बूटकवार, पिण वै माह्रै  
मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्ध अ-  
रिहत लाधो, हिव संसार घणो जमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥  
तूं मन वंठित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो में  
नवनिध सिद्ध पांमी ॥ अवर न कांइ इहू इण जव तूंहिज देव,  
सूधै मन इक होज्यो जवर ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसल, मेर महिमा दिन दिनें ॥  
संवत सतर उगणांतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद्र  
समान वाचक, विजय हरष सुसीस ए ॥ श्री पासना गुण एम  
गावै, धरमसी सुजगीस ए ॥ ३४ ॥ इति श्री चौवीस दंभक स्तवनं ॥

॥ अथ इरियावही मिठामिडुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ प्रभु प्रणमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देसी ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि  
सुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पदिकामी जिम इरियावही, श्री  
वीरनी रे वाणी तहत कर सरदही ॥ उद्धालो ॥ सरदही वांणो  
मन सुहाणी, चित्त आंणी ते दली ॥ मिठामिडुक्कर तणी संख्या,  
कहिसुं जिम कहे केवली ॥ जू दग जलण तिम वाज, वणसइ  
विगल पण इंडी तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, डुर ते क-  
रिवा जणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुरुवि दग रे वाज तेज वणसइ, पण  
आवर रे वादर सुहम दसे अई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारह

अथा, बावीसि रे पञ्चतम अपञ्चतया ॥ उल्लाखो ॥ पञ्चत. अपञ्च-  
 तम वखाण्या, विगल तिय उद् जाल ए ॥ जल अल खचर जुयंग,  
 उद्, पण इंडिय तिरि अरुयाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुन्वी,  
 नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद जेदे करी जाणो, पञ्चतय अ-  
 पञ्चत जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा हम्मिया,  
 किलविपिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंजिय दस रे नव  
 लोगतिक जांणियै, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणियै ॥ उल्लाखो ॥  
 वखाणियै दस विध नुवनपतिना, तार रवि सशि रिसिगहा ॥ चर  
 धिर दसै विध जोइसी सुर, वखाण्या जिनवर जिहां ॥ वारह  
 विमाणद पण अनुत्तर, नवयविके नव ज्ञाया ॥ पञ्चत अपञ्चतम  
 अठाणूं, अधिक सत संख्या गिएयां ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देखी ॥

पंचजरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर नूनिका ए ॥ खेत्र  
 ए पनरह करम नूमि जाणियै असि कसि मसिहि आजीविकाए ॥  
 हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरण्यत सहीए ॥ मेरुपिण  
 पाखती चारि ९ खेत्र दस कुरु अकरम नूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिम-  
 गिर सिंहरीय दाढ चीयारि लवण समुड्मांदि विस्तरि ए ॥ तात  
 २ अंतर दोय प्रासे दीप उप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दोइसै जेद उद्  
 आगला जांणी मणुय पञ्चत अपञ्चतयाए ॥ एक सौ एक समुच्चिम  
 जेद तीनसै तीनमणुआ अयाए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ द्वि जनम्या जगगुरु ॥ ए देखी ॥

पणस्य त्रेसठिविध जीवसदू ठे एह अजिहय आदिक दस  
 गुणित करीजै तेह ॥ पणसहस ठसै वलि त्रीस अधिकते ज्ञाणि ॥  
 ते रागे दोसै डुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ दुइ सहस इग्यारह उद्  
 सय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो हितउर आण ॥ मंत-

वच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सहस सत सात-  
 असी निःसंक ॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण कि० ॥  
 इकलकख सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत  
 वर्त्तमान वलिकाल जे अश्यविराधना तिणि त्रिगुण संज्ञाल ॥ ७ ॥  
 तीन लाख सहस च्यार बेसै अधिक तेधाय ॥ अरिहंत प्रमुख उद  
 साखै उगुण ज्ञाय ॥ इम लाख अठारह वलि सहस चउवीस ॥  
 इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ए ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपइनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिञ्चामि डुकुमंदेई जविक तरया जवजल नि  
 धिकेई ॥ तरै अठै वलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लाखमी  
 वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम  
 करि निरमल ॥ सें मुखजाषै वीर जिणोसर ॥ सूत्रकरि गूणै ते श्रु  
 तधर ॥ ११ ॥ इम पम्किमी सुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीस केव  
 ल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणामी जै ॥ मानव जनम  
 सफल इम कीजै ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो ॥  
 तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ उवजाय लहमी  
 किर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लखिवछ्छन्न तवन करि  
 इम संशुणयो ज्ञावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिञ्चामि डुकुम  
 संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धास्य सुत वंदीए, जगदीपक जिनराज ॥ वस्तु-  
 तत्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादधी  
 संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्त अंग रचना विना, बंधन

बेसे बात ॥ १ ॥ वाद वदे नय जूजूआ, आप आपणे गाम ॥  
 पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंधं पुरुषे एह  
 गज, ग्रही अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिला  
 अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नये करी, जुगति योग शुद्ध धाध ॥  
 अन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नही किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रूप रे ॥  
 नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अजंग अनूपरे ॥ ६ ॥  
 ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥  
 काले ऊपजै विणसे काले, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री०॥  
 काले गर्ज धरे जग वनिता ॥ काले जनमे पुत रे ॥ काले बोले  
 काले चाले, काले जाले घरसूत रे ॥ ८ ॥ काले दूधअकी दही थायै,  
 काले फल परपाक रे ॥ विविध पदार्थ काल उपावै, अंत करे बे  
 वाक रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिनचत्रवीसै वार चक्रवै, वासुदेव बलवंत  
 रे ॥ काले कविलत कोइ न दीसै, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥  
 ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पणी आरा, ठै ठै जूजूये जांते रे,  
 षट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ जिन २ दिन रात रे ॥ ११ ॥ श्री० ॥  
 काले बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ बुढपणे दुय  
 बलिश् दुर्वल, सकत नही लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ दाल ॥ २ री ॥ गिरुवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तब स्वप्नाववादी वदै जी, काल किसुं करै रंक ॥ वस्तु स्वप्नावे  
 तीपजे जी, विणसै तिमज निस्संक ॥ १३ ॥ सुविवेक विचारो जुओ  
 वस्तु स्वप्नाव ॥ ए आंकणी ॥ ठते योग यौवनवतीजी, वांजण  
 न जणै बाल ॥ मूठ नही महिला मुखै जी, करतल ऊगै न बाल  
 ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण सप्नाव नवि संपजै जी, किमह पदार्थ कोय ॥

अंब न लागै नींवकै जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु० ॥ सोरप ठ  
 कुण चोतरे जी, कुण करै संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी,  
 सुंदर नयण कुरंग ॥ १६ ॥ सु० ॥ काटा वोर वंनूचना जी, कुणें अणि  
 थाला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध ॥  
 ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकै नित वसै जी, मणि हरै विस  
 ततकाल, परवत धिर चल वाघरो जी, ऊरध अगननी जाल ॥ १८ ॥  
 ॥ सु० ॥ मद्य तुंब जलमां तिरै जी, बूमै काग पाहाण ॥ पंख जाति  
 गयणे फिरे जी ॥ इण परै सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय  
 सुंठ्ठी नपशमै जी, हरमे करै विरेच ॥ सीजै नही कण कांगमो जी ॥  
 सकल स्वप्नाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी,  
 भुंयमां आयै पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वप्नाव  
 प्रमाण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो सशि सीयलो जी, ज्ञव्यादिक  
 बहु ज्ञाव ॥ ठए डव्य आपायणा जी, न तजै कोइ सुप्नाव ॥  
 ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देसी ॥

काल किसुं करै वापमो रे, वस्तु स्वप्नाव अकज्ज ॥ जो न  
 होय ज्ञवतव्यता जी, तो किम सीजै कज्जा रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म  
 करो मन जंजाल, ए तो ज्ञावी ज्ञाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए  
 आकणी ॥ जलधि तरै जंगल फिरै जी, कोदि यतन करै कोय ॥  
 अणज्ञावी होये नही जी, ज्ञावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥  
 आंबै मोर वसंतमां जी, मालै केइ लाख ॥ खरया केइ खांखटी  
 जी, केइ आंबा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ वानल जिम ज्ञव  
 तव्यता जी, जिण जिण दिसे नजाय ॥ परवस मन मानसतणो जी,  
 तृण जिम पूठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसै पिण चिंतव्युं  
 जी, आवी मिलै ततकाल ॥ वरसां सोनुं चिंतव्यो जी, नियत कर

विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुंजूमिते जी, समुद्र  
 पन्थो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हरे गोवाल रे ॥  
 प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोयल करै जी, किम राखीस रे प्राण ॥  
 आहेमी सर ताकियो जी, ऊपर जमें सीचाण रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥  
 आहेमी नागे रुस्यो जी, बाण लग्यो सीचाण ॥ कोकूहो ऊमी  
 गयो जी, कोउ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सख हणया  
 संग्राममां जी, रात पन्था जीवंत ॥ मंदिरमांहे मानवी जो,  
 राख्याही न रहंत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ हाळ ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ए देशी ॥

काल स्वजाव नियत मति रूमी, करम करे ते थाय ॥  
 करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव जवंतरै जाय ॥ ३२ ॥  
 चेतन चेतज्यो रे करम न ठूटै कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें  
 राम वस्या वनवासै, सीता पामी आल ॥ कर्म लंकापति रावणनुं,  
 राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्म कीमी कर्म कुंजर ॥  
 कर्म नर गुणवंत ॥ कर्म रोग सोग डख पीमित, जनम जायै  
 विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्म वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे  
 अन्न ॥ कर्म जिननें जोउ निमा रे, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥  
 ॥ चे० ॥ कर्म एक सुखपाले बैसै, सेवक सैवै पाय ॥ एक हय  
 गय चढया चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम  
 मांनी अंधतणी पर, जग हीमै हाहूतो ॥ कर्म वली ते लहै  
 सकल फल, सुखजर सेज सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके  
 कीधो उद्यम ॥ करंयीयो करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो जूखो,  
 नाग रह्यो रुमरोले ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूपक तसु  
 सुखमां, दीयै आपणू वेद ॥ मार्ग लही वन नाग पथारधा,  
 कर्म मर्म जोवो एद ॥ चे० ॥ ३९ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ तो चढियो घन मान गजै ॥ ए देसी ॥

हिव उद्यमवादी जणे ए, ए च्यारै असमठ तो ॥ सकल  
पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरठ तो ॥ ४० ॥ उद्यम  
करतां मानवी ए, स्युं नवि सीजै काज तो ॥ रामें रयणायर तणी  
ए, लीधो लंकाराज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेहमां  
सत्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिउ पैसंता जोय  
तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥  
उद्यमथी उंची चढे ए, जोदो एकेंडिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम  
करतां इक समें ए, जेह न सीजै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी  
हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यमकरि ऊरयां विना  
ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आवी न पमै कोलियो ए, मुखमां दोपे  
जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म  
तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्मनो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्र  
हार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंज तो ॥ उद्यमथी स्वट मासमां  
ए, आप अथा अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपैश् सरवर जरै ए, कां  
करे ३ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल  
तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलविंडुड ए, करे पाहाणमां ठाम तो ॥  
उद्यमथी विद्या जणै ए, उद्यम जोमै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवै ॥ अमिय  
रसै जिन वयण सुणीनें, आणंद अंग न मावै रे ॥५०॥ प्राणी  
समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥  
॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जाणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए  
पाचे समवाय मिथ्यां विन, कोइ काज न सीजै ॥ अंगुल जोगै

कवल तणी पर, जे वृजै ते रजै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रहं आणी  
कोइ एकने, एहमां द्विये वनाई ॥ पिरा सेना मिल सकल रसंगण,  
जीते सुजट लनाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावे,  
काल क्रमें वणाई ॥ ज्वित्तव्यता होय ते नीपजे, नही तो विधन  
वणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम जोक्तादिक, ज्ञाय सबल  
सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उत्तपत जोवो विचारी  
रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसें हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीक-  
लियो ॥ पुण्ये मनुज जवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे  
प्रा० ॥ ५५ ॥ ज्वधितनो परपाक थयो तव, पंरित वीर्ये उल्ल-  
सियो ॥ ज्वय स्वजावे शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे  
॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमान जिन इण पर वीनवे, सासन नायक गा  
वो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्यादाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संघुण्यो  
॥ सय सतर संवत वद्धि लोचन, वर्ध हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय  
देव सुरिंदे पटथर, विजयप्रज मुणिंदे ए ॥ कीर्तिविजय वाचक  
सीस इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च स  
मवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ यंत्रणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ५ देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति वातार, वंदू मन सुध वारंवार,  
आणी ज्ञाव अपार ॥ चवदै गुण थानरु सुविचार, कदिस्थुं सूत्र  
अरथ मन धार, पांमे जिम जव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिठवात कह्यो  
गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आणो, तीजो मिश्र चखाणूं ॥ चो  
थो अविंरत नामं कहाणो, देशविंरति पंचम परमाणो, ठवो प्रमत्त



ते गणें ॥ उपशम श्रेणि चढे जे नर हुवै उपशमी, रूपकश्रेणि  
 कायक प्रकृति दस रूप गसी ॥ २३ ॥ जिहां चढता परिणा  
 अपूरव गुण लहे, अरुम नाम अपूरव करण तिणें कहे ॥ सुक  
 ध्याननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणांम अतिग ध्या  
 धरै ॥ २४ ॥ दिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जांणियै, जिहां जा  
 धिररूप निवृत्ति न जांणियै ॥ क्रोध मांन ने माया संजलणा हणें  
 उदें नदी जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रदें सुख  
 लोचन कांडक शिव अजितलखै, तें सूखम संपराय दसम पंक्ति अखै  
 संत मोह इणें नाम इग्यारम गुण कहे, मोह प्रकृति जिणें ठां  
 सहू उपशम लहे ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै किराह  
 परै, तो थायै अहमिंड अवर गति नादरै ॥ ज्यार वार समश्रेणि  
 करै संसारमें, एक जेवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥  
 षडि इग्यारम सीम समीप पहिले पदें, मोह उदय उत्कृष्ट अरु  
 पुदगत रदें ॥ रूपकश्रेणि इग्यारम गुणठाणो नदी, दशमयक  
 बारम चढे ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ टाल ॥ ६ ॥ एक दिन कोइ मागथ आयो पुंदर पास ॥ ए देसी ॥

खीणमोह नामे गुणठाणो बारम जाण, मोह खपायो नेने  
 आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात  
 दिव आगे तेरम गुणधान तणी कहे वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकरु  
 कथ गई रहीथ अघातीय एम, प्रकृति पिज्यासी जेहने जूना कप्पम  
 जेम ॥ दरसन ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान  
 प्रगट थयो विचरै श्रीजगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी ठानी  
 परगट वात, महिमावंत अदरै दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे  
 ऊणी कही इक पूरवकोनि, उत्कृष्टै तेरम गुणठाणें ए श्रिति जोनि  
 ॥ ३१ ॥ कर सेदेसी करण निरुध्या मन वच काय, तेण अयोगी

अतः समय सहु प्रकृति स्वपाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊचरतां जेहनो  
 मान, पंचम गति पांमें सिवपद चउदम गुणथान ॥ ३२ ॥ त्रोजे  
 पारमें तेरमें माहे न मरै कोय, पहिलो बीजो चोथो परजव साये  
 होय ॥ नारक देवनी गति माहे छात्रै पहिला व्यार, धुरला पांच  
 तिरी माहे मखु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर वाहरु मेरु मंरुण, सुमति जिण सुपसाजलै ॥  
 गुणठाण चवद विचार वरणयो, जेद आगमनें जलै ॥ संवत सतैरैसै  
 उचीसै, श्रावण वदि एकावसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिष,  
 कहे मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदै गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु  
 सकल प्रणामी करी, प्रणामी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्थुं हूँ नव  
 तत्वनी, गाथा ज्ञासा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधै, कहिस्थुं  
 सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निऊर  
 बंध मोह ए तव तत होय ॥ चवद २ बायाल वयासी बलि बायाल,  
 सत्तावन बारै चौ नव क्रम जेदनी माल ॥ १ ॥ इग डु ति चौविह  
 पणविह उबिह जीव कहाय, चेतन अस थावर वेदै गई करणे  
 काय ॥ एगेंदी सुखम वादर ए दोय जिय गण, सन्नि असन्नि  
 पणिंदी वि ति चौरिंदी आण ॥ २ ॥ ए सग पऊता अपऊता चवदै  
 होय, अनुक्रम जीव गण ए सूत्र प्ररूपा सोय ॥ नाण दंसण  
 चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए परु लक्षण लकत जीव इय  
 इह लोग ॥ ३ ॥ इग आदार तरीर इंदिय पऊती तीन, सासोसास

ज्ञाषा मन वरु ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार एगेंदी पंच पङ्कती  
 विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें वरु पङ्कती होय ॥ ४ ॥ इंद्रिय  
 पांच उतास आऊ वल ए दस प्राण, च्यार ठ सात आठ एगिंदी  
 विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंदी नें नव दस क्रम आय, प्राणाथी  
 जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनूना  
 त्रिण्ण जेद, काल दसम इग आगास पुग्गल च्यार विवेद ॥ खंधा देस  
 पएस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुग्गल नन्न काल ए पांच  
 न जीव ॥ ६ ॥ चलण सहाई धम्मै धिर संठाण अधम्म, अवगाहे पूरण  
 गलणें नन्न पुग्गल धम्म ॥ सप्रयावलिय महुत्त दीह पख मास नें  
 साल पढ्योपम सागर उसप्पणी सप्पणी काल ॥ ७ ॥ वरु इग दो सग  
 सग सग वरु इग अंक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र  
 कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन ऊतासें माण, केवलनाणी  
 जणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर हुग  
 पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति शरीर उवंग कहाय ॥ आदि  
 संघेण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उतास तेम वलि आ  
 तप ने उज्जोय ॥ ९ ॥ सुज्जखगइ निम्माणत सादि इगु नीमाल,  
 सुर नर तिरि आऊ तिच्चंकर पुण्य वयाल ॥ तस वाइर षंज्जत प  
 तेय धिरं सुज्ज सोय ॥ सुज्जग सुसर आइऊ जलें त्रस दसको होय  
 ॥ १० ॥ नाणंतराय दस कनव बीजा नाचअसाय, मित्थ थावर  
 दशनादग त्रिक पचथीस कसाय ॥ तिरियं च हुग एकेंडी वि ति  
 चौरिंडी तेय, कूखगई उपया अपसत्थ वसु चौ जेयं ॥ ११ ॥ पढ  
 म संघयण विना संघेण तेम संठाण, एम वयासी प्रकृति पाप त  
 तनी ए जाण ॥ थावर सुहम अपऊ साहारण अधिरै गेय, असुज्ज  
 हुज्जग दू सरणा इऊ अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय  
 इंदि कसाय अद्वय तिम जोग वायालीस सेप पच्चीस क्रिया संजो

४ ॥ कांड १ अहिगरणीया पावसिया परित्ताप, प्राणातिपात आरं  
 जकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिच्छावसण वत्ती  
 तेम,, अपञ्चखाणकी दिठ पुठ प्राडुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणि  
 य ने सत्थि सहत्थै जेह, आज्ञापनकी वेयारण अणजोगा तेह ॥  
 १४ ॥ अणव कंख पञ्चयना उवळंगी समुदाय, प्रेम देष इरियाव  
 ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज इ धम्म जाव  
 ण चारित्त, पणतिग बावीस दस वारै पण संबर तत्त ॥ १५ ॥ इ  
 रिया जावा एपणा सुमतीना जेद होय, आदान जंरु उच्चार नि  
 स्केवण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जाण, दि  
 व आगे बावीस परिसह कहुं हित आण ॥ १६ ॥ जूख पिपासा  
 सीत चिसन म्हासा निरवत्थ, अरति जोपा चरिआ नैपिया सिज्जा  
 सत्त ॥ अट्ठोसवहजायण अलाज रोग त्रिण फास, मल सक्कार य  
 ज्ञा अज्ञाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव  
 संजम सम्म, सत्थं सौच अकिंचन वंजचेरज इ धम्म ॥ पढम अ  
 नित्य असरण संसार एग अनत्त, असुचि आश्रव संबर निज्जर न  
 वि जावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुजाव बोध डुरलज्ज इग्यारम गाम,  
 धरम साधक अरिहंत ए वारै जावना जाव ॥ सापायक छेदोण  
 स्थापन बीजो सोय, परिहार विश्रुद्ध सूखम संपराय चउत्थो जोय  
 ॥ १९ ॥ तिम अहक्काय चरित्त सरव जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु  
 विधि आचरणे के जिय पांम्या सिद्ध ॥ वारै विध निर्जर तत्व बंध  
 ना च्यार प्रकार, प्रकृति विई अनुजाग प्रदेस जेदें निरधार ॥ २० ॥  
 अणसण उणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सख्खीनता  
 बाहिर तप पर जाग ॥ पायच्छित्त विनय वेयावच्च तेम सिज्जाय,  
 ध्यान काजसग अन्धंतर तप पर विध आय ॥ २१ ॥ प्रकृतिमु  
 जाव काल अवधारण थित्ति निरबंध, अनुजागे रस तेम प्रसेदे दल

मो संव ॥ पट प्रतिहार धार तरवार मद्य वलि तेम, निगम चित्र  
 कर कुंजकार जंकारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आव नामना ज्ञाप्या  
 जे जे ज्ञाव, तिम ज्ञानावरणादिक अरुना एह सज्ञाव ॥ इम संसेपे  
 विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावै पांश्यो वरण वस्युं हिव मोख  
 तत्त ॥ २३ ॥ संत पदै परूपण इव्य नै खेत्र प्रमाण, फरसन काल  
 पांचमो ठठो अंतर जाण ॥ ज्ञाग सातमो ज्ञाव आव तिम अल्प  
 बहुत्त ॥ ए नव जेदें ज्ञावन कस्युं नवनो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक  
 पदवी ठै जे पदेअविनाज्ञाव, व्योम कुसुम तिम ललिक शृंग जिम  
 नहीय अज्ञाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मंगल द्वार, विवरण  
 कर वरणवस्युं सुणज्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तै कायक सन्नी  
 असन्नी येसन्नि, अणहारी आहारी अणहारी ऊपन्न घ्य प्रमाणे सिद्ध  
 जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम ज्ञाग एग सिद्ध होय अणंत ॥  
 २६ ॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती  
 थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां ज्ञावै नहि सिद्धां अं  
 तर जोय, सरब जीवथी ज्ञाग अनंतम सहू सिद्ध होय ॥ २७ ॥  
 दंशण नाण जेहने बे ते कायक ज्ञाव, जीवत जेहने वलि परणाम  
 क ज्ञाव समाव ॥ सहुथी धोमा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेहथी  
 थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक  
 नव तत्त तस सम्मत्तं, अणजाणंताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरब  
 जिनेसर मुखथी ज्ञाप्या वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संमत  
 निञ्चल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अ  
 र्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उसप्पणिय अणंते इग  
 पुग्गल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तदगुण वयण प्रगट्ट ॥ ३०  
 ॥ इम नव तत्त जेद पमिजेद विवरण कीध, आवक आग्रह कीन  
 सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गण सुज्ज सदन प्रकास नदी उपमान,

श्रीजिनलाभचंद्र कुल पूनमचंद्र समान ॥ ३१ ॥ अग्र्यानादिक  
करिवर सिंदे वयरी साख, रत्नराजमुनि ते वृत्ताखाणी पम्पिताख ॥  
ग्यानसार ते पम्पिताखाणी सुखम माल, ए नव पद नव रयणे  
विनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवत्तर निश्चय नय विगई प्रवचन  
माय, परम सिद्धि पद वाम गतें ए अंक गिणाय ॥ माघ कितन  
सति वार मेरु तिथ परन कीथ, च्यार कथा तजि तत्वकथा जज  
नर फल लीथ ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व ज्ञापागर्भित स्तवनं ॥

॥ अय दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ रूपज्ञादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥  
दंरुक रचनायें तवुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंरुक  
प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणें  
अणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आउ तेउ वलि, वाउ वणस्सइ काय ॥ वि  
ति चौरिंदी गप्पथर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस  
वेमाणिया, ए दंरुक चोवीस ॥ एहना चार कहुं हिवै, गणनाये  
ते वीस ॥ ४ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देखी ॥

सरीर उगाइण संघयणेंसणा संगण, कोहाई लेसिंदिय दो  
समुग्घाय प्रमाण ॥ दिठी दंसण नाण जोग तिम वलि उवयोग,  
उपपात वलि चवण ठिई पऊत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार  
सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा उगनो ए अरथ कह्यो संकेव ॥  
दिव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुची हुं तेहयो  
रुहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ जी ॥ देसी सुरती मरीनानी ॥

चौ गप्पथ तिरि वाऊ कायें च्यार सरीर, मनुष्य सें पांच  
दंरुक इगवीस रह्या ति सरीर ॥ थावर च्यारनें जघन्य उक्कोसे देइ

प्रमाण, ज्ञाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो  
 जघन्य स्वजावक अंगुल ज्ञाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने  
 विहात ॥ सुरनो सात हाथ गण्य तिरि वणरसय काय, जोयण  
 सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाउ  
 बेइंदी जोयण बार, एग जोयण चउरेंडी देह उंचै आकार ॥ आरंज  
 कालै वैक्रिय देहनो ए परिमाण, ज्ञाग एक इग अंगुलनो संख्या-  
 तम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख,  
 नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ साजावकथी डगणो नारक  
 वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥  
 सुरनें पद एक उक्कोसविजवण काल, विगल संघयणी थावर सुर  
 नारकनी माल ॥ गण्य नर तिरनें षम विगलनें ठेवठ एक, सरब  
 जीवनें च्यार दसेससाये लेष ॥ ५ ॥ नर तिरनें षम सुरनें सम-  
 चौरंस संठाण, हुंरुग इग नारग विगलेंडी सूत्र प्रमाण, नाणाविह  
 धयसूर्मरनी चंड आकार, वणसइ वाऊ तेऊ नू बुदबुद अप्पा-  
 कार ॥ ६ ॥ सहनें च्यार कसाय गण्य षम नर तिरि दोय, वेमा-  
 णिय नारग तेऊ वाऊ विगल त्रिक होय ॥ जोयसि तेऊ लेसा सेस  
 रह्या ने च्यार, दार इंडियनो सुगम तेहनो स्थुं विसतार ॥ ७ ॥  
 समुद्धात सग नरनें पण गण्य तिरि देव, नरग वायुनें च्यार  
 सेसनें तीनुं जेव ॥ दिठी दोय विगलमें थावरने भिष्ठ्यात, सेसने  
 तीन दिठि जिम प्रवचनमें विहात ॥ ८ ॥ थावर बि ति नें एक अच-  
 स्कू दंसण होय, चौरिंडी ते चस्कू अचस्कू दंसण होय ॥ मनुजने  
 च्यार सेस दंरुगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर  
 नारगनें तीन ॥ ९ ॥ थावर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण,  
 गण्य मणुनें तीन अनाणनें पांचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें  
 तरै जोग, मनुजनें च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाङ्मकायने पांच तीन आवर संयोग, मनुजने वार नरग तिर देवने  
 नव उपयोग ॥ विगल डुगै पण परु चौरिंडी आवर तीन, उववाय  
 इग चवण दार दोनुं संमकीन ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात असंख्या  
 चवण पपात, गप्रय तिरि विकलेडी नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ  
 अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत  
 तेम उपजंत ॥ १२ ॥ वावीस सात तीन दस वरस सहस उक्किठ,  
 वणस्सइ च्यारने तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पळ्य  
 सुर नारग अवर तेतीस, व्यंतर पळ्य अधिक लख वरय पळ्य  
 जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसने इक सागर अधिको आय, देसें  
 ऊणा दोय पळ्यनो नवेय निकाय ॥ विगलने वार वरस गुणाचास  
 दिवस ठम्मास ॥ अंतमुहुचजइने पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥  
 जुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पळ्य तेना अमंस वेमा-  
 णियं जोइस धार; सुर नर तिरि नारगने पठ आवरने च्यार ॥ विग-  
 लने पंच पळ्ळती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरव जीवने होय ठए  
 दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सव मजार,  
 दीह कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलने हेउ पणसा  
 सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गप्रय मणुजने दीह कालकी सन्ना  
 होय, केशक आचारज कहे दिठियायथी दोय ॥ निच्चय पळ्ळता पं-  
 चिंदि तिरि नर जेह, चौविह देवां माहे आर्वी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥  
 संखानुपळ्ळत पंचेदी तिरि नर तेम, पळ्ळता नू दग पचेय वणस्सइ  
 जेम ॥ ए सरवेमे निअै सुरनी आगति हुंति, पळ्ळत संख गप्रय  
 तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वरत्या नर तिर  
 उपजै न हुवे सेत, नू अप्प वणस्सइमे नरग विण उपजै असेस ॥  
 पुढवाई दस पयमे नू आज वणजंति, पुढवाई दस पयमे तेउ वाऊ  
 उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पद नवमे हुंत, पुढ-



वाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति  
 मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊथी मरने जीव मनुज नवि थाय  
 ॥ २० ॥ थीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल  
 नारकनें एक नपुंसक जेद ॥ पऊत्ता मणु वादर अगन वेमाणिक  
 तेम जवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम ॥ १ ॥ वेइंडी तेइंडी  
 पृथवी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥  
 हे जिन ए सहु जावमें पांभ्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिलातां  
 किमही न आवै अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंरुगमें ते गति  
 संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण  
 दंसण लहि विस्त न पांभी सूल, ते सुर जात सहावे देसविरत  
 प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु नपदेस, तेहथी  
 तुह दरसणनो किंचित पांभ्यो देस ॥ धारक तारक कारक वारक  
 दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥  
 खरतर गच्च जट्टारक श्रीजिनलाज सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना  
 पइ अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तमु सीस, तेण तव्या  
 तेवीस दार दंरुग चौवीस ॥ २५ ॥ संवत ससि रत्त वारण तेम  
 चंद निरधार, पोस मास पख उऊल सातसनें सोमवार ॥ श्रावक  
 आयहथी ए कीनो अल्प विचार, अब्म चौमासो कर जैपुर नगर  
 मजार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंरुग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ डुहा ॥ जुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥

कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा संसारी जीव डु जेद, सत्ता जिनै सिइ अनं-  
 तै रूप अजेदा ॥ संसारी थावर इग तिम त्रस दोय प्रकार, जु अप वाज

तेन वणस्सइ थावर धार ॥ १ ॥ फिटक रयण मणि विड्म दिगुल वलि  
 हरियाल, मनसिल पारो सुवरेण आदि धातुनी माल ॥ सेंढी वन्नी  
 अरणेटो पालेवो पापाण ॥ जोमल तूरी उंस जूमि पाइण जे खाण  
 ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विवेद ॥ जूमि आकास  
 उंस हिम करंग आऊना जेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धू  
 अर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाइण जेम ॥ ३ ॥  
 अंगारा जाला जोजर तिम जलकापात, असण कणग विद्युतादिक  
 अग्नि जीव विज्ञात ॥ उग्रामगजकलिका मन्तल वलि मुख वात,  
 सुद्ध गुंज तिम घण तणु वाऊ जेदे ज्ञात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तय  
 वणस्सइ जीव उ जेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कं  
 दा अंकुर कूपल फूलण वलि जंवाल, जूफोना अदत्तिय सरवे जे फ  
 ल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वायलो थेग पालंको साग, गुपत  
 सिरा सांथा गांठा ज्ञांजे संम ज्ञाग ॥ कांटी माले जूमिमें रोण्या पल्ल  
 च थाय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरी रे  
 एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल ठाल फल मूल काठ बीजै जिये एका  
 वण पत्तय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमुं  
 दुत्तै आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते निचमा दिढी निजर न होय, लोको  
 लोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय ॥ कवनी संख गंगोला लहिगा  
 लटनी जात, चंदन काअलसीमेहरजोका विज्ञात ॥ ८ ॥ माय वी  
 हाक्रम पौरादिक वेईडी होय, गोमी माकण जूआ कीमा कीमी दोय  
 ॥ दीपक ईली धीवेली गोमीना जात, चरम जू कागादहिया गोवर  
 कम उतपात ॥ ९ ॥ धनकीमा जिम चोरकीमा गोवालो तेह, ईली  
 कंधुक इंडगोप तेईडी एह ॥ बीठू ठंकण जमरा जमरी ईडी क्यार,  
 तीमा माखी मांस मन्नर कंतारी धार ॥ १० ॥ कवन्मोला मांक  
 निय पतंग इत्यादिक जेद, नारक तिरि मणु देव पंचेडी च्यार विघेदां

धम्ममा वंसी भेला अंजन रिठा हात, मधा माधवई नारंग ए नामे  
 सात ॥११॥ जलचारी अलचार। नजचारी तिरवंच, मच्च कच्च सुस-  
 मार मगर गाहा जल अंच ॥ चौपय नरपरि नुजचरि साप नुचारी  
 तेव, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय ॥१२॥ खेचर चरम  
 रोम पंखी चमचेरु कपोत, मनुजलोकथी वाहिर समुग विगय पंख  
 होत ॥ मखे जल अल खेचर समुहम गप्रय दोय, कम्म अकम्म नूमि  
 अंतर देवा मणु जोय ॥१३॥ असुरादिक दस होय वाण व्यंतरिया अठ  
 जोइस पंच वेमाणिय डुविहासु ते दिव ॥ पनरे जेदे सिद्ध कह्या ए  
 जीव प्रकार, तनु मानादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकार ॥१४॥ देह  
 आनखो एक सरीरे अितनो मान, प्राण जेहने जेता तिम वलि योन  
 प्रमाण ॥ अंगुल जाग असंख सहू एगिंदी काय, जोयण सहस साधिक  
 पत्तेय वणस्सई काय ॥१५॥ वि तिचनेई अनुक्रम उक्किव देह ऊंचास,  
 वारि जोयण तीन गाज इग जोयण जास ॥ सत्तमना नेरइया धणु  
 सय पंच प्रमाण, तेहथी अरथ २ ऊशा अनुक्रम रयणाण ॥१६॥ जो  
 यण सहस गप्रथर मच्च नरगनो देह, गाज धणुअ पुहत्त नुचारी पं  
 खी जेह खेचर नव धणु नरग नुयंग जोयण नव होय, नव गाज  
 परिमाण समुहम चौपय सोय ॥ १७ ॥ खरु गाज उंचास चउप  
 य गप्रय मांण, तीन कोस उक्कोस मनुजनो काय प्रमाण ॥ नुवन  
 अंतर जोइस वेमाणिय ईसाणंत, सात हाथ उक्कोसै ऊंचपणै तण  
 हुंत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेई परु ब्रह्म लांतरु पांच, शुक स  
 हस्रि उक्कोस उधार कर वांच ॥ अणत प्राणत अरत अच्युत हाथे  
 तीन, नवत्रैवेयक दोय पंचाणु तर इग लीन ॥१९॥ बावीस सात तीन  
 दस वरस सहस्से आय नू आजु वाऊ वणती दिन तेऊकाय ॥ बार  
 वरस गुणचास दिवस तिम वलि ठम्मास, अनुक्रम बेइंडी तेइ  
 चौरिंडी रास ॥ २० ॥ सुर नारंग तेतीस अथर उक्कोसें आय, चौपय

तिरिथ मनुजनौ तीन पढ्योपम थाय ॥ जलचर उरपर जुजपर  
 उक्तासे पुबकोनि, पंखीने इग जग असंख्य पढ्यनो जोरु ॥ २१ ॥  
 सरव सूखम साधारण समूहम मणुं जेह, जंहन उक्तासे अंतमुहुत्त  
 नियम थिति तेह, इम उगाहण आख्यो संखेपै अधिकार, जे वलि  
 इत्य वितेस वितेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य उत्तपिणी सहुं  
 एगिंडी आपणी काय, उपजै चवै अनंत साधारण वणस्सई काय ॥  
 संख्याता संवहर विगल आपणी देह, सात आठ नव पंचेडी तिरि  
 मणुआ जेह ॥ २३ ॥ नारकथी उदवरती जीव नरक नवि जाय,  
 देव चवीने ते वलि देवपणे नवि थाय ॥ इंडिय सासोसास आउ  
 बल ए दस प्राण, च्यार ठ सात आठ इग डु ति चौरिंडीय जौण  
 ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेडी दस नव अनुक्रम जोय, प्राणश्रकी  
 जेव प्रयोग जिय मरणे होय ॥ ज्ञोम सायर संसार अपार अनंती  
 वार, जमियो जीव यरम विन जोण असीने च्यार ॥ २५ ॥ सग सग  
 सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवदे  
 लख सूत्रे लाख ॥ नू अप तेउ वाऊ वणयत्तेय साधार, वि ति चो  
 पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न आथ न  
 पाण न जोणी कुल नही जात, सादि अनंत जंग जिन आगम थित  
 विहात ॥ रोग न सोग न जोग जोग नही नारी लिंग, नहीय नपु-  
 सक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाण दरस चारित वीरज  
 ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेहथी सिद्धांतै सिद्ध कहंत ॥ इम ए  
 जीवविचार गाथाथी ज्ञापारूप श्रावक, आग्रहथी में कीनो सुगम  
 सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गद्य जटारक थ्री जिनलाज सूरीत,  
 रत्नराज गणि ग्यानसार मुनि सीत जगीत ॥ संवत सति रत  
 वारण सतिहर धर निरधार, माघ चोथ दिन कीनो जैपुर नगर  
 मजार ॥ २९ ॥ इति श्री जीवविचार स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ समवसरण विचारगर्षित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणद ॥  
प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंद्र ॥ १ ॥ तीर्थकर आवे  
तिहां, त्रिगणो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह कहुं  
अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकित्ती, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥  
सूर्य देख हरखे सहू, जिम अंधारे धूक ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर बखाणी राणी चेलणा ॥ ए देसी ॥

आप अरिहंत जलै आविया जी, गावै अपठरह गंधर्व ॥  
समवसरण रचै सुरवराजी, संखेपे ते कहुं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥  
जुवनपति वीस इंद्रै मिढ्या जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस ड  
दस वेमाणिय जुग्या जी, चौसठ इंद्र सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥  
पवन सुर पूंज परमारजै जी, जूमि योजन सम जान ॥ मेघकुमर  
रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिरुकाव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर  
सुज धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर हिव वेगसूं  
जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण  
नरध मुखै जी, वरषए जाणु प्रसाण ॥ जवणवइ देव त्रिगणो जलो  
जी, करय ते सुणउ सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा-  
तणो जी, सोवन कांगरै सार ॥ रवि सति रयण कोसीसको जी,  
कनकनो वीच प्राकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरै जी,  
रचय वेमाणि सुरराज ॥ जलो त्रीजो गढ ज्रीतरे जी, जिहां विराजै  
जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ ज्रीत उंची धणुं पांचसै जी, सवा-  
तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौढ पचास  
धणु च्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहुं गढ तणो जी, पावनी  
वीस हजार ॥ याक अम नहिय चढतां थकां जी, एक कर उच्च  
विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथ्वीथकी जी, उच्च

रहे त्रिगद आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसे जी, नगर  
 आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं १ दिस तिहां जी,  
 नीजमणि मोर निर्माण ॥ इसय धणु मध्य मणि पीठका जी,  
 उंच जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ ज्यार आसण तिहां  
 चिहुं दिते जी, मोतीयें जाकजमाल ॥ संम विच कूण ईसाणमें  
 जी, देवचंदो सुविताल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवउंडुजि नाद उपदिसै  
 जी, जिने गुण गावसी तेह ॥ अह्न जिम आइ सिर ऊपरे जी,  
 गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ बाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुढ दिसि आसणे आय वसे पदू, सुर रुत चौमुख रूप देखै सहू  
 ॥ दीपे असोक तस वारगुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम  
 मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जाति त्रिण वत्र सुविताल ए, रूप चि  
 हुं १ दिसै चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वाण श्री जिनतणी,  
 जगवंत उपदिसै वार परपद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग  
 निकूणें करी, गणवर साधची तिम वेमोणिय सुरी ॥ ज्योतपी जु  
 वणनी वितरी स्त्रीणें, नैरुतकूण जिनवाण ऊजी सुणे ॥ त्रिहंत  
 णा पति वायवकुणमें जाण ए, सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए  
 ॥ वारहं परखदा मद मन्नर गोरु ए, नूख त्रिस विसरै सुणै कर जोरु  
 ए ॥ १९ ॥ पूढ जामरुल तेज प्रकास ए, जोयण सहस ध्वज उं  
 च आकास ए, ऊलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहू  
 वारणें धूपधाणां सही ॥ २० ॥ वाइण बहिल सहू धरिय पहिले  
 गढै, दोय पगचार नर नार उंचा चढै ॥ जिनतणी वाणि सुणि  
 जीव तिरयंच ए, वैर तजि वीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥  
 पुन्यवंत पुरुष ते परपद वारमें, सुणें जिनवाणि धन गणिय अत्र  
 तारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी मांदिखी प्रौल

माहे वसै ॥ २२ ॥ चिहुं दिसि वाटली वावि चौ जाणिये, विदिसि  
 चौ कूण दोय २ वखाणिये ॥ आठ जिहां वावि जल अमृत जेम ए,  
 स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयंत अप  
 राजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुंबरु पुरुष खट्टंग अ  
 र्चि माल ए, रजतगढ प्रौलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो  
 त्रिगणो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्दिक रचै तिण गंम ए ॥  
 करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही  
 होय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणी रुदि दीगी जियै, तेह ध  
 धन धन्न अवतार पायो तियै ॥ पास अरदास सुणी वंठित पूरज्यो,  
 हिव मुऊ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै रुदि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ सर-  
 वहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी ॥ प्रकरण सिध्दांत  
 गुरु परंपर सुणी सहू अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म  
 वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवनं ॥

॥ अथ श्री रूपभेदेवजी सुण २ सैत्रुंज स्तवन लि० ॥

॥ ढाल ॥ पाटोधरजी पाटियै पधारो ॥ ए देशी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी, हूं  
 तो अरज कहुं सिरनांमी ॥ रूपानिध विनती अवधारो, जवसायर  
 पार उतारो, निज सेवक वांन वधारो ॥ क० ॥ १ ॥ प्रभू मूरति  
 मोहनगारी, निरख्यां हरखै नर नारी, जानं वारी हुं वार हजारी  
 क० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजै, मुऊ ऊपर महिर धरीजै,  
 विल रंजन दरसन दीजै ॥ क० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया,  
 जवरेना पातिक टलिया, प्रभु जो मुऊसै मुख मिलिया ॥ क० ॥  
 ॥ ४ ॥ समरथा संकट टलि जावै, नव नव नित मंगल आवै, मुऊ

श्रान्तम पुन्य ज्ञरावै ॥ क० ॥ ५ ॥ करजोमी वीनंती कीजै, केंसर  
 चंदन चरचीजै, दिन धन २ तेह गिणीजै ॥ क० ॥ ६ ॥ प्रजु दरस  
 सरस लहि तोरो, अति हरपित हुवो चित मोरो, जिम दीछा चंद  
 चकोरो ॥ क० ॥ ७ ॥ परतिख प्रजु पंचम आरै, वीस माहा जय  
 संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ क० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि  
 सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर काई, वाधै संपत शोज सवाई ॥  
 ॥ क० ॥ ९ ॥ नाजिराय कुलंवर चंदा, जव जन मन नयण आनंदा,  
 उलगै सुर असुर सुरिंदा ॥ क० ॥ १० ॥ जयकारी रिपज जिनंदा,  
 प्रह सम घर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन जक्ति सूरिंदा ॥ क० ॥ ११ ॥  
 इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ दाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवनीपुर मंरुण गुण निलो  
 ए, तवन करिस प्रजु ताहरो ए, मन वंजित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥  
 नयरी नांम वणारसी ए, सुरनयरी जिण रुद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी  
 बै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु  
 घर नार ए तसु गुणहि न लपै पार ए ॥ तास उयर अवतार ए,  
 तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए,  
 अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूठै चूपतिने कह्या ए,  
 करजोनि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ दाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ वीजै  
 वृषज ऊदार, घरणी जिण धरघो जार ॥ ५ ॥ तीजै सिंह प्रधान,  
 जसु बल कोय न मान ॥ चउथे देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुर सेवी  
 ॥ ६ ॥ पांचमै पुष्कनी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ ठै दीठो



ए चंद्र, ग्रहण करो ए इंद्र ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो  
 अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥  
 नवमें पूरण कूंज, जरियो निरमल अंज ॥ देखि सरोवर दसमें,  
 मनह अयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें ठामें, खीरजलधि  
 इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥  
 तेरम रतननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें  
 ए दीणे, पातिक धूमथी नीणे ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरखयो  
 जूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, आस्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत  
 तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण,  
 आवी मंदिर ऊत्ति ॥ देव सुगुठ कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ  
 ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीथा सुपन विचार ॥ ते घर  
 पहुता आपणै, दीथां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

हिव जनम्या जगगुरुजगत्र अयो जयकार, खिण इक नारकिये  
 पायो सुक अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीथ,  
 कर आनक पोहती वंठित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोसठ  
 इंद्र मिली तिहां आवै, लेइ निज जकै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ क  
 री जनम महोच्चव जननी पासै ठावै, तिहांथी सुर सब मिल ही  
 प नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रथण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार,  
 घर ९ गाईजै कीजै मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार,  
 तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रज्नु वाधै दिन २ कला  
 करी जिम चंद्र, त्रिहुं ज्ञान विराजितरूप जिसो देविंद ॥ गुणकला  
 विचक्षण विद्यातणो निधान, जोवनवय आयो परणायो राजान ॥ १९

॥ बाल ४ ॥

कुमरपद प्रचु रहतां काल सुखै गमै ए, आयो मन वैराग  
 संजम लेवा समै ए ॥ तव लोकांतिक देव जणावै श्रवसरू ए, देइ  
 संवञ्चरी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ १० ॥ स्वामी संजम लेय  
 इंद्रादिक सब मिढ्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदढ्या  
 ए, पांश्रीय केवलज्ञान सुरै महिमा करी ए, धापीय चौविह संघ  
 सुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ बाल ५ ॥

इम श्री गौनीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह  
 परलोग सुवंगित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवनीपुर जावै,  
 चोर धारु संकट टलै विघन धुराह न आवै ॥ २२ ॥ धरणराय  
 प्रभमावइ जास वहे सिर आण, सांमल वरण सुसोजित नव कर  
 काय प्रमाण ॥ कटपट्टक चिंतामणि कामगवी सम तोलै, श्री गुण-  
 शेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ २३ ॥ इति श्री गोनी पार्श्व-  
 जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

भंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु  
 अजित जिनंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ विहुं जिनवर  
 प्रणमेव ए, विहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यजंनार जरेसु ए,  
 मानव जव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोरुहि लाख पचास ए, सागर  
 जिनसासण ज्ञास ए, रित्तिह जिनेसर बंस ए, उवहाय सरोवर  
 हंस ए ॥ ३ ॥ इण श्रवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां  
 गाजियो ए ॥ विजया तसु धरनार ए, विहुं रमयति पासा सार ए  
 ॥ ४ ॥ कूखहि जिन श्रवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ उयर  
 वरयो दस मास ए, प्रचू पूरी जननी श्रास ए ॥ ५ ॥ विहुं जण

मन आंशुदियो ए, सुत नाम अजिय जिय तो दियो ए ॥ तिहुअण  
 सयल उवाह ए, क्रम २ वाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस  
 तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति चाँलै  
 गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समौ सं  
 सार ए, वलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखी गज गहगह्यो ए,  
 लंठन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो  
 ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधै सब काज ए, प्रभु  
 पाँलै पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ हिव हयणापुर ठाम ए, विश्व  
 सेन नरेश्वर नाम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे वेव  
 ए ॥ १० ॥ चवदह सुपने परवरयो ए, अचिरा उयरे सुत अवत  
 र्यो ए ॥ मानव देव वखाणियो ए, चक्कीसर जियवर जाणियो  
 ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिस नाम दियो श्रीशांत ए  
 ॥ जिन गुण कुण जाणै कही ए, त्रिहुं जुवणे तसु उपम नही ए  
 ॥ १२ ॥ नयण सलूयो हिरणलो ए, वन सिंहे बीहै एकलो ए ॥  
 नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गी  
 तहि राग सु रंग ए, पिण पन्नलै लोक कुरंग ए ॥ तो उलंग्यो स  
 सि संक ए ॥ तिण पांभ्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग  
 अति खलजळ्यो ए, नय जंजण सांमि सांजळ्यो ए ॥ आणंदियो  
 मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंठन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति  
 परणे घणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल उल आ  
 यण जोगवे ए, पीय राज जळी पर जोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर त  
 लें मंजल समें ए, पंचास सहस वरसां नमे ए ॥ तो तेजै दिणय  
 र जिसो ए, ऊपन्नो चकरयल तिसो ए ॥ १७ ॥ साधी जरह उ  
 खंन ए, वरतावी आण अखंन ए ॥ चवद रयण नव निहि सही  
 ए, वसु सोल सहस जखै अही ए ॥ १८ ॥ सहस बहुतर पुर

वरा ए, वत्तीस मौनवद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोरु ए, विन्ना  
 वे नमै वे कर जोरु ए ॥ १९ ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख  
 चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र धमधमै ए, वत्तीस  
 सहस्र नाटिक रमै ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्षण ला  
 वण्य लाला जरी ए ॥ जंगम सोहग देहरी ए, एसी चौसठ सह  
 सः अंतेजरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रुद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र  
 यण जंकार ए ॥ ते कहिवा कुण जाण ए, वपुवपुरे पुण्य प्रमाण  
 ए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चौथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस  
 सहस्र पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए ॥ २३ ॥ इण पर विहुं  
 तीर्थकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए  
 सार ए, विहुं लोभो संजम जार ए ॥ २४ ॥ विहुं खम दम धीर  
 ज धरी ए, विहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ विहुं जिन ज्ञाण  
 समाण ए, विहुं पांम्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ विहुं देवहि कोरु  
 हिमहि ए, विहुं चौतीसै अतिसय सहि ए ॥ समवसरण विहुं ठाण  
 ए, विहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेजरी ए,  
 विहुं आगलि इंड अंतेजरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि  
 गुण गावै सुरवहू ए ॥ २७ ॥ विहुं सिर उत्र चमर विमल, विहुं  
 पग तल नव सोवन कमल ॥ विहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग  
 न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ विहुं उवयार जुवन जरी ए, विहुं  
 सिद्ध रमणसुं परवरी ए, विहुं जंजी जव फंद ए, विहुं उदयो  
 प्रमाणंद ए ॥ २९ ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जाणो चिंतामण सुर  
 तरु समो ए ॥ शुणि अति संऊ विहाण ए, तिहां इह परजव नवि  
 हांण ए ॥ ३० ॥ विहुं उज्जव मंगल करण, विहुं संघ सयल डुरिय  
 हरण ॥ विहुं वर कमल नयण वयण, विहुं श्रीजिनराज जुवण  
 रयण ॥ ३१ ॥ इम जगते जोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण शुभ ज्ञानि ए ॥ सरण बिहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदन  
जवजाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान  
क्रिया जिण उपदिती जी, सब सुख तणो उपाय ॥ जविक जन  
धर श्रीजिन उपदेस, ठूटे कर्म कलेस ॥ ज० ॥ अंकणी ॥ पडिलेहण  
मुहपत्ती तणी जी, जाखी ठै पचवीस ॥ तिहां ए जाव विचारिये  
जी, इम जाखै जगदीस ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रथम बे पास विलोकिये  
जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पडिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी  
पुष्टि ॥ ज० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननो  
त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥  
ज० ॥ सीष वधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव  
अखोमा आदरो जी, नव पखोमा गमाउ ॥ ५ ॥ ज० ॥ देवतत्व  
गुरुतत्वसूं जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी,  
तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ ज० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी,  
संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अव-  
धार ॥ ज० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति गृहीजे  
शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जाणनें जी, तीने वंरु विशुद्ध ॥ ज० ॥ ८ ॥  
पडिलेहण पचवीस ए जी, मुंहपत्तीनी सार ॥ हिव पडिलेहण  
अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ ज० ॥ ९ ॥ हास्य अरति  
रति धोयनें जी, सुद्ध करो वांम वाह ॥ तज जय शोक दुगंठना  
जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ ज० ॥ धुरली लेस्या तीन  
ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि  
मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ ज० ॥ काढ सख्य तीन उरथकी जी, मा

या नियाण भिग्घात ॥ च्यार कपाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करा  
 घात ॥ १२ ॥ ज० ॥ तज खटकाय विरावना जी, चरण विन्दे सुद्ध  
 दोष ॥ ए पन्विलेदण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ ज० ॥  
 इम पन्विलेदण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै  
 करै जी, पांमै सुक्क अनेक ॥ १४ ॥ ज० ॥ कलस ॥ इम वीर जिन-  
 वरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांजली ॥ कदै सूत्रवांणी मन सुद्धा-  
 णी, सुणो जवियण मन रली ॥ उवझाय वर श्रीलङ्घिकीरत, मुख-  
 थकी ए संप्रदी ॥ मुंढपती पन्विलेदण तणी विध, लङ्घिकीरत गणि  
 कदी ॥ इति श्रीमुद्दपती पन्विलेदण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ द्वाच ॥ सफल संसारनी ॥ ए देत्री ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद उपगार  
 थायै घणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांजली, लद्धिय समकित  
 अने विरति लद्धिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप खप  
 करै, जिणथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागी जिके गुरुमुख  
 आलोइयै, जीव निमले हुवै वल्ल जिम घोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे  
 तिके चार प्रकारना, धुरथकी नाम नै अरथ ते धारणा ॥ फिणदी  
 कारण वसै पाप जे कीजियै, प्रथम ते नाम संकप्प कहीजियै ॥ ३ ॥  
 कीजीये जेह कंदर्प प्रमुखै करी, दोष तेवीप परमाद संजा घर ॥  
 कूदतां गर्वतां दोष दिंसा जिदां, दर्प इण नाम करि दोष तीजो  
 तिदां ॥ ४ ॥ विणततां जीव जीवनेगिनर करे जिहो, चोथौ थाकु-  
 टिया दोष ऊपजै तिको ॥ अनुक्रमे च्यार ए अधिक एक एकथी,  
 दोष धर मायच्चिन लेद विवेकथी ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्यानना उपगण-  
तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमठ एकासणो आंबिल  
उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु वताई तास ॥ ६ ॥ ए  
जो खंमिंत आयै अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां  
दोष सहू मिट जाय ॥ थापना अणपमिलेह्यां पुरिमठनो तप धार,  
गिरतां एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार  
तिहां पुरमठ जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं जेदं मन्न ॥  
आशातन गुरु देवनी साहमीसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी  
आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंज विणास्यां चोथ  
प्रसिद्ध, वि ति चनेंई त्रसायां एकासणथी वृद्ध ॥ बहु वि ति चौरै-  
दिय हण्यां वि ति चउ उपवास, संकटपादि चिहुं विधि उगुणा  
उगुण प्रकास ॥ ९ ॥ उदेही कुलियावना कीनी नगरा जंग, बहुत  
जलोयां मूक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमि पातन  
आंबिल इक एक, जीवांणी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥  
संकटपादिक एक पंचेंडी उपडव होय, दोइ त्रिण आठ दसै उपवासै  
आलोयण जोइ, बहु पंचेंडी उपडव ठठ अठनें दस वीस ॥ चिहुं  
प्रकारै चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंडीनें लकनी  
प्रमुखै कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास नें ठठ विचार ॥ साथ  
समहें लोक समहें राज समह, कुना आल दियां दुइ चौथरु ठठ  
प्रत्यह ॥ १२ ॥ उपवास दस दंमायां तेम मरायां वीस, इक लरु  
असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लरु  
इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास  
॥ १३ ॥ सूआवना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन  
कीधां बहु असतीने पोस ॥ करीय उवात्तस बार हजार गुणो नव

कार, मित्राङ्कुर देइ आलोचो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ वे कर जोडी ताम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीथा पञ्चखाण, विण दीथां वांदणा, पम्कमणा  
विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें अस्तिझाय, तिहा अविधै ज्ञेया, इ  
कश् आंविळ आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निवी आंविळ, ज्ञां  
नै आलोचना इमें ए ॥ एक पांच पट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण  
नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास जंग उपवास, आंविळ ऊप  
रां, अधिको दंरु वखाणिये ए ॥ पांचम आठम आदि, जंग कियां  
वली, फिर ग्रही पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग,  
चूले घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी  
तुरी, आंविळ चढता आदरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री  
जोजन, जल तिरणो खेळण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परडोह  
चींतव्या, उपवास एक२ जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनेर करमांदान,  
नियम करी जंग, मथ मांस माखण जख्या ए ॥ आलोचना उ  
पवास, संकप्पादिक, चिहुं जेदे चढतां लिख्या ए ॥ २० ॥ बोढ्या  
मिरखावाद, अदत्तां दांत त्युं, जघन्य एकासण जाणाये ए ॥ अति  
उल्कष्टी एण, जाण आलोचना, उपवास दत्त२ आणियै ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत जागे अतीचार, जघन्य ठढ आलोचना धार ॥  
मध्ये दस उपवास विचार, उल्कष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥  
परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे जंग ॥ च्यार सिद्धा  
व्रतने अतिचारे, आंविळ त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी  
नववामि क्हाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फस्त  
हुआं अविचेके, एक आंविळ कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधुअने थावक  
पोसाध, एकैडी सञ्चित संघटे कीव ॥ बीसर जाले सञ्चित जल पी



ध, दंरु एकासण आंबिल दीध ॥ १५ ॥ विण धोयां विण लूह्यां  
पात्रै, एकासण तिम पुरिमद्ध मात्रै ॥ गइ मुहपत्ती आंबिल सारो,  
तिम नुवै अठम अवधारो ॥ २६ ॥ ब्यार आगार ठीसो राखै, व्रत  
पञ्चखाण करै षट् साखै ॥ दोषे मिठामिडुकरु दाखै, आलोयण  
लेतां अज्जिदाखै ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहिता  
नावै पार ॥ तोपिण संकेपै तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि  
स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वांमी, जसु आगम वचने  
विधि पांमी ॥ जीतकटप ठाणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २९

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयने ॥ ए  
कांत पूवै गुरु वतावै, शक्ति वय तसु जोयने ॥ विध एह करसी  
तेह तिरसी, धरमवंततणै धुरै ॥ ए तवन श्रीधरमसिंह कीधो, चौ  
पने फल वधी पुरै ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वीप स्तवनं ॥

नंदीसर बावन जिनालय, साश्वता चोमुख सोहे रे ॥ रुष  
ज्ञानन चंडानन वारिषेण, वर्द्धमान मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥  
आठमो द्वीप नंदीसर अदञ्जुत, बलयाकार विराजै रे ॥ तेहनेमध्य  
चिहुं दिस सोजित, अंजन गिरिवर ठाजै रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण  
सहस चोरासी ऊंचा, ऊंचपणे अज्जिरामा रे ॥ मूलै प्रथुल सहस  
दस जोयण, उवरि सहस कर ॥ ३ ॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद  
प्रज्ञूना, अति उत्तंग उदारा रे ॥ साधू जंवा विद्याचारण, वांदे वि  
विध प्रकारा रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यैश् इकसो चोवीस, बिंब संख्या  
सब दाखी रे ॥ ध्यावो सेवो ज्जविजन ज्जगते, सुध आगम कर सा  
खी रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंचपणे सहस जोयण बहुत्तर, सो जोयण  
आयामा रे ॥ पिहुलपणे पचास जोयणना, प्रज्ञूप्रासाद सुगामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयत प्रज्जुनी, विविध रतनमई कायां  
 रे ॥ जिन कल्याणक उन्नव करवा, सुरपति ज्ञेके आया रे ॥ नं०  
 ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं उवैरे, चोमुख ब्यार विसाला रे ॥  
 वाव२ विच इकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चो  
 सठ सहस जोयण उचंगै, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दि  
 सि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥  
 ९ ॥ वाव२ नै अंतर विदसै, रतिकर परवत रूमारे ॥ दोय२ संख्या  
 जगदीसै, कल्या नही ए कूना रे ॥ नं० ॥ १० ॥ जोयण सहस मानदस  
 कंचा, दस२ सहस विस्तारारे ॥ ऊल्लरिसम संगण जगत गुरु, नि  
 अय ए निरधारघा रे ॥ नं० ॥ ११ ॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण,  
 अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपनिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिन  
 राज वखाणै रे ॥ नं० ॥ १२ ॥ इम प्रासाद प्रज्जुना वावन, नंदीसर  
 वर दीपे रे ॥ इय ज्ञाव विधि पूजा करतां, मोह महा जरु जापै  
 रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जोवाजिगमें जा  
 णो रे ॥ इम अधिकार वै अंध अनेकै, इहां संका मत आणो रे ॥  
 नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुभव इहां  
 द्यावो रे ॥ ध्यावो जिम पावो परमात्म, जैनचंड गुण गावो  
 रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाइ द्वीपै वीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ वंडु मनसुथ विहरमाण जिणैसर वीस, द्वीप अढीमें विचरै  
 जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारै तारै कर उपगार, क्किण २ ठामे  
 कुण२ जिन कंदस्युं सुविचार ॥ १ ॥ पैतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र  
 प्रमाण, बलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुद्रै सोह  
 द्वीप अढाइ सार, तिणमें पनरै करमाज्जुमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥  
 पहिलो जंबूद्वीप समै विच आल आकार, लांबो पिहुलो इक लख

जोयणनें विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नामें मेर, तिणार्थ  
दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथको दक्षण दिसि  
एह ज़रत सुन्न क्षेत्र, पांचसे ठवीस जोयणठ कला तेहनो क्षेत्र ।  
उत्तरखंडमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण चिहु करमांजूमी ठए  
अरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस ठसे चोरासी जोयण जाण  
च्यार कला ए महाविदेह विखंड वखाण ॥ बावीसतै तेरे जोयण  
एक विजय पहुलाण, एहवी वत्तीस विजय विराजै जेहने ठाण ॥  
॥ ५ ॥ मेरु विचै कर पूरब पश्चिम दोय विजाग, सोलै ५ विजय  
तिहां विचरै श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे अरे तारै श्रीअरिहंत,  
एहवे महाविदेह करमजूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरब विदेह विजय  
पुष्कलावती आठमी ठांम, पुंररीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंधर-  
स्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नांम, पश्चिम विदेह  
बीजो युगमंधिर कीजै प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वडविजय  
बलि पूरब विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो वाहु नमूं धरि नेह ॥  
नलिनावर्त चोवीसमी पश्चिम विदेह वखाण, बीतसोका नगरी  
तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप  
मजार, महाविदेह सुदरसन मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा  
गठ जेम गिरिंद, खाई रूपै दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

दीपै बीजो द्वीप ए, धन१ धातकी खंड ॥ पहुलो चिहुं  
लख जोयणे, मंरुल रूपे मंरु ॥ १० ॥ दी० ॥ दोय ज़रत दोय  
एरवत, दोय बलि महाविदेह ॥ करमजूमि खट ठै जिहां, उण-  
हिज नामें एह ॥ ११ ॥ दी० ॥ पूरब पश्चिम धातकी, खंड गिणीजै  
दोय, विजयमेरु पूरब दिसै, पश्चिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ दी० ॥  
इक २ मेरुने अंतरे, करमजूमि तीन २ ॥ निज २ मेरुथी मांनिने,

लेखो चिहं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो,  
 उठो स्वयंप्रभु ईस ॥ रूपज्ञानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस  
 ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥  
 पूरव धातकी खंरुमें, महाविदेह रदाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली  
 विहुं जिननी परे, विजयनगर दिसि ठाण, ॥ तिणहिज नांमे अनुक्रमें,  
 विजयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो  
 देव विसाल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥  
 दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंज्ञानन जिन, पछीम धातकी मांहि ॥ विचरै  
 च्याहं जिणवरा, अचलमेरु उठाहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एद्वो धातकी  
 खंरु ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालो-  
 दधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींठ्यो छूनी जेम विचाल ए ॥  
 सोलह लख जोयण विसतार ए, दीप पूखरवर अति सुखकार ए ॥  
 उलाखो० सुखकार-पुष्करद्वीप त्रीजो, तेदनें आधै पगै ॥ विच पळ्यो  
 परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहां लगै ॥ तिण आधिकर अठ लाख  
 योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमजूमी ठ ए कहीजै, धात-  
 की खंरु जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधै पुष्करनें पूरव दिसै, मंदिर  
 नांमे मेरु तिहां वसै ॥ पछिम विष्णुमाली मेर ए, इहां किण इतरो  
 नांमे फेर ए ॥ २० ॥ फेर ए इतरो इहां नांमे, अवर ठामे को नही ॥  
 एक २ मेरे तीन तीने, करमजूमि तिहां कही ॥ इम जरत एरवत  
 माहाविदेहे, नांम सरखो हेत ए ॥ तिणहोज नांमे विजय सगली,  
 सासता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंरु तिम पुष्कर  
 सही, इहां क्षेत्रानी रचना विधकही ॥ बार २ कहतां ए विसतार ए,  
 पहिला पर लेज्यो सुविचार ए ॥ २० ॥ सुविचार वाकी तेद सगलो,

नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पच्छिम जेइनी ते, तेह तिमहीज  
 अनुक्रमें ॥ श्रीचंडवाहु जुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थकरा, पूरवे पुष्कर  
 अरध माहे, सर्वा जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेन वंदू जिन  
 सेंतैरमो, श्रीमहाज्ज अठारम नित नमो ॥ देवजता उगणीसम  
 देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ ३० ॥ जिण च्यार पुष्कर  
 अरंध माहे, कह्या पच्छिम जाग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमालि चिहुं  
 दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरासी पूरव लाख वरसां, आज एक  
 २ जिण तणो ॥ पांचसै धनुष सरীর सोहे ॥ सोवन वरण सुदामणो  
 ॥ १३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ६ ॥ दिव अत्कष्टे  
 जेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहै, पांचे  
 ञरते जिम पांचे लहै ॥ ३० ॥ जिण लहै पांचे तेम पांचे,  
 एरवत मिल वस हुवा ॥ एक १ विदेहे बत्तीस विजया,  
 तिहा पिण ठै जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोनि  
 नवसय केवली, नव सहस कोनी अवर मुनिवर, वंदिचै नित ते  
 वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां ञरते एरवतें आज ए, पंचम आरै  
 नही जिनराज ए ॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीसै जिन  
 गुणगेह ए ॥ ३० ॥ गुणगेह दोष अठार वरजित, अतिसयां चोतीस  
 ए ॥ चौसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आजै  
 तारण तरण विचरै, केवली दोय कोरु ए ॥ दोय सहस कोनी सुसाधु  
 बीजा, नमुं बेकर जोरु ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा  
 चूमी क्षेत्र प्रमाण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह जाख्या वीस विहरमाण  
 ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतरगुणतीसै समै, सुखविजयहरख  
 जिनंद सानिध नेह धरि ध्रमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप  
 स्तवन संपूर्ण ॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंरु ३ आधोपुष्करद्वीप एवं  
 ४ द्वीपमें ५ ञरत ५ एरवत ५ महाविदेह १ ५ कर्मचूमीमें विच-

रतां साध्वता २० विहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आव्रुजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीमाझाई आव्रुजीनी जात्र करेज्यो, जात्र ज्ञानी ऊ  
मदेज्यो, तुम्हे नरजब लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथो  
मांहे ठाजे, आव्रु मारुमें देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे ला  
गो, उंचो अंवरिये जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास  
कदावै, निरखंता त्रिपति न थावे रे ॥ जा० ॥ एतो मुंगरियानो राजा,  
एदनी ठै क्षरइ पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ ठह रूतु वास वणायो,  
एतो चंपला अंबला ठायो रे ॥ जा० ॥ सरवर ऊरणा जाजा, जिहां  
तिहां वनवेढ्यां आजा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जार अढारे वणराई,  
एतो इहांदिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दददिति परिमल आवै, फू  
लमानो रंग सुदावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर जूमि विसाला, देवल  
दीग रलियाला रे ॥ जा० ॥ विमलमंत्री वरबाई, चक्केसरि देवी सदा  
ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवारु वंस वदीतो, जिणदलपति साहि जी  
तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेष करायो, पाहण आरास मंन्यायो रे ॥ जा०  
॥ ६ ॥ जीणीर कोरणी ऊरयो, दल माखण जेम उकेरयो रे जा०  
॥ नवीर जांति वणाई, जिहां तिहां कोरणिया जिणाई रे ॥ जा०  
॥ ७ ॥ उत्तरे पाहण जेतो, जोखीजे पाहण तेतो रे ॥ जा० ॥  
आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी दित्तकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥  
उगणिस कोम सौनइया, इव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा०  
॥ करजोमीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागै, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥  
पुवै चढिया हाथी, मंन्याणा पति साह साथीरे ॥ जा० ॥ इण देवल  
समवर कोई, जूमंरुल मांदि न होई रे जा० ॥ १० ॥ बलि ति  
ण वंस विगताला, वस्तुपाल अने तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमी  
रुहि पाई, इहां तियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते

हवो जिणहर पासै, वार क्रोमनी लागति ज्ञासै रे ॥ जा० ॥ देस  
 णी जेठाणी, आलानी अजब कहाणी रे ॥ जा० १२ ॥ इहां देव  
 ल सोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस  
 वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल  
 वामो दीगो, ते तो लागै नयणै मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल  
 पासै, लोक जोवे घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गान आ  
 गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा  
 च्यारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते  
 घातो, जिगमिग रही दिनने रातो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेसै चम्मा  
 लौ, जिण बिंबनो ज्ञाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली  
 ज्ञोम सोजागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६  
 ॥ एहनी करणी वाहवाडो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥ जा०  
 ॥ १७ ॥ इण डुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन ज्ञावी रे ॥  
 जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥  
 ॥ १८ ॥ रातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥  
 जा० ॥ साइमी वञ्चल कीज्यो, जातरुलीनो जसलीजो रे ॥ जा०  
 ॥ १९ ॥ आगेशी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥  
 जा० ॥ सुणिये ठै जे कोई, अहिनाणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥  
 ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥  
 जा० ॥ ए तीरथ समतोळै, कुण आवै रूपचंद बोले रे ॥ जा० ॥  
 २१ ॥ इति आबूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिषज्ञानन ब्रधमान, चंज्ञानन जिन, वारिषेण नामे जि  
 णा ए॥ १ ॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिजुवन सासता, प्रणामुं बिंब सोहा  
 मणा ए ॥ २ ॥ चेइहर सग कोरु, लाख बहुत्तर, चेश्य प्रतिमा

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोमि, साठ लाख सुंदर,  
 भुवनपती मांदि मन वसी ए ॥ ४ ॥ वारे देवलोक प्रासाद,  
 चौरासी लाख, सहस विन्नू ने सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ५ चाल ॥

दिवै नवग्रीवैकै पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा  
 सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अरुत्रीस सह  
 स सत साठ अठै गुण पाण ॥ ६ ॥ नंदीसर वावन कुंमल रुचक  
 वखाण, चउ१ चेईहर साठ सवे त्रिहुं वाण ॥ इकसो चोवीसै गुण  
 प्रतिमा चिहुं नाम, च्यारसै चाखिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥  
 नंदीसर विदिसै सोखस कुल गिरि तीस, मेरु वन अस्सी दस कु  
 रु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार२ इखुकार, असे अति  
 सुंदर वक सकार मजार ॥ ८ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चावीस, असी इह सुजगीस ॥ कंचन गिर  
 वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत दीरघ वैताढ्य, वीस सत  
 रसो आढ्य ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सदी ए ॥ १० ॥  
 जंबू प्रमुख दस रुक्क, इग्यारसै सतर सुक्क ॥ कुंम त्रणसय असी  
 ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ दाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं,  
 वीस सो ए अंक गुणियै रे, तीर्थंकर प्रतिमा शुणियै ॥ १२ ॥ त्रिण लाख  
 सहस बलि ज्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरवालै सब  
 मेलीजै रे, जिनवर प्रासाद नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोमि सत्तावन  
 लस्का रे, दोयसै निव्यासी कयरुक्का ॥ दिव प्रतिमा ग्यान कहीजै



रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरेसै बेतालीस कोमी रे,  
अरुवन लख अधिके जोमी ॥ ठत्तीस सदस अधिक कहीयै रे,  
प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ ठाळ ॥ ६ मी ॥

जोइस बिंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥  
पायकमल तेहना नित प्रणामियै, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥  
विनय करी जिन प्रतिमा वंदियै, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजै प्र-  
तिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर जपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥  
जिनप्रतिमा बोली जिन सारणी, हित सुख मोक्ष निदानो जी ॥  
जवियणने जवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥  
जीवाजिगम प्रमुख मांदि ज्ञाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥  
सांजलतां जणतां सुख संपदा, हियमै हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संथुण्या जिनवर तणा, चिहुं-  
नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सकलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारिज  
समयसुंदर गुण जणै अजिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो  
सदा मुज परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब  
संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

जविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥  
प्रज्जूजी विराजै रे सूरत बिंदै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ॥  
जगदितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीदृढरथ नृप गेह ॥ श्रीवज्र  
सोहे रे लांगन सुंदरू रे ॥ कनक वर्ष प्रज्जू देह ॥ २ ॥ ज० ॥  
विषय निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधूं केवलनाण ॥ सघन घना-  
घन जिम ध्रम वरसता रे, विचरया त्रिजुवन ज्ञाण ॥ ज० ॥ ३ ॥

चदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, च्यार अघाती कर्म ॥ दूर  
 निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्थुं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥  
 संप्रति काले रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिविं व ॥ प्रतिदिन  
 लहिये रे प्रभु सुप्रसादथी रे, मन वांछित अविखं व ॥ ५ ॥ ज० ॥  
 श्रीजिनवरनो बिंष बिलोकतां रे, डुकृत दूर पुलाय ॥ इंडिय निग्रह  
 सुग्रह संपजे रे, समकित पिण टट आय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसज्ज-  
 रुना मुखथी सांजष्टबा रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे  
 निज बित्तमें धरषा रे, नेमी सुत जाईवास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य  
 कराव्युं रे सुंदर सोजतो रे, मनधर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो  
 रे बिं व जराबिबो रे, सहस्रफणा वलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस  
 अठारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मजार ॥ उज्जल द्वादशी दि-  
 बसे आबिबो रे, बिं व अनेक उदार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी  
 तहु मेले अया रे, विंवाइक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन ते-  
 दमी रे, धिधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाज सूरि-  
 श्वर हीपता रे, श्रीवरतर गढ ज्ञाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन  
 थुण्णा रे, विबुध क्षमा कळ्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल  
 जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हारे हूं तो भरवा गढ़पी तट भयुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हारे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवरुलो  
 ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हारे मुंने थास्यै कोश्यक  
 समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातरुली तव थास्यै महारी सवि वगे रे  
 लो ॥ १ ॥ हारे कोइ डुर्जननो जंजेरयो माहरो नाथ जो, उल-  
 चस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हारे मारे स्वामी सरि-  
 खो कुषा वै डुनियां मांइ जो, जइये रे जिम तेहने धर आस्था

करी रे लो ॥ २ ॥ हारे मारे जस सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध  
 जो, ठाली रे सी करवी तेहथी गोठमी रे लो ॥ हारे कांड जूठूं खाई  
 ते मिठाईने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतमी रे लो  
 ॥ ३ ॥ हारे प्रभु अंतरजांमी जीवत प्राणाधार जो, वायो रे नवि  
 जाणयो कलियुग वायरो रे लो ॥ हारे मोरा लायक नायक जगत  
 बल्ल जगवंत जो, वारू रे गुण केरा साहिव सायरू रे लो ॥ ४ ॥  
 हारे प्रभु लागी मुऊने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी  
 होइ उजोगलो रे लो ॥ हारे कुण जाणें अंतर गतिनी विण माहा-  
 राज जो, हेजे रे हसी बोलो ठंमी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ हारे तारे  
 मुखने मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आंखरुली अणियाली का-  
 मणगारीयूंरे लो ॥ हारे मारे नयणा लंपट जोवे खिण २ तुऊ जो,  
 राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हारे प्रभु अलगा  
 ते पिण जाणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाउं  
 वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो,  
 गिरुआ अइ मन आंणो ऊलट अति धणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरै रलियामणो रे लाल, श्रीआदीत्तर देव, मन मोह्युं  
 रे ॥ उत्तंग तोरण देहरूं रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥ म० ॥  
 रा० ॥ १ ॥ चौबीस मंरुप चिहुं विसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा  
 च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवरु नही  
 संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरात्ती दीपती रे लाल,  
 मांरयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें जुहारया जौयरा रे लाल, सूतां  
 ऊठ सवेर ॥ म० ॥ ३ ॥ रा० ॥ देस जाणीतूं देहरूं रे लाल, मोटो  
 देस मेवाम ॥ म० ॥ लस्क नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धनो  
 पोरवारु ॥ म० ॥ ४ ॥ रा० ॥ खरतर वसई खंतसूं रे लाल, निर

स्वैता सुख श्राव ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा बली रे लाल,  
 जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतार्थ हुं श्रयो  
 रे लाल, आज श्रयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे  
 लाल, दूर गयूं डुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल त्रियं-  
 तरे रे लाल, मिगसिर मास मजार ॥ म० ॥ राणपुरै यात्रा करी रे  
 लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री  
 राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रोआदिजिन स्तवनं ॥  
 समकित धार गुं नारै पैसतां जी, पाप फल गयां दूर रे ॥  
 मोहनः मारुदेवीनो लामलो जी, देगे मीगे आनंद पूर रे ॥ स० ॥  
 ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोमाकोनी हीण  
 रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, वीरज अपूरवनो घर  
 लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ जुंगल जांगी आदि कपायनी जी, मिश्यात  
 मोहनी सांकल साध रे ॥ धार ऊघामा तम संवेगना जी, अनुजव  
 जवनें वेढो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण वांधू जीवदया तलूं  
 जी, साधियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रजुगुण अनुमोदना  
 जी, द्विगुण मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग  
 पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यान रे ॥ आतम गुण रुची  
 मृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधान रे ॥ ५ ॥ स० ॥  
 नावपूजानें पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥  
 कारण जोगें कारज नीपजै जी, कमा विजय जिन आगम रीत रे  
 ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवनं ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजै, मोहन महिर धरीजै रे ॥  
 दिखरंजन प्रजु दरसण दीजै, म्हारो मनमो रीजै रे ॥ आ० ॥ १ ॥

प्रभु दरसन लहिवो जग डुरलज, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥  
 जे दरसन विन किरिया पावै, ते नवि कहियै तरिया रे ॥ आ० ॥ १ ॥  
 नय एकांते दरसन आपै, पिंम जरे ते पापे रे ॥ आप आपणा मति  
 आलापै, ते जूला जव आपे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्या-  
 द्वादन संगे, जे ग्रहे आत्म उमंगे रे ॥ आनंदघन उपजै तसु अंगे,  
 सिद्धरणे रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जव कोनाकोमीमें जमतां, तुज  
 दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज जवे  
 हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटकौ, जो  
 जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदजुत, आतम गुण  
 उपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, श्वामी दर-  
 सण दीजै रे ॥ लाजउदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीजै  
 रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं ॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुज अनंत अपार ॥ ते सांजलता  
 ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥  
 तारज्यो दीनदयाल, अ० ॥ ता० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जे  
 हनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्ता तनय  
 प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० ॥ २ ॥ कार्य सिद्धि कर्ता वसु रे, लहि का-  
 रण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिळ्या रे, होय निमित्तम जोग  
 ॥ अ० ॥ ता० ॥ ३ ॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिंह नि-  
 हाल ॥ तिम प्रभु जके जवि लहे रे, आतम शक्ति संजाल ॥  
 ॥ अ० ॥ ता० ॥ ४ ॥ कारण पद कर्तापणो रे, करि आरोप अजेद ॥ निज  
 पद अर्थी प्रभुधकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥  
 अहवा परमात्म प्रभु रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तारसी रे,

अमल अखंरु अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख भ्रम  
 टड्यो रे, ज्ञास्यो अव्याबाध ॥ समरयो अज्जिलाखीपणो रे, कर्ता  
 साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ आइकता स्वामित्वता रे,  
 व्यापक ज्ञोक्ता ज्ञाव ॥ कारणता कारज वसारे, सकल ग्रह्युं निज  
 ज्ञाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ अद्धा ज्ञासन रमणता रे, दानादिक परिणा  
 म ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता०  
 ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक माइणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवधंइ  
 सुख सागरू रे, ज्ञावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री  
 अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अय आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ वे कर जोमो वीनवूं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कूरु  
 कपट मूंकी करी जी, वात कडूं आप वीत ॥ १ ॥ रुपानाथ मु  
 ञ्ज विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तू समरथ त्रिजुवन घणी जी,  
 मुज्जे उत्तर तार ॥ रु० ॥ २ ॥ जवसायर जमतं थकां जी,  
 दीगं डुख अनंत ॥ जागसंयोगे जेटियो जी, जयजंजण जगवंत  
 ॥ रु० ॥ ३ ॥ जे डुःख जांजे आपणा जी, तेहनें कहिये डुस्क ॥  
 परडुख जंजण तूं सुणयो जी, सेवगने थो सुस्क ॥ रु० ॥ ४ ॥ आलोयण  
 लीधां पखै जी, जीव रुले संतार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह  
 सुणयो अधिकार ॥ रु० ॥ ५ ॥ दूपमकाले दोहिलो जी, सूधो गुरु  
 संयोग ॥ परमारथ पीठे नदी जी, गरुरप्रवाही लोक ॥ रु० ॥ ६ ॥  
 तिण तुज आगल आपणा जी, पाप आलोचं आज ॥ माय  
 बाप आगल धोलतां जी, बालक केही लाज ॥ रु० ॥ ७ ॥ जि  
 न भ्रमर सहू कहै जी, थापे अपणी जी वात ॥ सामाचारा  
 जुइ जुइ जी, शंसय परुधां मिळ्यात ॥ रु० ॥ ८ ॥ जाण  
 अजाणपणे करी जी, बोड्या उन्सूत्र धोल ॥ रतने काण

उमावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ क० ॥ ए ॥ जग-  
 वंत ज्ञाप्यो ते किहा जी, किहां मुज करणी एह ॥ गज पाखर  
 खर किम सहे जी, सबल विमासण तेह ॥ क० ॥ १० ॥ आप  
 परंपुं आकरो जी, जांणे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो  
 जी, मासाहस दृष्टांत ॥ क० ॥ ११ ॥ काल अनंतें में लह्या जी,  
 तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पाकिया जी, किहां जइ करूं  
 पुकार ॥ क० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-  
 विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ क० ॥ १३ ॥  
 सहज पड्यो मुज आकरो जी, न गमें जूंसी वात ॥ परनिद्या क-  
 रता अकांजो, जायै दिन नें रात ॥ क० ॥ १४ ॥ किरिया करतां  
 दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम परखै धंदे पड्यो जी,  
 नरकै करसी शीव ॥ क० ॥ १५ ॥ अणहूंता गुण को कहे जी, तो  
 हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख जली दिवै जी, तो मन आणूं  
 रीस ॥ क० ॥ १६ ॥ वादजणी विद्या जणी जी, पररंजण उपदेश  
 ॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम संसार लहेस ॥ क० ॥ १७ ॥  
 सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक  
 मनमांहे ऊपजै जी, मुज मरकट वैराग ॥ क० ॥ १८ ॥ त्रिविध  
 २ कर उच्चरूं जी, जगवंत तुम्ह हजर ॥ वार २ ज्ञांजू वली जी,  
 बूटकरारो दूर ॥ क० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा  
 आरंज कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जो, देवदया पर ठोर  
 ॥ क० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कहा जी, दाख्या अनरथ दंभ ॥  
 कूरु कपट बहु केलवी जी, व्रत कीधा सत खंभ ॥ क० ॥ २१ ॥  
 अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादान ॥ ते दूषण लाग्य घणा  
 जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ क० ॥ २२ ॥ बंचल जीव रहे नही  
 जी, राचै रमणी रूप ॥ काम विदंबन सी कहूं जी, ते तूं जांणे

सरूप ॥ २० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको  
 लोभ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो जी, न चढी संजम सोभ ॥ २० ॥  
 ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लालचें जी, रात्रीजोजन दोष ॥ में मन  
 मूक्यो माहरो जी, न धरयो धरम संतोष ॥ २० ॥ २५ ॥ इण जव  
 परजव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिद्यामिडकनं  
 जी, जगवंत तोरी साख ॥ २० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या  
 जी, प्रगट अहारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, बगसर माइ  
 वाप ॥ २० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार वै एतलो जी, सरदर्हणा वै शुद्ध ॥  
 जिनधर्म भीगो जगतमें जी, जिम सांकर ने दूध ॥ २० ॥ २८ ॥  
 रिपजदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया  
 आपणा जी, कर प्रभु मोरी सार ॥ २० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-  
 धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिद्यामिडकनं जी, देतां  
 दूर पुलाय ॥ २० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिव  
 तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, जव २ ताहरी सेव ॥ २० ॥ ३१ ॥  
 ॥ कलश ॥ इम चढिय सैत्रुंज चरण जेव्या नाजिनंदन जिन तणा,  
 करजोनि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य  
 जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद  
 सुसीस वाचक समयसुंदर गणि जणें ॥ ३१ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदधनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री रूपज देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमार चलयो रे ॥ ए चाल ॥

रूपज जिनेसर प्रीतम माहरो रे, उर न चाहूं रे कंत ॥  
 रीज्यो साहिव संग न परिहरे रे, जागे सादि अनंत ॥ २० ॥ १ ॥  
 प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत



सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ ३० ॥ १ ॥  
 कोइ कंत कारण काष्ट नरुण करे रे, मिलसुं कंतने घाय ॥ ए  
 मेलो नवि कहियै संजवे रे, मेलो वाम न ढाय ॥ ३० ॥ ३ ॥ कोइ  
 पति रंजन अति घणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति  
 रंजन में नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ३० ॥ ४ ॥  
 कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥  
 दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ३० ॥ ५ ॥  
 चित प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंभित एह ॥ कपट रहित  
 अई आतम अरपणा रे, आनंदधन पद रेह ॥ ३० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ माहं मन मोहं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथमो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥  
 जे तें जीत्या रे तेणे हुं जीतियो रे, पुरुष किस्युं मुऊ नांम ॥ पं० ॥  
 ॥१॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, नूलो सयल संसार ॥ जेणें  
 नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥  
 पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे  
 रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क  
 विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अजिमते वस्तु वस्तुगते  
 कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य  
 नयणतणे रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे,  
 वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुं  
 रे, ए आस्या अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जाणज्यो रे,  
 आनंदधन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संजव देव ते घुर सेवो सबे रे, लहि प्रजू जेद ॥ सेवन  
 सेवन कारण पहली जूमिका रे, अज्जथ अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥ १ ॥  
 अथ चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक जाव ॥ खेद  
 प्रवृत्ति हो करतां थाकिये रे, दोष अवोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥  
 चरमावर्त हो चरम करण तथा रे, जव परणति परिपाका दोष टले  
 बली दृष्टी खुले जली रे, प्रापति प्रवचन वाका ॥ सं० ॥ ३ ॥ परिचय  
 पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत ॥ अथ अध्यात्म श्र  
 वण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण  
 जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण  
 कारज साधिये रे, ए जिनमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सु  
 गम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप ॥ देजो कदाचित से  
 वक याचना रे, आनंदघन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसिये, दरसण दुर्लभ देव ॥  
 ॥ मतर जेदे रे जो जइ पृथिये ॥ सहु थापै अहमेव ॥ अजि०  
 ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिण दौहलूं; निरणय सकल विशेष ॥  
 मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥  
 २ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति डुरगम नय वाद ॥  
 आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सवलो विषवाद ॥ अ० ॥  
 ३ ॥ घाती हूंगर आमा अतिघणा, तुज दरिण जगनाथ ॥ घो  
 गाइ करी मारग संचरूं; सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिं  
 णर रटतो जो फिरूं, तो रणरोज समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम ज्ञाजै विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे  
हो मरण जीवन तणो, सीजे जो दरसन आज ॥ दरसन दुर्ल  
भ सुखन कपायकी, आनंदधन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि  
कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणिये, परि सरपण सु  
विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत  
मा, बहिरातम धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर  
मातम अविच्छेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक अ  
ह्यो, बहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखीधर र  
ह्यो, अंतर आतम रूपा ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण  
प्रावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिं डिय गुण गण मणि  
आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा  
तमतज अंतर आतमा, रूप सुग्यानी अइ थिर ज्ञावा ॥ परमातमनू हो  
आतम ज्ञाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ५ ॥ आ  
तम अरपण वस्तु विचारतां, जरस टवै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम  
प्रदारथ संपति संपजै, आनंदधन रस पोष ॥ सु० सुम० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी, विविध जंगी मन मो  
हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी०  
॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥  
हानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्षणा रे ॥ शी० ॥ २  
॥ परदुःख वेदन इच्छा करुणा, तीक्ष्ण परदुःख रीजे रे ॥ उदासी

नता उन्नय विलक्षण, एक ठामे केम सीजे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ-  
 जयदांन ते मल कय करुणा, तीक्षणता गुण जावे रे ॥ प्रेरण  
 विणु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥  
 शक्ति व्यक्ति त्रिज्जुवन प्रज्जुता, नियंत्रता संयोगे रे ॥ योगी जोगी वक्ता  
 मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु ज्ञ  
 ग त्रिज्जंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,  
 आनंदघन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनमो किमही न वाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज  
 तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो जाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रज  
 नी वासर वसती ऊजरु, गवण पायाले जाय ॥ तांप खायने मुखहुं  
 थायुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ सुगतितणा  
 अज्जिवापी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अज्यासे ॥ वयरीहुं कांइ एहवुं  
 चितै, नाथे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम  
 धरनें हाथे, नावे किए विध आंरु ॥ किहां कणे जो इठ करी इठकूं,  
 तो व्यावतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो उग कहूं तो  
 उग तो न देखूं, साहूकार पिए नांही ॥ सर्वमांइ ने सहुथी अ  
 लगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते  
 कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंमित जन समजावै,  
 समजै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाणुं ए  
 लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ वीजी वाते समरथ ठै नर,  
 एहने कोई न जेजे हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साधुं तिए स  
 गलूं सधयुं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साधुं ते नवि मानुं,  
 ए कहि वात ठे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनहुं डराराध्य ते

चस आणुं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदधन प्रभु माहरो आणो,  
तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिक्रमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ ॥ लुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर जेटियै, जवना संघित पाप परा सब  
मेटियै ॥ मन धर जाव अनंत चरण युग सेवतां, अणहूँते एक  
कोनि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यांन धरूं प्रभू दूरधकी में ताहरो,  
जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ जव २ तुमहीज देव  
चरण हूं सिर धरूं, जवसायरथी तार अरज आहीज करूं ॥ २ ॥  
जुख त्रिषा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम जार त  
णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नामतणी आसत घणी,  
एहिज ठै आधार जगतगुरु अम्ह जणी ॥ ३ ॥ तुम्ह दरिसण विष स्वांम  
जवोदधि हूं फिरयो, सहीया डुस्क अनेक न कारज को सरयो ॥  
मिलिया हिव प्रभु मुज सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जगत  
जस लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सैन्या  
कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो,  
जयवंतो जिणचंद्र सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ ॥ लुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन जुवन सिरताज ॥ आठेलाल,  
नगर ब्रह्मानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल  
सुगुण निधान ॥ आठेलाल, वामासुत वरुजागीयाजी ॥ २ ॥ सेव-  
कनी संजाल, करिय खरी ततकाल ॥ आठेलाल, संकट सहु प्रभु  
परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रयव्यो आनंद पूर ॥  
आठेलाल, वाट विद्वत्ता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद,

वीता सहु विखवाद ॥ आठेलाल, मन वंभित मुंजं सहु फड्या जी  
 ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप, मिलिया गो प्रभु थाप ॥ आठेलाल,  
 देज्यो दरिसेण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीत कमा-  
 कडपाण ॥ आठेलाल, वाचक इम वीनती करै जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुस्तिवाणी रे ॥ वामासुत वरदाय,  
 निरमल नाणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रभु अंग, निरुपम निरख्या रे ॥  
 तीन कमल मुज संग, आतम हरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देखे,  
 चंद लजाणू रे ॥ गगन जमे निसदीस, इम मन आंशू रे ॥ ३ ॥  
 सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजै रे ॥ हृदयकमल सुविलास,  
 थाल ज्युं ठाजै रे ॥ ४ ॥ प्रभु कर चरण विलोक, पंकज हारयो रे ॥  
 ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार,  
 श्रीजिन राया रे ॥ साचै पुण्य संयोग, साहिव पाया रे ॥ ६ ॥ प्रभु-  
 गुण अनुभव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाढ्यो पातिक पंक, आतम संगे रे  
 ॥ ७ ॥ वरस अठार चोतीस, वदि वैसाखै रे ॥ मनुहर पांचम दीस,  
 सहु संव साखै रे ॥ नगर महेवा मांदि, पास जुदारया रे ॥ श्री  
 जिनचंद मुण्डि, वांभित सारया रे ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुज वीनती गोमीचा, अलवेसर अवधार हो गोमी  
 चाराय ॥ प्रगट थई पातालची गोमीचा, सेवक जिन साधार हो  
 गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख थई ऊतावली, गो० ॥ दरसण देखण  
 काज हो ॥ गो० ॥ पाणीनखमे पातली, गो० ॥ द्यो दरसण महां-  
 राज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिव सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो  
 वै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति क-  
 रवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवनी, गो० ॥ सगली

प्राति सदीव हो, गो० ॥ उंची नीची वातमें, गो० ॥ धे मति घालो  
जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवलै, गो० ॥ दीठांते  
न सुहाय हो ॥ गो० ॥ इक दीठां मन ऊलते, गो० ॥ इक दीठां  
ऊलहाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कालै वाळ्है माहरे, गो० ॥  
कीधी खरी सन्नीस हो ॥ गो० ॥ दरसण देवानी नकी, गो० ॥  
पाणीवलि पिए ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं  
करै, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर  
संभारज्यो, गो० ॥ इम जंपै जिनराज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ५ मुं ॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वांमी रे ॥ अश्व-  
सेन वामाजीके नंदन, त्रिजुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥ १ ॥ गुण  
गिरवा गोमीचा स्वांमी, नाथ निरंजन नामी रे ॥ अ० ॥ जव अ-  
टवी वन घन विच जमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥  
दीनदयाल दया कर दीजै, अनुभव गुण अजिरांमी रे ॥ चरणकमल  
सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ६ हुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन जाय ॥ प्या० ॥ अश्वसेन  
वामाजीके नंदन, देख्यां विल हरखाय ॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें  
महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या० ॥ नील वरण मन-  
मोहन निरख्यो, नाथ गोमीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेव-  
गकी येही अरज हे, जव दुख ताप मिटाय ॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजब सुरंग अनूप ॥ सवाइ प्रचू-  
जी, घांरी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन  
वांदवा, चितनामें लागी ठै चूप ॥ सवाइ प्रचूजी ॥ १ ॥ अणिया-

ली प्रभू आंखनी, वदन सरोज विकास ॥-स० ॥ थां०  
 ॥ नयण सलूणे जी निरखतां, ऊपजै अधिक उद्धास ॥  
 स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा  
 निधि करतार ॥ स० ॥ थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीवो, दिल  
 रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांशियै, सो  
 य घनी सुप्रमाण ॥ स० ॥ जगतवज्रल जल जेटियै, जिनवर चतुरसु-  
 जाण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगद जयो, श्रीचिं  
 तामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंडनी, अविचल पुरो जी  
 आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम  
 विन देख्यां एक घनी नरहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे  
 अमारा हीयकलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास ठियै निर  
 धार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि०  
 ॥ चंद चकोरा जलघरें नें जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण  
 तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चित्तो लीवोजिम तिम करि  
 नें चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज हमारीमानो मोटा देव रे, जि० ॥  
 आपो ज्वर चरणकमलनी सेव ॥ म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरी-  
 नें आवे जे तुह्य पास रे, जि० ॥ नवि मुंकीजे स्वामी तेह निरास  
 म्हाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी थायै बुद्धि रे, जि० ॥ इम जांशि-  
 ने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥ ४ ॥ राखेज्यो मुज ऊ-  
 पर निवम सनेह रे, जि० ॥ अवगुण नांणी ठिटक न देज्यो वेह ॥  
 म्हारा जि० ॥ खरतर गजपति श्रीजिनलान्न सूरिंद रे, जि० ॥ तासु  
 पसायें पजणें अनोपमचंद ॥ म्हारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥



॥ पद ९ मुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रजुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने  
 मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं वै प्रजुजी म्हारो अंतर  
 जामी, पूरव पून्यै धांरी सेवा में पांमी राज ॥ साहिव में तो तु  
 ऊनें जाण्यो वै साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज  
 ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलसुं राज करीय सगाई, सुगण प्रजु  
 जीस्युं वधज्यो प्रीत सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रजुजी ताह-  
 रो दिलमांहे वसियो, रात दिवस धारा गुणनो वूं रसियो राज ॥  
 सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रजुजी चाकर वूं खासो, कदिय न मेलूं  
 प्रजुजी पलज्जर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी महेरे राज मोटा क-  
 हीजै, लाहो लाखीणो प्रजुजी संगे लहोजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥  
 पिंजर तो फिरसी राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिलमांहे  
 रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगै हूं चोल मजीठ रंगाणो, नहिय विसरस्युं  
 प्रजुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि२ हूं तुम पाये  
 जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजि-  
 नचंड सदा साधारो, तारक प्रजुजी थे जवजल तारो राज ॥ सु०  
 ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १० मुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत धारी लागे प्यारी ॥ दीठ  
 आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखियै प्रजु, तिम२ वाधे प्रीत ॥  
 तनमन मारा जलसै कांइ, रूमी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥ १ ॥ नयण  
 कमलदल पांखनी प्रजु, मुखनो पूनमचंद ॥ दीपशीखासी नासिका  
 काइ, दीठां परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ काने कुंमल जिगमिगे प्रजु,  
 कंठे नवसर हार ॥ चंपकली सोहे जली कांइ, मुखमै ज्योत अपार  
 ॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं वै जगनो वालहो प्रजु, धारे सेवग कोरु ॥ म्हारे

सूहिज साहिवो कांइ, चंदू वे कर जोरु, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज  
मनोरथ सब फलया, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा  
कांइ, सीधां सगलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ सुं ॥

जिनजी महिर करिने राज, दरसन वहिलो दीजै ॥ दीजै  
२ जी माहाराज, कारज सगला सीजै ॥ ए आंरणी ॥ मुज मन  
जमरतणी पर मोह्यो, गोमायो नवि वूटै ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण,  
ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रजु तुमने,  
नहिय विसारुं दिलसुं ॥ रात दिवस एहवी मन वरतै, जाणूं जइ  
मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरव पुन्यथकी में पायो, ए अवसर  
आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रजु पास चिंतामण, साहिव सहज सलूणो  
॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग ठै बहुला, मो सरिपा लख ग्याने,  
साहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥  
आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो मुख नही जाखूं ॥ अमृत जेम  
लही तुज गुणरस, खारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन  
ए मुझानी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर माळाने  
गिणतां, कहो कुण मति उपजावै ॥ जि० ॥ ६ ॥ जगतपणै किंचित  
गुण जाखूं, हूं म्हारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुज गुण  
लायक, त्रिजुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरस अठार वली  
इकताले, मिगतर पख उजवाले ॥ इग्धारस दिन अधिक सनेहे,  
यात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं,  
मेलो तिहां मंमायो ॥ लाज उदय जिनचंदने प्रजुजी, वांध्यो प्रेम  
सवायो ॥ जि० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ सुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रजु तूं मेरे दिलमें, ध्यान धरूं पलशमें ॥

पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा कहं ठिनश्में ॥ तूं० ॥ १ ॥ का  
हूको मन तरुणीसैं राब्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रजु  
तुमहीसे राब्यो, ज्युं चात्रक चित्त धनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर  
तेरो गति जांशै, अलख निरंजन ठिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर  
तूंही, साहिव तीन ज़ुवनमें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोहनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ ज्ञाव  
दयासागर प्रजु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रजु सिद्ध  
अया, संघ सकल आधारो रे, हिवरण नरतमां ॥ कुण करशे उप-  
गारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणूं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे  
संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥  
मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अयमाय ॥ वीर विहूणा  
जीवना रे, आकुल व्याकुल आयो रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय  
ठेइक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे,  
ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ गिर्यामक जवसमुडनो रे,  
जव अटवी सन्नवाह ॥ ते परमेतरविश मिट्यां रे, किम वाधे नत्साहो  
रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर अकां पण श्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥  
हमणां श्रुत आधार ठे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥  
इया कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि-  
जना रे, जिनपदिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचा-  
रिज मुमि रे, सहुनें इया परसिद्ध ॥ जव जव आगम संगथी रे, देव-  
चंड पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय रुषज समोसरथा, जला गुण जरथा रे ॥ सिद्धा  
साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां अयां, मुगतें

गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो,  
 गिरिसेहरो रे ॥ नरते नराव्यां त्रिव ॥ ती० ॥ आनु चौमुख अति  
 मन्त्रो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल बलइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥  
 रमेतशिखर सौदामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थकर वीश  
 ॥ ती० ॥ नयरो चंपा निरखीये, हैये हरखीये रे ॥ सिद्धा श्रीवा-  
 सुपुञ्ज ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरो, रुद्धे नरी रे ॥ मुक्ति  
 गया महाबोर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीये, दुःख वारीये रे ॥  
 अरिहंत त्रिव अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ विकानेरजः वंदीये, चिर नंदीये  
 रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो  
 रे ॥ फलोधी अंजण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अ-  
 मीऊरो रे ॥ जीराबलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो,  
 जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनारुलाई जादवो,  
 गोनी स्तवो रे ॥ आवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां,  
 बावन जलां रे ॥ रुचक कुंमल चारु चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती  
 अशाश्वती, प्रतिमा गती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीर्थ  
 जात्रा फल तिहां, होजो मुऊ इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८ ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जाये ॥ सिद्धा-  
 चलगिरि जईए वहेनी, विमलाचलगिरि जईए रे ॥ आ० ॥ सुण  
 बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनंद इम ज्ञांवी ॥ नरतादिक,  
 नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणा गि-  
 रिवरिये काल अनंते, साधु अनन्ता सीया ॥ जन्म मरणनां दुःख  
 गोनीने, अमल अखय गुण लीया रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि स-  
 सुख पगलां नरतां, आतम गुद सुजाये ॥ कोमि नवांरां पातक  
 कीयां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ तासतो तीर्थ ए शेरु

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन जुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोइ  
न दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेह धरीने, आगे उलग क-  
रस्यां ॥ अद्भुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥  
॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ प  
हिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मारगनी सूथी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥  
गहिर स्वरे जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करिये ॥ मन गमती  
जमती विच जमतां, जवसायर निमतारिये रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव  
नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रुंखे आया ॥ ए तीरथ शुज्ज जावें  
फरसी, करिये निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाज उदे ए गिरि  
वर लहिये, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वत्सल,  
प्रेम घणो चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ए ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥  
मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनु  
मोदना, करतो जीरणसेठ ॥ श्रावक अच्युय गति लहे, नवधैवेका  
हेठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशा  
लापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इ  
ग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरे जी, आव्या  
श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी, जले में जेव्या श्री  
जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे ज्ञान्य अनोपम माय  
॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो ठे देहरो जी, तिहां प्रभु काउसग्न ली  
ध ॥ पञ्चरूपाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥  
जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले श्रावकधर्म ॥ आकारे तिण उल  
ख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अठे उपवा  
सीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रभु जीमस्ये जी,

से इष्ट देख्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी, हो  
 सी सफल मुज आस ॥ पक्ष मास गिणातां थकां जी, पूरी थइ चो  
 मास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइ  
 थार ॥ प्रज्जुनो मारग देखतो जी, वेठो घरने वार ॥ ज० ॥ ७ ॥  
 घर आवे ठे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रज्जुजी कां न  
 पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ शीठे करस्युं  
 पारणो जी, हूं प्रज्जुने पदिवाज ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय  
 विन वरसे आज्ञ ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवतर ऊठ्या गोचरी जी, श्री  
 सिद्धारथपुत्त ॥ वेसाळापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत्त ॥ ज० ॥  
 १० ॥ मिठ्यात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेनी प्रते  
 इम कहे जी, कांशक-जिहा देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू ज़रने वा  
 कला जी, प्रज्जुने आंगी दीध ॥ नीरागी तेही विया जी, तिहां प्र  
 ज्जु पारणो कीध ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे डुंडुजि जी, जै वो  
 ले कर जोनि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढोवारे कोनि ॥  
 ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥  
 लोकां प्रते इम कहे जी, में वहिराइ कीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा  
 दिक सहूए कहे जी, धनइ पूरणसेठ ॥ उंची करणी तेंकरी जी,  
 अवर सहू तुज हेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तवे जी, वा  
 जित डुंडुजिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रज्जु पारणो जी, मनमें थयो  
 विपवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अज्ञागियो जी, मेरे न आया  
 साम ॥ कल्पवृक्ष किम पांमीये जी, मारूमंमल ठाम ॥ ज० ॥  
 १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांदि ॥ निर  
 धन जिमर चिंतवे जी, तिमर निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा  
 मी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र-विहार ॥ आया पात  
 संतानिया जी, तिहां मुनि केवलघार ॥ ज० ॥ १९ ॥ वेशालापुर

राजियो जी, लोकास्थुं आणंद ॥ राय प्रथ पृठे इस्थो जी, सुगुरु  
 चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अठें जी, जीव पु  
 न्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥  
 २१ ॥ राय कहे किए कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो  
 जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे  
 केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न  
 कोइ प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण  
 घाट्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज०  
 ॥ २४ ॥ घनी एक सुर डुंडुनि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहि-  
 तो जीरण तो सही जी, केवल अविचल ठाम ॥ ज० ॥ २५ ॥  
 राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुहानगरमें था  
 पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दांन दियां सु-  
 पात्रने जी, तें निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी,  
 जीरण जिम फल आय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना  
 जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे सु-  
 नि मात ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रच्यु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोयण जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ हिव राणी पद्मावती, जीवरासि खमावे ॥ जांणपणो ज  
 ग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ ते सुज्ज मिहामिडुक्कनं ॥ १ ॥ अ-  
 रिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते सु०  
 ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख ते  
 ऊकायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चव-  
 दे लाख साधार ॥ बि ति चउरेंडे जीवना, बे बे लाख विचार ॥  
 ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्थेच नारकी, च्यारु प्रकाशी ॥ चवदे लाख  
 मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणज्जव परज्जव ते

वियां, जे पाप अहार ॥ त्रिविध शंकर वीतरुं, डुरगति दातार ॥ ते०  
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोळ्या मृपावाद ॥ दोष अदत्तार्दा  
 नना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेळ्यो कारमो, की  
 धो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोभ में कीया, वलि राग ने छेप  
 ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूह्या, दीधा कूना कलंक ॥ निं  
 द्या कीधी पारकी, रति अरति निस्तंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चानी की  
 धी चोतरे, कीधो थांपणामोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, जलो आं  
 एयो जरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने जव जे किया, जीवना  
 वध घात ॥ चिनीमार जव चिरकला, मारया दिन ने रात ॥ ते०  
 ॥ ११ ॥ माठीगर जव माठला, जाळ्या जलवास ॥ धीवर जील कोली  
 जवे, मृग मारया पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुळाने जवे, पढी  
 मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जवे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥  
 १३ ॥ कोटवालजवमें किया, आकाराकर दंरु ॥ वंदीवान मरावियां,  
 कोरना ठनी दंरु ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने जवे, दीधा नार  
 की डुरक ॥ वेदन जेदन वेदनां, तारुना, अति तिरक ॥ ते० ॥ १५  
 ॥ कुंजारने जव में किया, निवाह पचाया ॥ तेलीजव तिल पि  
 लिया, पापे पेट जराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने जव हल ख  
 रुचा, फाळ्या पृथवी पेट ॥ सूरुने दान किया घणा, दीधा बलध  
 चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने जव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल  
 पत्र फल फूलना, लाग पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधोवाही  
 आंगमी, जरया अधिका जार ॥ पोठी जंड कीना पड्या, दया ना  
 बी लिगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ ठीवाने जव वेतरयो, कीधा रांगणपांत  
 ॥ अग्नि आरंज किया घणा, धातुरवाद अज्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर  
 पणे रणजूंजतां, मारया माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण जरव्यां,  
 खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खिणार्ई धातुनी, पाणो



अलंब्या ॥ आरंज कीधा अतिघणा, पोते पाप ते संख्या ॥ ते० ॥ २२ ॥  
 अंगारकर्म किया वली, धरमें दव दीधा ॥ सूत लेइ वीतरागना,  
 कूना कोसज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिछी जव ऊंदर गिळ्या, गि  
 लोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे जवे, में जूं लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥  
 जामजूजातणे जवे, एकेंडी जीव, ज्वार चिणाग हुंसे किया,  
 रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांमण पीसण गारना, आरंज अनेक ॥ रांयण  
 इंधण अगनिना, कीया पाप उदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा व्या  
 कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाव ॥ इष्ट वियोग पमानिया, रोदन वि  
 खवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणा, व्रत लेइने जगा,  
 मूल अने उत्तरतणा, मुज दूषण लाग ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विष्ट  
 सिंहा चीतरा, सिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतणे जवे, हिंसा  
 कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआचने दूषण घणा, वलि गरुड  
 गलाया ॥ जीवाणी ढोळ्या घणा, शीलव्रत जंजाया ॥ ते० ॥ ३० ॥  
 जव अनंत जमतां अकां, किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध ए कर वो-  
 सरुं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणजव परजव इण परे,  
 कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध ए कर वोसरुं, करुं जनम पवित्र ॥  
 ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेरामी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर  
 कहे पापघ्नी, बूटे ततकाल ॥ ते० ॥ ३३ ॥ इति आलोचण सिंहाय सं० ॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विह्वल ॥ पासतणा गुण  
 गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे, अह  
 मदावादे पास ॥ गोमी जो धणी जागतो, सडूनी पुरे आस ॥ २ ॥  
 शुज वेला शुज दिन घरी, महुरत एक मंराण ॥ प्रतिमा तीने  
 पासनी, अई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

॥ दाढ ॥ १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥  
 कण कंचण मणि माणक दे, गोमीनो घणी जाचो जी ॥ गु० ॥  
 २ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूंती जी ॥  
 बनी जूमे अश्वनी पीमा, अश्वनी वाल विगूती जी ॥ गु० ॥ ५ ॥  
 गंतो जक्र जेदने कहिये, सुदणो तुरकने आपे जी ॥ पास जि  
 तर केरी प्रतिमा, सेवग तुज संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रदऊ  
 ने परगट करजे, मेघागोटीने देजे जी ॥ अधिको मले जे उंगो  
 वे जे, टक्का पांचसे लेजे जी ॥ ७ ॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मा  
 स मुरमिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्रधन हय गय हाथी,  
 ाठ घणी घर जास्ये जी ॥ ८ ॥ गु० ॥ मार्ग पहिलो तुजने मिल  
 पे, सारथवाहो गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोढघा, वस्तु  
 दे तस पोठी जी ॥ ९ ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

मनसुं विदतो तुरकनो, माने वचन प्रमाण ॥ वीवीने सुह  
 ातणो, संजलावे सहिनांण ॥ १० ॥ वीवी बोले तुरकने, वना  
 व दे कोइ ॥ अत्र सताव परगट करो, नदितर मारे सोय ॥ ११ ॥  
 गळीरात परोमिये, पदली बांधे पाज ॥ सुदणामांहे सेवने, संज  
 लावे यक्षराज ॥ १२ ॥

॥ दाढ २ ॥

एम कही यक्र आयो राते, सारथवाहूने सुदणो जी ॥ पास  
 तखी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥  
 पांचसे टक्का तेदने आपे, अधिको म आपिस वारू जी ॥ जतन करी  
 पट्टंवाडे धानक, प्रतिमा गुण संजारू जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुजने  
 होती बहु फलदायक, जाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणामे तेदना  
 पाया, प्रदऊनीने शुणजे जी ॥ ए० ॥ १५ ॥ सुदणो देहने सुर चाळ्यो,

आपणे आंनक पहुतो जी ॥ पाटणमांहे सारप्रवाहू, हींमे तुरकने  
 जोतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जातो दीठो गोठी, चोखा तिव  
 क निलामे जी ॥ संकेत पहुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लामे  
 जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुऊ घर प्रतिमा तुऊने आपूं, श्रीपास जिने  
 सर केरी जी ॥ पांचसे टक्का जो मुऊ आपे, तो मोल न मांगू फेर  
 जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, धानक पहुतो रंगे जी,  
 केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० ॥ १९ ॥ गादी  
 रूनी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या  
 पारकरमांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उच्चव दिन  
 अधिका आये, सत्तर जेइ सनात्रो जी ॥ ठांमश्ना दरसण करवा,  
 आवे लोक प्रजातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ दुहा ॥

इक दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो जंग ॥ जतन करूं  
 प्रतिमातणो, तीरथ अठे अजंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठने, थल,  
 अटवी ऊजाम ॥ महिमा आस्ये अतिघणी, प्रतिमा तिहां पहुचाम ॥  
 ॥ २३ ॥ कुशल केम तिहां अठे, तुऊने मुऊने जांण, संका ठोनी  
 काम कर, करतो म करीस कांण ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृषेज जोतरे ॥ पार  
 करथी परियाणो करे, इक थल चढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ वारे कोश  
 आयां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनह विमासण थइ,  
 पास जवन मंजावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कुट  
 को कोइ न दीसे वह ण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो, मंजाउं कि  
 म घरथे विसो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहा, सिखावटो  
 किम आवे इहां ॥ चिंतातुर थयो निझ लहे, यकराज आवी इम

कहे ॥ २८ ॥ गूढली ऊपर नाणो जिहां, गरध घणो जाणीज तिहा ॥  
 स्वस्तिक सोपारी सहिनाण, पाहणतणी जलटस्ये खाण ॥ २९ ॥  
 श्रीकल सजल तिहां किरा जुन, अमृत जल नितरिस्ये कूड ॥ खी  
 राकूआनो इह सहनाण, जूमि पड्यो ठे नीलो ठाण ॥ ३० ॥ सि  
 लावटो सीरोही वसे, कोठ परांजवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी तू  
 इहा आणजे, संत्य वचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन  
 थिर थापियो, शिलाचटाने सुहणो दियो ॥ रोग गमानुं ने पूरुं आस,  
 पासतणो मंने आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मांन्यो ते वेण, हेम  
 वरण देखाज्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटेने गया  
 तेरवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीरखारु घृत चूरमो ॥  
 घने घाट करे कोरणी, लगन जले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंज २  
 कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंरुप रलियामणो  
 रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग  
 समो मंने आवास ॥ दिवस विचारी इमो घड्यो, ततखिण देवल  
 ऊपर चढयो ॥ ३६ ॥ गुज लगनं गुज वेला वास, पदासण वेठा  
 श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समांन, एकलमल वगने रहे वान ॥  
 ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांजली, तवनमांहि सूवी सांकली ॥  
 गोठीतणा गोतरिया अठे, यात्र करीने परणे पठे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघन विमारण जक जग, तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीत करे  
 श्रीसंघने, देखांने निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरठ गौरीपास जिन ॥ आपे  
 अरथ जंमार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥  
 नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार, मारग चुकां मानवी,  
 वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

॥ बाल ४ ॥

वरण अठारतणो लहे जोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ प  
 वित्र थइ समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४१ ॥ निर  
 धनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरापणो  
 धरे, पार उतारे लढी वरे ॥ ४३ ॥ दोजागीने दे सोजाग ॥ पग  
 विहूणाने आपे पाग ॥ ठाम नही तेदने थे ठाम ॥ मन वंठित पूरे  
 अजिरांम ॥ ४४ ॥ निरधाराने थे आधार, जवसायर ऊतारे पार ॥  
 आरतियानी आरत जंग, धरे ध्यान ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरयां  
 साद दिये जकराज, जेहना मोटा अठे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि  
 प्रकाश ॥ गंगाने थे वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दा  
 तार, जयजंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेनीतणा, श्रीपार्श्व  
 नाम अकर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दूहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अकर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तियुद्ध  
 दूरे टले, दुहर सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चौरतणा जय चूकवे, विप  
 अमृत उरुकार ॥ विषधरना विष ऊतारे, संग्रामे जय जयकार ॥ ४९ ॥  
 रोग शोग दालिड दुख, दोहग दूर पूलाय ॥ परमेस्वर श्रीपासनो, म-  
 हिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ बाल ५ ॥ चाल कडखानी ॥

ऊँजततू २ उंज उपशम धरी, उँ ह्रीं श्री श्रीपार्श्व अकर ज  
 पते ॥ जूतने भेत जोटिंग वितर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते  
 ॥ ५१ ॥ उँ ० ॥ दुहरा रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा ड  
 जपते ॥ गर्जबंधन ब्रणं सर्प विठू विषं, चालिका बाल मेवाऊखंते  
 ॥ ५२ ॥ उँ ० ॥ साइणी माइणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका  
 दोष हुंते ॥ दाढ ऊँडरतणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाल वि-

कराल दंते ॥ ५३ ॥ ॐ ॥ धरणेऽ पद्मावती समर सोजाविनी, वाट  
 आघाट अटवी अटते ॥ लखर्मा लोंदो मिले सुजस वेला वले ॥  
 सयल आस्या फले मन हसते ॥ ५४ ॥ ॐ ॥ अष्ट महाजय हरे  
 कानपीना टले ॥ उत्तरे शूल शीतग जणते ॥ वदत वर प्रीतसुं  
 श्रीतविमल प्रज्जु, श्रीपास जिण नाम अजिराम मंते ॥ ५५ ॥ इति  
 श्रीगोमीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किं आहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं  
 संनि, जस्त धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा इम्मस्स पुप्फेसु, जमरो  
 आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥  
 एव मेए समणा बुत्ता, जे लाए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु,  
 दाणज्जे सणेरया ॥ ३ ॥ वयं ष वि तिं लप्रामो ॥ नहि कोइ उव  
 इम्मइ ॥ अहागणे सुरीयंते, पुप्फेसु जमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार  
 समा बुद्धा, जे जवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिंर रयोदिता, तेण बुच्चं  
 ति साहुणोत्तिवेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगळ्यं, सर्व कळ्याण  
 कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं, जयति साशनं ॥ १ ॥ मंगलं जगवान्बी  
 रो, मंगलं गौतम प्रज्जु ॥ मंगलं स्थलज्जज्ञाद्या, जैनोधर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म  
 रक्षा करं वज्र, पंजरा ज्जस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥  
 शिरस्कशिर संस्थितं, ॐ नमो सब सिद्धाणं, मुखे मुखपटवरं ॥ २ ॥  
 ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्काति शायिनी ॥ ॐ नमो उव  
 ज्ञायाणं, आयुधं हस्तयोहंढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सब साहुणं,  
 मोचके पादयो सुजे ॥ एतो पंच नमोकारो, शिला वज्रमई तले  
 ॥ ४ ॥ सब पात्रप्पणास्तणो, वप्रो वज्रमयोवहि ॥ मंगलाप्रं वस्तं

बैसिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंच पदं ज्ञेयं, पठमं  
 हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिव्रज्जमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा  
 प्रजावात् रक्षेयं, कुडोपड्वं नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कश्चिता  
 पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्टी पदे सदा ॥ तस्य  
 नस्यान्नयं व्याधि, राधि श्चापि कदाचनः ॥ ॥८॥ इति आत्मरक्षा  
 स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ ( छंद )

॥ सुखकारणं नवियणं समरो नित नवकारं, जिनशाशन  
 आगम चवदे पूरव सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं  
 पार, सुरतरु जिम चिंतित वंठितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव  
 मानव सेव करे कर जोरु, ज्ञयमंरुल विचरे तारे नवियण कोरि  
 ॥ सुरठंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिगं  
 जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे जेदे सिद्ध थया जगवंत, पंचमि  
 गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक  
 जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गडज्जार  
 धुरंधर सुंदर शशिहर शोम, कर शारणवारण गुण ठत्तीसे थोम  
 ॥ श्रुत जाण शिरोमण सागर जेम गंज्जीर, तीजे पद नमिये आ  
 चारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र ज्ञणावे सार,  
 तप विध संयोगे ज्ञाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुक्ता ते क  
 हिये नवज्ञाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पं  
 चाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार  
 ॥ त्रस आवर पीहर लोकमांहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमूं परमा  
 रथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण माइख जूत वेताल,

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ ( छंदः ) ॥  
 ॥ शेषो पास संखेसरो मन सुदे, नमूं नाथ निश्वे करी एक  
 वुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो गो, अहो ज्ञव्य लोको ज्ञुला  
 कां ज्ञमो गो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो गो, पख्या पाशः  
 मे ज्ञूतमाने ज्ञजो गो ॥ सुराधेनु ठंभी अजाने अजो गो, महापंथः  
 मूंकी कुपंथे ब्रजो गो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे,  
 अहे कोण राशजने हस्ति साटे ॥ सुरडुम ऊपामने आकः वावे,  
 महामूढ ते आकुला अंत पाषे ॥ ३ ॥ किहां काकरोने जे किहां मेरु  
 श्रृंगं, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्यः  
 देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रजावती  
 प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा  
 जेह ध्यावे, तेहना डुरक दाखिह दूरे गमावे ॥ ५ ॥ पांमी मानुपोने  
 वृथा क्यु गमो गो, कुशीले करी देहने कां दमो गो, नहि मुक्ति  
 पासं विना वितरागं ॥ ज्ञजो ज्ञगवंतं तजो दृष्टिदरागं ॥ ६ ॥ उदयः  
 रत्न ज्ञाखे सदा हेत आणी, दयाज्ञाव कीजे मोहि दास जांणी  
 ॥ मोरे आंज मोतीअमे मेह वृग, प्रभु पास संखेसरो आप तूग  
 ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गौतम नाम जपो निश दीश  
 ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यान, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥  
 गौतम नामे गिरवर चढे, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नामे  
 नावे रोगं, गौतम नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंक  
 ना, तसनांमे नावे टूंकना ॥ ज्ञूत प्रेत नवि मंने प्राण, ते गौतम  
 ना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निरमल काय, गौतम नामे  
 बाधे आन ॥ गौतम जिनशाशत्र सिणगार, गौतम नामे जयकार



॥ ४ ॥ शाल दोल सदा धृत घोल, मनवंठित कप्पम तंबोल ॥  
 घरे सुधरणी निरमल चित्त, गौतम नामे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौ  
 तम उदयो अविचल ज्ञाण, गौतम नाम जपो जगजाण ॥ मोटा  
 मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल  
 धोरानी जोरु, वारू विलसे वंठित कोरि ॥ महियल माने मोटा  
 राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम  
 सरसी संगत मिले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे वाधे वान  
 ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण ठे वहू ॥ कहे ला  
 वण्य समय कर जोरि, गौतम तूठा संपत कोरि ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांड़ी, सफल मनोरथ कीजिये  
 ए ॥ प्रजात ऊठी मंगलीक काजे शोले शती नाम लीजिये ए ॥ १ ॥  
 बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी जरतनी वहिनरी ए ॥ घट २  
 व्यापक अक्षररूपे शोल शती मांहि जे वरी ए ॥ २ ॥ बाहुबल  
 जगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नामे रुषज सुता ए ॥ अंग स्व  
 रूपी त्रिभुवनमांहे, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला  
 बालपणेशी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, उरुदना बाकला वीर प्रति  
 लाज्या, केवल लहि व्रत ज्ञाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूआ धारणी  
 नंदन राजेमती नेम वल्लजा ए, योवन वेशे कामने जीती, शंजम  
 लेश देव डुल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांरुव नारी, दुपदा नाम  
 वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणि  
 ये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंडिका ए,  
 शीयल सखणी राम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौशं  
 बिक ठामे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर घ  
 रणी मृगावती नामे सुरभुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा

साची शील न काची राची नही विषयारसें ए, मुखमो जोतां पाप  
 पुलाये नाम लेतां मन जल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनी कां  
 मण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जाणो धीज करता अनल  
 शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणी वांधी कूं  
 बायकी जल काढियो ए, कलंक ऊतारवा शतिय सुज्जडा चंपा वार  
 उघाणियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपदं  
 गामनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये बलिहारी तसु नामनी ए  
 ॥ १२ ॥ इस्तिनागपुर पांरुवरायनी कूंता नामे कामनी ए, पांरुव  
 माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शील  
 वती नामे शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नाम जप  
 ता पातिक जाए, दरसन डुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निपधानगरी  
 नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पणियां शीलज राख्यो,  
 त्रिजुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता,  
 पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्व विह्वाता कामित दाता, शोलमी  
 शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शाख वे साखी, उदयरत्न  
 ज्ञापे मुदा ए ॥ प्रह कंठीने जे नर जणसे, ते लहिस्थे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥

॥ अय गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ दृष्टवीकूख  
 रत्नहीर, विश्वजूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ अ  
 चतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जइ रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गंग ॥  
 करत धरत वात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत  
 प्रेजु आये चंग, वाणी गुण सप्त जंग ॥ वर्द्धमान जित अनंग, शंशय  
 तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंजाल संक रेखा ॥  
 वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पांय  
 अंग बार, स्वना कृत अति अपार, बोधन जग जीव तार, जये गुरु

त्त शुद्ध हैमै राखजे, बोल विचारीने ज्ञाखजे ॥ पांच तिथि म करो  
 आरंज, पालो शीयल तजो मन दंज ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध  
 ने दहिं, ऊषासां मत मल सही ॥ उत्तम ठाम खरचो वित्त, पर  
 उपगार करो शुद्धवित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार,  
 चार आहार तणे चरहर । दिवस तणां आलोए पाप, जिन ज्ञां  
 जे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्याये आवश्यक साचवे, जिनवर च  
 रण शरण ज्ञां जे ॥ चरे शरण करी दृढ होय, सागारी अण  
 सण ले सोय ॥ १९ ॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जा  
 यवा ॥ समेतशिखर आवू रिनार, जेटीश हुं धन धन अवतार ॥  
 ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी ठे एह, एहथी थाये जवनो ठेह ॥ आठे  
 कर्म पमे पातलां, पाप तणा ठुडे आदला ॥ २१ ॥ वारु लहिये  
 अमर विमान, अनुक्रमे पमे शिवपुरधाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे सस  
 नेह, करणी दुःखहरणी ठे एह ॥ २२ ॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि प  
 ज्ञणिसुं सामी सालं गायम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणे एकंद कर  
 वि निसुणहु जो ज्ञविया, जिन निवसे तुम देह गेह गुण गण गह  
 गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सरिजरहखित्त खाणी तल मंण, मगहदे  
 स सेणियनरेस रिजदल बलखंण ॥ धणवर गुधर नाम जि  
 हां गुणगणसजा, विप्य वसे वसुजूइ तञ्ज तसु पुहवी ज्ञजा ॥ २ ॥  
 ताणपुत्त सरिइंद ज्ञूय ज्ञवलपसिद्धो, चवइह विजा विवहरूव ना  
 री रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सो  
 त हाथ सुप्रमाणदेह रूवहि रंजावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण  
 लणवि पंकजलपामिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास ज्ञमामिय  
 ॥ रूवहि मयण अलग करवि मेढयो निरधामिय, धीरम मेरु गंजी

र. सिंधु चंगम चयवाहिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण  
 जंपे किंचिय, एकाकी किल जीत इव गुण मेळया संचिय ॥ अह  
 वा निचयपुव जम्म जिणवर इण अंचिय, रंजा पत्रमा गवरि गंग  
 रतिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय रर कविण कोय जसु  
 आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र ठात्र हींने परवरिया ॥ करय  
 निरंतर यज्ञ करम मिश्यामति मोहिय, अणचल हासे चरमनाण,  
 दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव नरह वासंमि  
 खोणीतल मंरुण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुधरगाम तिहां,  
 विष्ण वसे वमजूइ, सुंदर तसु पुहवि नजा, सयलगुणगणरूवनिहा  
 ण, ताणपुत विज्ञानिला, गोयम अतिही सुजाण ॥ ७ ॥ जास ॥ चर  
 म जिनेसर केवलनाणी, चोविहसंघ पइठा जाणी ॥ पाधा पुर सामी  
 संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुता ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण  
 तिहां किजे, जिण दीठे मिश्यामत ठीजे ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहास  
 सन वेठा, ततखिण साह दिगंत पइठा ॥ ९ ॥ क्रोध मानमाया म  
 दपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव डंडुजि आगासें वाजी,  
 धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा,  
 चउसठ इंद्रज मागे सेवा ॥ चामर उत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जि  
 नवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसजर वरवरसंता, जोज  
 नवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर  
 किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गयण  
 विमाणहिं रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रजूइ मनचिते, सुर आवे अम  
 यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंरुक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता  
 गहगहिता ॥ तो अजिमाने गोयम जंपे, इण अवसर कोपे तणु  
 कंपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांड  
 बोले ॥ मो आगल कोइ जाण जणीजे, मेरुं अवर किम उपम दी

जे ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर  
 महिय, पत्तनाह संतारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण  
 बहु सुख कारण ॥ जिणवर जग उज्जाय करे, तेजहि कर दिन  
 कार सिंहासण सामी ठव्यो, हुठ तो जयजयकार ॥ १६ ॥ ज्ञास  
 ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंद्रूय जूयदेव तो ॥ हुंकारो करस  
 चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन जूमि समोतरण, पे  
 खवि प्रथमारंज ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुररंज तो ॥  
 १७ ॥ मणिमय तोरणदंरु ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरवि  
 वर्जितजंगुण, प्रातीहारिज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर,  
 इंड इंडाणी राय तो ॥ चित्त चमकिय चित्तव ए, सेवंतां प्रजु पाय  
 तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विलास  
 तो ॥ एह असंजव संजव ए, साचो ए इंड जाल तो ॥ तो बोला  
 वइ त्रिजग गुरु, इंड्रूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे,  
 फेरे वेदपण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, जगतहिं ना  
 म्यो सीस तो ॥ पंच सथांसूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो  
 ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिजूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आज्ञास  
 करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहररयण, आप्या वीर  
 इग्यार तो ॥ तो उपदेसे ज्ञुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो ॥ विहुं उपवा  
 सें पारणो ए, आपणपें विरहंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जय  
 कार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंड्रूइ इंड्रूइ चढियो बहुमान  
 हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि स  
 वे, चरमनाह फेरे फुरंततो ॥ बोधबीज सज्जायमनें, गोयम जवहि  
 विरत्त ॥ दिस्क लेई सिरका सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ ज्ञास  
 ॥ आज हुठ सुविहाण, आज पचेतिमां पुण्य जरो ॥ दीगा गोमय  
 सामि, जो नियनयणें असिय जरो ॥ समवसरण मजार, जे जे

संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूठे मुनि पवरो ॥ २३ ॥  
 जीहां दीजे दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कने अणहुंत, गो  
 यम दीजे दान इम ॥ गुरु उपर गुरु जक्ति, सामी गोयम ऊपनिय  
 ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग जरे ॥ २४ ॥ जो अष्ट  
 पद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आंतम लब्धि वसेण, चरम  
 संरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेइ, गोयम गणहर  
 संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ त  
 पसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ  
 काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुज ए अजिमान, तापस  
 जो मन चिंतये ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर कि  
 रण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंरु कलस ध्वज वरु सहिया ॥  
 पेखवि परमाणंद, जिणहर जरेतेसर महिय ॥ निय निय कायं प्र  
 माण, चिहुं दिसि संठिय जिणइ विंवि ॥ पणमवि मन उद्धास, गो  
 यम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यकजुं  
 जकदेव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंररीक, कंररीक अध्ययन जणी ॥  
 वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ,  
 चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांरु घृत आण, अमीय  
 वृठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचस  
 यां गुन जाव, उज्जज जरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, क  
 वल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाइ, समवसरण  
 प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे ज  
 णवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी  
 हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण  
 पन्नरेतें, उप्पन्न परिवरिय, हरिउरिय जिणनाइ वंदइ, जाणेवी जग  
 गुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निइइ, चरमजिनेसर इम जणे;

गोयम म करिस खेव, ठेह जाय आपण सही, होस्यां तुझा बेव  
 ॥ ३१ ॥ ज्ञास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उद्ध  
 सिय ॥ विहरियो ए जहवांसंमि, वरस बहुतर संवसिय ॥ ठव  
 तो ए कणय पउमेण, पायकमल संघे सहिय ॥ आवियो ए नय  
 णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि,  
 देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर  
 मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणयो जिण समे ए ॥  
 तो मुनि ए मनविखवाद, नादजेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण  
 समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु  
 अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिजलो ए कीधलो  
 सामि, जाणयो केवल सागसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा  
 केरें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, जगतहिं जोलें  
 जोलव्यो ए ॥ आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥  
 साचो ए ए वीतराम, नेह न हेजे टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो  
 यम चित्त, राम वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उद्ध  
 रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज  
 उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे  
 ए ॥ गणथरु ए करय वखाण, जविया जव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥  
 ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पञ्चास, गिहवासें सं  
 वसिय तीसवरससंजम विजूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस  
 तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, वाणवइ वरसाज, सामी  
 गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाज ॥ ३७ ॥ ज्ञास ॥ जिम सह  
 कारें कोवल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सो  
 गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिर्यां लहके, जिम कणयाचल ते जें ऊ  
 लके, तिम गोयम सोजागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

देसा, जिम सुरतरुवर कणयय तंसा, जिम महुवर राजीववने ॥ जिम  
 रयणाघर रयणं विलसे, जिम अंवर तारोगण विकसे, तिम गोयम गु  
 रु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महि  
 मा जिम जंगमाहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गि  
 रिवर राजे, नर वइ घर जिम भेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पं  
 वरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम  
 उत्तम मुख मधुरी ज्ञापा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जू  
 मीपती ज्ञयवल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलवधे  
 गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आंज, सुरतरु सारे  
 वंठिय काज, कामकुंज सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन  
 कामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥  
 ४२ ॥ पणवस्कर पहिलो पञ्जणी जे, माया बीजी श्रवण सुणीजे ॥  
 श्रीमिति सौजा संजवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजे, विनय पहु  
 उवझाय थणीजे, इण मंत्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परधर वसतां  
 काय करीजे, देस देसांतर काय जमी जे, कवण काज आयास क  
 रो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समंगल ततखिण सीजे,  
 नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय वारोत्तर वरसे,  
 गोयम गणहर केवल दिवसे, कीयो कवित उपेगारपरो ॥ आदहि  
 भंगल ए पञ्जणीजे, परव महोच्चव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि क  
 ष्टयाण करो ॥ ४५ ॥ धन मातां जिण उधरे धरियो, धन्य  
 पिता जिण कुल अवंतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीक्षियो ए ॥  
 धनयवंत विद्या जंमार, तसु गुण पुहवी न लप्रइ पार, वरु जिम  
 साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास जंणीजे, चत्रविह संघ  
 लियायत कीजे, रिद्धिवृद्धि कष्टयाण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन  
 ठमो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पुरावो, रयण सिंहासन वेस



णो ए ॥ तिहां ठेठी गुरु देशना देशी, जविक जीवना काज सेरसी,  
नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो  
रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रजाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ चूख्यां जोजन  
संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा ज  
रार ॥ जे गुरु गौतम समरियें, मनवंठित दातार ॥ २ ॥ पुं  
ररीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊगीनें प्रणमता,  
चवदसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुशकलियं, सुविणियं सबलहि सं  
पणं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंतामि ॥ ४ ॥ सर्वा  
रिष्टप्रणाशाय, सर्वांनिष्ठार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वा  
मिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीरिसहेस्वर पाय नमी, आंशी मन आनंद ॥ रास ज  
णूं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हु  
आ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज माहानम कियो, शिवदित्य हजूर  
॥ २ ॥ वीर जिशंद समवसरया, सेत्रुंज ऊपर जेम ॥ इंडादिक अ  
गल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुंज तीरथ सारिखो  
नही ठे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तेरथ सगला जोय  
॥ ४ ॥ नामे नव निध संपजे, दीगा डुरित पुलाय ॥ जेटता जव  
जय टले, सेवता सुख घाय ॥ ५ ॥ जंबू नामे धीय ए, दक्षिण  
जरत मजार ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां ठे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहिली ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुंजो ने श्रीपुंररीक, सिद्धहेत्र कहूं तहतीक ॥ वि  
लाचलने करूं प्रणाम, ए सेत्रुंजैना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगि

ने महागिरि पुन्यरास, श्रीपदपर्वत इंद्रप्रकास ॥ महातीर्थ पुरवे  
 सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति; मुक्तिनिर्लो  
 त्तिए कीजे शक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृ  
 ष्ठीपीठ सुजड केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम  
 कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नाम, जपेज बे  
 वा अपने ठाम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते लडे, महावीर जगवंत  
 इम कडे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ बुरा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमाण ॥ पिहुलो  
 मूल उंचपण, ठबीस जोयण जांण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जांणवो, बीजे  
 अरे विसाल ॥ वीस जोयण उंचो कह्यो, मुळ वंदना त्रिकाल ॥  
 २ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीर्थराय ॥ सोल जोयण  
 उंचो सही, ध्यान धरुं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण,  
 ओषे अरे मजार, उंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमै नर नार ॥  
 ४ ॥ बार जोयण पंचम अरे, मूलतणे विसतार ॥ दो जोयण उंचो  
 अठे, सेत्रुंजो तीर्थ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ ठेठे अरे, पिहुलो पर  
 बत एह ॥ उंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीर्थ एह ॥ ६ ॥

॥ दारु बीमी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थकर, अनंत सीधा ऽण ठाम रे ॥  
 अनंत नली सिजस्ये इण ठामे, तिण करुं नित परणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुं  
 जसाधू अनंता सीधा, सीऊसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज ती  
 र्थ नही जेठ्यो, तेगरजावास कइंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फायुण सुद्धि  
 आठमने दिवसे, रूपजदेव सुखकार रे ॥ रायणरुख समोसरया  
 स्यांमी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ जरतपुत्र वैत्री पुनम  
 दिन, ऽण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोमीसुं पुंदरीक सीधा, ति

ण पुमरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमिराजा विद्याधर  
 बे बे कोमी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिए  
 प्रणमुं परजात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चेत्रमास वदि चौदसने दिन,  
 मीपुत्री चउसठि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सहुं स  
 धा एकठि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा, शवक न  
 वारिखिद्ध रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोर्म  
 मुनिसुं निसद्ध रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांनव इण गिर स  
 धा, नव नारद ऋषिराय रे ॥ संब प्रज्जन्न गया इहां मुगते, आठू क  
 र्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विना तेविस तीर्थकर, समवस  
 रया गिरिशृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थकर बेहूं, रया चोमासे सुरंग  
 रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस साधु परिवार संघाते, आवञ्चासुत साध  
 रे ॥ पांचसें साधुसुं सेलग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाधरे ॥ से०  
 ॥ १० ॥ असंख्याता मुनिसैत्रुंज सीधा, जरतेसरने पाट रे ॥ रा  
 म अने जरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥  
 जालि मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोदि रे ॥ साधु अन  
 ता सैत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोदि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ ढाल व्रीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सैत्रुंजना कहुं सोल उदार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार

॥ सुणातां आणंद अंग न माय, जनमश्ना पातिक जाय ॥ १ ॥ ऋ

षन्नदेव अयोध्यापुरी, समवसरया स्वामी हित करी ॥ जरत गयो

वंदणने काज, ये उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहे मोटा

अरिहंत देव, चोसठ इंड करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो संघ कहाय,

जेहने प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, जर

त सुणीने मन गहगह्यो ॥ जरत कहे ते किम पांमिये, प्रजु कहे सें

त्रुंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ जरत कहे संघवीपद मुऊ, ये आपो

हूं अंगज तुझ ॥ इंडे आणया अकृतवात, प्रचुं थापे संघवीपद ता  
 स ॥ ५ ॥ इंडे तिण वेला ततकाल, जरत सुजडा विहुंने माल ॥  
 पहिरावी घर संप्रेकीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिप  
 जदेवनी प्रतिमा वली, रतनतणी दीधी मन रली ॥ जरते गणधर  
 तेनिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू  
 की सहु देस, जरत तेमायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी,  
 प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जगत कीधी अतिवणी, सं  
 घ चलायो सेत्रुंज जणी ॥ गणधर बाहूवल केवली, मुनिवर कोर  
 साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्तनी सधली रुहि, जरते साथे ली  
 धीलिद ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नाथे पार  
 ॥ १० ॥ जरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥  
 संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे  
 निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वथाय ॥ तिण ठांने  
 रही महोद्वव कियो, जरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ  
 सेत्रुंजा ऊपर चढयो, फरसंता पातिक ऊरु पळ्यो ॥ केवलघानी  
 पगला तिहा, प्रणम्यां रायणरुख ठे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी  
 आत्र निमित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोदामणी,  
 जरते दीधी कौजुक जणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंडे  
 वलि दीधी आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो, जरत करायो गुरि  
 सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मन  
 रंग ॥ जरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोदामणी ॥ १६ ॥  
 भिरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली ॥ बाहरी सुंदरि  
 प्रमुख प्राशाद, जरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक  
 प्रतिमा प्राशाद, जरते कराया गुरु सुप्रशाद ॥ जरततणो पहिलो  
 वदार, सगलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

हाल बोधी ॥ राग सिंधुडो आसाउरी ॥

॥ ज़रततणे पाट आठमे, दंरुवीरज थयो रायो जी ॥ ज़र  
 ततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज  
 उदार सांजलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीज  
 वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपात  
 णो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलगो बिंब जंझारीयो, पञ्चमदि  
 सि तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी, सफल  
 कियो अवतारो जी ॥ दंरुवीरज राजातणो, ए बीजो उदारो जी ॥  
 से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंरुवीरजथी जिवारो जी,  
 इशानेंड करावियो ॥ ए तीजो उदारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा  
 देवलोकनो धणी, माहेंड नाम उदारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करा  
 वियो, ए चोथो उदारो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धणी,  
 ब्रह्मेंड समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पांचमो  
 उदारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ जुवनपती इंडनो कियो, ए उठो उदारो  
 जी ॥ चक्रवर्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उदारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥  
 अजिनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरेंड करा  
 वियो, ए आठमो उदारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंडप्रभु स्वामीनो  
 पोतरो, चंडशेखर नाम मढ्हारो जी ॥ चंड्यशराय करावियो, ए  
 नवमो उदारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना,  
 शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय करावियो, ए दशमो  
 उदारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ दसरथसुत जगदीपती, मुनिसुव्रतस्वा  
 मी वारो जी ॥ श्रीरामचंड करावियो, ए इग्यारमो उदारो जी ॥  
 से० ॥ १२ ॥ पांरुव कहे अमे पापिया, किम बूटां मोरी मायो  
 जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप जायो जी ॥ से०  
 ॥ १३ ॥ पांचे पांरुव संघ करी, सेत्रुंज जेदयो अपारो जी, काष्ट वै

स्य विष लेपना, ए वारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी  
 पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करी,  
 प्रापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥ १५ ॥ अघोतर सो वरसां गया,  
 विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवान् जावन् करावियो, ए तेरमो  
 उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत धार तिमोतरे; श्रीमाखी सुविचा  
 रो जी; वादरुवे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥  
 से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह  
 करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स  
 ख्यासिये, वेसाख वदि शुभ वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो,  
 ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए  
 वरतेवे उद्धारो जी ॥ नित रकीजे वंदना, पांमीजे जवपारो जी ॥ २० ॥ से०

॥ दूरा ॥

॥ वलि सेत्रुंज महातम कहूं, सांजलो जिम ठे तेम ॥ सूरि  
 घनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्श  
 नी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेय मानता, लाज हुवे तह  
 तीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपर, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमाण  
 समो खेदे, पढ्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो  
 नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥  
 तिर ऊपर गागर धरी, आत्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तनी स्त्री थई,  
 शिबसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उप  
 बास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती  
 परब मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोदि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक ह  
 स्या, पापथी नाखे जोर ॥ ७ ॥ सहस्र साख थावक जशी, जो  
 जन पुन्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पन्डिताननी, अधिको तेहथी देख ८

ज उतरुं ए, सिद्धकर्मलू विसराम ॥ चैत्यप्रवाम इण पर करी ए, सी  
 धा वंठित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंजतणी ए, सफय  
 कियो अवतार ॥ कुसल केमसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से०  
 ॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोहामणो ए, सांजलज्यो सहू कोय ॥ घर  
 बेठां जणे जावसुं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संव  
 त सोल वयासिये ए, आवण वदि सुखकार ॥ रास रज्यो सेत्रुंजत  
 णो ए, नगर नागोर मजार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गढ खरतर  
 तणो ए, श्रीजिनचंद सूरिस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल  
 चंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससील जग जाणिये ए, सम  
 यसुंदर उवहाय ॥ रास रज्यो तिला रुवको ए, सुगतां आणंद था  
 य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दूरा ॥

॥ वादी वीस जिनेसरू, रचस्युं रास रसाव ॥ तीरथ शि  
 खरसमेतनी, महिमा बनी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले,  
 प्रगट्यो शिखरसमेत ॥ कोमाकोमी मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत ॥  
 २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्यां पाप पुलाय ॥ जविजन जे  
 टो जावसुं, ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी,  
 कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत जगवंतना, तिम ए ती  
 रथ होय ॥ ४ ॥

॥ बाल १ ॥ चोपईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब  
 जग होय ॥ वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरी  
 ने रखा ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी जली, तिहां जितशत्रु

नरेसर चली ॥ विजयाराणीने सुत जाणें, अजितकुंमरें सहु गुण,  
 नी खाण ॥२॥ जसु इंद्रादिक सेवा करे, इंद्राणी अति उच्चव धरे ॥  
 तीर्थकरनी पदवी लढी, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनु-  
 क्रम इम जोगवतां जोग, पुन्य प्रसाद मिळ्यो सहु जोग ॥ अवस-  
 र वे संवत्सर दान, संजम लीनो आप सुजाण ॥४॥ कर्म खपाव  
 पांम्यो ज्ञाति, केवलदर्शन लह्यो प्रधान ॥ विचरे पुढवीमंरुलमांदि,  
 प्रव्यंजीव प्रतिबोधन ताहि ॥५॥ सिंदसेनादिक गणघर जया, पं-  
 चाणवे संख्या सहु अया, एक लाख मुनिवर परिवरघा, श्रावक  
 श्रावकणी सहु करघा ॥६॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साधव  
 यां जाणो सुविचार ॥ श्रावक सहस्र अष्टांशुं सही, दोय लाख  
 संख्या गद्गही ॥७॥ पांच लाख पेंतालीस हजार, श्रावकणी सं-  
 ख्या सुविचार ॥ बहुतर लाख पूरवनी आय, कंचनवरण सरीर  
 सुहाय ॥८॥ साढीअारसे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गं-  
 नीर ॥ गज लांठन प्रभुजीने जाण, अमृत सम जसु मीठी वाण  
 ॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत  
 सहस्र मुनिवरने परिवार, मासखमण अणतण कर सार ॥ १० ॥  
 चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ शणे ॥ चूवर खेध-  
 रं किन्नर सुरी, इंद्रादिक सहु उच्चव करी ॥ ११ ॥ आप्पो तीरथ मोटो  
 मही, अठाइ महोच्चव कियो सही ॥ ५ तीरथनी जात्रा करे, ते  
 प्रवियण अरुपसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दृष्ट ॥

॥ श्रीसंजव जिनराज जी, गाई इहां निर्वाण ॥ शिखरसमे-  
 त सुहामणो, प्रगढ्यो तीरथ लाण ॥ १ ॥

॥ डाल धीजी ॥ सुगण सनेरी साजन श्रीसीमंथर स्वाम ॥ ५ देशी ॥

॥ सावडीनारी नरी यन संपद बहु शोक, जैतारि नूप



राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खा  
 ण, जेहने सुत श्रीसंज्ञव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण  
 सरीर मनोहर प्रचुनो जाण, लंठन अश्वतणो सोहे प्रचुनो परधा  
 न ॥ साठ लाख पूरबनो प्रचुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै उच्च  
 पणै प्रचु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दाय संख्याये प्रचुने गणधर  
 होय, दाय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख  
 श्रमणी बली ऊपर सहस ठत्तीस, जूमंरुल विचरे प्रचु श्रीसंज्ञव  
 जगदीस ॥३॥ तीन लाख बलि सहस त्रयाणुं श्रावकलोक, षट  
 लख सहस ठत्तीस श्रावकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक अरु ड  
 रितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रचु सकल संघमें जयशकार ॥४॥  
 सहस श्रमण परिवारे प्रचुजी सिखरसमेत, एक मास संलेखण  
 कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रचुजी पद निरवाण,  
 तीरथ महिमा महियल मोटी थइय सुजाण ॥५॥

॥ दुहा ॥

॥ अजिनंदन जिन वंदिये, पायो पद निरवाण ॥ शिखरस-  
 मेत सोहामणो, जेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो ॥ ए देखी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम जली, संबर राजा सोहे  
 मन रखी ॥ सिद्धार्थी राणी प्रचु तसु नंद ए, अजिनंदन जिन प्रग  
 द्या चंद ए ॥ उल्लाखो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साठी  
 तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंठन ते नित वसे ॥  
 पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए ॥ तीन लाख मुनि  
 ठलाख आर्या, सहस त्रिसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अठ्यासी  
 दो लख श्राद्धनी, संख्या चौ लख सत्तावीसनी ॥ श्रावकस्यारी संख्या  
 जाण ए, नायकयक कालिका गण ए ॥ उल्लाखो ॥ ढाल ए शिखरस

मत ऊपर मास एक संलेखणा, इक सहस साधू परवरया प्रजु  
 मुक्ति पहुंचे पेपणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमं  
 गला, श्रीसुमति जिनवर ज्ञानंदनसदा होतसुमंगला ॥३॥ चाल ॥  
 सोवन वर्ण धनुष तसु तीनसे, लंठन क्रोंच सोहै सुजगे हसै ॥  
 पूरब लाख पच्चासी आठ ए, इकसौ गणवर गुणगण जाठ ए ॥  
 उद्धालो ॥ जाठ ए मुनि त्रिण लाख सोहै सहस वीस प्रमणां  
 ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोष लक्ष जाण ए ॥  
 संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आणिये, पण लाख  
 सोहै सहस तुंवरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात  
 संख्या सहस साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रजु मुक्ति  
 पुहता चंग ए ॥३॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धरनृप तात  
 सुतीमा मात ए, पदम प्रजु तसु अंगज नाथ ए, लंठन कमलत  
 णो सुज हाथ ए ॥ उद्धालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अंढाई  
 सै तू कहौ, तीन लाख पूरब धित कहावै एकसौ गणधर लहो ॥  
 लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस लख च्यार ए, साध्वी  
 दोष खल सहस विदतर श्रावक संख्या सार ए ॥४॥ चाल ॥ पांच  
 लाख बलि पांच हजार ए, श्रावकएयारी संख्या सार ए ॥ कुसम  
 देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रजु सोहै सही ॥ उद्धालो  
 ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आठसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास सं  
 लेखन प्रजुनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रजुजी मुक्ति पहुता,  
 गिर शिखर महिमा जई, ॥ तसु चरण पंकज वालवंदे हृदय आनं  
 द गइजही ॥ ५ ॥

॥ दुरा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ जविलन ब्रह्म  
 रसु सेवतां, पांमे वंदित काम ॥ १ ॥

॥ दाल चोथी ॥ श्रीसीमंभर साहिवा ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सोजता, राजा तात प्रतिष्ठ लादरे ॥ दे  
 वी पृथ्वी मात जी, स्वस्तिक लंठन सिष्ट लादरे ॥१॥ श्रीसुपार्श्व  
 जिनंद जी, वीस पूरब लख आयु लादरे ॥ धनुष दोयसै देहनो, कं  
 चनवरण मुहाय लादरे ॥२॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कह्या, सा  
 धू त्रिण लाख होय लादरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरै, सहस सा  
 धवियां जोय लादरे ॥३॥ श्री० ॥ सहस सतावन लकनी, श्रावक  
 संख्या आय लादरे ॥ च्यार लाख वली त्रेणवै, सहस श्रावकणी  
 ज्ञाय लादरे ॥४॥ श्री० ॥ मातंगयक शंतासुरी, पांचसे मुनि पर  
 धर लादरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम वियां निस्तार ला  
 दरे ॥५॥ श्री० ॥ नगर चंडपुर इण परै, राजा तात महेस लादरे ॥  
 देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंडप्रभु वेस लादरे ॥६॥ श्रीचंडप्रभु  
 वंदिये, चंडवरण तनु जेह लादरे ॥ लंठन चंडतणो जलो, धनुष  
 दोहसे देह लादरे ॥७॥ श्रीचं० ॥ जविककमल प्रतिबोधता, सेवे  
 सुर नर यक लादरे ॥ दस लाख पूरब आजखो, तेणवे गणधर  
 दक लादरे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्र  
 मणी तीन लक लादरे ॥ असी सहस संका कही, श्रावक वलि  
 होय लक लादरे ॥९॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, श्रा  
 विका चनु लक धार लादरे ॥ सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजी  
 नो परिवार लादरे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव नृकुटीसुरी, स  
 हस साधु परिवार लादरे ॥ संलेखन इक मासनी, पुहता  
 मुक्ति मजार लादरे ॥११॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥

॥ जय श्रीसुविद्ध जिनेसरु, जगपति दीनदयाल ॥ समे  
 तशिखर मुगते गया, नविजनके प्रतिपाल ॥१॥

॥ दाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ९ देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा  
माता सुत, जग सुविध सुज जीव ॥ १ ॥ रत्नतवरण सम तनु  
सत, धनुष एक परिमाण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रजुनो आयु  
सुजाण ॥ २ ॥ अक्यासी संख्या जग, गणधर परम प्रधान ॥ ल  
ख दो मुनि विंशति सदस, इक लख भमणी जाण ॥ ३ ॥ दोय  
सक श्रावक कह्यो, अरु गुणतीस हजार ॥ एकतर चौ लख सदस,  
श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सं  
निधकार ॥ सदस साधु परिवारसुं, आण सिखर सुचार ॥ ६ ॥  
मास संलेखण कर प्रजु, मुक्ति गए इह वोर ॥ तीरथ महिमा म  
हियलै, प्रगटी च्यांरुं उर ॥ ७ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, दिव सु  
णज्यो अधिकार ॥ जदिलेपुर दृढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥  
८ ॥ लंठन सुज श्रीवचनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ  
धनुष, मान सरीर अमंद ॥ ९ ॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रजुनो आयु  
प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्यो, मुनि इक लाख सुजाण ॥ १० ॥  
एक लाख चालीस सदस, भमणी संख्या उर ॥ सदस तयासी  
दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ ११ ॥ सदस अठायन लक्ष चौ,  
श्रावकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सानि  
धकार ॥ १२ ॥ सिखरसमेत सदस एक, साधुने परिवार ॥ मुक्ति  
गए प्रजु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १३ ॥

॥ दाल छठी ॥ धन२ संपति साचो राजा ॥ ९ देशी ॥

॥ सिंदपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेत्तर तांत जी, कं  
चनवरण श्रेयांस प्रजुजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो  
रे नमो श्रीत्रिजुवन राजा, खरुग लंठन प्रजु पायजी ॥ धनुष असी

देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर  
 बहुतर सहस चौरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सह  
 स वलि सहस गुण्यासी, श्रावक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न० ॥  
 अमृताक्षीस सहस वलि चौ लाख, श्राविका जाणो सार जी ॥ ज  
 ह अमर सुरी मांनवी जाणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥  
 न० ॥ सहस मुनीसरनै परिवारै, प्रज्जुजी सिखरसमेत जी ॥ मा  
 स संलेखण कर प्रज्जु पोहता, मुक्तिमहल सुख हेत जी ॥ न० ॥  
 ५ ॥ द्विव कंपिलपुर तात ज्ञपति, श्रीरुतवर्म सुमात जी ॥ स्या  
 मादेवी अंगज ऊपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सू  
 कर लंठन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख व  
 डरनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सहस  
 मुनि अरु सय इक लाख, श्रमणी श्रावक जाण जी ॥ आठ सहस  
 दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ प  
 णमुख सुरवर विदिता देवी, प्रज्जुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजार  
 साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न० ॥ ९ ॥ नगरी नाम  
 अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी ॥ मुजसा मात तिणे सुत  
 जायो, प्रज्जुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंठन श्येन सो  
 वन सम काया, धनुष पच्चास प्रमाण जी ॥ तीस लाख वडरनो  
 आयु, गणधर पचवीस आण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ ठासठ सहस  
 मुनीसर सोहे, बासठ श्रमणी हजार जी ॥ ठ हजार लाख दोय  
 श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख व  
 लि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताळ यह श्रीसंघके  
 सानिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनि  
 वरनै परिवारै, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि  
 ऊपर, पुहता पद निरवांण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दृष्ट ॥

॥ श्रेष्ठे धर्म जिनेसरू, पुढता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत  
गिरिंद पर, नमोश् जगन्नाथ ॥ १ ॥

॥ दाल सातमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ ए देवी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी घणी जी, ज्ञानुराय सुजाण ॥ राणी  
सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥ १ ॥ जगतपति धर्म जिने  
सर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंगन सुखकार  
॥ २ ॥ ज० ॥ चौतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सदस प्रमा  
ण ॥ श्रमणी वासठ सदसस्यु जी, श्रावक दोय लक्ष मान ॥ ३ ॥  
ज० ॥ च्यार सदस वलि ऊपरां जी, चौ लख एक हजार ॥  
श्रावकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥ ४ ॥ ज० ॥  
किन्नर सुर यत्ना सुरी जी, एक सदस परिवार ॥ समेतसिखर सु  
ते गया जी, बांदू चार हजार ॥ ५ ॥ ज० ॥ हथणापुर विश्वसेनना  
नी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन  
जयशकार ॥ जगतपति शांति जिनेसर सार ॥ ६ ॥ मृग लांगन सोवन  
समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरप इक लाखनो जी, ठ  
नीस गणधर सीस ॥ ज० ॥ ७ ॥ वासठ सदस मूनि ठसै जी, इगसठ  
श्रमणी हजार ॥ दोय लाख श्रावक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार  
॥ ८ ॥ ज० ॥ सदस त्रयाणुं श्राविका जी, तीन लाख परिवार ॥  
गह्मयक देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥ ९ ॥ नवसै मु  
नि परवार स्युं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमणकर मुगतिमें  
जी, पुढता निजपद हेत ॥ ज० ॥ १० ॥ श्रेष्ठे हथणापुर जलो  
जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंभुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन त  
नु श्रीमात ॥ जगतपति कुंभु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ गग  
लंगन पेंतीसनो जी, धनुष देहनो मान ॥ सदस पंच्याणव वरस

नो जी, आयु प्रचुनो जान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पैंतीस गणधर वीपता  
 जी, साठ सहस मुनि जान ॥ उसै साठ सहस वली जी, श्रमणी  
 संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लकनो जी, आव  
 क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, आविका सं  
 ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरधा जी, देवी व  
 ला गंधर्व ॥ कुंभुनाथ मुगते गया जी, माख संलेखण सर्व ॥ ज० ॥ १५  
 ॥ दुहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्युं अब अधिकार ॥ श्री  
 ता सुणज्यो प्रेम धर, यास्यै लाज अपार ॥ १ ॥

॥ दाल आठमी ॥ देसी विछियानी ॥ हारे लाला श्रीजिनकुशल सूरिसरू ॥ ए देशी ॥

॥ हारे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अषोध्या  
 चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला

॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंठन नंदावर्तनो, तीस धनुष देहीनो मान रे  
 लाला ॥ कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला ॥

॥ २ ॥ श्रीअ० ॥ इक लाख आवक ऊपरे, वलि संख्या अधकी जाण रे  
 लाला ॥ सहस बहुतर ताननी लक आविका संख्या आंण रे लाला ॥

श्रीअ० ॥ ३ ॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवार  
 रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रचु, कर मास संलेखण स

ररे ॥ श्रीअ० ॥ ४ ॥ मिथिलानगर प्रजावती, मात पिता श्री  
 कुंज राय रे लाला ॥ लंठन कलस पत्रीसनो, वपु धनुष सोवन

सम कायेरे लाला ॥ श्रीमद्विनाथ जिनेसरू ॥ ५ ॥ सहस पचा  
 वन वर्षनी, अित गणधर अठावीस रे लाला ॥ जविक कमल प्रति

बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥ चा  
 लीस सहस मून सरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस

त्रयासी लकही, आवकनी संख्या सार रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥

श्राविका तित्तर सदसनी, लक्ष्मी तीन संख्या सुविचार रे लाला ॥ सदस  
 मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ ए ॥  
 राजग्रही राजा पिता, सुधीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्यामव  
 रण तनु शोभता, जे कपिल लंठन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत  
 स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु ववर तीस हजार  
 रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सदस मुनिसर सार रे  
 लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सदस पचवीसनी, संख्या व  
 हुतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष प  
 चास हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी ज्ञानी,  
 नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सदस मुनि परवारसे, गए मुक्ति  
 मद्दल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा  
 मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंठन  
 कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिने  
 सरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरततणो, गणधर तित्तर परिमाण रे  
 लाला ॥ वीस इकतालीस सदस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण  
 रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख तित्तर सदसनी, तीन ल  
 क्ष सदस बलि दाय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अन्नक्रम  
 करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता जूमंफले,  
 आया तित्तर समेत मजार रे लाला ॥ जूकुटी यक्ष गंधारी सुरी,  
 इक सदस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूरा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि  
 रोमणि सदसफण, जगजीवन जगतात ॥ १ ॥

॥ दाल नवमी ॥ आदर जीव समागुण आदर ॥ ए देवी ॥

॥ लय१ परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारसनाथ जी ॥



सांवरिया साहिव जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥  
 जयशंखर समेत सिरोमणि, श्रीसांवरिया पास जी ॥ ध्यावे  
 सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी दे  
 स वणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्या  
 ता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंठन नील  
 वरणा ठवि, देहि शुभ नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाणे,  
 गणधर दत्त प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सहस्र मुनिवर  
 अरु श्रमणी, कही अमतीस हजार जी ॥ जूमंजल विचरे ज्वि  
 जनकूं, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चोसठ सहस्र लाख इ  
 क श्रावक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी सं  
 ख्या, पार्श्वयक्त सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ वीस जिनेसर मुगते  
 पुहता, महिमा अश्य अपार जी ॥ तिए ए तीरथ प्रगढ्यो जग  
 में, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ ठहरी पावे जे नर  
 ज्ञावै, जेठे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सु  
 रतरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुदिध संघतणी करै ज्ञक्ति, सं  
 घपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पांसी, जेहनो  
 सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परजव सुरनर संपद पावे, जा  
 आ करे गहगाट जी ॥ साधमीं वञ्जल मुनिज्ञक्ति, पूजा उञ्जव आ  
 ट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूंक२ पर चरण प्रभूना, पूजा ज्विज  
 न ज्ञाव जी ॥ ध्यान धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उ  
 ञ्जाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रज्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां  
 नवनिध थाय जी ॥ तिए ए ज्विजन ज्ञाव धरीने, सुणज्यो मे  
 न थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गहपति महिमाधारी,  
 कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौजाग्य सूरेश्वर, अमृत  
 वचन सुगात जी ॥ १३ ॥ ज० ॥ तासु पसायें रास रज्यो ए, अ

मृतसमुद्भवे सीत जी ॥ वाखचंड निज मति अनुसारे, सोधो विबु  
ध जगीत जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत उगणीसे सितमोत्तर, सुदि  
वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, जणतां मंगल  
माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ दाल १ ॥

रुद्र प्रमुख जिन पाययुग प्रणमूं, सिवसुख दायक मनह  
उद्भास ॥ पुंररीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल वि  
कास ॥ १ ॥ प्रह सम सूधा साधु नमुं नित, जावै श्रमण सुगुरु  
जगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखाळूं, परमानंद सुमति विकसं  
त ॥ २ ॥ प्र० ॥ जस्त महामुनि प्रथम चक्रीतर, वाडूवज्ज उप  
शम जंनार ॥ सूर्यसादिक आठ मुनितर, पांभ्यो विमलाचल ज  
वपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रुद्रजवंत जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोनी  
लाख असंख, श्रीलेत्रुंजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूंकी कं  
ख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ तगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्ति, साधु महा  
बल संजम सींह ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम रुपांतर न-  
वम अशोह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ठ वसुंदर, श्रीमद्धि  
नाथ पूरवज्जव मित्र ॥ पहुंता परम रुरीतर शिवपुर, पाली श्रीजि  
न आंण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ वंड विष्णुकुमार लवधि निधि, खं  
दक सूरीना सीत सत्र पंच ॥ कार्तिकसेठ सुसाधु कीर्तिधर, श्रम  
ण सुहोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीवडुवंत अक्षोभसु सा  
गर, प्रमुख आठ अणगार प्रधान ॥ श्रीरुदनेमि नेमजिन वंधव,  
निरमल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालिने  
वधयाली, पुरततेण वारिसेन प्रजुन्न ॥ संव अने अनिरुद्ध रुपीतर,  
सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमार अनीकजसादिक  
पट मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकपाल ॥ दंडण रूपि श्रीथावज्ज

सुत, सहस साधु संजतसु ठुपाल ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ बाल बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो, पंचसयांसु सेदग मुनि  
 वरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥  
 उद्धालो ॥ संपद करो समदम रिषीसर साधु सारण सोह ए, अं  
 तर प्रकासे तिमर नासे, जविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुध्ध प्रबुध्ध  
 नारद मुनि प्रमुख पैताल ए, दमदंत महाऋषि कुंजवारे साधु नमुं  
 त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिषजदत्त रतनत्रय मुणी, स,  
 मरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांरुव प्रणमुं मुनिपती, केसपएसी  
 बोधक जिनमती ॥ उद्धालो ॥ जिनमती वालक पूत्र मेहल थिवर  
 आणंद रस्क्रियो, अणगार कासव धर्म ज्ञारुयो सोधि सिवपुर स  
 स्क्रियो ॥ काक्षासवेसी पूत्र आतम अरथ साधक उपसमइ, श्रीपुं  
 रुरीक महामुनीसर प्रणमिये शुज्ज संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंडु  
 वलकलची रंकेवली, श्री अयमतो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू  
 डमह नमि निग्गया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उद्धालो ॥ श्री  
 जुवा ए वृषजादि देखी थया वरु वइरागिया, संजमसिरि जज मो  
 हनिडा तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया  
 एकरण समै, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३  
 ॥ चाल ॥ खंतै कुल्लकुमारसु ध्वाइये, लोहच्चा मुनि चरणे लय ला  
 इये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजम सुइ जयंती साहुणी  
 ॥ उद्धालो ॥ साहुणी जाणी जगदखाणी, परमपद सुख पांमिया  
 ॥ श्रीश्रमणज्जइ सुज्जइ सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठय  
 तीस सुव्रत, साधुसुवत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत गोज्जइ गरुड गरि  
 मासागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय ऋषीसर वंदिये, दसारण  
 जइ नमुं डुख बंदिये ॥ अर्जुनदादी सुख संजमधरो, सुद्धप्रहा

री सिवरमणी वरो ॥ उद्धालो ॥ सिवरमणी वरो श्री कूरगमू कृमावंत  
 सिद्ध, कोमिन्न दिन्न अनै सेवाली पनर सतक तिमोत्तरा ॥ गो  
 नम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥  
 श्रुआ श्रीगुणसागर गाईये, प्रयवी चंड प्रणम्यां सुख पाइये ॥ खं  
 कुमार सदा अजिनंदिये, नमिह नरह मित्र मन आणंदिये ॥  
 उद्धालो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रूप इ  
 त्रापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीये धरी ॥ श्रीइंड नाम निर्ग्रथ निर्मम  
 यर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसुं जितशत्रु मुनी  
 सरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि ३ जसतणो, श्रमण सु  
 संसल सील सुहामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आडकुमार ए, चित्त चतुर  
 नर चित्त चमकार ए ॥ उद्धालो ॥ चमकार सार सुजात रुषिवर  
 देवसांनिध जस धणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजै सुजिन पालत दि  
 त्त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥  
 श्रीकपिल रुषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरलेव ए ॥ १७ ॥  
 चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषे जुन, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुन ॥ श्री  
 इखुकार नृपति कमलावती, रांणी नृगुसुं प्रोहित सुजमती ॥ उद्धा-  
 लो ॥ सुजमती जेहनी जसाजार्थो पुत्र दोय वखाणिये, ए उडूं  
 लेइ चारु चरित्र मुगति पहुता जाणिये ॥ कत्रिय मुनिसर साधु  
 संजम धर्मरुचि महाव्रती, निग्रथनाथ अनाथ बंदू समुडपाल सुसं  
 यती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्भापुत्र नमुं केवल कल्पो, विवसुं शीतल  
 सिवकमला मिळ्यो ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशं  
 स्पो तप गुण वीर ए ॥ १९ ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुवाहुज्जइ नं  
 वकुमार ए, आदिक दसे रिप चरिय जेहना सुख विपाक उद्धार ए ॥  
 श्रीचंरुद्र सुसीस खंदग कृमानिधि कदिये इण कलै, कुरुदत्त सुत  
 तीसग सरोरुद्र रिप नम्यां आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

मुख शिष्य च्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अन्नैकुमा  
मुनि अन्नयंकरो, हृद्य विहृद्यसु आतम हितकरो ॥ उच्चावो  
हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिपेण आराधियै, सुनह  
नै सर्वानुभूति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अ  
उदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसादन्नइ सुधन्न मुनिवर समरं  
मंगलकरो ॥ १० ॥

॥ बाल ३ ॥ रण धन्यासिरी ॥

वरुवेरागी वर नमूं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रज्वल सिच्यंज  
परगमो, सुजस जसोन्नद्र स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमूं ज  
नांमे धर नवनिध्व वाघै रिद्ध समुद्र ॥ महा० ॥ ११ ॥ जग सं  
तिविजय जयो, जद्रवाहु कृतजद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनि  
श्रीधूलजद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ जद्रवाहु स्वामीतणा, च्यार शि  
मुनीराय ॥ स्तीत परीषह जिणसह्या, सारया२ आतम काज ॥ म०  
॥ १४ ॥ अऊमहागिरि जांशिये, अऊसुहृष्टि विसाल ॥ संप्रति नृ  
पनिबोहियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ १५ ॥ आरिजसांमि  
यसंसियो, अऊसुजद्र मुनीस ॥ अऊमंगु महिमा निलो, सींहा  
री समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि शिवर महामनी, श्रीवय  
स्वामी मुनिराय ॥ अरहदिस मुनि अपहरयो, जद्रगुपति निरमा  
॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरू, श्रीरक्त गुरु दक्ष ॥ पुर  
मित्र गुण गहगह्यो, प्रभु डरबलका पक्ष ॥ म० ॥ २८ ॥ विंज स  
धु सुविषइ ज्ञरघो, श्रीगंनिल सुविहृष्ट ॥ सूत्रअरय रतने ज्ञरघो  
कृमाश्रमण देवर्ष ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल महामुनी, श्री  
उपसै सूर दयाल ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सही, जिन आज्ञा प्रतिपा  
॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्मभूमी जिके, दुआ होस्यै अणां  
॥ वर्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रय गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ ब्राह्म

मुद्गरि रायने, साहुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिक  
 रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल उन्नीस ए, श्री  
 विमलनाथ सुरसाज ॥ दिहा कढ्याणक दिने, गूंथी श्रीमुनिमाल  
 ॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरै रलियामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥  
 सूरि विजय राजे सदा, संघ संकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री  
 मतिजइ सुगुरुतणें, सुंपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंध वखाणीये,  
 सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणग  
 ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिणे, पांमे सुख जरपूर ॥ म० ॥  
 ३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम  
 दातिद्ध घेर फले, सदा२ कढ्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल  
 का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अय छिन्नूं जिन स्तवन लि० ॥

॥ दो० ॥ वरतमान चौवीसी वंदू, मन सूधै नित मेव री माई ॥  
 रूपज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम प्रजु सेव री माई ॥  
 ॥ व० ॥ १ ॥ श्रीसुपार्थ चंड प्रजु प्रणामुं, सुविध शीतल श्रेयांत री  
 माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंसरी  
 माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मद्धि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी  
 पास जिनंद री माई ॥ चौवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणामूं परमा  
 जेद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ टाल २ ॥ पर सय सूषा साधु नमं नित ॥ ए देत्री ॥

नित २ अतीत चौवीसी नमिये, जेइना नाम प्रगट ए जांण ॥  
 कवलग्यानी ते निरवांणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥  
 ॥ नि० ॥ सर्बानुज्जति श्रीवरदत्त जिनवर, वामोदर सुतजाश्रीस्वां  
 मि ॥ मुनिसुव्रत मुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नाम  
 ॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारथ, श्रीजिनेसर सुद्धम

णस्स ॥ इयं जीयंतकराई, एतं स्वमा सवसादूणं ॥ ३ ॥ न चः  
 ऊइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसंग्ग सहस्तेवि  
 वि, मैरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ उदो विणीय विणउ, पढ  
 गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमअं, विम्हिय दिय  
 सुणइ सबं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइत्त तं सिरेण इअंति ।  
 इय गुरुजण मुह उणियं, कयंजलित्तमेहिं सोयवं ॥ ६ ॥ ज  
 सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जइय पयाए  
 नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न  
 पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउ कानं, विहरंति मुण  
 तहा सोवि ॥ ८ ॥ पनिरूवो तेइस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवको  
 ॥ गंजीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ९ ॥ अपरिस्तावी  
 सोमो, संगहसीलो अज्जिग्गइमई य ॥ अविकुअणो अचवलो, पसं  
 तहियउ गुरु होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अपरामरं  
 पइं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिऊइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥  
 अणुगम्मए उगवई, रायसुयजा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करे इ  
 माणं, परिय उइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिय दिक्खियस्स दमग, स्स  
 अज्जिमुहा अऊचंदणा अजा ॥ नेअइ आसणगहणं, सो विणउ सब  
 अजाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अजाए अऊदिक्खिउ ताहू ॥  
 अज्जिगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुजो ॥ १४ ॥ धम्मो  
 पुरिसप्पज्जवो, पुरिसव रदेसिउ पुरिसजिओ ॥ लोएवि पइ पुरिसो,  
 किंपुण लोगुत्तमे धम्मो ॥ १५ ॥ संवाहणस्ससरसो, तइया वाणा-  
 रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥  
 तह वि च सारायसिरी, उअइत्तंती न ताइया ताहिं ॥ नयरिण  
 इके, ए ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, म  
 ऊउं इह समत्त घरसारी ॥ रायपुरिसेहिं तिऊइ, जणेवि पुरिसो

जहिं नडि ॥ १० ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्य सस्कियं  
 सुकयं ॥ इह जरहचक्रवट्टी, पसन्नचंदो य दिवतां ॥ ११ ॥ वेसो वि  
 अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्त ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं  
 त्त मारेइ खळंतं ॥ १० ॥ धम्मं ररकइ वेसो, संकइ वेसेण दिस्किउ  
 मिअहं ॥ उम्मगणेण परंतं, ररकइ राया जणवत्तं य ॥ ११ ॥ अप्पा  
 जाणइ अप्पा, जहन्ति अप्पसस्किउ धम्मो ॥ अप्पा करइ तं तह,  
 जह अप्पसुदावहं दोइ ॥ १२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ  
 जेण जेण आविण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं वंधए कम्मं ॥  
 ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन विं सीउन्ह वायविच्चरित्तं ॥ संव  
 च्छरमणसीत्त, बाहुवली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग  
 प्पिय चिं, तिएण सच्चंदवुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तइयं, कीरइ गुरु  
 अप्पुवएसेणं ॥ २५ ॥ अद्धो निरोवयारी, अविणीत्तं गवित्तं निरवणा  
 मो ॥ साहुजणस्त गरहित्तं, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥  
 घोवेषा वि सप्पुरिस्ता, सणकुमारु वकेइ वुजंति ॥ देदे खणपरिहाणी,  
 जंकिर देवेहिंसे कहियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण  
 वासीवि परिवरंति सुरा ॥ धित्तंजंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥  
 ॥ २८ ॥ कइतं जन्नइ सुक्कं, सुचिरेण वि जस्स उक्कमद्धिहियए ॥  
 जं च मरणा वसाणे, जन्न संसाराणुवधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सह  
 स्सेहिं, बोद्धिजंतो न बुद्धइ कोइ ॥ जह वंजदत्तराया, उदाइनिव  
 भारत्तं चैव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिच्चत्ताइ रायलत्तीए ॥  
 जीवासकम्म कलिमल, जरिय जरातो परंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तू  
 णवि जीवाणं, सज्जकरा इति पावचरियाइ ॥ जयवेजा सा सासा,  
 यच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पन्निवज्जिज्जण दोसे, नियए सम्मं  
 च पायवनियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणां ॥ ३३ ॥  
 इति पोसद सिखा० ॥



॥ अथ राईसंधारा पोसह सिधाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥

महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिजंतं ३, कहियें, अणुजाणह जि

डिजा, अणुजाणह परमगुरु, गुणगणरयणेहिं मंनिअसरीरा ॥ बहु

पनिपुन्ना पोरिसि, राईसंधारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संधारं

वाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुरु पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए

चूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवट्टंतेय काय पनिलेहा ॥ द्वाइ

उवउगं, कसासनिरुंजणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे दुज्ज पमान, इमस्स

देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सबं तिविहेण वोरिरियं

॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा ज्ञरकाण परपरीवानं ॥ अरइ

रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिच्चत्तं ॥ ५ ॥ वोत्तिरित्तु इमांसु, स्कम

ग्ग संसग्ग विग्घ चूआइं ॥ दुग्गइनिबंधणाइं, अठारस पाववाणाइं

॥ ६ ॥ एगो इं नच्चिमे कोइ, नाइमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीए

मणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासन अप्पा, नाण

वसणसंजुणं ॥ सेसा मे वाहिरा चावा, सब्बे संजोगलस्सणा ॥

॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुक्कपरंपरा ॥ तम्हा संजोम

संबंधं, सबं तिविहेण वोत्तिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो मह देवो, जावजीवं

सुत्ताहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयस्सम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि

पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा

लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ च

त्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पव

ज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥

अरिहंता मंगलं मज्ज, अरिहंता मच्च देवया ॥ अरिहंता कित्तिअत्ता

णं, वोत्तिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्ज सिद्धा य मज्ज

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोत्तिरामि ति पावगं ॥ २ ॥ आ  
 यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं,  
 वोत्तिरामि ति पावगं ॥ ३ ॥ उवद्याया मंगलं मच्च, उवद्याया मच्च  
 देवया ॥ उवद्यायां कित्तिअत्ताणं, वोत्तिरामि ति पावगं ॥ ४ ॥ सा  
 हूणो मंगलं मच्च, साहूणो मच्च देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं,  
 वोत्तिरामि ति पावगं ॥ ५ ॥ पुट्टवि दग अगणि मारुय, इक्किंके सत्त  
 जोणि लस्काउ ॥ वणपत्तेय अणंते, दत्त चउदत्त जोणि लस्काउ ॥  
 ॥ १ ॥ विगळिंदिण्णु दो दो, चउरो चउरो य नारयः सुरेसु ॥ ति  
 रिण्णु हुंति चउरो, चउदत्त लस्का यमणुण्णु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व  
 जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वज्जुण्णु, वेरं मच्च न  
 केणवि ॥ ३ ॥ एवमइं आलोइअ, निंदिअ गरदिअ डुगंठिअं सम्मं ॥  
 ति विहेण पक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा  
 विअ मइ खमिअ, सव्वइ जीव निकाय ॥ सिद्धसाख आलोयणइ,  
 मच्चइ वेर न ज्ञाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदइ राज  
 जमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मच्चवि तेइ खमंतु ॥ ६ ॥ इत्ति  
 संधारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक संज्ञाय ॥

॥ निंदा-म करजो कोशनी पारकी रे, निंदानां बोढ्यां मदा  
 पाप रे ॥ वयर विरोध वाये घणो रे, निंदा करतां न गणे माय  
 वाप रे ॥ नि० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुस्हे रे, पगमा बलती  
 देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगमां रे, कहो केम ऊ  
 जला होय रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,  
 निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोमे घणो अवगुणें सहु जरयां रे,  
 केहनां नलीयां चुण केहनां नेव रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते  
 थाये नारकी रे, तप जप कीथुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेम बुटकवारो आय रे, ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण प्रदजो  
सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो  
रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिधाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, जाली जाल अपार रे ॥ सु  
जाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खैरअहार रे  
॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परि  
माण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणो  
शण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक  
धामें आय रे ॥ सु० ॥ ऊनी जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप  
दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊजा  
करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ नरम हुशी इण आगमें रे लाल, राम  
करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव बिन वाठयो हुवे रे लाल,  
सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुऊ अगन प्रजातजो रे  
लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आग  
में रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें इह जलगुं  
नरयो रे लाल, जीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम  
वरषा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊ  
तरी रे लाल, साख नरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत स  
हुको थयां रे लाल, सघले थया उठरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम  
खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग  
मांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ क  
हे जिन हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणामीजें पाय रे ॥ सु० ॥  
॥ ९ ॥ इति सीतासती सिधाय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी ऋषि सिद्धाय ॥

॥ श्रेणिक रयवानी चढयो, पेस्त्रियो मुनी ए केत ॥ वर  
 पकते मोहियो, राय पूठे रे कदो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं  
 रे अनाथी निर्मथ ॥ तिसमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए  
 आकणी ॥ इण कोसंबी नगरो वसे, मुज पिता परि गल धन्न ॥  
 परवार परे परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इ  
 क दिवस मुज वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सह  
 जूरी रक्षा, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी  
 गुण मन उरमी, उरमी अबला नार ॥ कोरमी पीना में सही,  
 नाहिं कीथी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवेद्य बुलाइया,  
 काधला कोमी उपाय ॥ भावना चंद्रन लेईया, पण तोही रे दाह  
 नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुज उपशमे, तो लेउं सं  
 जमजार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरप अपार ॥  
 ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नहिं, ते जणी हुं रे अनाथा ॥  
 बीतरगनो धरम धारो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥  
 ॥ ७ ॥ कर जोमी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रे  
 णिक समकित तिहां लदे, वांदी पहुंचे रे सरग मजार ॥ श्रे० ॥  
 ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोमी ॥ गणि समय  
 सुंदर तेहना, पाय वांटे रे वे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिद्धाय ॥

॥ कर पन्तिक्रमणो जावसुं, दोय धनी शुज जाण ॥ लाल  
 रे ॥ परजव जाता जीवनें, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥  
 कर पन्तिक्रमणु जावसुं ॥ ए आकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रे  
 णिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंकी सोना तपी, दीये दिन  
 प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस जगु ते वली, एम

दीये इव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार  
 ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चनुविसुणो, जलुं वंदन दोय  
 दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संजारी रे आपणां, ते जव कर्म नि  
 वार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर कानसंग गुनध्यानथी, पञ्च  
 स्काण सूयूं विचार ॥ लाल रे दोय सद्या ये ते वला, टालो टालो  
 अतिचार ॥ लाल रे ॥ ५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसाइथी, जहीये  
 अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह सुनिवर कहे, सुगति तणुं ए  
 निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिधाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह उठीने समरिजे हो ॥ जवियण मंगलिक सरणा चार  
 ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ ज० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियमे रा  
 खिजे हो ॥ ज० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ ज० ॥  
 केवलि जांख्यो धर्म ॥ ए चारु जपतां अकां हो ॥ ज० ॥ दूटे  
 आवुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारुं सुखकारि हो ॥ ज० ॥ ए चारु  
 मङ्गलिक ॥ ए चारुं उत्तम कहां हो ॥ ज० ॥ ए चारुं तहतीक  
 हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटे चालतां हो ॥ ज० ॥ समरुं वार  
 वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ ज० ॥ विघन निवारणहार ॥  
 ॥ हि० ॥ ४ ॥ साकण साकण जूतनां हो ॥ ज० ॥ सिंह चित्ताने  
 सूर ॥ वैरी दुसन चोस्टा हो ॥ ज० ॥ रहे सडाइ दूर ॥ हि० ॥  
 ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ ज० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ पर  
 जव जातां जीवने हो ॥ ज० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ रा  
 खो सरणाकी असता हो ॥ ज० ॥ नेमो नहिं आवे रोग ॥ वरते  
 आनंद सुख सही हो ॥ ज० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥  
 निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी  
 नहिं कोइ वस्तुनी हो ॥ ज० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोरु कड्याण ॥ शुद्ध  
मनें करी समरता हो ॥ ज० ॥ निश्चै पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥  
ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सर  
णाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मजार ॥ हि० ॥  
॥ १० ॥ संवत् अठारे वावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥  
चोयमल्ल इम चीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो वाळ गोपाल ॥ हि० ॥  
॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

## ॥ अथ सिंहाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ ढंढण रुपीनी सङ्गाय ॥

॥ ढंढण रुपिजीने वंदना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हूं वा  
री लाल, अजिग्रह लीधो एहवो हूं ॥ लेस्युं शुद्ध आहार रे ॥ हूं ॥  
॥ १ ॥ ढंढण ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हूं ॥ न मिलै शुद्ध आहार  
रे ॥ हूं वा ॥ मूल नलै अणसूजतो हूं ॥ पंजर कीधो गात रे हूं ॥  
॥ २ ॥ ढंढण ॥ हरि पूठे श्रीनेमने हूं, मुनिवर सदस अठार रे ॥ हूं  
वा ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हूं ॥ मुजनें कही विचार रे ॥ हूं वा ॥  
॥ ३ ॥ ढंढण ॥ ढंढण अधिको वाखियो हूं ॥ श्रीमुख नेमजिणंद  
रे हूं वा ॥ कृष्ण कृमाहो वांढवा हूं ॥ धन जादव कुलचंद रे हूं  
वा ॥ ४ ॥ ढंढण ॥ गलियारे मुनिवर मिळ्या हूं, वांध्या कृष्ण  
नरेस रे हूं वा ॥ किराही मिळ्यात्वी देखने हूं, आणयो जाव वि  
सेसरे हूं ॥ ५ ॥ ढंढण ॥ मुज घर आवो साधजी हूं, द्यो मोदक ठे  
शुद्धे हूं ॥ मुनिवर विहरीने पांगुर्या हूं, आया प्रभुजीने पात रे  
हूं ॥ ६ ॥ ढंढण ॥ मुज लवधे मोदक मिळ्या हूं, कहीने तुम्हे  
किरपाल रे हूं ॥ लवध नही बड ताहरी हूं, श्रीपति लवधि  
निधान रे हूं ॥ ७ ॥ ढंढण ॥ एलेवा जुगतो नही हूं, ज्याळ्या परठ-

ज काज रे हूं० ॥ इंट निवा हे जायने हुं० चूरे करम समाज रे  
हुं० ॥ ७ ॥ टं०॥ आंणी चढती जावना हुं०, पांग्यो केवल नाण रे  
हुं० ॥ टंडण रुषि मुगतै गया हुं०, कहे जिनदर्ष सुजाण रे हुं०  
॥ ए० ॥ टं० ॥ इति टंडण रुपि सिज्ञाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नारुषी सिज्ञाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन  
मनमै तो मांणी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना  
धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो मनमो रे किम परचाव  
॥ २ ॥ वस दिस्ती वीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अ  
मति देतां रे जीज वंदे नही ॥ ३ ॥ बत्तासै नारी हो धन्ना  
अतहि पियारी मो० ॥ वाली तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥  
बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो० ॥ गजगणिका  
रे चाल सुहावणी ॥ ५ ॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो०  
कोन बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, व  
पिण जांणो मो० ॥ जोगवि लेख्यो रे जोग सुहामणो ॥ ७ ॥ ब्र  
अति दोहिलो रे धन्ना, नदिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही ठे रे साधु  
हावणो ॥ ८ ॥ घर ९ जिहा हो धन्ना, गुरुतली शिहा मो० ॥ कहां  
रे रहणी नही ठे सारखी ॥ ९ ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, अ  
गम जणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुकर जोग ठै ॥ १० ॥  
वनवासै रहणा हो धन्ना, परीसह सहलो मो० ॥ कोम  
केसा रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जाख्यो हे अम्मा  
जूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥  
सुख अजिजापी हे अम्मा, जूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मार  
जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमा  
थि मोरी अम्मा, वीर वखाण्यो परखदा सह सुण्यो ॥ १४ ॥

में इम जाणयो हे अम्मा, वीर वखाणयो मोरी अम्मा, ए धन जो-  
 वन आयु धिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, दील न कीजे  
 मोरी अम्मा, जो खिण जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अन-  
 मति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो  
 रे मनमां गद्गदी ॥ १७ ॥ उठ्ठ पारणे हे अम्मा, विगय निवा-  
 रण मोरी अम्मा, वीर वखाणयो सुरनर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं-  
 जम पावे हे अम्मा, दुषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरध-  
 रूपा जणै ॥ १९ ॥ संजम पाळयो हे अम्मा, नव पखवाने मोरी  
 अम्मा, मास संघारे सरवारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धम्म-  
 रुपि सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिंहाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सबला ॥ कर्म-  
 तणे वस सुख डख पाया, सबल हुआ महा निबला रे प्राणी, कर्म-  
 समो नहि काई ॥ १ ॥ आदीतरजीने करम अटारया, वरस दिव-  
 स रद्या जूखा ॥ वीरने बारे वरस डख दीषा, ऊपना ब्राह्मणी कूखै  
 रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत मारया एकण दिन, जोष  
 जुवान नर जैसा ॥ संगर हुठ महा पूत्रतो डखियो, कर्मतणा फल  
 एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ वत्रीस सहस देसारे साहिव, चक्री  
 सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्म कीयो तनु वार रे  
 ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म हवाल किया हरचंदने, वेची सुतारा राणी ॥  
 बारे वरस लग माथे आणयो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥  
 ५ ॥ बधिवाहन राजारी बेटी, चावी चंदनवाला ॥ चौपद ज्युं  
 चहुटामें वेची, कर्मतणा ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संजूम नामे  
 आवमो चक्री, कर्म सायर नाख्यो ॥ सोले सहस जक उजा देखे,  
 पिण किरादी नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे



बारमो चक्री, कर्म कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो जविप्राणी,  
 कर्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ उपन्न को न जा  
 दवरो साहिव, कृष्ण महाबल जाणी ॥ अटवी मांहि मूँठ एकलमो,  
 विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ पांरुव पांच महा  
 ऊजारा, हारी शेपदा नारी ॥ बारे वरस लग वन रमवमिया, ज  
 मिया जेम जिख्यारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ बीस जुजा दस  
 मस्तक हूँता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलमै जग सहु नर जीत्या,  
 ते पिण कर्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम  
 महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म प्रमाणे सुख दुख पांम्या,  
 वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी  
 श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥  
 करमसुं जोर न किसका रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ सतिय सिरोमणी शै  
 यदि कहियै, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी,  
 पूरव कर्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आज्ञानगरीनो जे  
 स्वामी, साचो राजा चंद्र ॥ मांइ कीधो पंखी कूकरो, कर्म नाख्यो  
 ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पार्वती नारी, क  
 रता पुरुष कहावै ॥ अहनि स महिल मसांणमे वासो, जिहा जो  
 जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी,  
 रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये  
 घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंरुया नर कर्म,  
 ज्ञांज्या ते पिण साजा ॥ रुद्धिहरष कर जोमीने विनवै, नमो २  
 कर्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म सिंहाय सं० ॥

॥ अथ सात विसनकी सिंहाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार वि  
 वैकी ॥ सात नरकना रे जाइ सातेई, आपै डुक् अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन परयांधकां, पानव पांच  
 प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पड्यो, खोइ सहू रा  
 जरिइ वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस ज्ञक्षण अत्रगुण घणा, करे  
 पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनो नारी रेवती, नरक गइ  
 निरधार ववेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पान विसन  
 तजी, चित धरी वलि चाह वि० ॥ द्वीपायण रिपि दहव्यो जा  
 दवे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने वे  
 स्याधर वसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो  
 कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहेने  
 कुविसन साचवै, प्राणी हणिये प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रे  
 णिक नृप गयो पहली नरक मजार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ ठे  
 चोरीने विसने करी, जीव लहे डुक्क जोर वि० ॥ मुंजदेव रा  
 जाये मारियो, चावो हुंरक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय  
 संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो  
 रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥  
 इम जाणीने ज्ञव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण  
 ज्ञव परज्ञव आणंद अतिघणा, कहे ध्रमसी सुखकार ॥ वि० ॥  
 ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति सात विसनकी सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिंहाय लिख्यते ॥

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निग्रंथा राति वन  
 मांदि काउसग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखा  
 शी राणी चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जाण ॥ वेनाराजानी  
 साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमाण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत  
 वंगार सबलो पने जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमें  
 बस्यो जी ॥ सौमि वाहर रह्यो दाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ जबक जागी

कहे चेलणा जी, किम करतो हुस्यै तेह ॥ कुतती मनमाहि ए कुण  
 वस्यो जा ॥ श्रेणिक पळ्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेठर परो  
 जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ जगवंत सांसो जाजियो  
 जी, चमकियो चित्त तरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी बलतां थकां  
 जी, पैसतां नगर मज्जार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे  
 अजयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाळी करी जी, व्रत  
 वियो अजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो जवत  
 णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिंझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिंझाय ॥

॥ जूलो मनजमरा कांड जमै, जमियो दिवस ते रात ॥  
 सायारो लोनी प्राणियो, जमियो परमल जात ॥ १ ॥ जू० ॥ कुं  
 ज काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन्न ॥ विणसतां वार लागे  
 नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ जू० ॥ केहना गोरू केहना  
 वाबरू, केहना माय नै बाप ॥ उ जीव जासी एकलो, साथे पुन्य  
 नै पाप ॥ ३ ॥ जू० ॥ आस्या तो रुंगर जेवनी, मरवो पगला रे  
 देठ ॥ धन संची संच कांड करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ जू०  
 ॥ लखपति ठत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी  
 गोखै बैठता, जए जल बल राख ॥ ५ ॥ जू० ॥ जवसायरजल  
 डुख जरयो, तिरवो ठे रे जेह ॥ बीचमें बीह सबलो अठै, करमें  
 वाय ने मेह ॥ ६ ॥ जू० ॥ जलट नही मारग चालवो, जायवो  
 पहिले रे पार ॥ आगल नहि हट वाणियो ॥ संबल लेज्यो रे क्षार  
 ॥ ७ ॥ जू० ॥ मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो इतो न प्राय ॥  
 वस्त विना जाय पोदवो, लखपति लाकरु माय ॥ ८ ॥ जू० ॥ मह  
 मंद कहे वस्त चोरीयै, जे कुठ आवे रे साथ ॥ अपणो लाज उवा  
 रियै, लेखो साहिव हाथ ॥ जू० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिन्हाय ॥

॥ राजतणा अति लोभिया, भरत बाहूबल ऊँचे रे ॥ मूढ  
 उपासी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूँचे रे ॥ १ ॥ वीरा म्दारा गजध  
 की कतरो; ब्राह्मी सुंदरी जासै रे ॥ रूपज जिनेसर मोकडी, बा  
 हूबलने पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढयां केवल न होई रे ॥  
 वी० ॥ २ ॥ खोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अजिमांनो रे  
 ॥ लघु बांधव बांदू नही, काठसग रह्यो शुज घपानो रे ॥ ३ ॥  
 वी० ॥ वरस विवस काष्ठसग रह्यो, वेल्हियां वींटाणो रे ॥ पंखी  
 मावा मांनिवा, सीत ताप सुकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी व  
 चन सुण्या इसा, चमक्यो चित्त मज्जारो रे ॥ हय गय रथ में प  
 रिहरया, पिण नवि मूक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मन  
 बालियो, मूक्यो निज अजिमांनो रे ॥ पांव उपासी वांदिवा, ऊप  
 नो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पढुंतो केवली परखवा, बाह  
 बल ऊपरिवा रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर बंढे  
 पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिन्हाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाढया गोचरी, तरुके दाजे सीतो जी ॥  
 पाय उवराणा रे वेळू परजलै, तन सुकमाळ मुनीसो जी ॥ अर०  
 १ ॥ मुख कमलाणो रे माखती फूज ज्युं, ऊन्नो गोखने हेगो  
 जी ॥ खरै उपहेरे रे दीगो एकलो, मोही माननी मीगो जी ॥ २  
 ॥ अ० ॥ ब्यण रंगिले रे नयणे बेधियो, रूपि घंज्यो तिण वारो  
 जी ॥ बासीने रुदे जाय ऊतावली, उ रिपि तेनी आंणो जी ॥  
 ३ ॥ अ० पावन कीजे रूपि घर आंणो, वहिरो मोदक सारो जी  
 ॥ नवजोवन रस काया कांइ दशो, सफल करो अवतारो जी ॥  
 ४ ॥ अ० ॥ चंझावदनी रे चारित्त चूक्यो, सुख विलसे दिन रातो

जी ॥ इक दिन गाखै रमतो सोगठै, तव दीठो निज मातौ जी ॥  
 ५ ॥ अण अरणक ३ करती माय फिरे, गलियै २ मजारो जी ॥ क  
 हि किए दीठो रे माहरो अरणलो, पूठै लोक हजारो जी ॥ ६ ॥  
 अ० ॥ उतर तिहांथी रे जनतीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिया  
 रो जी ॥ धिग्र २ पापी रे माहरा जीवने, एह में अकारज धारयो  
 जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिद्धा उपरै, अरणक अणस  
 ण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू, मन वंडित फल  
 सीधो जी ॥ ८ ॥ अण ॥ इति अरणक मुनि सिद्धाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

नाम इलापुत्र जाणियै, धनदत्तसेठनो पूतानटवी देखी रे मो  
 हियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न ठूटे रे प्राणिया, पूरब नेह  
 विकार ॥ निज कुल ठंठी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥  
 ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, उंचो वंस विवेक ॥ तिहां  
 राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय  
 पग पहरी रे पावनी, वस चढयो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतौ,  
 खेले नवनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर  
 साद ॥ पायतल घूबर घमघमें, गाजै अंबर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥  
 तिहां राय चिंते रे राजियौ, लुब्धो नटवी रे साथ ॥ जो पमै नट  
 वो रे नाचतो, तो नटवी मुज हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दांन न आपै  
 रे नूपती, नट जाणै नृप वात ॥ हूं धन वंडू रे रायनो, राय वंडै  
 मुज घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियौ, धन ३ साधु  
 नीराग ॥ धिग्र २ विषया रे जीवना, मन आयो वैराग ॥ क० ॥  
 ॥ ८ ॥ संबरजावै रे केवली, ततखिण कर्म खपाय ॥ केवलि मदि  
 मा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिद्धाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वै  
 रागीयौ जी, ए संसार असार रे मायनी ॥ अनुमति द्यो मुऊ आज ॥  
 संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वठ तूं केणे ज्ञोल  
 व्यौ रे, श्रेणिक तांत नरेस ॥ कांइ ऊणौ किण दूहव्यौ रे, हूं नवि  
 दुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरवाहित जार रे  
 जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुढ्यो जी, सहिया डरक  
 अणंत ॥ सासोश्वासैं जव पूरीया जी, तेह न जाणू अंत हे ॥  
 ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ दिवणा तूं वालक अठे जी, जोवन जरयो  
 रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुरक अपार रे  
 जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, डरक न  
 सहणौ जाय ॥ वीरजिनंद वखाणियो जी, ते मे सुणियो कांन हे  
 मायनी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वठ कांठलीवै जीमणो जी ॥ अरस विरस  
 आहार ॥ चुंइ पाला नित हींरुणो जी, जाणसि तुऊ कुमार रे जाया ॥  
 हूं न० ॥ ६ ॥ जमतां जीव अनंत जम्भो जी, धर्म डहेलो होय ॥  
 जरा व्यापे जोवन विसे जी, तव किम करणो होय रे मायनी ॥  
 ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जो  
 वनजर ठोरु नही जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥  
 ॥ ८ ॥ हंसतूतिका सेजनी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतदि  
 सुंहाली देहनी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥  
 ॥ ९ ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहु कोय ॥ विषय  
 विषम महुरा कहा जी, किम जोगविये सोय हे मायनी ॥ अ० ॥  
 १० ॥ खनिश् मात्र पसाय करी जी, में दीधुं तुऊ डरक ॥ दिउ आदिस  
 जिम हूं सुखी जी, वीर चरणें व्युं दीरक हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥  
 तन फाटे लोयण ऊरे जी, डख न सहणा जाइ ॥ वछ सुखी हुयो

तिम करो जी, में दीधो आदेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १२ ॥  
 मणि माणक मोती तज्या जी, तोळ्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी  
 आठै रमे जी, दिव अह्न कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥  
 कुमर ज्ञणै सुकुली श्रिया जी, बहु डुख ए संसार ॥ नेह तुमारो  
 जाणियो जी, जो ल्यो संयमजार रे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथ  
 सिविका तव सजी करी जी, कुंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उ  
 ह्व करै जी, चारित्र ल्यो शिषिराय रे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इम  
 जाणी वैरागियो जी, वरजै जे नर नारि ॥ करजोमी पूनो ज्ञणे जी,  
 ते तरस्यै संसार हे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाइ निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती भिगसर मास, पहिली परुवा तीन विमास ॥  
 चौथी परुवा वदि वैसाख, च्यार पुहर असिजाइ ज्ञाख ॥ १ ॥ जां  
 लगि होली ऊमे वार, धुंवर परुती हुवै जिवार ॥ जां परचक्रनो  
 ज्ञय नवि जाय, तां लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने  
 केस पाखाण, वरसै तां लग असिझाई जाण ॥ जूजै सद्ध मांहोमांहि  
 जांम, तां लग असिझाई तिण ठांम ॥ ३ ॥ ज्ञूपति परजव पोहतो  
 होय, जां लग पाट न बैसै कोइ ॥ तां लग बोली ठै असिजाइ, स  
 हुको सरदहज्यो मन मांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एक  
 पोहर असिझाई आय ॥ निवल मेह तिम जाणो सही, आठ पहोर  
 सबल जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनयकी, पन्निवा लग  
 असिजाइ वकी ॥ पन्निवा बीज तीज चांदणी, समीलांऊ असिझाई  
 गिणी ॥ ६ ॥ आज नक्षत्र न लागै जांम, गाज बीज असिजाइ ताम ॥  
 गाज बीज जो हुवे अकाल, असिझाइ बे पुहर संजाल ॥ ७ ॥ चंद्रग्रहण  
 असिझाई ज्ञणी, बारह पोहर उत्कृष्टी गिणी ॥ जघन्य प्रकारै आठ वि  
 चार, सूर्यग्रहण पोहर जघन्यै वार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

सुगुरु मुखै ऋचिषण सरदही ॥ नगर प्रथान मरे जो कोइ,  
 आठ पुहर असिझाई होय ॥ ए ॥ वसतीशकी सातां घर मांदि, नर  
 विद्वै अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पञ्च्यो होय मृतकअनाथ, तां  
 असिजाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणै प्रसवै दिन सात, बेटी  
 आठ दिवस विहात ॥ सो कर मांदि कही असिजाई, नारी रतु दिन  
 तीन कदाइ ॥ ११ ॥ इमो फूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर परै तिन  
 गाइ ॥ असिझाइ सो कर मांदि, त्रिएह पोहर के ऊपर नहो ॥ १२ ॥  
 असाठै चौमासै दिने, पम्किमणा गावांथी गिणै ॥ बार पोहर  
 असिजाई कही, काती चौमासै इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर  
 असिजाई वै बहू, गीतारथ गुरु जाणै सहू ॥ सांजलि ए में कही  
 संखेवि, हरखै पय प्रभू कीजै देवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतकार जेह,  
 च्यार मावठबीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग बीअं अकरै, तव कवि नाम  
 कहियो इण परै ॥ ॥ १५ ॥ इति असिजाइ सिजाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बाबीस अभक्ष सिजाय लिख्यते ॥

जिनशासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व  
 ए निरता करो ॥ मिठयामत रे कुमति कदाग्रह परिहरौ, सहि पालों  
 रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित  
 शुद्ध पालौ, टालो दोषदया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत,  
 च्यार सिद्धाव्रत घरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो ऋचि  
 षण मनरली ॥ दाखविए गुण परइ केरा, दोष सम काढौ बली ॥  
 ॥ २ ॥ मम काढो रे लोत्ती नर कूनौ करौ, जांणी सावद्य रे अ  
 ऋक बाबीसे परिहरौ ॥ वरु पीपल रे पिलखण नें कहुंवरो,  
 कंवरफल रे रखे तुमें ऋकण करो ॥ ३ ॥ उज्जाला ॥ रखे  
 तुमें ऋकण करौ मांखण, मद्य मधु आमिय तणो ॥ विष हेम  
 करहा उंनि परहा, दोष मूल ज़ाटी घणो ॥ परिहरौ सज्जन र



यणीजोजन, प्रथम डुरगति वारणौ ॥ मम करौ व्यालू अति अ  
 सूरौ, रविन्दय विन पारणो ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय सब  
 नांम ए, काचागोरस रे मांदि कठोल न जिमिये ॥ एह वेंगण  
 रे तुष्ठ फला सवि ठांरु ए, आपणपूं रे व्रत लीधो नविखंरु  
 ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंरुए व्रत नियम लेइ, बेइ फल  
 व्रत जंगनौ ॥ अज्ञात फल बहुबीज जोजन, चलित रस होय  
 जेहनो ॥ संवर आणी अन्नक ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥  
 गुरु वयण विगतै वली पूठ्यौ, अनंतकाय वत्तीस ए ॥ ६ ॥  
 अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु जक्षण रे पातिक बोड्या  
 ठै बहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आडूं वली ॥ वजचूरण रे कंद  
 बहूं कुंवलीफली ॥ ७ ॥ तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली बीज पाखै, चाखै  
 चतुर नर आंविनी ॥ रतालू पिंमालू अग थोहर, सतावरी लसण  
 कुली ॥ गाजर मूला गिलौ रींगण विरहाली टुकवट्टलौ, पळ्यंक  
 सूरण वाल वीली मौथ नीली सांजलौ ॥ ८ ॥ वंसकारेला रे  
 कूपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी  
 रे जमरवृक्षनी ठालनी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलनी ॥ ९ ॥  
 वेलनी तानु ताजा खिलोका ने खरसुआ, जूय जूफोमा ठत्रा  
 कार जाणौ नील फल सेवे जूआ ॥ बत्तीस बोल प्रसिद्ध बोड्या  
 लक्ष्मीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी  
 ते सवि सुख लहे ॥ २० ॥ इति बावीस अन्नक सिजाय सं० ॥

॥ अथ गजसुकमाल सिजाय ॥

॥ संवेगरसमे जीवता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोहग  
 टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १ ॥ यादवराय धन ९ गजसुक  
 माल, तेहने करूं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रनू  
 पास संयम आदरयौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ १ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा  
 पवा अलजयो, परुपैन दिन दस वीत ॥ साहसीक इम उचरतो,  
 पिण दिन जावे रे तो ठेह दीत ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय  
 काजसग्ग रह्यो, तिण सांजि प्रचुने पूठ ॥ मुनिवर अवर इम चिं  
 त्तवै, एहनै साची रे ठै मुंह मूंठ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुज सुता विन  
 अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगमी रचि सिर ऊपरै,  
 चिहुं दिसि वांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ  
 धिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमें गुणठाणें चढयो, मु  
 निवर पांमी रे केवलग्यांन ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने अई,  
 ते रयण वरस हजार ॥ वांदवा आवी प्रह समें, पिण नवि देखे रे  
 प्रांणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूठतां प्रचु मांकी करी, रातिनी वी  
 तग वात ॥ हरि देखी हियमो फूटसी, तेणें कीधो रे रुपिजीनो  
 घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पांमियो अवेचलरा  
 ज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥ या० ॥ ९ ॥

॥ अथ प्रणचंद्र सिद्धाय ॥

॥ राज ठंकी रलियामणो रे, जांणी अशिर संसार ॥ वैरागो  
 मन वालियो, कांइ लीधो संजम जार ॥ प्रणचंद्र प्रणमूं तुमारा  
 पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे काजसग्ग रह्यो  
 रे, पग ऊपर पग ढाय ॥ वांइ वेनं उंची करी, सूरज सांमी इटी  
 लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीतरयो रे, वीरजीने वंदन  
 जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविध स्वमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ डरमु  
 ख दूत वचन सुणी रे, कोप चढयो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां  
 मियो, जीव पढ्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूठियो रे,  
 एइनी सी गति आय ॥ जगवंत कहे हिवणां मरे तो, सातमी नर-  
 के जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंते पूठियो रे, सरवारअसिद्धि वि

मान ॥ वाजी देवनी डंडनी, मुनि पांभ्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥  
 ॥ ६ ॥ प्रणचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावारना शिष्य ॥ रिद्ध  
 रष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतह ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ उत्पति सिद्धाय ॥

॥ उत्पत जोय जीव आपणी, मनमांहि विमास ॥ गरजा  
 वासे जीवमो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नात्री  
 तले, जिन वचने जोय ॥ फूल तणी जिम नाळिका, तिम नामी ठै  
 दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥  
 आंबतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर  
 श्रवे तिण मांसथी, रुरुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी,  
 तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित  
 डुरगंध ॥ तिण आनक तूं ऊपनो, हिव हूउ अंधमंध ॥ उ० ॥ ५ ॥  
 नामी वांसतणी जरिये घणी, रूघाल ॥ ताती लोह सलाकतें, जाले  
 ततकाल ॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, ठै नव लख जीव  
 ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजे नर नारी  
 मिढ्यां, पांचेंडी जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥  
 उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टो वार ॥ जीव ज  
 घन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य  
 तिहां रहे, मडुरत परिमाण ॥ बार वरसनी थिति तिहां, उत्कृष्टी  
 जाण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरजे कोइ जीवमो, जंपै जग  
 दीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥  
 महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरबीज ॥ पिचहत्तर वरसां  
 पठै, आयै पुरुष अबीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूखै नर वसै,  
 तिम वामे नारि ॥ बीच नपुंसक जाणिये, जिनवचन विचार ॥  
 १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्यपणै इहां, आयो गरजावास ॥ सात

दिना उपरि रहे; नर गत नव मास ॥ ३० ॥ १४ ॥ आठ वं  
 रस तिर्यच रहे, उत्कृष्टे काल ॥ गरजावासै जोगव्या, इम बहु  
 जंजाल ॥ ३० ॥ १५ ॥ कार्मण काये कर लियो, पहिलो आहार  
 ॥ शुक्र अने सोणिततणो, नही ऊठ लिंगार ॥ ३० ॥ १६ ॥ पर-  
 जापत पूरी नही, तिहां विसवात्रीस ॥ तिण आहारै तूं थयो, उदा  
 रिक मीस ॥ ३० ॥ १७ ॥ पवन अठै उदरै तिको, उपजायै अंग  
 ॥ अगनि करै थिर तेदने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १७ ॥ ३० ॥ कठन  
 पणै पृथ्वी रचै, अवगाह अकास ॥ पांचजूत सररीरमें, इम करै प्र  
 कास ॥ १८ ॥ ३० ॥ वारै महुरत तां पठै, विलसै नर नारि ॥ गर  
 जतणी उतपति तिहां, नही अवर प्रकार ॥ १९ ॥ ३० ॥ कलल हु  
 वै दिन सातमें, अरबुद दिन सात ॥ अरबुदथी पेसी वधै, घन मांस  
 कहात ॥ २० ॥ ३० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अमृतालीस टांक  
 ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो नितंक ॥ २१ ॥ ३० ॥ सु  
 थिर मास बीजे हुवै, दिव तीजे मास ॥ करमतणै वसि ऊपजे, मां-  
 ता मन आस ॥ २२ ॥ ३० ॥ चौथे मासै मातना, प्रणमै सहु अं  
 ग ॥ द्वात्र अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २३ ॥ ३० ॥ पि  
 त्त रुधिर ठठे पमै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पे  
 सी सय पंच ॥ २४ ॥ ३० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोनि  
 ॥ ऊपजे ऊणै केतलै, इम आगम जोनि ॥ २५ ॥ ३० ॥ आठमें मा  
 सें नीपनो, इम सकल सररीर ॥ उंथे सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥  
 २६ ॥ ३० ॥ सोणित शुक्र सलेपमा, लघु ने वरुनीत ॥  
 वात पित्त कफ गरजथी, आयै नर नीत ॥ २७ ॥ ३० ॥ मात  
 तणी सूंठि लगे, बालकनो नाल ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल  
 ॥ २८ ॥ ३० ॥ २९ ॥ जननी द्ये आहारते, जाय नामोनाम ॥ रोम इंडी नख  
 चस्रवधे, तिम मीजी ने द्वात्र ॥ ३० ॥ ३० ॥ सवहु अंगे ऊत्र

स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नही, गरजै सुविचार ॥  
 ॥ ३० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किये जीवने, आवे ज्ञान विन्न  
 ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिये ज्ञान प्रसंग ॥ ३० ॥ ३२ ॥  
 कटक करे वैक्रियपणें, जूझी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी  
 करी, मरी सुर पिये आय ॥ ३० ॥ ३३ ॥ ऊँचै मुख गोमा  
 हिये, सहितो बहु पीरु ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुठी  
 जींच ॥ ३० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जलादिकै, ऊपजै आ  
 धान ॥ अथवा विहुं नारी मिट्यां, कह्यो गरजविधान ॥ ३० ॥  
 ॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवै, देखी दुखावास ॥ पुन्य करी तिम  
 नीकलूं, नाउं गरजावास ॥ ३० ॥ ३६ ॥ ऊँठ कोनि चांपे सुई, कोइ  
 समकाल ॥ तिये श्री गरजै अठ गुणौ, सहै वेदन बाल ॥ ३० ॥  
 ॥ ३७ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख आय ॥ माता सूती  
 ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ ३० ॥ ३८ ॥ गरजथकी दुख लख  
 गुणौ, जांमैं जिण वार ॥ जन्म थयां दुख वीसरै, धिग्श मोह वि  
 कार ॥ ३० ॥ ३९ ॥ ऊपज्यो अशुचिपणे जिहां, मल सूत्र कलेस ॥  
 पिरु अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ ३० ॥ ४० ॥ तु  
 रत रुदन करतो थको, जांमैं जिण वार ॥ मात पयोधर सुख ठवै,  
 पीयै दूध तिवार ॥ ३० ॥ ४१ ॥ दिन ९ दीसे दीपतो, करै रंग अपा  
 र ॥ लाम कोरु माता पिता, पूरै सुविचार ॥ ३० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र  
 इग्यारे नारिनें, नव नरने जांण ॥ रत दिवस बहिता रहै, चैतो चतुर  
 सुजाण ॥ ४३ ॥ ३० ॥ सात धातु साते त्वचा, वै सातसै ना  
 नि ॥ नवसे नानी पिरुमें, तिम तीनसे हाम ॥ ४४ ॥ ३० ॥ संधि  
 एकसो साठ ठै, सतोत्तर सो सम ॥ तीन दोष पेसी पांचसै,  
 ढांकी ठै चरम ॥ ३० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेसाब  
 सरीष ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोष सेर पुरीष ॥ ३० ॥

॥ ४६ ॥ उ० ॥ पित्त टांक चोसठ अठै, वीरज वृत्तीस ॥ टांक वृत्ती  
 स सलेखमां, जाणै जगदीस ॥ ४७ ॥ उ० ॥ इण परिमाणयकी  
 यदा, उठो अधिको आय ॥ व्यापै रोग सररीमें, नवि वाजे काय ॥  
 ॥ ४८ ॥ उ० ॥ पोख्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खान  
 पान नूपण जला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ उ० ॥ हिव धीजै  
 दसके जणयो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजे दसकै तेहने, जाग्यो  
 काम विकार ॥ ५० ॥ उ० ॥ जिण आनक तूं ऊग्यो, तिणमें  
 मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोम ऊपाय ॥ ५१ ॥  
 उ० ॥ पहुंतो दसके प्रांचमें, मनमें ससनेह ॥ वेटा वेटी पोतरा,  
 परणावे तेह ॥ ५२ ॥ उ० ॥ ठठे दसके प्राणियो, वले परवस्त  
 आय ॥ जरा आइ जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥  
 उ० ॥ आवै दसकै सातमें, हिव प्राणी तेह ॥ बल जागो बूढो  
 अयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ उ० ॥ आठमें दसके सोसलो,  
 खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावै सिर धुणै, करे फोगट वात ॥  
 ॥ ५५ ॥ उ० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ सालै  
 वचन बहुआंतणो, दिन जुरता जाय ॥ ५६ ॥ उ० ॥ खाटपड्यो  
 खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाल हुकम हाले नही, दीयो परिजन  
 देह ॥ ५७ ॥ उ० ॥ आंख गले वे पुन मिले, पनै मुंहमे लाल ॥  
 वेटा वेटी ने बहू, न करे सार संजाल ॥ ५८ ॥ उ० ॥ दस दृष्टा  
 ते दोहिलो, लह्यो नरजव सार ॥ श्रीजित धरम समाचरो, पांमो  
 जिन जव पार ॥ ५९ ॥ उ० ॥ चरणपणो जे तप तपे, पाले निर  
 मल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥  
 उ० ॥ कोमि रतन कवनी सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखै  
 पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ काया माया  
 कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम

संज्ञार ॥ ६१ ॥ उ० ॥ चवद्वै राज प्रमाण ए, ठै लोक महंत ॥  
 जनम मरण कर फरसियो, ते बार अर्णांत ॥ ६३ ॥ उ० ॥ आप  
 सवारधिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै,  
 सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ उ० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां  
 लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगे, होय साहसधीर ॥  
 ॥ ६५ ॥ उ० ॥ आरज देस लह्यो हिवै, लाधो गुरु संयोग ॥  
 अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ उ० श्रीनमि  
 रायतणी परै, चेतो चितमांहि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ  
 कियारो नांहि ॥ ६७ ॥ उ० ॥ जोग संयोग तजी सहू, यथा जे  
 अणगार ॥ धन१ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ उ० ॥  
 सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति  
 वधे, कीजै तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ उ० ॥ तंडुलवेयाली अठै, एह  
 नो अधिकार ॥ तिणथी ऊद्धरनें कह्यो, नही जूठ लिगार ॥ ७० ॥  
 उ० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांज्ञलि लिये संजमज्ञार ए,  
 परि सिंह केरा सदा पालै नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख  
 सकल जोगवि ते लहे जव पार ए, श्रीजिनहर्ष सुसीस रंगै इम  
 कहै श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ उ० ॥ इति उतपति इकहत्तरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिंद्या लिख्यतै ॥

हे आत्मा ! हे चेतन ! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें  
 प्रवृत्ति, यह रसगृहीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोय घनी  
 मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें,  
 कज्जी तूं मिश्रमोहनीमें, कज्जी तूं कामरागमें, कज्जी तो स्ने  
 हरागमें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कज्जी तूं कुगुरुमें, कज्जी तूं कु  
 देवमें, कज्जी तूं कुधर्ममें, कज्जी ज्ञान विराधनामें, कज्जी दर्शन  
 विराधनामें, कज्जी चारित्रविराधनामें, कज्जी मनोदंभमें, कज्जी व

चनदंभमें, कञ्जी कायदंभमें, कञ्जी हास्यमें, कञ्जी रतिमें, कञ्जी  
 अरतिमें, कञ्जी जयमें, कञ्जी सोकमें, कञ्जी डुंगामें, कञ्जी  
 कृष्णलेस्यामें, कञ्जी नीललेस्यामें, कञ्जी कापोतलेस्यामें, कञ्जी तुं  
 रुद्धिगारवमें, कञ्जी तुं रसगारवमें, कञ्जी तुं सातागारवमें, कञ्जी तुं मा  
 यासल्यमें, कञ्जी तूं नियाणासल्यमें, कञ्जी तूं मिथ्यादर्शनसल्यमें,  
 कञ्जी तेरे तेरेकाठिया आय फिरता है, कञ्जी तेरे बाहिर कर अ  
 ठारे पापस्थानक आय फिरता है, रे तूं आत्मा महा डुष्टी, महा  
 डुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुत्रिया, अरे तूं  
 हीणदृष्टी, अरे तूं अयोद्ध कामका करणहार, रे तूं डुष्ट पापिष्ट जीव,  
 प्रायें तो तेरे अनंतानुबंधियाक्रोध, अनंतानुबंधियामांन, अनंतानु  
 बंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोचनी चोकनी, विचारा तेरे स्वपी  
 नही, गुणगणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा  
 दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नही, दरियाव  
 जेसा कझेव तेरे उठल रहा है, तें जो धर्मक्रिया करता है सो शून्य  
 मनसैं करता है, धीरजगुणसैं करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसैं  
 करी जो क्रिया सो राख पर लीपणे जेसा है, अरे चेतन ! सोगन  
 नही लेवे सो पापी, उर लेकर जांगे सो महापापी, तें अनंतकाय,  
 अज्ञक, शीलव्रत; जरदा, जांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन  
 लेकर खोटा किया, तेरा कहां बूटकवारा होगा, रे चेतन ! तें पुञ्जले  
 वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो है, मेरे पारस पत्थर,  
 मेरे नवनिधान, मेरे रसकूपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अ  
 मृतगुटको, वा देवताकूं वस करूं, वादस्याह हो जाउं, राजा हो  
 जाउं, प्रधान हाकम सेनापती हो जाउं, किली तरे धन उपार्जन  
 करूं, ये वाते तेरे हमेसां ऊपजै, दसमे गुणगणवालेकेही लोचका  
 त्याग नहीं, तो तेरी गरज तो कैसें सरे, हे चेतन ! तूं मनमें विचारतो



हे मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुत्र  
 ल, अरे चेतन ! चौरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा,  
 संसारमें न किसीका तूं हे, नहि कोइ तेरा हे, रे चेतन ! तूं  
 तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणें, केइ वखत पूत्र  
 पणें, केइ वखत पुत्रीपणें, किसी वखत स्त्रीपणें, जैसें ठगकी बेटी  
 नें अपनी मांसे पूठा-माताजी में जो पाप करतीहूं सो कोण जो  
 गेगा ? मा बोली-बेटी, करेगा सो जोगेगा, तबतो उसने कहा धिक्  
 हे इस स्वारथियें संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म,  
 आर्यदेस, आर्यकुल, श्रावकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका  
 धर्म पुंन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, नर पायकरके तेने ब्राह्मण जैसें क  
 उएकूं उभाणे चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसें तें चिंतामणि  
 रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ-  
 म्बरी कुगुरुनके उपदेससें चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म  
 आझाप्रमाण जो था सो तेने खो दिया, अब तेरा निस्तारा कैसें  
 होय, विष्टामें कृमिपणें तें अनंती वार पेदा जया, मानरूपी गज  
 पर बाहूवल चढ़ा नर संज्वलनमान था, नर बाह्मी सुंदरी बहिना  
 जैसी समजाणेवाली श्री जव समजै, नर तेरे सो एसा मान, अरे  
 चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं नरतमाहाराजा जिणोके  
 केसीक राजरुद्धि सो केसीक जावना जावतां, धिःकार राज्यमें, धिः  
 कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोकूं,  
 धन्य श्रीतार्थिकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पालते हे, धन्य  
 जो सर्वविरती धर्म पालते हैं, धन्य जो दान देते हे, धन्य जो  
 सील पालते हैं, धन्य जो तपस्या करते हैं, धन्य जो जावना जाते  
 हैं, एसें जावना जावतें नरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन  
 पाया, इस तरें रे जीव तूं उनो ही बराबरी मतकर, वहतो तैसव

सिलाकां पुरुष चौथै आरेका जीव तें पंचम कालका नरतक्षेत्र-  
का कोनां उनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जी-  
ववस्तु, जीवतें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों  
करै, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गि-  
सिया; इग्यारमें गुणठाणेका जीव नुवनजानु केवलीजी, कमलप्र-  
ज्ञाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योकों निगाय दिया, तो तेरी तो  
विसायतही क्यां, आठ करम अठावनही प्रकृती हे प्रजु केसें जीता  
जाय, मोहिकर्म पीठै लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्र-  
की फोजमें रह संद्वोध मोहतेकी आझामें रह सदागमसुं परि-  
चय रख, संतोपगुण धार, तृष्णारूप दाहकूं पीठी मार, जेसेंतें तिर-  
जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तीने गुप्ते गुप्ता,  
उक्तायेका पीयर, सात महाज्ञयका टालणहार, आठ मदका ज.प-  
क, नवविध ब्रह्मचर्यकी वारुका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका  
उजवालेक, इग्यारे अंगका जणणेवाला, वारे उपांगका जणणेवाला,  
कुंरकीसंबल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुनि  
प्रजुकी आझा मुजव धर्म पालै, रे चेतन तुजे कव उदै आवेगा, रे  
चेतन तेरे उदय कहांसें आवै, तेरे संसाररी बहुलताइ; धन्य देसत्र-  
ती पाले जिके प्रजुजीकी आझा पाले, जिके प्रजात उठ सामायक  
करे, पम्कमणो करे, देवदर्शन करै, प्रजुजीकी द्वादसांगी वाणी  
सुणै, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दान, तपस्या, सील, पर्वतिथी  
पोसा, संध्याकूं देवसी पम्कमणा जिनाझा प्रमांणै पमावश्यक करै,  
मुजेजी कजी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा  
हवाल होगा, बुरे परणांमोसे बुरीही गती उदय आयगी, सा-  
मायक मनसुदै करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वां-  
चनेकी खप कगे, जेसें नवसायर लीला तरो, सामायकवंतके यह

लक्षण है, नर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप है, तुझे पढ़ने  
 गुणनेकी लगन नहीं, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नहीं  
 किया, जो श्रुतज्ञानकी प्रकृति करते है उनको ज्ञान दर्शनकी  
 प्राप्ति होती है, केवलज्ञान नर केवलदर्शन पाता है वोही जीव  
 मुक्तिरूप स्त्रीका प्रतीक होता है. दिवस प्रते है कोई सुजाण  
 सोना खंती लक्ष प्रमाण, उसके पुण्य होय जेतलो, सामायक  
 कीधा तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन तूं इस प्रसे मत झूठ, यह तेरी  
 सामायक वो नहीं, वह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली  
 आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंद्रावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी  
 है काम काज घरका चिंतवै, निंदा विकथा कर खिज रहै; आरत  
 रौड्यांन मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके  
 लक्षण ऐसे है अपणा पराया सरषा गिणै, कंचन पत्थर समवन  
 धरै, साचो थोको आगम जणे, ते सामायक शुद्ध करै ॥ १ ॥ रे  
 चेतन ते परायाबुरा चाहता, अपणा जला चाहता, वो पराया बुरा  
 या नहीं चाह्या वो तेनें अपने आत्माकाही बुरा चाहा, अरे चेतन  
 ते कंचनकी चाह ररके, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही  
 पत्थर तेरे छाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा  
 है, तूं अपने आत्माका गुण विचारे तो अवेदी है, अफरसी है,  
 अधाती है, अलेसी है, अविनासी है, ते दिलमें विचारता है यह  
 मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन है, कोण तेरा सज्जन नर कोण  
 तेरा दुस्मन है, आठ कर्मरूपिया सत्रु है जिनोंको तूं ज्ञानरूपिये  
 इंधनसूं बाल जस्म कर जिस्ते तेरा गरज सरे, अहोहो में जव्य  
 हूं अजव्यहूं अथवा डुरजव्यहूं, मेरे संसार पोते वहोत दिखता है,  
 प्रायेतो में अजव्यही दिखताहूं पीठे तो ज्ञानीयोने जाव देखा सो  
 सही, हे रे जाइ ते तो एसी सामायक करता है, खणे खाज मोने

करुका, उंधतणा लेवे सरुका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सि-  
कारेगा जब लेखे लगेगा, उदा-आत्मनिंधा आपणी, ज्ञानसार मु-  
नि कीन; जो आत्मनिंधा करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥  
इति आत्मनिंधा संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववंदनभाष्यादिकसं मंदिर  
जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी-विधि श्रीमहा-  
निसीथ सूत्रकी आज्ञा सुजब लिखते हे ॥  
महाकल्पसूत्रमें एसा लिखा हे वती शक्ति साधु जिनमंदि-  
रमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका रुंरु उर श्रावककूं वेलेका  
रुंरु ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घन्टी रात रहे पिठली तब ऊठके  
नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या  
मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मजागरणासैं दिलको  
सावचेत करे, पीठे मल मूत्रकी बाधाकूं दूर कर अंग शुचि करके  
सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदोरासरकी पूजा करे,  
पीठे यथाशक्ति अष्टा वस्त्र आजूपण पहरके घोमा हाथी रथ पाल-  
खी सिपाइ नोकर चाकर जाई बंधु परिवार सभेत पूजाके लायक  
फल फूल प्रमुख संगमे लेकर ज्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता  
हुआ जिनशासनकी प्रज्ञाचना करता थका जिनमंदिरमें जावे,  
जिन मंदिरमें प्रवेश करके झेपदीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार  
३० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ वेर निस्तही कहणेका, जिसमें १ निस्तही  
जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीठे संसार घर-संबंधी कुठजी  
कार्य विचारणा न करे १; दूसरी निस्तही प्रदक्षणा तीन दियां पीठे  
कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत करणेकी जो सार शंजाल  
रस्कीथी सोजी गोमे २; (इसमें इव्यपूजा करणी मोकली रही )

तीसरी निस्सही कहे पीठे निकेवल ज्ञावपूजाही करे, लेकिन् ड्य पूजा नही करे, यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा. ?

दूसरा त्रिक-ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रज्ञूके दक्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक-मूलनायकजीके विंबको पंचाग मिलाके तीन वेर नमस्कार करे. ३.

चोथा त्रिक-प्रज्ञूकी अंग १ अग्र २ उर ज्ञाव ३ एसे त्रिविध प्रकारसे पूजा करे, अब निस्सही किये पीठे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसें लिखते हे, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, उर कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंद्रियोकूं वसमे रखे, चलणे उर फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक दुसरोकां सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रखे, कुठ्ठी देवकार्यकों ठोरेके, उर कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथा दिक ४ हो सो विकथाको ठोरे, जन्म उर कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया जया खोटे कार्य कों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन अंधेको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले, निस्सही किये पीठे जिनमंदिरमें धर्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोयेत वचन बोले, जिसनें मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपणी आत्मासें किया हे उस जीवके ज्ञावसे निस्सही होय, उर जिसने दूषणका त्याग नहि किया हे उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र ड्यनिस्सही होय इत वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरेके आठ तहका उज्जल वस्त्रसें मुखकोस बांधे, धूपादिकसें अंग अपणा शुद्ध करे, ज्ञावसें दुसरा निस्सही कहते मूलगुंजारेंमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, निकेवल जगवानकी स्तवनामें चित्त रखे, प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमाल अथवा कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसे  
 जगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसे  
 विलेपन करे, शुभ्रवर्ण शुभ्रगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोष गुला-  
 ब चंपा चंपेली केवला जाई जूई भोगरादिक पुष्पोसे पूजा करे,  
 अष्टांगधूप अग्रवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंड उज्वल  
 अक्षतोसे प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीकलोखे-दर्पण १ जडासण २  
 वर्द्धमानसरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ मकरयुग ५ कलश ६ स्वस्ति  
 क ७ नंदावर्त ८ एसे अष्ट मंगलकी रचना करे, पंचरंगे फूलोंमें  
 अष्टमंगलीककूं पूजे, अष्टे केशर चंदनके इडा देवे, उत्तम नैवद्य  
 चढावे, अष्टे खाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती  
 पर्यंत रायपसेणी ज्ञाताधर्मकथा जीवाग्निगमादि सिद्धांतोंमें लिखे  
 मुजब करे, पीठे अंतरंग जक्तिसे प्रभूके सन्मुख नाटक करे, जैसे  
 देवेंद्र दानवेंद्र नारद उदाइराजाकी राणी प्रजावती द्रौपदी रावण  
 प्रमुख केश जीवोंने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टा-  
 पदादि तीर्थोंपर तीर्थकर गोत्र उपार्जन किया नैसे शंकारहित  
 अव्यजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसे  
 करीजावे सो अंगपूजा १ प्रभूके सन्मुख नैवद्यादिक चढायाजावे  
 सो अग्रपूजा २ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक  
 करे सो ज्ञावपूजा ३. इव्यपूजा गर्भित चोथा त्रिक कहा. ४.

अत्र पांचमा त्रिक-तीन अवस्था विचारणी. पिंस्य १, पद  
 स्य २, रूपातीत ३, इसमें पिंस्य अवस्थाके तीन जेद हे. ज  
 मावस्था १, राज्यावस्था २, श्रमणावस्था ३, उर केवलअवस्था  
 को विचारणा सो पदस्यअवस्था, निरंजन निराकार सिद्धावस्था  
 सो रूपातीत कहीजे. ५.

अत्र षष्ठा त्रिक-तीन दिशा ओरके प्रभूके सामने नजर रक्के.

उर्ध्व १, अध २, तिरठी ३, दहणी ३४ वांइ पिठासी निजर नही करे. ६.  
अब सातमा त्रिक—तीन बेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणे  
चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक—वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उ  
च्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोके अर्थपर आलंबन रस्के सो अ  
र्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रस्के सो मन शुद्धि ३. ७

अब नवमा त्रिक—तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा  
२, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोकी अंगुली भिजा  
णी सो योगमुद्रा कहीजे, इस योगमुद्रासें शक्रस्तव कहे १, कानसग  
मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोमा तिस आकारसें हाथ रख  
णा सो मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीयराय कहे. ८

अब दशमा त्रिक—प्रणिधान तीन: जिनवंदन प्रणिधान १  
मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति ते  
इयाई इह संतो तबसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावं  
ति केविसाहू तिविहेण तिरुं विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान  
२, जयवीयरायसे लेके आज्ञवमखंता तक प्रार्थनारूप प्रणिधान ३  
एसें दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अग्निगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहते हैं, स  
चित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपणे जोगमें होय उसकूं दूर धरवेणा १  
उर राजचिन्ह मुगट उत्र खरुग चमर पाडुका अचितवस्तुनकार्त  
ठोमणा आज्ञुषण वगेरे पहरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, ए  
कपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनबिंबकूं देखतेही नमोज्ञुवणबंधुण  
एसें नमस्कार करणा ५. यह दुसरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार—दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बैठके उ  
गवंतकूं वांड़े, स्त्री वांइ तरफ बैठके जगवंतकूं वांड़े.

अथ चोत्रा द्वार तीत अग्निग्रहका. अग्निग्रह देवगंदणामे कहां हे. जघन्यसे तो नव हाथ दूर वेठके देव वांदि १, मध्यम नव हाथसे उपरांत घठके देव वांदि १, उल्छष्ट ६० हाथ दूर वेठके देव वांदि ३.

अथ पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उल्छष्ट ३, एवं तीन जेद हे. एमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसे नमोवृणंसे लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते हे पांचदंरुक समेत युईकी च्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहीजे. पांच शक्रस्तवसे आठ युईसे देववांदि सो उल्छष्ट चैत्यवंदन कहीजे.

अथ ठा द्वार पंचाग प्रणिपात करे, दो गोम. दो हाथ, उर मस्तक, यह पांच थंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अथ सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासे लेकर उल्छष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसे प्रभुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सञ्चित १, दध २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, बत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाइण ८, सयण ९, विलेवण १०, वंज ११, दिशि १२, न्हाण १३, जत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम संज्ञाले दिनमें जो चीज अपने थंग खाते लगे उसका प्रमाण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सञ्चित वस्तुका प्रमाण इस तरेसे करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका वेदन जेदन, तरकारी फल परवल जौनी तोरी केला मतीरा ककनी खरजूजा नींबु आंव नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.



दूसरा द्रव्य प्रमाण, तहां घातु वस्तुकी शली तेसे अपणी अंगली विगर जो चीज मुंमें मालणमें आवे सो सब द्रव्यकी गिण तीमें आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर होणसे द्रव्य जुदा गिणणमें आता हे. जैसे गहूं एक द्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी वेढवारोटी वाटी यह सब जुदा द्रव्य कह लाता हे. इस तरे ज्ञात दाल रोटी कट्टी मांफिया कट्ट तरकारी सब जात पापरु खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकमेंसे सब द्रव्यमेंसे जो चाहिये सो रक्के बाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक द्रव्यका नाम लेकर रक्के सो एकही द्रव्य कहलावे, जैसेके मेवेकी खीचनी तो वह अनेक द्रव्यसे बणी जई हे तोजी एक द्रव्यही कहिये. इति द्रव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमाण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसे आवककूं चार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मस्कण ३ नर सहतका ४ रहे. ६ विगय--वृत १ तैल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमाण रक्के. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूनी खमान मोजा अपना इतना विराणा एसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रक्के. ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांनबीमा सुपारी लोंग इला यची ठोटी नर बनी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु किरियाणकी चीज धारणा प्रमाण रक्के. इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ षष्ठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ बूटा वस्त्र ५ तथा ७ मोकला रक्के, पोसाख १ में पधनी १ जामा २ कमरबंधा ३ धोती ४ एक पट्टा उत्तरासण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कहीजे. एसेइ स्त्रीके स्त्री मुजब. जो एसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपर्दा दिनमे मोकला रस्के. पराया वस्त्र झूल चुकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अथ सातमा फूल नियम. गुलाब चंपेली बेला केवना केक की कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रस्के. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ रथ गाम्भी वहली इक्का बग्घी कोच पालखी घोडा हाथी कुंट तामजांम म्याना इत्यादिक सब अलवाहन, पाणीमें चलणेवाले मोरपंखी वतक घुमदोरु लचकार मगर पनसोइ पलवार वजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असधारीकी धारणा रस्के. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेब्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी ठालका चमकेका कापला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ९.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूका राईका आटेका तेल फुजेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकू इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोके परमलम प्रमुख आंखोंमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाणा सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०.

अथ ब्रह्मचर्य नियम. रातकों तथा दिनकों सूइ नरेके दृष्टांत जोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरुव १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर ४  
अदिकूण ५ नैरुतकूण ६ वायव्यकूण ७ ईशानकूण ८ अधोदि  
शि ९ उर्द्धदिशि १० यह दश दिशिका अरणे जाणे आणेका  
प्रमाण करे, चिठि लिखणी आइमी जेजणा देशांतरकी चिठी  
वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम, तहां आज दिनमें स्नान २ वेर  
अथवा ४ वेर मोकला लेकिन पाणीका तोल रक्के, घने प्रमुख  
का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा  
नही गिराउं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा ज्ञात नियम. दिनमें ज्ञात २ सेर तथा २  
वेर जीमूंगा अथवा च्यार वेर उपरांत डुविहार या चोविहार  
धारणा प्रमाणे रक्के. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका  
प्रमाण रक्के तोलसे या मापसे. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल बारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सांमने शुद्ध सपेद वस्त्र  
पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढावे, पीठे अखंड  
तंडुल मुठि ३ थालमें रक्के उस पर नारेल रुपया या मोहर  
धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पस्किमे इन्नाका० सम्य  
क्त सामाश्चाराहणार्थं चेश्याइं वंदावेह गुरु केह वंदावेमो चैत्यवं  
वण करे. वाये पासे चावलांको साश्रियो करे श्रीफल धरे पीठे  
गुरु वर्द्धमान विद्यासें मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासहोप  
करे, वर्द्धमान स्तुतिसें देववंदन करवावे पीठे सतरे शुईमें नवका  
एकेकका कानसगग करे पीठे शासनदेवता निमित्त च्यार लोगस्त  
का कानसगग करे, पारके प्रगट लोगस्त कहे पीठे ३ नवकार  
गुणे शक्रस्तव कहे नमोर्द्धत्० कहके वना स्तवन कहे पीठे जय

चौथराय कहे इति नदी विधिः । पीठे स्वमात्मण देइ श्रुतसा  
 मायक सम्यक्तसामायक आराहणार्थं काउसंगं करावेह, गुरु कहे  
 करावेमो सम्यक्तसामायक आरोपनार्थं करेमिसानसंगं, ४ लोग  
 स्सका काउसगा करे पारके प्रगट लोगस्स कहे पीठे ३ वेर नव  
 कार गुणकर गुरूके पास तीन वेर सम्यक्तदंमक उच्चरे गुरु पाठ  
 बोले उसकी अनने धारणा रक्के, सूत्रं अहन्नंजते तुह्याणं सम वे  
 मिच्चतानं पक्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पज्जिइ  
 अन्नतिठ्ठिवा अन्नतिठ्ठिदेवयाणिवा अन्नतीठ्ठिपरिग्गहिय अरिहंत  
 चेइयाणिवा वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुब्बिअणालित्तएणं आलवित्त  
 एवा तेसिअलणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणप्पानंवा  
 तेसिगंधमच्चाइं पेसिउंवा नन्नउरायाज्जियोगेणं गणाज्जि योगेणं वत्ता  
 ज्जियोगेणं देवाज्जियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचनविहं तंजहा  
 दव्वत्तं खित्तत्तं कालत्तं जावत्तं तच्चदव्वत्तं दंसणं दवाइं अहिगिच्च खित्तत्तं  
 जावत्तं नरहमझिमखंमे कालत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं नठ  
 लिज्जामि जावत्तं निवाएणं नज्जविज्जामि जावत्तं केशइ, उम्माइवत्तेणं  
 एसो दंसणं पालणं परिणामो नपरिवरुइ तावमे एसो दंसणाज्जिग्गं  
 हो अन्नउणाज्जोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति  
 यागारेणं वोसिरइ, पीठे नुं ह्रीं श्रीं अईं नमः एत्ते अकर श्रीगुरूके  
 पाससें हाथमें लिखोके जिन प्रतिमाकूं वासकूप चढावे, नवकार  
 पढतोथको ३ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरूकूं वंदि, पीठे श्रुतसामायक  
 थिरि करणार्थं सत्तावीस उव्त्तास प्रमाणे एक लोगस्सका काउस  
 संगं करे पीठे प्रगटलोगस्स कहे पीठे सम्यक्तरूप कट्टपट्टक पायके  
 अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावत्तं सुत्ता  
 हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतं, इयसम्मत्तंमएग्गहियं. १. पीठे गुरु  
 घर्मदेशना देवे, मिअथास्वरूप सम्यक्त्तके पांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवन्दन इतनी वेर करूंगा, इतना नवकार नित्य गुणूंगा, फल  
केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाऊंगा, ज्ञान दर्शन चा  
रित्रके जक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वणिधिमें पा  
लूंगा, नित्य पञ्चखाण इस मुजब करूंगा, दिनकी नवकारसी आ  
दिक रात्रिकों डुविहार तिविहार चउविहार उर बावीस अजक  
वत्तौस अनंतकाय विदल वगेरे डोडूंगा इत्यादिक अपणी धारणा  
प्रमाण सब वस्तूका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टीप  
सुणे अतीचार नहि लगे एसे उपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंरुक लि० ॥ अहन्नंजंते तुम्हाणं स  
मीधेवेथूलगपाणाइवायं संकप्पित्तं निरवराहं पञ्चस्कामि जावज्जीवाए  
एगविहं एगविहेणं अथवा डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं  
नकरेमि नकारवेमि तस्सजंते पत्तिकमामि निंदामि गरिहामि अ  
प्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंरुक तीन वेर उच्चरावे ॥ १ ॥  
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसाइवायं जीहाञ्जेयाइहेनअ  
कन्नालीयं गवालीयं जूमालीयं आपणमोसा कूटसाखीयं पंचविहं  
पञ्चस्कामि दस्किन्नाए अविसए दवुत्तं खित्तुत्तं कालत्तं ज्ञावत्तं सबत्तं  
मुसावायं खित्तत्तं इत्थवा अणत्थवा कालत्तं जावज्जीवाए ज्ञाव  
त्तं जावगहेणं नगहेज्जामि जावत्थेणं नत्थलज्जामि अत्थेणकेणवि  
रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ तावअज्जिग्गह डुविहं तिविहेणं  
अन्नत्थणाज्जोगेणं सहस्सागारेणं महत्तगागारेणं वोसिरइ ॥ २ ॥  
अहन्नंजंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं  
रायनिग्गहकारयं सच्चित्तचित्तं वहुविसयं पञ्चस्कामि वदुत्तं खित्तत्तं  
कालत्तं ज्ञावत्तं दवुत्तं अदिन्नादाणं खित्तत्तं इत्थवा अन्नत्थवा का  
त्तं जावज्जीवं ज्ञावत्तं जावगहेणं नगहेज्जामि जावत्थेणं नत्थ  
लज्जामि अत्थेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवरुइ ताव अ

जिग्गह इविहं तिविहेणं अन्नत्यं सदस्ता० महत्त० सब० वोसि  
 रइ ॥ ३ ॥ अहन्नंजंतुम्हाणं समीवे तदारिय वेक्किय ज्ञेयं पूलमेदुणं  
 पच्चस्कामि अदागहियंजंगणं दिवंतिरिठं माणसियं एगविहं एग  
 विहेणं पच्चस्कामि दवत्तं खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं मेदुणं खि  
 त्तं इत्तवा अन्नत्यवा कालत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं  
 नगदिक्कामि अन्न० सद० मह० सब० वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहन्नं  
 जंतं तुम्हाणं समीवे परिग्गहं पमुच्च अपरिमिय परिग्गहं पच्चस्कामि  
 धणधन्नाइ नवविहवत्तु विसयं इत्तापरिमाणं उवसंपक्कामि अदाग  
 हियंजंगणं तंजहा दवत्तं खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं नवविह  
 परिग्गहं खित्तत्तं इत्तवा अन्नत्यवा कालत्तं जावत्तं जावत्तं  
 जावत्तं नगदिक्कामि अन्न० सद० मह० सब० वोसिरइ ॥ ५ ॥  
 अहन्नंजंतं तुम्हाणं समीवे विसिपरिमाणं पच्चस्कामि तंजहा दवत्तं  
 खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं विसिपरिमाणं खित्तत्तं धारणाप  
 माणं कालत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं नगदिक्कामि जाव  
 त्तं तावअजिग्गहं अन्न० सद० मह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहसंजं  
 ते तुम्हाणं समीवे जोगोवजोगयेजोयणत्तं अनंतकायवहुवीया राइ  
 जोयणाइं परिहरामि कम्मत्तं पन्नरसकम्मंदाणाइं इंगालकम्माइया  
 इं बहुसावक्काइं खरकम्माइयं रायान्जियोगंच परिहरामि तंजहा दवत्तं  
 खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं जोगाव जोगवयं खित्तत्तं इत्तवा अन्न  
 त्यवा कालत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं नगदिक्कामि अन्न०  
 सद० मह० सब० वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहसंजंते तुम्हाणं समीवे  
 अन्नत्यदं पच्चस्कामि अववज्जाण पापोपदेशं हिंसोपकरण  
 दाणं पमायचरितं चत्तविहं अन्नत्यदं जहासत्तीए परिहरामि तंज  
 हा दवत्तं खित्तं कालत्तं जावत्तं दवत्तं अन्नत्यदं खित्तत्तं इत्त  
 वा अन्नत्यवा कालत्तं जावत्तं जावत्तं जावत्तं नगदि०

अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहन्नंजते तुम्हाणंसमीवे  
 सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिथिसंविज्जागवयं जहा स  
 तीए पन्निवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुवयं सत्तसिरकावयं उवा  
 लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह०  
 सबस० वोसिरइ ॥ ए ॥ षट् साख ष ठंडी ज्यार आगार संयुक्त  
 पावं ॥ इति श्रावककूं संक्षेप वारे व्रत उच्चरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथांनकका छोटा स्तवन देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करी, वीस थांनक रे  
 गणवुं विधि कहउ चित्त धरी ॥ पहले थांनक रे नमो अरिइताणं  
 गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी धुणउ ॥ त्रुटक० ॥ धुणउ  
 ज्ञविआं बीजइ थांनकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउवी  
 स जिननी, पूंररीक आदिइं कही ॥ त्रीजइ थांनक नमो पवयण  
 स्स, प्रजावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउअइ थांनकि  
 आचारज जगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ थिवर  
 पूजा करो, नमो उवज्जायाणं रे ठठइ थांनक उचरउ ॥ वस्त्र कंबल  
 र बहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्तीणं रे सातमें तपिआ  
 पूजिए ॥ त्रु० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी जगति  
 करउ, नमो दंसणस्स नवमें थांनक चैत्यसेवा आदरो ॥ दसमे ते  
 नमो विनयकारीणं विनय वदानो कीजिए, इग्घारमे नमो क्रिया  
 कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ बारमे थांनक रे नमो बंज  
 धारीणं सदा, वृतधारी रे मन वच क्रम पूजउ मुदा ॥ मूल वय  
 धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समाहिघरणं रे रात्रइ गीत गान  
 वरचिये ॥ त्रु० ॥ वरचिये नमो सुपत्तदायगस्स परमान्न दान ते  
 पत्तरमे, नमो वायगस्स विगयनउ त्याग करो थांनक सोलमें ॥  
 सत्तरमे नमो वेयावचकारीणं, उषध गुरुनइ आपिये ॥ अठारमे

नमो नाण धराणं, नवूं जणवूं थापिये ॥ ३ ॥ नमो सुअज्जतीणं  
 रे उगणीसमे ज्विया मुणज, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइं  
 सुणो ॥ वीसमे धानक रे नमो पद्मावगाणं कही, संघज्जगती रे  
 यथासक्ति कीजे सही ॥ ३० ॥ सही कीजे वीस उली एक पठ  
 भासि कीजीये, उपवास करिये वे सदस्त गुणिये पन्निकमणे  
 लाहो लीजिए ॥ त्रणे काले देववंदन नाइए धोअए टालिये,  
 आरंज वरजी पुन्य गरजी सीअल सुधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु  
 साधवी रे श्रावक श्राविकाये सेविआं, तीर्थकर रे तेणे नामकर्म  
 धांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, ठाणां रे  
 सौधर्मसामि वखाणिआ ॥ ३० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा  
 सुपास उदाई नृप वलि, पोष्टिल मुनिवर अने दृढायुष शंख  
 शतक श्रावक रुली ॥ सुवसा रेवती श्राविकाये एह धानक  
 फरसिआं, सेवकजन कट्याणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥  
 इति वीसधानक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥  
 वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥  
 ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख कें, जेटे सहु ज्वि चित्त सुख  
 पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कव फरसुं वाके  
 मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रभु  
 पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखनिया, मुख सुंदर जास ॥  
 मे० ॥ १ ॥ कानें कुंजल दोय जलके, शशि सूरज सम जास ॥  
 मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिचुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥



प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसास ॥ मे० ॥ लालचंद  
अरज सुनीजे, पूरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ तुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, हारे में  
खनी पुकारुं नेम तुंहीं तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं में  
पईयां परत हुं, इतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन  
अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें फारो ॥ सुजा० ॥  
॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं जव जवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ नेम जिणंदजीसें आंखरुखी, मोरी रेन  
दिवस नित लग रहीरे ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आय उन  
दोस्ती कीनी, ले पीठे ठिठकाय दर्ई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया  
करीने, सिवरमणी तें वर लेई रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केहू  
जविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यातनिंद में खोई रे ॥  
आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन जयो मेरे, आनंद चित्त अब  
जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम बिन नर न कोई मेरे, देख्यो त्रिभु  
वन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, तुम  
प्रभु जव जव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग जैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन जयो, क्या सोये  
जिया जागरे ॥ रा० ॥ दोय घनी तरुको अब रहियो, ऊठ धरममें  
लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी नरबीच धार ले, नर जरम  
सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए  
सूयो शिवमाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ रागः जैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कोन खबर  
ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ भ्रमत फिरयो संसार जगतमें, मेढो जव  
की फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ जव जवके प्रभु तुम जगनायक, राखो  
शरणे तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आशरो पकड़्यो तेरो, सरण  
अही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलस्तवनम् ॥

॥ करुखानी देशी ॥ जाव धरि धन्य दिन आज सफलो  
गणुं, आज में सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर जरि विमल  
गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ १ ॥  
पग पग जमंग धर पंथ नित पूवतां, धन्य दोय चरण तिहां चलत  
आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह  
गिरि सुजस गायो ॥ जा० ॥ २ ॥ दूर उर्गति टरी जात्र विधिशुं  
करी, पुण्यजंमार पोते जरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि  
शिखर, रूपजजिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंघर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंघर साहिवा, वीनतनी अवधार लाल रे ॥  
परमात्म परमेस्वरु, आत्म परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥  
केवलज्ञान दिवाकरु, जागे सादि अनंत लाल रे ॥ जासक लोकालो  
कको, हाथिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंड चंड चक्रा  
सरु, सुर नर रदे कर जोरु लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणदूते  
एक कोरु लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजर वस्यो, मुऊ  
मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, जवजव  
देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उधारण गो तुमें, दूर  
दरो जवउख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल  
सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंघर जिन स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनमो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपुं निशि  
दीस जी ॥ चत्तारी अष्ट दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन  
चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरें जी, पावरु  
शाला आठ जी ॥ आठ जोजन उंचुं देहरुं जी, दुःख दोहग  
जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ जरतें जरायां जलां देहरां जी,  
सो ज्ञोयरां शूज जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने  
ऊज जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली  
जानीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थकर बांधीयां जी, जाणे जोई जे  
ऊज जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुऊने पांखनी जी, आवुं केम  
हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह उगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रभु आशा  
राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपणा दासा, दीजे कठुक दिवासा  
राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चानी चटकी जवमांहि जटकी, नाच्यो में  
विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी,  
लागुं प्रभुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ ते हम टाली सुगत  
संजाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथाली  
वाजे ताली, वात अचंजा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परउपगारी  
पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी  
मन शुद्ध धारी, श्रीधमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥  
सांजलीने आव्यो तुम तीरे, जनम मरण जय वारो ॥ १ ॥ सेवक  
अरज करे ठे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सह

कोना मनवाठित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह विरुद ठे राज तु-  
 माकं, किम राखो ठो दूरो ॥ सेवक० ॥ १ ॥ सेवकने घलवलतो देखी,  
 मनमां मदेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार  
 न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नही ठे, परतक  
 वरिसण दीजें ॥ धूवामे धीजुं नहीं साहिव, पेट पड्या पतीजें ॥  
 ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंरुण साहिव, वीनतनी अवधारो ॥  
 कहे जिनदर्प मया करी मुऊने, जवसायरधी तारो ॥ सेवक० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार ॥  
 जिनेसर ॥ साहेब वसीयां जीहो शिवपुरी, हुं इण जरत मऊ र  
 ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आनो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु  
 मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो जामला, कागल थुं किरण  
 हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां थें में जीहो एकठा, दिनमें  
 वश वश चार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता  
 घणी मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलणो जीहो  
 अवसरें, मिलशे सुखत संयोग ॥ जि० ॥ पण कण कण  
 जीहो सांजरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥  
 मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रखी, फलशे ते दिन आश ॥  
 ॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रजु सुखवात ॥  
 ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे ठे ॥ जिनराज, वधाई, वाजे ठे ॥  
 नगर अयोध्यामांहे, मेघ घर आज वधाई वाजे ठे ॥ ए टेक ४  
 मात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति जर  
 सहु देशमें रे, प्रगट जयो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इति ॥

सुर मङ्गधारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मङ्गल पूजन बहुविध रे,  
धिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ २ ॥ घर घर रंग वधामणा रे,  
घर घर मंगल चार ॥ बालचंद्र प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख  
कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोत्सव रंग रत्नी री ॥ ए टुक ॥ जायो सुत  
त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥  
सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥  
आवत सिद्धारथजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥  
आ० ॥ २ ॥ इंडाणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी  
री ॥ बाजत ताल मृदंग सुरपधनी, वेना वीन मोचंग बली री ॥  
आ० ॥ ३ ॥ इंड हुकुम कर धरणीं पठायो, सब वसुधा धन,  
धान्य जरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम विखेरत  
गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार जयो जिनशासना  
व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री ॥ हरख चंद्र जनभ्यो प्रभु मेरो,  
मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चतुतीसय अतिसय जुन, वचनातिशयें जुत ॥ सो परमेसर  
देख जवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासण बेठा जग  
जाण, देखी जविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठे तुज निम्मल  
जाण, लहिये परम महोदय गाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आ  
दिजिनंदा, तोरा चरणकमल चौबीस पूजो रे चौबीस सोजागी चौ  
बीस वैरागी चौबीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजनंदा ॥ १ ॥  
(इतना कह कुसुमांजलि चढाईने चरणोके टीकी दोजे) ॥ गाथा ॥  
जोनिअगुण० ज रम्यो, तसुअनुजवएगत्त ॥ सुहपुगलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरक्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पु  
 गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेस्वर निजपद लीन, पूजो प्रणमो  
 ज्ञव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरां० ( एसा कह  
 गोरे टीकी दीजे ) ॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगु  
 णसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमण्णहधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥  
 लोकालोक प्रकाशक नांणी, ज्ञविजन तारण जेहनी वांणी ॥ पर  
 मानंदतणी नीसाणी, तसु जंगते मुऊ मति गहरांणी ॥ १ ॥ कु  
 सुमांजली मेलो नेम जिनेंदा तोरां० ॥ ( एसा कह हाथे टीकी दीजे )  
 ३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन  
 उच्चियमाण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह  
 त्रिकाले, सम परिणामे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखा  
 ले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा  
 तोरा च० ॥ ( एसा कह खांथोके टीकी दीजे ) ४ ॥ गाथा ॥ सम्म  
 दिदिदेसजय, साहूसारुणीसार ॥ आचारजत्रझायमण, जोनिम्मल  
 आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धारयो, मोक्षतणो  
 कारण निरधारयो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रण  
 मंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ ( एसा कह  
 मस्तक टीकी दीजे ) ५ ॥ ( पीठे स्नात्रिया चमर ले के प्रजुजीकूं  
 दुलावे ) ॥ वस्तु ॥ सर्यलजिनवर २ नमिय मनरंग, कछ्वाणक वि  
 हि संठविय, करिस धम्म सुपचित ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्त्रंठ  
 १, इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीसं जिण ॥  
 जिम्म समय इगवीसं, जत्तहि जावे पूजिया, करो संघ सुज  
 गीस ॥ ढाल ॥ ज्ञव तीजे समकित गुण रम्या, जिनजत्ती प्रमुख  
 गुण परिणम्या ॥ तजि इंडिय सुख आसंसना, कर ध्यानक वीसनी  
 सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रजावता, मन जावना एहवी

ज्ञावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, एसी ज्ञावदया मन उद्ध  
 सी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवूं जलूं, निपजावी जिनपद निरम  
 लूं ॥ आनबंध विचे इक जव करी, श्रद्धा संवेग ते धिर धरी ॥३॥  
 तिहांथी चवि लहे नरजव उदार, जरते तिम एरवतेंज सार ॥ म  
 हाविदेह विजय प्रधान, मऊखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥  
 ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेषे ॥ गजवर  
 उज्जल सुंदर, निरमल वृषज मनोहर ॥ निरजय केसरिलिंह, लख  
 मी अतिह अबीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शशि सुकमा  
 ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश  
 पकूर, पदम सरोवर पूर ॥ श्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण  
 सायर ॥ बारमें जनुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि  
 खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने ज्ञासे, राजा  
 अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥  
 इंद्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य  
 उदय २, ऊपना जिणनाह ॥ माता तव रयणी समे, देख सुपन  
 हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांजले  
 सो ज्ञागी ॥ त्रिजनुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधान इंद्रा  
 दिक जसु पाय नमी, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥  
 चंडाजलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अबधे मन आ  
 णंदियो ॥ मुऊ आतम निरमल करण काज, जवजल तारण  
 प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ जवअरुविद्य पारग सठवाह, केवलता  
 णाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उल  
 ट्यो आसाह मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तव रोमराय, बलयादिकमां  
 निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन  
 आणंद कंद ॥ ३ ॥ सग अरु पय समुहा आवि तठ, कर अंजलि

प्रणमिय मठ सत्य ॥ मुख चापे ए कृष्ण आज सार, तिय लोय  
 पदू दीवो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल  
 तापित तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्या  
 विष चूरण गरुवांन ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समठ, प्रगद्यो  
 तसु प्रणामी हुठ सनत्य ॥ इम जंपी सकठव करेवि, तव देव  
 देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तव रंजा गीत गांन, सुरलोक हुठ मंग  
 लनिधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंस ठांम, जिनराज वधे सुर हर्ष धांम ॥  
 ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उठव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष ॥  
 सुरपति देवादिक हरप संग, संयम अरथी जनने उमंग ॥ ८ ॥  
 जुन्न वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख  
 पांम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाइश् अई अतीव ॥ ९ ॥ (एसा पढ  
 चैत्यवंदन करणा पीठे हाथमें साथिया करणा पीठे कलस पंचामृत  
 का लेकर स्वप्ना रहे ॥ ) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुख  
 कार, नरखित्त मंगल उद विहंगल जविक मन आधार ॥ तिहां  
 राव राणा हरख उठव थयो जग जयकार, दिसिकुमर अवधि वि  
 शेष जांणी लहो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कु  
 मरी गावती गुण ठंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकती आ  
 णंद ॥ हे माय तें जिनराज जायो सचिव धायो रम्म, अम्ह जम्म  
 निम्मल करण कारण करिस सूईयकम्म ॥ २ ॥ तिहां जूमिसोधन  
 दीप दर्पण वाय वींऊणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर ज  
 ननि मज्जणकार ॥ वर राखनी जिन पांण वांधी दिये इम आस्ती  
 त्त, जुग कोमिकोमी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल उला  
 लानो ॥ जिन रयणीजी दस दिसि उज्जवता घरे, सुज लगनेजी  
 ज्योतितचक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताघरे,  
 तिण अवसरजी इंद्रात्तण पिण अरहरे ॥ बूटक ॥ घरहरे आसन इंद्र



चिंते कोन अवसर ए वन्यो, जिन जन्म उच्चवकाल जांणी अतहि  
 आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जाण जगते ऊ  
 मह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥  
 ॥ ढाल ॥ तव सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुरलोकेजी घोषणा एह  
 दिराव ए ॥ नरकेत्रेजी जिनवर जन्म हुज अठे, तसु जगतेजी सुरेप  
 ति मंदिरगिर गठे ॥ त्रूट० ॥ गठे मंदिर शिखर ऊपर चुवन जीवन  
 जिनतणो, जिन जन्मउच्चव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥  
 तुम शुद्ध समकित आस्थे निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पा  
 तिक सर्व जास्थे नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांज  
 लजी सुरवर कोमि बहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांहमी  
 चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीधर आविया, जिनमाताजी वंदी  
 स्वामि वधाविया ॥ त्रू० ॥ वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्य हूं क  
 तपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुऊ समो कुण अन्य ए ॥ हे  
 जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मऊनवर करी, उठंग तुमचे वलिथ  
 थापिस आतमा पुन्ये जरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज  
 करकमले वध्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक  
 विधिजी तव बत्तीस आगलि वहे, सुर कोमिजी जिन दरशणने ऊ  
 भहे ॥ त्रूट० ॥ सुर कोमकोमी नाचती वलि नाथ सचि गुण गा  
 वती, अठपरा कोमी हाथ जोमी हाव जाव दिखावती ॥ जय जयो  
 २ तूं जिनराज जगगुरु एम ये आसीस ए, अम त्रांण सरण आ  
 धार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पां  
 रुकवनमें चिहुं दिसे, गिर शिल परजी सिंहासन सासय वसे ॥  
 तिहां आणीजी शेक्रे निज खोले ग्रह्या, चोसठेजी तिहां सुरपति  
 आवी रह्या ॥ त्रूट० आविया सुरपति सर्व जगते कलश श्रेणि व  
 णाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषध सर्व वस्तु अलाव ए ॥ अच्यु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोनाकोरुने, जिन मङ्गनारथ नीर,  
 द्यावो सवे सुर करजोरुने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव  
 कोनी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पत्रमदह आदि  
 दह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाजणी ते गई ॥ १ ॥ जाति  
 अरु कलश कर सदस अघोचरा, उक्त चामर सिंहासण सुजतरा ॥  
 उपगरण पुष्प चंगेरी पमुहा सवै, आगमे जासिया तेम आणी ठवे  
 ॥ २ ॥ तीर्थजल जरिय करि कलश कर देवता, गावता जावता  
 धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम  
 सगति शुचि जगति इम जावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म  
 आरोपता, कलश पाणी मिते जक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिद्धरोवरे  
 सर्व आख्या वही, शक्र उचंग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा ॥  
 हंद्देवा अणाइकालो अदिष्टपूर्वो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥  
 मित्रतमोद्विदंसणो आणाइतिन्नविषासणो, देवाहिदेवोदिद्वो २ हि  
 यकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पत्रांति वण जवण जोईसरा, देव  
 त्रेमाणिया जति धम्मायरा ॥ केविकप्पटिया केविमिन्नाणुगा, केवि  
 वररमणे वयणेण अइउच्चगा ॥ १ ॥ वस्तु ॥ तत्थअच्चुय २ इंड आ  
 देस, करजोनी सव देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अदञ्जुत  
 रूप सरूप जुय कवण एइ पुचंति सामिय, इंड कहे जगतारणो पा  
 रग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अजिपेस ॥  
 ॥ २ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे  
 न्हाभे ॥ आतम निरमल जाव करंता, वथते सुज परिणामे ॥ अ  
 श्रुत्तादिक सुरपति मङ्गन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंझाणी  
 पमुहा, इम अजिपेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाहा ॥ तवईसा  
 णसुरिंदो, सक्कंपजणेइकरिसुपसानं ॥ तुम्हअंकेमहतांनं, खिणमि  
 त्तंअम्हअप्पेइ ॥ १ ॥ तासकिंदोपजणइ, साइमीयवचलमिन्निवहुला

हे ॥ आणाएवंतेणं गिएहह होउकयत्प्राज्ञो ॥ १ ॥ (कलस ढाले)  
 सोहम सुरपति वृषज रूप करि, न्हवण करे प्रज्जु अंगे ॥ करिय वि  
 लेपन पुष्पमाल ठवि, वर आञ्जरण अञ्जंग ॥ १ ॥ तव सुरवर बहु जयश  
 रव कर, नञ्जे धरि आणंद ॥ मोहमारग सारथपति पांभ्यो, ज्ञांज  
 सु हिव ज्ञवफंद ॥ २ ॥ कोरु वत्तीस सोवन उवारी, वाजंते वरे  
 नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रज्जुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥  
 आणी थापे एम पयंपे, अह्ल निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्यारो  
 धणी अह्यारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राख  
 ज्यो एहने, तुम सुत अह्ल आधार ॥ सुरपति जगते सहित नंदीस  
 र, करे जिन ज्ञक्ति उदार ॥ ५ ॥ नियश कप्प गया सब निर्जर,  
 कहता प्रज्जु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कळयाणक, इठा चित्त  
 मजार ॥ ६ ॥ खरतर गन्न जिनआणा रंगी, राजसार उवझाय ॥  
 ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ७ ॥ देवचंद  
 जिन जगते गायो, जनम महोहव उंद ॥ बोधबीज अंकूरो नल्ल  
 स्यो, संघं सकल आणंद ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इम पूजा जगते करो,  
 आतम हित काज ॥ तजिय विज्ञाव निज ज्ञावमा, रमता सिव  
 राज ॥ ९० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्ये जेह जिणंद ॥  
 संपइ सीमंधर प्रज्जु, केवलनाण दिणंद ॥ ९० ॥ २ ॥ जन्ममहोहव  
 इण परे, श्रावक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन  
 खंत ॥ ९० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां ज्ञव पार ॥ जिन  
 प्रतिमा जिनसारखी, कही सुत्र मजार ॥ ९० ॥ ४ ॥ इतिस्त्रात्रपूजासं०

॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमलकेवल ज्ञासन ज्ञास्करं, जगत जंतु महो  
 दय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि वि  
 सुद्वये ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमङ्गलैन्द्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजी चं-  
 दन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल ज्ञाव युतं  
 जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनै, सहज तत्व विकास कृतेर्चयेः ॥  
 ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं केसरचंदनं यजामहे ॥ २ ॥ त्रीजी पुष्प पूजा ॥ विक-  
 च निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन ज्ञाव समुज्ज्वेः ॥ सुपरणा  
 म प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्व मयं हिय जाम्बवं ॥ ॐ ह्रीं  
 प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चोथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म  
 महोधन दाहनं, विमल संवर ज्ञावसु धूपनं ॥ अशुभ पु-  
 जल संग विवर्जनं, जिनपते पुरतोस्तु सुदर्पतः ॥ ४ ॥  
 ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ ज्विक नि  
 र्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग वि  
 शुद्ध समन्वितं, दधतु ज्ञाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प०  
 दीपं यजामहे ॥ ५ ॥ ठी अकृत पूजा ॥ सकल मंगल केल नि  
 क्तनं, परम मंगल ज्ञाव मयं जिनं ॥ श्रयति ज्ञव्यजना इति दर्श  
 यन्, दधति नाथ पुरोक्त स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अकृतं  
 यजामहे ॥ सातमी नैवद्य पूजा ॥ सकल पुञ्जल संग विवर्जनं, स  
 हज चेतन ज्ञावं विलासकं ॥ सरस ज्ञोजन नव्य निवेदनात्, पर  
 म निर्वृत्ति ज्ञाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी  
 फल पूजा ॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्कफलव्रज ढोकनं ॥  
 विहत मोक्ष फलस्य प्रज्ञो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ ८ ॥  
 ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्थ) इति जिनवर वृंदं ज्ञक्तितः पूजयं  
 ति, सकल गुणनिधानं देवचंडं स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्व  
 मुद्रावयंति, परम सहजरूपं मोक्षं सौख्यं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 प० अर्थं यजामहे ॥ ( वस्त्र ) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला,  
 सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यकृते कुसुम चंदन गंध

धूपैः कृत्वाञ्जनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ५० वस्त्रं  
यजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सत्तरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछे अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रकेवीमें कुंकम तथा  
केसरका साथिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलसमें  
डालै मुखकोस बांध उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन बेर नमस्कार कर हाथ  
के धूप देकर रकेवी हाथमें धरै मन सुद्धकर खडा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती सुनौ कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ डूहा ॥ ज्ञाव ज्ञद्वै जगवंतनी, पूजा सत्तर प्रकार ॥ पर  
सिद्ध कीधी झोपदी, अंग ठठै अधिकार ॥ १ ॥ राग सरपदो ॥ ज्योति  
सकल जग जागती, हारे अश्यो जा० सरसति समरि सुज्जिंद ॥ सत्तर  
सुविध पूजातणी, पञ्चशिसु परमानंद ॥ १ ॥ गाहा ॥ न्हवण १ विलेवण  
२ वत्थयुगं ३, गंधारुहणं च ४ पुष्फरोहणयं ५ ॥ मालारोहण ६ व  
न्नयं ७ चुन्न ८, पद्मांगय ए आञ्जरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुयु  
वंसुधरं ११, पुष्फं पगरं च १२ अठमंगलयं १३ ॥ धूव उखेवो १४  
गीययं १५, नट्टं १६ वज्जं १७ तथा ज्ञणियं ॥ ३ ॥ सत्तर सुविध  
पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मज्जार ॥ डुपदंसुता झोपदि परै, करियै विधि  
विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अहत धोती धरी उचि  
त मानी रे, अश्यो ज० ॥ विहत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुज्जृत  
मणिकलस कर विविध बांनो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगवं,  
लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा वारिवारि ॥ अ० ॥ ज्ञणिय कुस  
मांजली, कलस विधि मन रखी, नवति जिन इंड जिम तिम अ  
गारी ॥ अ० ॥ २ ॥ डुहा ॥ परमानंद पीयूष रस, न्हवण सुगति  
सोपान ॥ धरमरूप तरु सींचया, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पह

ली पूजा सांचवै, श्रावक शुभ्र परिणाम ॥ शुचि पखाल जिनतनु  
 तणे, करइ सुकृत हितकाम ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्र  
 कारी, सुण जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिया उड्योरी सुधारस, तप-  
 त बुजिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रजूकुं विलोक नमि जतन  
 प्रमारजित, करत पखाल सुचि धारविनकी ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथ-  
 म निज वृजन पुलावत, पंककु वरप जिम धनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि  
 तरणि जवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥  
 शिवपुर पंथ दिखावन दोषी, धूमरि आपदवेल मरदनकी ॥ पू० ॥  
 ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिड्योरी सुमनि संग, जागी सुदिता शुभ्र  
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधुकीरति सारंगजरकरतां, आस फलो  
 मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पद पंचामृतसुं न्हवण कीज । डाये पांवके अंगुठे जलधार दीजे ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगलूहणसे अंग जिनविक्का प्रमार्जकर केसर सुगंधद्रव्य मिश्रित लेके खडा रहै)  
 रामगिरीमें राग ॥ गात्र लूहे जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर  
 सु धूपित वाससुं ॥ वाससुं हारे देवा वा०, गंध कसायसुं मेलियै  
 ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हारे देवा नं० ॥ माहे मृग-  
 मद कुंकम जेळीयै, कर लीयै हारे दे० क०, रयण पिंगणि कचो-  
 लियै ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंवे सिरै रे देवा, जाल कंठ उर  
 उदरंत रै ॥ डाल हारै हारे देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजोयै ॥  
 गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरै, श्रावकदूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम  
 सुरगिरै, तिम करै हारे देवा ति० जिण पर जनमन रंजियै ॥  
 ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितने ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखतदन,  
 श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे जवोदधि तीर  
 ॥ १ ॥ निटे ताप तसु देहको, परमशक्तिरता संग ॥ चित्त खेद सम  
 उपसमें, सुखमें समरसारींग ॥ २ ॥ राग वेलाउत्र ॥ विलेपन कीजे

जिनवर अंगै, जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद  
 यक्ष कर्दम, अंगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रम जानु कर  
 खंधै सिर ज्ञात कंठ, नर नदरन्तर संगै ॥ विलुपति अघ मेरो कर  
 त विलेपन, तपति बुजित जिम अंगै ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव  
 १ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगे ॥ कहै साधु तन शुचि  
 करो सुललित पूजा, जैसे गंग तरंगै ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितिय  
 विलेपन पूजा ॥ २ ॥ एसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतीय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल नज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥  
 लाज ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गौरी ॥  
 कमल कोमल घन चंदन चरचित, सुगंध गंधै अधिवासिया ए, हारै  
 अश्यो० ॥ कनक मंमित हय लाल पल्लव शुचि, वसन युग कंति  
 अधिवासिया ए ॥ हारै अ० ॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्य  
 यथा, करिय पहरावणी ढोइयै ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो दे-  
 वने, वस्त्रयुग पूज मल धोइयै ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैरागी ॥  
 देवदुष्ययुग पूजा वन्यो हे जगतगुरु, देवदुष्य हर अब इतनो मांगुं ॥  
 तूंही हे सबहि हितु तूंही है सुगति दाता, तिए नमिश् प्रजुजी कै  
 चरणे लागुं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहे साधू तीजी पूजा केवल दंसण नाण,  
 देवदुष्य मिस देहु उत्तम वागुं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत  
 पीतां, सब राम दुख संसय घुरम जांगुं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृति-  
 य वस्त्रयुगल पूजा ॥ ( एसा कह प्रजुजाकुं वस्त्र चढावे ॥ )

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासक्षेपपूजा ॥

॥ गौरी रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परै, सुमति वधारण  
 वास ॥ कुमति कुगति दूरै हरै, दहै मोहदल पास ॥ १ ॥ राग  
 सारंग ॥ हां हो रे देवा बावनचंदन घस कुमकुमा, चुरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसुम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो  
 अधिवासु ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वासु दसोदिसि वासुते, पूजे जिन अंग  
 उवंगू ए ॥ हा० लाडि जवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अर्ज  
 गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौमी ॥ भैरै प्रज्जुजीको पूजा आ-  
 नंदमेले, पू० ॥ वासुजवन मोह्यो सवलो ए, संपदा जेले ॥ पू० ॥  
 ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्तायेइ ॥ अप्रमित्तगुण  
 तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजियै जिन  
 राज तत्तायेइ, चतुर गति डुख गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥  
 इति चतुर्थी वासुकेप पूजा ॥ ( एसा कह चूर्णवासु चढावे )

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगे पुष्प उत्तम ले के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुहप अनेक प्रकार ॥  
 प्रज्जु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥  
 चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई  
 जूहिका, वज्रसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि धरै ए,  
 अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमंणीसे वर वरे, विधि जिन  
 पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥ इति ॥ राग कानमो ॥ सोहे री माई व  
 रणें, मन मोहे री माई वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसुम जिनच  
 रणें ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिवकुं, राख प्रज्जु हम सर  
 लै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकुलितकी, कु० ॥ पंच  
 विपै हां० पं० डुख हरणें ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति जगति जग  
 वंतकी, जविक नरां हारे ज० सुखं करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छठी पूजाए वती, महो सुरज्जि पुष्पमाल ॥ गुण  
 गूंथी थापे गलै, जेम टलै डुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुज  
 रा ॥ नाग पुनाग मंदार नवमालिका, मालिकासो ग पारिध कली



ए ॥ जला पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाल  
 गुलाब पामल जिली ए ॥ जलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मो-  
 गरा वेजला मालती, पंचवरणै गुंथी मालती ए ॥ जलां गुं० ॥ हे  
 माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पालनी ए ॥  
 जलां स० ॥ २ ॥ इति ॥ राग आसानरी ॥ देखी दामा कंठ जिन अधिक  
 एधतिनंदै, चकोरकूं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि  
 वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० बलि सुहमंदै ॥ दे० ॥  
 ॥ २ ॥ ठठी रे तोमरपूजा सब मार धूजै ॥ सब अरियण हारै स०  
 होइ तिम वंदै ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहे साधुकीरत सकल आस्था सुख,  
 जविक जगत हारै ज० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति ठठी  
 तोमर पूजा ॥ ६ ॥ ( एसा कह फूलमाला प्रभुकूं पहिरावे ॥ )

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगै फूल केसरसैं अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवना, सोनै तेम सुगात ॥ चाटो  
 जिम चढतां हुवै, सातमीयै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौनी ॥  
 कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हारै अ० ॥ कुंद  
 गुलावसुं चंपको दमणको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी  
 अलंकीयै, अंग आलंक मिस माननी सुगति आलिंगियै ए ॥ २ ॥  
 ॥ इति ॥ राग जैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं० ॥  
 कुंद मचकुंद गुलाब सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥  
 ॥ १ ॥ दमणक मरुक पामल अरविंदो, अस जुई वेजलवाती ॥  
 पारधि चरण कदार मंदारो, विण पटकूल वनी ज्ञांती ॥ पं० ॥  
 ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमण गाती, जैरवी कुगति व्रत तिदाती ॥  
 पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरवत्ती अथवा धूप लेकर खडा रहै ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेवहारस सार, सुमती पूजा आवती ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु जावसैं ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥  
 कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥  
 सुरन्नि सिखर मृग नाजिनो जी देवा, चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥  
 ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जव मोरीयो जी देवा, अशुन्न करम चूरीजै जी ॥  
 अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तव कुमतीजन खीजै जी ॥ तव  
 सुमतीजन रीजै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री  
 माई जिनवर अंग सुगंधै, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदारै, गोत्र  
 तीर्थकर वांधइ ॥ जलांश गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अंगर से-  
 व्हारस, लावै जिन तनु रागै ॥ धार कपूर जाव घन वरपत, सामेरी  
 मति जागै ॥ जलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकै, सूदव गीत समूल ॥ दीजै  
 तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौमी ॥ वस्तु ॥  
 सहसजोयण २, हेममय दंरु ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत  
 घुघरीय वाजै ॥ मृडु समीर लहकै गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद  
 ल सयल जाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए वि० ॥ न  
 वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक धज वहन, ति० ॥  
 आपै दांन अन्नंग ॥ आ० ॥ १ ॥ राग नट्टनारायण ॥ जिनराज  
 को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन  
 सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सवद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधवधू  
 सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ ज्ञांति वसन पंचवरण वन्यो री,  
 विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू जणत नवमी पूजा नव, पाप  
 नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

( ॥ ए कडी ध्वजा चढाईजै ॥ पहली वाजिन्न वाजतां सधवस्त्री चांदीके थालमें  
 धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गुंहली कर धजा पर गुरु  
 पास वासक्षेप करा के प्रभु सन्मुख ध्वजा धिस्तारै ॥ )

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

( एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खडा रहे ॥ )

॥ दूहा राग केदारमै ॥ दसमी पूजा आभरण, रचना यथा अनेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे जिनवरतणै, रयण मुगट ऊलकंता ॥ तिलक जाल अंगद जुजा, श्रवण कुंमल अति जंति ॥ २ ॥ राग अधजास गुंमढ्हार ॥ आसावरी ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणक लाल रसणिया, हीरा सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुजग अंक अजना, मनमोहे रे ॥ ३ ॥ मौलि मुगट रयणै जड्यो, काने कुंमल हारे अति जुगतै जुड्यो नर हारू रे, मन वारू रे ॥ जाल तिलक वाहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, डुखहारू रे ॥ ४ ॥ राग केदारो ॥ प्रजु सिर सोहै मुगट मणि रयण जड्यो, रय० ॥ अंगद बाहु तिलक जालस्थल, यहुनीको कवण घड्यो ॥ ॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंमल शशि तरुण मंमल जीपे, सुरतरुसे अलंकरयो ॥ डुखकेदार चमर सिंहासन, उत्र सिर नवरि धरयो, अलंकरत उचित वरयो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ रोक ड्याभरणदि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सौजनतो, फूंदै लहकै फूल ॥ महके परिमल फल महा, इग्यारमी पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलू ए ॥ अईयो० तिलक दमणकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पारिध पामलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिजुवनकूं रुचै, कुश मगेहे विच तोरणं ए ॥ हारे अ० ॥ गुड चंडोदयं जूवकाउन्नयं, जालिका गौख चित्तचोरणं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो मन मोह्यो माईरी फूलघर आणंद जिलै, फू० ॥ असत नसत दाम वधरी मनोहर, देखत तबही सब डुरित खिलै ॥ फू० ॥ १ ॥

कुसुम मंजुप शंज गुड चंडोदय, कोरणी चारु विनाण सऊँ ॥ इग्या  
रमी पूजा वणी हे रामगिरी, विबुध विमान जैसे तिपुरि जजै ॥

॥ १॥ फूलमे० ॥ इति इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ (फूलघर चढाईजै ॥)

॥ अथ वारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरपै वारमी पूजमें, कुसुम धादलिया फूल ॥ हर

ण ताप डख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग ज्जीम

मढहार करुखेकी जाति ॥ मेघ वरसै जरी पुष्प वादल करी, जानु

परिमाण कर कुसुम पगरं ॥ पंचवरणें वणयो विकच अनुक्रम चिणयो,

अधोवृंते नही पीर पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास मढके मिलै जमर

जमरी जिलै, सरस रसरंग तिया डख निवारी ॥ जिणप आगै करै

सुरप जिम सुख वरै, वारमी पूज तिया पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥

राग ज्जीममढहार ॥ पुष्प वादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ यो-

जन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥

गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणें ॥

गुंजतर मधुकर इम पजणै, गुं० ॥ मधुर वचन जिनगुण शुणइ ॥ पु०

॥ २ ॥ कुसुमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीर नही सुमणें, पु० ॥

समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥

॥ ३ ॥ वारमी पूज जविक तिम करै, कुसुम विकसं हस उचरै ॥

तसु ज्जीमबंधन अधरा दुवै, जे करहिजे जिन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥

इति वारमी पुष्पवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रुपया चावल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै

सुमनै सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल

मिदिया, अखंन गुणै ज्जिदिया, साल रजततणा तंडुला ए ॥ श्लेषण

समाजक विध पंच वरणक, चंद्रकिरण जैसा कजला ए ॥ १ ॥

अ० ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल अखै, जिनप आगै सुधानक

धैर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टसिद्ध  
करे ए ॥ अ० ॥ १ ॥ राग कट्याण ॥ हां हो पूजा वशी ते रसमें  
रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्पण जडासन नंदावर्त पुर्णकुंज, मन्त्रयुग  
श्रीवत्स तसुमें ॥ वर्द्धमान स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कट्याण  
सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अंगर, सेट्टहारस धनसार ॥ कर  
प्रज्ञ आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेदान्त ॥  
कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचेपूर ॥ कुदरुक्क सेट्टहारस सार, गंध  
वटी धनसार ॥ १ ॥ गंधवटी धनसार चंदन, मृगमदारस त्रैलियै  
श्रीवास धूप दसांग अंबर, सुरजि बहु द्रव्य मेलियै ॥ वेरलिय दंरु  
कनक मंमि धूपधाणो कर धरै, जववृत्ति धूप करंति जोग रोग  
साग अशुज हरै ॥ १ ॥ राग मालवी गोली ॥ सब अरति मअन  
मुदार धूप, करति गंध रसाल रे, देवाक० ॥ धामधूमावलिय धूसर  
कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ उर्ध्वगत सूचंत जविकुं, म  
धमधे करनाल रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीयै रयण विसाल रे ॥  
आरती मंगल माल रे, मालवीगोली ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति  
चवदमी धूप पूजा ॥ ( एसा पढके धूप खेव ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ जलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥  
जावो अर्थकी जावना, पनरमी पूजा प्रीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें  
आर्या ॥ यद्वदनंत केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण  
वर्ण तान वाद्यै, मात्रा ज्ञाषालैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः  
स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च, चंचुर चारीचारी गीतं गानं सुपीयूषं  
॥ १ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गान श्रुत अमृतं, तार मंडादि अ  
नाहत तानं, केवल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विबुध

कुमार कुमरी आवापै, सुरज नपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र.  
 ध्वयो प्रतिमानं, आयति वंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ २ ॥ सवद  
 समान रुच्यो त्रिजुवनकुं. सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर  
 भान शिव श्रीगीतं, पनरमो पूज हरै डुरितं रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पू॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ ( कुमार कुमरी नाटिक करै ॥ )

॥ दूहा ॥ करजोनी नाटिक करै, सज सुंदर सिणगार ॥  
 जवनाटिक ते नहि जमै, सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ राग शुद्धनट्ट  
 काव्यं ॥ जावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुत्र चंदानना, सपिम्मा  
 सम रूच वेत वयसो मनेज कुंजत्यशा ॥ लावणा सगुणा पिकस्त  
 र्वई रागाईआ लावणा, कुमारी कुमरावी जैन पुरन नचंति सिं  
 गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणते अरुसयं कुमारिकुमरीज, सूरियाजे  
 णंदेवेणं संदिहा रंगमंवेपविहा जिणनमंता गायंता वायंता नचंति  
 ॥ २ ॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, जागरुदि तत्ताथेइ  
 ॥ अ० ॥ जागरुदिश्क श्रौगिशन, सुखेतताथेईयं ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे  
 णु वीणा मुरज वाजै, सोलही सिणगार साजै ॥ तनन्नन्नेईय ॥  
 अईयो० ॥ घणण घणण घणणण घुग्घरु धमके, रणससससेईय ॥  
 ॥ अईयो० ॥ ३ ॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी जेकार क  
 रणी ॥ सोजंती कुमरीय ॥ अईयो० हस्तकं हावादिजावै, दवन्ती  
 जमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटिकतणी, सूरियाजे  
 रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप जगतें जविक  
 लाणा, आणंद तत्तेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ४ ॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततवन सुखिरै आनधै, वाजित्र चौविध वाय ॥  
 जगत जली जगवंतनी, सतरमिये सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर  
 महल कंसाओ, महुघर महल सुवज्जए पणवो ॥ सुरनारि नवं तुरो,  
 पणणइ तूं नंद जिणनाइ ॥ २ ॥ राग मधुमाधवी ॥ तूं नन्दिआ

न्द बोलत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी ॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्म  
ल वावन मुखवेदी, तिवल बोलै रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥  
नेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवै जैन जैणावंती ॥ जैन  
शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंध परपरिष वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥  
सेव ज्ञविक मधुमाधव फेरी, ज्ञवनी फेरी नप्पजणंती ॥ कहै  
साधु सतरमी पूज वाजिन्न सब, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥  
तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ ज्ञवि तूं ज्ञण गुण जिनके सब दिन, तेज तरण मुखराजै  
॥ ते० ॥ कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, घुय रंगे हम ठाजै  
॥ ज्ञवि० ॥ १ ॥ अणहलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि सि  
ध आवाजै ॥ सतर सुपूज सुविध श्रावककी, ज्ञणी में ज्ञगति हि  
त काजै ॥ ज्ञवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंड सूरि खरतर पति, धरम  
वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अठार श्रावण धुर, पंचमि दिवस  
समाजै ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु  
पसाथै सुविध हुय गाजै, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सब  
लीला सुख साजै ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ इति सतर जेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भये पीछे वस्त्र पहरकर उत्तरासण करके तिलक करके रकेवीमें  
स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणावर्त्तसें आरती करै ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोरा  
चरणकमलकी में जानं बलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजी  
केनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष  
सोवनमें काया, मृग लंठन प्रभु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ च  
क्रवर्त्ति प्रभु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जै०  
॥ ४ ॥ मंगल आरती जोरहिं कीजै, जन्मश को दाहो दीजै ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक गुण गावै, सो नर नारी अमरपद  
पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदको पूजामें जो अवस्य चीज चाहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिथी जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं, मोली  
छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रुवा धूप चावल गहूं चणोकीदाल मूंग जड़द  
नव प्रकारका नैवद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पक्कान्न खजली मिथी पतास  
ओला वगैरे अंगलूहणों के वास्ते स्वेतवस्त्र वासलेप गुलाबजल अत्तर नारेल इग्यारे  
नवनालीकेकलस ॥ ९ रकेत्री तसला आरसी मंगलदीपक घी अंगीसमोसरण थाप  
नामों रोकनाणा ८१) ज्ञानपूजा नारेल समेत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसैं जाणनी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी बडी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणामी करो, तास धरी उर ध्यान ॥  
अरिहंतपद पूजा करो, निज शक्ति प्रमाण ॥१॥ काव्य ॥ षष्पन्न  
सन्नाण महोमयाणं, सप्पामि हेरा सणसंठियाणं ॥ सहेसणाणं  
द्विय सल्लगाणं, नमो श होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमो नंत संत  
प्रमोद प्रदानं, प्रथानाय ज्ञव्यात्मने ज्ञास्वताय ॥ थया जेइना  
ध्यानथो सौख्यजाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ क  
र्या कर्म डुममर्म चक्रचूर जेणें, जला ज्ञव्य नवपद ध्यानेन तेणें  
॥ करी पूजना ज्ञव्य ज्ञावे त्रिकाले, सदा वासियो आत्मा तेण  
कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदये करीनै, दिये देसना ज्ञव्य  
ने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापामिहारे समेता, सुरेसैं नरेसैं स्त  
व्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कर्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा, ज्ञवोप  
अदी च्यार ठै जे विलग्गा ॥ जगत्पंचकड्याणके सुख पांमै, नमो  
तेह तीर्थकरा मोहकामै ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीर्थपति अरिहा नमुं,  
घरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वर  
वीरो जी ॥ ती० ॥ उल्लाखो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान ज्ञासन सर्व  
ज्ञाव प्रकासता, निज शुद्ध अक्ष आत्म ज्ञावे चरण थिरता वास



ता ॥ जिन नांमकर्म प्रज्ञाव अतिसय प्रातिहारज सोजता, जगजंतु  
 करुणावंत जगवंत जविकजनने थोजता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सी  
 मंधर साहिव आगे ॥ ए देसी ॥ तीजे जव वर आनक तप कर, जि  
 न बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंडै पूजित जे जिन, कीजे तास प्र  
 णाम रे जविका सिद्धक पद वंदो रे ॥ ज० ॥ जिम चिरकालै न  
 दो रे ॥ ज० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ ज० ॥ रत्नत्रयीनो वंदो रे  
 ॥ ज० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ ज० सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जे  
 हने होय कड्याणक दिवसे, नरके पिण उजवाळूं ॥ सकल अधि  
 क गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अध टाळूं रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्न जपना, जोग करम खिण जांणी ॥ ले  
 दीक्षा सिद्धा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 ९ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्प्रवाह ॥ उ  
 मा एहवी जेहने ठाजै, ते जिन नमिये उच्चाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥  
 १० ॥ आठ प्रातीहारज जसु ठाजै, पेंत्रीस गुणयुत वाणी ॥ जे प्रतिब  
 धि करे जगजनने, ते जिन नमिये उच्चाह रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ११ ॥  
 ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो अको, दबह गुण पर्यायै रे ॥ जेद छेद  
 करी आतमा, अरिहंतरूपी आयै रे ॥ १२ ॥ वीर जिणोसर उपदिसै, सां  
 जदज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्याने आतमा, रुद्धि मिले सब  
 आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ उँ ह्रीं श्री परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान  
 शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धक्राय अष्टद्वयं  
 यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अ  
 शुभ करम दूरै टले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाण  
 माणंद रमादयाणं, नमोऽणंत चउक्याणं ॥ सम्मग्न कम्मस्कयका

रगाणां, जन्मजरा दुःख निवारणां ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खयः  
पार पांम्या, जरा जन्म मरणादि जय जेण वाम्या ॥ निरावरण  
जे आत्मरूपे प्रसिद्धा, थया पार पांमी सदा सिद्धुद्धा ॥ १५ ॥ त्रि  
जागोने देहावगाहात्मदेसा, रद्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा ॥ सदानंत  
सौख्याश्रिताज्योतिरूपा, अनावाधअपुनर्नवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥  
॥ चाल ॥ सकल कर्ममल कय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अ  
व्यावाध प्रचुतामई, आतम संपत जूपो जी ॥ उद्धालो ॥ जे जूप  
आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणे करी ॥ स्वद्वयक्षेत्र स्वका  
लज्ञावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वज्ञाव गुणपर्याय परणति, सि  
द्धसाधन परजणी, मुनिराज मानसरदंस समवरु, नमो सिद्ध महा  
गुणी ॥ १७ ॥ ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिजाग  
विसेस ॥ अवगाइन लही जे शिव पुदता, सिद्ध नमो ते असेस रे  
॥ १८ ॥ ज० ॥ पूरव प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग  
॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ ज० ॥  
॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिद्धाने ऊपर, जोयण एक लो  
कंत ॥ सादि अनंत तिहां धिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥  
॥ २० ॥ ज० ॥ जाणै पिण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम  
गुण जास ॥ उपमा विण नांणी जवमांहे, ते सिद्ध दिउ उद्धास  
रे ॥ ज० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जमु अनुपम,  
विरसी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध स  
हज समाधि रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वज्ञाव  
जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गु  
ण खाणो रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ उँ ॥ ह्रीं इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ तृतीय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ द्विव आचारज पदनणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

हतिमर दूरै हरै, सूऊँ जाव असेप ॥ १ ॥ काव्य ॥ सूरीणदूरीकव  
 कुग्गहाणं, नमो२सरिसमप्पहाणं ॥ सद्देसणा दाणसमाचराणं, अ  
 स्कंरुवत्तीसगुणाचराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्वताजा, जिनेंझग  
 में प्रौढ साम्राज्यजाजा ॥ षट्त्वर्गवर्गित गुणै शोभमाना, पंचाचारने पा  
 लवे सावधाना ॥ २ ॥ ऋविप्राणिने देशना देशकालै, सदाअप्रमत्ता यथा  
 सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकळपा, जगत्ते चिरंजीवज्यो  
 शुद्धजळपा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणवत्तीसे  
 धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परजावे निकामो जी उल्लासो  
 ॥ निकाम निरमल शुद्ध चिदधन, साध्य निज निरधारथी ॥ वर  
 ज्ञान दरसन चरण बोरज, साधना व्यापारथी ॥ ऋविजीवबोधक  
 तत्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संवर समाधी गत ऊपाधी, ड  
 विधत पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पाळै,  
 मारग जाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने या  
 चो रे ॥ ऋण ॥ २६ ॥ सि० ॥ वर वत्तीसगुणैकरि सोजै, युगप्रधान  
 जगदीवो ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥  
 ऋ० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम उवएसे, नहि विकथा  
 न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमिये, अकलुस अमल अमाय रे  
 ऋ० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पमिचो  
 यण वलि जनने ॥ पटधारी गह्युंज आचारज, ते मान्या मुनिम  
 नने रे ॥ ऋ० ॥ २९ ॥ सि० ॥ अत्यमिये जिन सूरज केवल, वंदी  
 जे जगदीवो ॥ ऋवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो  
 रे ॥ ऋण ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज जला, महामं  
 त्र शुभ्र ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे  
 ॥ वी० ॥ ३१ ॥ नै ह्रीं आचार्यपदे अष्ट इव्यं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चोथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोभित गात्र ॥

उवझायपद अरचियै, अनुन्नवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुतत्प्र  
 वित्यारणतप्पराणं, नमो२वायगकुंजराणं ॥ गणस्ससंधारणसायरा  
 णं, सव्वप्पणावज्जियमञ्जराणं ॥ १ ॥ नही सूरि पिण सूरिगुणने सु  
 हाया, नमूं वाचकात्यक्त भदमोहमाया ॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदा  
 ने, जिके सावधाने निरुद्धाज्जिधाने ॥ २ ॥ धरै पंचनेवर्गवर्गितगु  
 णौघां, प्रवादिद्विपोष्ठेदनेतुल्यसिंघा ॥ गुणीगद्यसंधारणोस्थंजपूता,  
 उपाध्यायतेवंदियेचित्प्रज्ञता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ,  
 अज्जव मद्दवजुत्ताजी ॥ सच्चंसोयंअकिंचणां, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥  
 उल्लावो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुत्तगुत्ता, सुमति सुमता गुज्जधरा ॥ स्या  
 द्वादवादं तत्वसाधक, आत्मपरविज्जंजनकरा ॥ ज्वज्जीरुसाधनधी  
 रसासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धंतवायनदानसमरथ, नमोपाठ  
 कपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशंअंगसिद्धाय करे जे, पारगधारग  
 तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवझाय उल्लास रे ॥  
 ज्ञ० ॥ ३४ ॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दानविज्ञागे, आचारज उवझाय ॥  
 ज्वत्रिएहै जे लहै शिवसंपद, नमियै ते सुपसाय रे ॥ ज्ञ० ॥ ३५ ॥ सि०  
 ॥ मुखशिष्यनीपायेजेप्रज्ञ, पाहणने पल्लवआणें ॥ ते उवझाय स  
 कलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजाणें रे ॥ ज्ञ० ॥ ३६ ॥ सि० ॥ रा  
 जकुमर सरिखा गणचित्तक, आचारजपद योग, ते उवझाय सदा ते  
 नमतां, नावै ज्वज्जय सोग रे ॥ ज्ञ० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ वावनाचंद  
 नरस समवयणें, अहितताप सवि टालें ॥ ते उवझाय नमिजे जे  
 वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ ज्ञ० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥  
 ज्ञेपसिद्धायै रत सदा, द्वादस अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते  
 आतमा, जगबंधव जगत्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीपा  
 ठकपदे अष्ट इव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अथ पांचमी साधूपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमारग साधनज्ञणी, सावधान थया जेह ॥

ते मुनिवरपद वंदता, निरमल आये देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूण स  
 साहियसंजमाणं, नमोश्शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणंसमाहियाणं,  
 मुणीणमाणंदपयठिआणं ॥ केरसेवनासूरिवायगगणीनी, कंठवर्णना  
 तेहनीसीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुप्ता, त्रिगुप्तैनहाकाम  
 जोगेषुलिता ॥ ४१ ॥ वलीवाह्यअच्यंतैरग्रंअटाली, हुंमुक्तिनेवो  
 गचारित्रपाली शुज्जष्टांगयोगैरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पा  
 प टाली ॥ ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिने, निक्का  
 मो निस्संगी जी ॥ जवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी  
 जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा,  
 काजसग्गमुज्जा धीर आसन ध्यान अज्यासी सदा ॥ तप तैज दीपै  
 कर्म जीपै नैव ठीपै परजणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिज्जुवन प्र  
 णमो हितजणी ॥ ४३ ॥ ढाल ॥ जिम तरुफूळै जमरो वेस, पीमा  
 तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय  
 रे ॥ ज्ञ० ॥ ४४ ॥ सि० ॥ पांचंडीने जे नित जीपे, षट्कवा बंधु  
 प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधै, वंदू दीनदयाल रे ॥ ज्ञ० ॥  
 ४५ ॥ सि० ॥ अठारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार च  
 रित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजै जनम पवित्र रे ॥ ज्ञ०  
 सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्त जे पाले, वारे विध तपसूरा ॥ ए  
 हवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरब पुन्य अंकूरा रे ॥ ज्ञ० ॥ ४७ ॥  
 सि० ॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढतै वानै ॥ संजम  
 खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमानै रे ॥ ज्ञ० ॥ ४८ ॥ सि०  
 ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरषै नवि सोचै रे ॥ साधु सु  
 धा ते आतमा, स्युं मुंनै स्युं लोचै रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ उँ हँ ॥  
 साधुपंद अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छठी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर ज्ञापित शुद्ध नर, तत्त्वज्ञानी परतीत ॥

ते सम्यग्दर्शनं सदा, आदरियै शुभ्र रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिष्णुः  
 ततत्तेरुदलक्षणस्त, नमो२ निम्नलक्षणास्त ॥ मिष्ठतनासाइतमु  
 गमस्त, मूलस्तसलधम्ममहाडुमस्त ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिष्ठया,  
 टलेजेअनादीअठैजेकुपठया ॥ जिनोकैहुइंसहजथीशुद्धध्यानं, कहि  
 वेदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि  
 चित्रंनवारणयकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमैक्यतेहहोवे, तिहांआपरूपैस  
 दाआप्रजोवै॥५१॥ढाल॥सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरू  
 पी जी॥जसु निरधार स्वजाव ठै, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥  
 जे अनूप अद्दा धर्म प्रगटै सखल पर ईहा टले, निज शुद्ध सत्ता जाव प्रग  
 टै अनुभव करुणा उठलै॥बहुमान परणित वस्तु तत्वे अदव सुख कारण  
 पणै, निज साध्य दृष्टै सख करणी तत्वता संपति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध  
 देव-गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम॥जेह पांमीजै तेह नमीजै,  
 सम्यग्दर्शन नाम रे ॥ ज० ॥ ५३ ॥ सि० ॥ मल उपशम क्य उ  
 पशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अजंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजै,  
 जिनधरमै दृढ रंग रे ॥ ज० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश  
 म लहीजै, क्यउपसमीय असंख ॥ एक वार क्यक ते सम्यक्,  
 दर्शन नमीइ असंख रे ॥ ज० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नाण प्र  
 माण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवाण न जे  
 विण लहिये, समकित दरसन बलिउ रे ॥ ज० ॥ ५६ ॥ सि० ॥  
 समसठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञान चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्श  
 न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ ज० ॥ ५७ ॥ सि० ॥  
 ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुण, खयउपसम जे आवै रे ॥ दर्शन ते  
 हिज आतमा, स्युं होय नाम धरावै रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ उं ह्री  
 प० दर्शनपदे अष्ट इयं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अय-७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ इहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञानतो, सिद्धक तपमाद ॥ आ

राधीजै शुभ मनै, दिन२ अधिक उच्चाह ॥ १ ॥ काठ्य ॥ अन्नाण  
 सम्मोहतमोहरस्स, नमो२ नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सुवगा  
 रगस्स, सत्ताणसवत्थपयासगस्स ॥ होइजेहथीज्ञानशुभप्रबोधै, यथा  
 वर्णनासैविचित्राविवोधै ॥ तिणैजाणीयेवस्तुपट्ठव्यज्ञावा, नहोवै  
 विकञ्चानिजेञ्चास्वज्ञावा ॥ ५९ ॥ होइपंचमत्यादिसुग्यानजेवै, गुरु  
 पासथीयोग्यतातेहवेदइं ॥ वलीजेयहेयाउपादेयरूपै, लहैविचमांजे  
 मध्यांनेप्रदीपै ॥ ६० ॥ ढाल ॥ जठ्य नलो गुण ज्ञानने, स्वपरप्र  
 काशक ज्ञावै जी ॥ परयाय धरम अनंतता, जेदाजेद स्वज्ञावै जी  
 ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधवात्त विदात्तता,  
 मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंठना ॥ स्यात्तावत्त  
 गी तत्त्वरंगी प्रथम जेद अजेदता, सवि कट्य ने अधिकट्य वस्तु  
 सकल संसय जेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ जक अजक न जे विण ल  
 हिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञान  
 ते सकल आधार रे ॥ ज० ॥ ६२ ॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञान ने पीठे अहिंसा,  
 श्रीसिद्धातै ज्ञारख्युं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञान स निंदो, ज्ञानीये सिवसुख चा  
 ख्युं रे ॥ ज० ॥ ६३ ॥ सि० ॥ सकल क्रिदानुं मूल ते अध्या, तेहनुं मूल  
 जे कहिये ॥ तेह ज्ञान नित ७ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये  
 रे ॥ ज० ॥ ६४ ॥ सि० ॥ पांचज्ञानमाहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाश  
 क तेह ॥ दीपकपर त्रिभुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह  
 रे ॥ ज० ॥ ६५ ॥ सि० ॥ लोक ऊरथ अध तिर्यग्ज्योतिष, वैमानि  
 क ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुज्ज शुद्धी  
 रे ॥ ज० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म वै, क्ये  
 उपशम तसु आये रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता  
 जायै रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ नै ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट ड्यं यजा  
 महे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठमी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी ऊमेद ॥ पूजतं

अनुजवरस मिले, पातिक होय उठेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराहिया

खंतिअसक्कियस्स, ननोऽसंजमवीरिअस्स ॥ सप्रावणासंगविवट्टिअ

स्स, निघाणादाणाइसमुज्जयस्स ॥ वलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निरा

संसताहाररोधेप्रसंगै ॥ ज्जवांजोभिसंतारणेयानतुल्यं, धरुंतेहचारित्र

अप्राप्तमल्लं ॥ ६७ ॥ होइजासमहिमाअकीरंकराजा, वलिहादशां

गीज्जणीहोइताजा ॥ वलिपापरूपोपिनिप्पापअयै, अइसिद्धेकर्मने

पारजायै ॥ ६८ ॥ चाल ॥ चारित्रगुण वलिश् नमो, तत्वरमण

जसु मूलोजी ॥ पररमणीयपणो टलै, सकल सिद्धिअनुकूलो ज्जो ॥

उल्लाखो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व धिरता दममयी, शुचि

परम खंति मुनीइ संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायकादिक जे

द धरंमै यथाख्यातै पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्वल काम

कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, अही

यतिने अजिरांम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो, कीजै तास प्रणाम

रे ॥ ज० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण पर जे पदखंरु सुख ठंठी, चक्र

वर्त पिण वरिंठ, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांहि धरि

ठ रे ॥ ज० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद

नरिंद ॥ असरण सरण चरण ते वारू, वरिंठ ज्ञान आनंद रे ॥

ज० ॥ ७३ ॥ सि० ॥ धारमास पर्यायै तेहनें, अनुत्तर सुखअतिक्रमिये ॥

शुक्ल अजिजात्य ते ऊपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ ज० ॥ ७४

॥ सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र

नांन निरुक्ते ज्ञाख्युं, ते वंदू गुणगेइ रे ॥ ज० ॥ ७५ ॥ सि० ॥

॥ ढाल ॥ जांशि चारित्र ते आतमा, निजस्वजावमांहि रमतो रे

॥ लेस्या शुद्ध अलंकरयो, मोइवने नवि जमतो रे ॥ वी० ॥ ७६

॥ उं ह्रीं प० चारित्रपदे अष्ट इयं यजामहे स्वाहाः ॥



॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ठ प्रति जालवा, परतिख अगनि समांन  
 ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यांन ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्म  
 हुमोन्मूलनकुंजरस्त, नमोऽतिवतवोवरस्त ॥ अणोगलदीणनिबंधण  
 स्त, दुसङ्गाअत्याणयसाहणस्त ॥ ७७ ॥ इयनवपयसिद्धिंलद्धि, विज्ञास  
 मिद्धं, पयमियसरवगंहीतिरेहसमगं ॥ दिसिवइसुरसारं खोणिपीढाव  
 यारं, तिजयविजयचक्रंसिद्धचक्रंनमामि ॥ ७८ ॥ त्रिकालिकपणें कर्म  
 कषाय टालै, निकाचितपणें बाधिया तेह वालै ॥ कह्यो तेह तप  
 बाह्य अर्च्यंतर दु जेदें, क्कमायुक्ति निहेत दुध्वान ठेदें ॥ ७९ ॥ होइं  
 जास महिमायकी लब्धि सिद्धि, अबांठकपणें कर्म आवरण शुद्धि  
 ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, होइं सिद्ध सीमंतनी जिम संके  
 ते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावै परम आनंद पावै, नयज्जव सिव  
 जावै देव नर ज्ञवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावै सिद्धचक्र प्रज्ञा  
 वै, सवि डुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥ ढाल ॥ इष्टा  
 रोधन तप नमो, बाह्य अर्च्यंतर जेदें जी ॥ आतम सत्ता एकत्व  
 ना, पर परणति उहेदें जी ॥ १ ॥ उद्धालो ॥ उहेद कर्म अनादि  
 संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुज्ज योग संग आहार टाली ज्ञाव अ  
 क्रियता करै ॥ अंतरमुहूरत तत्व साधै सर्व संवरता करी, निज आ  
 त्मसत्ता प्रगट ज्ञावै करी तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥ ढाल ॥ इम न  
 वपद गुणमंरुलें, चउ निक्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, स  
 न्यग्ज्ञानें जाणें जी ॥ उद्धालो ॥ निरधारसेती गुणें गुणानो करइजे  
 बहुमानें ए, जसु करण ईहा तत्वरमणें थायै निरमल ध्यांन ए ॥  
 इम शुद्धसत्ता ज्ञलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरै, अकथ अनंत म  
 हंत चिदधन परम आनंदता वरै ॥ ८३ ॥ कलश ॥ इम सयल सुख  
 कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लद्धिविज्ञा सिद्धि मंदिर ज्ञ  
 विक पूजो मन रली ॥ उवज्ञाय वर श्रीरजसाह ज्ञानधर्मसु रा

जंता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद्र सुशोभता ॥८४॥ ढाल ॥  
 जाणता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते जवमुगति जिनंद ॥ जेह आदरे कर्म  
 खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ ज० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ कर्म नि  
 काचितं पिण कय जायै, कमासहित जे करता, ते तप नमियै ते  
 हे दीपावै, जिनशाशन उजमंता रे ॥ ज० ८६ ॥ सि० ॥ आमोसही  
 पमुहा बहु लद्धि, होवै जास प्रजावै ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्र  
 गटे, नमियै ते तप जावै रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव  
 सुख मोटुं सुरनरवर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो  
 वंदू, शमंमकरंद अमूल रे ॥ ज० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमां  
 हि पहलो मंगल, वर्षावियो जे ग्रंथै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित न  
 मियै, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ ज० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद  
 शुणतो तिहांलीनो, दुउ तनमय श्रीपाल ॥ सुजल विलातै चोप्र  
 खंनै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इ  
 चारोथन संवरी, परणित समता योगै रे ॥ तप ते एहिज आतमा,  
 वरते निजगुण जोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो,  
 जाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमजावै थिर हूउ, परजावै मत  
 राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांहे रुद्धि वा  
 खी रे ॥ तिम नवपद रुद्धि जाणज्यो, आतमराम वै साखी रे ॥  
 वी० ॥ ९३ ॥ योग असंख्य वै जिन कह्या, नवपद मुख्यते जाणो रे  
 ॥ ए इतणै अविलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ९४ ॥ ढाल  
 बारमी एहवी, चोथै खंने पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोश्य  
 नरही अघूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ नुं हौ प० तपपदे अष्ट इव्यं  
 यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसढालण विधी ॥

॥ नव स्याधिया केसरसं तिलक करे, हांयके कांकणदोरा बांधे, दहणे हायमें

साधिया करै, अरिहंत पदमें चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके नव कलस ढाले फेर केसरकी टीकी देकर चरणो पर वासक्षेप चढावे यथाक्रम अष्ट द्रव्य चढावै ॥ सिद्धपदमें गहूं लालरंगकी धजागोटा चढावे, आचार्यपदमें चिणोकी दाल पीले रंगकी धजागोटा, उपाध्यायपदमें मूंग, साधूपदमें उडद, वाकी च्यारपद में चावल चंदनलेपित गोटा चढावे, श्वेतधजा चेत्रीपूनम आसोजीपूनम वंगरोमें करे नमो सिद्धाणं इत्यादि नवपदो के न्यारेर कह के चढावे, गटे मुजव पटे पर नव साधिया कर वीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजव यथाक्रम चढावै ॥

॥ ओली करणेवाला वासक्षेप पूजा करे तो एकेक पूजामें चालकी गाथा तथा उल्लाले तक गाय कर अरिहंतपदे वासक्षेपं यजामहे कहणा. एसें नवपदो की चाल ओर उल्लाला पद वासक्षेप चढवाणा ॥

॥ अथ दादागुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्हवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल दुष्कृत दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंछित दायकं, कुशल सूरि गुरोश्ररणां यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं यजामहे ॥ १ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसरवारिण, निखल जाड्यरुजातं पहारिणा ॥ सकल ० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनकु ॥ २ ॥ अथ पूष्पपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हृत् प्रदृपद वृंदकै ॥ सकल मं ० ॥ ॐ ह्रीं श्री पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंडुल कैरित निर्मलै, प्रवर मौक्तिक पुंज वडुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल ० ॥ ॐ ह्रीं श्री ० अक्षतं यजामहे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहुविधैश्वरुर्निर्वटकेयकैः, प्रवर मोदकपुंज सुखर्जकै ॥ सकल मं ० ॥ ॐ ह्रीं श्री नैवद्यं यजामहे ॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकै, विमल कंचननाजन संस्थितै ॥ सकल मं ० ॥ ॐ ह्रीं श्री श्रीजि ० दीपं यजामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगजै, प्रसरिताखिल दिक्षुसुधुन्नकः ॥ सकल मं ० ॥ ॐ ह्रीं श्री ० धूपं यजामहे ॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पनश मोच सदाफल कर्कटै, सुसुखदैः

किल श्रीफल चिर्जटै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं फलं यजामहे  
 स्वाहाः ॥ ७ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, श्रुप्रदीप  
 क धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजि० अर्घं यजा  
 महे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सदगुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरी  
 जै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहग सब  
 दूर हरीजै॥जै०॥१॥बीजी बीज पंती धारा, जयवारण तूही सुख  
 कारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, बूर हरौ सब दुर्म  
 ति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चौथी सुगलपूत जियदायक, सुरवर हुक  
 म धरे ज्युं पांयक॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिण तारी, संघ स  
 कलनो संकट वारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ ठठी थांनोवज्ज विदारी, विद्या  
 पोथी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साथी,  
 सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती  
 कीजै, मनवठित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनलाज खर  
 तर गणधारी, सदगुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ९ ॥  
 इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णमं ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसे दिन १० इस सूतक ॥ पुत्री जन्म हो  
 नेसे दिन १२ वार सूतक ॥ उर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके  
 एक मासको सूतक ॥ पुत्र होके मरण पाये, तो दिन १ एक सूतक ॥  
 परदेशे मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, जैप, घोड़ी,  
 सांड, घरमांहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कले  
 घर घर बाहिर लड़ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी  
 नेषायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ नर जितना महिनाको गर्भ गिरे, तितने दिन सूतक ॥  
 अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये ११ बार  
 दिन देवपूजा न करे. नर मृतकके सूतक में घरका जो  
 मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥  
 नर अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. नर जो मृत  
 कको बुवा होवे, सो १४ चौबीस प्रहर पक्कमण न करे ॥ जो  
 सदाका अखंड नियम होवे, तो समताजाव रख के संवरपणामें  
 रहे. परंतु मुखसे नवकार मंत्रकाजी उच्चारण करे नहिं. स्थापना  
 जीके हाथ लगावे नहिं. नर जो मृतकको बुवा न हो तो मात्र  
 आठ प्रहर पक्कमण न करे ॥

नैलके जब बच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीठें दूध पीणो  
 कट्ये. गायके बच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीठें दूध पीणो कट्ये.  
 बकरीको दूध ८ आठ दिन पीठें पीणो कट्ये ॥

१ रुतुवती स्त्री, चार दिन ज्ञानादिकको न बुवे. २ चार दिन  
 प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक का  
 रणें तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीको रक्त चलता दीसे, जिसका  
 विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीठें  
 स्थापना पुस्तक बुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा  
 न करे, साधुको पक्कमण. ऋतुवती तपस्या करे, सो तो सफल  
 होय. परंतु रुतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न  
 होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा हे. जिसके घरमें जन्म मरणका सू  
 तक होवे, उहां ११ बार दिन तक साधु आहार पाणी न बढ़ावे.  
 सूतकवालेका घरका जलसें तथा अग्निसें १२ बारा दिन तक देव  
 पूजा न करे. निशीथसूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूत  
 कवालेका घर दुर्गन्धनिक कहा हे.

गायके मूत्रमें २४ चोवीस प्रहर पीठें, जैपके मूत्रमें १६ सोल प्रहर पीठें, गाफर, गधेरा, घोलीके मूत्रमें ७ आठ प्रहर पीठें, भर नारीके मूत्रमें ४ चार प्रहर पीठें, समूर्द्धिम जीव उपजे इत्पादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा हे. विशेष विचार शास्त्रातरसें जानना ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अब असधायकी विमत कहते हे ॥

१ बूंझारी बने, तासोभ असधाय जाणवी.

२ लक्ष्मिस्वामां राती ठावा तथा अरण्य संबंधी रज उने, निरंतर बने तो दिन ३ तीन उपरांत असधाय.

३ मेह परसते बुद्बुदाकारी शोष, तो दिन ३ तीन उपरांत असधाय.

४ नाना ठांटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे अमे न रहे तो असधाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, जांलगे होय, तां सीम असधाय. अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असधाय.

६ बुद्बुदा रहित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असधाय होय.

७ चेत्र शुद्धि पांचमहंती पदिवा लगे असधाय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे, अचित्त रजउल्लावणं काष्ठस्तग्ग करुं? इत्वं. अचित्त रज उल्लावणं करेमि काष्ठस्तग्गं. पठी लोगस्त उद्योपगरेनां चार काष्ठस्तग्गं करवा.

८ आशोशुद्धि पांचमने दिने द्विप्रहरत्र आरंज्जिने पदिवा लगे असधाय.

९ दश विगृह्णें प्रहर १ एक असधाय.

१० अकाले गानतां प्रहर २ द्वे सीम असधाय.

- ११ अकालें बीज उब्कापात होय तो प्रहर ? असञ्चाय,  
१२ अजवालीये पहेँ समी सांज, परुवो, बीज, त्रीज,  
इयारी असञ्चाय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.  
१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर ? एक असञ्चाय.  
१४ जूमिकेंपें प्रहर ७ आठ असञ्चाय,  
१५ चंडग्रहणें प्रहर १९ वार उत्कृष्टें, अमे जघन्यें प्रहर  
७ आठ असञ्चाय.  
१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर  
१२ वार असञ्चाय.  
१७ आसाढ चउमासा पम्किमण वायाडूती प्रहर १२  
वार असञ्जाय.  
१८ कार्तिक चउमासे पण प्रतिक्रिया पीठें पन्निवा लगे प्र  
हर वार असञ्जाय.  
१९ मांहोमांहे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असञ्जाय.  
२० कलह युद्ध जां लगे हुवे, तां लगे असञ्जाय.  
२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुषने कलह हुवे त्यांपर्यंत असञ्जाय.  
२२ फागण चउमासे रजपर्वी ज्यां लगे रज उरु, अने उप  
शमे नहिं, तां लगे असञ्जाय.  
२३ दंरुको मार परुते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी  
असञ्जाय.  
२४ परचक्रादि जय उपजे, अने जां लगे उपशमे नहिं, तां  
लगे सूत्र जणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥  
२५ नगरमांहे प्रधानं पुरुष विहमे, तो अहोरात्र असञ्जाय.  
२६ उपाश्रयथी सात घरमांहे जो कोइ पुरुष विहमे, तो  
अहोरात्र असञ्जाय.

२७ सो हाथमाहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो ता अणजखे एढले ज्या पर्यंत मृतककूं न उठावे, त्यां सीम असव्हाय.

२८ तिर्यचना रुधिर पन्वाथी हाथ १०० सो माहे अदो-  
रात्र असव्हाय.

२९ मनुष्यना रुधिर पन्वाथी हाथ १०० सो माहे अदो-  
रात्र असव्हाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, हांत, दाढ पन्ने हाथ १०० सो माहे  
सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

३१ खीने रतु आवे अके दिन ३ त्रश असज्जाय.

३२ आर्जा नक्षत्र आव्या पीठें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे,  
वीजे, मेह वरसे, तो असज्जाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ स्यात असव्हाय. अने दीकरीने प्रस  
वे दिन ८ आठ असज्जाय.

३४ कालग्रहण विणकी जखवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ वार  
असज्जाय.

३५ वैशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्तिकवदि १, मागशि  
खवदि १. ए चार दिवसें सदैव असज्जाय अने सूत्रनी असज्जाय  
तो प्रहर १२ वार सूधी जाणवी.

॥ अब साधु ओर श्रावककों कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥

॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राव प्रहर १२, घीस प्रहर २०, गठी  
प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीबनां प्रहर २४,  
घोमवनां प्रहर ४, तट्टयां वना प्रहर ४, पूनी प्रहर ८, रोटी प्रहर  
४, तथा ६. वाजरा ऊष्ण प्रहर १२, जवार ऊष्ण प्रहर १२, वा  
जरीकी खीचनी प्रहर ८, जवारकी खीचनी प्रहर ८, चावलकी



अमुक पू० आ० बलि० नदय० स्वाहा नैब्रह्मणेनमः ॥ उर्ध्वदिशि०  
 ॥ ए ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ नैनागाय सायु० सवा० सप०  
 अस्मिन्० दक्षि० अमुकन० अमुकचैत्यै अमुकपू० आ० बलि०  
 नदय० स्वाहा नैनागायनमः ॥ १० ॥ अधोदिशि अष्टद्व्य चढावै ॥  
 ऊपर कमूमल वस्त्र बांधै मौलीसे पीठै ॥ नैदशदिग्पालायनमः  
 ॥ एसा कहके यथाशक्ति रोकमद्व्य समेत नागरवेलका पांन आदि  
 सर्व द्व्य चढावै, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक धरे अथवा एक  
 दीपक आगै धरै ॥ इति दस दिग्पाल पूजनविधिः ॥

॥ अथ नव ब्रह्म पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ नैनमोआदित्याय सायुधाय सवाहना  
 य सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुक  
 चैत्यै अमुकपूजामहोत्सवे आगच्छ २ बलिपूजांगृहाण २ नदयमच्युदयं  
 कुरु २ अत्रपीठेतिष्ठ २ स्वाहा नैसूर्यायनमः ॥ (एसापढकेजलचंदनादि  
 अष्टद्व्यचढावै ) ॥ १ ॥ अथ चंद्रपूजा ॥ नैचंद्राय सायु० सवा० स  
 प० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० बलि १०  
 नदय० अष्टपीठेति० स्वाहा नैचंद्रायनमः ॥ २ ॥ अथ मंगल पूजा ॥

नैनमोन्नोमाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमु०  
 अमुकपू० आ० बलि० अत्रपीठे नदय० स्वाहाः नैन्नोमायनमः ३ ॥  
 अथ बुधपूजा ॥ नैनमोबुधाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अ  
 मुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० बलि० नदयम० अत्रपी०  
 स्वाहा नैबुधायनमः ॥ ४ ॥ अष्ट बृहस्पति पूजा ॥ नैनमोबृहस्पतये  
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुक  
 पूजाम० आ० बलि० अत्रपी० नदय० स्वाहाः नै बृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥  
 अथ शुक्र पूजा ॥ नैनमोशुक्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जंबू  
 द्वा० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० बलिगृ० अत्र

पाँठे उदयम० उँशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनि पूजा ॥

उँनमोशनिश्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन०  
अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ१ उदयम०  
स्वाहा उँशनैश्रायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पूजा ॥ उँन

मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै  
त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० उदयम० उँराहवेनमः ॥ ८ ॥

अथ केतू पूजा ॥ उँनमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मि

न्जं० द० अमुकनग० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे  
तिष्ठ२ उदय० स्वाहा ए उँकेतवेनमः ॥ इति ॥ (इसी मुजब ऊपर लाल

वस्त्र मोलीसे बांधे पीठे नागरखेलके पान आदि अष्टङ्ग्य रोकन इव्य

समेत सांभने जेट धरे फेर एसा कहे ॥ उँनवग्रहायनमः ॥ च्यारों तरफ

नवदीपक वा एक दीपक सांभने धरे इति नवग्रह थापन पूजनविधिः

॥ बाये तरफ मंरुलके नवग्रहकी थापना करे दहिणे वाजू दसदिग्पाल

की थापना करे ॥ जिस महोच्चवमें इनोकी पूजा कराणी उस महो

च्चवका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसे सीखणी ॥ शुद्ध जल

सें पवित्रपणे बणायाजया सधवस्त्रीके या पुरपके हाथसे पांचरंग

के धानके वाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा

मालपूवा पांचरंगके लहु इत्यादि खाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें

सब इव्य एकठे करै उँर घृत खौर अत्तर गुलाबजल पंचरंगेफूल

यहजी वाकलोंमें मिलावे पीठे गुरु ३ तीन वार मंत्रके तीन बेर

चाकुलो पर वासक्रेप माले ) अथ वासक्रेप मंत्र ॥ उँहांहीसर्वोप

र्वविंस्वररुश्रस्वाहा उँणमोअरिहंताणं उँणमोसिद्धाणं उँणमोआ

रिआणं उँणमोउवज्ञायाणं उँणमोलोएसवसाहूणं उँणमोआगास

गामीणं उँणमोचारणलदीणं जेइमे किन्नर किंपुरस महोरग गरुड

गंधर्व जस्क रक्कस पिशाच चूअ नाइणप्पन्नइत्त जिणघरनिवासि

णा सन्निधियाय तेसवेविलेवणं ध्रुवपुष्पफलवडवसंणाहिं वलिपदि  
 छंता तुठिकराज्वंतु पुठिकरा संतिकराज्वंतु सबंजणंकुर्वंतु सबजि  
 णाणं संहणप्पजावन्न पसन्नजावतणे सबत्थरस्कंतुकुर्वंतु सबडुरियाणी  
 नासंतु सवाशिवमुवसमंतु सतितुठिपुठिसिवसत्थयणकारिणोज्वंतु  
 स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासंकेपकूं मंत्रके बलवाकुलोमे  
 मालके सुद्ध करे ॥ पीठे आधा बलवाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके  
 वास्ते वस्त्रसें ढककर रखठोमे. आधा लेकर घरके तथा चैत्यके ऊपर  
 इग्यारे स्नात्रिवा शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके बाल खो  
 लकर बलवाकुल लेके पूर्वकी तरफ खना रहे, २ दूसरा केसरकी  
 कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चौथा अ्रेता, ५ पांचमा धूप  
 धाणा, ६ षष्ठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा  
 जलका कलश, १० दशमा बलवाकुलकी आली, ११ इग्यारमा मंग  
 लवाजित्र. इस तरे सब स्नात्रिये एकेक दिशाकी तरफ खना रहे.  
 जब गुरु शुभमंत्र उच्चारण करचूकै तब क्रमसें जल खंडन फूल वा  
 कुलादिक चढावै, चामरकरे, आरीसा दिखावै, वाजित्र बजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसो  
 स्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ ( एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ  
 बलवाकुल चढावै ) ( अशिकूशके सामने ) ॥ सदावह्निदिशा  
 नेता पावकोमेषवाहनः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥  
 ( एसा कह बाकुलादिड्य चढावै ) ( दक्षिणदिशाकी तरफ ) ॥  
 दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥  
 ( बलवाकुल चढावै वाजित्र बजावै ) ( नैरुतकूणकी तरफ ) ॥  
 यमापरांतरालोको नैरुतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥  
 ( अथ पश्चिमदिशि ) ॥ यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ ( अथ वायव्यकूण ) ॥ हरिणोयाहनयस्य  
 वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ ( अथ उत्तर दिशि )  
 ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रजुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥  
 ( ईशान कूण ) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविजुः संघस्य०  
 वलि० ॥ ८ ॥ ( अथ अधोदिशि ) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म  
 वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ ( अथ उर्ध्वदिसि ) ब्रह्मलोकवि  
 ज्ञोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि  
 ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि ह्युयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ ओर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ उँनमोईंशच पूर्वदिग्धिष्टायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र  
 नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणाईं अमु कन  
 गरे अमुकचैत्ये अमु क्मदोन्नवे सर्वोपद्वाहलिरक्षश् गच्छश् स्वाहा ॥  
 पूर्वदिशाकी तरफ उँईंशपनमः ॥ १ ॥ ( अग्नि कूण ) ॥ उँनमोअ  
 ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक०  
 सर्वोपद्वाहलिरक्षश् गच्छश् स्वाहा ॥ इति ॥ ( दक्षिणदिशि ) उँन  
 मोयमाय दक्षिणदिग्धिष्टायकाय महिपवाहनाय दंभुआयुधाय कृष्ण  
 मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्वाहलिरक्षश् गच्छश् स्वा  
 हा ॥ ३ ॥ इति ॥ ( नेरुतकूणे ) ॥ उँनमोनेरुताय खरुगहस्ताय  
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्वाहलिरक्षश् गच्छश् स्वा  
 हा ॥ ४ ॥ इति ॥ ( पश्चिमदिशि ) ॥ उँनमोवरुणाय पश्चिम  
 दिग्धिष्टायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु०  
 सर्वोपद्वाहलिरक्षश् गच्छश् स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ ( वायवकूणे ) ॥  
 उँनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु०  
 सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्वाहलिरक्षश् स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

( उत्तरदिशि ) ॥ नैनमोधनदाय उत्तरदिग्धिष्टायकाय नरवाहनाय  
गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाद्दलि० गच्छ१ स्वा  
हा ॥ ७ ॥ इति ॥ ( ईशाणकूपे ) नैनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय  
ईशानाधिपतये वृषजवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्द  
लि० गच्छ१ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ ( उर्ध्वलोके ) नैनमोब्रह्मणे रा  
जहंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्टायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्०  
अमु० सर्वोपद्रवाद्दलि० गच्छ० स्वाहा ॥ ९ ॥ इति ॥ ( अधोलोके )  
नैनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप०  
अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलि१ गच्छ२ स्वाहा ॥ १० ॥ ( इस  
तरे पढे बाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढै ॥ यथा ॥ शक्राद्या  
लोकपालादिशिविदिसिगता शुद्धसङ्घर्षशक्ताः आयातास्त्रात्रकाले क  
लुषहृत्कृते तीर्थनाथस्यज्जक्त्याः न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसु  
खाः स्वास्पदंसांप्रतंते, स्त्रात्रेपूजाभवाप्यस्वमतिकृतमुदोयांतुकड्याण  
ज्ञाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वंक्रम  
तंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि  
पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीठे यथाश  
क्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश  
दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्त्रात्रिधा मंत्रितजलसें स्नान  
करे ( जलमंत्र ) नै ह्रीं अमृतेअमृतोज्जवे अमृतवर्षणी अमृतंश्राव  
यश् स्वाहा ( इस मंत्रसें जलमंत्रे, पीठे ) नै ह्रीं अमलेविमले वि  
मलोज्जवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावावाअशुचिशु चिन्नवामिस्वाहा (इस  
मंत्रकों सातवेर पढता हुवा स्नान करे, पीठे ॥ नै ह्रीं आँ काँः॥ (सा  
त वेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीठे ॥ नै आँ ह्रीं काँ अर्हते

नमः ) इस मंत्रसे सात वेर गुरु पाससे केतर मंत्रायके तिलक करै. ( पीठै ) उँ ह्रीं अवतर २ सोमे २ कुरु २ वल्गु २ सुमणसे सो मणसे महुमहुरे उँकवलीकः कः स्वाहा ॥ ( इस मंत्रसे मोली मेंढल मरोनाफली मंत्रायके हाथके बांधै उँर जब मंमलजीके च्यारुं तरफ मोलीमेंढल बांधे सोनी इसी मंत्रसे मंत्रायके बांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरुके सामने हाथ जोरके बैठै तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा हे उससे तीन वेर पढके गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीठै तीन वेर नवकारमंत्रसे मंत्रके चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्नात्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंमलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवस्य कराणी चाहिये. पीठै मंमलजीमें अधिष्टायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावै अष्टङ्ग्य चढावै. पीठै चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढावै, अतर चढावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकङ्ग्य इत्यादि सर्वङ्ग्य ( उँक्षेत्रपालायनमः ) एसा बोलता हुवा चढावै. पीठै मंमलजीके दहणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी थापना करे, अकेक दिग्पालकी पूजा पढके जल चंदनादि सर्व ङ्ग्य चढावै. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढके ऊपर लालवस्त्र मोलीसे बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढाके दीपक करै. पीठै बाँधे तरफ नवग्रहके पट्टेकी थापना कर पूर्वोक्त काव्य पढके इसी मुजब पूजा करै. ) पीठै सर्व स्नात्रिया कुँ १० स्तुतीसे देववंदावै.

अदारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हैं ॥ पहली इरियावही पन्किमें च्यार नवकारका काउसग कर लागस्त कहे. नीचे बैठके दक्षिणागोना धरतीपर रख के नावागोना नमीभूत करके चैत्यवंदन करै

नमोऽनुषंगं० कहके अरिहंतचेऽयाणं० वंदणवत्ति० अन्ननु० ?  
 एक नवकारका काजसग्ग करै, नमोर्हत् सिद्धा० कहके यदंहीन  
 मनादेव शुईकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वंदण० अन्ननु० एक  
 नवकारका काजसग्ग इस शुईकी दुसरी गाथा कहे, पुक्क  
 रवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका काजसग्ग० शुईकी तीसरी  
 गाथा कहे, सिद्धाणंबुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका  
 काजसग्ग शुईकी ४थी गाथा कहे, पीठै वेठके नमोऽनुषंगं कहके खमा  
 हो के श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाजसग्गं वंदण  
 व० अन्ननु० ? नवकारका काजसग्ग कर० ॥ रोगशोगादिन्निर्दोषै रं  
 जितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ ( ततः  
 श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाजसग्गं० ? नवकारका काजसग्ग )  
 ॥ श्रीशांतिजिनत्तकाय ज्ञव्यायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांति  
 मपनीयते ६ ( ततः श्रीशुतदेवतानिमित्तं० ) सुवर्णशालनीदेयात्  
 द्वादशांगीजिनोन्नवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं ॥ ७ ॥ ( ततः श्री  
 शुवनदेवताआराधनार्थं० ) चतुर्वर्णायकीस्तुति ? गाथा कहे ॥ ( ततः  
 क्षेत्रदेवतानिमित्तं० ) यासांक्षेत्रगतास्संति ? गाथा कहे ॥ ९ ॥  
 ( ततः श्रीअंबिकादेवतानिमित्तं० ) अंबानिहितमिंबामे सिद्धबुद्धसम  
 न्विता सितोसिंहेस्थितागौरी वितनोतुसमीहितं ॥ १० ॥ ( ततः श्री  
 पद्मावतीदेवतानिमित्तं० ) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा कुडो  
 पडवतःसामां पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ ( ततः श्रीचक्रेश्वरीदे  
 वतानि० ) चंचश्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निजा चिरंचक्रेश्वरीदेवी  
 नंदतानिवज्राञ्जमां ॥ १२ ॥ ( ततः श्रीअनुष्ठादेवतानि० ) खन्नि  
 टककोदंरु वाणपाणिस्तमित्युतिः तुरंगगमनाञ्जुता कडयाणानिकरो  
 तुमे ॥ १३ ॥ ( ततः श्रीकुवेरदेवतानि० ) मथुरापुरीसुपार्श्व श्री  
 पार्श्वस्तूपरहका श्रीकुवेरानगरारूढा सुतांकावतुवोचयात् ॥ १४ ॥

( ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि ) ब्रह्मशांतिस्मार्पाया द्वापाया  
द्वीरसेवकः श्रोमत्सत्यपुरेतत्या येनकीर्तिःरुतानिजः ॥ १५ ॥

( ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि० ) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःस-  
दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ ( ततः श्रीशक्रा

दिसंमस्तदेवतानिमि० ) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः  
देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षत्वपायतः ॥ १७ ॥ ( ततः श्रीसिद्धायि

का श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्तको कान्तस्सगकर स्तुतिं  
कहे ) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापातु

चक्रेचापेपुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्त कहके वेठे चैत्यवं० नमोऽनु०  
जयवीरराय पर्यंत कहै ॥ इस तरै १८ स्तुतिसे देववांदण विधि।

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठा विधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मौली सूत्रकी वत्ती जगाके घृतका दी  
पक करै, इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखै ( पीठे ) सो

ने चांदी बगेरे के कलसमें अबोटजल जरके सोनवाणी करै, हाथमें  
कलसलेके सात नवकार गुणै ॥ उँ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुहश्

स्वाहा ॥ इस मंत्रसें सात बेर जलको मंत्रके मंडलजीके च्यारों तर  
फ धारा देवे, ऊपर जरा ठींटा देकर पवि करै, धूपखेवै ( पीठे )

नवतारी मौलीसूत्रका साहातीन आंटा मंडलजीके बाहर करदेवे,  
पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मौली तथा मंडल मरोमाफली चारुं तरफ

बाये ( पीठे ) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ उँ आँ ह्रीं श्री अर्द्धतेनमः ॥  
इस मंत्रसें मंत्रके मंडलके ऊपर केसरका ठींटा देवे ( ऊपर ) चा

वल्लोंको साश्रियो करै, टीकीदेवे, मंडलके अगामी साश्रिया चाव  
ल्लोंका वा नंधावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर जेट धरै ( पीठे )

केशरचंदन लेकर मंडलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन क  
रै ॥ ( पीठे ) वासुदेव पुष्प हाथमें लेके ॥ उँ जूगसीजूतधात्रीविधा



धारै नमः ॥ इस मंत्रसे सात वेर मंत्रके मंरुलचूमि तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरु वासकेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धत्पीठाय नमः ॥ इस मंत्रसे सात वेर मंत्रके मंरुलपीठकी पूजा करे (पीठै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन वेर मंरुलकों वधावे, नीचे चावलोंका साधिया करके रुपिया नाखेर थापनाकों धरे ( पीठै ) स्नात्रिया मंदरके नीतरसे प्रतिमाजी लायके त्रिगनेके सिंहासण पर मंत्र पढके थापन करै, (स्थापनमंत्र) ॥ ॐ नमो अर्द्धत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिग्कुमरी परिपूजिताय चतुषष्टिसुरासुरेण्डसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति ष्ट्वा स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ७ वेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंरुलप्रतिष्ठा करके पीठै सिद्धचक्रपूजा सरू करै ॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ७ कर्कतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत फल नैवद्य दीप धूप हाथमें ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै ( यथा ) अथाष्टदलमध्याब्ज कर्णिकायां जिनेश्वरान् आविर्भूतोन्नसद्बोधा नात्रतः स्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषे धनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून् यजैसमस्तातिशयैकहेतून् श्रीमज्जिनानांबुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धत्रयो नमः स्वाहा (इस मंत्रकूं बोलके अर्द्धत्पदकी पूजा करै, अपने २ जगे सर्व द्रव्य चढावै, पीठै रकेबीमें लालगोटा, लालधजा लालवस्त्र, ७ मांणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्य पूर्वदले सिद्धान् सम्यक्तादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदंप्राप्तान् तिदधेत्तन्निर्जरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रेपतितः प्रणष्टः दुष्टाष्टकर्माधिगम्यशुद्धिं प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान् यजे शांतिकरान्नराणां ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धे त्रयो नमः स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै, सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीठै) रैकेवीमें पीला गोटा,  
 पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि  
 सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै ( यथा ) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण  
 स्मिन्इलेमले चरतःपंचधाचारान् पट्टत्रिसत्युणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सू  
 रीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उग्रोपसर्गैकनिवा  
 रणार्थं मन्त्र्यर्चयाम्यक्तगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीञ्च्योनमःस्वा  
 हा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य थापना पूजा करै इति ॥ पीठै)  
 हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालहु, ४ इंद्रनील, २५ मरकतप  
 न्ना, सर्व द्रव्य लेके खमा रद्दे, उपाध्याय पद पूजा पढै ( यथा )  
 द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयान्युपाध्यायान्  
 पवित्रेष्वश्रिमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशांत्यै पठंतियेन्या  
 न्यपिपाठयंति अध्यापकस्तांनपराब्जपत्रै स्थितान्पवित्रान्परिपूज  
 यामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेञ्च्योनमः स्वाहा ( पश्चिमदि  
 शाकी तरफ उपाध्यायपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीठै )  
 स्वामगोटा, स्वामवस्त्र, स्वामधजा, उरुदकालहु, ५ राजपट्ट, २७  
 अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै ( यथा )  
 व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुभ्रध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतानुवारान्  
 साधुवासीससुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वा  
 दशधाशरीरे येषामुदक्यवगतानसुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्प  
 रिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुञ्च्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥  
 ( उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी थापना पूजा करै इति ॥  
 पीठै ) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व इव्य  
 हाथमे ले के खमा रद्दे काव्य पढै ( यथा ) जिनेशेक्तमनश्चक्ष्वा, ल  
 क्षणेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमथ्रनंशुद्धं न्यस्तमीशानसद्दले ॥ ११ ॥  
 ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनायनमः स्वाहाः ( ईशानकूणमें दर्शनपदकी

क स्वानेमें ९ दोय ९ दोय लब्धिपद स्थापन करणेलें चौवीस धरो  
में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्ठीपदमें ( नुँ ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा ) एसा  
८ वेर कहेके ८ बीजोरा चढावै, नर लब्धिपदका नाम बोलके स्वा-  
रका ४८ चढावै ( यथा ) नुँ ह्रीं अर्हणमोजिणाणं ॥ १ ॥ नुँ ह्रीं  
अर्हणमोत्रहिजिणाणं ॥ २ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोपरमोहिजिणाणं ॥  
॥ ३ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोसबोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोअ  
णंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोकुठ्ठुदीणं ॥ ६ ॥ नुँ ह्रीं  
अर्हणमोवायबुद्धीणं ॥ ७ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥  
नुँ ह्रीं अर्हणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोदिठिविसाणं ॥  
॥ १० ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोसंजिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोस  
यसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ नुँ ह्रीं अ-  
र्हणमोबोहिवुद्धीणं ॥ १४ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥  
नुँ ह्रीं अर्हणमोविजलमईणं ॥ १६ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोदसपूवीणं ॥ १७ ॥  
नुँ ह्रीं अर्हणमोचउदसपूवीणं ॥ १८ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोअठंगनिमत्तकु  
सत्ताणं ॥ १९ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोविजवणइठ्ठिपत्ताणं ॥ २० ॥ नुँ ह्रीं  
अर्हणमोविज्जाहराणं ॥ २१ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोचारणलदीणं ॥ २२ ॥  
नुँ ह्रीं अर्हणमोपप्सासमणाणं ॥ २३ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोआगासगामी  
णं ॥ २४ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोस-  
पियासवाणं ॥ २६ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ नुँ ह्रीं अ-  
र्हणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोसिद्धायणाणं ॥ २९ ॥  
नुँ ह्रीं अर्हणमोअयवया महाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरितीणं ॥ ३० ॥  
नुँ ह्रीं अर्हणमोअगातवाणं ॥ ३१ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोअस्कीणमहाण-  
सियाणं ॥ ३२ ॥ नुँ ह्रीं अर्हणमोवद्धमाणाणं ॥ ३३ ॥ नुँ ह्रीं अर्हण

मोदिततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोतत्तवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ-ह्रींअ  
 र्हणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ  
 -ह्रींअर्हणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोघोरपरिक्रमाणं ॥ ३९ ॥  
 ॐ-ह्रींअर्हणमोघोरवञ्जयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोआमोसहि  
 पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ-ह्रींअ  
 र्हणमोजलोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोविष्पोसहिपत्ताणं ॥  
 ४४ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोसबोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोम  
 शवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ-ह्रींअर्हणमोवयणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ-ह्रींअर्ह  
 णमोकायवलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ-ह्रींअर्हअरुयाललविधपेदञ्च्योनमः ॥ इत  
 तरे लविधपदका नाम बोल २ के तीजे चोथे पांचमें बलयमें ४८ खारका  
 चढावे ॥ ( पीठे ) मंरुलजीके गलेमें -ह्रींकारजी स्थापन किया हे  
 ( जहांसे ) साढातीन नवलाका मंरुलजीके चोतरफ देके नीचे  
 ( क्रों ) एसा अक्षर लिखा हे ( जिसके ) प्रथम बलयमें आठे दि-  
 शायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दारुमफल चढाव  
 ( यथा ) ॐ-ह्रींअर्हत्पाडुकाञ्च्योनमः ॥ १ ॥ अनारचढावे ॥ ॐ-ह्रींसि  
 द्वपाडुकाञ्च्योनमः ॥ २ ॥ ॐ-ह्रींआचार्यपाडुकाञ्च्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ  
 -ह्रींगुरुपाडुकाञ्च्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रींपरमगुरुपाडुकाञ्च्योनमः ॥  
 ५ ॥ ॐ-ह्रींअष्टगुरुपाडुकाञ्च्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रींअनंतगुरुपाडु  
 काञ्च्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ-ह्रींअनंतानंतगुरुपाडुकाञ्च्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ  
 -ह्रींअष्टगुरुपाडुकाञ्च्योनमः स्वाहाः ॥ इत तरे ठेके बलयमें ८ द्वा  
 रुम चढावे ( पीठे ) सातमा बलयमें आठों दिसामें जयादिक ८  
 देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढावे ( यथा ) ॐ-ह्रींजयायै नमः  
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ-ह्रींजंजायै नमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ-ह्रींविजयायै नमः  
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ-ह्रींयंजायै नमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ-ह्रींजयंत्यै नमः  
 स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ-ह्रींमोहायै नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ-ह्रींअपराजिता

यैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ उँन्हीअंधायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ ( इसी  
तरै ) सातमें वलयमें ८ नारंगी चढावै ( पीठै ) आठमें वलयमें  
१६ विद्यादेवीयोकी स्थापना करके चांदीके वर्ग लपेटी १६ सुपा  
री चढावै ( यथा ) उँन्हीरोहणयैनमः ॥ १ ॥ उँन्हीप्रज्ञतैनमः ॥ २ ॥  
उँन्हीवज्रशृंखलायैनमः ॥ ३ ॥ उँन्हीवज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ उँ  
न्हीचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ उँन्हीपुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ उँन्ही  
काट्यैनमः ॥ ७ ॥ उँन्हीमाहाकाट्यैनमः ॥ ८ ॥ उँन्ही  
गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ उँन्हीगंधार्यैनमः ॥ १० ॥ उँन्हीसर्वास्त्र  
महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ उँन्हीमानव्यैनमः ॥ १२ ॥  
उँन्हीवैरोद्यायैनमः ॥ १३ ॥ उँन्हीअनुत्तायैनमः ॥ १४ ॥ उँन्ही  
मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ उँन्हीमाहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे  
आठमा वलयकी बोलके वरक समेत सुपारी चढा के पूजा करै पी  
ठै नवमें वलयके वार्यै तरफ शासनदेवीयां ॥ १४ की स्थापना  
कर पूजा करै ॥ १४ पूंगीफल चढावै ( यथा ) उँचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥  
उँअजितवलायैनमः ॥ २ ॥ उँपुरितायैनमः ॥ ३ ॥ उँकाट्यैनमः  
॥ ४ ॥ उँमहाकाट्यैनमः ॥ ५ ॥ उँश्यामायैनमः ॥ ६ ॥ उँशांतायैनमः  
॥ ७ ॥ उँनृकुटियैनमः ॥ ८ ॥ उँसुतारकायैनमः ॥ ९ ॥ उँअशोकायैनमः  
॥ १० ॥ उँमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ उँचंद्रायैनमः ॥ १२ ॥ उँविदि  
तायैनमः ॥ १३ ॥ उँअंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ उँकंदप्पाययिनमः  
॥ १५ ॥ उँमिर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ उँवलायैनमः ॥ १७ ॥ उँधार  
ण्यैनमः ॥ १८ ॥ उँधरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ उँनरदत्तायैनमः  
॥ २० ॥ उँगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ उँअंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ पद्माव  
त्यैनमः ॥ २३ ॥ उँसिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ दहिणे त  
रफ १४ चक्रराजकी स्थापना करै वरकलपेटी २४ सुपारी चढावै ॥  
( यथा ) उँब्रह्मशांत्यैनमः ॥ २४ ॥ उँपार्थायैनमः ॥ २५ ॥ उँगे

मेधायनमः ॥ २२ ॥ नैऋतकुट्टयै नमः ॥ २१ ॥ उर्वरुणायनमः ॥  
 २० ॥ नैऋतवेरायनमः ॥ १९ ॥ नैऋतहराजायनमः ॥ १८ ॥ नैऋतगं  
 र्शयनमः ॥ १७ ॥ नैऋतरुणायनमः ॥ १६ ॥ नैऋतकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥  
 नैऋतात्तालायनमः ॥ १४ ॥ नैऋतएमुखायनमः ॥ १३ ॥ नैऋतकुमाराय  
 नमः ॥ १२ ॥ नैऋतहराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥  
 नैऋतअजितायनमः ॥ ९ ॥ नैऋतविजयायै नमः ॥ ८ ॥ नैऋतमातंगायनमः  
 ॥ ७ ॥ नैऋतकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ नैऋततुंबुरुयै नमः ॥ ५ ॥ नैऋतयक्ष्णाय  
 कायनमः ॥ ४ ॥ नैऋतत्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ नैऋतमहायक्ष्णायनमः ॥ २ ॥  
 नैऋतगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीठे चार दिशामें ४ द्वारपालकी  
 स्थापना कर के पीला बलवाकुल चढावे ( यथा ) नैऋतकुमुदायनमः  
 ॥ १ ॥ पूर्वदिशि ॥ नैऋतअंजनायनमः ॥ २ ॥ दक्षिणदिशि ॥ नैऋतवामनाय  
 नमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ नैऋतपुष्पदंतायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥  
 पीठे चार विदितकी तरफ चार वीरपदमें काले बलवाकुल चढावै  
 ( यथा ) नैऋतमाणज्जायनमः ॥ १ ॥ नैऋतपूर्णज्जायनमः ॥ २ ॥ नैऋत  
 पित्रायनमः ॥ ३ ॥ नैऋतपिंगलायनमः ॥ ४ ॥ ( इस तरे दसमें बल  
 यमें आठु दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीठे पूर्ण कल  
 सके आकार ऊपरसे कियाज्या सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठि  
 काणे नवनिधान पढ़ै, तब सोने चांदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति  
 रोकनाणा मालके स्थापन करै ) ( यथा ) नैऋतसर्पकायनमः ॥ १  
 ॥ नैऋतपांडुकायनमः ॥ २ ॥ नैऋतपिंगलायनमः ॥ ३ ॥ नैऋतसर्वरत्नायनमः  
 ॥ ४ ॥ नैऋतमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ नैऋतकालायनमः ॥ ६ ॥ नैऋत  
 कालायनमः ॥ ७ ॥ नैऋतमाणवायनमः ॥ ८ ॥ नैऋतशंखायनमः ॥  
 ९ ॥ ( इस तरे मुखस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीठे  
 कोइलेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके बराबर पासमें बंगली  
 का आकार किया दे ( जहां ) नैऋतविमलस्वामिनेनमः १ ॥ एसा

कहके चढावै ॥ फेर कोहलाफल हाथमें ले के वांयेनेत्रके पास वंगलीमें ( उँह्नेत्रपालायनमः ) एसा बोलके चढावै २ ॥ पीठै तीसरा कोहलाफल ) हाथमें ले के नीचे पीँहिके दक्षिणे तरफ वंगलीमें ( उँचक्रेश्वर्यै नमः ) ( एसा बोलके चढावै ॥ ३ ॥ ( पीठै ) चौथा कोहलाफल हाथमें ले के नीचे पीँदेके वांये तरफ वंगलीमें ( उँअप्रसिद्धसिद्धचक्राधिष्टायकायनमः ) एसा बोलके चढावै ॥ ४ ॥ ( पीठै दसूँ दिशामें इंद्रादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै, वणसकेतो अथवा २ वर्ण मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि ड्य चढावै अथवा सर्वको एक ड्य सर्व समान चढावै ( यथा ) उँइंझायनमः ॥ १ ॥ कनक वर्ण चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकड्य आदि सर्व ड्य चढावै १ ॥ ( अन्निकूणे ) उँअग्नेयनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्ण का वस्त्रादिक ड्य चढावै ॥ २ ॥ ( दक्षिणदिसि ) उँयमायनमः ॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि ड्य चढावे ॥ ३ ॥ ( नैरुतकूणे ) उँनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक ड्य चढावै ( पश्चिमदिश ) उँवरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व ड्य चढावै ५ ( वायव्यकूण ) उँवायवनेमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक ड्य चढावै ॥ ६ ॥ ( उत्तरदिसि ) उँकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक ड्य चढावै ॥ ७ ॥ ( ईशानकूण ) उँशानायनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक ड्य चढावै ॥ ८ ॥ ( अघोदिसि ) उँनागायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक ड्य चढावै ॥ ९ ॥ ( उर्द्धदिशि ) उँब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व ड्य चढावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्थापन पूजन करै ॥ ( पीठै यंत्रके पीँदीके स्थानक नव कोठा किया जया हे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै ( यथा ) उँसूर्यायनमः खालवर्णका वस्त्रादिक ड्य चढावै ॥ १ ॥ उँसोमायनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिकं द्रव्यं चढावै ॥ २ ॥ उँजोमायनमः ॥ ३ ॥ लीं  
 रंगवस्त्रादिकं द्रव्यं चढावै ॥ ३ ॥ उँवुधायनमः ॥ ४ ॥ मूंगेरंग  
 वा वस्त्राद्रि द्रव्यं चढावै ॥ ४ ॥ उँवृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण  
 वस्त्रादिकं द्रव्यं चढावै ॥ ५ ॥ उँशुक्रायममः ॥ ६ ॥ सपेदवर्णनंदोल  
 वस्त्रादिकं द्रव्यं चढावै ॥ ६ ॥ उँशनेश्वरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग  
 वा वस्त्रादिकं द्रव्यं चढावै ॥ ७ ॥ उँराहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग  
 वा वस्त्रादि द्रव्यं चढावै ॥ ८ ॥ उँकेतवेनमः ॥ ९ ॥ उँटरंग व  
 द्रादि द्रव्यं चढावै ॥ ९ ॥ इस तरे नीचै नवग्रहकी स्थापनपूजा  
 करै. पीठै स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढावै चैत्यवंदन कर शुद्ध क  
 हकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीठै गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर  
 वासकूप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करै पीठै यथाशक्ति साथ  
 मी वास्तुलभ्य करै ॥ इति मंगल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये  
 ( जव ) कोइ श्रीमंत उँलीकी तपस्या करै तब तो उँए महीने मं  
 गल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण  
 जेथे वाद उँद्यव के साथ मंगलपूजा कराके नवर उँपगरणोसे उ  
 धापन करै. जलजात्रादि अर्घाईमहोद्यव कर धर्मशालासिणगारै  
 ( फेर ) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते च  
 ढावै, रुद्रिहित जावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढावै ( उँर ) पंचा  
 यती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंगलपूजादिक नवपदपूजा  
 अथशय विधिसंयुक्त करता रहै ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सचर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबूद्वीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणज्जस्वामीसर्वज्ञाय

नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा



धनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्व  
 ज्ञा ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा ॥  
 ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञा ॥ ए ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा ॥ १० ॥  
 श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा ॥ १२ ॥  
 श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा ॥ १४ ॥  
 श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा ॥ १६ ॥ श्री  
 अमरकेतुसर्वज्ञा ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥  
 श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १९ ॥ स्तमैंद्रनाथसर्वज्ञा ॥ २० ॥  
 श्रीशांतिकृतसर्वज्ञा ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा ॥ २२ ॥ गर्जेद्र  
 प्रज्ञसर्वज्ञाय ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त  
 सर्वज्ञा ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा ॥ २६ ॥ रुषज्ञनाथसर्वज्ञा  
 ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय ॥ २८ ॥ नेमिज्ञद्रसर्वज्ञा ॥ २९ ॥  
 अजितज्ञद्रसर्वज्ञा ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा ॥ ३१ ॥ श्रीराजे  
 श्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ घातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा ॥ १ ॥ वज्रसेनसर्वज्ञा ॥ २ ॥ नीलकांति  
 सर्वज्ञा ॥ ३ ॥ पूंजकेसीसर्वज्ञा ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥  
 ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व ॥ ७ ॥ मुनिमृ  
 र्तिसर्वज्ञा ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा ॥ ए ॥ आगमिकसर्वज्ञा  
 ॥ १० ॥ दुक्तितनाथसर्वज्ञा ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा ॥ १२ ॥  
 महल्लनाथसर्वज्ञाय ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय ॥ १४ ॥ वलंमृत  
 सर्वज्ञाय ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा ॥ १६ ॥ पूर्णमैंद्रसर्व  
 ज्ञाय ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा ॥ १८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा  
 ॥ १९ ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥  
 २१ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञाय ॥ २२ ॥ श्रीज्ञानुनाथसर्वज्ञाय ॥

॥ २३ ॥ श्रीप्रज्ञजणसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५ ॥  
 श्रीजलप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥  
 श्रीरूपिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुमंगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्री  
 वज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीचूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीती  
 र्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ घातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीचूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥

श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीपेश

नाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्व

ज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञनाथसर्वज्ञा०

॥ ९ ॥ श्रीचूमिपालसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीसुमतिपेशसर्वज्ञा० ॥ ११

॥ अतिच्युतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥

श्रीतीर्थचूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंडसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीतमा

धिसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंडसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथ

सर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वर

सर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेन्द्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा०

॥ २२ ॥ श्रीज्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा०

॥ २४ ॥ श्रीकपिणनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रज्ञाकरसर्वज्ञा० ॥

२६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥

॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥

॥ ३० ॥ श्रीसहस्राक्षसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्रमयमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीभेषवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजगद्विकरुपिकसर्वज्ञा० ॥

॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीपापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥

श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीज

गत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाभ

हेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरभूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार  
 चंद्रसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीवीरषेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ  
 सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलभद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय०  
 ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय  
 नमः ॥ १९ ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय०  
 ॥ २१ ॥ श्रीचंद्रारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंडातपसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥  
 श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीमहा  
 यशसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीभूमोकनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीप्रद्युम्नना  
 थसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २९ ॥ श्रीपुष्पकेतु  
 सर्वज्ञायनमः ॥ ३० ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीसमतकेतुस  
 र्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पुष्कराद्ध द्वितियेमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र  
 नाभसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूर्वद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्री वयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥  
 ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्री  
 वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीनी  
 मनाथसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुभद्रसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीभद्रगुप्तसर्व  
 ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुढधसहस्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व  
 ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा०  
 ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥  
 २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मभूतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥  
 २४ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्तिसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥

नागेंडनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतब्र  
ह्मनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंडनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध  
मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

( जंबुद्वीपेऽरवतक्षेत्रे जिननामानि ) श्रीअजिनाथसर्वज्ञा०

१ ॥ ( धातकीखंभेप्रथमऋरते० ) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥ २ ॥

धातकीखंभे द्वितियऋरतेजिननांम ) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥

३ ॥ ( पुष्करार्द्धेप्रथमऋरतेजिननांम ) प्रज्ञासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४

(पुष्करार्द्धेद्वितियऋरतेजिननांमः ) प्रज्ञावकनाथसर्व०॥५॥ ( जं-

द्वीपेऽरवतक्षेत्रेजिननांम ) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ ( धात

कीखंभेप्रथमऽरवतेजि० ) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ७ ॥ ( धातकीखंभे

द्वितियऽरवते ) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ ( पुष्करार्द्धेप्रथमऽरव

जिनना० ) आग्नाहिकसर्वज्ञाय०॥९॥(पुष्करार्द्धेद्वितियऽरवतेजि०)

श्रीवलिऋडनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥ इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका

एषाना संपूर्ण ॥ १६ स्यांम, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५०

वेत. सर्व संख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद्र ॥ त-

पद नामी कंधरा, कारण सिव सुखकंद ॥ १ ॥ वाऽर्धकासरदातणो,

र धरि समरण शक्ति ॥ सद्युत्तर सत जिनतणी, रचस्थुं नुति सु

वे जक्ति ॥ २ ॥ वे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाज ॥

र्वापर जवि तेहनें, विजय नामको लाज ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु

पतिदिशा, कप्रनामें युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि

वावीस ॥ ४ ॥ खंभु धातकी दूसरो, द्वीप मनोहरं तेह ॥ कंचन

गेरि युग वे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जां

लिये, द्वीप सकल गुणखांल ॥ अर्ध ज्ञाग जसु उत्तमैं, गिरि युग  
 जलद समान ॥ ६ ॥ ज्ञोन्नवि संख्या विजयनी, प्रति मेरौ बत्तीस  
 ॥ धारो गणित अनुक्रमैं, षष्टयुत्तर शत हींस ॥ ७ ॥ एह अढाइ  
 द्वीपनी, विजयतणो परिमाण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा, ज्ञाप्यो  
 श्रीजिनज्ञाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थकर वारके, विचर्या जे जिनरा  
 य ॥ ते हूं प्रति विजये ज्ञणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ९ ॥ (हाल  
 पारणोकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थकर महाराज ॥ अ  
 जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ ज्ञविकजन ध  
 रज्यो धर्म सनेह ॥ टेरे ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वां  
 णी गुण पैतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥  
 ज्ञ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ वि  
 चर्या महियल बोधता जी, विजय मऊार सज्जंद ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥  
 पंच२ ज्ञरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन ता  
 रता जी, समर्यां संपति आय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन  
 वरू जी, अतुल सकल गुणखान ॥ श्यांमवरण सोले कया जी,  
 अकल कला युतिवान ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कया जी,  
 नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम ऊललह ज्ञाधरू जी, कनकवर  
 ण बत्तीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजत सुक्त पय जलकणा जी, सम सित  
 विमल प्रकाश ॥ ज्ञविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पञ्चा  
 स ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, बीस प्रमित  
 जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुजातमां जी, धरिये ज्ञाव विशाल ॥  
 ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण हुयां जी, नजमणे निज शक्ति ॥  
 कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी ज्ञक्ति ॥ ज्ञ० ॥ ९ ॥ ए त  
 पविधि ज्ञवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ  
 नुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ ज्ञ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत् मूनि सर लोक नारद चंड ज्येष्ठ पशुर ए, वदि सप्तमी रवि  
दिने हितवह्मन्न कंधनधर नूर ए ॥ गुरु खरतरांबर तरणि सन्नि-  
न्न जैनचंड सनूर ए, ए तवन कीधो जीमर्गजे श्रमणचंद कपूर ए  
॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती-मतिज्ञानावरणीरहितायश्री  
सिद्ध्यनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्ध्यनमः २, अवधि  
ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणीरहितायश्रीसि  
द्ध्य० ४, केवलज्ञानावरणीरहितायसि० ५, ( दर्शनावरणकर्मकी नव  
प्रकृती ए )-चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण  
र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ९, निष्कार्म  
रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचक्षार० १२, प्रचलाप्रच  
ला० १३, श्रीणद्धी० १४ ॥ ( वेदनीकर्म की प्रकृति २ )-सातावे  
दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, ( मोहनी  
कर्म की प्रकृती १८ )-सम्यक्तमोहनीर० १७, मिश्रमोहनीरहिताय  
१८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु  
बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २१, अनंतानुबंधिलोचनर०  
२३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या  
ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोचनर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो  
धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०,  
प्रत्याख्यानीलोचनर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलनमानर०  
३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोचनर० ३५, हास्यमोह  
नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, जयमोह  
नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, हुंगमामोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर०  
४२, पुरुषवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४ ॥ ( आयुर्कर्मकी प्रकृति

४ )-देवायुरहि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यचायुरहि० ४७, नरकायुरहि० ४८ ॥ ( नामकर्मकी प्रकृति १०३ )-देवगति ४९, नरकगति० ५१, तिर्यचगति ५२, नरगतीरहिता० ५०, एकेंद्रीजातिर० ५३, बेइंडीजातिर० ५४, तेइंडीजातिर० ५५, चौरेंडीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीर० ५८, वैक्रियशरीर० ५९, आहारकशरीर० ६०, तेजसशरीर० ६१, कर्मणशरीर० ६२, औदारिकअंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगोपांगर० ६५, औदारिकऔदास्किबंधनर० ६६, औदारिकतेजसबंधनर० ६७, औदारिककर्मणबंधनर० ६८, वैक्रियबंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकर्मणबंधनर० ७०, आहारकबंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारककर्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकर्मणबंधनर० ७५, वैक्रियतेजसकर्मणबंधनर० ७६, आहारकतेजसकर्मणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कर्मणकर्मणबंधनर० ७९, तेजसकर्मणबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कर्मणसंघातनर० ८५, वज्ररुषज्ञनाराचसंघयणर० ८६, रुषज्ञनाराचसंघ० ८७, नाराच० ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्तसंघयणर० ९१, समचतुरस्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुब्जसंस्थानर० ९६, हुंमकसंस्थानर० ९७, ऋष्यावर्णरहि० ९८, तीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सुरभिगंधर० १०३, डुरभिगंधर० १०४, तिक्तरसर० १०५, कटुकसर० १०६, आम्लरसर० १०७, कषायरसर० १०८, मधुरसर० १०९, शीतफरसर० ११०, उश्नफरसर० १११, ज्वारीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, परखराफरसर० ११४, सुक-  
 भालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितया०  
 ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्यचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वी  
 र० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुभ्रविहायोगति १२२, अशुभ्र-  
 विहायोगतिर० १२३, पराघातनामकर्मर० १२४, ऊसासनामकर्म  
 र० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अ  
 गुरुत्वनामकर्मर० १२८, तीर्थकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनाम  
 कर्म १३०, उपघातनामकर्मर० १३१, त्रसनामकर्मर० १३२, वाद  
 रनामकर्मर० १३३, पर्यातिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म  
 १३५, धिरनामकर्म १३६, शुभ्रनामकर्म १३७, सौजाग्यनाम  
 कर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०,  
 यशनामकर्म १४१, आवरनामकर्म १४२, सूदमनामकर्म १४३,  
 अपर्यातिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अधिर  
 नांमकर्मर० १४६, अशुभ्रनामकर्मर० १४७, दौर्जाग्यनामकर्मर०  
 १४८, दुस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अयश  
 नांमकर्मर० १५१, ( गोत्रकर्मकी प्रकृती २ ) उच्चैर्गात्र १५२, नी  
 चैर्गात्र १५३, ॥ ( अंतरायकर्मकी प्रकृति ५ ) दानांतरायकर्मर०  
 १५४, लाजांतरायकर्मर० १५५, जोगांतरायकर्मर० १५६, उप  
 जोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धायनमः ॥  
 ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयस्त्रीरो गुणानो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयडी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंभव जिनराज ॥  
 मूलकरम उत्तर पगइ, हणी चढे सिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकूं  
 कृप करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदा  
 नंद विदधन्न ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयनि विस्ता



२ ॥ वरणं ज्ञविजन दितज्ञणी, प्रवचनने अनुसार ॥ ३ ॥ (हाल ॥  
 ॥ रामचंदके बाग ए देशी) ॥ अष्ट कर्म तीर्थेश, नामे जिन कहा  
 री ॥ हेयवस्तु परित्यज्य, आत्मगुण ग्रह्या री ॥ १ ॥ नाण दंशण  
 आवर्ण, वेदनी मोह बुरो री ॥ आनखो नाम कर्म, कर्मांतराय चुरो  
 री ॥ २ ॥ ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावर्णतणो री ॥ वेदनीय अंतराय,  
 तीस कोनाकोनि जणो री ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म, बीस को-  
 नाकोनि हुवे री ॥ आयु सागर तेतीस, हिव मोहनीय शुवे री ॥  
 ॥ ४ ॥ सत्तर कोनाकोनि सागर मान जणयो री ॥ ए उत्कृष्ट  
 धिति जोरु, केवली काल गण्यो री ॥ ५ ॥ जघन्य स्थिति पंचकर्म,  
 अंतरमुहुर्त्तणो री ॥ नाम गोत्र दोय कर्म, आठ महुर्त्त गणो री ॥  
 ॥ ६ ॥ अकषाय वेदनी वर्ज्य, वेदनी कर्म वडे री ॥ वारे महुरत  
 मान, शास्त्रानुसार मुदै री ॥ ७ ॥ नाणावरण अंतराय, पंच १ जेद  
 जुदा री ॥ वेदनीय गोत्र कर्म, दो दो जेद उदारी ॥ ८ ॥ दर्शना  
 वरण नव जेद, आयु ब्यार विवे री ॥ मोह कर्म अरुवीस, सौ त्रिक  
 नाम सधे री ॥ ९ ॥ एकसो अष्टावन्न, उत्तर प्रकृति कही री ॥  
 अष्ट करमना जाण, सबे विकल्प सही री ॥ १० ॥ हाल ॥ नण  
 दल चुमले जोवन जिल रह्यो ॥ ए देशी ॥ पाटे सम ज्ञानावरण  
 वे, दर्शनावरण प्रतीहार, ज्ञविषण कर्म विवेचन कीजिये ॥ मधु  
 लिप्ता असिधारानी परे, वेदनी कर्म मुदार ॥ ज्ञवि० ॥ १ ॥ म  
 दिराठाक समान वे, मोह सुजट महाराण, ज्ञवि० ॥ खोमे बंदीखान  
 सारखो, आयुकर्म प्रमाण ॥ ज्ञ०क० ॥ २ ॥ चीतारे सप्त नाम कहीजे,  
 गोत्र कुंजार समान, ज्ञ० ॥ श्रीवर जंफारी सम दाख्यो, अंतरस्थ  
 कुंध्यान ॥ ज्ञवि०क० ॥ ३ ॥ अष्ट कर्म ए ज्ञावना, वीर वडे व्या  
 ख्यान, ज्ञ० ॥ कर्म संसार स्वरूप वै, अकरम सिद्धि सुधान ॥ ज्ञ  
 वि० क० ॥ ४ ॥ मिष्ठ सासादन मिथ्या रिति, देसविरति प्रमत्त,

ज० ॥ अप्रमत्त गुण अंतःसर्वीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ ज० क०  
 ॥५॥ अपूर्व अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज सत्त बंध, ज० ॥ सुहुम  
 संपराय दशशम गणें, विन मोहायु पट खंध ॥ ज० क० ॥ ६ ॥  
 उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, ज० ॥ अयोगी गुण  
 चवदमें, नदी बंधत कर्म द्वार ॥ ज० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु  
 कक्षा, मिथ्यात अविरत ज्ञाय, ज० ॥ क्रोध प्रमुख कषायश्री, यो  
 ग युगत ध्यार होय ॥ ज० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म  
 स्थिति पद लेय; ज० ॥ कर्म वेद पलावीसमें, कर्म प्रकृति वेद ज्ञेय  
 ॥ ज० क० ॥ ९ ॥ कर्मपयनी कर्मबंधमें, कर्मतणो निरधार;  
 ज० ॥ बंध सत्ता उदीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ ज० क०  
 ॥ १० ॥ इकसो अठवन श्या, चतुर्थजत्त तप सार, ज० ॥ त  
 प उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ ज० क० ॥ ११ ॥  
 अष्ट ज्ञानोपगण जला, अष्टगंगल वृह धाल, ज० ॥ वात्सल्य  
 चतुर्विह संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ ज० ॥ क० ॥ १० ॥ इच्छा  
 रोधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, ज० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम  
 लही, शिवरमणी जरतार ॥ ज० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिन-  
 चंद सूरि मुखिंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु वचने  
 स्तवन कीधो नयर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निध्येक वरषे विशद  
 फाल्गुन द्वादशी, उवजाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित्त  
 नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयनी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ इहा ॥ चोवीसे जिनवर नमी, पंच परमेष्टि सार ॥ परम  
 मंत्र नवकारनी, महिमा जणूं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर  
 आर्य सुहस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पूरवतणो,  
 नव निधि सिद्धि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटी जास, संकट लक्ष

टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अरुसठ वरण विख्यात,  
सात गुरु अकर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप,  
जाये अकरे, संपूरण पांचसैं मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर छीपार्द,  
सिद्धावट गांम, पासे परवत कंदरा ए ॥ चोमासी पच्चरकांण, करने  
तिहां रह्या, दमसार नामे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ ज्नील ज्नीलणी बेअ,  
मन सुध ज्ञावसुं, नवकार मुनि पासे ज्ञणी ए, बीजे ज्ञव राज-  
सिंह, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रत  
नपुरी यसोज्ञ, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति  
आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, मद्दामंत्र गुण बहु ज्ञणूं ए ॥ ५ ॥  
एकदा योगी एक, समसाने ले गयो, शिवकुमार मनमें धरयो ए ॥  
नवकारने परज्ञाव, सबल संकट टळ्यो, सोनापुरसो तिण करयो ए ॥  
॥ ६ ॥ ढाल १ ॥ चरणकरणधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री  
नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुज्ज ठामो जी ॥ सेठ सु-  
ज्जद्र तणी सुता श्रीमती, आविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥  
मिथ्यामते किये एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम  
न मूके हणिये मन धरी, कलसमें मूक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥  
साप फीटीने फूलमाला अई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिउने  
कुटंब सहू प्रतिबूज्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥  
कितिप्रतिष्ठित बलराजा तिहां, इक दिन वूगो मेहो जी ॥ नदीपूर  
बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद  
लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर ज्ञक करे  
नरने तिहां, ये बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी  
जिनदाससेठनी, आवक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार ज्ञण बीजोरो  
अह्यो, वूज्यो व्यंतर ठेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमणी  
खमणीने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितशत्रु राया,

ज्ञान नामे नारि सुहाया ॥ चंरुपिंगल चोरयो नृप हारा, गणिका  
 ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका : पहरयो हार ते जाणी, सूली  
 दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पठतावे, चोर समीपे  
 गानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रजावे वंठित  
 सीधो, नृपने घर सुत अइ अवतरियो, पापी चोर एणे ऊधरियो ॥  
 ॥ ३ ॥ मधुरानगरी जिणदाससेठ, तिहां किण हुंरुक पापनी डेठ ॥  
 एकदा चोरी करतां जाळ्यो, राजा हुकमें सूली घाळ्यो ॥ ४ ॥  
 हुंरुक चोर ते प्बासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार  
 दीधो उपमार आणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणो ॥ ५ ॥  
 खंपानगरीमें जे कीधुं, सुज्जा सती निकलंक प्रसीधुं ॥ श्रीनवकार  
 प्रसाद ते जाणो, मनमें एहनी आसति आणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥  
 अरतनृप जावसुं ॥ ए देत्री ॥ अमावति पूनिम करी ए, बीजली  
 बांधी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्ष उपानी चलावियो ए,  
 अनुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वाठरूया एक चारतो ए,  
 नदिय प्रवाह्यो बाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो  
 ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ इत्या चार करी इवे ए, वली कर्या पाप  
 अनेक, न० ॥ गुटकरबारी एह्यी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥  
 ॥ ४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ ती  
 र्थकर पद ते लहे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन २  
 अधिकी संपदा ए, मनवंठित सुख आय, न० ॥ दयाकुसल वाचक  
 वरू ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका  
 चोढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकारं तपविधि लिख्यते ॥

शुद्धदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे. जित पदका

जितना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उक्त पदका ।२०००।

गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ एमोअरिहंताणं ॥ उपवास ७ ॥  
 २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आयस्थियाणं ॥ उपवा  
 वास ७ ॥ ४ । एमोउवज्जायाणं ॥ उपवास ७ ॥ ५ । एमोलोए  
 सबसाहूणं ॥ उपवास ६ ॥ ६ । एसोपंचनमोक्कारो ॥ उपवास ७ ॥  
 ७ । सबपावप्पणासणो ॥ उपवास ७ ॥ ७ । मंगलाणंचसवेसिं ॥  
 उपवास ७ ॥ ८ । पढमंहवइमंगलं ॥ उपवास ६ ॥ एते नवकार  
 मंत्रका ६७ उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वनानवकार अथवा ऊपर  
 लिखा सो स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेंसें यथाशक्ति नवपदका  
 उच्चव करे, चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रज्ञावसें अनेक  
 सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुज्जाव सवि जिनतणा, पंच कल्याण  
 दिण जणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कत्तीतणै पस्कि पंचमि दिणै,  
 नाण संजवतणौ खयकरम चिहुं तणैः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण  
 सुरजवणथी बारसै, पउमपह जम्म वलि दिस्क तसु तेरसै ॥ वीर  
 सिवमां वसै पस्कि हिव ऊजलै, नाणसिरि सुविधि अर तीज बार  
 सि मिले ॥ २ ॥ ज्ञास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि  
 थो, सोइ उठै रे संयमधर सुर पणामियो ॥ इसमी दिन रे वीरे सं-  
 यम आदरथौ, इग्यारसि रे उपमप्पह सिवसिरि वरथौ ॥ सिर वरथौ  
 मिगसर सुदि दशमी दिण रथणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति  
 पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसै वलि  
 सद्धिजिणने जम्म दिस्क सुनाणीया, वलि मद्धि दिस्का नाण उठै  
 अंग पोसि वखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संजा  
 विथै, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण ज्ञाविथै ॥ ते परि सत्रि रे गीता-  
 रथ सहगुरु लहै, श्रुतकेवलि रे वचन सह सम सहहे ॥ सहहै

सहृदये ते प्रमाणजि वलि इग्यारसि नमित्तौ, श्रीनाण कड्याणक  
 चउदसि जनम संजवनों शुणौ ॥ पूनिमें संजव दिस्क पांमी दया  
 धरि जगजोवनी, हिव पांस ववि दसमी इग्यारस जनम दिस्का  
 पासनी ॥ ४ ॥ वारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, वलि तेर  
 सि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशोतल थयो के-  
 वली, पोसइ सुदि रे ठठ विमल नाणी वली ॥ नाणी वलि थयौ  
 नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अजिनंदनें केवल पूनि  
 में धम्मै वसें ॥ माहाइ ठठे पत्रम चवियो वारसें शीतल थयौ,  
 वलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसइ जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥  
 अम्मावसि रे दिवसें नाण इग्यारसें, जिन पांमी रे माइसुदें हिव  
 अनुक्रमे ॥ सित वीजे रे अजिनंदन वासुपूजनों, कड्याणकरे ज  
 नम गंण अनुक्रम मनो ॥ अनुक्रमे मांनों विडू वीजे विमल धरम  
 सुजामिया, श्रीविमल दिस्का चउथि अठमि अजित उतपति पांमि  
 या ॥ नवमिये दिस्का अजित पांमी वारसें अजिनंदनें, श्रीधर्मनाथे  
 सार संयमसिर वरि तेरसि दिनें ॥ ६ ॥ ज्ञास ॥ फागुण वदि ठठे सुपास  
 केवलसिरि पत्तो, सत्तम वलि तसु मुगति चंडप्रजु नाणे जुत्तो ॥  
 नवमि सुविह जिण चवण रिसइ इग्यारसि केवल, वारस सुवय नाण  
 जम्म सेयंसइ निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि वत सिद्धंत तणो चवदस वसु  
 पुड्ड, जम्म दुठं अम्मावसें ए तसु संजम रऊ ॥ सुकज वीज चउथि  
 अठमिये अर मल्लि संजव, चवण सुवारसि मल्लि मुगति सुवय वय  
 उठव ॥ ८ ॥ ( दाल फागनी ) चैत्र पढम पक्कि चउथि नाण च  
 वणं पासस्त, पंचमि सत्तिपइ चवण जम्म अठमि रिसइस्त ॥  
 वलि संजम पिण रिसइसांमि अठमि आइरियो, धवल तीज हिव  
 कुंथुनाथने केवल फुगियो ॥ ९ ॥ पंचमि अजित अनंत थने सं  
 जवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नाण वलि पांम्यो सुमनि ॥

॥ त्रिशलादेवें वीरनाह तेरसनिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमना  
 ह केवलसिरि पायो ॥ १० ॥ ज्ञास ॥ हिव वैसाख वदें पन्दिवा दिन,  
 कुंथु सिद्ध शीतल बीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ ठडे, श्रीशी  
 तल अवतरियो, दशमें नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम  
 अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिस्का नाण अणंतह, जनम हुन श्रीकुंथु  
 जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अजिनंदन उत्तम, ध  
 रमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउठ ॥ १२ ॥ सुम  
 तिनाथ अठमिये जायो, नवमें संयम सामे पायो, गायो धरि आ  
 णंद ॥ दशमें नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वा  
 मी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पस्कि  
 ठठ, चवियो सेयंस, अठमी सुवय जनमियो ए ॥ नवमि सुगति  
 सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुन ए ॥ धरमनाथ  
 सिव पत्त, धवली पंचमें, नवमें वसुपुज्ज अवतरयो ए ॥ श्रीसुपास  
 जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वरयो ए ॥ १४ ॥  
 ज्ञास ॥ हिवै असाढ वदि चउथि रिसहेस, चवण सत्तमिहि सिरि  
 विमल ॥ मुक्क नवमि नमि वय गहण, सेय ठडे चवण ॥ वीरनो  
 अठमि नेमि मुक्क चवदसें श्रीवसुपुज्ज जिणंद, ठ सय वर साधु  
 कर परवरयो ए ॥ बहुतर वरस लख पुरि चंपापुरें, करमहणि मुग  
 ति रमणी वरयो ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि हिव तीज मु  
 गति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविन अणंतनाह अठमि नमि जा  
 मिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुन अह निम्मल बीजै, सुमति  
 चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म जणीजै ॥ १६ ॥ ठडे मुनिवर ने  
 मि हुय, अठमि सीधो पास ॥ मुनिसुवय पूनिमरयणि, चविन गु  
 णमणि वास ॥ १७ ॥ ज्ञाड्व वदि सत्तमें संति ससि चवण जव  
 रकय, अठमि चविय सुपास नवमि सुदि सुविध सिवंगय ॥ हिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसर गघ्न ॥ हरण अम्मावसो  
 ए, नांणी नेमीसर ॥ १८ ॥ पुनिम नमि जिणवर चविय, इण  
 पर वारह मासि ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कळयाणक रासि  
 । १९ ॥ जिण चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दि  
 नें, अरिहंत जत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मनें ॥ कळयांण नीते  
 कोनि पांमी अनुक्रमें सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी  
 एह कळयाणक कहे ॥ २१ ॥ इम पांच ज्जरते ऐरवत करि एक  
 दिन जिनवरतणा, दस कळयाणक हुवे इण दिन सुर करे उच्चव  
 घणा ॥ जिम हुआ ते तिम वली होस्ये पंच कळयाणक सदा, श्री  
 पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २१ ॥ इति श्रीपंच  
 कळयाणक स्तवनं ॥

॥ अथ रुपिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ प्रथम आद्यंताकर संलक्ष० यह रुपिमंडल स्तोत्र धूप  
 धीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रजात समय सुणें. रुपिमं  
 ढलमें जो मूल मंत्र हे सो शुद्ध दिन शुद्ध घनी हाथमें फल  
 फूल जेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. जेट धरके वि-  
 नय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करे. उसका ८००० आठ हजार जाप  
 आठ महीनेमें करे. आंघिलकी शक्ति होय तो हमेस करै, नहीतो  
 आठम चौदस दो आंघिल जरूर करे. आठ महीने बाद ऊजमणा  
 करै. ऊजमणेके दिन एकसो आठ वेर सुणै. पीठै शक्ति होय तो  
 विधि संयुक्त रुपिमंडल स्थापन करायेके पूजा करै. विशेष जक्ति  
 करे तो २४ प्रकार पूजा करावै, गुरुजत्ती करे, साहमी वञ्चल करै.  
 विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ रुपिमंडल सुणणेवाले पूजणेवा  
 ले जव्यजीवके घरमें कच्ची उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उच्चाह रहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल जरी संपुट यत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥



रूपत्र चरण अंगूठमो, दायक नवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का  
 असंग रक्षा, विचर्या देस विदेस ॥ खमांर केवल लह्यो, पूजो  
 जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥  
 कर कंठे प्रभु पूजना, पूजो नवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयो दोय  
 अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, नुजावले नवजल तर्या, पूजो खंध म  
 हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसरांम ॥ ना  
 निकमलनी पूजना, करतां अविचल धांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल  
 उपशम बले, बाढ्यो राग ने छेप ॥ हेम दहे वनखंमनें, हृदयक  
 मल संतोष ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतूल,  
 मधुर धवनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ तर्भकर पद  
 पून्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत, त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, जाल  
 तिलक जयवंत ॥ ८ ॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक नगवंत ॥ व  
 सिधा तिण कारण विभू, शिरशिखा पूजंत ॥ ९ ॥ उपदेशक नव  
 तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध जावथी, कहे शुभ  
 वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन उहा ॥

### ॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवना जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमें  
 परजा नमें, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंजे बांध्यो जल रहे,  
 जल विन कुंज न होय ॥ ज्ञानें बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न  
 होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे  
 गुरुवाणी वेगला, ररुवमिया संसार ॥ ३ ॥ जावे जिनवर पूजिये,  
 जावे दीजे दान ॥ जावे जावना जाविये, जावे केवलज्ञान ॥ ४ ॥  
 पांच कौमीनें फूलने, पांम्या देश अढार ॥ राजा कुमारपालने, व  
 रत्या जैजैकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुइ ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय२ श्रीअरिहंत ज्ञानु, जविकमल विकासी ॥ लोकालोक  
अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्घात शुभ्र केवलै, कथ  
कृत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पादसैं, जयो वर अविन्यासी ॥

॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, हुय अर्प्पा अरिहंत ॥ तसु पद  
पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिं नाम-  
तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिद ॥ ए चाल ॥ श्री  
तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुंजजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥  
अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे दीन ॥ म० ॥ १ ॥  
बादरकायें मन वच जोग, तनुरसैं फुन दृढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुक  
भकायतें मन वच रोक, निज वीर्य ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥  
संज्ञी मात्रके मन व्यापार, वेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि  
समय रह्यो पनकसु जीव, सुयम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥  
॥ ३ ॥ एपां योगथी समर्थे एक, दीना संख गुणो कर ठेक ॥ म० ॥  
समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥  
वेदसमेनादारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें  
गुणमें गुण समै देव, आपो सा जगकुं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥  
इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल  
ध्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पूरो जी ॥ तांजै जव  
ध्यानक आरावी गोत्र तीर्थकर नूरो जी, वारे गुणां करि एइया अ  
रिहंत आराधो गुण नूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुहिंनत जागी ॥ पुढ पन्धपसंग  
सैं, ऊरध गंत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण  
निरागी ॥ चेतनचूषे आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल  
दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वजाव ॥ सिद्ध जये तसु हीरधर्म,  
वंदे धरि शुभ्र जाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थारे महिलां ऊपर मेह झरोखै वीजली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मास हीना कोमी पूर्वमें, म्हा० लाल ही० ॥  
जल्कष्टो करै वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजै  
जवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहै कर्म दलै गुण श्रेणिता,  
म्हा० दलै० ॥ १ ॥ ह्रस्वाकार पंच काल रहै ते योगमें, म्हा०  
र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे  
नगरऊसैं अक्रिय होयने, म्हा० अ० ॥ पुढ पयोग असंग स्वजाव  
अबंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इहु गुण नव परमाण योजन लहैं  
कही, म्हा० यो० ॥ वर्तुल विशदाज्जाल निरालंबन सही, म्हा०  
नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मही प-  
क्षथी हीन जणी सिद्धांतमें, म्हा० ज० ॥ ३ ॥ तनुपप्रारा नाम  
सिलासैं जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें जाग अलोककुं स्प-  
र्शनमें, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहणा, म्हा०  
प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासैं हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥  
मिलिया एकमेंनंत अवाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि  
रम्य सिरिही जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म  
नगेहमें, म्हा० ध० ॥ कुशल जये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा०  
मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद युई ॥

अष्ट करमकूं धमन करीनें गमन कियो शिववासी जी, अ-

व्याबाधे सादि अनादि चिदानंद चिदरासी जी ॥ परमात्मपद पूर-  
ण विलासी अध घन दाघ विनासी जी, अनंत चतुष्टमय शिव  
पद ध्यावों केवलज्ञानी ज्ञासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद शुद्धि ॥

॥ अथ तृतीय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल, मित रस गुण धारी ॥  
प्रबल सबल घन मोहकी, जिणतें चमुहारी ॥१ ॥ रुज्वादिक जि  
नराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ ज्वकूपें पापें पनत, जगजन  
निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं  
वंदे हीरधर्म, अगेतर सो वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नगदल वीदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खरुगथी जेणे, हृषयो क्रोध सुजट सम देणे हो, गण  
पति गुणपेखी ॥६॥ मान महा गिरि वयेरे, अति शोभन मद्भव वयेरे  
हो ॥ ग० ॥१ ॥ दंजरूप विसवेली, वर अरुवकीलै ठेली हो ॥ ग० ॥  
मुर्छावेलथी जरियो, लोहसागर मुत्ते तरियो हो ॥ ग० ॥२ ॥ मदन  
नाग मद हीनो, जिण दमसम जंत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह माहा  
भल्ल ताड्यो, पुण वैराग सुगरे पाड्यो हो ॥ ग० ॥३ ॥ दोस गयंद  
वस कीनो, धर उपशम अंकुत लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु जेद्या,  
सुरवर पिण जिण णिपेद्या हो ॥ ग० ॥४ ॥ रस कृति गुणथी लीणो,  
सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जी  
व कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद शुद्धि ॥

॥ पंचाचारकुं पालै उजवालै दोष रहित गुणधारी जी, गु  
ण वृत्तीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन  
मोह हरणकुं अनिल समो गुण वाली जी, कमा सहित जे संज  
म पालै आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इति शुद्धि ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवन्दन ॥

॥ धन धन श्री नवजाय राय । सठता घन रंजन । जिन  
वर दिसत डवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण रं  
जण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंब लोय लोयणें ।  
जल्यय सुय मंजण ॥ १ ॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए । आगमसे पद  
तुर्य । तिनपें अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्ध ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांवलिया अलगा रहोनें ॥ ए देशी ॥

॥ हुयने ३ दूरी हुयने, चेतन जापै सठने, दूरी हुयने ॥ तुं  
मुऊ पास क्युं आवै, दू० ॥ तुऊने कुण वतलावे, दू० ॥ ए आंकणी  
॥ तो संगै निज पंचेडीनो, रचना चरम जुलाणो ॥ नाणावरणी  
खयउपसमसे, जावेडी मंमाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ इयै ते परजापे  
कीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किए क  
में उपदेश ॥ दू० ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुऊकुं संका, तेरे संगे ला  
गी ॥ नीलवर्णकी समता सेती, में जयो तोसुं रागी ॥ दू० ॥ ३ ॥  
बुष कहिये हणियो जविधानो, अधियां लाजत आय ॥ आधीनांमन  
पीमानामें, मायोयेनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर  
आगम, सूत्रसें ते नवजाय ॥ तत् सेवाते हणि सठताकुं, चेतन  
कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद शुद्ध ॥

॥ अंग इयारै चवदै पूरव गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र  
अरथधर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूर  
आगम पूरा नय निह्यै तारी जी, मुनिगुण धारी बुध विस्तारी  
पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद शुद्ध ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवन्दनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुद्ध  
शुचि चक्रसें, आदिम खय काधी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्तते,

त्रये अंतरजामी ॥ मानस इन्द्रिय दमनजून, समदम अन्निरामी  
 ॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण नरयो ए, पंचम पद मुनिराज ॥  
 तत्पदपंकज नमत दे, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ माछनर मति कहे ॥ ए देशी ॥

॥ निकपाया जगजन कहे, धारै चञ्चगति वसनसें रोस हो,  
 मुनिंदजी ॥ राग हीण त्रय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो  
 मुनिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै, सा० ठठै पूरव कोरु हो  
 मु० ॥ शत सोगम आगम करै, सा० लघु कालै गुण आदि हो  
 मु० ॥ २ ॥ स्त्यानहीनिद्रा उदै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रच  
 लानिझमें रही, सा० वारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थि  
 ति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो  
 पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥  
 ॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथे, सा० साधन पर वर जीव हो मु०  
 ॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु नवतु जगतीव हो मु०  
 ॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद गुड ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पालै दोष वयालीस टालै जी,  
 पट काया गोकुल रखवालै नव विध ब्रह्मव्रत पालै जी ॥ पंच म  
 दाव्रत सूधा पालै धर्म शुक्ल नजवालै जो, कृपकश्रेणि कर कर्म  
 खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुगल परियट्ट, अठ परमित संसार ॥ गंडिजेद  
 तव करि लहै, सब गुण आभार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशि असं  
 ख, नवसम पण वार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुये शिव  
 दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लछन अन्निराम ॥  
 दरसनकुं गणि हीरधर्म, अहनिस्त करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके वाग आंबो मोहि रहो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साध ज्ञायो री ॥ धर्म जिने  
श्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाजके काज सत्तम  
नरक जलो री ॥ तेण विना सुरलोक, ताते अधिक बुरो री ॥ २ ॥  
मिथ्या तापे तप्त, बोधही ढांढ लहेरी ॥ उपशम कायक वेद, ई  
श्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ जवसायर हे अपारं, फुण अस्ताघ क  
ह्यो री ॥ जसु लाजे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद  
जावे अप्रमाण, नाण चारित्र जलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाजें  
कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद थुई ॥

॥ जिनपसत्ततत्त सूधा सरथै समकित गुण उजवाले जी,  
जेद वेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावै जी ॥ प्रत्या-  
खयाने सम तुह्य ज्ञाख्यो गणाधर अरिहंत सूरु जी, ए दर्शनपद  
नित २ वंदो जवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ जाव मि  
लापसें जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ जव गुण पङ्कवि  
उहि दोय, मण लोचन नाण ॥ लोकालोक स्वरूप जाण, इक के  
वल जाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सत्तम  
पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर जाषित आगम ज्ञणिया, तत्व यथास्थित गमिया  
जी ॥ म्हारे जगजन तारु ॥ ते उत्तम वर नाण कहायै, जविजन  
अहनिश चाहै जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ जहाजह कुपंथा सुपंथा, पे-  
यापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणें  
जेश विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुति मति दोय वै इंडी तारु,

तेषां परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ उन्ही मण केवल हे वारू, जीव  
 प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयविजस्त वलें जग जाणें,  
 लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिज्जुवन पूजै जासु पसायै,  
 धारी शुभ्र अर्घ्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उधशम  
 ह्यश्री, चेतन नाणकुं विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें ऋवि  
 जन हरखे, निसदिम कुशलता निरखै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥  
 ॥ अय ज्ञानपद युई ॥

मति श्रुति इंडी जन्नित कदियै लदियै गुण गंजीरो जी,  
 आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि म  
 नपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकुं वंदो  
 पूजो ऋविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति युई ॥

॥ अय चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्त पसायें साहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करै शुभ्र  
 जाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि  
 कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दै सुत्क अमंद ॥ २ ॥ इत्यु  
 क्ति मान कसायघो ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरित्तकूं हीर  
 धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

॥ अय चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाज्ञास निरसंग ॥ सुग्यानी  
 साजलो ॥ टेर ॥ मूर्ति हीन चेतन करै, रूपी पुदगल रंग ॥ सु०  
 ॥ १ ॥ स्पर्धक कारण चर्गणा, कार्ये कारण जाव ॥ सु० ॥ कृत्वा जो  
 गसुधामता, लब्धा संख स्वजाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्यासा लघु जो  
 गमें, वृद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्ये वसु समयें लहे, अंते द्वीते  
 जाण ॥ सु० ॥ ३ ॥ सदकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥  
 सु० ॥ प्राता घस्र प्रकारता, सप्त पृञ्चतका तेन ॥ सु० ॥ ४ ॥ तद्दे  
 धन रूपी ज्ञानो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर घन मिल पद



धर्ममें, कुशल नवतु अजिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवर्न ॥

॥ अथ चारित्रपद शुद्धि ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावे जी, बारे  
जावना सूची जावै सागर पार ऊतारै जी ॥ खट खंरु राजकूं दूर  
तजीनें चक्रो संजम धारै जी, एहवो चारित्रपद नित वंदो आतम  
गुण हितकारै जो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीरुषजादिक तीर्थनाथ, तन्नव सिव जाण ॥ विहि अं  
तेरपि बाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो स  
ही, आदिक लब्धि निदान ॥ जेदें समता युत खिणें, दृग्घन कर्म  
विमान ॥ २ ॥ नवमो श्रीतपपद जलो ए, इञ्जारोध सरूप ॥ वंदनसें  
नित हीरधर्म, दूर नवतु नवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस जेद जण्या जिनराजे, बाह्य मध्यतणा जग काजे  
रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण नव सिद्धितणा  
वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्ता रे ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ स  
मता सहितें जिनतें ज्ञारी, जली कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारे  
शिवपदश्रे० ॥ जीव कनकसें कर्म कचौरा, दहे तप पावकका जोरा  
रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम हे रुद्धि, देव नरनी  
फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल हे तमनी रासी, तप  
ज्ञानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्स पसायें लहियें  
वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति डुकर फुल  
साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इञ्जा  
रोधन रूपी कहिये, तपपदही चैतन वहिये रे ॥ म्हा० ॥ पाठक  
आहीरधर्म कृपासे, नवपद कुसजाळूं जासे रे ॥ म्हारे शि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ तप पद थुई ॥

इन्द्रारोचन तप ते ज्ञाख्यो आगम तेहनो साखी जी, इय  
जावसे द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण  
परणित पेखी तेहिअ तपगुण दाखी जी, लवधि सकलनो कारण  
देखी ईश्वर सें मुख ज्ञाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ श्रुतिविंशति भिन स्तुति ॥

श्रीमद्रूपज्ञ सर्वज्ञ, वृषज्जांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देवाहा,  
नाजिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ बुगस्यादौ त्ववायेन, ज्ञानत्रय युते न  
वत् ॥ जनन्या मरुदेवाभाः, भावनं जवरं कृतं ॥ २ ॥ इति रूपज्ञ  
स्तुति ॥ अर्द्धताजितनायेन, गज लांगन शालिना ॥ जितसत्रु  
महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, जगवं-  
स्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोवेन, वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥  
इत्यजित स्तुति ॥ जितारिनृपतेर्वर्यात्, संजवः संजवाजिधः ॥  
सेनाधा नंदनो हेम, वरुणो गंधर्व लांगनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्ण,  
ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पूंगवो देवो, नित्यं दिसतुमांजिनः ॥  
॥ ६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं सार्धं, वीतरागं जग-  
त्पतिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, पुवगांकं हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनंदन  
नामानं, विशुद्ध हृदयं सदा ॥ यस्तौति परया जक्त्या, सनालोकेजि  
नंधते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेघाजिध धरि त्रोस, तन  
यो मंगलप्रदः ॥ क्रौंच लक्षण जूडेम, मरीचिर्मगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं  
सुमतिनाथेश ॥ सुमतिं तनु सत्तमां ॥ जविनां पुण्य कर्तृणां, स्वर्गं  
सौख्या वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र  
सत्कोक, नवद्युति धराधर ॥ धराजिव नृपोद्भुतः, पद्म लक्षण  
धारकः ॥ ११ ॥ जवावधौ जव संकीर्णो, उस्तरे पततां नृणां ॥  
त्राणाय सत्ततं देव, पद्मप्रज्ञ जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज्ञ

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वान्निघोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकजृत् ॥  
 प्रतिष्ठ नृप संजात, श्रामीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र  
 इव गंजीरः, कर्माणां छेदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, रतं  
 नौमि सदा विभू ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंडप्रज्ञ प्र  
 ज्ञोकांत, चंड लक्षणा संयुतः ॥ तमापतिष्ठ विज्ञान, तमोव्यूह वि  
 नाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोन्नव ॥ लक्ष्मणा  
 पुत्रमां स्वामि, न्नव केवल बोधजृत् ॥ १६ ॥ इति चंडप्रज्ञु स्तुति ॥  
 ( अत्रायश्चत्रबंधः श्लोकः ) ॥ संस्तुतोबोदवत्वाश्रु, सुरासुरनरेश्वरैः  
 ॥ सुविधिर्वीठितशर्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीजननीरा  
 मा, माननीयादिवौकसां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलांठिनः  
 ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ ( चामरबंधाविमौ ) ॥ श्री  
 मञ्जीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः ॥ ज्ञास्वत्सुवर्णावदेह, श्रीवत्सांहां  
 कधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांज्जो, सेवकानां वपुर्जृतां ॥ प्राक्क  
 तंवृजनव्यूहं ॥ इष्टंशंज्जोद्यहेविज्जौ ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तु  
 तिः ॥ विष्णुर्वेशार्कवदेवो, विष्णुपुत्रोहिरण्यजः ॥ श्रेयोवृद्धिकरोज  
 स्व, खड्गलांठिनजृजिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुन्सार्व, श्रेयांसश्रे  
 यसैः सेह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदंपरं ॥ २२ ॥ इति श्रेयां  
 स स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरोवर्तितरामीहा, ज्वतांरयदि ॥ ऊटितिष्ठे  
 दितुंचित्ते, ज्ञोन्नव्याः प्राप्तुमहरं ॥ २३ ॥ तदाज्ञजध्वमेनंहि, वासु  
 पूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिपांकंचरक्तजं ॥ २४ ॥ इ  
 ति वासुपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥ श्रीमद्विमलनाथेण्ड, कृतवर्मसमुन्नवः  
 ॥ शूकरांकधरस्यामा, पूत्रकल्याणदीधिते ॥ २५ ॥ चंडवद्विमलज्ञाने,  
 त्वदायस्मरणंविना ॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६  
 ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपुत्रस्य, सुयशःसिंह  
 सेनयोः ॥ देवस्यश्येनचिह्नस्य, वर्धानन्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ इन्द्रा

योपियस्यांतं, गुणानालेज्जिरेनहि ॥ अनन्तस्यगुणान्तस्य, कर्मोक्तं  
 नरः कथं ॥ २७ ॥ इत्यनंत स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापुत्रवज्रांक,  
 ज्ञानुवंशार्कसन्निभः ॥ कनकप्रज्ञसर्वज्ञ, धर्मनाथान्निधेश्वरः ॥ २९ ॥  
 तवागोपिपुरश्वारी, नृतलेयात्यशोकतां ॥ अनुत्तरफलाः संति, सत  
 संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधी  
 सं, नन्दनंमृगलक्षणं ॥ आचिरेयंसुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥  
 ॥ ३१ ॥ तंश्रीमद्वांतिनामानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां  
 वृष्टिं, विबुद्धाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः ॥ श्री  
 युतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यज्ञ ॥ सूरिभूपतिसंजात, छागल  
 क्णधारकः ॥ ३३ ॥ कुंशुनाथजिनेशस्य, तीर्थैकरजगत्पते ॥ मदीयं  
 पापसंदोहं, ज्ञवांतरकृतंघनं ॥ ३४ ॥ इति कुंशुनाथ स्तुतिः  
 सुदर्शननृपोद्भूतं, नंदावर्त्तिकसंयुतं ॥ अञ्जोजवन्निरालेपं, देवोपुत्रसु  
 वर्णज्ञं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे, धुर्य्यप्रभुतयाजिनं ॥ चरी  
 कर्मिनमस्तमा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १७  
 ॥ कुंजप्रजावतीपूत्रौ, नीलवर्णौघटांकनृत् ॥ जगन्मित्रश्चध्वान्त,  
 नासनाद्विदितःसदा ॥ ३७ ॥ उत्रत्रययुतोजाति, देवयोविष्टपत्त्रये  
 ॥ तस्यश्रीमद्विनाथस्य, स्मरलेनमुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मन्त्रिना  
 थ स्तुतिः ॥ सुमित्रनृपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुर्मल  
 क्णानृक्ष्म, दायकस्यामलज्जये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणक  
 र्मारिमंरुल ॥ देहित्वमेव्ययीजावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इ  
 ति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयनृपाल, कुलोत्तंसहिर  
 ण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकनृत् ॥ ४१ ॥ यस्ते  
 पंचजनोदेव, निन्दाचक्ररुतेश्वयं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्र  
 संशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेव  
 र्य्यं, समुद्विजयोद्भवे ॥ हरिवंसहरौशंज्ञौ, शंखाकिकमलप्रज्ञे ॥ ४३

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्वान धरो रे, ज्रविका न० ॥ मन वच काया कर  
एकंते, विकशा हूर हरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जरी अरु तंत्र घणे  
रा, इन सबकूं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य जं  
कार जरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अरुसिद्ध नवनिधि मंगलमाता, संपति  
सहज वरो रे ॥ लालचंद याकीबलिहारी, सुरतरु बीज खरो रे न० ॥ ३ ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाय रे, जी० ॥ नवपद  
महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो  
अपणे आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ करम  
निकाचित दूर करणकूं, सुंदर शुद्ध ऊपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन  
को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद थाय रे ॥ जी० ॥ इव  
जिन ज्ञे आगामी होंयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत  
सिद्ध नर आचारज, उवजाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व  
साधू मंगल ए पांचू, याहीसें दिव रमो२ ॥ जि० ॥ दरशन ज्ञान  
चरण तप उत्तम, याहीसें दिव दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज  
जज्ञ नवपदकूं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाल कहे यही सार  
जगतमे, नर द्वार मत जमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हूं प्रणमुं सिद्धचक्र सुज्ज ज्ञाव, दिव कारज सि  
द्धिनो लाधो एह ऊपाय ॥ तुज नाम पसार्ये आरति व्याधि पुलाय,  
इग तुज अनुग्रहथी सुख संपति मुज थाय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत न  
मित्थै सिद्ध सूरी उवजाय, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुहाय ॥

दुग्ध विधि चारित्तं बुध विषं तप मन ज्ञाय, ये नवपद ध्यावता नि  
रुपम शिवसुख थायं ॥ २ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री  
गुरु उपदेशे सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे ज्ञाप्यो एह विचा  
र, ज्ञविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंमार ॥ ३ ॥ जिनथरम अ  
नुरागी चक्रेशरि सुखकार, सेवकने आपे सुख संपति परिवार ॥  
दिव निद्रि उवष करि चारित्रनेदी मन ज्ञाय, जिनचंद सूरीसर  
खरतरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति शुद्धि ॥

॥ अथ जैतीसंयुक्त नवपद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

( प्रथम ) आसो सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ से उली सरू  
करे, कच्ची तिथि घटी होय तो ६ से सरू करे, वढी होय तो ८ से  
सरू करे, लेकिन आंबिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध  
करके मांगलादिकसे चित्रित करे, पीठे पट्टे पर सिद्धचक्र थापके त्रि  
काल पूजा करै. प्रजातसमें राईपम्कमणा करके पीठे वस्त्रोंकी  
पम्कलेहणा करै. जहां सिद्धचक्रकी थापना हे उहां आयके पांचे  
शक्रस्तवे देव वांटे, पीठे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव  
चैत्यवंदन करै, वासहोप पूजा करे, पीठे केसरचंदनसे पूजा करै.  
गुरु पास आयके अष्टुठिनिके पाठसे राई आलोवे, आंबिलका प  
चस्काण करै. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग हे इस वास्ते चावलोंसे  
उर गरमपाणीसे आंबिलका नियम करे. पीठे अरिहंतके बारे गु  
णोंको विचार कर नमस्कार करै, सो लिखते हैं. सब गुणोंमे श्वा  
मित्त्वमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करै ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

- ३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ६ ज्ञानमंजुल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ७ डुंडुभि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ८ तत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥
- ९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- ११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥
- १२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥ इति द्वादशत्रय० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नचूससिधेणं कहिके १२ लो-  
गस्तका कानसग्न करै. एक लोगस्त प्रगट कहे, पीठै स्वस्थानक  
जा के चैत्यवंदन करै, पञ्चखाण पार के आंवल करै. पहले वखत  
जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीठै मध्याह्न समय पांचे श-  
क्रस्तवे देव वांदै. गुणनो ( १००० ) ॥ नै ह्रीं एमो अरिहंताणं ॥  
इस पदका करै, श्रीपालचरित्र सुणे. पूण पहर दिन रहणेसे तीसरी  
वेर पांचे शक्रस्तवे देव वांदै. पीठै फेर चैत्यवंदन कर के तिविहार  
पञ्चखाण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रति  
क्रमण करै. आरती के वखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पह-  
ले आरती वगेरे करके पीठै पम्कमणा करै. ( सोणे के वखत )  
पहले शरियावही पम्कमके चैत्यवंदन करै, फेर रा. १ संयारा गाथा  
सुणें ॥ मिडा नही आवे जहां तक नव गुण स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रजात समे की सब करणी  
पहले मुजब करके सिद्धपदका लाल रंग हे इस वास्ते गेहूंकी रो-

टीसैं आबिल करै ॥ नै हँही एमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हज़ार गुणना करै, सिद्धपदका ८ गुण हे, ८ नमस्कार गुरु करावै सो लि० ॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

१ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥

२ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥

३ अव्यावाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥

४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥

५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥

६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥

७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥

८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टैगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नचूसति ९ कहेके आठ लोगस्तका काजसग करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, फेर पूर्वोक्त करणी करै ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसैं प्रजात कर्त्तव्य करै, आचार्यपद पीले वर्ण हे इस वास्ते चणाकी दावका आंबिल करै ॥ नै हँही एमो आयरि आणं ॥ इस पदका दो हज़ार जाप करै, आचार्यके ३६ गुण हे, उचीस नमस्कार गुरु करावै सो लिखते हे ॥

॥ अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥

२ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥

३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥

४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

५ गान्धीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥



- ७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
८ अपरिश्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१५ कर्मागुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१६ मृडुगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१८ रुजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
१९ छादस विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
२० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
२१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
२३ अकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
२४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥  
२५ अनित्य ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
२६ असरण ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
२७ संसार स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
२८ एकत्व स्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
२९ अन्यत्व ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
३० अशुचि ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥  
३१ आश्रव ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३२ संवर ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३३ निर्जरा ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३४ लोकस्वरूप ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३५ बोधदुर्लभ ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥

३६ धर्मदुर्लभ ज्ञावना ज्ञावकाय श्रीआ० ॥ इतिपटत्रिसत् आ०

॥ यह वृत्तिस नमस्कार करके अन्नतूससि० कहेके वृत्तिस

३६ लोगस्तका कानसग्न करे, प्रगट लोगस्त कहे. पूर्वोक्त करणी क्रमसें करै. इति तृतीय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं एमो उवज्ञायानं ॥ इस पदका २. द्वाार जाप करै. हरेमंगका आंखिल करै. उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २६ गुण लिख्यते ॥

१ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥

२ श्रीसुयगमंगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

३ श्रीगणांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०

४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

५ श्रीज्ञगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

८ श्रीश्रंतगन्दसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

९ श्रीश्रणुत्तरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१० श्रीप्रश्रव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

- १३ आश्रायणीपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १४ वीर्यप्रवाद पठनगुण यु० ॥
- १५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- १९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण यु०
- २१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २२ अविध्यप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २३ प्राणायामप्रवादपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २४ क्रियाविसालपूर्व पठनगुण यु० ॥
- २५ लोकविंशत्यार पठनगुण यु० ॥ इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणः ॥

इस तरे २५ नमस्कार करै, खमा हो के अन्नबूँ कहेके २५ लोगस्सका कानसग्ग करै, प्रमट लोगस्स कहेके पारे. पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

मुँ ह्रीं एमो लोए सव साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै. साधुपद काले वर्ण हे इस वास्ते नमद के बाकलोसैं आंबिल करै. सर्व साधुपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करै ॥

॥ अथ साधुपदके २७ गुण लिख्यते ॥

- १ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
- २ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
- ३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
- ४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

- ५ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥  
६ रात्रिज्ञोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥  
७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥  
८ अग्निकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥  
९ तेजकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥  
१० वायुकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥  
११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥  
१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥  
१३ एकैन्डीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥  
१४ वेइन्डीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥  
१५ तेइन्डीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥  
१६ चोइन्डीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥  
१७ पंचैन्डीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥  
१८ लोचन निग्रहकाय श्रीसा० ॥  
१९ कृमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥  
२० शुभ्रजावना जावकाय श्रीसा० ॥  
२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥  
२२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥  
२३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥  
२४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥  
२५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥  
२६ सीतादि द्वाविंशति परीसह सहण तत्पराय श्रीसा० ॥  
२७ मरणांतत्रपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुणा ॥

इस वजे २७ नमस्कार करै, २७ लोगस्तका काउसग करै,  
प्रगट लोगस्त कहिके पारे, पीठे पूर्वोक्त करणी करै. यह पंच पर

मेष्टि पदके सब गुण मिलाएसें १०८ होता हे, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते हे ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ठ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं एमो दंसणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करै

दर्शनपद सपेद वर्ण हे इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै, सम्यक्तके समसठ गुण चिंतवकर नमस्कार करै ॥

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसदर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थ ज्ञानृसेवनारूप सद० ॥
- ३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सद० ॥
- ४ कुदर्शन वर्जनरूप सद० ॥
- ५ शुश्रूषारूप सद० ॥
- ६ धर्मरागरूप सद० ॥
- ७ वैयावृत्तरूप सद० ॥
- ८ अर्हद्दिनयरूप सद० ॥
- ९ सिद्धविनयरूप सद० ॥
- १० चैत्यविनयरूप सद० ॥
- ११ श्रुतविनयरूप सद० ॥
- १२ धर्मविनयरूप सद० ॥
- १३ साधुवर्ग विनयरूप सद० ॥
- १४ आचार्य विनयरूप सद० ॥
- १५ उपाध्याय विनयरूप सद० ॥
- १६ प्रवचन विनयरूप सद० ॥
- १७ दर्शन विनयरूप सद० ॥
- १८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सद० ॥
- १९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूपसद० ॥

- २० संसारे जिनमत स्थित साध्वादि सारमिति चिं० ॥  
२१ शंकादूषण रहिताय सद्० ॥  
२२ कांक्षादूषण रहिताय सद्० ॥  
२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सद्० ॥  
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषण रहिताय सद्० ॥  
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय सद्० ॥  
२६ प्रवचनप्रज्ञावकरूप सद्० ॥  
२७ धर्मकथाप्रज्ञावकरूप सद्० ॥  
२८ वादीप्रज्ञावकरूप सद्० ॥  
२९ नैमित्तिकप्रज्ञावकरूप सद्० ॥  
३० तपस्वीप्रज्ञावकरूप सद्० ॥  
३१ प्रज्ञादयादिक विद्याभृत्प्रज्ञावक सद्० ॥  
३२ चूर्णाभ्रंजनादि सिद्धप्रज्ञावक सद्० ॥  
३३ कविप्रज्ञावकरूप सद्० ॥  
३४ जिनसासने कौसलता ज्ञूपण सद्० ॥  
३५ प्रज्ञावनाज्ञूपणरूप सद्० ॥  
३६ तीर्थसेवाज्ञूपणरूप सद्० ॥  
३७ स्थैर्यताज्ञूपणरूप सद्० ॥  
३८ जिनसासने ज्ञक्तिज्ञूपणरूप सद्० ॥  
३९ उपशम गुणरूप सद्० ॥  
४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥  
४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥  
४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥  
४३ आस्तिका गुणरूप सद्० ॥  
४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सद्० ॥

- ४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सह० ॥  
४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सह० ॥  
४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥  
४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥  
४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥  
५० राजान्नियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥  
५१ गणान्नियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥  
५२ बलान्नियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥  
५३ सुरान्नियोगाकारयुक्त श्रीसह० ॥  
५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥  
५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥  
५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्व मूलमिति चिंतनरूप सह० ॥  
५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यहारमिति चिंतन श्रीसह० ॥  
५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सह० ॥  
५९ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सह० ॥  
६० चारित्रधर्मस्याधारमिति चिंतनरूप सह० ॥  
६१ चारित्रधर्मस्य ज्ञाजनमिति चिंतनरूप स० ॥  
६२ चारित्रधर्मस्य सन्नित्तमिति चिंतनरूप स० ॥  
६३ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसह० ॥  
६४ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सह० ॥  
६५ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥  
६६ सचजीव कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥  
६७ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस०  
६८ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥ इति स० ॥  
॥ इस वजे समस्त नमस्कार कर खमाहोके अन्नरूप कहके

६७ लोगस्तका कानसग करै, एक लोगस्त प्रगठ कंहेके पारे, पीठै  
पूर्वोक्त करणी करै, इति षष्ट दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्त दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्त ॥ इस पदका २ हजार जाप करै,  
ज्ञानपद उज्वल वर्ण, तंतुलका आंघ्रिल करै, इकावन भेद ज्ञानपद  
के चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

- १ स्पर्शनेंड़ी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- २ रसनेंड़ी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ३ घ्राणेंड़ी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
- ४ श्रोत्रेंड़ी व्यंजनावग्रह मति० ॥
- ५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- ७ घ्राणेंड़ी अर्थावग्रह मति० ॥
- ८ चक्षुरिंड़ी अर्थावग्रह मति० ॥
- ९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
- १० मन अर्थावग्रह मतिज्ञानां० ॥
- ११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
- १२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
- १३ घ्राणेंड़ीईहा मति० ॥
- १४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
- १५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
- १६ मनेकरीईहामति० ॥
- १७ स्पर्शनेंड़ीअपाय मति० ॥
- १८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
- १९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥



- २० चक्षुरिंद्रीअपाय मति० ॥  
२१ श्रोतेंद्रीअपाय मति० ॥  
२२ मनैनापाय मति० ॥  
२३ स्पर्शनेंद्रीधारणा मति० ॥  
२४ रसनैंद्रीधारणा मति० ॥  
२५ घ्राणैंद्रीधारणा मति० ॥  
२६ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ॥  
२७ श्रोतेंद्रीधारणा मति० ॥  
२८ मनोधारणा मति० ॥  
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
३२ असंज्ञी श्रुत० ॥  
३३ सम्यक् श्रुत० ॥  
३४ मिथ्या श्रुत० ॥  
३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥  
३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥  
३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥  
४० अगमिक श्रुत० ॥  
४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥  
४२ अनंगप्रविष्ट श्रुत० ॥  
४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥  
४४ अणूणगामि अवधि० ॥

१५ बह्ममान अवधि० ॥

१६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

१७ प्रतिपाती अवधि० ॥

१८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

१९ रुजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः ।

२० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

२१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥ इति पं० ज्ञा० ॥

इस तरे ५१ नमस्कार करै, खना होके अन्नवृ० कहके एका वन लोगस्तका काउलग करै, एक लोगस्त प्रगट कहके पारे. पीठै पूर्वोक्त करणी करे. इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्त ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. चारित्र पदका उज्वल वर्ण है, इसीसे तंडुलका आंखिल करे, सत्तर जेद चारित्रपदके चिंतवके नमस्कार करे.

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राथ नमः ॥

२ मृपावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्मरूप चारित्रेभ्यो नमः ॥

७ आर्यवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृडताधर्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्मरूप चारित्रे० ॥

१० तपोधर्मरूप चारित्रे० ॥

- ११ संयमधर्मरूप चारि० ॥
- १२ सत्यधर्मरूप चारि० ॥
- १३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
- १४ अकिंचनधर्मरूप चा०
- १५ बन्धधर्मरूप चारि० ॥
- १६ प्रथ्वीरक्षासंयम चारि० ॥
- १७ उदगरक्षासंयम चारि०
- १८ तेजसरक्षासंयम चा० ॥
- १९ वाजरक्षासंयम चारि० ॥
- २० वनस्पतिरक्षासंयम चारि० ॥
- २१ बेइंद्रीरक्षासंयम चारि०
- २२ तेइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
- २३ चौइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
- २४ पंचेइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
- २५ अजीवरक्षासंयम चारि० ॥
- २६ प्रेक्षासंयम चारि० ॥
- २७ उपेक्षासंयम चारि० ॥
- २८ अतिरक्तवस्त्रजक्तादि परठन त्यागरूप संयम चारि० ॥
- २९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
- ३० मनसंयम चारि० ॥
- ३१ वाक्संयम चारि० ॥
- ३२ कायासंयम चारि०
- ३३ आचार्य वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३४ नृपाध्याय वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥
- ३५ तपस्वी वेयावृत्त्यरूप संयम चारि० ॥

- ३६ लघुशिष्यादि वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३७ गिलाणसाधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३८ साधु वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ३९ श्रमणोपासक वेद्यावृत्त्यरूप संयम चा० ॥  
 ४० संघवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४१ कुलवेद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४२ गणवैद्यावृत्त्यरूप चारि० ॥  
 ४३ पशुपंमगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४५ स्त्रीश्रासनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥  
 ४६ स्त्रीश्रंगोपांग निरीक्षण वर्जनरूप चारि० ॥  
 ४७ कुरुपंतरसहित स्त्रीहावज्ञाव सुणन वर्जन ब्र०  
 ४८ पूर्वस्त्रीसंज्ञोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०  
 ४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५१ श्रंगविज्ञूपावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥  
 ५२ अणसण तपोरूप चा०  
 ५३ उणोदरी तपोरूप चा० ॥  
 ५४ चित्तसंखेवरूप चा० ॥  
 ५५ रसत्याग तपोरूप चा० ॥  
 ५६ कायकिलेस तपोरूप चा० ॥  
 ५७ संखेखणा तपोरूप चा० ॥  
 ५८ प्रायश्चित्त तपोरूप चा० ॥  
 ५९ विनय तपोरूप चा० ॥  
 ६० वेपावच्च तपोरूप चा० ॥

६१ सिञ्जाय तपोरुप चा० ॥

६२ ध्यान तपोरुप चारि० ॥

६३ उपसर्ग तपोरुप चा० ॥

६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥

६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध नियहकरण चारि० ॥

६८ मान नियहकरण चारि० ॥

६९ माया नियहकरण चा० ॥

७० लोभ नियहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रज्ञेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करै. खमा हो के अन्नबूससि०

७० लोगस्तका कानसग करै. एक लोगस्त प्रगट कहे. पूर्वोक्त क  
रणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं एमो तवस्त ॥ इस पदका २ हजार गुणाना करै  
तपपदका उज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै. पचास  
ज्ञेद तपपदके चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ इत्वर तपज्ञेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यज्जणोदरी तपज्ञेद तपसे नमः ॥

४ अर्धंतरज्जणोदरी तपज्ञेद त० ॥

५ इव्यतपवृत्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

७ कालतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

८ ज्ञावतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

- १९ कायकिलेस तपजेद तप० ॥
- २० रसत्याग तपजेद तप० ॥
- २१ इंद्रिकपाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥
- २२ स्त्री पशु पंरुकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त० ॥
- २३ आलोचन प्रायश्चित्त तप० ॥
- २४ पन्क्तिमण प्रायश्चित्त तप० ॥
- २५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे ॥
- २६ विवेक प्रायश्चित्त तप० ॥
- २७ उपसर्ग प्रायश्चित्त त० ॥
- २८ तप प्रायश्चित्त त० ॥
- २९ जेद प्रायश्चित्त त० ॥
- ३० मूल प्रायश्चित्त त० ॥
- ३१ अणवस्थित प्रायश्चित्त त० ॥
- ३२ पारंचिय प्रायश्चित्त त० ॥
- ३३ ग्यान विनयरूप तप० ॥
- ३४ दर्शन विनयरूप तप० ॥
- ३५ चारित्र विनयरूप त० ॥
- ३६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥
- ३७ वचन विनयरूप त० ॥
- ३८ काय विनयरूप त० ॥
- ३९ उपचारक विनयरूप तप० ॥
- ४० आचार्य वेयावच्च त० ॥
- ४१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥
- ४२ साधू वेयावच्च त० ॥
- ४३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥

३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥

३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥

३७ संघ वेयावच्च तप० ॥

३८ कुल वेयावच्च त० ॥

३९ गण वेयावच्च तप० ॥

४० वायणा तपसेनमः ॥

४१ पृच्छना तपसे नमः ॥

४२ परावर्तना तपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥

४४ धर्मकथा तपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत्त तपः ॥

४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥

४७ धर्मध्यान चिंतन त० ॥

४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥

४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥

५० अर्च्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाश तपपद ज्ञेयाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करै. स्वमा होके अन्नबूससि० इत्यादि कहेके ५० लोगस्सका कान्तसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे. पीठै पूर्वोक्त करणी करै ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणैको गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुद्ध घनी देखेके अन्ना वस्त्र आभूषण पहरेके तिलक करके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथके मौली बांधके अकृत सुपारी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रौकड्य लेके नवकार गुणता जया गुरुके पास जावै. द्वादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करै

पीठे प्रमोदवंत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करनेकी विधि आगे लिखी है ॥ इति तपस्था ग्रहणार्थं गुरु पात जाणेकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उलीकी लिख्यते ॥

पंचवर्ण के अनाजसें सिद्धचक्रका मंजल करै. सिद्धचक्रकी चौ तरफ तीन गढ़ चूनीके आकार बनावे, पहिले गढ़में अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करै. पद१ के रंग सुजव गुण प्रमाणसें रत्न चढावे उर पंचवर्णके कृत्र, पंच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रंगके अपणेश रंग सुजव घीतुरेसे उरके चढावे पंचरंगी ए धजा चढावे, दूसरे बलयमें सोले श्रीफल अथवा सुपारी चढावे. तीसरे बलयमें ४८ ठूहारा चढावे, नव निधानोंकी जगे नव बने फल चढावे, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पक्कान्न रंगरंगके चढावे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें करै. उर जिनमंदिरमें बाहिरले मंजपमें ५ ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणें मंजल रचना करै. विस्तारसें सब विधि गुरुके हाथसें करै, नवपद जीकी पूजा पहाय कलस ढालै, धवलमंगल गीतग्यान गावै, वाजि त्र वजावै, महा मद्दोष्ठव उदार चित्तसें करै, मंगलदीप आरती प्र मुख करै. दूसरे दिन विसर्जन करै. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंजल विधिः ॥ अब दसमें दिन गुरु पात आयके उलीके तपकों पारै. तप पारणकी विधि आगे लिखी है तथा उद्यापनमें ग्यानज्ञक्तिके कारण ए पूजा ए शीटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए ठवणी नव जिल मिल ए रुमाल ए मोरा ए मिजासणा ए थापना ए चंद्रआ ए पू गीया ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रति मा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नव२ चीज बणावावे, शक्ति नदी होय तो यथाशक्ति रोकनाणी चढावे. देवपदका देवमें देवे, गुरुपदका गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावै, इत्यादिक यथायोग्य शुद्धक्षेत्रमें खरच करै. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥



॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ७ सँ लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम हे. उत्तमताका कारण एसा हे—वारे महीनामें तीन अठ्ठाइ महोत्सव आते हैं जिसमें चैत्र आसोजकी अठ्ठाइ तो सास्वती हे. आठमसँ पूनम तक इन दोनों महीनामें च्यारुं निकायके देवता नर ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर छीपमें जाते हे, (पुन्याहंर) कहते जये अष्ट ज्यसें पूजन करै, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें जक्ति करै, पीठै नवमें दिन अपणे २ जन्मकूं स फल मानते जये अपणे २ देवलोक जावे. इसी सुजव तीसरी अठ्ठाइ आसाठ चोमासेकी ( १४ ) पीठै ( ४९ ) दिन जाणेसें संवत्तरी पर्व साचवणेकूं ( ७ ) दिन तक अठ्ठाइ महोत्सव करै. लेकिन यह अठ्ठाइ सास्वती नही कही, कोइ वखत च्यारुं निकायके देवता एकठे होकर नहीजनी जावै, पहली पीठैजनी करलेवै ॥ यह नवपदजी की नुली शाश्वती अठ्ठाइसेंही की जाती हे, नवपद माहात्म अधि कार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसें उद्धार करके ज्यजीवोके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली जगवान जद्रवाहूस्वामीनें इसको प्र सिद्ध करा, इस वास्ते ज्यजीवोको यह तप प्रमाण हे, नर जो अजनी अपनी अपनी कुयुक्तिये लगाकर खंन करते हैं सो तीर्थ-करका वचन उत्थापणेसें अनंतसंतारमें जभेगें, सूत्रोंमें जगवंत महावीरने फुरमाया हे, हे गोतम वीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हैं नर नन सूत्रोंमेंसें एक हरफकेजनी यथार्थ अर्थकूं तोरुके नया कटपन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा ( सूत्रनाम किसका हे ) ॥ सुत्तंगणहररइयं, तहेवपत्तेयबुद्धर इयंच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अजिन्नदसपूविणारइयं ॥ १ ॥ ( अर्थ ) गणधरोका रचा, प्रत्येकबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियो का रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोका रचा जयेकूं जगवानने सूत्र कहा हे. सूत्र १, पयन्ना २, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक

दस नाम जगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा हे, एकार्थ वाचक हे इस वास्ते जइवाह उमास्वातिवाचकादिकोके वनाये निर्युक्त वेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहिये, एक क्रोरु पुस्तक श्रुतकेवलीयोके वनाये अर्चा जंमारोमे मौजूद हे ॥

॥ अय अष्टापद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि ( ७ ) से लेकर पूर्णमासी तक ( केइयक जव्यजीव ) अष्टापदजीकी उली करते हैं ( जिसमें ) पम्कमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी उली तुल्य करै. ( इतना विशेष हे ) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः ( इस पदका ) २००० गुणना ( वा ) बीस जाप करै. अरिहंतप दके १२ गुणका नमस्कार करै, १९ लोगस्तज्ञा कान्तसग्न करै, आं विल ( वा ) एकातणोका पञ्चस्काण करै, पीठै पूणमासीके दिन अष्टापदपर्वतकी आपना करै, मंरुल रचे, सो विधि लिख्यते हैं ॥

पूर्व

१ । २ ।

त्रिवेदिकमध्य

असोकवृक्ष

वर्षः

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

दक्षिण

( चत्तारि दक्षिणाए, पश्चिम उ अठउत्तराश् ॥ दस पुवाए दो अठ, वंगमि वंदे चउबीसं ॥ १ ॥ पुवा इं उत्तजमजियं ॥ दक्षिणउ सं जवाइ चत्तारि, पश्चिम सुपासमा इ, धम्माइ दसउत्तरउ ॥ २ ॥ ) इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम यथाक्रमसें चौबीस कोठे मंरुल में वणाणा. इहां कांकणामोरे मो ली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके मंरुलवत् जाणना. नवग्रह दश दग्पाल आपना करे. पीठै एक२ काव्य पद२ के एकेक कोठेमें एक२

२५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

३।७।ए।१०।१।१।२।३।३।४।४।

पश्चिम

जिनेश्वरके नामके चिठी उस पर बरक चढा सुपारी चढावे.  
एवं ॥ २१ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनामयजिनेशत्वं, नद्यायत  
सितांशुकः ॥ यथाकुमुदतीनेता, नद्यायतसितांशुकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं  
श्रीं अर्हं ऐं श्रीरुषभदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठस्वाहा ॥ १ ॥  
उपाध्वमजितंज्ञया, कंदधानामनेकपं ॥ प्रणतोद्योधितंज्ञान, कंद  
धानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजितस्वामी० ॥ २ ॥  
श्रीशंभुवप्रपन्नाये, समयंतेसदादरात् ॥ तेसंतारवनान्मुक्ति, समयं  
तेसदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसंभुवस्वामी० ॥ ३ ॥  
येन्ननंदनतेतीर्थ, राजपादसज्जाजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, राजपा  
दसज्जाजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअन्नि० ॥ ४ ॥ पूजि  
तांहीद्वयीमुक्तये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनाहः, कांतारा  
जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्मप्रज्ञ  
सुदृष्टीनां, जूरिशोभातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांसिपूर्वेव, जूरिशोभात  
पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपद्मप्रज्ञ० ॥ ६ ॥ सुपार्श्वे  
तत्श्रुतंश्रुत्वा, दर्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्पकोप  
क्रमानलां ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुपार्श्वे० ॥ ७ ॥ जवांश्वंद्र  
प्रज्ञेण, यैरजाजिसमुन्नतः ॥ यैरजाजिसमुन्नतः ॥ ८ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीचंद्र० ॥ ८ ॥ सुविधेत्वद्विधिंप्राप्य, प्रमाद्यंत  
समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रियंश्रस्त, प्रमाद्यंतसमाहितः ॥ ९ ॥ ॐ  
ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुविधि० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलत्वाये, देवसंपन्न  
केवलं ॥ अपिमुक्तिर्नवेतेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
अर्हं ऐं श्रीशीत० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूज्जाजां, परमोक्षगतिर्नवा  
न् ॥ अनंतानसत्वविश्रांतं, परमोक्षगतिर्नवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
अर्हं ऐं श्रेयांस० ॥ ११ ॥ वासुपूज्यनवस्वरी, नीरजारूढसक्रमः ॥ हर  
त्वंविरहंमोहं, नीरजारूढसक्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वंधे, रंजयंतिमनोज्ञं ॥ अपि  
 दुर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धे ऐं श्रीं वि  
 मल० ॥ १३ ॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्र  
 योलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धे ऐं श्रीं अनं  
 त० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्मजि  
 नद्धर्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धे ऐं श्रीं धर्म० ॥  
 १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनां देहि, सारंगविदधेधृतिं ॥ शर्मकर्मततेरंक,  
 सारंगविदधेधृतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धे ऐं श्रीं शांति० ॥ १६ ॥  
 कुंशुनाथस्तुपंथानं, विधुतारोवृषादृतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, वि  
 धुतारोवृषादृतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धे ऐं श्रीं कुंशु० ॥ १७ ॥  
 येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोअरनाथकुधीर्जव्या, व  
 नवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धे ऐं श्रीं अर० ॥ १८ ॥ नां  
 ह्रिपद्मसुतःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेज्जियतेमद्धे, प्रतिपन्न  
 सुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धे ऐं श्रीं मद्धिस्वामी० ॥ १९ ॥  
 श्रीसुव्रतजिनाधीश, मरुमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद्ध, मरु  
 मालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धे ऐं श्रीं मुनि० ॥ २० ॥  
 देव्योपित्वहुणोज्ञाना, सहामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेज्जक्त्या,  
 सहामंदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धे ऐं श्रीं नमि० ॥  
 २१ ॥ तृष्णातापात्वयावर्षे, शंमितादानवारणा ॥ श्रीने-  
 मेजनतांराध्व, शंमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धे  
 ऐं श्रीं नेम० ॥ २२ ॥ पार्थदेवसदाकृत, महाद्वारतरंगिताः ॥  
 नाट्यंतिचरित्रंते, महाद्वारतरंगिता ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धे ऐं श्रीं  
 पार्थ० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ वि  
 ब्रन्नमेपुनिस्तीमां, तत्त्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धे  
 ऐं श्रीं वीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठत स्वाहाः ॥ २४ ॥ पाठे

चोवीस माहाराजकी पूजा करावै, पीठै बलवाकुल देके दिग्पाली  
को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक  
जया हे, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरुष गुरुमुखसैं समझके जल  
जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोत्सव करै, एसेही रुद्धिंत  
श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब जगवंतके कल्याणक जो जो  
होय उसका उत्सव करणा, एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधि-  
श्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके ज्यवनकल्याणकसैं लेकर नि-  
र्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महो-  
त्सव पूजन करणा चाहिये, इससैं धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें  
परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रोपूनमपर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते हे।

प्रथम चावलके पूंजसैं सेत्रंजयपर्वतको स्थापन करै ( तिस  
पर ) पट्टा रखके श्रीपुंरुकीक गणधर ( वा ) श्रीरुषभदेवस्वामीका  
बिंब स्थापन करै, अकृत मोतियोंसैं पर्वतको बधावै, केसरचंदनसैं  
पर्वतको पूजै, सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रद  
क्षिणा देवे (पीठै) पूजन सरू करै (यथा) दश (१०) बीस (२०)  
तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुष्पदामेणलदर्श ॥ चउठठठअठम-  
दसमदुवालस कलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसैं पूजनक  
अधिकार लिखते हैं, एकाग्र चित्तसैं अष्टमंगलीक आगे रखके  
श्रुद्धोदकसैं मूलप्रतिमाको न्हवण करावै, पीठै श्रीसंघ स्वप्ता होवे  
( १० ) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाल  
चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै, यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि  
सब चीज उत्कृष्टसैं दस १ जघन्ये नारेल १ सुपारी १० नर फल

फूल यथासंभव चढावै, धूप खेवै, कपूरकी आरती करै, पीठै सिद्ध  
 गिरी गुणनम्रित चैत्यवन्दन करके पांचे शक्रस्तवे देव वाँदें, १० ख  
 मासमण देके ( श्रीसिद्धकेश्र पुंरुरीक गणधराय नमः ) इस पदका  
 १० वेर नमस्कार करै, पीठै ( श्रीसिद्धजय पुंरुरीक आराधनार्थ करै  
 मि काउसगं अन्नबूससि० ) कहके १० लोगस्सका काउसग करे  
 (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुत उठव होय वखत कम रहे तव  
 एक लोगस्सका काउसग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका  
 स्तवन केइ ) पीठै अनेक प्रकारका वाजित्र बजावै ॥ इति प्रथम  
 पूजा विधि ॥ अब इसी तरै ( वीस । तीस । चालीस । पच्चास ।  
 यह चारों पूजाके जेद जाण लेणा ( इतनाहो विशेष हे ) दूसरी  
 पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामें १०  
 की जगे ३० की विधि करै, चोथी पूजामें १० की जगे ४० की  
 विधि करै, पांचमी पूजामें सब विधी ५० की करै, तथा ( सिद्ध  
 केश्र श्रीपुंरुरीकाय नमः ) इस पदका दो हज़ार गुणनो करै, उ-  
 त्कृष्टें पांचू पूजामें जुदीर धजा चढावै, जघन्यसे पांचू पूजा किये  
 पीठै १ धजा चढावै । यह तप गुरूके मुखसे लेके जघन्य १ वर  
 स, ज्यादा हो सके तो ७ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त  
 तपस्वा करै, गुरूके मुखसे उपदेश सुनै, संपूर्ण तप हुआं पीठै  
 सिद्धगिरीकी जात्रा करै, ग्यानपूजा करै, गुरुजकी करै, सा-  
 दमीवञ्जल करै ( यह ) चैत्रीपूनमके दिन श्रीरुपजदेवस्वामी  
 के प्रथम गणधर श्रीपुंरुरीकजी पांच कोनी साधू साथ अक्षय  
 सुखको प्राप्तजये. ( इतवास्ते ) जरत प्रथम चक्रवर्तीने चैत्री  
 पूनमको आराधन करके ( यह ) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध कि  
 या, यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणसे इस जवमें अनेक सुख  
 संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोंके पुत्र पुत्रादिककी वांछा पूरण होय, उर

आधिष्याधि सोग संताप सब दूर होय, परन्तवमें देवादिक शक्ति प्राप्त होय, क्लीणकर्मी होयसे अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रोपूनम स्तवन लिख्यते ॥

( ढाल ) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसानलै, पुंरुगरि रे गार्स हूं सुन्न ज्ञानलै ॥ मति सुरगिर रे सहस जीज जो मुख दुवै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ ( उल्लाखो ) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिराचना गुण वै अनंता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण ज्ञाषियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःखदूरैराखियै ॥

१ ॥ ( चाल ) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरे चक्रवर्ति नरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंरुरीक गुणगण निलो, समदमरस रे विनय विवेक गुणै जलो ॥ ( उल्लाखो ) गुण जलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संजम शिवपुरो, पुंरुरीक गणधर प्रथम विहरै सुमति गुप्तै संचरी ॥ पण कोमि साथे विमलगिरिवर मुगति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंरुरीक कहाव ए ॥ २ ॥ ( चाल ) हिव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सेत्रुंजे रे आराध्यां फल हुवे घणो ॥ मनसुद्धे रे आपणपै ध्यानक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ ( उल्लाखो ) ते पुन्य पामे दान तप जप धर्म ध्यान मने धरै, बहु ज्ञाव ज्ञतै त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करै ॥ ज्ञावना ज्ञावै तेण दिवसै पंचकोनि गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ ( चाल ) दस वीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे श्रावक निरती सरबही ॥ चउघठे रे अठम दसम डवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए मुज मन वसै ॥ ( उल्लाखो ) मन वसै पूजकपूरधूपै मासखमण फले वली, सामन्न

॥ ३ ॥ ( चाल ) दस वीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे श्रावक निरती सरबही ॥ चउघठे रे अठम दसम डवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए मुज मन वसै ॥ ( उल्लाखो ) मन वसै पूजकपूरधूपै मासखमण फले वली, सामन्न

धूपै परकनो फल जे करे मननी रली ॥ द्विव पूजनी विधि जेम  
 गुरुमुख सुणीश्रवै परंपरा, ते मोह माया कपट ठंकी सुणो ज्वि  
 यण सादरा ॥ १ ॥ ( ढाल ) तंडुलरासि विमलगिरि आपी, तसुं  
 ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी  
 आपी निवेरो ॥ ५ ॥ तेजुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल  
 दूर करीजै ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचा  
 चौ ॥ ६ ॥ मंगलोक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूरै करि आठ ॥  
 प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥  
 कृष्णा अर्ध नवकार गुणंता, दस२ जैती तिलक करंता ॥ माला  
 पुष्प पूंगीफल ढोवो, मेरु जरण वर धूप उरकेवो ॥ ८ ॥ ( ढाल )  
 शक्रस्तथ पांथे देव वांदै, जयन्यना वंदण पाप ठैदे ॥ दसे नमस्का  
 र करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेंइ सेती ॥ ९ ॥ आराधिव  
 काजे काजसग, जिणे किये जाजै कर्मवग ॥ लोगस्तज्जोय दसे  
 वखाणु, वेला प्रमाणे अहिएग आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज  
 एह, इसी परै बीजा च्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजै,  
 एक चित्त सूधै शुद्ध पून्य कीजै ॥ ११ ॥ धजातणी रोप तिहां करी  
 जे, एकेरु पूठे अग्रवा गिणियै ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पर्वा  
 प्रभु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ ( कलश ) इम करिय पूजा यथा  
 योगै संधपूजा आदरो, साहमोवज्जल करो ज्विका जवत्समुद् ल  
 लावरो ॥ संपदा सोदग तेह मानव रुद्धि वृद्धि वहु लहै, श्राभ्रमर  
 माणिक सीस सुपरे साधुकारति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्री चै०स्त० ॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करग विधि लिख्यते ॥

स्तवन पढ़ली बेने स्तवनोमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुद्ध  
 घनी शुद्धदिन गुरुके पास नंदीश्वरतपत्रहण करे. नंदीश्वरदीपके च्यारुं  
 दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षाये अमावस्य (५२) श्रावन उपवात



करै, जिस दिन जो माहाराजके नामका उपवास होय उसही नामका १००० गुणना करै, सो लिखते है ॥ १ श्रीरुषभाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ( यह ) च्यार नामकूं ४ वेर ऊलटा, ४ वेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणसें एक बुली होय, ४ बुली करणसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजब ऊजमणा करै, नंदीश्वरद्वीपका मंरुल वणावै, पूजा करावे, इत्यादि महोच्चवकरके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साहमीवह्वल करै, मंरुलकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तैरे २ पहारकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसा में च्यार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमें १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे, इनकी पूजामें ५२ थापना, ५२ नारैल, ५२ पान नागरबेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे, क्रमसें एकेक काव्य पढके जल चंदनादि अष्ट ५ व्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैशाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महानेमें मिति वैशाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध हे, इस दिन श्रीरुषभदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीठे बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें श्कुरससेती जया, उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साहीबारे कोमि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान २ एसी नदघोषणा ४, देवउंडुनी वाजित्र ५, एसे पांच इय प्रगट किये, श्रेयांसकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबको मासम नई. इस दिनके प्रजावसे श्रेयांसकुमार अक्षयसुखको प्राप्त जया, इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी हे. इस पर्वके आणसे वस्त्र आभूषण पहरके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसे पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पीवै गुरुके मुखसे एकासणादिकेक पञ्चस्क्राण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरुको वहिरायके सब कुटंब समेत जीमें, जुर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वको जो जव्यजीव सेवन करते रहेंगे उशोका तपतेज हमेसां बढ़ता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ठ मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ठ ऋषणत्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन हे इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जो श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने घरमें गंटे. इस शांतिपूजाके कराणसे मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कञ्ची श्रीसंघमें प्राप्त न होय ( अथवा ) किसी आवकके घरमें रोग चाला रहता होय तो ( वा ) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव कराणा चाहिये. ( इससे ) आधि व्याधि अहादिककी पीना सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्तन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आपाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ आपाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसे पर्व प्रतिद्ध हे सो लि० हे. ॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविक्षेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, जव्याश्रतुर्मासकर्मनानि ॥ १ ॥ ( अर्थ ) जो आपाढानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

मंज्वानि अलंकारनूतानि दिद्यंते ॥ अहो नव्य प्राणी जीवो यह सामायकको आद लेके जो धर्मकृत्य हे सो चोमासेके मंज्वान हे, अर्थात् अलंकार समान हे. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव सामायक पम्पिक्रमणा पोसा करै, कोइ जगवानके मंदिरमें नाना प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पालै, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसें वण आवै सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन कोईजी प्रकारसें धर्मका उद्योत करणा चाहिये. जिससें सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट होय, नर चोमासी ( १४ ) के दिन सब मंदिरोंमें दर्शन करणेको जाणा, पांच शक्रस्तवसें देववादै, पीठै शुद्धके पास जाके चोमासे पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका सोगन लेवै, सांजकूं चोमासी पम्पिक्रमणा करे. इस मुजब काती चोमासे फागुण चोमासे कौंजी सेवन करै ॥ इति चतुर्मासपर्वाधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ नव्यजीव मम्मार्इ आदि क्षेत्रोंमें तरेश की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चोमासेपर्वका उद्योत करते हैं, इस माफक सब जगे तरेश की पूजा कराणी चाहिये. नर देस देसमें श्रावणमास इस महीनेमें केइ तरेकी तपस्यायें करती हे. जिसमें उत्तमफलकी देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रंथसे उद्धरण करके संक्षेपविधिसें इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ बुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमह १, एकासण १, नीवी १, आंवल १, उपवास १,  
( यह १ उंली ) इस तरे पांच उंली करै. तपोदिन २५. ऊजमणें  
२५ लाडू चढ़ावै ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १, आंवल १, उपवास १, इस तरे

उत्ती च्यार करै, तपोदिन १६, ऊजमणें १६ लडू चढावै ॥ इति कपायजयतपः ॥ २ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे उत्ती ३ करै, तपो दिन ए, ऊजमणें ए लडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३, ऊजमणें ज्ञानपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतप ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३, ऊजमणें गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अठम १, ठठ, १, उपवास १, एकासणं १, एकलठाणो १, दत्ति १, नीवी १, आंबिल १, यह एक उत्ती, इसी तरे उत्ती आठ करै, तपोदिन ८८, ऊजमणें रूपेका वृद्ध, सोनेका कुहामा करायके ग्यान खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूततपः ॥ ७ ॥

जाइवा व.दे चउथसैं लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकासणा अथवा विआसणा करै, घरदेरातर आगे अथवा अठे ठिकाणें कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल सदा कलसमे जैरै, संवत्तरीके दिन कलस ऊपर नारेल रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै ॥ इति अक्षयनिधि तपः ८ ॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै ( श्रीवासुपूज्यस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका २००० गुणना करै, गुरू के पास स्तवन सुणे. ( सो स्तवन आगे लिखेंगे ) ऊजमणें ज्ञानके उपकरणसैं ज्ञानज्ञक्ति गुरुज्ञक्ति करै, इति रोहिणीतपः ॥ ९ ॥

सुदिपदके पांचमके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पाच

एकासणादिक तप करै. अंबिकादेवीकूं वेस चढ़ावै ॥ इति अंबिकातपः ॥

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त उपवास करै. इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारणें आंबिल ८, एवं दिः १६. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै. इति सर्वोत्सुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. ऊजमणें सोनेका अथवा रूपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढ़ावै ॥ इति सौभाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पनिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसें पूनम पर्यंत (१५) उपवास करै. जो तिथि जूले सो तिथि उर करै. ऊजमणे एकसो बीस लक्ष्मी मंदिर चढ़ावै, स्नात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसंपतितपः ॥ १४ ॥

वरसातका च्यार मास उर पोष, चैत्र, यह षट मास टालके छोटी पांचमतप सरू करै. अंधारी उजवाली पांचम मास ५ लग एकासणादि तप करै. ऊजमणे ज्ञानपूजा करै ॥ इति छोटी पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै. उपवास के दिन देव वांदणादिक क्रिया करै. ऊजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोपकरण पकान फल कलशादिक पांच ५ चढ़ावै, सत्तरजोड़ी पूजा करावै, साहमी बहल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पनिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकासणादि तप करै. अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नेवेद्य चढ़ावै. इस तरै वरस १ तप करै. ऊजमणें चावलोंसें अशोगवृक्ष लिखके पूजा करै ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आषाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण वदि ७ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीआ

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलसे लोकनाल वणाके सां ते राज सात पावनी करके उसपर सिद्धकैत्र ( वसकों ) सोनेरत्न का मुगट चढावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १७ ॥

आसोज सुदि ७ तक एकाशणादि तंपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढावै, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावनी, इ सं तरे आठे वरते आठ पावनी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिये. ऊजमणें अष्टापदपूजा करावै, पकवान फल सर्व चोबीस चढावै ॥ इति अष्टापदपावनीतपः १८ ॥

सुदि पक्षके ७ आठमके दिन उपवास अथवा आंबिल करै. ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लहुं देव आगे चढावै ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास अथवा बीस एकासणा करै. ऊजमणें अखंभित घी धारपूर्वक ती ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंभितदशमीतप ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशण, नीवी, आंबिल, वा उपवास ११ करै. ऊजमणें ११ अं गको पूजा करै ॥ इति श्रीङ्गारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासणादि १४ तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै ( प्रथम तेले ) सिखरणसे पारणा ( दूसरे तेले ) सारेका पारणा ( तीसरे तेले ) जापशीका पारणा ( चौथे तेले ) लहुंलें पारणा ( पांचमें तेले ) खीरसे पारणा. पारणे प्रथम साधुकों बहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृततेलातपः ॥ २४ ॥

अठम १, एकासणो १, अठम १, एकासणो १, अठम १,  
एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आंबिल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावै तो  
सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाज होय ऊगनेमें जीत होय ॥  
इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकांतरै करै ॥ इति पंचमहाव्रततपः २७ ॥  
उपवास १, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १, उपवास  
१, एकासणो १, नीवी १, आंबिल १, व्यासणो १.

एवं दिन १० पूनमसें सरू करै. पारणौ साधु पण्डितान्नै, ग्यानपूजा  
करै ॥ इति दालिहरणतपः ॥ २८ ॥

एकेंडिये उपवास १, बेइंडिये ठठ १, तेंडिये अठम १,  
चौरिंडिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, ठक्कायें चतुर्दसम १, तप करै.  
ऊजमणें सुखनीसें ६ स्त्री जीमावे ॥ इति ठक्कायआलोयणतपः ॥ २९ ॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आंबिल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरमुखतपः ॥ ३१ ॥

ठठ पांच करै ॥ इति पूत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अठम पांच करै ॥ इति पुत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकांतर करै ॥ इति ज्ञर्त्तारसुखतपः ॥ ३४ ॥

॥ नीवी पांच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पांच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६ ॥

॥ एकासणा पांच एकांतर करै ॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणकी श्रावक  
एयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतोके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उदा  
र करके संक्षेपविधिसें इहां लिखी हे. ज्यादा शक्ति होय तो पूजा  
साहमीवञ्जल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातुं शुभक्षेत्रोंमें अपना धन

खरच करै, धर्मका उद्योग करै ॥ इस तपस्याके प्रज्ञावसें इस जन्ममें संसारसंबंधी दुःखदायिनी दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा होय, परजन्ममें देवादिक रुद्धी प्राप्त होय. ( किंवहुना ) इति वृष्ट कर तपस्याविधिः ॥

॥ अथ भाद्रपद मासे पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ ज्ञाञ्च महिनेमें मिति ज्ञाञ्चा सुद ४ तथा केइ मतकी अपेक्षासे ५ तिथिओं संबन्धरी नामसें पर्व प्रसिद्ध हे ( प्रथम इस संबन्धरी पर्वकी महिमा कहते हे ) जेसें जगत्रमें अनेक मंत्र हे पर नवकार समाप्त कोइ मंत्र नही १, तीर्थोंमें तेशुंजय समान कोइ तीर्थ नही २, पांडवानमें अज्ञयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नही ३, गुणमांहे धिषयगुण ४, व्रतमांहे ब्रह्मव्रत ५, नियममें संतोष नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमांहे गंगा जल ९, अलंकारमांहे चूनामली १०, उद्योगोंमें चंद्रमा ११, तेजमांहे सुर्य १२, गजमें एरावण १३, दैत्यमांहे रावण १४, तुलसीमें पञ्चदशज्जिह्वोर १५, नृत्वकलावंतमांहे मोर १६, वनमांहे मंदन १७, काष्टमांहे चंदन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९, न्धावशंतमें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीता २२, शास्त्रमांहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५, बाजित्रमें जंजा २६, स्त्रीमांहे रंजा २७, धातुमें स्वर्ण २८, दाता में कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृक्षमें कल्पवृक्ष ३१, जलमें अमृत ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एकश् चीज उत्तम होता है. इस तरे सर्व पर्वोंमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री संबन्धरी ( दूसरा नाम ) श्रीपर्यूपण पर्वको जगवंत श्रीमाहावीर स्वामीजीने उत्तम वर्णन किया. अथ श्रीपर्यूपणपर्वके आणसें प्रथम श्रीसाधुके करणे योग्य धर्मकृत्य कहते हे ॥ संबत्सरी प्रतिक्रमण



करै १, लोच करावै २, तैलेका तप करै ३, सर्व मंदिरोंमें जगवंत  
 की ज्ञावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावै ५, यह पांच कारण  
 के वास्ते श्रीतीर्थकर गणधरोनें पर्यूपणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब  
 शुद्धश्रावक संवहरी पर्व आराधन करणेकूं आठ दिन अठाइ मही  
 न्व करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी  
 ज्ञक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रीजागर  
 ण करावै, प्रजातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर यथा  
 योग्य सत्कार सन्मान करै, पीठै पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र  
 आजूपण पहरेकै मुगट ठत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रम  
 हाराजका रूप बनाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मं  
 गलीकरचित थालमें पुस्तक धरके अपने दोनुं हाथमें थाल धरके दोनुं  
 तरफ पुरुष अष्टा वस्त्र आजूपण पहरेके चमर ढालै, अनेक प्रकारके वा  
 जित्र वाजते जये, दान देते जये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन  
 करते जये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै, गुरु पिण  
 खमा होके विनयसंयुक्त पुस्तकको नमस्कार करके आगे रखै, श्रीसं  
 घके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जगे अमारिपरुह  
 वजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोवी जमजूजा इत्या  
 दिक सबका आरंज ठोडावे २, सुपात्रदान देवे ३, बिदाम सुपारी  
 नालेरादिक की प्रजावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार ज्ञक्तिसें  
 पूजा करै, चौदसके दिन संवहरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकोठे हो  
 कर सर्व मंदिर दरसन करणेको जावै ५, सचित्तका परिहार करै  
 ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउठ, उठ, अठमादिक तप करै ८, अपने  
 वित्तके अनुसार जन्मकल्याणकका उन्व करै ९, अठपहरी पोसा  
 करै १०, संवहरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघ  
 सें खमावै १२, पारणेके दिन पोसह पनिकपणेवाले साधमीजाइ-

घोंकी जक्ति करै १३, गुरुजक्ति करै १४, संबञ्जरी दान देवै, साहमी वञ्जल करै १४. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसे आराधन करलोसे आठ जवसे मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता हे ( उर ) केवक जव्यजीव अत्यंत शुद्ध जाव धरतेजये अठमादि तप कर के युक्त कल्पसूत्रजीकों वांचते हे उर सुणनेवाले प्रमाद निडा वि कथा ठोके अठमादि तप करके एक चित्तसे शुद्धजाव रखके इक वीस बेर सुणते हे, सो जव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे जव सि द्विस्थानकों प्राप्त होते हे ॥ इस पर्यूपणपर्वका महोजव जो जव्य जीव करते हे सो धन्य हे, धर्मके प्रजावीक हे, अपनी लक्ष्मीसे धर्मका उद्योत करते हे. उत पुण्यात्माकों देव सहायता करते हे उर नमस्कार करते हे ॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते हे ॥ यह कल्पसूत्र नवमेपूर्वसे उद्धरण कियाजया दशाश्रुतस्कंधका आठमा अध्ययन हे. सर्व श्रीसंयके मंगलके कारण श्रुनकेवली श्रीनद्रवाहु स्वामी प्रसिद्ध किया हे. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय हे. जेसे सर्व नदीके बालू के कण होय उससे ज्ञी एक सूत्रके अनंते विषय हे. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य इज्जार जीज करके कहे तोज्ञी महात्मका एक अंस ज्ञी कह सकता नही. एसा इस पर्वका महात्म जाए जो जव्यजीव शुद्ध जावसे सेवन करंगे सो अनेक तरे से रुद्धि वृद्धी सुख सौभाग्य कों प्राप्त होंगे. उर परजवमे देवादिक रुद्धि पाषके मुक्तिसुखकों प्राप्त देंगे ॥ इति पर्यूपणपर्वाधिकारः६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मित्ती आसोज सुदि ७ से लेके आसोज सुदि १५ तक नवपदजी की नञी तथा अष्टापदजीकी नञी विधिसंयुक्त करै. सो सत्र विधि पढ़ली लिखी हे उसी माफक करै ॥

॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महीनेमें मित्ती कार्तिक वदि अमावस हे सो दी-

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध है. यह दीपमालिकापर्व कवसें जय सो लिखते है. चौबीसमें तीर्थकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त सा साध्वी साथ विचरते थके अंतकी चोलासी मध्यमपावापुरीमें आयके रहे, उहां आगामीकालकी सर्व बात जयजीवोंके सामने निरूपण किया, फेर अपना अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शुक्लशालामें आयके रहे. अपने पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देखके निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकूं जेजा. पिठानी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंड देसना देते जये बहुतर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पिठानी दो घनी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त जये. जिस समय जगवंतका निर्वाणकल्याणक जया उस समय चोलठ इंद्र देवतागणके आणे जाणेसें वना उद्योत जया, उर जो राजा पोषधमें बैठे जयेथे सो जावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके उद्योत किया. एकमके प्रजात समें देवतोका आणा जाणा उर वचन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न जया. दूजके दिन सुदर्शना बहिन अपने जार्ई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमाया, शोक दूर कराया जिससें जार्ईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह दीवाली पर्व वना उत्तम है. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना करते है सो लिखते है ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥

श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ इस एक२ पदको १००० गुणतो करै, उपवास करै, रात्रीजागरण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाणकल्याणकका अधिकार सुणै । गौतमरास सुणै. इत्यादिक उदारचित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उन्नव करणा चाहियै ॥ दिवालीका स्तवन पूर्वे लिखा है सो पढै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काली महीनेमें कार्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रतिष्ठ है. इस दिन सर्व ज्ञव्यजीवोंको ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ ज्ञी नहीं है. सर्व तत्त्वमें ज्ञानके समान कोई तत्व नहीं. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोई उपाय नहीं. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्टकर्म नाश होय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, और कोढ़ादिकरोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्म के क्षय होणसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जैसे वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण जये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चौकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पांच साधिया करै, फल फूल प्रमुख चढावै, पांच वती का दीपक चढावै, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढके वासुदेव कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढावै तथा पूजा विटांगणादि चढावै. ( ज्ञानपूजा लिखते है ) नमंतिसामंतमहीवनाहं, देवायपूयंसुविद्देयपूर्विं ॥ ज्ञत्तीयचित्तमलिदानएहिं, मंदारपुष्पसवेहिनाणं ॥ १ ॥ तद्देवसद्वामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुष्पेहिंवरंसएहिं ॥ पूयंतिवदंतिनमंतिनाणं, नाणस्तत्राज्ञायज्जवरुक्त्राय ॥२॥ यह गाथा पढके ज्ञानपूजा करै. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीठे ज्ञानपूजा करे सो लिखते हैं) खमासमण दे के । इरियावही पन्धिकमें । लोगस्त कहै । वेठके । मुंहपत्ती पन्तिके । अणूजाणह मेमिन्नगहं (इत्यादिक) दो चांदणा देवै, पीठे पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञास ज्ञानु

निरमल सुखकारण, सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु ज्वजलनिधि तारण ॥ सं  
 यमतप आनंदकंद अज्ञान निवारण, मार विकार प्रचार ताप तापि  
 त जिन ठारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म परणति पन्वोहण,  
 साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण ॥ मोह तिमर विध्वंससूर  
 मिष्यात्व पणासण, आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रज्जुता परगासण ॥  
 ॥ २ ॥ मति श्रुति अबधि विशुद्ध नाण मणपज्जव केवल, जेद प-  
 चास हायोपसमिक एक हायिक निरमल ॥ दोष परोक्ष प्रथम तिहां  
 दुग परतह दीसत, सकल प्रतह प्रकाश ज्ञास भुव केवल अपर  
 मित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन ज्ञाशै, बाहिर  
 अंग प्रधान खंघ गणधर सुप्रकाशै ॥ शाखा श्रीनिर्युक्ति ज्ञाप्य पन्नि  
 शाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचां  
 गो सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगै, नंदी अनुयोगद्वार शाख मा-  
 नो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुज्जव उपगारी, अज्यासो आग-  
 म अगम निरुपम सुखकारी ॥ ५ ॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धांत  
 अबधै, देवचंद्र आणा सहित नयजंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोहा  
 मणो सकल मोह सुखकंद, जगते सेवो जविकजन पामो परमा  
 नंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । एमो  
 त्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविताहू० नमोर्हत् सिद्ध० । कह-  
 के ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोलै, जयवी  
 यराय० कहै, वंदणव० अन्नबू० कहके एक नवकारका कानसग  
 करै, शुई कहै ॥ ॥ अथ शुई लिखयते ॥ देविंद्वंदियपणहिंपरुवि  
 याण, नाणालिकेवलमणोहिमईसुयाण ॥ पंचाविपंचमगईसियपं  
 चमोए, पूयातवोगुणरयाणजियाणदिंतु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके  
 ( ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि कानसगं ) तस्मुत्तरी० अन्नबू०  
 कहके ? लोगस्तका कानसग करै, ( पारके ) बोधागायं० ( इत्या-

दिगाथापठके) पीठे ॥ आनेणिवोदियनाणं । सुयनाणंचेवउहेतो  
 णंच ॥ तहमणपज्जवनाणं । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा  
 कहेके । इणामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा  
 नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः ३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४,  
 समस्त लोकालोकजास्कर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरै पांच  
 नमस्कार करै, धिरता होय तो ( ५१ ) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार  
 करै, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिखा है ॥ उस माफक करै  
 ॥ पीठे (जै ह्रीं एमोनाएस्स) इस पदका २००० गुणना करै. कम  
 धिरता होय तो इग्वारे अंगकी सिझायो पढै वा सुणै, सो लिखते हे ॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल इठीतानी ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आ  
 चरांग रे ॥ सुगणनरा ॥ वीर जिनंदे जाणियो रे लाल, उववाई जास  
 उवंग रे ॥ सु० १ ॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जाउं वारंवार रे ॥ सु० ॥  
 विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु०  
 व० ॥ २ ॥ सुयखंध दोष जै जेइना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु०  
 ॥ उदेशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगोस रे ॥ सु० व० ३ ॥  
 हेतु जुगत कर सोजता रे, पद अद्वार हज्जार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप  
 दने वेहमे रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० व० ४ ॥ गमा अनंता  
 जेहमां रे, बलिजि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परित्तो वै इहां  
 रे लाल, आवर अनंत कइय रे ॥ सु० व० ५ ॥ निबद्ध निकाचित  
 सासता रे, जिनप्रणीत ए जाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम उलसे  
 रे लाल, प्रगटे सहज स्वजाव रे ॥ सु० व० ६ ॥ सुगुण आवक  
 वारु आविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥ सु० ॥ जिधिपूर्वक तुमे सां  
 जलो रे लाल, गीतारथ गुरु पास रे ॥ सु० व० ७ ॥ ए सिद्धंत  
 महिमानिलो रे, उत्तरे जव पार रे ॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे माहरे

रे द्वात्रिंशत्, एहिज अंग आधार रे ॥ सु० ब० ८ ॥ इति आचारांग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ द्वात्रिंशत् रसिधानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांज्ञलो, मनोहर  
श्रीसुगडांग ॥ मोरासाञ्जन ॥ त्रिणसे तेल्लठ पाखंतीतणो, मत खंज्यो  
धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे  
हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी माहरै, मानु सुवा रे  
समान ॥ मो० मी० २ ॥ राधपसेणी उपांग ठे जेहनो, ए तो सूत्र  
गंजीर ॥ मो० ॥ बहूश्रुत अरथ जाणे सहू, कीर नीर धनु तीर ॥  
मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुदखंध दोय ठै, बलि अध्ययन तेवीस  
॥ मो० ॥ उहेला समुदेसा जिहां जला, संख्याथे रे तेत्रीस ॥ मो०  
मी० ४ ॥ नव निक्षेप प्रमाण ज्ञरथा, पद ठसील हजार ॥ मो० ॥  
संख्याता अक्षर पदमांहे, कुण लहे तेहमो रे पार ॥ मो० मी० ५ ॥ ग  
मा अनंता पर्याय वली, जेद अनंत जिण मांहि ॥ मो० ॥ गुण  
अनंत त्रस परित्त कह्या, घावर अनंत जे मांहि ॥ मो० मी० ६ ॥  
निवडु निकाचित्त जे सालय कमा, जिन पणत्ता रे ज्ञाव ॥ मो० ॥  
ज्ञापी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे ज्ञाव ॥ मो० मी०  
मी० ७ ॥ करिये जगत जुगत ए सूत्रनी, निश्चै लहिये रे मुक्ति ॥  
मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥  
मो० मी० ८ ॥ इति सूयगडांग सिद्धाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ षाणांगसूत्रसिद्धाय लिख्यते ॥

॥ द्वात्रिंशत् ॥ आठ टके कंकण लियोरी ॥ ए चात्र ॥ त्रीजो अंग  
जलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीषाणांग ॥ मोरो मन मगन थयो ॥  
हारे देखी २ ज्ञाव, हारे जीवाजीव स्वज्ञाव ॥ मो० ॥ सबल जगत  
करी गजतो रेवा ०, जीवाजिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह  
अंग मुज मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंब ॥ मो० ॥

गुहिर ज्ञाव कर जागतो रे जि०, आज तो एह श्रावंत्र ॥ मो० २ ॥  
 ॥ कूट शैल सिखरी शिखा रे जि०, काननमें बलि कुंरु ॥ मो० ॥  
 गहर आगर इह नदी रे जि०, जेहमें अवे रे उदंरु ॥ मो० ॥ ३ ॥  
 दस ठाणा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त  
 जेइनी वाचना रे जि०, संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्ट सि  
 लोक निजुत्तुं रे जि०, संगइसी पन्चिच ॥ मो० ॥ ए सहु सं-  
 ख्यातां जिहां रे जि०, सुणतां उलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय  
 खंघ इक राजनोरे जि०, दश अव्ययन उदार ॥ मो० ॥ उदेशादिक  
 चीस ठै रे जि०, पद बहुतर हज्जार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशा  
 सन तणो रे जि०, सुणे सिखांत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंड कहै  
 ते हुवे रे जि०, परमारथरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ग० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगमूत्र सिद्धाय ॥

॥ दाल ॥ आरा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे बीजलो ॥ एचाला ॥  
 ओथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणा  
 उपांग करी सोजा वणी, हो लाल करी सो० ॥ अरध मागधी ज्ञापा  
 साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित ज्ञाव कुसुम परि-  
 मल व्यापा घणी, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव  
 समासत्री, हो लाल जी०, लहीयै एहथी ज्ञाव विरोध कांइ नथी,  
 हो लाल वि० ॥ ज्ञांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल  
 यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥  
 एकअकी ठै सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोमाकोनि प्र  
 भाणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविह गणी पिटकत  
 णी संख्या कही, हो लाल त०, सात्तता अरथ अनंत कि ठै एइना  
 सही, हो लाल ठै० ॥ ३ ॥ सुयखंघ अव्ययन उदेशादिके जला, हां  
 लाल उ०, संख्यायै एक एरु प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ पद



एक लाख चौमास सहस तेजतरा, हो० स०, पदने अग्रजदग्र सं-  
ख्याता अक्षरा, हो० सं० ॥४॥ ज्ञाप्य चूर्णि निर्युक्ती करी सोहे सदा,  
हो० करी०, सुणतां जेद मंजीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥  
जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर  
कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं  
माहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिथ्यात सुत्र जाणयो खरो, हो०  
सू० ॥ जिम मावती लहे जूंग करीनेन विरहे, हो० क०, इश्वर  
शिर सुरगंग तजी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-  
ग्रथतणो जुगते वमो, हो० त०, साकर सेवनी डाख थकी पिण  
मीठमो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो,  
वि०, एहना सुणने ज्ञाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिंहाय लिख्यते ॥

॥ ढाल पंथीमानी ॥ पंचम अंग जगवती जाणिये रे, जिहा जिन  
वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकळ्या रे, मानुं पर  
तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नती नामे परगमी रे, जेहनी  
बै न्हाम उवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांहीला  
अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंथ एक अति  
जलो रे, एकसो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश हज्जार उद्देशा जेह  
ना रे, जिहां किण प्रश्न ठत्तीस हज्जार रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोय  
लाख अरथे जस्या रे, ऊपर सहस अठ्यासी जाण रे ॥ लोकालो  
क स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥  
करिये पूजा अने परजावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥  
सुणिये सूत्र जगवती रागमूं रे, तो होय जवसागरनो त्याग रे ॥ पं०  
५ ॥ गोतम नामे इव्य चढाइयै रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम  
रे ॥ कीजै साधु तथा साहमीतणी रे, जगति युगति मन आणो

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इय विधसुं ए सूत्र आरावतां रे, इण चव  
सीजे वंछित काज रे ॥ परत्तव विनयचंडे कहे ते लहे रे, मोहन  
मुगतिपूरीनो राज रे ॥ पंच० ७ ॥ इति श्रीजगवतीसूत्र सिद्धाय सं० ॥

॥ अय ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ टाल ॥ कितलख लागे राजाजीरै मालियै ॥ ए देशी ॥  
ठगे अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेदना वै अरथ अनेक उई  
रु हो ॥ म्हारा सुणज्यो धरि नेह सिद्धांतनी वातनी जी ॥ श्रवणे  
सुणतां गाढो रस ऊपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंरु हो ॥  
म्हा० १ ॥ जंबुद्वीवपन्ननी उपांग वै जेहनो जी, इण मांहे जिन  
पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शांतिरस अ  
नुजवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर उ  
द्यान चैत्य वनखंरु सोदामणो जी, समवसरण राजानो मात ने  
तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह  
लोक परलोक रुद्रि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ जोग परि  
त्याग प्रवज्या पर्यवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥  
म्हा० ॥ संलेइण पत्रस्काण पादपोषगमनता जी, स्वर्गगमन शुभ  
कुल उत्पत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलान्न वलि तंत ते अंतक  
त्या कही जी, धर्मकथाना दोष वै खंध हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना  
उगणीस अध्ययन ते आज वै जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुवं  
ध हो ॥ म्हा० ५ ॥ उंठकांनि तिहां सकल कथानक जापिया जी,  
जाप्या वलि उगणीस उइत हो ॥ म्हा० ॥ संख्याता हजार जला  
पद एदना जी, एह थकी जायै कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥  
विनय करे जे गुरुनो बहु परै जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल  
होय हो ॥ म्हा० ॥ ते रसिया मन वसिया विनयचंडे जी, सो मांहे  
मिसे जोया एककै दोष हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि० ॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विठियानी ॥ हिवै सातमो अंग ते सांजलो, उपासकदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, एतो जव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक ठै, अध्ययन उदस विचार रे ॥ दस संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनंदादिक श्रावकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥ म० ४ ॥ श्रोता आगत तो वांचतां, गीतारथ पामे रीज रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समजै नही, तेहसुं तो करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस श्रावक तो इहां ज्ञापिया, पिण सूत्र जणयो नही कोय रे ॥ ते मोटे शुद्ध श्रावक जणी, एक अरथनी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्रहृषियै, निस्संकपणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंड कहै स्युं थयो, जो कुमती करस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपासकदशांग सिद्धायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड के वली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां ज्ञासता जी, सासता अर्थ सुविदास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप नय जंगथी जी, अंगना ज्ञाव अजंग ॥ सहिज सुख रंगनी तट्टिपका जी, कट्टिपका जास उवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग ठै आठ अनिराम ॥ आठ उद्देसा ठे वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥ आ० ४ ॥ आठमा

अंगना पाठमें जी, एहवोअ ठे रे मीवास ॥ सरस अनुज्व रस  
 ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे  
 हुवे जी, निरविषयी सुण्यां थाय, जिम माहा विष विषधरतणो  
 जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती  
 जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंड इण सुत्रना जी,  
 तुरत लहै अजिप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतगरुदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग

अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुऊने आई हो ॥ श्रायक सूत्र सुणो  
 ॥ सूत्र सुणो हित आणी, एतो धीतरागनी वाणी हो ॥

आ० १ ॥ जसु कड्याणवतंसिका नामै, सोहे उपांग प्रकामे हो ॥

आ० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥

आ० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिमर अंतरगति जीजै  
 हो ॥ आ० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहथी उलसे मोरी देहा हो ॥

॥ आ० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया

हो ॥ आ० ॥ नगरादिक जाव बखाण्या, ते तौ ठठै अंगे आण्या

हो ॥ आ० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू

रे ॥ आ० ॥ उहेसा त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥

आ० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहने हो ॥

आ० ॥ श्रोताथी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगानं हो ॥ आ० ॥

६ ॥ जे सुणतां करै बकोर, ते तो माणस नही पिण ढोर हो ॥

आ० ॥ कवि विनयचंड कहे साचो, श्रुत रंगै सहुको राचो हो ॥

आ० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिद्धायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रणव्याकरण सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम पधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रणव्याकरण नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चि  
दानंद फल पामे ॥ आवो१ गुणना जाश तुमने सूत्र सुणाउं ॥  
पुष्पकली ज्युं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग  
पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो० २ ॥ अंगु  
ष्ठादिक जिहां प्रकास्या, प्रणवादिक अति रूना ॥ ते ठै अष्टोत्तर सत  
ए तो, सूत्र मध्य मणिचूना ॥ आ० ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां  
आण्या, पांचे संवर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लब्धि जेद  
सुखकारा ॥ आ० ४ ॥ सुखंध एक ठै दसमे अंगै, पणयालीस  
अज्ञयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा  
॥ आ० ५ ॥ जे नर सूत्र मुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥  
माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ० ६ ॥  
सूत्र मांहि तो मारग दोयठै, निश्चयनय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै  
ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिद्धाय लिख्यते ॥

॥ ढाल करखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग इग्यारमो,  
तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्पचूदि  
का, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु० १ ॥ अशुत्र किंपाक सम  
डुकृतफल जोगवी, नरकमें गरक थया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल जोग  
गवी स्वर्गमांजे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु० २ ॥ दोयश्रुत  
खंधने वीश अध्ययन वलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजै ॥ सहस  
संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल अमर चित्त गुंजै ॥  
सु० ॥ ३ ॥ सरस चंपकलता सुरजि सहुने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि  
माटै ॥ सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अ-  
चल खाटै ॥ सु० ४ ॥ बंध ने मोहना बेउं कारणअठै, डुकृतने  
सुकृत जोवो विचारी ॥ डुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

चन धारिचै गुण संजारी ॥ सु० ५ ॥ म करं रे म कर निंद्या नि-  
गुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ वांधै ॥ नारकी प्रकृत तज  
सहज संतोष ज्ञज, लाग श्रुत सांजली धरमंधंथै ॥ सु० ६ ॥ सुख  
ने दुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें वीतरागै ॥ चिरजयो  
वीर शासन जिहां सूत्रथी, कवि विनयचंद्रगुण ज्योति जागै ॥ सु० ७ ॥

॥ अथ इग्यारै अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे में शुण्या, सहेली ए ॥  
आज थया रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥  
ज्ञाव्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक-  
णो ॥ पसरि अंग इग्यारनी, स० ॥ मुऊ मन मंरुप वेल कि ॥ सींचू  
ते हरखे करी, स० ॥ अनुजव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी  
जै सांजलै, स० ॥ कुश वूढा कुण वाल कि ॥ तो ते फल लहे फू  
टरा, स० ॥ स्वादे अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी  
हियै, स० ॥ अहम्मदावाद मंजार कि ॥ ज्ञात करी ए अंगनी,  
स० ॥ वरत्या जयश्कार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें,  
स० ॥ वरपाकृतु नजज्ञास कि ॥ दसमी दिन सुदि पकमां, स० ॥  
पूरया अई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी,  
स० ॥ श्रीजिनचंद्र सूरीत कि ॥ खरतरगञ्जना राजिया, स० ॥  
तसु राजै सुजगीत कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रहखनिधान जो, स० ॥  
ज्ञानतिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग  
इग्यार सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग तुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर उप  
गारी सुगुरु वंताई, पांचु जेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन  
पर्यव, केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मंस दंसनकी,

करमेधनल करी ॥ सक्रिय संजम करतामुं मिल, सिद्धि रसान  
धरी ॥ मे०२॥ पूरण पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी,  
बाल कहै अब विसरत नांही, पल दिन एक घरी ॥ मे०३॥ इति पदा ॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि जलो, संघ सकल आधार नमूं श्रीजुवन तिलो  
॥ आंकणी ॥ अरथें श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रें श्रीगणधरगुरु  
जाण्यो, तडुल्लयथी जे मुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग  
जाव सकल जाणे, नथ एकांत मुनिजन नवि ताणे, निश्चय विवहार  
ते मन आणे ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपांग ठै अति रूमा, ठ छेद  
पयना नहि कूमा, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूमा ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां  
निरयुक्ती सूत्रे संगी, वलि जाण्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे  
कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहियै,  
संवेगपखी वलि सरदहियै, ए त्रिण विन जवमारग कहियै ॥ श्रु०  
५ ॥ जेहती अनुपेहा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै,  
आराध्यां निज अनुजव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे  
गुण गावे, शुद्धशय जे मनमें ध्यावे, ते कृमाकड्याण सदा पावै ॥  
श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अथ कार्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महानिमें मिति कार्तिक सुदि १४ के दिन सब  
मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक  
धर्मकृत्य करणा । इत्यादिक सब अधिकार आसाठ चोमासे मुजव  
जाणना ॥ इति कार्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्तिक पूर्णमासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्तिक वदि १ सें सैत्रंजरास सुणें, निवी वा  
एकासणा व्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पदिकमणा करै, देववंद-

नादि करै, ( नै हँ श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः ॥ ) इस मंत्रका जाप करे १०८ बेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी जात्रा करणेंको जावै, कातिपूनमेके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै, अठारै महोद्यव करै, विस्तारसैं देववंदनादिक विधि करै, ( ५१ ) बेर सेत्रुजरास सुणे ( नै हँ श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः ) इस पदसैं २१ जेती देवै. ( कदास ) सिद्धगिरी जाणेकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंठा होय उहां महोद्यव संयुक्त दर्शन करणेंको जावै, पूजादिक सब विधि करै, उद्यत्त कर के वा चन्द्रत्यज्जत्त करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुज्जक्ति करै, सा हमीवद्यत्त करे. इत्यादिक विधि संयुक्तसिद्धगिरीकी सेवना करणेंसैं सर्व अशुज्जकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्रावरु वारखिद्यत्त प्रमुख दस कोमि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त ज्ञए, जिससैं इस दिन जो धर्मकृत्य करणेंमें आता हे उसका निश्चे दशकोमि गुणा फल होता है ॥ इस जगतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान दुसरा तीर्थ नही, संवत १९३२ की सालमें मेरा चतुर्मास मुंबईमें था, उहांसैं कार्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व विधोके दरसन करके गिणती देखणेंमें आई सो वारे हज्जार तीनसैं अठवनकी संख्या मिली, उर बहुत जगे चरणोंकी स्थापना हे, अनन्त साधु अणसन लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत ज्ञयी जीव होंगे सो शुद्धजावसैं इस तीर्थको सेवेंगे, जो सेवते हे सो धन्य हे. गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तीर्थआसातनाकारी विद्रव्यज्जक जतीसाधु जो संवेगपक्षी गीतार्थोंके छेपी एसी वक वृत्तिसैं जीणोंद्वार तथा नोकारसी प्रमुखके बाहनेसैं अन्य देसांतरी जात्रार्थी ज्ञव्यजीवोंका धन उगणेकी वृत्तिसैं तीर्थ सेवन अनन्त संसारका ज्वन्नमण समजके वर्जना, एसैं उरबुद्धियोंकी पूजाव्रतपञ्च-



सेत्रुंजो बै कितनी दूर रे पंथीना ॥ वहिण १ ॥ पालीताणो नगर  
सोहामणो, रुमी ललतासरनी पाल रे पंथीना ॥ जिहां अंबला रे  
वरुला घणा, जुक रही चंपलारी माल रे पंथीना ॥ वहि० २ ॥  
धन ते पंखी पारेवना, सेत्रुंज वसिया जे मोर रे पंथीना ॥ ऊमा  
हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते ढोर रे पंथीना ॥ वहि० ॥  
३ ॥ सेत्रुंज वाटे जी चालतां, जीणीर ऊमे खेह रे पंथीना ॥  
मैला आवे संघना कापना, निरमल थायै देह रे पंथीना ॥ वहि०  
४ ॥ उंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीना ॥  
जिहां मिलर घणा मानवी, गावै प्रज्जुगुण माल रे पंथीना ॥ वहि०  
५ ॥ घस केसर नर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीना ॥  
फूलाहंदो सोहे प्रज्जु सिर सेहरो, दिवलारी ज्योति अजंग रे पंथी-  
ना ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहरै, ऊपजै परम आनंद रे  
पंथीना ॥ मोने नेटणरो जी कोरु बै, प्रेम घणे जिनचंद्र रे पंथी-  
ना ॥ वहिण ७ ॥ इति श्रीसिद्धचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरब निना  
णूं वार सेत्रुंज गिर, रुषन्न जिनंद समोसरियै, सेत्रुंजगिर यात्रा० ॥  
कोमिसहस नव पातक तूटै, सेत्रुंज सामे रुग नरिये ॥ विम०  
जात्रा० १ ॥ चौथ ठठ दोय अठम तपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥  
विम० जा० ॥ पूंरुकीक पद जपियै हरषै, अधवसाय शुन्न धरियै ॥  
वि० जा० २ ॥ पापी अजघी निजर न देखै, हिंसक पिण ऊधरि  
यै ॥ वि० जा० ॥ नूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूरथकी परह-  
रियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे  
पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पम्किमणा दोय विधसुं कीजै, पापपन-  
ल विष हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकावै ए तीरथ मोटो, प्रवहण

सम जवदरिचै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवंता, पदम कहै  
जव तरिचै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ५ ॥

॥ राग प्रजाती ॥ जाव धर धन्य दिन आज सफत्रो गिणयो,  
आज में सजन आनंदपायो ॥ जा० ॥ हर्ष धर निजर नर विम-  
लगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ जा०  
॥ १ ॥ पगर उमंग धर पंथ नित पूठतां, धन्य दोष चरण जिहां  
चलत आयो ॥ जा० ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज  
धन दीह में सुजस गायो ॥ जा० २ ॥ डुर डुरगते टरी जात्र  
विधसुं करी, पुन्यजंनार पोते नरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सु-  
रगिरसिखर, रूपज जिनचंद्र सुरतरु कहायो ॥ जा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ मिगसर महीनेमें मित्ती मिगसर सुद ११ सो मोनइग्या-  
रस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन मेढसें कळयाणक जये हैं. सो  
लिखते हे. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कळयाणक श्रीमद्वि-  
नाथस्वामी के जये, श्री अरधनाथस्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री  
नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान जया. एसें इस नरतक्षेत्रमें वर्त्तमान  
चोवीसीके पांचकळयाणक जये. इस तरे पांच नरत, पांच एरवत  
में, चोवीसीके पांच२ कळयाणक मिलाएसें पच्चास कळयाणक जये.  
अतीत, अनागत, वर्त्तमानकालकी अपेक्षासें मेढसे कळयाणक जये.  
इस वास्ते यह दिन वना उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास  
करै, अठ पदरी पोसा करैके मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह  
की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. एसे  
इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे  
की इच्छा होय तो महीनेमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारै अंग ज्ञा-  
वसें सुणें, इग्यारै अंग लिखायके देवै, पढणेवालोंको सहाय देवै,  
तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसें  
करै. ( समवसरण बैठा जगवंत ) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्वे  
लिख्या हे सो पढे वा सुणै. पीठै उद्यापनमें पेंतालीस आगमकी  
पूजा करै. यथाशक्ति साहमीवञ्चल करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः ॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अतीत

२४ जिन पंच क-

ल्याणक नमः ॥

॥ प्रथम ॥

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत

२४ जिन पंच कल्या

णक नमः ॥ ४ ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिअर्हतेनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिनाथायनमः

६ श्रीसर्वानुज्ञूतिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीशुभ्रंकरअर्हतेनमः

६ श्रीशुभ्रंकरनाथायनमः

६ श्रीशुभ्रंकरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीसप्तनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्तमान २४

चिन पंच कल्याणक ॥२॥

१ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः

१ ए श्रीमद्विअर्हतेनमः

१ ए श्रीमद्विनाथायनमः

१ ए श्रीमद्विसर्वज्ञायनमः

१ ए श्रीअरिनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे अनागत २४

जिन पंच कल्याणक ० ॥३॥

४ श्रीस्वयंप्रभुसर्वज्ञायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरते वर्तमान २४

जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

२१ श्रीब्रह्मेन्द्रसर्वज्ञायनमः

१ ए श्रीगुणनाथअर्हतेनमः

१ ए श्रीगुणनाथनाथायनमः

१ ए श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः

१ ए श्रीगांगीवनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरते अनागत २४

जिन पंच क ० नाम ॥६॥

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

- ६ श्रीदेवश्रुतअर्हतेनमः  
 ६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः  
 ६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीजदयनाथायनमः  
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतोते २४ जि  
 नपंचकल्याणक० प्रया॥७॥  
 ४ श्रीमृडुसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीव्यक्तअर्हतेनमः  
 ६ श्रीव्यक्तनाथायनमः  
 ६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीकलाज्ञतनाथायनमः  
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिन  
 पंचकल्याणक । ८ ।  
 २१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः  
 १ए श्रीयोगनाथअर्हतेनमः  
 १ए श्रीयोगनाथनाथायनमः  
 १ए श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः  
 १८ श्रीअयोगनाथायनमः  
 पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिन  
 पंचकल्याणकनामः ९  
 ४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीशुद्धार्त्तिअर्हतेनमः  
 ६ श्रीशुद्धार्त्तिनाथायनमः  
 ६ श्रीशुद्धार्त्तिसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीनिष्केशनाथायनमः
- ६ श्रीमुनिनाथअर्हतेनमः  
 ६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः  
 ६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीविशिष्टनाथायनमः  
 धातकीखंडेपश्चिमभरतेअतोत  
 २४जिनपं०ना०द्वितिया॥१०॥  
 ४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीहरिज्ञअर्हतेनमः  
 ६ श्रीहरिज्ञनाथायनमः  
 ६ श्रीहरिज्ञसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीमगधाधिनाथायनमः  
 धातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान  
 २४पंचकल्याणकना० ॥११॥  
 २१ श्रीप्रयत्नसर्वज्ञायनमः  
 १ए श्रीअक्षोन्नअर्हतेनमः  
 १ए श्रीअक्षोन्ननाथायनमः  
 १ए श्रीअक्षोन्नसर्वज्ञायनमः  
 १८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः  
 धातकीखंडेपश्चिमभरतेअनाग-  
 त २४ जि०पं०क० १२  
 ४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः  
 ६ श्रीधनदअर्हतेनमः  
 ६ श्रीधनदनाथायनमः  
 ६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः  
 ७ श्रीपौपनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत २४जिन  
पंचकल्याणक ॥१३॥

- ४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः
- ६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान २४  
जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

- २१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः
- १ए श्रीवीपरीतअर्हतेनमः
- १ए श्रीवीपरीतनाथायनमः
- १ए श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः
- १८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत  
२४जिनपंचकल्याणक ॥१५॥

- ४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीत्रमणेंड्रअर्हतेनमः
- ६ श्रीत्रमणेंद्रनाथायनमः
- ६ श्रीत्रमणेंड्रसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीरिषन्नचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअतीत २४जिन  
पंचकल्याणकनाम ॥१६॥

- ४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअतीत २४  
जि०पंचक० ॥१६॥

- ४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीअजिनंदनअर्हतेनमः
- ६ श्रीअजिनंदननाथायनमः
- ६ श्रीअजिनंदनसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेवर्त्त० २४  
जिनपंचक० नाम ॥१७॥

- २१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः
- १ए श्रीमरुदेवअर्हतेनमः
- १ए श्रीमरुदेवनाथायनमः
- १ए श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः
- १८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥ जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअना० २४जि  
नपंचकल्याणकनाम ॥१८॥

- ४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः
- ६ श्रीव्रतधरनाथायनमः
- ६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः
- ७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअतीत २४  
जिनपंचक० नाम ॥२२॥

- ४ श्रीअष्टाहिकसर्वज्ञायनमः
- ६ श्रीवणिकअर्हतेनमः

- ६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः  
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः  
७ श्रीनारसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वप्रवतेवर्त्तमान २४  
जिनपंचकल्याणकनाम ॥ २० ॥

- २१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः  
१९ श्रीसंतोषितअर्द्धतेनमः  
१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः  
१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः  
१८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वप्रवतेअनागत २४  
जिनपंचकल्याणकनाम ॥ २१ ॥

- ४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः  
६ श्रीचंद्रदाहअर्द्धतेनमः  
६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः  
६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः  
७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमप्रवतेअतीत २४  
जिनपंचक० नाम ॥ २५ ॥

- ४ श्रीपुरुवसर्वज्ञायनमः  
६ श्रीअवबोधअर्द्धतेनमः  
६ श्रीअवबोधनाथायनमः  
६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः  
७ श्रीविक्रमैज्ञनाथायनमः

- ६ श्रीवणिकुनाथायनमः  
६ श्रीवणिकुसर्वज्ञायनमः  
७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वप्रवतेवर्त्तमान २४  
जिनपंचक० नाम ॥ २३ ॥

- २१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः  
१९ श्रीसायकाहअर्द्धतेनमः  
१९ श्रीसायकाहनाथायनमः  
१९ श्रीसायकाहसर्वज्ञायनमः  
१८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वप्रवतेअना० २४  
जिनपंचक० नाम ॥ २४ ॥

- ४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः  
६ श्रीरविराजअर्द्धतेनमः  
६ श्रीरविराजनाथायनमः  
६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः  
७ श्रीप्रथमनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमप० अतीत २४  
जिनपंचक० नाम ॥ २८ ॥

- ४ श्रीअश्वघुंदसर्वज्ञायनमः  
६ श्रीकुटिलअर्द्धतेनमः  
६ श्रीकुटिलनाथायनमः  
६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः  
७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४  
जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥

१ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः

१ ए श्रीहरअर्हतेनमः

१ ए श्रीहरनाथायनमः

१ ए श्रीहरसर्वज्ञायनमः

१ ए श्रीनंदिकेशनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना०२४  
जिनपंचकल्याणकनाम॥२७॥

४ श्रीमहामृगेंडसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः

६ श्रीअसौचितनाथायनमः

६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः

७ श्रीधर्मैद्रनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएरवतेवर्त्त०  
२४जिनपंचक०ना०२९

१ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः

१ ए श्रीधर्मचंडअर्हतेनमः

१ ए श्रीधर्मचंडनाथायनमः

१ ए श्रीधर्मचंडसर्वज्ञायनमः

१ ए श्रीविवेकनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएर०अना०  
२४जिनपंच०क०॥३०॥

४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः

६ श्रीविसोमअर्हतेनमः

६ श्रीविसोमनाथायनमः

६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः

७ श्रीआरणनाथायनमः

इति सौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला र  
एनेसें मेढसें माला होती हे. जो नव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगे स  
थोमे नवोंमें अनंतसुखको प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशीर्ष मास मध्ये प०

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिति पोष वद १०, सो पोषदसमी नाम  
पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक  
इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपा  
नाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पञ्चरूपाण करै, उ  
हां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय उहां जा  
करणको जावै, जो कच्ची यात्रा करणेको नही जा सकै तो जव

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां महोत्सव संयुक्त दरसन करणेकों जावै, जलयात्रादि महोत्सव करैके अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकट्याणकजीकी वा सत्तरजेदी पूजा करावै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसैं अनेक तरैके उत्सव करै, और (पास जिनेसर जगतिलो ए ) वा ( वाणी ब्रह्मा वादिनी०आदिक ) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्जित स्तवन पढ़ै वा सुणे. इस पर्वका सेवन करणेसैं आधिब्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरसैं रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ ( स्तवन पासजिनेसर जगतिलो ) सुणे वा पढ़े सो उर (वाणी ब्रह्मा०) पढ़ली लिखाहे॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मिति माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नाम सैं पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरूपज्ञदेवस्वामीका निर्वाणकट्याणक हे, इस वास्ते जगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु जगवानके आगे चढावै, बीचमें १ वना मेरु, च्यारुंदिस ठोटा च्यार मेरु, एसैं पांच मेरु चढावै. एसी शक्ति नहीं होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंद्यावर्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहेजेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढावै. पीठै श्रीरूपज्ञदेवस्वामी ( पारंगतायनमः ) इस पदका दो हज़ार गुणना करै, उर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करै. अतिथिसंविज्ञाग करैके पारणा करै. इस तरे १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीठै शक्ति मुजब उत्सवसैं ऊजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधर्मिबञ्जल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसैं अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पूत्र पिंगलरायकुनर गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणकै



तपस्या करी. तपस्याके कारणसे पांगलापणेका रोग मिटा. तब तपस्या पूर्ण ज्ञयां पीठै तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमई, १३ स्वर्णमई, १३ रूपैमई प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संवसमेत तीर्थोंकी यात्रा करी. तेरे वेर साधमीं वात्सल्य किया, बहोत तरेसे ज्ञान ज्ञक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देके श्रीसुव्रताचार्यजीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमे चवडे पूर्वकों पढके सर्व कर्मोंका क्य करके अनंतसुखकों प्राप्त जया. जो जव्यजीव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस जव नुर पर जवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ काल्गुणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाल्गुनमहनेमें मिति फाल्गुन सुद १४, सो तीसरे चोमासेकी चौदश नामसे पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्तव्य आषाढचोमासे तुल्य करै, सो पहली लिखा हे ॥

अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हैं ॥ ॥ श्रमणजगवंत श्रीमहावीरस्वामी वारे महीनोंमें ६ वने पर्व कहा हे. ३ तीनों चोमासे, १ नुली, १ पर्युषण. जिसमें नुली २ का नुर पर्युषण का एवं ३ अठाईका महोत्सव तो प्राये सर्वत्र होता हे. जिसमें जै जैसा वीकानेरमें खरतर गहवालका पोथा अर्थात् पुस्तकका उच्चव हाथीके होदे वने आम्बरसे होता हे वा वरघोना पुस्तकका सुवइमें जै होता हे. लेकिन हस्त्यारूढ नहीं. नुर कार्तिक महोत्सव अन्यत्र जै वहोत जगे होता हे लेकिन कलकत्ते जैसा महोत्सव स्वमतमें त आ पर मतमें कहाइ जै जारतवर्षमें हमने देखा नहीं. दक्षिणमें मल्लेवार तक हम गये, पूरबमें दिल्ली लखनेउ आगरा काली पटणा तक में नहीं देखा. उगणीसें बावनके वर्षमें हमने यह उच्चव कलकत्तेमें देखा था, नुर फाल्गुणमहोत्सव मकसूदावादका वहोत अष्टा होता

दे, जंगलीसमें सुमतालीसमें देखा था, दुसरी जगें नदी कहाँ ज़ी  
 देखा, लेकिन किसीजी धर्ममहोत्सवमें आज्ञा विरुद्ध जो काम होय  
 सो अज्ञा नही, एक तो जगवंतके समवसरणके संग आजकलके  
 ज्ञान्यवानलोक धूपके रसमें रैतीक रसमें आप तो जाते नही फक-  
 त वेसमज्ज अदम्योंको जेजदेतेहैं, वो लोक कूदते नाचते जागते  
 समवसरणको उछालादेते लेजातेहैं उसमें कितनी आसतना होती  
 हे, कितना कर्म बंधताहे, उसकूं सम्यक्जीव विचारके आप विवे-  
 क विनय संयुक्त शुद्धज्ञावसे धर्मकाममें उद्योग करतेहैं उनका दोनुं  
 जव सफल हे, वोही महोत्सव लायकतारीफके हे इस वास्ते आ-  
 त्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष हे सो शैसका चोमासापर्वज्ञाणके सर्व जगें  
 जगवंतके धर्मका उद्योत करतेजये शुद्धध्यानरूप अग्निसे अष्ट कर्म-  
 रूपी काष्ठको जलाके होली करते हैं, पीठै सुत्रोवजलसे स्नान क-  
 रके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हैं, अब यह होलीपर्व दो प्रकारसे  
 हैं, इव्ये नर जावै, सो प्रथम इव्य होलीका अधिकार लिखते हैं ॥  
 ॥ इस फाडगुनमहीनेमें चौदश पूर्णमाशी के दिन केइयक अज्ञा-  
 नीजीव विवेकविकल जयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त जये  
 थके लकम ठाणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हैं, उत्तम चोमा-  
 सा धर्मपर्वका विराधना करते हैं, दूसरे दिन मलमूत्र रैतीसे क्रीडा  
 करते हैं, खोटे वचन बोलते हैं, गधे पर चढते हे, अनेक जीवोंको  
 दुःख देते हैं, एसे जीव वीतरागकी आज्ञा ठोरके ज्ञान नरमोंकी  
 कुजमर्याद करते हैं, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हैं, दूध ठोर पेसाव  
 पीते हैं, एसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करके दुर्गतिकों  
 उपार्जन करते हैं, अनर्थदंरसे अनंत जव संसारकी स्थिती वांभते  
 हैं, इसवास्ते आत्मारथी जव्यजीवोंको ज्ञावहोली करणा चाहियै,  
 सो इस मुजव-प्रभुके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोलै, रात्रीजागर-

ण करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोत्सव निकालै, नानाप्रकारका  
 नाटक करै, साहमीवहल करै, साधमीजाई आपसमें नाना-  
 तरेकी क्रीडा करै ॥ आगे राजालोक ज्ञी वसंतरुतु आणसें मदन  
 महोत्सव करणेंकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अबीर गु-  
 लालसे सहरके लोक बगीचोंमें क्रीडा करते थे, इत्यादि लेख तो  
 शास्त्रोंमें वहीत जगे वांचणेंमें आया हे, लेकिन् मलमूत्र राख धूमसें  
 खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, जंम चेष्टा करणी, कुल  
 मर्याद ठोरणा, वरेरोकी लज्या ठोरणी, एसा कृत्य उत्तम पुरु-  
 षोंके करणे लायक नही. यह क्रीडा वाममार्गीयोकी चलाइ जई  
 हे. इसकों प्रवृत्त जयें प्राये दो हजार वर्ष करीब जया. पीठे स्वामी  
 शंकराचार्यकूं यह वात सम्मत जई तवसें धीरेण् अज्ञानी जीव ए-  
 ककी देखादेख वहीत लोक करणे लगगये, लेकिन् एसी कर्त्तव्यता  
 किसी ज्ञी शास्त्रमें नहीं देखणेंमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी वात  
 हे, जब मंदिरजिमें पूजादिक महोत्सवका काम होता हे उस वख-  
 त तो जाणें को फुरसत मही मिलती हे, उर होलीके दिनोंमें मा-  
 तापिता ज्ञाई वहिन सबोंकी लज्या ठोरुके वहीत दिलमें खुसव-  
 खती मानताजया पागलके माफक ज्ञाणोंकी तरे बकते फिरता हे.  
 कोइ वैस्यानका नाच होता होय उहां तो हजारुं रुपे खरच कर  
 देतेहे. मनमें फूलते हैं हमने वरुा नाम किया. तत्व नजरसे देखे  
 उर विचारे तो नाम क्या निकला, बलके अशुजगतीके पाये पूरे-  
 मजबूत बंध करणेंमें आये. एसी लज्याठोरुके जिनमंदिरका महो-  
 त्सव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, एसी  
 होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्य उर जात  
 होलीका स्वरूप वांचके आत्माधीं धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयगें  
 उर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोष धारण करेंगें उ

सञ्जी वातकूं कुयुक्तियोंसैं जूठी ठहरावेंगें, नर मध्यस्थ विचारवंत तो  
 ऐसा कहेंगें यह वात सञ्ज है. कितका पर्व कितका खेल, निकेवल  
 इसमें अनर्थ बंध लगता है, लेकिन हम इकेला क्या करें, जाइवं-  
 धोंकोँ ऐसा करते देख हमज्जी करते हैं, हमसैं रहा जाता नही.  
 परंतु यह प्रथा बंध हो जाय तो अछी है. इस वास्ते हे ज्ञव्यजी-  
 वो इसमें समुदाणी कर्म बंधता है. ठोमे सो घन्य है. नरकके जाते  
 का संग नही करणा. जेसैं सरकारकी एनके जाणकार चोरी  
 करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत नर वात तक नही करते  
 उस मुजब एकका अनर्थ खेल देख डसरेकोँ वचना चाहिये.  
 काम वो करणा जिस्में दोनों जवमें लाज होय. इस ड्यहोलीके  
 खेलमें वनीर लमाइयां होजाती है. मेरुता सदर हालीके ख्या-  
 लसैं पुष्करणे नर जोजकोंकी लमाइमें तमाम उजाम होगया.  
 नर परजवमें अरगैर बोलणेके फल सब धर्मोंमें बुरा लिखा है.  
 इस वावत जो जो कठोर लवज लिखा है उसकूं वांच विवेकी मेरे  
 पर गुस्ता नही लावेंगें. जो कुठ लिखा है सो पूर्वाचार्योंके वचना-  
 नुसार लिखा है. हितोपदेश समजके ठोमणेका प्रयत्न करेंगें. मेरे  
 तो नवकारमंत्रके अरुस्तठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मबंधु है. जि-  
 समें ज्जी सर्व जीवायोनिसें मित्रता है. कम था ज्यादा जो कुठ  
 अपशब्द लिखा होय तो मित्रामिडुक्कं ॥१॥ इति फा० ॥ ५० ॥

॥ अय भावहीरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाल ॥ हेरी खेलीयै नर बहुरन एसो दाव  
 ॥ हो० ॥ दयामिगई अति जली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अ-  
 थाणो अति जलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १ ॥ लेस्या मा-  
 दल जाव रुफरे, क्रोध मान दोय ताल ॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी  
 नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० १ ॥ सुमताकेसर घोलिये रे, दमवाको

बिम्बाव ॥ ग्यान पिचरको पकरकै, वारी मुगतिवधू चित लाव ॥  
हो० ३ ॥ एसा साज वलायकै रे, रूपनदेव गुण गाय ॥ श्रीजि-  
नचंद्र इम खेलतां, वारी जव२ पातिक जाय ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत होरी तालयत् ॥ जय बोलो रे पास जिने-  
सरकी, ज० ॥ मस्तक मुगट सोहें मनमोहन, अंगिया सोहे केस-  
रकी ॥ ज० १ ॥ त्रिभुवन ज्योति अखंनित तनकी, स्यामघटा  
जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ज्ञानी, करुणा  
कीधी विषधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ उमाय वाय ज्युं वादल, जीत  
करी अपणे घरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवामा उदरे जिन जाया,  
राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल खपा-  
ये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहै जिनचंद्र मेरे प्रभु  
पारस, जैसी ब्याया सुरतरुकी ॥ ज० ७ ॥ इतिपदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यान  
गुलाब अबीर उमावो, सुमताकेसर रंग घोरी ॥ म० १ ॥ असृत्-  
रूप धरम जिनवरको, शुध कामा कहै करजोरी ॥ म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या० ॥  
संजमदूती कान लगी जब, शिवनारी पर चित्त दियो रे ॥ या० २ ॥  
मोह बोन गिरनार सिधाए, नव जव नेह अलग कियो रे ॥ या०  
३ ॥ तुम हो तीन जवनेके साहिब, सुरनर कहै तुमे चिरंजीयो  
रे ॥ या० ॥ ४ ॥ वार९ मेरो वंदना होयज्यो, चंद कहै मन  
हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ इक सुण लै नाथ अरज मेरी, इ०।  
इह संसार गहर तरु सिंधु, जमर पमत जिहां जव फेरी ॥ इ० १ ॥  
क्रोधादिक बहु मगरमच्छ हे, अहत जंतु न करत देरी ॥ इ० २ ॥  
एसें जलधिसें पार करो तो, तारण तरण विरुद तेरी ॥ इ० ३ ॥

धरमजिनेसर जगपरमेसर, दूर करो डुखकी वेरी । ५० ४ ॥ परम  
 कृमागुण दायक लायक, अनुपमकीरत जग तेरी ॥ ५० ५ ॥ इति ॥

॥ पुनः होरी ॥ सांवरो सुखदाई, जाकी ठिव वरणी न जाई  
 सां० ॥ श्री ॥ अथसेन वामा नंदकी, कीरत त्रिचुवन ठाई ॥ समे-  
 तसिखरगिरि मंरुण प्रचुको, देख दरस हरखाई-हृदय मेरो अति  
 हुलसाई ॥ सां० १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगढ्यो, आज आनंद बधा  
 ई ॥ तीन चुवनको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई-सफल  
 मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रचुके दरस सरस विन पाये, ज-  
 वण जटक्यो में जाई ॥ अथ प्रचु चरण तरण चित चाहत, बाल  
 कहै गुण गाई ॥ प्र० सां ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ नेना हरखाई, आज तेरी सूरत निर  
 खी ॥ ने० ॥ जवण संचित पाप करम सब, देखत दूर पुलाई, सु  
 मति वधारण कुमति विमारण, ज्ञान विमल जलसाई ॥ आ० १  
 ॥ वामानंदन अति ठवि सुंदर, महिमा वरणी न जाई ॥ दीनद-  
 याल दयाकर दीजै, आनंद हरख सदाई ॥ आ० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफीमें होरी ॥ एतें फागुण मस्त महीने च  
 लोरी, देखो स्वाम सखी मोपै ठोरी ॥ एतें० ॥ ब्रजकी सखी सब  
 वनण निकसी, खेलत मिलण होरी ॥ नारे गुलाल अधीरमुबोजर, अप  
 ने प्रीतम रंगरोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूजत फूल सजी वनणके,  
 मधुर रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत मरत विन, प्रियतम  
 गौरी ॥ च० ए० २ ॥ रस अनरस रात रसे रस, सरस दरस  
 प्रचु मोरी ॥ प्रो १ तजी सुमता ममता मन, बाल कहै कर जोरी ॥  
 च० ए० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्वामसें कहियो मोरी, ने० ॥  
 समुद्विजै शिवादेवीको नंदन, यादवकुल उदयो री ॥ तेजपूज तनु

सावलो रूमो, कित गयो मो चित चोरी—अरज नहीं लीनी मोरी  
॥ ने० १ ॥ व्याहन आए मेरे मन जाए, लाये बल दल जोरी ॥  
तोरणसें रथ फेर चले हो, चढ गए गिरकी उरी—मदन महा रिपु  
तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल जईहुं दरस विन देखे, रहि हे मुख  
कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमतीसखियनसें, विनती करै करजारा  
लगी है सुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे जविक मन धिर करकै, हो०  
॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अवीर उभावो जोली जरकै ॥  
हो० १ ॥ ग्यान ध्यान रुफ ताल बजावो, गुण गावो प्रभु हित धरके  
॥ हो० २ ॥ अनुभव अतर फूलैल मंगावो, वास दिसोदिस महम  
हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रजधूरु उभावो, ज्युं तेरा पाप सब  
ल अरकै ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रभु जज विलं-  
ब न कर रे ॥ हो० १ ॥ विजय संजारी जर पिचकारी, हारे तूं  
तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल जर  
जोरी, हारे तूं तो खेल वसंत घर रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग  
आजुषण अंगै, हारे तूं तो जावना वासा पहिर रे ॥ हो० ४ ॥ नी-  
रंजन प्रभुना गुण गावो, हारे तूं तो आतम अनुभव वर रे ॥  
हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हारे तूं तो गूजत मन  
मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पास जिनेसर, हारे तूं तो ज-  
गनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ श्रीजिनलान कहै प्रभु संगै,  
हारे तूं तो अनुपम जव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ वाकै ममतानें धूम मचाई, आज सुमतासंग  
खेलेगें होरी ॥ वा० ॥ जिनशासन बतरंगमहिलमें, दीपकबोध बनाई  
॥ आ० वा० १ ॥ सरधासखी कृमा मृडना मिय, रुजुता मुक्ति सुहाई ॥

उर अनेक सुमति सखी ब्रजमें, अनुभव रंग रंगार्ई ॥ आ० वा० २ ॥  
 ज्ञाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सद्दार्ई ॥ जिन गुण  
 गान संगीत निरत धुनि, जक्ति जिणंद वढार्ई ॥ आ० वा० ३ ॥  
 खेलत संजम फाग मिलै सब, बाल आणंद बढार्ई ॥ अब कुमता  
 संग रंग करे तो, मेरे चित न सुद्दार्ई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ समकित विन जीव जगत जटक्यो, स० ॥ चउरा  
 सी जव जमतां२, नरजव पायो सो दिख खटक्यो ॥ स० १ ॥ गर  
 ज्ञावाल नव मासे नीकौ, ओजकी संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥  
 पुन्य संजोग मिट्यौ कुल श्रावक, ग्यान प्रकाश जयो घटको ॥  
 स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासे तेरो मन अट  
 क्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संजाल तूं जाग रे मानवी, सूयो शिवपु  
 रकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहै प्रचु गुण गावौ, स्वर्गपुरीमें  
 नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ विसरे मत नाम प्रचुजीको, वि० ॥ प्रचुजीको ना  
 म चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १ ॥ ना-  
 ज कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन जूवन सिर हे टीको ॥ वि० २  
 ॥ चतुर कुशल चित घोडसुं राख्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको  
 वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने० ॥  
 बहुत हठासुं व्याह रचायो, जीव देख-दया आणी रे ॥ व० ने० १ ॥  
 सब चादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने०  
 २ ॥ कंकण मुगट हाथसुं तोमै, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व०  
 ने० ३ ॥ जनघरचूपण कहै जविजननें, सहु जगमें जस लीनो रे  
 व० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः फाग ॥ गढ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेले ने-



मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल नरथौ, दिशि दूजी गिर  
 वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोजतौ, तिण मांहे खेले नेमकु  
 मार ॥ ग० १ ॥ फूलया केवना केतकी, विच फूलया मरुआमचकुंद  
 ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहे खेले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥  
 आंवा मोरथा बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजै  
 पवन दक्षिणतणी, स्यामनमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३ ॥ आं  
 व पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमार अजुं  
 नहीं, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४ ॥ हरि हलधर गोपि मिली,  
 विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलनरी, मुख ऊपर ठां  
 टे यडुनार ॥ ग० ५ ॥ नेम हठी हठ ना तजै, समजायो जोरें य-  
 डुनाथ ॥ रिद्धहरष वाचक कहै, वात सांजलो शिवादेवी मात ॥ ग० ६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो ज्ञागरी, नेमनाथ वर  
 पायो री सजनी ॥ थ० ॥ पहिली में पूजू रुषनजिणंदा, जिण  
 मोहि दियो सुहागरी ॥ ने० १ ॥ सोनेको ठत्र धरयो सिर ऊपर,  
 गल मोतियनकी मालरी ॥ ने० २ ॥ चंपा चंपेली दोनुं मरुआ,  
 फूल चढाउं गुलाबरी ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख  
 बोलो जयकाररी ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि बिनती, नव२  
 दीज्यो दीदाररी ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंपानगरमें, फा-  
 गणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजकी नवल मंरुपमें, होय रही  
 हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी नरिय कचोरी, प्रभुजीके अं-  
 गियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल  
 उरुआए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध जांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित  
 लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, व० ॥

निविम डुरित चर शिखर जि डुरकी, जवसागर तारण तरकी ॥  
 व० १ ॥ तीन ज्वन तीरथ तारागण, सोजा लहिय निशाकरकी  
 ॥ व० ॥ सुंदर अनुपम अतिसव करिकै, महिमा जीती सुरगिरकी  
 ॥ व० २ ॥ परमात्म पद प्रतिविंब तनको, बंठित पूरण सुरतरु-  
 की ॥ व० ॥ वर सोरठ मंरुल मंरुनकी, सकल करम रज जल-  
 धरकी ॥ व० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाजेय जिनेसर-  
 की ॥ व० ३ ॥ ए गिरि उदयाचल परि जिनकी, इति दीपै जेम  
 दिनेसरकी ॥ व० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित क-  
 रुणासागरकी ॥ व० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सह, तीन ज्व-  
 न जनहितकरकी ॥ व० ॥ सोवन वरण तरीर विराजित, वृपन्न  
 लंठन सोजाधरकी ॥ व० ५ ॥ सुंदर प्रजुकी मोहनमूरति, देखत  
 परमानंद चरकी ॥ व० ॥ केवलकमला प्रजुकी निरंतर, पदतल  
 नमत सुरासुरकी ॥ व० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, जवश्  
 एहिज जिनवरकी ॥ व० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रजु नेमनाथ, मेरे दिल वसिया ॥ ऐ० ॥  
 त्रिगढमें विराजमान, डुंडुनि सुणत कान ॥ अपठर मिल करत  
 गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासण विराजै साम, जीत  
 लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥  
 ऐ० २ ॥ तीन ठत्र चमर सार, पंच वर्ण पुष्प धार ॥ गहिर अ-  
 सोक सार, जामंरुल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग,  
 द्वादश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया ॥ ऐ० ४ ॥

॥ रागवसंत ॥ संजवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥  
 हारे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला  
 ॥ सं० ॥ त्राता तीन ज्वनके जगशुरु, दाता विरुद विचारी ॥ साता  
 दीजै साहिव मोकूं, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं० १ ॥

सेनामात नयर अबतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज  
 खंठन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाला ॥ सं० २ ॥ साठ  
 पूरव लख आयु अबगाहन, बनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरण  
 सेवे डुरितारी, सावणी नगरी सारी हो लाला ॥ सं० ३ ॥ समेत  
 सिखर पर सुगत सिधाए, सहस्र स्नाधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल  
 मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाला ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण  
 सुद्धसें त्रिभुवन पतिकुं, वंदना होष्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा  
 चित चाहत, सुगुण सदा हितकारी होलाला ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस दिखावो रसिया,  
 सा० ॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया ॥  
 सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केश, दिखवा ग्यानेकेवल रसि  
 या ॥ सा० २ ॥ राजुलनारी नेमीसर हाथै, संजम लेइ जवोदधि  
 तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरव निनाणुं  
 समोसरिया ॥ सा० ४ ॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर  
 सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाजनंदनकूं करुं जुहारा,  
 सा० ६ ॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया  
 ॥ सा० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या वैठे जव हारो रे ॥  
 जि० ॥ रथ पानधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त  
 न कर हियरा हरख जरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या०  
 १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरजव सफल जमारो ॥ जवि  
 जन मन जमरा रंग जरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥  
 जवडुख जंजननाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो ॥ ममता तज सम  
 तासंग जेदी, निज आतम काज सुधारो ॥ जि० ३ ॥ आज नगरमें  
 रंग वधाई, घरण मंगलाचारो ॥ रथ महोत्सव रचना रची हद, मुख

जय२ सवद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद विचारी,  
सेवक सुगुण संज्ञारो ॥ प्रचु पंकजकी द्विव सरणा ग्रही, नवसा  
यर पार नतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली  
गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वणाय सखी सब, शिखर  
सैल जेसैं चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रचुको व्याह मनायो,  
मोसैं प्रीत लगाइ जामनी ॥ आ० ॥ तौरण आय चले मोहि ठोमी,  
कोन चूक भोपै काही जामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तजूंगी  
नव नव केरी, प्रीत वणी जेसी शंभु यामिनी ॥ आ० ॥ रा-  
जुल पहली प्रीतमसेती, बाल कहै नई मुक्ति गामिनी ॥ आ०  
म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लख्यो सुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥  
रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥  
पर मंदिर तज अविचल लीजै, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥  
द्विज मिल आप परम रस आवै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो०  
रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागै, सोहै अदचुत वान ॥ हो०  
रं० ४ ॥ सुमति अवीर उभाय जगतभै, वैठै शिवपुर थान ॥ हो०  
रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर थान ॥  
हो० रं० ६ ॥ एसा खेल नविकजन धारै, वंजित पावैदान ॥ हो०  
रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥  
मनमृदंग वजै तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान  
गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित्त  
केसर चीर रंगान, पहिरो मनवैराग ॥ हो० २ ॥ लाख चोरासी रा-  
मत ठांकी, ध्यारुं गतिसें जाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ एसा खेल जविकजन  
धारै, पावै जवजल प्राग ॥ हो० ॥ चेतनता सुछ होय जगतमें,  
समकितके रंग लाय ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसें थायर, डुरजनकी लाज  
मेरी करे रे वलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाब अवीर उभावो, हमा  
करो रंग लाय २ ॥ हु० हो० १ ॥ शील संजमव्रत पान मिठाई,  
ध्यान धरुंगी में गाय गायर ॥ हु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेद  
उभावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ हु० हो० ३ ॥ जगतचंद्रकी अ-  
रज वीनती, सरण गही में तेरी जायर ॥ हु० हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे जरी, शिवपुरकी  
वात पूवूं कबकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर,  
परमात्म निज ध्यान धरी ॥ मे० १ ॥ मोहन रंग जस्थो रंग शी-  
वपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो रुषज बैठै अलवेसर, मारो गुलाब  
मुठी जरकै ॥ बावो० ॥ सुगी जरकै पसली जरकै, बावो० ॥ चू-  
आर चंदन डुर अजरजा, केसरका मटका जरके ॥ बावो० १ ॥  
रतनजमित शिर ठत्र विराजै, अंगी जमाव जमी जरकै ॥ बावो०  
२ ॥ बांहै वाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा०  
३ ॥ नाजिराया मरुदेवीको नंदन, रमिये जवि आदीसरसें ॥ बा०  
४ ॥ आदिखान हेदास तुमारो, तार लीओ अपणे करकै ॥ बावो० ६ ॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे,  
जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ जवःडुख वारण शिवसुख कारण,  
देखत जवनही फंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंद-  
न, प्रणमुं रुषज जिनंदना रे ॥ गि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान  
तुमारो, जिम चातक दिव चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कदै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥

देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे वै अति नीको ॥ द० १ ॥ वी-

स कोसर्था दरसन बीठो, जागो ज्ञरम सकल जियको ॥ द० २ ॥

बीसे टूके बीस गोमटनी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब

जिनवरके शरणे आयो, रसतो पायो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥ इ०

॥ पुनः होरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसन करलै, संघयात्रा-सं-

घयात्रा करणसैं पाष कटत हे, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि

सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रूपज्ञ जिनेश्वरजीको

दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद्र कहै

नाथ निरंजन, जवश्का डुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिव आदि

जिनंद चंद्र ॥ मोहे० ॥ रंग तूही रंग रे ज तूही है, संजम रंग

मोहि रंगदै ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अना-

दिको, सो अब इनकूं खिनदै ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी रु-

द्धि तेरी में देखी, सो अब मुऊकुं सज्जदै ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥

ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे, बा विच केवल धरदै ॥ मेरे० मो० ४ ॥

सूधरदास कहे समकित दे, आप समान मोहि करदै ॥ मेरे० मो० ५ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरे पारसप्रज्जुकीके रंगमंरुपमें, खेलत संत

वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अवीर विलसंत ॥

॥ मे० १ ॥ प्रज्जुगुण प्रेम पिचरकी वूटत, समता सखिय मिलंत

॥ आगम लहर फूली फुलवानी, मुनिवर अमर गुंजंत ॥ मे० २

अंग आञ्जुपण पंचेंद्रिय वस, गुरुसेवास लहंत, बार जावना ग-

हिर कसूंवा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदञ्जून पंच माहा

व्रत-वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहै जिनचंद्र प्रज्जुकी कृपासैं, नी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ रंग मन्व्यो जिनद्वार चालो खेलिये होरी,  
रं० ॥ पास प्रभु दरवार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन ब्यार रे, चा०  
कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥  
कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥  
लाल गुलाल अवीर उभावत, पासजीके दरवार रे ॥ चा० ३ ॥  
जर पिचकारी गुलाबकी ठिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥  
ताल मृदंग वीण रुफ बाजै, जेरी जुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥  
सब सखियन मिल नाटक करकै, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥  
॥ रत्नसागर प्रभु ज्ञावना ज्ञावै, मुख बोले जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ नेमजीसें कहियो मोरी, सामरेसें कहियो  
मोरी ॥ तोरण आए किरा जरमाए, ठोरु चलै अजिमानि ॥ हां  
रे लावा गो० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोमी प्रीत पुरानी-  
दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पनीसो मुंहसें कहियो,  
ना करिये सोधाणी ॥ आठ जवकी प्रीत बंधाणी, नवमे चले क्युं  
ज्यानी-श्याम तेरी सूरत पिठाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें  
बेह लागी, राजुल गुलकी वानी ॥ वीनती सुणकै अमर पद दीजै,  
रंग विजय सुख दानी-आवा नर गमन ठिदानी ॥ सा० ३ ॥ ५० ॥

॥ पुनःहोरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें वरसै रंग, जिन०  
॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अवीर अरगजा,  
सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुभव लहर फुली फु-  
लवानी, दिन२ वढते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वागा  
अंग अनोपम, शुक्ल ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद  
चिंतामणि चित धर, तुजसुं अविहर रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ ॥ ५० ॥

॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वणी हे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रजूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी ज्ञाव  
 अज्ञंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी ज्ञांत ज्ञानी हे, वुंठिया  
 नवश रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब बन्यो हे, कोर, केवना  
 संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोय कुंफल, बाजूबंध  
 सुबंध ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माळ सोजत है, सौरंग वास  
 सुगंध ॥ श्रीचिं० ३ ॥ त्रिचुवन साहब तखत विराजै, महिरवान मनरंग  
 ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस घर रंग ॥  
 श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर है साहिवकी सत्र पर, संघ हे सकल सुरंग  
 ॥ श्रीचिं० ॥ ज्ञावना ज्ञावो जिनगुण गावो, अमर घणै उठरंग  
 ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्यावो रे, वंठित फल पा-  
 वो ॥ चिं० ॥ सकल जविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण  
 गावो रे ॥ वंठित० १ ॥ अवीर गुलाल लाल संग लावो, जर२ मु-  
 ठियां उठावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं ठिककावो, ज्ञा-  
 व शुक्र जल ज्ञावो रे ॥ वंठित० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुढप व-  
 नावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वंठित० चिं० ॥ दरस सरस  
 करके सुख पावो, पुण्य जंमार ज्ञावो रे ॥ वंठित० चिं० ३ ॥ वा-  
 जित्र वाजाविविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंठित० चिं०  
 ॥ अमरसिंधुर आनंद वधावो, जिनजीसै लयलावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत नारो पिचकारी रे, में तो सगरी ज्ञीज  
 गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांदि, गावत आगम राग ॥  
 लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति  
 सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगाजं, पहिरुं मन  
 वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चौरासी रामत वोसुं, ज्यारों गति  
 सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सत्र प्यारी, शिव-



सुंदरी वर मांग ॥ लाल में० ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै,  
इण विध खेले फाग ॥ पिया में० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिन-  
जी, नेम० ॥ मे हूं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये ॥  
हो० ने० १ ॥ हम हे केतकी तुमहो २ जमरा, फिर वासना लीजीये  
॥ हो० ने० २ ॥ में हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना  
कीजीये ॥ हो० ने० ३ ॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद्रपद  
दीजीये ॥ हो० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसें, कर्म कटै ज्युं शुक्क  
ध्यानसें ॥ आ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिठाएयो, ममता मिट  
गई सारी जानसें ॥ कर्म क० आ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार  
सम, नास जयो सब ज्ञानज्ञानसें ॥ कर्म क० आ० २ ॥ परमात्म  
पद पावत सोई, विनय जजत पद अचल आनसें ॥ कर्म० आ० ३ ॥

॥ पुनः होरी ॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपस-  
मरसकी क्यारी ॥ लाल ते० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे,  
नयन जये अविकारी ॥ निडा सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण  
निवारी ॥ लाल ते० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, बहोत  
जरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इन्हा, यामें हे दुसिया-  
री ॥ लाल ते० २ ॥ एसा लज्जन हे नयनोंमें, क्युं पामे जव पारी,  
योही विचार करो दिल अपने, होत कर्मसें जरी ॥ लाल ते० ३ ॥  
धर्म विना कोई सरणा नही हैं, एसो निश्चै धारी ॥ विनय कहै  
प्रभु जजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार जम्यो, द० ॥ चो-  
रासी लख योनिमें जटकत, लहि मानवजव युंही गम्यो ॥ द०  
१ ॥ पुन्य उदय श्रावक कुल पायो, बटमें ज्ञान उद्योत जयो ॥ द०

३॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो ॥  
 द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, जटकत जवमें क्युं जरम्यो  
 ॥ द० ४ ॥ कहत कमाकड्याण निरंतर, जज जगवंत तेरो पाप  
 शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत ठोमो मोने यूंही रे, कोइ चूक वतावो  
 ॥ म० । अवीर गुलाल जावसें रमतां, हमसुं कदिय न खेलो रे  
 ॥ कोइ० म० १ ॥ रथ फेरी प्रजुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी  
 रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत हठासुं व्याह मनायो, जीव देख दया  
 आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊज्जी अरज करत हे, एक वार  
 फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए,  
 पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें  
 ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिव, जिनवर प्राण आधारो  
 री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्या-  
 रो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवच्च लंछन जनम जद्विलपुर, कुल  
 इहवाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेत्र धनुष शरीर सुतोन्नित,  
 कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरव आयु  
 कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५ ॥ दीनदयाल जगत  
 प्रतिपालक, अब मोहि पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके  
 साहिव सञ्जे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है  
 देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पदं मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥  
 ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी विच सार ॥  
 ने० २ ॥ मंगल धन धन्नामुनि नायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३  
 ॥ जय२ खेमकुसल गुरु जंपै, आनंदधन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ इम मास द्वावश तप सुसंग्रह विधिप्रपासें संग्रही, अति सुगम ज्ञाप प्रकाश करतां ज्ञयजन मन गहगही ॥ निधि वाण नंद सुचंड विक्रम माघ सुदि पूनम सही, श्रीवृहत्खरतर गह पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन जगवंतके कल्याणकके हे सो सर्व ज्ञयजीवोंके सेवन करणे योग्य हे, लेकिन् कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही ( और विशेषमें ) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले ज्ञयजीवोंके अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब्र विधिप्रपासें पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

कार्तिकशुक्लपक्षे ॥ १ ॥

५ श्रीसंज्ञवनाथजीसर्वज्ञाय०

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०

११ श्रीपद्मप्रभुजीअर्हतेनमः

१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

१२ श्रीनेमनाथजीपरमेष्ठिनेन०

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ६ ॥

१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः

३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः

११ श्रीमद्विनाथजीअर्हतेनमः

६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०

११ श्रीमद्विनाथजीनाथायनमः

१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः

११ श्रीमद्विनाथजीसर्वज्ञायन०

११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

११ श्रीनमिनाथजीसर्वज्ञायन०

पौषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१४ श्रीसंज्ञवनाथजीअर्हतेनमः

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्हतेनमः

१५ श्रीसंज्ञवनाथजीनाथायन०

- ११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥
- १२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः ६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
- १३ श्रीचंद्राप्रभुजीनाथायनमः ७ श्रीशांतिनाथजीसर्वज्ञा०
- १४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय० ११ श्रीअजितनाथजीसर्व०  
माघकृष्णपक्षे ॥ ५ । १४ श्रीअजिनंदनजीसर्वज्ञा०
- ६ श्रीपद्मप्रभुजीपरमेष्ठिने० १५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०
- १२ श्रीशीतलनाथजीअर्ह० माघशुक्लपक्षे ॥ ७
- १२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः २ श्रीअजिनंदनजीअर्ह०
- १३ श्रीरूपप्रदेवजीपारंगता० २ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
- ३० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायन० ३ श्रीविमलनाथजीअर्ह०  
फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १० ३ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः
- ६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ४ श्रीविमलनाथजीना०न०
- ७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता० ७ श्रीअजितनाथजीअर्ह०
- ७ श्री चंद्राप्रभुजीसर्वज्ञायन० ७ श्रीअजितनाथजीनाथा०
- ७ श्रीसुविधनाथजीपरमेष्ठिने० १२ श्रीअजिनंदनजीनाथा०
- ११ श्रीरूपप्रदेवजीसर्वज्ञायनमः १३ श्रीधर्मनाथजीनाथाथ०
- १२ श्रीश्रेयांसजीअर्हतेनमः फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५
- १२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः २ श्रीअरनाथजीपरमेष्ठिने०
- १३ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः ४ श्रीमह्विनाथजीपरमेष्ठि०
- १४ श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनमः ७ श्रीसंज्ञवनाथजीपरमेष्ठि०
- ३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः १२ श्रीमह्विनाथजीपारंग०
- चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५ १२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०  
चैत्रशुक्लपक्षे । ७
- ४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्ठिने० ३ श्रीकुंभुनाथजीसर्वज्ञा०
- ४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ५ श्रीअजितनाथजीपारंग०
- ५ श्रीचंद्राप्रभुजीपरमेष्ठिने०

- ८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः  
७ श्रीआदिनाथजीनाथाय०  
वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९  
१ श्रीकुंभुनाथपारंगतायनमः  
२ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०  
५ श्रीकुंभुनाथजीनाथायनमः  
६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०  
१० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०  
१३ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०  
१४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०  
१४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०  
१४ श्री कुंभुनाथजीअर्हतेन०  
ज्येष्ठकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥  
७ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०  
ए श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०  
१३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०  
१३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०  
१४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०  
आषाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥  
४ श्रीआदिनाथजीपरमे०  
७ श्रीविमलनाथजीपार०  
ए श्रीनमिनाथजीनाथा०  
श्रावणकृष्णपक्षे । ४  
३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०  
७ श्री अनंतनाथजीपर०  
५ श्रीसंज्ञवनाथजीपारंग०  
५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०  
ए श्रीसुमतिनाथजीपारं०  
११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०  
१३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः  
१५ श्रीपद्मप्रज्ञुजीसर्वज्ञाय०  
वैशाखशुक्लपक्षे ८  
४ श्रीअग्निनंदनजीपरमे०  
७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०  
७ श्रीअग्निनंदनजीपारंग०  
७ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०  
१० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०  
१२ श्रीविमलनाथजीपारंग०  
ज्येष्ठशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥  
५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०  
ए श्रीवासुपूज्वजीपरमेष्टि०  
१२ श्रीसुषार्धनाथजीअर्ह०  
१३ श्रीसुषार्धनाथजीनाथा०  
आषाढशुक्लपक्षे ३  
६ श्रीवर्द्धमानजीपरमेष्टि०  
७ श्रीनेमनाथजीपारंगता०  
१४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०  
श्रावणशुक्लपक्षे ५  
२ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०  
५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

- ८ श्रीनिमनाथजीअर्ह०  
 ९ श्रीकुंभुनाथजीपरमे०  
 भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥  
 ७ श्रीचंडाप्रभूजीपारंग०  
 ७ श्रीशांतिनाथजीपरमे०  
 ८ श्रीसुपार्वनाथजीपरमे०  
 आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २ ॥  
 १३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०  
 ३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०
- ६ श्रीनेमिनाथजीनाथाय०  
 ८ श्रीपार्वनाथजीपारंग०  
 १५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्टि०  
 भाद्रपदशुक्लपक्षे १  
 ९ श्रीसुविधनाथजीपारंग०  
 आश्विनशुक्लपक्षे १  
 १५ श्रीसुविधिनाथपरमेष्टि०

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार पद्यमप्पस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घरों गुरुके पास पंच कल्याणक तप ग्रहण करै, उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पञ्चक्राण करै, तीन टंक देववन्दन करै, पक्कमणा करै, जिस दिन जो माहाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै, नर पद्मली लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुलै या पढै, जहां जगवंतकी कल्याणक भूमि होय उहां घरे मद्दोचवसें संघ समेत यात्रा करणेको जावै, उहां विधी संयुक्त सर्व जगवंतके पंच कल्याणकका उचव करै, जो शक्ति नहिं होय तो शासनपति श्रीमहावीरस्वामीके पट्ट कल्याणकका उचव करै ॥ अब २३ जगवंतकी अपेक्षायें पांच, श्रीवीरप्रभूके अपेक्षायें पट्ट कल्याणक संक्षेप उचव विधि लिख्यते ॥ च्यवन कल्याणकको (परमेष्टिनेनमः) कहियै, इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायकै च्यवन कल्याणादिकका उचव करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणकहुं (अर्हतेनमः) कहणा, इस दिन जलजात्रादिकका मद्दोचव करके अष्टो-

त्तरी स्नात्रादिक करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कल्याणककों  
 ( नाथायनमः ) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृ-  
 द्धादिकके नीचै स्थापन करकै दिक्षाका उन्नव करै, घृत गुम वस्त्रा-  
 दिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कल्याण  
 ककों ( सर्वज्ञायनमः ) कहणा. इस दिन समोसरणमें जगवंतके  
 विराजमान करकै आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उन्नव करै,  
 वस्त्र आञ्जुषण चढावै, सुपेदचंदन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ नि-  
 र्वाण कल्याणककों ( पारंगतायनमः ) कहियै. इस दिन निर्वाण  
 कल्याणकके ज्ञावगर्भित उन्नव करै, लहू चढावै ॥ ५ ॥ और ठठ  
 गर्भपिहार कल्याणकका उन्नव करणा होय तो ज्यवनकल्याणकके  
 उन्नव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कल्याणकका उन्नव करै  
 तपस्या पूर्ण होणसें पंच कल्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुजति  
 करै, साहमीवञ्जल करै. इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जे  
 ज्यजीव करैगे सो अनंत सुखको प्राप्त होंगे ॥ इति पंचकल्याणक  
 तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ पखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशी ॥ जंबुद्वीप सोहामणो  
 दक्षिणज्जरत उदार ॥ राजग्रही नगरी जली, अलिकापुर  
 अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख आय  
 ॥ मनवंठित फल पासियै, दोहग दूर पुत्राय ॥ श्री० २ ॥ राजकौ  
 तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती, शील  
 गुणें अन्निराम ॥ श्री० ३ ॥ श्रावण उज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश  
 ॥ माताकुहि सरोवरै, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४ ॥ जेठ पठम  
 पक्ष अठमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोन्नव सुर करै, त्रिजुवन  
 हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान ॥ जिनवर लंठन काठवो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री०  
 ६ ॥ परणी नार प्रजावती, जोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख  
 जोगवै, पूरै वंठित काम ॥ श्री० ७ ॥ तव लोगांतिक देवता, आ-  
 वि जंपै जयकार ॥ प्रचु फागुण वदि वारसै, लीधो संजम नार  
 ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि वारसै, मनधर निरमल ध्यान ॥  
 ध्यार करम प्रचु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ९ ॥ (हाल १ ॥  
 सुख कारण जवियण ॥ एदेशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया च-  
 लिया सुरनर कोनि, प्रचुना पदपंकज प्रणमै बेकर जोनि ॥ बेकर  
 जोनी मञ्जर ठोनी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रि-  
 गमो ठत्रत्रय जलकंत ॥ सिंहासन वैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म  
 प्रकासै, वारै परखदा वैठी आगलि सुणै मन उद्धासै ॥ १० ॥ त-  
 पने अधिकारै पखवासों तप सार, पन्वार्थी कीजै पनरह तिथी  
 ऊदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उप-  
 शम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपोजै वांटी देव उद्धास ॥ तप ऊजमणै  
 रजत पालणो सोवन पूतली चंग, मोदकपाल देहरै मूंकी जिन  
 वर स्रात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरंतर अहुरव दर्शनी जेम, म-  
 नवंठित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति वं-  
 ख्खन नरतार, जस कीरत सोजाग वनाई महियल महिमा जाण  
 ॥ परजव मुगति फल लहियै, ए तपने प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर घापी  
 चतुर्विध संघतणो अधिकार, जरुवठ प्रमुख नगरादिक करिया वि-  
 हार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंच सयां परिवार, कार्तिक-  
 सेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीस सहस वरप आ-  
 ऊखो पालै जग दया सार, श्रीसम्भेतशिखर परमेसर पुढता मुग-  
 ति मजार ॥ १३ ॥ इम पंच कळयाणक शुणिया त्रिचुवन ताय,  
 मुनिसुव्रतस्वामी वीसमो जिनवर राय ॥ वीसमो जिनवर राय



जगतगुरु जयजंजण जगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अजरा-  
मर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद्र विनय शिरोमणि सकलचंद्र गणि सीत,  
वाचक समयसुंदर इम पन्नणै पूरो मनह जगीस ॥ ॥१४॥ इति ॥

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुद्धदिन गुरुके पास तप ग्रहण करके सुद (?) प-  
निवासै पूर्णमासी तक इकसार १५ उपवास करै. जो शक्ति नहीं  
होयतो प्रथम सुदि पहकी पनिवा?, दूसरे सुदि पहकी दूज, एसै  
अनुक्रमसै पनरे सुद पहमें तपस्या पूर्ण करै. श्रीमुनिसुव्रतस्वामी  
के पांच कट्याणक जावगर्भित स्तवन पढ़ै. गुरुका संयोग होय  
तो गुरुके पास सुणै. ( श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इत  
पढ़का १००० दो हज़ार गुणना करै. और तप ग्रहण करणेकी  
तथा देववंदनादिककी विधि पहले लिखी हे उस मुजब विवेकी  
जीव सब तपस्याकी विधि करै. विधि संयुक्त करणसै उत्तम फल  
मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पञ्चस्काण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर जगवंत ॥ त्रिगुणै  
धैरा जिनवरू, परषद वार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिला  
सभे, पूवै श्रीजिनराय ॥ दस पञ्चस्काण किसा कह्या, कीयां कवण  
फल आय ॥ २ ॥ (हाल ? ॥ सीमंधर करज्यो मया ॥ ए देशी) ॥  
श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांजल गोयम ताम ॥ दस पञ्चस्काण कियां  
सकां, लहिये अविचल ठाम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी  
१, साढपोरसी पुरिमह ४ ॥ एकासण नीवी कही ६, एकलठाण देवट्टि ॥  
श्री० ४ ॥ दात ७ आंबिल ए उपवास १० ही, एहिज दस पञ्च  
स्काण ॥ एहना फल सुण गोयमा, जूजूवा करूं वखाण ॥ श्री०  
५ ॥ रतनप्रज्ञा १ सर्करप्रज्ञा २, वालुक तीजी जाण ॥ पंकप्रज्ञा

४ तिम धूमप्रज्ञा ५, तमप्रज्ञा ६ तमतम ७ ठाम ॥ श्री० ६ ॥  
 नरक सात कही ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम  
 वस ते सही, ऊपजै तिणहीज ठोर ॥ श्री० ७ ॥ ठेदन जेदन  
 तामना, जूख तृपा वलि त्रास, रोम २ पीमा करै, परमाहम्मा  
 तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल ज़र नहीं जिहां  
 सुक ॥ किया करम जे जोगवै, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री० ९ ॥  
 इक दिनरी नवकारसी, जे करै ज्ञाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो  
 थाउखो, दूर करै ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करै नवकारसी,  
 ते नर नरक न जाय ॥ न रहै पाप वलि पावला, निरमल होवे  
 जी काय ॥ श्री० ११ ॥ ( ढाल १ ॥ श्रीविमलाचल तिर तिलो  
 ॥ ए चाल ) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥  
 ज्ञावसुं जे पोरसी करै, डुरगति ठेदै सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांदि  
 जे नारकी, वरसैं एक हज़ार ॥ करम खपावै नरकमें, करता बहु-  
 त पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करै इकतार ॥  
 करम हणें सहस्र एकना, निहचैसुं गणधार ॥ सु० १४ ॥ डुरगति  
 मांदि नारकी, दस हज़ार प्रमाण ॥ नरक थायु खिण एकमें, सा-  
 द्दपोरसी करै हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमद्व करै नित जीव जे, नरके  
 ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहै, पुरिमद्व करम खपाय ॥  
 ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा  
 करम एकासणें, दूर करै मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोमि वरसां  
 लगे, करम खपावै जीव ॥ नीवीय करतां ज्ञावसुं, डुरगति हणे  
 सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोमि जीव नरकमें, जितरो करै करम  
 दूर ॥ तीतरो एकलगाणही, करै सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात  
 करंता प्राणियो, सो कोमि परिमाण ॥ इतरा वरस डुरगति तणा,  
 ठेदै चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंजिलनो फल बहु कह्यो, कोमि

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, ज्ञाव आंबिल अधिकार ॥ सु०  
 २१ ॥ कोमि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मजार ॥ उपवास  
 करै इक ज्ञावसुं, तो पामे मुगति मजार ॥ सु० २२ ॥ (दाल ३॥  
 केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोमि वरसां लगे, नरके क-  
 रता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ ठठम तप करतां अकां, सही  
 नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोमि लाखही,  
 जीव लहै तिहां डुक्क रे ॥ ते डुख अठम तपहुंती, दूर करी पामे  
 सुक्क रे ॥ गो० २४ ॥ ठेदन जेदन नारकी, कोमाकोमि वरसोइ  
 रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो०  
 २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोमाकोमि वरसनो पाप रे ॥ दूर  
 करै खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय वि-  
 शेष फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे ज्ञाव,  
 करता त्रिजुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं  
 करै, चवदह पूरब होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां  
 वलि नावै पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचने काया करी, तप करै  
 जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै जव पार रे ॥  
 गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनं  
 त ज्ञवाना पापथी, ठूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती  
 पापी तरथा, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें,  
 शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१ ॥ तपना फल सूत्रे कहा,  
 पञ्चक्राणतणा दस जेद रे ॥ अवर जेद पिए बै घणा, करतां ठेदे  
 त्रय वेद रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ (कलशः) ॥ पञ्चक्राण दस विध फल  
 परुप्या महावीर जिणदेवए, जे करै जविअण तप अखंमित तासु  
 सुर पय सेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अश्व शशि वलि पोस सुदि  
 दशमी दिने, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंड तप विधि

जगो ॥ ३३ ॥ इति दस पञ्चकाण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पञ्चकाण तप विधिः ॥

॥ यह दस पञ्चकाणके स्तवनमें खुलासा दस पञ्चकाणके जेद नर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक तपस्या करणेके फल जगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजव उत्तम पुरुषोंने रचना करीहै, इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तवनको पढ़के तपस्या करणमें आदरवंत होता है, नर किसीके दश पञ्चकाण तप करणेकी इच्छा होय तो पहिले दिन नवकारसी, दुसरे दिन पोरसी, इस तरै स्तवन मुजव १० पञ्चकाण दस दिवसे सेवन करै, सदा स्तवन सुणें पढ़ै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक उद्यापन करै, इस तपस्याके प्रज्ञावसें डुरगतिबंध दूर करके अच्छी गती पावे, महा एश्वर्यवंत होय, जाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल जेट्टियै ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेवियै, धर कर शुभ परिणाम लाल रे ॥ तीजै जव सेव्यो थको, बांधे तीर्थकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाताअंग मजार लाल रे ॥ सुणजो जवि तुमे जावसुं, चित्तसें करिय उच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहै, वीस थानक तप एह लाल रे ॥ निरदूपण शुभ महुर्ते, उचरोजै ससनेह लाल रे ॥ वी० ३ ॥ अरिदंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ थिवर ५ उवजाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाण ८ दंसण ९ अरु, विनय १० नमूं उवसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ वंज १२ क्रियापदे १३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७ ज्ञातने १८ श्रुत जणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥ वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर मेव लाल रे ॥

अथवा दिन विसा लगै, वीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥  
 एक नली षट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर  
 नवी करणी पम्, पिठली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥  
 ठठ अष्टम उपवाससुं, अथवा देखी शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर  
 आराधियै, देव वांदै निज जक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपू  
 रण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदै  
 सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी शिवर  
 पाठक पदै, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही,  
 सात ध्यानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै स-  
 दा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पम्कमणो दोय टंकही, करियै  
 पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक नली करी  
 वीस लाल रे ॥ वीसावीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल  
 रे ॥ वी० ११ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित  
 धार लाल रे ॥ कान्तसग्गने परदहणा, मुख जणियै नवकारलाल  
 रे ॥ वी० १२ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद जक्ति  
 लाल रे ॥ पूजन शुद्ध मन साचवै, दिन२ वढती शक्ति लाल रे  
 ॥ वी० १३ ॥ मृतक जनम ऋतुकालमें, कवि धारयो उपवास लाल  
 रे ॥ सो लेखे नहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी०  
 १४ ॥ सावज्ज त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शीठ  
 आज्ञापण आदरै, मुखसुं बोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १५ ॥ जै  
 आसाढ वैशाखमें, मिंगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए षट् मासे  
 मांहिनै, व्रत ग्रहिये वरुजाग लाल रे ॥ वी० १६ ॥ तप पूरण  
 हुवां अकां, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारिने  
 उन्नव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १७ ॥ वीस१ गिणती तणा  
 पुस्तक पूठा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै हठवा

जाल रे ॥ वी० १ए ॥ फलवधी नगरनी श्राविका, कीधी विधे चिंत  
 जाल रे ॥ जनम सफल करंवा जणी, उद्दिज मोक्ष उपाय  
 जाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आज्ञा धार  
 चित्त मजार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार  
 ॥ वसु नंद सिद्धि चंद्र वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी  
 शशि गद्य खरतर जणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुद्ध मधुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुवि  
 हित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक जली दो  
 महीनेसे लेकर ठ महीने पूरी करै. कदास ठ महीनेमें पूरी नहीं कर  
 सके तो वो जली गिणतीमें नहीं. उर फेर नइ करणी परती है.  
 एक जलीके वीस पद हे ( तहां ) कोइ वीस दिनमें वीस पद  
 जुदार गिणते हे, कोइयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हें, दूसरै  
 वीसों दिनमें दूसरा पद, एसें वीसों पदकी वीस जली करै. तिहां  
 पदाराधनेके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिके आराधै. वीस  
 अठमसें एक जली होय ( एसें ) वीस जली १०० सें अठमसें आ  
 राधै. और उससें कम शक्ति होय तो ठहसें आराधै. उससें कम  
 शक्ति होय तो चोविहार उपवास करिके आराधै. उससें हीन शक्ति  
 होय तो त्रिविहार उपवास करिके आराधै. उससें हीणशक्ति आंखिल  
 ( तथा ) त्रिविहार एकाशणा करिके आराधै. उसमें जो शक्तिवान  
 होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पदरी पोसह करै. हीनशक्ति  
 त्रिनपोसह करै. वीसों पद पोसहसेती आराधै. जो पोसह शक्ति  
 सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, शिवर  
 पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपद-  
 में ७, यह सात स्थानक पद तो पोसह करकेही आराधै. जो इतनी

ऋषि शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार  
 गोमै, सो शक्ति ऋषि नही होय तो यथाशक्ति तप करै आराधै  
 अपणी हीणता जावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप  
 नही गिणै जावै, स्त्रियां ऋषि ऋतुसमयका तप नही गिणै, तथा तपके  
 दिन पोसह सहित करै तो वहोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं ह  
 सके तो तपके दिन उन्नय टंक पम्कमण करै, तीन टंक देववन्दन  
 करै, दो हजार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, ऋषि शयन  
 करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करै, असत्य नहि बोले,  
 सब दिन तप पदके गुण कीर्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे  
 तो पारणके दिन जिनऋषि करै पारणा करै, जो तपके दिन पो-  
 सह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनऋषि करै करावै, जावना  
 जावै तथा तपके दिन तप पदके गुण जेद प्रमाण संख्यासँ काउ-  
 सग्न करै, इतनाही तद्गुण स्मरणपूर्वक स्वमासमण देइ वंदना करै,  
 उस पदका गुण याद करै उदात्त स्वरसँ स्तवना करै, हर्षित रहै।  
 ॥ अथ वीस स्थानक गुणना और काउसग्नका प्रमाण लिखते हैं।  
 ( एमो अरिहंताण ) २००० गुणना लोगस्त १२ का काउ-  
 सग्न ॥ १ ॥ ( एमोसिद्धाण ) २००० गुणना लोगस्त १५ का का-  
 उसग्न ॥ २ ॥ ( एमो पवयणस्त ) २००० गुणना लोगस्त ७  
 का काउसग्न ॥ ३ ॥ ( एमो आयरिआण ) दो हजार गुणना  
 लोगस्त ३६ का काउसग्न ( एमो शेरण ) दो हजार गुणना  
 लोगस्त १५ का काउसग्न ॥ ५ ॥ ( एमो उवजायाण ) दो ह  
 जार गुणना लोगस्त १५ का काउसग्न ॥ ६ ॥ ( एमो लोए स  
 साहूण ) दो हजार गुणना लोगस्त २७ का काउसग्न ॥ ७ ॥  
 ( एमो नाणस्त ) दो हजार गुणना लोगस्त ५ का काउसग्न ॥  
 ॥ ८ ॥ ( एमो दंसणस्त ) दो हजार गुणना लोगस्त १७ का

काञ्चसग ॥ ए ॥ ( एमो विणयसंपसाणं ) दो हज़ार गुणना  
 लोगस्त १० का काञ्चसग ॥ १० ॥ ( एमो चारित्तस्त ) दो ह-  
 ज़ार गुणना लोगस्त ६ का काञ्चसग ॥ ११ ॥ ( एमो वंजव्वय  
 पारीणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त ए का काञ्चसग ॥ १२ ॥  
 ( एमो किरियाणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त २५ का काञ्चसग  
 ॥ १३ ॥ ( एमो तवस्तीणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त १५ का  
 काञ्चसग ॥ १४ ॥ ( एमो गोयमस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त  
 १७ का काञ्चसग ॥ १५ ॥ ( एमो जिषाणं ) दो हज़ार गुणना  
 लोगस्त १० का काञ्चसग ॥ १६ ॥ ( एमो चरणस्त ) दो हज़ार  
 गुणना लोगस्त १५ का काञ्चसग ॥ १७ ॥ ( एमो नाणस्त ) दो  
 हज़ार गुणना लोगस्त ५ का काञ्चसग ॥ १८ ॥ ( एमो सुअना-  
 णस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त १० का काञ्चसग ॥ १९ ॥  
 ( एमो तिष्ठस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त ५ का काञ्चसग करै  
 ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों उल्लोमें सर्व पदके उच्च महो-  
 च्छव प्रनावना ऊजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते  
 इतनी शक्ति नहीं होय तो एक उल्लो तो विशेष उच्चवादिक संयुक्त  
 करणी चाहियै. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसँ वीश स्थानक सेवनविधि  
 संक्षेप मात्रसँ लिखी हे. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसँ  
 वीशों पदकी जुदीर विधि गुरुके मुखसँ समजके करै. जो गुरुका  
 संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखकै वीस स्था-  
 नक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढ़ै, वीस  
 स्थानकजीकी पूजा करावै, अथवा शक्ति माफक वीसर ज्ञानोप-  
 करण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते  
 लगावै, गुरुपदका गुरुखाते लगावै, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,



साहमी वृद्ध कैंर, इत्यादिक इवै उर जावै विधि संयुक्त शुद्ध  
जावसैं जो ज्ञव्यजीव यह वीस स्थानक पदकों सेवन करेगें सो  
जिन नाम कर्मकों उपार्जन करकै तीसरै ज्ञव अनंत सुखकों प्राप्त  
होंगें. इत्यलंविस्तरेण ॥ इति वीस स्थानक तप उलो विधि सं० ॥

॥ अथ वीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

एमोणंतविन्नाणसदंसणाणं, सहाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥  
ज्ञवज्जोवविह्वयणेवारणाणं, एमोवोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हज्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनैस्सूजा ॥ अथ  
सिद्धसूजा ॥ लोगगज्जागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमणि-  
दियाणं ॥ निस्सेसकम्मस्सकथकारणाणं, एमोसयामंगलधारणाणं ॥  
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेज्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥  
अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुक्कंधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-  
णदयागिहस्स, एमो२ संघचउबिहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः  
॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेकीतरुसिंधुराणं, सुरीसरणां-  
सुणिवंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, एमोसयामंगलमंदिराणं ॥  
४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-  
त्तसंयमपतित्तज्जविजन अतिहधिरकरताज्जला ॥ अवगुणअडुषित  
गुणविज्जुषित चंडकिरणसमोज्जला ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरथ  
रुचिरधाराधरा, ज्ञवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोश्रिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ षष्ठी पद ॥ सबोहिबीजंकुरुकार-  
णाणं, एमोश्वायगावारणाणं ॥ कुबोहिदंतीहरिणोसराणं ॥ विग्घो-  
यसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेज्यो नमः ॥ ६ ॥ अथ  
सातमा पद ॥ संतज्जियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-  
णं ॥ सन्नाण पज्जायतरुवलाणं, एमो२ होउतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ  
ह्रीं श्रीं सम्मग्गसाधुज्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ उदवपज्जा

यगुणाकरस्त, सयापवासीकरणोधुरस्त ॥ मित्रतत्रन्नाणितमोहरस्त,  
 एमो२ नाणदिवायरस्त ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥  
 ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्त, अणंतसंसारवि  
 दारणस्त ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्त, एमो२निम्मलदंसणस्त ॥  
 ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-  
 पद ॥ आणंदियासेसजगङ्गणस्त, कुंदिडुपादामलताचणस्त ॥ सुध-  
 म्मजुत्तस्तदयासयस्त, एमो२श्रीविणयालयस्त ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं  
 श्रीं सम्यग्विनयै नमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-  
 म्मोषकंतरदवानलस्त, महोदयानंदलयाजलस्त ॥ विन्नाणपंकेरुह  
 कारणस्त, एमोचरित्तस्तगुणापणस्त ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चा-  
 रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवंगांग-  
 सुहृष्यस्त, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्त ॥ सव्वयाञ्चूपणञ्चूपणस्त,  
 नमोहिशीलस्तअदूसणस्त ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ब्रह्मचैयनमः ॥ १२ ॥  
 अथ तेरमं क्रिया पद ॥ विशुद्धसदाणविञ्चूपणस्त, सुलद्धितंपत्तिसु  
 पोपणस्त ॥ एमोसदाणंतगुणप्पदस्त, नमो२सुद्धक्रियापदस्त ॥  
 १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यगक्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥  
 लद्धीसरोजावलितावणस्त, सुखसंलग्गसुपावणस्त ॥ अमंगलानो  
 कुहडुवस्त, नमो२निम्मलसत्तवस्त ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्तव-  
 से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणंतविन्नाणविन्नाकर  
 स्त, डुवालसंगीकमलाकरस्त ॥ सुलद्धासाजयगोयमस्त, नमोग  
 णाधीस्तरगोयमस्त ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गौत्तमाय नमः ॥ अथ  
 सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुसुसत्तत्तिसयासयाणं, सुरा२धी सर-  
 वंदियाणं ॥ र्वींउविंवामलसग्गुणाणं, दयाधणाणंदिनमोजिणाणं  
 ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जिनेज्योनमः ॥ अथ सत्तरमं चारित्तधारीपद  
 ॥ सविंदियापारविकारदारी, अकारणासेसजलावेगारी ॥ महाज-

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 सम्यग्वास्त्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अठारमें ज्ञानपदपूजा  
 ॥ शुद्धक्रियामंरुलमंरुणस्त, संदेहसंदोहविखंरुणस्त ॥ मुत्तीउपादा  
 नसुकारणस्त, नमोहिनाणस्तजसोधणस्त ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव  
 क्षीवनवारणस्त, सुबोहिबीजांकुरकारणस्त ॥ अणंतसंसुद्धगुणाव-  
 यस्त, नमोदयामंदिरसठयस्त ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्श्रुतयै  
 नमः ॥ १९ ॥ अथ वीसमें तीर्थपद ॥ तुच्यंनमःसकलविश्ववशं  
 कराय, तुच्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुच्यंनमःस्रुवनमंरुल  
 मंरुनाय, तुच्यंनमोस्तुजिनपंकविखंरुनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं स  
 म्यग्तीर्थपदेभ्योनमः ॥ २० ॥ ध्वजासमेत अष्ट इव्य चढावै (पीठै)  
 ६४ इंड्रपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधमेंडायनमः १ ॥ ॐ इशाणें  
 डायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंडायनमः ३ ॥ ॐमाहेंडायनमः ४ ॥  
 ॐब्रह्मेंडायनमः ५ ॥ ॐलांतकेंडायनमः ६ ॥ ॐशुकेंडायनमः ७  
 ॥ ॐसहस्रारेंडायनमः ८ ॥ ॐप्राणतेंडायनमः ९ ॥ ॐअ-  
 च्युतेंडायनमः १० ॥ ॐचंद्रेंडायनमः ११ ॥ ॐसूर्येंडायनमः १२ ॥  
 ॐचमैरेंडायनमः १३ ॥ ॐवलींद्रायनमः १४ ॥ ॐधरेंणद्राय  
 नमः १५ ॥ ॐनूतानेंद्रायनमः १६ ॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनमः १७ ॥  
 ॐवेणुदालींद्रायनमः १८ ॥ ॐहरिकान्तेंद्रायनमः १९ ॥ ॐहरिस्त  
 हेंद्रायनमः २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनमः २१ ॥ ॐअग्निमाण  
 वेंद्रायनमः २२ ॥ ॐपूणेंद्रायनमः २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः  
 २४ ॥ ॐजलकान्तेंद्रायनमः २५ ॥ ॐजलप्रज्ञेंद्रायनमः २६  
 ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः २८ ॥  
 ॐवेलवेंद्रायनमः २९ ॥ ॐप्रज्ञजनैडायनमः ३० ॥ ॐघोषें  
 डायनमः ३१ ॥ ॐमहाघोषेंडायनमः ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ उंमहाकालेन्द्रायनमः ॥ ३४ ॥ उंसरूपेन्द्रायनमः ॥ ३५ ॥  
 उंप्रतिरूपेन्द्रायनमः ॥ ३६ ॥ उंपूर्णज्जेन्द्रायनमः ३७ ॥ उंमाणज्जेन्द्राय  
 नमः ॥ ३८ ॥ उंजीमेन्द्रायनमः ॥ ३९ ॥ उंमहाजीमेन्द्रायनमः ॥  
 ४० ॥ उंकिन्नरेन्द्रायनमः ॥ ४१ ॥ उंकिंपुरुषेन्द्रायनमः ॥ ४२ ॥ उंसत्पुरुषे  
 द्रायनमः ॥ ४३ ॥ उंमहापुरुषेन्द्रायनमः ॥ ४४ ॥ उंअमितकार्येन्द्रायनमः ॥  
 ४५ ॥ उंमहाकार्येन्द्रायनमः ॥ ४६ ॥ उंगीतरतीन्द्रायनमः ॥ ४७ ॥ उंगीत-  
 यज्ञेन्द्रायनमः ॥ ४८ ॥ उंसन्निहितेन्द्रायनमः ॥ ४९ ॥ उंसामानि-  
 केन्द्रायनमः ॥ ५० ॥ उंधात्रेन्द्रायनमः ॥ ५१ ॥ उंविधात्रेन्द्रायनमः  
 ॥ ५२ ॥ उंरूपिन्द्रायनमः ॥ ५३ ॥ उंरूपिपालतेन्द्रायनमः ॥ ५४ ॥  
 उंइश्वरेन्द्रायनमः ॥ ५५ ॥ उंमहेश्वरेन्द्रायनमः ॥ ५६ ॥ उंवस्तेन्द्रा-  
 यनमः ॥ ५७ ॥ उंविशालेन्द्रायनमः ॥ ५८ ॥ उंहास्येन्द्रायनमः ॥  
 ५९ ॥ उंश्रेयसेन्द्रायनमः ॥ ६० ॥ उंहास्यस्तेन्द्रायनमः ॥ ६१ ॥  
 उंपदगेन्द्रायनमः ॥ ६२ ॥ उंपदगपतेन्द्रायनमः ॥ ६३ ॥ उंमहाश्रे-  
 येन्द्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसठइंद्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्या-  
 देवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ उंरोहिण्येनमः ॥ १ ॥ उं-  
 प्रज्ञतेनमः ॥ २ ॥ उंवज्जश्रुपलायैनमः ॥ ३ ॥ उंवज्जाकुशयैनमः  
 ॥ ४ ॥ उंचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ उंपुरुषदत्रायैनमः ॥ ६ ॥ उंका-  
 ल्यैनमः ॥ ७ ॥ उंमहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ उंगौर्ध्व्यैनमः ॥ ९ ॥ उं  
 गंधार्ध्व्यैनमः ॥ १० ॥ उंमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ उंमानव्यै-  
 नमः ॥ १२ ॥ उंवैरोध्यायनमः ॥ १३ ॥ उंअनुत्तायैनमः ॥ १४  
 ॥ उंमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ उंमहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति पो-  
 रुश विद्यादेवी नाम पूजाः ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे तो-  
 पारी चढावै ॥ ॥ उंब्रह्मशांति्यैनमः ॥ १४ ॥ उंपा-  
 र्श्वयक्षायनमः ॥ १५ ॥ उंगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ उंजृकुट्यैनमः  
 ॥ २१ ॥ उंवरुणायनमः ॥ २० ॥ उंकुबेरायनमः ॥ १९ ॥ उंप-

क्लेशयनमः ॥ १८ ॥ उँगधर्वायनमः ॥ १७ ॥ उँगरुद्रायनमः ॥  
 १६ ॥ उँगकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ उँगपातालायनमः ॥ १४ ॥ उँग-  
 एमुखायनमः ॥ १३ ॥ उँगकुमारायनमः ॥ १२ ॥ उँगपक्षराजाय-  
 नमः ॥ ११ ॥ उँगब्रह्मण्येनमः ॥ १० ॥ उँगअजितायनमः ॥ ९ ॥  
 उँगविजयायनमः ॥ ८ ॥ उँगमातंगायनमः ॥ ७ ॥ उँगकुसमायनमः ॥  
 ६ ॥ उँगतुंबुर्यैनमः ॥ ५ ॥ उँगवृक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ उँगत्रिमुखा-  
 यनमः ॥ ३ ॥ उँगमहायज्ञायनमः ॥ २ ॥ उँगगोमुखायनमः ॥ १ ॥  
 इति १४ यज्ञ नाम पूजा ॥ ॥ अथ १४ यज्ञणी नाम लि० ॥  
 उँगचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ उँगअजितवलायैनमः ॥ २ ॥ उँगदुरितार्यैनमः  
 ॥ ३ ॥ उँगकालिकायैनमः ॥ ४ ॥ उँगमहाकाट्यैनमः ॥ ५ ॥ उँगश्या-  
 मायैनमः ॥ ६ ॥ उँगशांतार्यैनमः ॥ ७ ॥ उँगभ्रुकुट्यैनमः ॥ ८ ॥  
 उँगसुतारकार्यैनमः ॥ ९ ॥ उँगअशोकायनमः ॥ १० ॥ उँगमानव्यैनमः  
 ॥ ११ ॥ उँगवंशायनमः ॥ १२ ॥ उँगविदितायैनमः ॥ १३ ॥ उँगअंकु-  
 शार्यैनमः ॥ १४ ॥ उँगकंदपार्यैनमः ॥ १५ ॥ उँगनिर्वाण्यैनमः ॥  
 १६ ॥ उँगबलायैनमः ॥ १७ ॥ उँगधारिण्यैनमः ॥ १८ ॥ उँगधरणप्रियायैनमः  
 ॥ १९ ॥ उँगनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ उँगगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ उँगअं-  
 विकायैनमः ॥ २२ ॥ उँगपद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ उँगसिंहायकायै-  
 नमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ उँगनैसर्पका-  
 यनमः १ ॥ उँगपांडुकायनमः २ ॥ उँगपिंगलायनमः ३ ॥ उँगसर्वरत्नायनमः  
 ४ ॥ उँगमहापद्मायनमः ५ ॥ उँगकालायनमः ६ ॥ उँगमहाकालायनमः  
 ७ ॥ उँगमाणवायनमः ८ ॥ उँगशंखायनमः ९ ॥ इति नव  
 निधान पदे ए कलश चढावै ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥  
 उँगविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ उँगक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ उँगचक्रेश्व-  
 र्यैनमः ॥ ३ ॥ उँगधरणेंद्रायनमः ॥ ४ ॥ उँगपद्मावत्यैनमः ॥ ५ ॥  
 उँगइंद्रायनमः ॥ ६ ॥ उँगअग्नेयेनमः ॥ ७ ॥ उँगयमायनमः ॥ ८ ॥

उन्नैरुतायनमः ॥ ४ ॥ उन्नैरुतायनमः ॥ ५ ॥ उन्नैवायव्यैनमः ॥ ६ ॥  
 उन्नैकुवेरायनमः ॥ ७ ॥ उन्नैईशानायनमः ॥ ८ ॥ उन्नैनागायनमः ॥ ९ ॥  
 उन्नैब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ उन्नैसूर्यायनमः ॥ १ ॥  
 उन्नैचंद्रायनमः ॥ २ ॥ उन्नैज्योमायनमः ॥ ३ ॥ उन्नैत्रुधायनमः ॥ ४ ॥  
 उन्नैशुद्धस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ उन्नैशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ उन्नैशनैश्वरायनमः  
 ॥ ७ ॥ उन्नैराहवैनमः ॥ ८ ॥ उन्नैकेतवैनमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह  
 नाम ॥ इहां वीस स्थानक मंजल पूजनकी विधि विशेष लिखी  
 है । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंजल प्रतिष्ठा  
 षडवाकुलादिककी संपूर्ण विधि नवपद मंजल पूजामें लिखिआए  
 है उस मुजबही करणी । फेर विशेष विधि करणी होय तो वि-  
 छज्जन गुरुको पूठके करणी ॥ इति वीसस्थानक मंजल पूजा वि० सं० ॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शशिन देवत सामणी ए मुज सानिध कीजै, जुलो  
 कर जगति जणी समजाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तणो ए  
 जिणारा गुण गाउं, जिम सुख सोदग संपदा ए वंजित फल पाउं ॥  
 १ ॥ दक्षिण जरते अंगदेस ठै चंपानयरी, मधवा राजा राज्य करै  
 तिण जीता वयरी ॥ पाटतणी राणी रूवनी ए लखमी इण नामे,  
 आठ पूत्र जाया जिणे ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे  
 कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आठ पूत्रां ऊपरां ए तिण लागे प्यारी  
 ॥ बावै चंडतणी कला ए जिम पख ऊजवालै, तिम ते कुमरी धाय  
 माय पांचै प्रतिपालै ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवनी ए घर अंगण वैठी,  
 दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन जुवन विच एदवी  
 ए नही दूजी नारी, रंजा पत्रमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥  
 ॥ पुरुष न दीपै कोइ इतो जिणने परणाउं, आख्या आगल साल  
 वधै तिण चमन न पाउं ॥ देशरना राजवी ए ततखिण तेमाया,

सबल सजाई साथ करी नरपति पिए आया ॥ ५ ॥ वीतशोक  
 राजातणो ए वै कुमर सोजागी, कन्याकैरी आंखनी ए तिणसेती  
 लागी ॥ ऊजा देखै सकल लोक चढिया केइ पादा, चित्रसेनरे कंठ  
 ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवांगना ए जपै जैजैकार  
 रलियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक  
 खत कन्यारो जानो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर  
 लागो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो जलो ए दीया दान अपार ॥  
 घर आया परणी करी ए हरखयो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र  
 जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस  
 लीधो ॥ ८ ॥ ( ढाल-प्रभु प्रणमुं रे पास जिणोसर थंजणो ॥ ए  
 देशी ) ॥ तिण नगरी रे चित्रसेन राजा थयो, सुख मांही रे  
 केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा जला,  
 चढते पख रे चंद्र जिसी चढती कला ॥ ( उछालो ) चढती कला  
 हिव राय बैगो पास बैठी रोहणी, सातमी जूमी कंतसेती करै की  
 ना अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो,  
 पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ ( चाल )  
 इक कामण रे गोख चढी इष्टे पनी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे  
 खनी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण  
 अधिकेरो डुख हुज ॥ ( उछालो ) डुख हुवो देखी रोहिणी हिव  
 कहै इम प्रीतम जणी, ए नार नाचै अनै कूदै कहो किम मोटा  
 धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइ में कदे देखयो नही, मुऊने त  
 मासो अने हासो देखतां आवै सही ॥ १० ॥ ( चाल ) इण वचन  
 रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीना नवि लहै ॥  
 डुखणी रे पूत्र मुओ तरुपन करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥  
 ( उछालो ) जाणै तरै तूं वात डुखनी गरबगहली कामनी, इम

कही राजा हाथ जाह्यो तेहना बालकजणी ॥ सातमा ज्युथी  
 तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र  
 नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ ( चाल ) हिव राजा रे पूत्रतणै शोकै  
 करी, थयो मुरठित रे रोवै अति आंखया जरी ॥ परतो सुत रे  
 सासणदेवत जालियो, कंचनमयरे सिंहासण बैसारियो ॥ (उद्धालो)  
 बैसारियो कर जोरु आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ  
 हसावै पायपंकज सेवता ॥ ऊपनो जूपतने अचंजो देख ए कारण  
 कितो, जो कोइ ग्यानी गुरु पवारै पूठियै सांसो इसो ॥ १३ ॥  
 ( चाल ) चिंतवतां रे चारनिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो  
 वंदणने तिसै ॥ सुण देशना रे पूठे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी  
 रे पूरवजव बालकतणो ॥ ( उद्धालो ) बालकतणो जव जूप पूठै  
 कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो जवांतर अने राजानो बली  
 ॥ श्रीगुरु पासे पाठलै जव रोहणी तप आदर्शयो, तपतयो सगते  
 साधुजगते तुम्ह जवसायर तस्थो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे  
 रोहणितप किम कीजियै, विधि जाखो रे जिम तुम पासे लीजियै  
 ॥ तव मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन  
 राजाजणी ॥ (उद्धालो) राजाजणी विधि एह जंपै चंड रोहणतप  
 आवियै, उपवास कीजै लाज लीजै जली जावना जावियै ॥ वा-  
 रमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे  
 कीजै तजी आलस अंगसुं ॥ १४ ॥ ( दाल-वीर सुणो मोरी वीनती  
 ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करिये हो ऊजमणो  
 एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥  
 त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजै वृद्ध अशोक ॥  
 गुणनो वारमं जिनतणो, जला नेवज हो धरियै सहु शोक ॥ त०  
 ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आठे मंगलीरु ॥



॥ अथ छम्मासी तप विधिः ॥

॥ शासनके अधिपती श्रीमहावीरस्वामी सर्वसँ उत्कृष्ट उ  
म्मासी तप किया. इस वास्ते इस वखतमें संघयण बल पराक्रम  
के हीनपणोंसँ इकसार उम्मासी तप नहिं कर सकतेहैं तोनी उम्मा  
सीके १८० उपवास करणोंसँ जघन्य उम्मासी तपके फलकों जीव  
प्राप्त होता हे. नर देव वंदनादि क्रिया करै, स्तवन उम्मासीतपका  
सुणै, इस स्तवनमें वीरप्रज्ञूके सर्व तपस्याकी संख्या कही है.  
( श्रीमहावीरस्वामीनाश्रायनमः ) इसका २००० गुणना करै. वीर  
प्रज्ञूके नामका तीर्थ होय उहां यात्रा करणोंको जावै, शुद्ध ज्ञावना  
ज्ञावै, शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रज्ञाव लघुकर्मी  
जीव होकर अनंतसुखकों प्राप्त होय ॥ इति उम्मासी तप विधि ॥

॥ अथ बारेमाशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ दान उल्लट धरी दीजियै ॥ ए देशो ॥ त्रिजुवन नाय  
क तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे ॥ चौसठ इंद्र करै सदा, तुज  
पदपंकज सेव रे ॥ त्रिजु० १ ॥ प्रथम जूपाल प्रजु तूं अयो, इण  
अवसरपणी काल रे ॥ तुज सम अवर न को प्रजु, तूं प्रजु दीनदयाल  
र ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तर्थकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे ॥  
धर्म प्रज्ञापक प्रथमतूं, तूंही हे प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर  
अरि जे आत्मतणा, काल अनादि अिति जेह रे ॥ ते तप शक्तिर्ये तें  
हणया, आत्म वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ तादरी शक्ति कुण  
कह सकै, जेहनो अंत न पार रे ॥ द्वादश माशनो तप कर्यो, तेह  
अपानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणयो  
आगममें जिनराज रे ॥ ते करवूं अति आकरूं, तप विना किम  
सरे काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीनसँ साठ उपवास ते, ते इण पंचम  
काल रे ॥ अवसर आदरै क्रम विना, ते पिण जवि सुविताल रे ॥

त्रि० ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्रतणे अनुसार रे ॥ पन्धिक  
 मणादिक ज्ञावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ८ ॥ चित्त स  
 माधि शुद्ध ज्ञावथी, धरे ताहरो ध्यान रे ॥ ते नर उत्तम फल लहै,  
 कवि लहै उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ९ ॥ काल अनादि संसारमें, ज  
 न्म मरणतणा दुःख रे ॥ ते लहे धर्म पाया विना, तप विना किम  
 हुवै सुख रे ॥ त्रि० १० ॥ हिव लह्यो नरजव पुन्यथी, वलि ल  
 ह्यो श्रीजिन धर्म रे ॥ तत्वनी रुचि अइ हे मुऊ, हिव मिठ्यो म  
 नतणो जर्म रे ॥ त्रि० ११ ॥ जव२ एक जिनराजनो, सरण हो  
 ज्यो सुखकार रे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, में कियो हिवै परिहार  
 रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्षमार्ग सुविशाल रे  
 ॥ जव२ जे मुऊ संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० १३ ॥  
 श्रीजिनशाशन तप कह्यो, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ धन२ जे नर  
 आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥ कलश ॥ इम ना  
 जिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, में थुण्यो धन दिन  
 आजनो मुऊ मात मरुदेवी नंदनो ॥ संवत सुनेत्राकासनिधि शशि  
 नयर श्रीवालूचरै, श्रीजिनसौजाग्य सुरिंद के सुपशाय विजय वि-  
 मल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री वारे माशी तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ वारै माशी तप विधिः ॥

॥ प्रथम तीर्थकर श्रीरूपजदेवस्वामी उत्कृष्ट वारै माशी तप  
 स्या करी. इस वास्तै जव्यजीव वारै माशी तपस्याका ज्ञाव लायकै  
 ( ३६० ) तीनसेसाठ उपवास करै. जिस दिन व्रत होय उस दिन  
 देववंदनादि क्रिया करै, वारै माशी तपका स्तवन सुणै ॥ ( श्री  
 रूपजदेवस्वामीनाथायनमः ॥ ) इसका २००० गुणना करै.  
 तपस्या पूर्ण होनेसे सिद्धगिरी यात्रा करणेको जावै. शक्ति माफक  
 उद्यापन उच्च करै. इस तपस्याके प्रशाद जव्यजीवके कच्ची दुख

दौजाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज बढ़ता रहे ॥ इति वारैमा  
शी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठार्दस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ इहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिनेसरु, श्रुद्ध मने सुखकार ॥  
लब्धि अठवीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याक  
रणें प्रगट, जगवतीसूत्र मजार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारु लब्धि  
विचार ॥ २ ॥ आंखिल तप कर ऊपजै, लब्धां अठवीस ॥ ए  
हिव परगट अरधसुं, सांजलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सफल  
संसारनी ॥ ) अनुक्रमें हेव अधिकार गाथातणें, लब्धिना नाम  
परिणाम सरिषा जणें ॥ रोग सह जाय जसु अंग फरस्यां सही,  
प्रथम ते लब्धि ठै नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र उपध  
समा जाणियै, वीय वप्पोसही लब्धि वखाणियै ॥ श्लेष्म उपध  
सारिखो जेहनो, तीजी खेद्धोसही नाम ठै तेहनो ॥ ५ ॥ देहना  
मैलथी कोठ दूरे हुवै, चोथी जद्धोसही नाम तेहनो ठवै ॥ केश  
नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहैनही रोग सव्वोसही ते कही  
॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रियतणा, जेद जाणें तिका नाम  
संजिखना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी लब्धि  
ते अबधिग्याने कही ॥ ७ ॥ ( ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए  
चाल ॥ ) हिव आंगुल अठियै ऊणो मानुषक्षेत्र, संज्ञा पंचेडि तिहां  
जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंतित जाणें शूल प्रकार, तें रुजू  
मति नामे अठम लब्धि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषक्षेत्रे संज्ञा  
वंत, पंचेडिय जे ठै तसु मन वातां तंत ॥ सूखम परजायें जाणें  
सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुज नाम ॥ ९ ॥  
जिण लब्धि प्रजावें ऊनी जाय आकाश ॥ ते जंघाविज्ञाचारण  
लब्धि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापै खिणमें खेरुं थाय, ए लब्धि

इग्यारमी आसीविस कहिवाय ॥ १० ॥ सहू सूखम वावर देखै  
 लोकालोक, ते केवल लवधी बारमियै सहू थाक ॥ गणधर पद ल  
 हियै तेरम लवधि प्रमाण, चवदम लवये करी चवदै पूरव जाण  
 ॥११॥ तीर्थकर पदवी पामे पनरमी लवधि, सोलम सुखदाई चक्र  
 वर्त्तिपद रिद्ध ॥ बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अठारमी आखा  
 वासुदेव विस्तार ॥१२॥ मिसरी घृतकीरै मेढयाजेहसवाद, एहवी  
 लहै वाणी जगणीशम परसाद ॥ ज्ञणियो नवि ज्ञलै सूत्र अरथ सुविचा  
 र, ते कुष्ट कबुद्धी वीसम लवधि विचार ॥१३॥ एकै पद ज्ञणियां आ  
 वै पद लख कोरु, इकवीसमी लवधी पयाणुसारणी जोरु ॥ एकै  
 अरथे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक  
 ॥ १४ ॥ ( ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥ ) सो  
 लह दैशतणी सही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लवधि तेवीस  
 मी रे, तेजोलेस्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥  
 आगमने अधिकार, च० ॥ वारू लवधि विचार ॥ च० ॥ एआंकणी  
 ॥१५॥ चवद पूरवधर मुनिवरू रे, उपजंता संदेह ॥ रूप नवो रचि  
 मोकले रे, लवध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेस्या अगननी  
 रे, उपशमवा जलधार ॥ मोटी लवधि पचवीसमी रे, शीतोले  
 श्या सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगतिसुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै  
 रूप ॥ सदगुरु कहै ठावीसमी रे, वैक्रिय लवधि अनूप ॥ च० १८  
 ॥ एकश पात्रे आदमी रे, जीजामै केह लाख ॥ तेह अस्कीणम  
 हानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चकोसनी  
 रे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लवधी कही रे, अठवीशमी  
 नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेस्या विहुं रे, तेम पुलाक विचार  
 ॥ जगवतीसूत्रमें ज्ञापियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥  
 पन्नवणा आहारनी रे, कलपसूत्र गणधार ॥ तीनश इकर मिस्री रे,

वाहू आठ विचार ॥ च० ३२ ॥ प्रश्नव्याकरणे सही रे, वाकी ल  
 वयां वीश ॥ साजलतां सुख ऊपजै रे, दोलत हुवै निशदीत ॥  
 च० ३३ ॥ ( कलश ) संवत सत्तरैसे ठवीसे मेरुतेरस दिन जलै,  
 श्रीनगर सुखकर लूणकरणसर आदिजिन सुपसानजै ॥ वाचना  
 चारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन  
 जणतां प्रगट ग्यान प्रकास ए ॥ ३४ ॥ इति ३८ लब्धि स्तवनं ॥  
 ॥ अथ अष्टाईस लब्धि तप विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करै, अन  
 क्रमसे २८ उपवास करै, स्तवन सुणे. जिस दिन जो लब्धिका उ  
 पवास होय उसही नामका गुणना करै. तप पूर्ण होणेसे शक्ति  
 मुजब उद्यापन करै. इस तपस्यासे निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय, सदा  
 आनंद रहै. इति २८ लब्धितप विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ बे कर जोमी ताम ॥ ए देशी ॥ जिनवर श्री  
 वर्द्धमान, चरम तीर्थकर, प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्री  
 गणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदै पूर  
 व नाम, सूत्रै जूजूवा, वीरजिनंदे ज्ञाषिया ए ॥ ते हिव सुगुरु पसा  
 य, वरणविस्थुं इहां, आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व  
 उत्पाद १, दूजो अत्रायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्ति  
 नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणियै, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥  
 ॥ ३ ॥ ठठो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आत्म ७, कर्मप्रवाद अठम गिणो  
 ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ९, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमो  
 कह्यो ए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कड्याण ११, प्राणायु बारमो  
 १२, क्रियाविशाल तेरम जणो ए १३ ॥ विंडुत्तर १४ इण नाम,  
 चवदे ए कह्या, साख अकी में संग्रह्या ए ॥ ५ ॥ ( ढाल २ ॥ श्री

विमलाचल शिर तिलो ॥ ए देशी ॥ ) उत्पाद पूर्व सोहामणो,  
 कोटी पद परिमाण ॥ पट ज्ञाव प्रगट वै ते जिहां, त्रिपदी ज्ञाव  
 विनाण ॥ १ ॥ सर्व इव्यपर्ययतणो, जीव विशेष प्रमाण ॥ दूजो  
 पूर्व अग्रायणी, ठिनुं लख पद जाण ॥ २ ॥ पद लख सत्तर जेहनी,  
 संख्या परगट एह ॥ वीर्य प्रबलता जीवनी, ज्ञापी तीजै तेह ॥ ३ ॥  
 चोथे पूर्व जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ॥ पद संख्या साठ लाख-  
 नी, सत्तजंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥ ग्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आण्यो  
 जोरु ॥ मत्यादिक पण जेदसुं, पद संख्या इक कोरु ॥ ५ ॥ सत्य-  
 प्रवाद ठधो कहूं, ज्ञापुं सत्य स्वरूप ॥ संख्या पद इक कोरुनी,  
 ज्ञापी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम इव्य  
 सुज्ञाव ॥ ठवीस पदं कोरु जेहना, सूत्रे आणया ज्ञाव ॥ ७ ॥ कर्म  
 प्रवादतणो द्विवै, प्रगटवणें अधिकार ॥ लाख असी पद जेहना,  
 कोरुनी इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहूं द्विवै, नामे प्रत्याख्या-  
 त्रे ॥ लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित आन ॥ ९ ॥ अति-  
 शय गुण संयुत जणी, साधन साध्य निदान ॥ विद्या अनुपम  
 सातसै, कोरुनी वरस लख जान ॥ १० ॥ कट्याण नाम इग्यारमो,  
 ठवीस कोरु प्रमाण ॥ ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविह देव क-  
 ट्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, ठप्पन्न लख इग कोरु, प्राण  
 निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आण्यो जोरु ॥ १२ ॥ ख्यायिक्यादिक  
 जे क्रिया, ठंद क्रिया सुविस्तार ॥ पद संख्या नव कोरुनी, तेरमी  
 क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारविंडु चवदमो, नामे अरथ नि-  
 शाल ॥ पद संख्या इग कोरुनी, लाख पचवीस संज्ञाल ॥ १४ ॥  
 लोकप्रत्यय देखण जणी, संख्या गज परिमाण ॥ सोले संहस अरु  
 तीनसै, नर तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरव संख्या ए कही, गुण-  
 मालाश्री देख ॥ आगे बुधजन सोधज्यो, वाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

( ढाल ॥ वीर जिनेसर उपदिसै ॥ ए चाल ) सूत्रे गुंथे गणधरा,  
 अरथै अरिहंत ज्ञाखै रे ॥ ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमर जिम  
 नासै रे ॥ १ ॥ वाणी रे जिणंदनी, सुणज्यो चित हितआणी रे, तत्व  
 रमणतां अनुसरै, संपूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय  
 तजी करी, ग्यान जगत नर धारी रे ॥ विधि संयुत जिनमंदिरे,  
 प्रभु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी,  
 श्री श्रुतज्ञान निधानो रे ॥ सदगुरु चरण नमी करी, संबरजोग  
 प्रधानो रे ॥ वा० ४ ॥ अकृत लेइ ऊजला, गुंइली सुंदर कीजै रे ॥  
 नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजै रे ॥ वा० ५ ॥ चवद  
 पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेई रे ॥ विधिसुं पुस्तक पूजीयै,  
 चित अति आदर देई रे ॥ वा० ६ ॥ इम तप संपूरण अयां, ऊज-  
 मणो हिव कीजै रे ॥ घर सारू धन खरचने, नरनव लाहो लीज  
 रे ॥ वा० ७ ॥ पूठा परत विटांगणा, पूरब नाम प्रमाणो रे ॥ नव-  
 करवाली कोअली, लेखण ठवणी जाणो रे ॥ वा० ८ ॥ देहरै देव  
 जुहारने, आरती मंगल कीजै रे ॥ सनात्रपूजा वलि साचवी, तत्व  
 सुधारस पीजै रे ॥ वा० ९ ॥ इण पर तप आराधतां, इरगति का-  
 रण वेदै रे ॥ चवदह रज्जु सिरोमणी, जीव अकथगति वेदै रे ॥  
 ॥ वा० १० ॥ तप आराधन विधि ज्ञानी, आगम वचने जोइ रे ॥  
 ज्ञविषण पिण तुमे आदरो, ज्युं नवभ्रमण न होई रे ॥ वा० ११ ॥  
 ( कलश ) इम सयल सुखकर गच्छ खरतर तपै रवि जिम क्रांत ए,  
 सौजाग्यसूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृत्तंत ए ॥ संवत अठारै  
 वरस विन्नूं नयर श्रीबालूचरै, ए स्तवन ज्ञणतां श्रवण सुणतां स-  
 यल मनवंडित फलै ॥ १२ ॥ इति चवद पूर्व स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ १२ पूरब तप विधि लिख्यते ॥

॥ चवदै पूर्वकी तपस्याके १४ उपवास करे, जिस दिन जो

पूर्वका उपवास होय उसी पूर्वका नामसे ( २००० ) गुणना करै, स्तवन सुणे, इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम और विधि सर्व लिखी हैं इस मुजब विवेकी जीव गुरुते समझके करै. यह तपस्याके करणसे ज्ञानावरणादि कर्मका क्षयोपशम होय, शुभ ज्ञानका उदय होय ॥ इति १४ पूर्व तप विधिः ॥

॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सासण देवी सारदा, बाणी सुधारस वेद ॥ बालक हित ज्ञानी बगसियै, सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुभ परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ ( ढाल ॥ वीर जिणोसर उपदिसै ॥ ए देशी ) कमला जिम कुंरुणपुरै, जुजवल नरपति ज्ञीमो रे ॥ पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥ पदम० १ ॥ परतख्य फल ए पुन्धना, प्रसवी सुता पूरै माझी रे ॥ दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकाशै रे ॥ पद० २ ॥ चौसठ कला विचक्रणा, रूप गुणे करी रंजा रे ॥ देवगुरु धर्म दीपावती, व्रतधारी दृढ बंजा रे ॥ प० ३ ॥ प्रतिमा पूजै शांतनी, देवे दीधी त्रिकालो रे ॥ मात पिता प्रमोदसुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥ उवजायाधिप श्रीनिपदनो, नल लिखियो निलामै रे ॥ आनंदसु पंथ आवतां, पूरव पून्य उघामै रे ॥ प० ५ ॥ मझम रयणी तम जरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि जाले तेज दिनमणी, जा रत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ६ ॥ ग्यानधारी गुरु कोइ मिलै, पूठियै एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म बलै मुनि आविया, परीसह जीत मदन्नो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पावता, टालता दुस्सह सवला रे ॥ संजम शुद्ध संजालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प० ८ ॥ उहा ॥ मणि तेजै मुनि तसुठये, रथ थकी स्त्री जरतार ॥



देवै तीन प्रदक्षणा, विधिसुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पा-  
 वन थया, ज्ञान सुधारस पाय ॥ को तप परजव तिलक है, कदि  
 ये श्रीमुनिराय ॥ १० ( द्वाद-जरत नृप ज्ञावसुं ए ॥ ए देशो ) ॥  
 मधुर स्वैरै मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना  
 ए ॥ कर्म शुजाशुज परजवै ए, इह जव फल निपजाय, करम  
 गति वंकनी ए ॥ ११ ॥ उहिनाण जव प्रागनो ए, नृप सुणे निर-  
 मल ज्ञाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवती को नृपवधू ए, जा  
 एयो हे तत्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥ १२ ॥ चोथ प्रमुख  
 नृप चूपसुं ए, किरिया शुद्ध करी एह, जलै चित ज्ञावसुं ए ॥  
 ॥ नवांग पूजै तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवीस, रयण कंचण ज  
 ळ्या ए ॥ १३ ॥ तिलक२सै पामियो ए, समकित एह सतीस, जनम  
 सफलो गिणे ए ॥ जगवन तप विधि ज्ञाषियै ए, नल कहै बोध  
 वरीस, पीहर षट्कायना ए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतना ए,  
 षट् उपवास कहीस, त्री चोवीहारस्युं ए ॥ चोथ दोय जिन वीरना  
 ए, अजितादिक बावीस, आया गुरु शिर वही ए ॥ १५ ॥ पोषथ  
 त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढाय, तारक जगदीसने ए ॥  
 उद्यापन संघ जक्तिसुं ए, जन्म सफल नरराय, सूधै मन साधियै  
 ए ॥ १६ ॥ सुण वाणी समकित ग्रहै ए, पय प्रणमी गुरु वीर, चित्त  
 ऊमाहीयो ए ॥ इण पर जे जवि आदरै ए, थायै चरम शरीर, मूल  
 सुख शासतो ए ॥ १७ ॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता जविक  
 ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाध्यो  
 शिवघरां ॥ आगमे आखै सरीय साखै सुगुरु ज्ञाषै सुण थया, शुद्ध  
 ध्यावै जविक ज्ञावै विजय विमल जिनवर कथा ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ तिलकतपस्या विधि ॥

॥ शुज दिन गुरुके पास तिलकतपस्या ग्रहण करकै तीस

उपवास करै, प्रथम श्रीरूपज्ञदेवस्वामीके ठ उपवास करै, जब  
 ( श्री रूपज्ञदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका १००० गुणना  
 करै, फेर श्री महावीरस्वामीके २ उपवास करै, तब ( श्रीमहावी-  
 रस्वामी सर्वज्ञायनमः ) इस पदका १००० गुणना करै, और श्री  
 अजितनाथस्वामीको आद लेकै ( २२ ) बाईस जगवंतोका बाईस  
 उपवास करे, जब उन २ जगवंतोके नामसे दो दो हजार गुणना  
 करे, उर सर्व विधि स्तवन मुजब करे ॥ इति तिलकतपस्या विधिः ॥

॥ अथ शोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर ज्ञापियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, ज्वि  
 प्राणी रे ॥ कपायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जा-  
 य ॥ ज० वी० १ ॥ कोरु वरप तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावै  
 फल तास ॥ ज० ॥ मान करे जे प्राणिया रे लाल, ते जगमें  
 न सुहाय ॥ ज० वी० २ ॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो  
 आयो मल्लिनाथ ॥ ज० ॥ रूप पराव्रत कीया घणा रे लाल, आ-  
 पाढजूति गणिका साथ ॥ ज० वी० ३ ॥ च्यार कपाय ठे मूलगा  
 रे लाल, उत्तम सोले जेद ॥ ज० ॥ इम जव २ जमतो थको रे  
 लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ ज० वी० ४ ॥ एकासन व्रत जे करे  
 रे लाल, लाख वरस दुख हाण ॥ ज० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे  
 लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ ज० वी० ५ ॥ आंचिलनो फल बहु  
 कह्यो रे लाल, उपजै लवधि अपार ॥ ज० ॥ उपवास करतां ज्ञा  
 वसुं रे लाल, पामे जवनो पार ॥ ज० वी० ६ ॥ इम दिन शोले  
 तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए थाय ॥ ज० ॥ देव गुरु पूजा करै  
 रे लाल, मन वंठित फल थाय ॥ ज० ॥ नर सुर रिद्धि पिण जो-  
 गवे रे लाल, निश्चै मुगति जाय ॥ ज० वी० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोलिये तपकी विधि लिख्यते ॥

॥ क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, यह च्यार कपायमें

अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्याती ३, संज्वलन ४, इस मुजब एकेक कषायके च्यार ५ जेद करणसे १६ होते हे, इनको दूर करणको प्रथम एकाक्षणा १, निवि २, आंविद ३, उपवास ४, इस अनुक्रमसे १६ दिन तप करै, स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणसे यथा शक्ति उद्यापन करै ॥ इति शोखिया तप विधिः ॥

अथ पैतालीस आगम तप विधि ॥

गुरुके पास शुद्ध दिन पैतालीस आगमतप ग्रहण करै, २ दूज, ५ पांचम, ११ इग्यारस, इत्यादिक ज्ञानतिथिके दिन अनुक्रमसे उपवास वा एकाक्षणा करै, जिस दिन जो आगमका तप होय उसी आगमका गुणना करै, सिद्धांत लिखावै, सिद्धांत सुणे, पढ़नेवालोंको साहाय करै, अपनी शक्ति मुजब सर्व ठिकाणे ज्ञानकी वृद्धि करै ( प्रणमुं श्रीगुरु पाय ) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणे, सो आगे लिखा है, एसे तपस्याके ४५ दिन पूर्ण होणसे पैतालीस आगमकी पूजा करावै, मंदिर उपाश्रयमें ज्ञानोपगरण चढ़ावै. इस तपस्याके करणसे मुखपणा दूर हो के शुद्ध आत्मज्ञानकी प्राप्ति होय ॥

अब ४५ आगमका गुणना लिख्यते ॥

॥ प्रथम इग्यारै अंग ॥

- |                             |                               |
|-----------------------------|-------------------------------|
| १ श्रीआचारागजीसूत्रायनमः    | २ श्रीसुयगदांगजीसूत्रायनमः    |
| ३ श्रीठाणांगजीसूत्रायनमः    | ४ श्रीसमवायांगजीसूत्राय०      |
| ५ श्रीजगवतीजीसूत्रायनमः     | ६ श्रीज्ञाताधर्मकथाजीसूत्रा०  |
| ७ श्रीउपासगदशाजीसूत्रा०     | ७ श्रीअंतगदशाजीसूत्रा०        |
| ८ श्रीअणुत्तरोववाइजीसूत्रा० | १० श्रीप्रश्नव्याकरणजीसूत्रा० |
| ११ श्रीविपाकजीसूत्रायनमः॥   |                               |

॥ अथ वारै उपांग नाम ॥

- |                             |                           |
|-----------------------------|---------------------------|
| १ श्रीउत्रवार्इजीसूत्रायनमः | २ श्रीरायपसेणीजीसूत्रायन० |
|-----------------------------|---------------------------|

- ३ श्रीजीवाग्निगमजीसूत्राय० ४ श्रीपञ्चवर्णाजीसूत्रायनमः  
 ५ श्रीजंबूद्वीपपन्नतीसूत्राय० ६ श्रीचंद्रपन्नतीसूत्रायनमः  
 ७ श्रीसूरपन्नतीजीसूत्राय० ८ श्रीकष्पियाजीसूत्रायनमः  
 ९ श्रीकष्यवर्धिसियाजीसूत्राय० १० श्रीपुष्पियाजीसूत्रायनमः  
 ११ श्रीपूष्पचूलियाजीसूत्राय० १२ श्रीवन्दिदसाजीसूत्रायनमः

॥ अथ छ छेदका नाम गुणना ॥

- १ श्रीव्यवहारछेदसूत्रायनमः २ श्रीवृहत्कल्पजीसूत्रायनमः  
 ३ श्रीदसाश्रुतस्कंयजीसूत्राय० ४ श्रीनिशीथजीसूत्रायनमः  
 ५ श्रीमहानिशीथजीसूत्राय० ६ श्रीजीतकल्पजीसूत्रायनमः

॥ अथ दस पर्यन्त नाम गुणना ॥

- १ चोसरणपर्यन्ताजीसूत्रायन० २ संयारपर्यन्ताजीसूत्रायनमः  
 ३ श्रीतंडुलपर्यन्ताजीसूत्रायन० ४ श्रीचंद्राविज्ञियासूत्रायनमः  
 ५ श्रीगणविज्ञियासूत्रायनम० ६ श्रीदेवविज्ञियासूत्रायनमः  
 ७ श्रीवीरश्रुवोजीसूत्रायनमः ८ श्रीगच्छाचारजीसूत्रायनमः  
 ९ श्रीज्योतिष्करंजीसूत्राय० १० श्रीमहापञ्चकाणजीसूत्राय०

॥ मूल सूत्रके नामका गुणना ॥

- १ श्रीआवस्यकजीसूत्रायनमः २ श्रीउत्तराध्ययनजीसूत्राय०  
 ३ श्रीउघनिर्युक्तीजीसूत्रायन० ४ श्रीदशमीकालिकजीसूत्राय०  
 ५ श्रीअनुयोगारजीसूत्राय० ६ श्रीनंदीसूत्रजीसूत्रायनमः

॥ अथ पेंतालीस जागम स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे श्रीतीर्थपति, नमूं देव अरिहंत ॥ अर्थ  
 मकाशे गणपपुर, द्वादश अंग महंत ॥ १ ॥ त्रिपदी लहि गणपति  
 रथे, सूत्र अर्थ संजोग ॥ अक्षररूपे सारदा, प्रणामूं त्रिकरण योग ॥  
 ॥ २ ॥ टीका कर्ता जगतगुरु, सूत्र करे गणधार ॥ पंचांगी युत वि-  
 स्तार, नय निक्षेप विचार ॥ ३ ॥ उपम काल उर्जिकसे, जूले बां-  
 रन अंग ॥ कंठ पाठसें लिखत कर, रचना रची अजंग ॥ ४ ॥

खंदिल अरु देवर्द्धि गणि, आचारज सय पंच ॥ चोरासी आगम  
 लिखै, कोटि ग्रंथ तज खंच ॥ ५ ॥ काल दोषलें अब मिलै, आगम  
 पैतादीस ॥ ताको मुनि विवरण करै, माने विसवावीस ॥ ६ ॥  
 ( ढाल ॥ जगतगुरु त्रिसला नंदनजी ॥ ए देशी ) ॥ आचारांग पहि-  
 लो कह्यो जी, मुनि आचार विचार ॥ सुयगमांग दूजोअठै जी,  
 पाषंकी निरधार ॥ जगतगुरु ज्ञाखै वीर जिनंद ॥ १ ॥ दस ठाणा  
 ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात ॥ सहस ठत्तीस जल प्रश्नो  
 जी, जगवई अंग विद्वात ॥ ज० २ ॥ धर्मकथा ज्ञाता ज्ञानी जी,  
 दस श्रावक व्रतधार ॥ दसानुपासक सातमो जी, अंग कह्यो निर-  
 धार ॥ ज० ३ ॥ अंतगम केवली जे थया जी, वरणन अष्टम  
 अंग ॥ पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरोवाई चंग ॥ ज० ४ ॥  
 अंगुष्ठादिक प्रश्नो जी, प्रश्नव्याकरण नाम ॥ सुख दुःखना फल  
 ज्ञापिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ५ ॥ अठार सहस आ-  
 चारांगमें जी, पद संख्या परिमाण ॥ दर्ण संख्याते पद हुवे जी,  
 ठाण डुगुण सब जाण ॥ ज० ६ ॥ उववाई उपांगमे जी, कोणिक  
 अंबरु रूप ॥ वर्णन नगरी आदि दे जी, सांजल जविजन चूप ॥  
 ज० ७ ॥ सूरियांज पूजा करी जी, जिन प्रतिमा नवरंग ॥ इय  
 ज्ञाव बिहुं जेदसूं जी, रायप्रश्नी चित चंग ॥ ज० ८ ॥ जीवतणो  
 अजिगम सही जी, विजयदेव प्रस्ताव ॥ जीवाजिगम तीजो कह्यो  
 जी, सुर कृत बहु विध ज्ञाव ॥ ज० ९ ॥ पन्नवणामें जाणज्यो  
 जी, जीवाजीव विचार ॥ जंबूद्वीपनी वर्णना जी, नाम थकी गुण  
 धार ॥ ज० १० ॥ सूर चंद्र विग्रह गती जी, पन्नत्ती बिहुं जाण ॥ कप्पिया  
 कप्पवदिसियाजी, पुप्फिया नाम वखाण ॥ ज० ११ ॥ पुप्फचूलिया  
 जाणीये जी, वन्हिदशा इण नाम ॥ नामथी अर्थ पिठाणज्यो  
 जी, सांजलता सुख थाम ॥ ज० १२ ॥ (ढाल २ ॥ खयाली लाल

अणवट रंग लागो ॥ ए देशी ) ॥ वेदतणा प्रायश्चित्तना जी, वेद ठए ए  
 जाण ॥ वृहत्कल्प विवहारमें जी, ज्ञाप्यो जगत्रंत ज्ञान ॥ सुज्ञा  
 नी लाल इणसुं नित राचो ॥ राचो२ रे ज्ञविक दितदार, इणसुं  
 नित राचो ॥ सुज्ञा० १ ॥ महानिशीथे ज्ञापियो जी, जिनपूजा  
 विहुं जेद ॥ श्रावक इव्ये ज्ञावसूं जी, मुनिवर ज्ञाव उमेद ॥ सु  
 ज्ञा० २ ॥ जीतकल्प वलि निसीत ठे जी, उर दशाश्रुतस्कंध ॥  
 दश पयत्रा जाणिये जी, चौसरण संशार प्रबंध ॥ सु० ३ ॥ तंड  
 लवयाली चंदाविज्ञया, गणविद्या अज्ञिधान ॥ देवविज्ञया वीरधुवो  
 जी, गह्वाचार निधान ॥ सु० ४ ॥ ज्योतिकरं महा प्रचस्काण  
 जी, च्यार सूत्र ठे मूल ॥ श्रावक दशमीकालिक जी, उत्तरध्वयत्र  
 अमूल ॥ सु० ५ ॥ च्यारे अनुयोगे करी जी, रचना सूत्रे जाण ॥  
 तेह न्याय निक्षेपथी जी, अनुयोगद्वार प्रज्ञान ॥ सु० ६ ॥ द्रव्यानु  
 जोग ठए द्रव्यनी जी, चर्चा विधि विस्तार ॥ चरण करण अनुयो  
 गमें जी, मुनि श्रावक आचार ॥ सु० ७ ॥ गणतानुयोग गणना  
 करी जी, पृथ्वी निरी विमाण ॥ वर्गमूल घनमूलथी जी, जाणो  
 चतुरसुजाण ॥ सु० ८ ॥ धर्मकथा अनुयोगमें जी, धर्मकथा दृष्टांत  
 ॥ ए च्यारों विस्तारीया जी, पेंतालीस सिद्धांत ॥ सु० ९ ॥ (ढाल  
 तीसरी ॥ सांगानेर विराजै ॥ ए देशी ) ॥ सुण२ गोतमवाणी,  
 इम वीर वदे गुणखाशी रे, ज्ञवियां आगमसुं मन लावो ॥ मन  
 कल्पित वात म गावो रे ॥ ज० आ० १ ॥ नंदीसूत्र चिरनंदो, यामें  
 पंचज्ञानने वंदो रे ॥ ज० आ० ॥ ज्ञानना जेद वखाण्या, मति  
 अगवीसे आणवा रे ॥ ज० आ० २ ॥ श्रुत चवदे वीसां जेदे, एमि  
 च्यामतने वेदे रे ॥ ज० आ० ॥ अवधिष्ठ असंख्य प्रकारे, मनपर्य  
 व डुय जेद घारे रे ॥ ज० आ० ३ ॥ केवल एक प्रकारे, ए सब  
 विधि नंदी ज्ञासे रे ॥ ज० आ० ॥ एतो सहु आगमनी नूद, स्या-

ह्याद गंगनी वृंद रे ॥ ज्ञ० आ० ४ ॥ अंग उपांगनी टीका, कर्त्ताने  
 नमूं निरञ्जीका रे ॥ ज्ञ० आ० ॥ प्रथम शीलांगाचारी, श्रीअज्ञय  
 देव बलिहारी रे ॥ ज्ञ० आ० ५ ॥ मलयगिरी गुरुस्वामी, इत्यादि  
 कृते सिर नामी रे ॥ ज्ञ० आ० ॥ सामान्य विशेषे ज्ञाखी, निश्चय वि  
 वहार ठै साखी रे ॥ ज्ञ० आ० ६ ॥ उत्सर्ग वचन ठे केइ, अपवाद  
 वचनने लेइ रे ॥ ज्ञ० आ० ॥ इक मनसुं आराधो, मन वंठित स  
 गला साधो रे ॥ ज्ञ० आ० ७ ॥ ( ढाल ४ ॥ मंगल कमला कंद ए  
 ॥ ए देशी ) ॥ पैतालीस आगमतणी ए, हिव तप विध सुगज्यो  
 हित जणी ए ॥ दूज पांचम एकादसी ए, ज्ञानतिथि तपथी कर्म  
 जाय खसी ए ॥ १ ॥ शक्ति ठते उपवास ए, आंबिल निविथी उ  
 द्वास ए ॥ एकासण अथवा करै ए, इम पैतालीस दिन आचरे ए  
 ॥ २ ॥ जाप करै दो हजार ए, देववंदन पूजन सार ए ॥ प्रतिक्र  
 मण करै दोनुं टंक ए, आगम सुणै अर्थ निसंक ए ॥ ३ ॥ उजमणो  
 हित चित करे ए, गुरु जक्ति चित्तसुं आदरे ए ॥ जक्ति करै साहमीतणी  
 ए, जे पदय पढावै ते जणी ए ॥ ४ ॥ अन्न वस्त्र पुस्तक करै दान ए,  
 तिए मनुष्य जनम परिमाण ए ॥ ते पामे श्रुतज्ञान ए, क्रमथा  
 लद्वै पद निरवाण ए ॥ ५ ॥ ( कलश ) शुभ नंद सर तिथि चंद्र  
 वरषे माघ सुदि पंचमी दिने, वर नयर वीकानेर सुंदर वृहत्खरतर  
 मण घणे ॥ गणधार कीर्ति सुरिंद पाठक रामगणि रुद्धिसार ए, इ  
 म करिय स्तवना सुय महोदय सदा जयशकार ए ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास ११ गणधर तप ग्रहण करै. ११  
 दिन उपवास वा एकासणा करै. जिस दिन जो गणधर माहारा  
 जका तप होय उसी नामका २००० गुणना करै ॥

॥ अथ इग्यारे गणधरोका नाम गुणनो ॥

१ श्रीइंद्रजूतिगणधरायनमः २ श्रीअग्निजूतीगणधरायनमः

- ३ श्रीवायुजुतिगणधरायनमः ४ श्रीव्यक्तजूतिगणधरायनमः  
५ श्रीसुधर्मास्वामीगणधराय० ६ श्रीमंनितस्वामीगणधराय०  
७ श्रीमोर्वपूत्रजीगणधरायननः ८ श्रीअकंपितजीगणधराय०  
९ श्रीअचलजीगणधरायनमः १० श्रीमेतार्थजीगणधरायनमः  
११ श्रीप्रज्ञवजीगणधरायनमः

॥ यह ११ गणधर जगवंत श्री महावीरस्वामीके शिष्य जातिके ब्राह्मण थे, विद्यमान हांदसांगीके रचना करणेवाले ज्ञेये, इत वास्ते मंगल जाणके यह तपस्या करै, गणधरपदकी आराधना करै, गोतमरास सुणे, पूर्ण होणेसे गणधरोकी पूजा करावै, आचार्य उपाध्यायादिककी जक्ति करै, यथाशक्ति परमान्न भोजनसे साहमी वञ्चल करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥

॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै सो विधि ॥ ॥

प्रथम ५ साधियां करै (नभंतसांभंत) यह गाथा पढके शक्ति मुजब ज्ञान पूजा करै, शरियावही पन्तिकमे, एक लोगस्तका काउसग करै, पार के प्रगट लोगस्तकहै, नीचा बैठके मुंहपत्ती पन्तिके है, दो बांदणा देवै, स्थापनाजीतो खमासमण देई (जगवान अमुक तप गदणत्थं चेश्यं वंदावेहं) एसा कह चैत्यवंदन करै, एमोत्रुणं इत्यादि अरिहंतचेइयाणं अन्नत्तु० कह ४ थुई कहै, चौथी गाथा कहके नीचा बैठके एमोत्रुणं कहै, फेर स्वमा होके (श्रीशांतिनाथस्वामी आराधनार्थं करेमिकाउसगं अन्नत्तु०) कहके १ लोगस्तका काउसग करै, पार के नमोर्हतसिद्धा० कहके (श्रीमतेशांतिनाथाय, नमःशांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीस, मुकुटाच्यर्चितां ह्ये ॥ १ ॥ यह थुई कहके (शांतिदेवताआराधनार्थं करेमिकाउसगं अन्नत्तु०) कहै, एकेक नवकाराका काउसग करै, थुई पढै, (शांतिःशांतिकरःश्रीमान्, शांतिदिशतुमेगुरुः ॥ शांतिरेवसदातेपा,



येषांशांतिर्गृहे २ ॥१॥ पीठे श्रुतदेवताकी क्षेत्रदेवताकी ज्ञानदेवता-  
 की स्तुति काजसग्न एकेक नवकारका करके अनुक्रमसें कहे. पीठे  
 शासनदेवताका काजसग्न एक नवकारका करै (यापातिशासनं जेनं,  
 सद्यप्रत्पूहनाशनी ॥ साज्जिप्रेतसमृध्यर्थं, ज्ञूयाञ्चासनदेवता ॥१॥ )  
 पीठे समस्त वैयावृत्ति कर आराधनार्थं करैमि काजसग्नं अन्नत्रु०  
 एक नवकारका काजसग्न करै, पार के (श्रीशक्रप्रमुखायक्या, जिन-  
 शासनसंस्थिताः ॥ देवान्देव्यस्तदन्येषु, संघरक्षंत्वपायतः) यह  
 शुई कहके नीचा बैठके नमोत्पुणं कहे, जयविराय पर्यंत चैत्यवंदन  
 करै. फेर खमासमण देके (जगवन् अमुक तप गहणं करैमि  
 काजसग्नं) एक लोगस्तका काजसग्न करै, पार के प्रगट लोगस्त  
 कहे, खमासमण देके ३ नवकार गुणो. फेर खमासमण देके  
 (इञ्जकार जगवन् अमुक तप ग्रहणं दंरुक उच्चरावो जी) गुरु कहे  
 (उच्चरावेमो) पीठे (अहसंजंतंतुह्लाणंसमीवे अमुकतवंजपसंपञ्जी-  
 साणंविहरामि ॥ तंजहा दवन् कालनं जावन् दवन्णं अमुकतवं  
 खिसन्णंइत्तावा अन्नत्तवा कालनं जावपरिमाणं जावन्णं जाव-  
 गहेणंनगहिज्जामि जाववलेणंनवलिज्जामि सन्निवाएणंनज्जामि  
 जावअस्सेणवा केणंइरोगायंकादिपरिणामवसेण एसोमेपरिणामोनप-  
 रिवज्जइ तावमेएसतवो अन्नत्तरायान्नियोगेणं गणाज्जियोगेणं बलाज्जि  
 योगेणं देवाज्जियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं अन्नत्थणाज्जोगेणं  
 सदस्तागारेणं महत्तरागारेणं सबसमादिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥)  
 जो तप ग्रहण करै उसी तपका नाम लेके गुरुके पास ३ वर यह  
 पाठ सुणे, गुरु नहीं होय तो आपनाचार्यजी समकै तीन वार यह  
 पाठ पढ़ै, पीठे गुरु कहे ( हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तडुत्तयेणं सम्मं-  
 धारणीयं गुरुगुणेहिंबुद्धाहि नित्यारगपारगाहोहि ) एसो गुरु कहे.  
 पीठे खमासमण देके गुरुमुखे पञ्चखाण करै अथवा गुरु नदि होय

तो आप मुखे करै. इति सर्व तपस्या ग्रहण विधिः संपूर्ण ॥

॥ अथ सर्वे तप पारणविधिः लिख्यते ॥

प्रथम ज्ञानपूजा करैके इरियावही पम्कमे, अमुक तवपा० मुहपत्ती पम्कैहै २ वांङणा देवै ( इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् तुप्पेअम्हं अमुक तप पारावेह ) गुरु कहे ( पारावेमो ) इच्छामिख मासमणो० इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् अमुक तप निस्कमणत्तं करेमि कानसग्गं अन्नञ्जू० कहेके १ नवकारका कानसग्ग करे, स्तु-तिकी गाथा कहे, पीठै एमोञ्जुणं कहे, वेठके जगवन् अमुक तप करतां अविधि आशातनायें करी जो कोइ दूपण लागो होय सो मन वचन कायायें कर मिच्छामिउक्कमं. और ज्ञानज्जि. इयसें जावसें किया होय सो प्रमाण फल दायक होणा. गुरु कहे ( नि-च्छारगपारगाहोह ) पीठै पच्चस्काण करै, अमुक तप आलोयण नि-मित्तं करेमि कानसग्गं अन्नञ्जू० कहेके ४ लोगस्तका कानसग्ग करै, प्रगट लोगस्त कहे, पीठै उपगरण पात्र जक्त पानादिकसें साधुज-क्ति करै. अपनी शक्ति मुजब जैनशास्त्रके पढणेवाले तथा पढा-णेवाले विद्यागुरुको जक्ति करै, साहमी वञ्चल करै, पहरावणी करै, पीठै याचकोंका दान सन्मान करै ॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि ॥

॥ अथ उपधान तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्रीमहावीर धरम परगासै, वैठी परखद वारजी ॥ अमृ-त वचन सुणी अति मीठा, पाभे हरख अपार जी ॥ १ ॥ सुणो २ रे श्रावक उपधान वह्या विन, किम सुजे नवकार जी ॥ उत्त-राध्ययन बहुश्रुत अध्ययने, एह जणयो अधिकार जी ॥ सु० ॥ २ ॥ महानिशीत सिद्धांत माहे पिण, उपधान तप विस्तार जी, अनु-क्रम सुद्ध परंपर दीसे, सुविहित गच्छ आचार जी ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप उपधान वह्यां विन-किरिया, तुच्छ अल्प फल जाण जी, जे

उपधान वध्यां नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 तप उपधान कह्यो सिद्धांते, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेव-  
 नी आण विराधै, जमस्यै जवर तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अथज्या  
 घाट समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करता  
 आदेश निरदेश, काम सरै नहि कोय जी ॥ सु० ॥ ६ ॥ इक घेवरने  
 खांने जरियो, अतिघणो मीठो थाय जी ॥ एक श्रावक उपधान वेह  
 तो, धनश् ते कहिवाय जी ॥ सु० ॥ ७ ॥ (ढाल २) ॥ नवकारतणो  
 तप पहिलो वीसम जाण, इरियावहीनो तप बीजो वीस  
 म आण ॥ इण बिहुं उपधाने निश्चै नाण मंमाण, बारे उपवासै  
 गुरु मुख बे बे वाण ॥ ८ ॥ पैत्रीसम त्रीजो एमोठुणं उपधान,  
 त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चो  
 थो चोकम एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गैह ॥ ए ॥ पांचमो  
 लोगस्त तप अठावीसम नाम ॥ साढापनरह उपवास वायण त्रि  
 ण ठाम ॥ पुस्करवरदी तप उठो ठकम सार, साढात्रण उपवासै  
 वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणंबुद्धाणं सातमो उपधान म  
 ल, उपवास करै इक चोविहार ततकाल ॥ एक वाणि करै बलि  
 गुरुमुख सरस रसाव, गच्छनायक पासै पहरै माल विशाल ॥ ११ ॥  
 माल पहरण अवसर आणी मन उठरंग, घर सारू वारू खरचै धन  
 बहु जंग ॥ अति उच्चव कीजै रातीजोगो दिल खोल, गीत गान गवा  
 वै पावै अति रंगरोल ॥ १२ ॥ (ढाल ३ ॥) ए साते उपधान  
 विधिसों जे वहे, ते सूधो किरिया करै ए ॥ खिशन करै परमाद,  
 जीव जतन करइ, पूंजि२ पगलां जरै ए ॥ १३ ॥ न करै  
 क्रोध कषाय, हरुश् हसै नही, मरम केहनो नवि कहै ए ॥  
 नाणे घरनो मोह, उत्कृष्टी करै, साधुतणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥  
 पहुर सीम सिझाय, करि पोरसि जणी, उंचै स्वर बोलै नही ए ॥

मन माँहे जावै एम, धनेर ए दिन, नरजव माँहि सफल सही ए  
 ॥ १५ ॥ जे साते उपधान, विध सेती वडै, पहिरै माळ सोहामणी  
 ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल दायक, करम निर्जरा अति-  
 यणी ए ॥ १६ ॥ परजव पामे रुद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसवड  
 नाटक पमै ए ॥ लाजै लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती  
 पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥ ( कलशाः ) इमः वीर जिनवर जुवन  
 दिनपर माता त्रिलला नंदणो, उपधानना फल कहै उत्तम जवि-  
 य जन आनंदणो ॥ जिनचंद शुगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनी  
 सरो, तसु सीस वाचक समयसुंदर जणै वंशित सुखकरो ॥ १८ ॥  
 इति सात उपधान गर्भित स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहुर्त्तके पहिले दिन मध्याह्न समे सु-  
 हागणस्त्री चांदी आदिके थालके अंदर कुंकुमका साधिया करकै  
 १२२ चावलका करै, पांच सुपारी १ नादर घरकै माळा पधराके  
 सुहागणस्त्री अपणें हाथसैं सिर पर धरै, पीवै सब संघ समेत गीत  
 गाते वाजित्र वाजते गुरु पास आवै, सधवस्त्री गुहली करै, नर-  
 स्त्रियां गहुंली गावै, पीवै गुरु उर्ध्व साससैं वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर  
 वासकेपसैं माळा प्रतिष्ठित करै, यथा ॥ उँह्रीणमोअरिहंताणं ।  
 उँह्रीणमोसिद्धाणं । उँह्रीणमोआपरियाणं । उँह्रीणमोवज्जयाणं ।  
 उँह्रीणमोलोएसवताहूणं । उँह्रीणमोअरइउ जगवउ वद्धमाणासा-  
 मिस्त ॥ जएविजये जयंते अपराजिए सव्वसिद्धिए उँह्रीं ठः ठः ठः  
 आहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीवै वाजित्र वाजते स्वस्थानके  
 प्राथे, वाजेठ पर थाल रखै, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करै,  
 श्रीफलादिकी प्रजावना करै, पीवै माळाआहक प्रजात समे प्रति-  
 क्रमण करकै पन्निहण देववदनादि करकै जिनपूजा करै, पीवै

मुहुर्तकी वखत वाजित्रादि उहव संघ समेत गुरु पास आवै, पाच श्रीफल रोक डव्य हाथमें लेके पहले जो नांदकी थापना करी हे. नांद कहीये समोसरणका चित्रपट सो वनी ठवणी पर मोलीसे लपेटके थापे सो उस नांदके च्यारों खूणो पर च्यार साधिया कुंकुं नर चावलोका करके नारेख नर रोक मोहर वगेरे जेट करै. साधियों पर अछे विदामादि फल चढ़ावै, पीठे मालाआहक चरवला मुहपत्ती हाथमें लेके गुरुके संग इरियावही पन्किमे, पीठे श्रावक खमासमण देके श्रावकमुहपत्ती पन्किहै, फेर खमासमण देके इहकारजगवन् तुह्ने अम्मं संघपति मालाआरोहावणि देववंदा मणि वासनिकेप करो, तब गुरु वासकेप करै, पीठे फेर खमासमण देई तुह्ने अहं संघपति माला आरोहावणी देववंदावो, गुरु कहे वंदेह, श्रावक इहं कही गुरुके साथ देववंदन करै ॥

॥ अथ देववंदन विधिः ॥

॥प्रथम खमासमण देके इह्ना० जगवन् चैत्यवंदन करुं. गुरु कहे करेह्  
पीठे गुरु चैत्यवंदन बोदै. श्रावक एमोनुणं कहे अरिहंत चेइयाणं० कहके एक नवकारका कानसग करै, नमोर्दत्सिद्धा० कहके गुरु स्तुति कहे. यथा ॥ अहंतनोतुसश्रेय। श्रियंयध्याननोनरैः । अप्पेडीसकला त्रेहि । रहंसासहसोच्यते ॥ १ ॥ पीठे लोगस्तज्जो० सबलोए० वंदणव० अन्ननु० कहके १ नवकारका० स्तुति कहे. उमितिमंतायं । शासनस्यनतासदायदंहीच । आश्रियंतेश्रियांते । जवतोश्जिनापातु ॥ २ ॥ पीठे पुक्करवर० वंदन० कहके १ नवकारका० स्तुति कहे. नवतस्वयुतात्रिपदी । मिश्रेतारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता, वरधर्मकी र्त्तिविद्या । नद्यास्याङ्गैर्नगीङ्गीयात् ॥ ३ ॥ पीठे सिद्धाणंबुद्धाणं० ततः श्रीशांतिनाथ आराधनार्थं करेमि कानसगं वंदणव० अन्ननु० कहके एक लोगस्तका कानसग करै, नमोर्दत्० स्तुति कहे ॥ श्री

शांतिश्रुतशांति । प्रशांतिकोवशांतिमुपशांति । नयतुसदायस्यपदाः ।  
 सुशांतिदाःशांतिजिने ॥ ४ ॥ ततः द्वादशांगीआराधनार्थं क० वं०  
 एक नवकारका० पारके नमोर्दत्सि० ॥ सकलार्थसिद्धिसाधन । बीजो  
 पांगासदास्फुरदुपांगा । जवतादनुपदतमहा । नमोपहाद्वादसांगीव ॥  
 ५ ॥ ततः सुयदेवयाए आराधनार्थं करेमि काउसगं अन्नबु० कइके  
 १ नवकारका० नमोर्दत्सि० ॥ वदवदतीवागवादनी । जगवतिकःश्रु  
 तगमेहु । रंगसरंगमितिवर । तरणीस्तुज्यंनमइतिहः ॥ ६ ॥ ततः  
 शासनदेवता निमित्तं करेमि का० अन्नबु० १ नवकारका० स्तुति॥  
 उपसर्गविलयवियन । निरत्तीजिनशासनावनैकरता । हतमिदसमिदी-  
 तस्कृते । स्युशासेनदेवताजवतु ॥ ७ ॥ पीठै समस्त वेयावञ्चकरा-  
 षां शंतिकराणं सम्मद्विद्विसमाहिकराणं अन्नबु० १ नवकारका का-  
 उसग स्तुति० ॥ संघत्रयेगुरुगुणोघनिधोसुवैया । व्रत्यादिकृत्यकरणैक  
 निवद्धकृता । तैशांतयेसद्वज्रवंतुसुरासुरीजिः । सष्टयोनिलिखलविघ्न  
 विघातदक्षा ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार नमोर्दत्सं जावंतिचे०  
 नमोर्दत्सि० कइके स्तवन कइ ॥ उमिति नमो जगवत् । अरिदंत  
 सिद्धाचारियजवजाए । वरसहसाहूमुणिसंघ । धम्मतिजयपवयण  
 स्त ॥ १ ॥ सप्पणवनमोतदजगवइ । सुयदेवयाइसुहयाए । सिव  
 संतिदेवयाय । सिपवयणवदेवयाणंच ॥ २ ॥ इंद्रागणीयमनेरइया ।  
 वरुणोवायुकुवेरइसाणा । वंजोनागुत्तिइशम । मवियसुदिसाणपाळा  
 ण ॥ ३ ॥ सोमयमवरुणवेसमण । वासवाणंतदयपंचणंदं । तदलोगपा-  
 लयाणं । सुराई गदाणपनवन्हं ॥ ४ ॥ सादंतस्तसमरकं । मझमिणंचेव-  
 धम्मणुषाणं । सिद्धिमिग्यंगञ्ज । जिणाणंनवकारउत्तणियं ॥ ५ ॥ इति  
 स्तवनं ॥ जयवीराय कइ पीठै जगवान आगे पन्दा करकेमालामाह  
 क गुरुकूं द्वादशावर्त्त वंदनायें वादे, पीठै खना होके कइ इञ्चकार  
 ज० तुझे अन्नं संघपति । मालामारोदावणी उदेसावणी । नंदीसुत्र

संज्ञलावणी काउसग्न करावो, गुरु कहे करेह, इहं, संघपतिमाल  
 आरो० उदे० करेमि काउसग्नं अन्नबु० कहके ? लोगस्तका का०  
 प्रगट लोगस्त कहे, गुरुजी काउसग्न करै, पीठै मालाग्राहक खमा  
 समण देइ इच्छाकार जगवन् नंदीसूत्र संज्ञलावो, तब गुरु खर  
 होकर हाथमें वासकेप लेके तीन नवकार सुणावै, नित्यारगपा  
 गाहोह कहके मस्तक पर वासकेप करै, पीठै श्रावक खमासमण  
 देके इच्छा० संघपति माला उदेसनं, गुरु कहे उदेसनं, फेर श्रावक  
 इच्छामि० इच्छाका० किंजणामी, गुरु कहे वंदित्तापवेह, खमासमण देके  
 इहं तुह्ये अहं संघपति मालानदिन इच्छामो अणुसदिं उदिदि२ ख  
 मासमणाणं हत्येणं सुत्तेणं अत्येणं तदुत्तयेणं जोगकरीजाहि गुरु  
 गुणबुद्धीजाहि नित्यारगपारगाहोह, फेर खमासमण देइ तुह्याणं  
 पवेश्णं संदिसह साहुणंपवेश्मी, गुरु कहे पवेश्, पीठै खमासमण  
 देके तीन नवकार गुणता जया नांदकूं तीन प्रदक्षिणा देवे वासकेप  
 चढावै, गुरु ? प्रदक्षिणा देवे, पीठै मालाग्राहक मूहपत्ती पणिलेहै,  
 खमासमण देके इच्छाका० तुह्याणंपवेश्णं संदिसहजगवन् काउसग्नं  
 करेमी इच्छामी० इच्छाका० जगवन् तुह्ये अहं संघपति माला उदे  
 सामणी आरोहावणी करेमिकाउसग्नं अन्नबु० कहके ? लोगस्तको  
 काउसग्न प्रगट लोगस्त कहै पीठै खमासमण देके वेसणो संदिसानं,  
 हूजै खमासणो वेसणो ठानं, पीठै खमासमण देके जो विधि करतां  
 अविधि आसांतना लागी होय ते सहु मन वचन कायार्थे करी मि०  
 इति नांदकी क्रिया ॥ पीठै मालाग्राहक जगवानके नव अंग नव रु-  
 पिया मोहर वगेरे चढाके नमस्कार करै, मुहुर्तकी बखत मंदरजीके  
 बाहिर जमीन खुली होय तो जगवानके सनमुख सर्व संघ आयके  
 खमा रहे, पीठै मालाग्राहक गुरुके पास आके नव अंग पूजा करे, नव  
 रूपिया मोहर आदि ज्ञान निमित्त जेट धरै, पीठै गुरु उर्ध्वभासे माला

हाथमें लेके ७ नवकार गुणै, पीठै जो माला पहिरावै जिसको माला पहिराएवाला यथाशक्ति पहिरामणी करै. माला पहिराएवाला उर्ध्व-श्वासै करी संघपतिको माला पहिरावै, दोनुं जणें ८ दिन तक सच्चित्त कुशीलादिकका गुरु पासै पञ्चखाण करै, पीठै मंदरजी पर चढाए-की धजा सो संघपति थालमें लेके मंदिरजीके बाहिरकर तीन प्र-दक्षणा देकर गुरु पास वासकेप पूजन कराके मंदिरजीके ऊपर चढावै, पीठै सर्व संघके सामने गुरु धर्मोपदेस देवै, साधमीं वात्स-ल्य करै ॥ इति संघपति मालारोपण विधिः ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लि० ॥ नित्यकर्त्तव्यता यथा ॥  
 ॥ नित्यकर्त्तव्यता कुठ तो शास्त्रोके लिखतसै कुठएक दे-  
 देखणेमें आई जो परंपरा सो लिखतें हैं ॥ उपधानवाला श्रावक  
 विगयोमेंसै एक घीहीज लेता है. उत्तर-विकृती नहीं लेता १, उप-  
 धानमें तीस विगयोकी नीवीतोंमेंसै एकही नीवीता लेणा का-  
 रणयोगसै खांन वगेरे लेणेकी जयणा २, उत्कट इत्यादिके नही  
 लेणा ३, घी तेलका वघार्या साग जी नहीं लेणा धूंगास्था हुवा  
 लेणा ४, हरासाग नीलोती नहिं लेणा ५, तलाहुवा पापन सीरा  
 वने वगेरे नहिं लेणा ६, अन्न पुरपणेवाली रात्री प्रायश्चित्त करणेसै  
 स्त्री शुद्ध होती है अन्यथा नही ७, अन्न पुरपणेवाली स्त्री फटावस्त्र  
 अथवा कारीलगावस्त्र नहिं पहरे ८, जोजन करणेकी जगा ऊंरू  
 वगेरे देणेवाली व्रत प्रायश्चित्त करै अखंनित वस्त्र रखें तो शुद्ध ९,  
 जितने वस्त्रादि उपकरण तप प्रवेशके प्रथम दिन पासमें रखे हैं  
 वो सब जोगाजोगकी दोनों वखत पन्डितेहणा करणी १०, जीनणके  
 ठिकाणे जो जो थाली कटोरा वगेरे रखेदे वो सब जोजन करै जिस  
 दिन पादोनपोरसीमें पन्डितेहणाकी वखतही पन्डितेहणा दुसरी  
 वखत अन्यदा नही ११, कदाचिद् हार कुंजलदिक गहणा अपणे



शरीरसें उतारके अपने घरादिकमें रखा होय तब विना उपधान-  
वाली जो स्त्री अठपहरी पोसा लिया हुवा होय तिसके हाथसें  
रातका दिनका नही वह उपधानवाहीकूं देवै उर बोही स्त्री प्रजात  
समें उनके कहे मुजब ठिकाणे धरदेवै १२, उपधानमें सर्व वस्त्र  
आप अथवा मालकणके हाथसें पन्ध्रह्यां शुद्ध होय १३, सब  
क्रिया अनुष्ठानादिक आदेस निर्देसादिक मालकणके आदेससें शुद्ध  
होय १४, क्रिया अनुष्ठानकी कराणेवाली मालकण जी दोनुं बखत  
पन्ध्रमण करै रात्री प्रायश्चित्त करै सात बेर देव वांड़े तब शुद्ध  
होय अन्यथा नही १५, रजस्वलाके तीन दिन तपमें नहीं गिणे  
जाय १६, महास्वध्याय संबंधी आसोज सुदिकी तथा चैत्र सुदिकी  
सातम आठम नवम दिन तीन तपस्यामें नहीं गिणे जाय १७,  
प्रतिक्रमणमें प्रजात समें नवकारसीकाही पञ्चस्काण करै पीठे  
क्रिया करती बखत गुरुके पास उपवास १ अथवा आंबिल  
२ नीवी ३ अथवा एकासणोका ४ करै १८, पञ्चस्काण पारती  
बखत पहली नवकारसी पारै पीठे उपवासादिक पारै १९, पहले  
दो उपधान तप ग्रहण करणेके दोनों दिन नंदीके आरुंवरसें देरी  
हो जाती हे इस वास्ते अठपहरी पोसा वण नहि आता इस  
वास्ते तीसरे पहरकी पन्ध्रहण किये बाद सर्वोपगरणोकूं पन्ध्र-  
लेहके रातकूं निश्चै पोसा लेणा २०, प्रजातसमें उपधानवाही गुरु-  
के पास आयके शरियावही पन्ध्रहके पोषध वपुन सामायक लेके  
वस्त्र पन्ध्रहणा उर अंग पन्ध्रहणा करै, पीठे मुहपत्ती पन्ध्रह-  
के (उदीपन्ध्रहणसंदिस्सानं उहीपन्ध्रहणकरूं) एसे खमासण  
होय देवे पीठे उव वंदन दिये बाद खमासण दश देवै उसका  
क्रम एसे हे बहुवेलंसंदिस्सानं १ बहुवेलंकरूं वैसणोसंदि० वैसणो-  
गणं० सिज्ञायसं० सिज्ञायक० पांगरणोसं० पांगरणोपन्धिगहुं

कहासणोसं० कहासणोपनिगडूं) एवं १० ॥ २१, पीठै वंदन दिया  
 बाद सुख तप पृष्ठा २२, सांजकूं ज्ञी यही क्रिया करणी लेकिन  
 इतना विशेष है पट पनिलेहणा उर अंग पनिलेहणा तो करै परंतु  
 उपधि पनिलेहणा नही करै, पीठै गुरुवंदन ठव दिये बाद खमासमण  
 इस देवै (उहीपनिलेहणासंदिस्ता० उहीपनिलेहणाकरुं सिझायसं०  
 सिझायक० वैसणोसंदिस्ता० वैसणोगानं) बाकी पहलीकी तरै २२,  
 न्यारां पनिक्रमणा होणोसैं पाकीवंदना सुखतपपूठना पर्यंत क्रिया  
 सब करदेना २३, माला पहरणोमें सांजकूं माला मंत्रायके अपने  
 घर रात्रीजागरण करकै प्रजातसमें आचार्य पास माला पहरणी  
 तिसके बाद दिन दश तक दशाहिका करणी उहां पोसा नही  
 लिया हुआ ज्ञी है तो ज्ञी तिविहार एकासणा करताजया निरा-  
 रंजी होकर रहै २४, सज्ञी उपधान उत्कृष्ट विधिसें वहना, उसके  
 अज्ञावमें श्रावक एकांतर उपवास उर साधुओंने उपवास आमल  
 निवी एकासणा करकै उतनेही उपवासकी संख्या पूर देणी लेकिन  
 दिन संख्याका नियम नही है ॥ इति नित्यकर्त्तव्यता समयसुंदरो-  
 पाध्याय कृत संस्कृतोपरिश्रमद् कृत ज्ञाया संपूर्ण ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लिख्यते ॥

पंच मंगल श्रुत नवकार जिसका उपधान वहणेवाला बारे  
 उनवांश अथवा चौबीस आंघिल ३५ नीवी अरुतालीस एकासणा  
 करके १२ उपवासकी पैठ पूर कर पीठै पांच अध्ययनकी वाचना  
 नमो अरिहंताणसें लेके नमो लोएसबसाहूणं तककी १ वाचना  
 एक दिनमें लेवे, तिसके बाद तीन अध्ययनकी वाचना एतोपंचनमो-  
 कारो १, सबपावप्यणासणो २, मंगलाणंचसधोसैं पढमंहवइमंगल ॥ एवं  
 ३, अध्ययनकी दूतरे दिन एक वाचना करै, फेर इस नवकारके श्राव  
 अध्ययनों ही एकही वाचना एक दिनमें लेवे तो ठवतो आंघिल करै,

फेर तैला करै, तैलेके पारणे आंबिल करै, फेर तैला करै, फेर आंबिल  
 करै, फेर तैला कर पारणा करके आठ अध्ययनोकी एकही दिनमें  
 वाचना लेवे. आठ आंबिल ३ तीन तैला मिलाएसे उपवास १९ ज्ञये.  
 यह पंच मंगल नवकारका पहिला उपधान अविधिसे करै तो पो-  
 सा २० वीस करै उपवास १९ करै, विधिसुं वहे तो १६ पोसा  
 उपवास १२॥ यह पहिला वीसरुतप २०॥ अब दूसरा इरि-  
 यावहीका उपधानमें आठ अध्ययन तीन अंतकी चूला उसमें ज्री  
 अगलेकी तरेही १२ उपवासा दिक पीठै इन्हाकारेणसंदिस्सहसुं ले-  
 कर जेमे जीवाविराहिया तक एक वाचना लेणी, एगेदियासे ले-  
 कर गामिकानसगं तक दूसरी वाचना देणी, नर एकही वाचना  
 लेणी होय तो पहली तरे आठ आंबिल ३ तैला करके लेवै ॥ इ-  
 रियावहिया श्रुतस्कंधका तप वीसरु नामका अविधिसे पोसा २०  
 उपवास १२, विधिसुं वहे तो पोसा १६ उपवास १२ ॥ ॥ अ-  
 ब तीसरा ज्ञावारिहंतका तीसरा उपधान नगणीस उपवासकी पै-  
 ठपूरकर वाचना ३ लेवे सो इस मुजब. पहली १ तैला करै पीठै  
 नमोब्रुणंसे लेकर गंधहठीणं तक पहिली वाचना लेवे, फेर १६  
 आंबिल करै, लोगुत्तमाणंसे लेकर धम्मवरचानरंतचक्रवट्टीणं तक दू-  
 सरी वाचना लेवै २, पीठै सोले आंबिल करके अप्पनिहयवरणाण  
 से लेकर सद्धेतिविहेणवंदामि तक तीसरी वाचना लेवै ३. यह ती-  
 सरा उपधान नमोब्रुणका पैत्रीसरु नामका जिसमें उपवास  
 १९ विधिसुं वहे तो पोसा ३५, अविधिसुं करता पोसा  
 उपवास ॥ ॥ ॥ अथ चोथा स्थापना अरिहंत श्रुतस्कंधका  
 उपधान अध्ययन तीन, जिसमें पहली १ उपवास कर ३ आंबिल तीन  
 करै. अरिहंतचेइयाणं इहांसे लेकर वंदणवत्तियाए अन्नञ्जससी-  
 एणं अप्पाणं वोसिरामि तक १ वाचना लेणी. यह थापनारिहंतका

शोभा उपधानं चण्डकम् नामका जित्तमै पोसा ४ उपवास १॥  
 अर्थात् ॥ नामारिहतं चण्डीसत्येका पहले तेला करै, पीठे  
 लोगस्तत्रज्जोषगरे इहांसे लेके चण्डीसंपिकेवली तक पहली वाचना  
 लेवे, फेर वारे आंखिल करके उत्तमजिबं चवंदे इहांसे लेकर पांस-  
 तइवंधमाणच तक दूसरी वाचना देणी, फेर तरे आंखिल करके एवम-  
 एअन्नित्युआसे लेकर सिद्धातिद्धिममदिसंतु तक तीसरी वाचना  
 लेवे. ए नामारिहतं चण्डीसत्येका अष्टावीसरुनाम तप विधिसुं व-  
 हतां दिन २० पोसा २० उपवास साढापनरे एकांतर करै, अवि-  
 धि करता दिन अर्थात्स पोसा २० उपवास साढासतरे ॥ ५ ॥  
 सुप्रार्थश्रुतस्कंध पहली १ उपवास पीठे ५ आंखिल पीठे पुस्कर-  
 वरवीवहेसे लेकर सुयस्तजगवर्जकरेमिकानसंगं तक एक वाचना  
 देणी. यह उठा उपधान श्रुप्रार्थक नाम उक्तम् पोसा ६ उपवास  
 साढातीन ॥ ६ ॥ ॥ अथ सिद्धार्थकश्रुतस्कंध सातमा उपधान  
 पोसह समेत चोविहार उपवास १ करै, पीठे सिद्धाणंबुद्धाणसे ले-  
 के तारेइनरिंवनारिंवा तक एक वाचना देणी, यह सातमा उपधान  
 मालाका तप ॥ ७ ॥

॥ अब उपधान तप प्रवेश विधि लिख्यते ॥

॥ जब वदेत श्रावक अथवा वदेत श्रावकण्या उपधान  
 वदे तत्र तो संघके नामसे चंद्रमा अथा देखणा, संवकी कुंजरास  
 हे, अगर एक श्रावक अथवा एरुही श्रावकणी उपधान वदे ते  
 अपरो नामसे चंद्रमल लेवे तथा उपधानवादी सांज्कूं वाचनाचार्य  
 के पास आयके हरियावही पन्निक्कमके खमासमण देके कहे (अमुक  
 उपधान तपे पवेतइ) गुरु कहे (पवेतामो, नवकारती करणा अं  
 पन्निदेण संदिस्ताणा) तत्र उपधानवादी कहे (तदन्ति) इहां कं  
 अमज दिथे वात्र चोवीहार करै, चादेपाणी पीठे वा अथवा जोज

करो व्यवस्था नहीं है, अथ किसी ज्ञी कारण करके सांजकू खमासण नहीं दिया होय तो तब पम्कमणके वखतसे पहली पिठली रातकू ज्ञी खमासण देणा काल वखत पम्कमणा करणा नवकारसीका पञ्चकाण मालकण पास करणा पीठै सूर्य उदय जये वाद वाचनाचार्य पास आणा. तहां पहले दो उपधानमें (नवकारके नर शरियावहीके) तो प्रारंभमें अवस्य नंदीकी स्थापना करणी नर उत्क्षेप ज्ञी इन दोनों उपधानोंका नंदीमेंही करणा. इस उपरांत बाकी उपधानोंमें नंदीका नियम नहीं हे. तिसके बाद प्रजातसमें पहले उत्क्षेप करणा, तिसके बाद पोसा सामायक लेणा, पीठै दो वांदणा देके पञ्चकाण करणा, फेर मुहपत्तीपूर्वक सुखतप पृष्ठा वांदणा दोय देवै ॥ इति उपधान तप प्रवेश विधि ॥

॥ अथ उपधान तप उत्क्षेप विधि: लिख्यते ॥

॥ पहले शरियावही पम्कमके मूहपत्ती पम्लेहके दो वांदणा देवे, खमासण देके उपधानवाही कहे (पहले उपधानमें पंच मंगल महासुयस्कंध तवं उरिक्वह) गुरु कहे (उरिक्वामो) पहले पंच मंगल उपधान महाश्रुतकंध उखेवावणियं नंदीपवेसावणियं कानसगं करावेह, गुरु कहे करावेमो. पहले उपधान पंच मंगल महासुयस्कंध उरिक्ववावणियं नंदिपेवसावणियं करेमिकानसगं अन्नन्नससिएणं इत्यादि कानसगमें चंदेसुनिम्मलयरा तक चितवै, पार के प्रगट लोगस्स कहे, पीठै खमासण देके पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उरिक्ववावणियं चेश्याइवंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो, वासकेपंकरावेह, गुरु कहे करेमो. पीठै वासकेपपूर्वक संपूर्ण चैत्यवंदन करै. एसें सर्व उपधानोंमें उत्क्षेप जाणना. इतना विशेष हे पहले दो उपधानोंका उत्क्षेप नंदीमेंही करणा. बाकी उपधानोंके विषे सो जब नंदी होय जब तो नंदीमें करे जो नंदी नहीं थापे तो प्रातसमे प्रवेश

के दिन उत्क्षेप करणा, लेकिन जो जा उपधान वेहे उस २ का ना-  
मोच्चारण करणा ॥ इति उत्क्षेप विधिः ॥ ६ ॥

॥ अथ वाचना विधिः ॥

॥ सांजकूं पहिले चोविहारका पञ्चस्काण कर इरियावही पन्तिकमके मुहपत्ती पन्तिकेदेके दो वांदणा देवै पहले उपधानं पंच मंगल मदा श्रुतस्कंधका प्रथम वाचना प्रतिग्रहण निमित्तं करेमि का उसगं अन्नतू० कहेके काउसग सागरवरगंजोरा तक लोगस्त विचारे, पारके प्रगट लोगस्त कहे, दोय खमासमण देके इच्छाकारेणसंदिस्तह प हिलै उपधान पंचमंगल० प्रथम वाचना प्रतिग्रहणार्थं चेश्याइ वंदावेद, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपकरावेद, करावेमो. पीठै गुरु वासक्षेप करै, पीठै चैत्यवंदन करै, पीठै खमासण देके उपधानवा- ही दोनुं हाथोंमें मुहपत्ती लेके मुखकूं ढांककर अर्धवनतगात्री दोयके वार तीन पांचों अघ्ययनोंकी वाचना देवे, वाचनामें मिच्छामिडुकन एतै सब जगे वाचनाजिलाप जाणना ॥ १ ॥ इति वाचना विधिः ॥

॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया-नित्तेप विधिः ॥

॥ अथ तपस्या पूर्ण होय उस आखरी दिनको सांजकूं चोविहार करके अथवा प्रजातसमें इरियावही पन्तिकमके मुहपत्ती पन्तिकेदेके दो वांदणा देके उपधानतंपवाही कहे-इच्छाकारेण तुझे अम्हं अमुक तवनिस्किवद, गुरु कहे निस्किवामो. फेर खमासण देके कहे-इच्छाकारेण संदिस्तह जगवन् अमुक तप निस्किवणं का उसगं करावेद, गुरु कहे करावेमो. इच्छामि० अमुक तप निस्किवणं करेमि काउसगं अन्नत्यू० कहेके एक नवकारका काउसग करके खमासण देवै, अमुक तप निस्किवणं चेश्याइ वंदावेद. वंदावेमो गुरु कहे, पीठै संपूर्ण चैत्यवंदन करै ॥ इति नित्तेप विधिः ॥

॥ अथ पठिपुष्पा-पिणय पारण विधि लिख्यते ॥

प्रजातसमें गुरुके पास आयके न्यारा प्रतिक्रमण क्रिया इत

धास्ते मुहपत्नी पन्डितेहके वंदन एवं देवे ( दो वांदणा देवै इस कूं  
 एवं वंदन कहतै हे ) गुरुके साथ पन्डिकमला कीया होय तो वा-  
 दिणा दोयही देवै, पीठै गुरु कहे पवेयणंपवेह एसा कहके कहे प  
 न्पुसोविगयपारणयंकरेहति, पीठै अपणी इष्टानुसार पञ्चस्क्राण-  
 करै पीठै गुरुके सामने कहे उपधानमें अन्नक्ति आसातना करी  
 होय तस्त मित्रानिउक्तं ॥ इति ॥

॥ अथ क्षमाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान बहणेवाला प्रज्ञातसमें गुरु पास आयके गुरुकी  
 आज्ञासैं इरियावही पन्डिकमके आगमन आलोचकर पोसा सामायक  
 लेके दोय खमासणपूर्वक पन्डितेहणा नर अंगपन्डितेहणा करै, पीठै  
 मुहपत्नी पन्डितेहके पहिले खमासणसैं नहीपन्डितेहणसेदिस्ताएपि,  
 दूसरी खमासण देके नहीपन्डितेहणकरूं, पीठै मुहपत्नी पन्डितेहके गु-  
 रूकूं एवं वंदन देवै पीठै गुरु कहे—पवेयणं पवेयह, उपधानवाही कहे,  
 इष्टाप अमुक उपधान निमित्तं निरुदंवातवंकरावेह, गुरु कहे उप-  
 धासे आंबले निरुदेति एकाशणे, एसा कहे, पीठै दश खमासणसैं  
 अनुक्रमसैं कहे—बहुवेलंसंदिस्तावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, वइसणं  
 संदिस्तावेमि ३, वइसणं वाएमि ४, सज्ञायंसंदिस्ताएमि ५, सज्ञा-  
 थंकरेमि ६, पांगरणोसंदिस्तानं ७, पांगरणोपन्दिग्गूं ८, कवासणो-  
 संदिस्तानं ९, कवासणोपन्दिग्गूं १०, पीठै मुहपत्नी पन्डितेहके दो  
 वांदणा देवै, गुरु कहे सुखतप, उपधानवाही कहे, तुमारे प्रसाद ॥  
 इति प्रज्ञात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पन्डितेहणा अये वाद  
 स्थापनाके आगे मालकणीके हुकमसैं इरियावही पन्डिकमके पहिले  
 खमासणसैं पन्डितेहण करूं १, दूसरी खमासणसैं पोसहस्ताला  
 प्रमाजू २, एसा कहके मुहपत्नी पन्डितेहे, एसैं दो खमासण देणे-  
 पूर्वक अंग पन्डितेहणा नर मुहपत्नी पन्डितेहे, इहां अंग शब्द करके

कटिपट्ट ( अर्थात् कणदोरा जाणना ) एसा गीतार्थ कहते हैं. पीठे वसति प्रमार्जकर तहां जो उसही दिन जोजन कीया होय तत्र तो पहेरे वस्त्र पन्डिलेहे, बाकीके अवशेष वस्त्र नहीं पन्डिलेहे, जो उस दिन उपवास होय तत्र तो एकजी वस्त्र नहीं पन्डिलेहे. पीठे गुरु पास आंयके इरियावही पन्डिकमके पन्डिलेहणा १, अंगपन्डिलेहणा २, फेर गुरूके सामने करे. पीठे सिझायसंदिस्साणमि सिझायंकरेमि आठ नवकार गुणे. पीठे मुहपत्ती पन्डिलेहके उव वांदणा देवे. पीठे त्रिविहार अथवा चोविहारका पञ्चस्काण करे, इस खमा सण अनुक्रमसें इस मुजब देवे—उहीपन्डिलेहणसंदिस्साणं १, उही पन्डिलेहणकरं २, सिझायसंदिस्साणं ३, सिझायकरं ४, वइसणो संदिस्साणं ५, वैसणोठाणं ६, कठासणोसंदिस्साणं ७, कठासणोप निग्गहुं ८, पांगरणोसंदिस्साणं ९, पांगरणोपनिग्गहुं १०. पीठे मुह पत्ती पन्डिलेहके दो वांदणा देकर सुखतप पूठे, पीठे सर्वोपगरण पन्डिलेहे, मातृका ( पालसिया ) प्रमुख पन्डिलेहै, तथा जिस दिन जोजन करै उस दिन पूण पहरकी पन्डिलेहणकी दखत आली क टोरादिक सर्व उपजोगके पात्रादिक पन्डिलेहै, उपवासके दिन नहीं पन्डिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहर क्रिया-विधि ॥ तथा पास्वीपन्डिकम णामे असिझाइका काउसग्ग नही करे तो आवती परकी तक सर्व सिझांतकी असिझाई होय, इरियावहीका पाठ जी गुएया नहीं सूजे. इस वास्ते असिझाईमें जी असिझाईका काउसग्ग करंथा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागर चंडगणिकूं पूठा तव एसाही जबाब दिया योगारंजकी यह विधी है ॥ इहां चउमासीमें योगारंजमें वर्षकी महीनेकी शुद्धिका मुहुर्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृडधुवचरक्षिपेः । वारेजोमं शनिविना ॥ आद्याटनंतपोनंथा । लोचनादिसुजंर ॥ १ ॥ इति



आचारदिन करे ॥

॥ अथ उपधान तप विवरन गाथा ॥

॥ श्रीमुहपत्तीपन्नासं । अठारसत्रासणम्मिपन्निहेहा ॥ वंदे  
पत्तेसोत्तस । कप्पेपणवीसगोअमा ॥ १ ॥ पणवीसचोत्तपट्टे । गुरु  
कंबलतहयचेवसंशारे ॥ कठालणेअठारस । जपेदंकेअपंचेव ॥ २ ॥ इति ॥  
प्रतिलेखणा विचारः ॥ पणनववासायाम । अठयंकुणहअठमंअंते ॥  
नवकारनवहाणं । इत्तियमित्तंरियाए ॥ १ ॥ सकळयंमितहाणं ।  
अठमंअंविजाणवत्तीसं ॥ अरिहंतचेइयठए । चउत्थमायामतियगं  
च ॥ २ ॥ चउवीसठएमठम । मेगंपणवीसहुंतिआयामा ॥ नाण  
उयंमिचउठं । आयामापंचनवहाणं ॥ ३ ॥ चउवीसंनववासा । ए  
गासीअंविजाणसवंगं ॥ पंचोत्तरंचपोसहसय । मुवहाणेसुजाणोसु ॥  
४ ॥ वारसवारसएगो, पणवीसअट्टाइयाणपन्नरस ॥ अठयनववासा  
। सवंगंसठुचउसठी ॥ ५ ॥ नवकारसहियपोरसी । पुरमठुअवठ्ठणउ  
अंतेहिं ॥ इगठाणयनिविगई । विलेहिंअठं विलेणंच ॥ ६ ॥ पणया  
लाचउवीसं । सोत्तसचउइहिअठहिकमेणं ॥ चउइइहियएणेणय ।  
आयरणाहोइउववासे ॥ ७ ॥ इति उपधान तपोगाथाविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ रुषिभंडल मंडल पूजा लिख्यते ॥

॥ प्रथम २४ तीर्थकरोंके नामकी चिठियां लिखके बीच मं-  
दलमें २४ कोठोंमें धरे. इति चतुर्विंशति तीर्थकराः ॐ नमः १ कौं-  
नमः बबबबबबबबबबबबबबबब १, बबबबबबबबबबबबबबबब २, बबबब-  
बबबबबबबबबबबबबबबबबबबब ३, बबबबबबबबबबबबबबबबबबबब ४, ॐ ह्रीं अर्हज्योनमः  
ॐ ह्रीं सिद्धेज्योनमः ॐ ह्रीं आचार्येज्योनमः ॐ ह्रीं उपाध्यायेज्योनमः  
ॐ ह्रीं सर्वसाधुज्योनमः ॐ ह्रीं ज्ञानेज्योनमः ॐ ह्रीं दर्शनेज्योनमः ॐ हः  
चारित्र्येज्योनमः ॥ इति प्रथम वलय १ ॥ दूसरी वलयमें दश दिग-  
पालोंके नामकी दस चिठी दश कोठोंमें धरे ॥ इति द्वितीय वलय २ ॥

तीसरी वलयमें नव ग्रहोके नामकी नव कोठेमें नव चिहियां ॥ इति  
 तृतीय वलय ॥ इसके उपरांत अकारादिक सोखे स्वर उकारादिक  
 तेतीस वर्ण इंद्रजुति आदि इग्यारे गणधरोके नाम नैह्यी युक्त लि-  
 खे. पीठे अमृतालीश लब्धिपद नैह्यीअर्द्ध एसा आदिमें देकर लिखे  
 ॥ अमृतालीश लब्धिपदोंके नाम नवपद मंरुलपूजामें लिखे हे उस  
 मुजब लिखे. पीठे चोवीस तीर्थकरोके पिता नैनात्रयेनमः १ इ-  
 त्यादि लिखे. पीठे नैमरुदेवायैनमः इत्यादि चोवीस तीर्थकरोके  
 माताका नाम लिखे ॥ पीठे नैह्यैनमः १, नैश्रियैनमः २, नैघृत्यै  
 नमः ३, नैलक्ष्म्यैनमः ४, नैगोर्ध्वैनमः ५, नैचंरुयैनमः ६, नैसरस्व  
 र्यैनमः ७, नैजयायैनमः ८, नैअंबायैनमः ९, नैविजयायैनमः  
 १०, नैक्लित्रायैनमः ११, नैअजितायैनमः १२, नैनित्यायैनमः १३,  
 नैमदद्रवायैनमः १४, नैकामांगायनमः १५, नैकामवाणायैनमः  
 १६, नैसानंदायनमः १७, नैनंदमालियेनमः १८, नैमायात्यैनमः  
 १९, नैमायावित्थैनमः २०, नैरौत्र्यैनमः २१, नैकालायैनमः २२,  
 नैकाल्यैनमः २३, नैकालप्रियायैनमः २४. एसें श्रीदेव्यादि चोवी  
 सोके २४ कोठेमें नाम लिखे. इसके बाद २४ यह नर २४ यह  
 णीका नाम लिखे. १६ विद्यादेवीका नामकी स्थापना लिखे, पीठे  
 नव निधानोंके नाम लिखे, फेर चोसठ इंद्रोके नाम लिखे. पहली  
 वीशस्थानक मंरुलपूजामें लिखा हे उस मुजब. इत मुजब लिखके  
 अष्ट सिद्धिका नाम लिखे नैअशिमसिद्धयेनमः १, नैगरिमसिद्धये  
 नमः २, नैअधिमसिद्धियैनमः ३, नैशाकाम्यसिद्धयेनमः ४, नैमहि-  
 मसिद्धियैनमः ५, नैईसित्वसिद्धयेनमः ६, नैविसित्वसिद्धयेनमः  
 ७, नैप्राप्तसिद्धयेनमः ८, इति अष्ट सिद्धिः नामानि ॥ नैश्रीधरणे  
 डेरकतुः १, श्रीपद्मावतीरकतु २, श्रीगौतमस्वामिनेनमः ३, श्रीवि  
 रोव्यारकतु ४. इति श्रीरूपमंरुल पूजन विधि संपूर्ण. इण पदोंमें

द्रव्य नवपदमंज्व वीस स्थानक मंज्वलपूजा मुज्व चंदावै ॥

॥ अथ शांतिक पूजाविधि सर्व उपद्रव शांत्यर्थ लिख्यते ॥

॥ शुभ दिन शुभ मुहुर्तमें जिनमंदिरमें समवसरण पर जिनप्रतिमा स्थापन करावै, आगे पंचपरमैष्टीपट्ट स्थापन करै तथा जगवनाके दहिणे पासे दश दिग्पालपट्ट नर बांये पासे नव ग्रह का पट्ट स्थापन करै, पीठै एक वना एक ठोटा मट्टीआदिकका हंसा ऊपर खनी सपेदमट्टी पोतके चार२ केतर कुंकूका साधिया करै, पीठै उंची नीची दोय टिवची काठकी धरावै, नीची टिवची पर मोटा हंसा धरै, उंची पर ठोटा हंसा धरै, ठोटे हंसेके तले एक त्रिं ड करै, दोनुं मटकाके अंदर साधिया करै, वने मटकेकी टिवची नीचे चावलका साधिया करै, ऊपर नालेर रुपिया थापनाका धरै, दोनुं मटका ऊपर मोलीसूत्र बटके पंचरंगी खजली एकेक खूणे २१ इक्कीस२ पोकर च्यारों कोणोंमें ८४ खजली पोके तणी बांधे, नालेरके आकार मोलीसूत्र हो दनो नीचला मोटा हंसामें लटकतो रखके ऊपरकी मोली ठोटा हंसाके त्रिंमें पोकर ऊपर जो चौ खूणी तणी बांधीहे जिसके बीचमें गांठ देवे, पीठै जो संघ समुदायकी तरफसे शांतिक पूजा होय तो मंदिरजीका कलश लेवै नर एक जणेकी तरफसे होय तो शांति कराणेवालेके घरसे-ती सधवस्त्री जिसका माता पिता सासू सासुरा चारों भावित्र जीता होय, जिस स्त्रीकुं अन्ना वस्त्र आन्नूपण पहिरायके कलसके अंदर कुंकूमकेसरका साधिया करके चावल सुपारी पंचरत्न की पोतली धरके मुख पर नालेर ढकणे माफक खना धरके ऊपर लाल कसुंमल वस्त्र मोलीसें बांधे, ऊपर कलशके च्यारों तरफ च्यार साधिया कर स्त्रीके मस्तक पर रखके गीत गानपूर्वक वाजित्रादि अनेक नुबव समेत जिनमंदिरमें लावे, समवसरणके स-

मुख चावलोंका साथिया करके ऊपर कलश स्थापन करै, पीठे  
 पाच दश जणा इन्धे ठर जावे अपना अंग शुद्ध करै, गुरुके पास  
 से केसर मंत्रायके तिलक करै. इत्यादि सर्व विधी इहासे आगे नव  
 अह दश दिग्पालका आह्वान अठारे स्तुतिसे देववन्दन वगेरे करै सो  
 सब विधि पूर्वे लिखी हे, सो सब करके बलवाकुल सब देके पीठे  
 सुन्दर अंगोपांगवाले सुशील स्त्रीपूत्रादि संयुक्त विवेकगुणधारक  
 आठ स्नात्रिया मुखकोश बांधके तीनश नवकार गुणे, जिसमें दो  
 स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनुं तरफ  
 खना रहै, एक स्नात्रिया धूप खेंवता रहै, १ स्नात्रिया फूल चंदन  
 वासकपे चढाता रहै, दो स्नात्रिया लोटोंमें जल भरके दोनुं तरफ  
 धारा देणेवाले कलशको पूरता रहै, दो जणे दोनुं तरफ चमर हु  
 लता रहै. प्रथम गुरु आदि सकल संघ सातर नवकार गुणे, स्ना-  
 त्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवै, एसें सात धारा हे  
 पूके तब गुरु मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसें नमोर्दत्सिद्धाचाप कहके  
 अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें. पीठे जक्कामर वनीशांति  
 छोटीशांति गुणें, तथा सकल संघमें जिसको साते स्मरण वृद्धशां-  
 ती आती होय तब तो गुरुके संग अपणे मनमें गुणता रहै, ठर  
 नहिं आवे तो संघ सर्व नवकारमंत्र गुणता रहै, जहां तक साते  
 स्मरण शांति गुणे तहां तक अखंड ऊपरले ठोटे कलशमें  
 धारा देता रहै, ठीक कोई नही करै, आपसमें डसरी संसारी  
 विकथा न करे, साते स्मरणादि सर्व गुणे पीठे तीन नवकार  
 गुणके कलस धरे, पीठे नीचेके हंमेमेसे जितप्रतिमाकं निकालके  
 अग्नी तरे अंगलूहणा करके केशर पुष्पादिकसें पूजा करै, जगवान-  
 की अग्नी तरे अंगी रचना करै, नानाप्रकारका नैवद्य फल चढाके  
 आरती उतारै, मंगलदीपक करै. पीठे शांतिजल सर्व संघ लगावे,

अपणे घरोंमें ठाटे, शांतिपूजाकी मोली गुरूके पाससे लेके राखनी बांधे. इससे संपूर्ण संघमें नगरमें देशमें मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांतिक होय, अनेक प्रकारसे रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकी प्राप्ति होय. पीठै आधा बलवाकुल परातमें रक्का था सो लेके गुरु पूर्वोक्त स्नात्रियोंसे दश दिग्पाल विसर्जन विधि पूर्वे लिखी हे उक्त मंत्रोंसे विसर्जन करै ॥ इति शांतिक पूजा विधिसं०

॥ अथ पंच तीर्थ आरती लिख्यते ॥

॥ पहली आरती प्रथम जिणंदा, सत्रुंजय मंरुण रुषन्न जिणंदा ॥ जय२ आरती आदि जिनंदकी ॥ दुसरी आरती मरुदेवी-नंदा, जुगला धरम निवार करंदा ॥ ज० १ ॥ तीसरी आरती त्रि-भुवन मोहे, रत्नसिंघासण म्हारा प्रभुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चोथी आरती नित्य नई पूजा, देव रुषन्नेदेव अवर न दूजा ॥ ज० २ ॥ पंचमी आरती प्रभुजीने जावे, प्रभुजीना गुण सेवक इम गावै ॥ ॥ ज० ३ ॥ आरति कीजै प्रभु शांतिजिनंदकी, मृग लंठनकी में जाउं बलिहारी ॥ जय२ आरति शांति तुमारी ॥ विश्वशेन अचिराजीको नंदा, शांतिजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ ज० ४ ॥ आरति कीजै प्रभु नेमजिनंदकी, शंख लंठनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० समुद्रविजय शिवादेवीकों नंदा, नेमिजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ५ ॥ आरति कीजै प्रभु पाशजिणंदकी, फणिंद लंठनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदा, पाशजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ६ ॥ आरति कीजै महावीर जिनंदकी, सिंह लंठनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धार्थ त्रिसलाकों नंदा, वीरजिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ७ ॥ आरति कीजे चोवीश जिनंदकी, चोवीस जिणंदकीमें जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ चरण कमल नित सेवित इंदा, चोवीश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ८ ॥

करंजोमी सेवक इम बोलैं, नहि कोइ माहरा प्रजुजीने तोले ॥ इति ॥

॥ अथ चक्रेश्वरीदेवी आरती लिख्यते ॥

॥ जयश् आरती देवी तुमारी, नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी

॥ ज० १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्रेश्वरी जग सौ-

ख्याली ॥ ज० २ ॥ सुविहित गङ्गनी शासनदेवी, सकल संघने

सुख करेवी ॥ ज० ३ ॥ निलवट टोलनी रत्न विराजै, काने कुंभ

ल दोय रवि शशि ठाजै ॥ ज० ४ ॥ बांहे वाजूबंध वोरखा सोहे,

नीलवर्ण सहु जनमन मोहे ॥ ज० ५ ॥ सोवनमय नित्य चूनी

खलके, पाये घूघरना घमघमघमके ॥ ज० ६ ॥ वाहन गरुड चढ्या

बहु प्रेमे, तुज गुण पार न पामु केमे ॥ ज० ७ ॥ चूननी जन्मां

देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहू जीपे ॥ ज० ८ ॥ नितश्

मानी आरती कतारे, रोग सोग जय दूर निवारे ॥ ज० ९ ॥ तसु

घर पूत्र पुत्रादिक ठाजै, मन वंठित सुख संपद राजे ॥ ज० १० ॥

देवचंड मुनि आरति गावे, जयश् मंगल नित्य वधावै ॥ ज० ११ ॥ इति

॥ अथ चोपड खेलण विचार स्तवन ॥

॥ राग सोरठी ॥ अरे माहरा प्राणीया, चतुरनर, चोपड इण

विध खेल रे ॥ अशुभ करम मल ऊरकै च० ॥ जाजम कर वैराग

रे, वनीय विगयत वैस जो च० ॥ जहां नहीं कुमतिको लाग रे ॥

अरे० १ ॥ दान शील तप जावना च०, चोपड एह पसार रे ॥

आठ दाव इक बोलमें च०, आठुंइ करम निवार रे ॥ अरे० २ ॥

देव गुरु धर्म तीनुं जला च०, पाशा एही जाण रे ॥ अवसर कर

हाथे लिया च०, उकाव लेश्या आण रे ॥ अ० ३ ॥ दरसन ज्ञान

चारित्र जला च०, तीनुंइ गुपती विचार रे ॥ नव तत्व सात दिरदे

घरो च०, ए सब सोला सार रे ॥ अरे० ४ ॥ पन्था अगारे रहण

दे च०, पोवारा व्रत धार रे ॥ दश लक्षण दश धरम हे च०, दित

कर हिषे विचार रे ॥ अ० ५ ॥ षट् काया ठकनी पनी च०, हिर-  
दे दया विचार रे ॥ पुन्य उदय पंजनी पनी च०, पंच महाव्रत धार  
रे ॥ अ० ६ ॥ ब्यार तीन काया पञ्चा च०, सातुंर विसन निवार  
रे ॥ जे डुरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ०  
७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, डख सहा जरपूर रे ॥  
करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ० ८ ॥ इति

॥ अथ सेत्रुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेत्रुंज खेल खिलारी, सब समज देख सेत्रुंजकी घात,  
खख दोउं दल अपणे परायैकी जात ॥ कान विध कर मोह बाद-  
स्याको मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥  
आवुं कर्म पियादे आगे जुकतेही आवै, काम क्रोध गज चलत अंज  
त नहीं अंज ॥ लोअ ऊंठ चारुं खूटकी मरोरु चल ध्यावै, मान  
माया के तुरंग चाल चपल दिखावै ॥ मिथ्यामत सो वजीर वीर  
वाके ढंग ठामो, वाके मारवैकों दल अपणो संजार ॥ हे से० २ ॥  
तेरे ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग ठामो, आवों अंग समकित  
के पियादे हलकारो ॥ त्याग सांढिया सवार पर सांढियाको  
मारो, सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो ॥ कृपा शील दोय  
फील राखो दलकै अगामी, पर दल कर मारो बिनमें संहार ॥  
हे से० ३ ॥ जप तप सत व्रत याके घेरे चिहुं नर, जब वाकै चल-  
नेकी काइ रहै नही गोर ॥ जब तेरी होगी जीत दूजो हारेगो  
खिलारी, जब सुजशको तेरै शिर बंधेगो मोर, ठामे इंद्र धरणेंद्र  
तेरे होवेंगे चवर, तेरो जजन जजेगो गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥  
इति सेत्रुंज खेलन ज्ञान संपूर्ण ॥

॥ अथ प्राचीन राग रागणी स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग कल्याण ॥ टुक निजर महरदी करणा हो, टु० ॥ में

हूं अधम पापकी मूरत, मेरा दोस न धरणा हो ॥ दु० १ ॥ अ-  
 ष्ट जवनकी प्रीत हमारी, नवमे जव निरवाहना हो ॥ दु० ॥२ ॥  
 रूपचंद जगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ दु० ३ ॥  
 इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म-  
 का वासा हे ॥ लो० ॥ पैंतालीस लाख जोजनकी शिखा, फिटक  
 रतन उजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल जोत विराजै साहिव,  
 ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ पंच वरणकी घजा  
 फरुके, क्या कहुं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन  
 नाम तुमारो, चरनकी क्या आसा हे ॥ लो० २ ॥ चोसठ ईंख-  
 के वाके द्वारे, खिजमत वंदा खांसा हे ॥ रूपचंद कहे नाथ निरं-  
 जन, चरणकमलका दासा हे ॥ लो० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥  
 सखि सध बनठन, सखी० ठाढ़े नाजि नृपतजूके द्वारे आगे ॥ स० ॥  
 रिपजकुमरको जनम जयो हें, मंगल मुस्क उचारै री ॥ स० १ ॥  
 ताल मृदंग खाव मधुरी धुनि, वीणा वाजे सुर तारे ॥ नाचत हा  
 व जाव करी राजत, तान लेत सुर तारे री ॥ स० २ ॥ सुरवनिता  
 मिल गई वधाई, मोतियन चोक सवारे ॥ जगबंधव जगपतिकुं निर-  
 खत, आनंद हर्ख अंपारे री ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः  
 हो जिन तेंने दरस पर वारीया, हो जि० ॥ तुम विन जव२में  
 जटकंदा, अत्र मेंनी उर निहारिया ॥ हो० १ ॥ अष्ट करम मेंने  
 लार लगे है, उनकुं वेग विमारियां ॥ चरण सरण गहे आणा तु  
 साढ़े, रूपचंद गुणगारियां ॥ हो० २ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥  
 म्दारा रिपज जिनेदने गजरो चढाऊं रे, म्हा० ॥ चंबेली चंपा गु  
 खाव लाऊं रे ॥ जाइ जूई मोगरो मालती, विध गुंथाऊं रे ॥ म्हा०  
 १ ॥ अगर चंदन अकृत नैवेद्य लाऊं रे ॥ धूप दीप फल सुगंध ए  
 ण्य पाऊं रे ॥ म्हा० २ ॥ इष्ट द्रव आदिनाथ जाव जावुं रे ॥



रुषभदास पूरो आस गुण गाजं रे ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥  
पुनः ॥ मन लीनो हमारो जिनचरणा रे, पोत जलधि नवतर  
णा रे ॥ म० ॥ आदि पुरुष जगतारण निसुणयो, कर्म विकट धन  
हरणा रे ॥ म० १ ॥ नाजि तात मरुदेवी माता, नंद रुषभ सु  
खकरणा रे ॥ म० २ ॥ सिद्धपादिक प्रगटन जग तत्पर, कुमतांगन  
दल टरनां रे ॥ म० ३ ॥ सारंग दृग शशि वदन मनोहर, अंग  
कनक सम वरणा रे ॥ म० ४ ॥ श्रीजिनहंस सूरीश्वर जंपै, जिन  
समरण दिल धरणा रे ॥ म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जिंजोटी ॥ २ ॥ ॥ अजित अजित जिन ध्या  
न, म्हारे मन रे अ० ॥ जितशत्रु विजयाको नंदन रे, वंदन त्रय युत  
ज्ञान ॥ म्हारे० १ ॥ त्रिहुं जगतारन टारन अघको रे, वारुं तन धन  
ज्यान ॥ म्हा० अ० २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजै रे, केवल  
निरमल ग्यान ॥ म्हा० अ० ३ ॥ श्रीजिनहंस सूरि प्रभु पाए रे, नि  
ति पुरंदर म्यान ॥ म्हा० अ० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
अरजी मोरी सहियां, मोहे तारलो गहवहिया ॥ य० ॥ में नां  
जाणूं सहियां, य० ॥ में तारण तरण सुणयो ठै, में यातें शरणो  
हियां, इनतें उवार लहियां ॥ य० मो० १ ॥ इन करमनके  
हुयकै, में नटक्यो चिहुं गति महियां ॥ य० मो० २ ॥ हित क  
दाश निहारै, करजोनि परि हुं पश्यां, शिव देति क्युं न सा  
॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागकाफी ॥ मुजरो मानी लीजै, हो गोमरीाय अरज सु  
णीने, म्हारो मु० ॥ किरपा काज करी सेवगने, दिलजर दरशण  
दीजै ॥ हो गो० १ ॥ गुणनिध गवनी दरसण दीजै, सकल करम  
दल ठीजै ॥ हो गो० २ ॥ रूपविबुधको मोहन पन्नणे, प्रहज्जती प्रण  
मीजे ॥ हो गो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तु मेंना प्रभु इण दिल

वसणावे, तेना तो गुण सुर गावंदा हो ॥ प्र० १ ॥ संतके सागर  
 गुणके आगर, जोही ध्यावे सो पावंदा हो ॥ प्र० २ ॥ तुमहो त  
 स्वज्ञानके दाता, जिवजन ताप मिटावंदा हो ॥ प्र० ३ ॥ कदै जि  
 नचंद एसे प्रभु मेरे, चरणकमल चित्त ल्यावंदा हो ॥ प्र० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ हम जाणतहें तुम तारोगे, हमं ॥ ना-  
 जिराय मरुदेवीकों नंदन, मेरी जर निहारोगे ॥ हमं १ ॥ आदि  
 जिनेसर अंतरजामी, खामी कठुन विचारोगे ॥ हमं २ ॥ जगजीवन  
 जगतारक तुमहो, एही विरुद संजारोगे ॥ हमं ३ ॥ श्रीजिनसौजा  
 ग्य सूरिंदके साहिव, जवजल पार ऊतारोगे ॥ हं ४ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ पंथीना पंथ चलेगो, प्रभु जजले दिन चार ॥ पं० ॥ जूठी  
 काया जूठी माया, जूठो सब परवार ॥ पं० १ ॥ बालपणेमें खेल गमायो,  
 जोवन मायाजाल ॥ पं० २ ॥ वृढापण आयो धरम न पायो, पीठै  
 करत पुकार ॥ पं० ३ ॥ क्या ले आयो क्या ले जायगो, पाप पु  
 ण्य द्योय लार ॥ पं० ४ ॥ दया मया कर पास एवंती, अब तेरोही  
 आधार ॥ पं० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तेवीशमा जिनराज,  
 जोमे आरे कोण जुमेगो ॥ ते० ॥ अश्वशेन तात वामादेवी माता,  
 तूं तारण संसार ॥ जो० १ ॥ कमठ विरारण नागकूं, तारण, सं  
 जलायो नवकार ॥ जो० २ ॥ विबुद्ध कुशल करजोमीने वीनवै,  
 जवरे देज्यो दीदार ॥ जो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खंजायची ॥ कैसें काज सरै, महाराजा विन, कैसें०  
 ॥ भ्रमतरे लख चौरासीमें, सुख दुःखसें जीया रुतत फिरै ॥ म०  
 कैसें० १ ॥ ए रिपु कर्म वैरी नटकावत, जाहीसें मेरो प्राण सरै  
 ॥ म० कैसें० २ ॥ जो जीव सुखकी वांठा चाहै, प्रभु सेव्यासें  
 काज सरै ॥ म० कैसें० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राजरी वधाई  
 वाजै वै, महा० ॥ सरणाई सरै नोवत वाजै, धन ज्युं अंवर गाजै

वै ॥ महा० १ ॥ इंझणी मिल मंगल गावै, मोतियन चौक पुरावै  
वै ॥ महा० २ ॥ सेवग प्रजुजीसैं अरज करै वै, चरणारी सेवा  
प्यारी लागे वै ॥ महा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अमाणो १ ॥ मोतनकी माला जिन गल सोहे,  
मोति० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, कुंमल लागत वाला ॥  
॥ जि० १ ॥ जजोरी जजो तुम लोक सहरके, नहिय जजै सो  
काला, माणक पर प्रजु महिर करो तो, अपणा विरुद्ध संजावा ॥  
जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ रहे तुम आज क्युं जीवन डुराय, रहेण  
॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारी हा हा खाय ॥ २० १ ॥  
अविरत घूंघट पट नयारी, अनुभव मुख निरखाय ॥ २० २ ॥  
॥ जव परणित परिपाक इतै पर, आई धाई माय ॥ २०  
३ ॥ अति आग्रह सब ग्यानसारकूं, जीवन कंठ लगाय ॥ २०  
४ ॥ इति पदं ॥ पुनः हे माय वांकमी कर्मगति जाय न  
कही, चिंतत और वनत कठु औरै, हौनहार सो होय रही ॥ हे माय  
वां० १ ॥ सकल साज सज्जियौ व्याहनकूं, राजुलको तब चाह  
जई ॥ सुनी नेम गिरनार सिधाए, बदन विलख मुरजाय रही ॥  
हे माय वां० २ ॥ सीता सती योंही पतिजगता, जानत सकल  
मही ॥ जूठो दोस दियो जब रुघपति, पावक कुंममें धीज दही ॥  
हे माय वां० ३ ॥ हायक सुदृष्टि श्रेणिकराजा, निज सुत कोणक  
बंध ठई ॥ सुध बुध विसर गई नरपतकी, आपणकी अपघात  
लही ॥ हे० वां० ४ ॥ ठिनमें रंक ठिनकमें राजा, अकल कथा  
किम ज्ञाण कही ॥ उलट पलट वाजी नटसीकी, नवल सरबमें  
व्याप रही ॥ हे० वां० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हांनु प्यारो  
लागे वै जी आरो उपदेस, म्हांनु० ॥ ग्यान जगावण नृगण

मैटण, संशयन रहे न लेस ॥ म्हा० १ ॥ मोहि तिमिरे दुखे  
 दूर करणकुं, जगत वढावत हेत ॥ चंद फत्ते नित एही चाहे,  
 समकित सुखकौ खेत ॥ म्हां० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
 मेरो पिया पर संग रमत हे, मै कैसे मनाऊं री ॥ मे० ॥ सौतन  
 संग रैन दिन रमतां, मोहि न बुलावै री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत  
 सखी पइया परत हूं, कोइ पिया मिलावै री ॥ विरहानल अति  
 इसह पिया विन, कोन बुजावै री ॥ मे० २ ॥ सुमता संगले अं-  
 नुजव आयो, सब परठ सुणावै री ॥ ग्यानसार प्यारी दोउं हिल-  
 मिल, सोरठ गावै री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सौरठमलार ॥ वरपित वंचन ऊरी, हो सुगुरु

मेरो, व० ॥ श्रीश्रुतज्ञान गगनतैऊमटी, ग्यानघटागंहरि ॥ हो सुगुं०  
 १ ॥ स्याघादनय विजुरी चमकित, देखत कुमति करी ॥ हो सुगुं०  
 ॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक घरी ॥ ही सु-  
 गुं० ॥ २ ॥ श्रद्धा नदी चढी अति जोरे, शुद्ध सुजाव धरी ॥ सु-  
 नरनरयो सुमतारससागर, समकित जूमि हरी ॥ हो सुगुं० ३ ॥  
 प्रगटे पुन्य अंकुरे चिहुं दिस, पाप जवास जरी ॥ चातक मोर पप-  
 इया जविजन, बोलत जक्तिनरी ॥ हो सुगुं० ४ ॥ दया दान व्रत  
 संजम खेती, जविक कसान करी, हरखचंद सुरनर शिवसुखकी,  
 सहज स्वजाव फली ॥ हो सुगुं० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ या  
 घरीमें रंग, वन्यो हे म्हारे ॥ या० ॥ तत्वारथकी चरचा पाई, सा  
 घरीको संग ॥ व० या० १ ॥ श्रीजिनराज दयानिध जेठे, हरख  
 जयो अंग अंग ॥ व० या० २ ॥ एसी विध जवश् मांहे मिलियौ,  
 धर्मप्रसाद अजंग ॥ व० या० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागमलार ॥ चिहुं उर दरिया वरसै, अब वरर धरर  
 बन गरजै ॥ चि० ॥ नेमप्रभु गिरनार सिघाए, देखणकुं जिंया त

सै ॥ चि० १ ॥ दाडुर मोर सोर सुण श्रवणें, नयन ज्ञे घन  
 जरसै ॥ चि० २ ॥ टूढत टूढ सकल वनशमें, कबहुं पिया ना दर  
 सै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेगें सजनी, दिवस घरी जिन  
 फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मोरवा पपइया बोले  
 पीनु२ घनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि अंधियारी  
 कारी विजुरी रुरावै, दूजी विरह व्याकुल नई तनमें ॥ मो० १ ॥  
 फिरमिर वरषित गरजत दाडुर, सोर करत रहे नदियां रनमें ॥  
 मो० २ ॥ आणंद यह सम देखण चाहै, राजुल नई विरागण वि  
 नमें ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग विहाग ॥ समऊ नर जीवन थोरो, थोरो थोरो थोरो  
 ॥ स० ॥ पल २ आयु घटत विनरही, गलत जात जेसैं नरो ॥ स० १ ॥  
 या तनको कहो कोन नरोसो, विन मासो विन तोरो ॥ जो कबु  
 करै सो अबही करलै, पुनपरहो जिम सोरो ॥ स० २ ॥ तन धन  
 आदि सकल सामग्री, गरज २ घनघोरो ॥ रूपचंद त्रसनाको बांध्यो,  
 जानवूज नयो नोरो ॥ स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मत कर मा  
 न गुमान, योवन धन ठगहे ॥ म० ॥ बेलूकी नीत नसको मोती,  
 कोइ घनी कोइ पलहे ॥ यो० म० १ ॥ नदियां गहरी नाव पुरा  
 णी, तारणहारा जिनहे ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, आखर जंगल  
 घर हे ॥ यो० म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ निसदिन जोउं थारी वाटनी, घर आवोनी  
 ढोला ॥ नि० ॥ मुऊ सरिखा तुऊ लाख है, मेरे तूही अमोला  
 ॥ नि० १ ॥ जौहरी मोल करै लालनका, मेरा लाल अमोला ॥  
 जिसके पटंतर को नही, उसका क्या मोला नि० २ ॥ कोन सुणे  
 किसपें कहूं, किसपें मांडू खोला ॥ तेरे मुख दीवै टलै, मेरे मनका  
 जोला ॥ नि० ३ ॥ भित्त विवेक कहै हितकर तुं, सुमतासु न बो

ला ॥ आणंदधन प्रभु आवसी, सेजनी रंगरोला ॥ नि० ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ राग जैवन्ती ॥ आज तो हमारे ज्ञांग, वीरप्रभु आए  
हैं ॥ आ० ॥ चंदना खनी डुवार, चित्तें करे विचार ॥ देखतं दी  
वार हीया, हरख जराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली,  
अली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रभु पात्र पाए हे ॥  
आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म जेरो ॥ सुकृत बहु  
तेरो, जगवान दिल जाए हे ॥ आ० ३ ॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत  
सरदचंद ॥ कहै जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

॥ राग परज ॥ वावरो रे आज मनवो मारो ॥ वा० ॥  
आप रंगीला वाकी रंगीली, नर रंगीलो वाको सांवरो रे ॥ आ०  
१ ॥ आपन आवै वारी न लिख जेजै, प्रीत करणकूं उतांवरो रे ॥  
आ० २ ॥ आनंदधन पिया निज घर आवै, मिट गयो मोहसंतावरो  
रे ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ रूपन विहारी, आंरी तो ठवि न्यारी हो  
॥ रू० ॥ प्रथम तीर्थकरप्रथम जिनेसर, प्रथम यती व्रतधारी हो ॥  
रू० १ ॥ धनुष पांचसैं मान मनोहर, काया कंवन बानी हो  
॥ रू० २ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंदन, वा पर जिया कुरवानी  
हो ॥ रू० ३ ॥ जुगलाधरम निवारण स्वामी, प्रभु गो पर ऊपगारी  
हो ॥ रू० ४ ॥ केवल पाय प्रभु सुगति सिधाए, आवागमन निवारी  
हो ॥ रू० ५ ॥ आनंदधन प्रभु एती वीनती, तुम पर जातं बलि  
हारी हो ॥ रू० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सुण मन होनहार  
न टैरे रे, सु० ॥ चित कहु नर विचारत है नर, नरही नर बने  
रे ॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचै, चिनिया केसैं बचे रे ॥  
सु० २ ॥ होणहार वश मस्यो हे पारधी, सर सींचाण मरे रे ॥ सु०  
३ ॥ होत पदारथ जावी जइया, क्युं जग चाह धरै रे ॥ सु० ४

॥ नृदय करम गत देख जगतकी, जिनवर क्युं न ज्ञै रे ॥ सु० ५ इति पदं ॥ पुनः ॥ सहियो री मिल चालो प्रभु पूजन काज, स० ॥ समवसरण विच आप विराजै, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १ श्रेणक झूप चैलणाराणी, जक्ति करत हे आज ॥ स० २ ॥ निज श्रु द्रव्य लिये पुर के जन, नमंगर शुभ साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु दीन दयाल जगतके, हितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ या जिनजीके दरस सरसतै, डखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सद गुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० २ ॥ जब शमें तोकूं सुखदाई, आनंद वंठित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चलो देखो री मधुवनको राव, च० ॥ वामानंदन पाश जिनेसर, सिर पर रे वाके चमर धुराय ॥ च० १ ॥ तारण सरण जिनेसर लखके, जेटै सहु जवि चित सुख पाय ॥ च० २ ॥ गंगा दरस ऊमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राखूं रे हमारा घटमें, जिनराज नाम तेरा, हो राखूं रे ह० ॥ जाके प्रजाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा, ज्ञागा जया नजेरा ॥ हो रा० १ ॥ सूरत तेरी रागै, पेख्या विज्ञाव त्यागै, अध्यात्मरूप जागै ॥ हो० २ ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, रुपजे सजू तिहारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो० ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही, हम हे अनाथ गुनही, करियै सनाथ हमही ॥ हो० ४ ॥ प्र भुजी तिहारी साखै, जिनहर्ष सूरि ज्ञाखै, दिल मांज याही राखै ॥ हो० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग तुमरी जंगलो ॥ तेरे दरसको चाह लग्यो, सखी ह्यामवरण दिखलाजा रे ॥ ते० ॥ वनमें जाय प्रभु दीक्षा लीनी, हमकूं लार लगाजा रे ॥ ते० १ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर,

अब कैसे विसराजा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजै कहे धनर राजुल,  
 प्रभु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः धारे  
 मुखमारी दो वारी राज, प्यारी ठवी वरणी न जाय ॥ धा० ॥  
 शील सुगट सोदै सिर टीको, काने धारे कुंमल सोहाय ॥ धा०  
 १ ॥ मोहनगारी सूरत धारी, देखया म्हारो मनमो लोजाय ॥ धा०  
 २ ॥ उरजत नेण जए दोउं निरखत, धांसु प्रभु प्रीतनी लगाय ॥  
 धा० ३ ॥ जव२ पाशजिनंदजी की सेवा, एसी म्हारे दिलमेमें  
 चाव ॥ धा० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रभु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय  
 ॥ धा० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफ़ी काननो ॥ एसी विध तेने पाइ रे, कठु कर-  
 नी करजा ॥ ए० ॥ उत्तम नरजव जैनधर्म रुचि, सुगुरु सेवा सु-  
 खदाई रे, जसु पातिक ऊरजा ॥ ए० १ ॥ हिंसा जूआ जूव पर  
 तिरिया, परियह मद फल चोरी रे, घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥  
 जप जप शंजम शील दान कर, आनंद सुमति सुहाई रे, जवजल  
 निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ इति पदं ॥

रागकालिंगनो ॥ मोहि अपणो कर जाणो, प्रभुजी  
 मो० ॥ में मतिहीण महा हठवादी, सो तुमते नहि ठानो ॥ राग  
 द्वेष अरु मोह महा मद, वाध्यो खोट खजानो ॥ प्र० मो० १ ॥  
 एरिपु कर्म परुयो मुऊ केने, किस विध वूटै पानो ॥ कुमति क-  
 दायह मांहि अलूयो, ज्युं मदपान वयानो ॥ प्र० मो० २ ॥ हुं  
 जववाशी तूं सिववासी, जाने सकल जहानो, विरुद लाखीसो  
 साम संजारो, तो हिव किम चित ताणो ॥ प्र० मो० ३ ॥ जक्ति  
 सदाई शिवसुख दाता, संजवनाथ कहाणो ॥ श्रीजिनसौजाग्य  
 सूरिने निज वर, दीजै सुख प्रधानो ॥ प्र० मो० ४ ॥ इति पदं ॥

रागजैरवी ॥ वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सखा



मेहरवान जई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवै बोधा पठावै, तेरी  
सूरत कुरवान जई रे ॥ वी० १ ॥ साशरणावक एही अरज दे,  
दीजै दरस वनी वैर जई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासकी पूरण  
कीजै, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विज्ञास ॥ जोर जयो अब जाग वावरे, जो० ॥ कोउ  
पुन्य तें नरजव पायो, क्यूं सूतो अब पाय दावरे ॥ जो० १ ॥ धन  
वनिता सुत तात प्रातकों, मोह मगन ए विकल जाव रे ॥ जो०  
२ ॥ कोइ न तेरो तूं नही का को, इह संजोग अनाद सुजाव रे ॥  
जो० ३ ॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें बहु पुन्य प्रजावरे  
॥ जो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यूं नूबै अब पाय नाव  
रे ॥ जो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खट्वा ॥ जाग रे सब रैन विहाणी, जा० ॥ उदयो उदयाच-  
ल रविमंजल, पुन्यकाल क्यूं सोबे प्राणी ॥ जा० १ ॥ कमलखंर  
वनर विकसानी, अजुअ न तेरी दृग उधराणी ॥ जा० २ ॥ चेत-  
न धर्म अनादि तुमारो, जरु संगतसें सुध विसराणी ॥ जा० ३ ॥  
तुम कुल दोय अवस्था पड़्ये, नीद सुपन ए जरु नीसाणी ॥ जा० ४  
आतम रूप संजार आपणो, कब तुमरे घर कुमति धराणी ॥ जा०  
५ ॥ सुध बुध जूली निरुपम रूपकी, तातें घट वध होत कहाणी  
॥ जा० ६ ॥ निश्चे ग्यान स्वरूप तुमारो, ग्यानसार पद निजर जया  
नी ॥ जा० ७ ॥ इति पदं ॥

राग वेलाजल ॥ सांवरौ सखी सखी मेरे मन जावनो,  
रूप देखाय मैरो मन ललचावणो ॥ सां० ॥ तोरणसें रथ फेर च-  
ले पिधा, ना जानुं ए काहेको रुसावनो ॥ सां० १ ॥ नव जव नेह  
निजाहो नेम तुम, याहीतें कहा वदत डुरावणो ॥ आनंद राजुल  
याकी प्रीत कपटकी, जयो पीया सुगतसखीको पावनो ॥ सां० २ इति

राग ललित ॥ आज रूपन घर आवै, देखो माई आ० ॥  
 रूप मनोहर जगदानंदन, सबहीके मन ज्ञावै ॥ दे० १ ॥ केइ सुगता  
 फल माल विसाला, केइ मणि माणक लावै ॥ दे० २ ॥ हय गय  
 रथ पायक केई कन्या, ले प्रचु वेग वधावै ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांस-  
 कुमर दानेसर, इहुरस वहिरावै ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल,  
 साधुकीरत गुण गावै ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कलप फल्यो री, हमारे माई  
 अं० ॥ रुद्रि वृद्रि सिद्धि सुख संपति दायक, श्रीशांतिनाथ मिढ्यो  
 री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे वराल  
 मिढ्यो री ॥ पूजत श्रीशांतिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदेग ट-  
 ल्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख रुपा कर साहिव, ज्युं पारे  
 वो पढ्यो री ॥ समयसुंदर कहै तुमारी रुपासें, हुंरहिसुं सुहलो री  
 ॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ जगोने मोरा आतमराम,  
 जिनमुख जोवा जइये रे, ऊ० ॥ जिनजीनो दरसण वै अति  
 दोहलो, थे किम सोहीलो जाणो रे ॥ वार२ मानवजव एहवो,  
 जुमवो मुसकल टाणो रे ॥ ऊ० १ ॥ च्यार दिवशनो चटको म-  
 टको, देखीने मत राचो रे ॥ विनसी जातां वार न लागै, कायाघ-  
 ट वै काचो रे ॥ ऊ० २ ॥ अनंत गुणें ज्ञरियो हे जिनवर, पूरव  
 पुन्ये पायो रे ॥ एहने देखी दिलमें आणंद, कर तूं सदा सवायो  
 रे ॥ ऊ० ३ ॥ हीरो हाथ अमोलख पायो, मूढपणें मत गमजो  
 रे, सहज सलूणा पाशजिणंदजीसुं, राजी हुय चित रमज्यो रे ॥  
 ऊ० ४ ॥ मन मानीता मारा चेतन, करजे सुकृत कमाई रे ॥  
 लाजऊदै जिनचंद लहीने, कर तूं सिद्ध वधाई रे ॥ ऊ० ५ ॥ इति  
 राग केदारो ॥ जज मन नाजिनंदन देव, ज० ॥ ध्यान  
 मुनिजन अरुग धारै, सुरनर करत हे सेव ॥ ज० १ ॥ चकी नू-

पति बने सुरपति, वासुदेव बलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद, शेष  
मणिधर सेव ॥ ज्ञ० १ ॥ असरण शरण हे विरुद जाको, जक्ति-  
वहल जेव ॥ राजसिंह प्रजु रुपज सिर पर, नाथ हे नितमेव  
॥ ज्ञ० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल तुमरी ॥ आवो नेम रहजावो सदन, हमको न सं  
तावो रे ॥ आ० ॥ व्याहन आये सऊके सजन, पशुवनको सुन देख  
रुदन ॥ गिरनारी चले निज ठांकी वतन, तकसीर वतावो रे ॥  
आ० १ ॥ पूनम जेसे चंद्रवदन, मनमोहन मूरत स्यामवर्ण ॥  
मेरी नीकी लगी नव जवकी लगन, मत ठेह दिखावो रे ॥ आ०  
२ ॥ संयमदूती लागी श्रवण, प्रजुकुं सिखाये नीके जमन ॥ सब  
ऊठे पेगें कोलवचन, रथ फेरी न जावो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर  
कहे प्रजुजीके चरण, राजुल मन वैराग धरण ॥ लेन दोन नेम  
जिनजीकी शरण, शिवपुर तो वतावो रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः कीरतीबाग मन प्रेम लाग, जिन सूरत प्यारी रे ॥  
की० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, सुरपति करत अहोनिशिवंदन  
॥ दरसणसें नयणानंद ठरे, गुण केसरक्यारी रे ॥ की० १ ॥ अं-  
ब कदंब मालती निरमल, चंपक बेल सघन तरु परिमल ॥ बीच  
जुवन हिय हरख धरै, पारश सुखकारी रे ॥ की० २ ॥ सांवली  
सूरत अधिक विराजै, वासुपूज्यकी महिमा ठाजै ॥ प्रजु अतिशय  
तन मकरंद जरै, पदकज बलिहारी रे ॥ की० ३ ॥ सुंदर सुजग  
दरसकूं आवै, निरखै प्रजु सहज स्वजावै ॥ जीव जन्मी मन प्रे-  
म धरै, जगपति रुद्रसारी रे ॥ की० ४ ॥ इति पदं ॥

खेमटा ताल दादरा ॥ अथम जग काम जये अगीवान  
हे ना निकला मुखसें कजी जगवान ॥ यार नही देखा समोसरणा  
किया जवदधिमें ऊदर जरणा ॥ दोन जो लेते प्रजु सरणा, दू

डुख होते जनम मरणा ॥ बैठ जववरमें लगाया नही ध्यान, राज  
शिवपुरमें हुवा अपमान, करो अब देख काल खगवान, ना नि० १  
॥ नाम जो जिनके दान देते, आहुं मद तुमसें दूर रेतें ॥ यार जो  
तिनके चरण सेते, शयी सुमताको तुमें देते ॥ रहे तप जपमें सदा जो  
सूर, वरे वो जव जव सुख जरपूर ॥ करै कपूर करम चकचूर, देखयां  
जिन नूर हुवै डुखदूर, करो जवपार सुणो महरवान ॥ ना० १ इति ॥

॥ खेमटा ॥ प्रभु तेरी सूरतिया लागे जलो, नेणांइमारी  
प्रभु तुमसें मिली ॥ प्र० ॥ अनुजव रंग मगन तेरी अखियां, खु  
ल रही सहजानंद कली ॥ ने० प्र० १ ॥ निरमल शांति पदम  
प्रभु ध्यानन, मुख देखत आफत दूर टली ॥ ने० प्र० २ ॥ अगम  
अगोचर तेरी महिमा, आप विसंजर अतुल बली ॥ ने० प्र० ३ ॥  
मुऊकूं आश दीनपति तेरी, नर न चाहुं देव ठली ॥ ने० प्र० ४ ॥  
लग रही लगन सुधारस कारण, खटक सटक अघ दूर चली ॥ कर  
मुनिजर प्रतिपाल सुखाकर, श्रीधर नृपके नंद लली ॥ ने० प्र०  
५ ॥ गंज अजीम सुवसपुर जिनवर, कुशल जनी रुद्धतार फली,  
ने० प्र० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ राग पीलु ॥ आयो सही अब जाउं कहां, शरणागतको  
शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोहू समान मिढयो नही कोई, दूंड  
फिरयो धरती सब हेरी ॥ आ० १ ॥ दोष दयाल महाप्रभुजी अ  
ब, आन जई तुमसें जट जेरी ॥ आ० २ ॥ दास कढ्याण करै  
वीनती सुण, पारसनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खांवाज ॥ घनी१ पल१ विन१ निदादिन, प्रभु  
को समरण करले रे ॥ घ० ॥ प्रभु समरण सब पाप कटत दे, अ-  
शुभ करम सब हरले रे ॥ घ० १ ॥ मनवच कायलगी चरणान नित  
ज्ञान दियेमें धरले रे ॥ घ० २ ॥ दोलतराम प्रभु गुण गावे, मन

हिर लहिर कर वगसीयै, आनंद निज गुण साथ ॥ व० आ० ३ ॥  
 धनर वेला जी आजनी, सेंमुख मिलिया ठो आप ॥ व० ॥ हूं  
 स घणी कहिवा तणी, वीतक डुस्क संताप ॥ व० आ० ४ ॥ जो  
 नही सुणसो नाथजी, तो तुम विरुद न थाय ॥ व० ॥ जगतव-  
 हल जग सहु कहै, ते निरफल किम जाय ॥ व० आ० ५ ॥ किरिया  
 जोगे जे तारवुं, तेहमां स्यो उपगार ॥ व० ॥ तो बलिहारी श्री  
 नाथजी, विन आयास उधार ॥ व० आ० ६ ॥ गुनही तारथा जी व  
 हु विधे, विबुध कहे तुम नाम ॥ व० ॥ हूं तो जी अनुचर चरणो,  
 किम नवि सारे जी काम ॥ व० आ० ७ ॥ अतिशय ज्ञानी जी इण  
 अरै, तहि कोइ लब्धि निधान ॥ व० ॥ मोहन मुझसुं मन रमें,  
 के तुम वचन प्रमाण ॥ व० आ० ८ ॥ मुऊ तन मन मंजूसमें, ज  
 तन करूं जगनाथ ॥ व० ॥ तुम गुणरतननी मूंघमी, प्रेम जनी निज  
 हाथ ॥ व० आ० ९ ॥ आस फली जात्रा करी, कंचन वरण सुवा  
 स ॥ व० ॥ सरवर बीच सुहामणो, जुवन रमण केलास ॥ व०  
 आ० १० ॥ पावापुर जगणीशमें, अरुतालीश उदार ॥ व० ॥ का  
 र्तिक दिन निरवाणनो, कुशल निधि रुदिसार ॥ व० आ० ११ इति ॥

॥ अथ चंपापुरी स्तवनं ॥

( नैणा सफल जयें, प्रभु दरसन पायो आज ॥ ए चालमें )

निरख हिया हरख जरे, प्रभु वासपूज्य महाराज ॥ नि० ॥ अजि  
 लाषा दरशाणतणी रे, परम पदारथ काज ॥ कारण कारज नीपजै  
 रे, आप गरीबनिवाज ॥ नि० १ ॥ मेरु महीतल तोलवा रे, सम  
 रथ को नलि हाव ॥ अतुल गुणाकर उपमा रे, जक्त सुधारण का  
 ज ॥ नि० २ ॥ डुखजंजन दाता सुणयो रे, जस कीरत मुख संत।  
 अंतर राख्यां नवि बनेरे, तार२ जगवंत ॥ नि० ३ ॥ कल्पवृक्ष  
 पुन्ये लह्यो रे, वंगित पूरण नाथ ॥ ज्ञान्योदय अब माहरो रे, शि

वपुर दायक साध्र ॥ नि० ४ ॥ कमल नयण रतना जम्बी रे, अनु  
 जव आतम तेज ॥ दीजै निजपद दासकूं रे, पलक न कीजै जेल  
 ॥ नि० ५ ॥ जगणिले अमृतालमें रे, कार्तिक सुदि निधि सार ॥  
 चंपापुर अधिपति मिट्यो रे, सकल संघ जयकार ॥ नि० ६ ॥  
 कुशल निधान विबुधतणो रे, कली अली जिम लीन ॥ रुद्रसार जिन  
 ध्यानमें रे, अंतरंग गुण चिन ॥ नि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ गोडी पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ राग केरवो ॥ मैं मुख देख्यो गोम्बी पारसको, मेरो ज  
 नम सफल ज्यो आज ॥ में० ॥ अन्य देवकूं इहुत मैं ध्यायो, तो  
 य न सरयोजी मेरो काज ॥ आजरे में० १ ॥ जवश् जटकत शरणे  
 हुं आदो, अवतो रखोजी मेरी लाज ॥ आजरे में० २ ॥ कमठ हरा  
 वण नागकूं तारण, संजलाव्यो नवकार ॥ आजरे में० ३ ॥ रूप  
 चंद कहै नाथ निरंजन, तारण तरण जिहाज ॥ आजरे में० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ किरपा करो रे गोम्बी पाश जिनेसर, तुम  
 स्वामी अंतरजामी ॥ कि० ॥ उंचे२ गढ पर पाश विराजै, चारो तरफ  
 ज्ञानी ध्यानी ॥ कि० ॥ नीलवरण तेरा अंग विराजै, वदनोंकी जांठ  
 बलिहारो ॥ कि० २ ॥ बाँहे वाजुबंध वेरखा विराजै, कुंमलकी ठवि  
 हे न्यारी ॥ कि० ३ ॥ टुंढतश् में प्रभु पायो, पूरण पदवी अब पाई ॥  
 कि० ४ ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ कि० इति ॥

मुजरा साहिव मुजरा साहिव, साहिव मुजरा मेरा रे ॥  
 मु० ॥ साहिव सुविध जिनेसर स्वामी, चरण पखालूं तेरा रे ॥  
 मु० १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगे, फूल चढांठं सेहरा रे ॥ घंट  
 वजांठं अंगर उखेवुं, करुं प्रदक्षणा फेरा रे ॥ मु० २ ॥ पंचशब्द  
 वाजित्र वजांठं । नृत्य करुं अधिकेरा रे ॥ रूपचंद गुण गावत  
 हरखित, दास निरंजन तेरा रे ॥ मु० ३ ॥ इति पदं ॥

पुरुष कोण नारी ॥ अ० ॥ ब्रह्मनके घर नाती धोती, जोगीके  
 घर चेली ॥ कलमा पढ़े जई रे तुरकनी, आपही आप इकेली ॥  
 अ० १ ॥ सुसरो हमारो बालोजोवो, सासू बालकुंवारी ॥ पिऊजी  
 हमारो पोढे पालणे, मेंहुं जुलावनहारो ॥ अ० २ ॥ नहि हुं पर  
 णी नही हूं कुंवारी, पूत्र जणावणहारो ॥ कालीदाढीको में कोइ  
 नही गोमयो, अजुए हूं बालकुंवारी ॥ अ० ३ ॥ अढीद्वीपमें खाट  
 खुटली, गगन नुसीकूं तलाई ॥ धरतीको ठेगो आजकी पिगोनी,  
 तोय न सोम जराणी ॥ अ० ४ ॥ गगनमंजुलमे गाय विद्याणी,  
 वसुधा दूध जमाई ॥ सऊरे सुणो ज्ञाई विलोवणा विलोवै, कोइ-  
 यक अमृत पाई ॥ अ० ५ ॥ नाहीं जाउं सासरीये नहि जाउं  
 पीहरियै, पीयुजीकी सेज विठाई ॥ आनंदधन कहै सुणो ज्ञाई सा-  
 धो, ज्योतसें ज्योत मिलाई रे ॥ अ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हं-  
 सा तूं मानसरोवर वासी, वामे जूतो रंग विलासी रे ॥ हं० ॥  
 नीर अगाध जस्यो थौं करदम, पसरौ बेल जरासी ॥ आंकी वांकी  
 कबहू न सीधो, सब जगकी हे मासी रे ॥ हं० १ ॥ आयो चं-  
 माल जूपके घरमें, रतन गयो ले नासी ॥ नृप पठतावै पर आंग-  
 णमें, जटके गया डुर काशी रे ॥ हं० २ ॥ हाथी जूगो फैल म-  
 चावै, जगो माहावत जासी, डुनियां चढे नीचै गिरती, परतै  
 ही मालै फासी रे ॥ हं० ३ ॥ बाप आप बेटाके प्यारी, परणावै  
 इक दासी ॥ रुद्धसार इनकूं जब देखै, तबही प्यासी रे ॥ हं० ४ ॥  
 ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ बेर बेर नहीं आवै, अवसर बेर नही  
 आवै ॥ ज्युं जाणे त्युं करले जलाई, जनम सुख पावै ॥ अ० १  
 ॥ तन धन जोवन सबही जूगो, प्राण पदकमें जावै ॥ अ०  
 २ ॥ तन ठूटे धन कोण कामको, काहेकूं कृपण कहावै ॥ अ० ३ ॥  
 जाके दिलमें साच वसत हे, नाकूं जूठ न जावै ॥ अ० ४ ॥

आनंदघन प्रभु चलत पंघमे, समर समर गुण गावे ॥ अ० ५ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ ये जिनजी के पाये लाग रे, तोने कहिये केतो  
 ॥ ये० ॥ आठोइ जाम फिरै मदमातो, मोह निंदरियासुं जाग रो ॥  
 तोने० ये० १ ॥ प्रभुजी प्रीतम विन कोइ नही प्रीतम, प्रभुजीनी  
 पूजा घणी माग रे ॥ तो० ये० २ ॥ जवका फेरा वारी करो जि  
 नचंदा, आनंदघन पाये लाग रे ॥ तो० ये० ३ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो, एती शीख हमारी प्यारे  
 चित्तमें धरो ॥ श्रीरामासा जीवन काज अरे नर, काहेकूं ठल परपंच  
 करौ ॥ एती० १ ॥ कूरु कपट पर द्रोह करो तुम, अरे नर परजव  
 धी न ररो ॥ एती० २ ॥ चिदानंद जो ए नही मानो तो, जनम  
 भरणके दुःखमें परो ॥ एती० ३ ॥ इति पदं ॥ अबधू निर  
 पक विरजा कोई, देख्या जग सब जोई ॥ अ० ॥ समरस जाव जला  
 चित्त जाके, थाप उत्थाप न होइ ॥ अविनाशीके घरकी वा  
 नां, जाणेगे नर सोइ ॥ अ० १ ॥ राव रंकमें जेद न जाणे, कन  
 क उपल सम लेखे, नारी नागणको नहि परिचय, तो शिवमंदिर  
 देखे ॥ अ० २ ॥ निंदा स्तुति श्रवणे सुणने, हर्ष शोक नवि आणे  
 ॥ ते जगमे जोगीतर पूरा, नित चढते गुणठाणे ॥ अ० ३ ॥ चंड  
 समान सौम्यता जाकी, सायर जेम गंजीरा ॥ अप्रमत्त जारंग परे  
 नित्या, सुरगिरि सम शुचि धीरा ॥ अ० ४ ॥ पंकज नाम धराय प्र  
 कसुं, रहत कमल जिम न्यारा, चिदानंद एसा जन उत्तम, तो  
 साइवका प्यारा ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

राग प्रजाती ॥ चलणा जरूर जाकूं ताकूं केसा सोचणा ॥  
 च० ॥ जया जव प्रातकाल, माता धवरावे धाल ॥ जगजन करत,  
 सकल मुख धोवणा ॥ च० १ ॥ सुरजीके बंध ठुटै, धूयन जये  
 अपूठे ॥ ग्वालवाल मिलके, विलोवत विलोवणा ॥ च० २ ॥ तज



परमाद जाग, तूं ज्ञी तेरे काज लाग ॥ चिदानंद साध पाय, वृथा  
नही खोवणा ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥

कैरवा राग ॥ समऊ परी, मोहे समऊ परी, जगमाया अब जुठी  
॥ मोहे समऊ ० ॥ काल२ तूं क्या करे मूरख, नही जरोसा पल  
एक घरी ॥ ज० स० १ ॥ गाफिल ठिनजर नांही रहो तुम, शिर पर घूमें  
तेर काल अरी ॥ ज० स० २ ॥ चिदानंद ए वात हमारी प्यारे, जाणो  
तुम चित मांहे खरी ॥ ज० स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
जलांजी मेरो नेम चलयो गिरनार, इकेली जानसैं मेरो ने० ॥ रा  
जुल ज्ञी अरज करे बै, जलांजी मेरी अरज सुणो महाराज ॥  
इके० १ ॥ तोरण आय चले रथ फेरी, जलांजी वांतो पशुवनकी  
सुणी बै पुकार ॥ इ० २ ॥ सहसावनकी कूंजगलनमें, जलांजी  
वांतो महाव्रत धार ॥ इ० ३ ॥ हरखचंद प्रभु राजुल विनवै, ज  
लांजी मेरो होजो मुक्तिमें वास ॥ इ० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः  
रसना सफल जई, मेंतो गुण गाये महाराज ॥ रसना० ॥ पर  
आनंद प्रगट ज्यो मेरो, जब देखे जिनराज ॥ र० १ ॥ अति उ  
ज्वल जस सुण जिनजीको, संच्यो सुकृत समाज ॥ र० २ ॥ ना  
क नमन करतां प्रभुजीकूं, सारथा आतमकाज ॥ र० ३ ॥ पदपं  
कज प्रभुके फरसतही, दूर गई डुख दाऊ ॥ कहत क्कमाकळ्याण  
सुपाठक, अब मोहि अविचल राज ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग गजल ॥ राजुल पुकारे नेम पिया, एसी क्या करी  
॥ मुजें ठोमके चले हो चूक, हमसैं क्या परी ॥ रा० १ ॥ हुई  
आशकी निराश, उदाशीनता घनी ॥ प्यारा वश नही हमारा, प्री  
तम पीरमें पनी ॥ रा० २ ॥ हमसैं रह्यो न जाय, प्रीतम तुम  
विना घनी, संयम लीजियें दयाल, दयाधर्म आदरी रा० ३ ॥ नि  
शदिन तुमारा नाम, देते ज्ञानकी ऊरी ॥ मुनि चंद विजय चरण

कमल, चित्तमें धरी ॥ रा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ कोन किसीको मित्त, जगतमें कोन कि  
सीको मित्त ॥ ज० ॥ मात तात नुर जात सजनसें, कांइ रहत  
निचितं ॥ ज० १ ॥ सवही अपणे स्वारथके है, परमारथ नहि  
प्रीत ॥ स्वारथ विणसे सगो न होसी, मित्ता मनमें चित ॥ ज०  
२ ॥ ऊठ चलेगो आप इकेलो, तुंहीसुं सुविदीत ॥ ज० ॥ को नहीं  
तेरो तूं नही किसको, एह अनादी रीत ॥ ज० ३ ॥ ताते एक ज  
गवान जजनकी, राखो मनमें नीत ॥ ज० ॥ ग्यानसार कहै एह  
धन्याश्री, गायो आतमगीत ॥ ज० ४ ॥ इति पदं ॥

आदी-  
सर जिनराज, त्रिचुवनके महाराज, आज हो आयो रे, में शरणों  
प्रचुजी तुम तखे जी ॥ १ ॥ उल्लस्यो ज्ञान अंकूर, प्रगट्यो पुण्य  
पहूर ॥ आज हो जागी रे, मुज मनमें तुम सेवना जी ॥ २ ॥  
लगन लगी भरपूर, दोष गये सब दूर ॥ आज हो ठोसूं रे, नहीं  
तुम पद सेवा सुखकरु जी ॥ ३ ॥ नागिराय कुलचंद, मरुदेवीके  
नंद ॥ आज हो राखो रे, प्रचु मुजकूं निज चरणे सदा जी ॥ ४ ॥  
अमृत धर्म सुजाण ॥ शीश कृमाकड्याण ॥ आज हो रागे रे,  
प्रचु आगे आ विनती करे जी ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग केदारो ॥ गोनीगाइयैमन रंग, गो० ॥ एक ध्याने  
एक ताने, कर केदारो संग ॥ गो० १ ॥ जात्र कीजै अमृत पीजै,  
नीर वहेरी गंग ॥ रोग शोग कलेश नासै, आलस नावै अंग ॥ गो०  
२ ॥ पोढतां प्रचु नाम लीजै, आणी मन उवरंग ॥ अन्नय तेहने  
अंध मांदै, कदिय न होवे चित्त जंग ॥ गो० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ हारे हूं तो मोह्यो रे बाल, जिन मुखमानें मटकै ॥ न  
यण रसाला ने वयण सुखाला, चित्तहुं लीधुं चटकै ॥ प्रचुजी केरी  
भक्ति करंता, करमत्तणी कस तटकै ॥ हां० हूं० १ ॥ मुज मन

लोत्ती जमरतणी पर, जिनगुण कमले अटके ॥ रत्नचिंतामणि मं  
की राचै, कहां कुण काचतणे कटके ॥ हारे हूं० १ ॥ ए जिन गुण  
तां क्रोधादिक सहु, आसपासथी दटके ॥ केवलनाणी वह सुख  
दाणी ॥ कुमति कुगतिने पटके ॥ हारे हूं० ३ ॥ ए जिनने जे  
दिलमां न आणे, ते तो जूला जटके ॥ जाव जक्तिसुं उलग करतां  
बंधित सुखमे सटके ॥ हारे हूं० ४ ॥ मूरत संजव जिनेश्वर केरी,  
जोतां हियमुं हटके, निव्यलान्न कहै प्रभु ए मोटो, गुण गांठ हूं  
लटके ॥ हारे हूं० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी ॥ प्रभुजीसे लागो मेरो नेह सखीरी, अब कैसे  
कर बूटे री ॥ प्र० ॥ धिगर जगमें बाको जीयो, अपना प्रभुजीसे  
रुसे री ॥ प्र० १ ॥ जो कोई प्रभुजीसे नेह करेगो, शिवपुरना सु-  
ख लहस्ये री ॥ प्र० २ ॥ सेवाराम प्रभु गांठ रेसमकी, लगी प्रीत  
नही तूटे री ॥ प्र० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ खतरा डर  
करना, ड० ॥ एक ध्यान प्रभुका धरणा, खतरा दूर करना० दू० ॥ जब  
लग पांचो निर्मल करणा, तब लग जिन अणुसरणा ॥ खतरा० ॥  
१ ॥ क्रोध मान माया परिहरना, सुमति गुपति चित्त धरना ॥  
खत० २ ॥ संवर जाव सदा मन धरना, आत्म डुगति हरना ॥  
ख० ३ ॥ धण कण कंचनकुं क्या करणा, आखिर इक दिन मर-  
णा ॥ खत० ४ ॥ ज्ञानउद्योत प्रभु पाये परना, शिवसुंदरी सुख  
वरना ॥ खत० ५ ॥ इति पदं ॥

राग रामग्री ॥ रे जीव जिनधर्म कीजीये, धर्मना चार प्र  
कार ॥ दान शील तप जावना, जगमे ए तंत सार ॥ रे० १ ॥  
वरस दिवसने पारणे, आदीशर सुखकार ॥ इहुरस दान वहरावि-  
यो, श्रीश्रेयांस कुमार ॥ रे० २ ॥ चंपा वार नयामिया, चलणी  
कादयो नीर ॥ शतीय सुत्तज्ञ जस श्रयो, शीवे सुरगिर धीर ॥

रे० ३ ॥ तप कर काया सोपवी, अस्त निस्त आहार ॥ वीरजि-  
 नंद वखाणियो, धन धनो अणगार ॥ रे० ४ ॥ अनित्य ज्ञावना  
 ज्ञावतो, धरतो निरमल ध्यान ॥ जरत आरीता ज्ञुवनमें, पांम्यो  
 केवलज्ञान ॥ रे० ५ ॥ ए जिनधर्म सुरतरु शमो, जेदनी शीतल  
 गंध ॥ समयसुंदर कहे सेवतां, सुगतिवणा फल त्यांह ॥ रे० ॥  
 ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सो० १ ॥ सारी रैन गमाई, वैरन  
 निद्रा तूं कहांसे आई ॥ सो० ॥ निद्रा कहे मॅतो वाली रे जोली,  
 वनेर सुनिजनकूं नाखूं रे टोली ॥ सो० १ ॥ निद्रा कहे मॅतो ज  
 नमकी दासी, एकं हाथमें मूंकी डसरे हाथमें फासी ॥ सो० २ ॥  
 समयसुंदर कहे सुनो ज्ञाई वनिया, आप रूबै सारी रूब गई डनि  
 या ॥ सो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चंदाप्रजुजीसें ध्यान रे,  
 मोरी लागी लगनवा ॥ चं० ॥ लागी लगनवा गोमी नहि वटै,  
 जब लग घटमें प्राण रे ॥ मो० १ ॥ दान शीयल तप ज्ञावना  
 ज्ञावो, जैनधर्म प्रतिपाल रे ॥ मो० २ ॥ द्वाथ जोरुके अरज कर  
 त है, वंदत सेठ खुस्याल रे ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः  
 ते शिवपुर गये रहै रे, वारी सकल करमं दल स्वयकर ॥ शि०  
 ॥ अविनाशी अधिकार विराजित, परनातम शिवधाम रे ॥ समा-  
 धान सरवंग सरूपी, मेरे मन वसेर रे ॥ शि० १ ॥ शुद्ध बुद्ध  
 अविरुद्ध हे, वहे अनादि अनंत रे ॥ वीरप्रजुके आगे गौतम, अमृ-  
 त पद लहे लहे रे ॥ वा० शि० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः  
 गरवाकी चाल ॥ म्हारे जले रे जगो वैद्यानो आजनो रे, मॅतो  
 सुखमो दीगो जिनराजनो रे ॥ म्हारे ज० ॥ म्हारे सुत सिद्धारथ  
 महाराजनो रे ॥ जिन लंठन सोहे मृगराजनो रे ॥ म्हा० १ ॥  
 म्हाने पागी मिढ्यो शिवपाजनो रे, मोने साधन मिढ्यो शुज  
 काजनो रे ॥ म्हा० २ ॥ मारे कल्पवृक्ष फड्यो काजनो रे, म्हारो

महीयल वाध्यों मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलाज सूरिंद  
 महाराजनो रे, फल्यो वंठित अनुपम राजनो रे ॥ म्हा० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ ते दिवाली म्हारे आजनीरे, मेंतो बवि  
 निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पहरी अंगी अलोकिक जातनी  
 रे, मांहे बूटी दीसे ज्ञांतनी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगट-  
 मा जम्या बहु रे, काने कुंफलनी शोजा शी कहुं रे ॥ धन०२ ॥  
 मुने किरपा करी ते कहुं कसी रे, मारे वाहले मुऊ सामो जोयुं  
 हसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रभु शांति जिनंद हृदये वर्या रे, अई सूर  
 शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

धन२ आजूनो दिन रलियामणो रे, सूरज सोनानो ऊग्यो सो-  
 हामणो रे ॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रभुने चरणे नम्यो रे, जिनराज  
 ते म्हारे मन गम्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवग्रह समा अथा म्हारे आ  
 जथी रे, वली दशा ते श्री जिनराजथी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोतां  
 ते डुख सरबे गयुं रे, वालानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्युं रे ॥ ध० ३ ॥  
 आपी सेवा ते शुद्ध मनथी खरी रे, सूरशशी ऊपेर करुणा करी  
 रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे आज आनंद वधाम  
 णा रे, हुंतो लेउं रे वाहलाजीना जामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुंने दास  
 पोतानो जाणियो रे, आथरुता ठेकारो आणियो रे ॥ म्हारे० १ ॥  
 आप्युं दरशन ते डुर्लभ देवने रे ॥ मुंने कीधुं तुं रहजे मारी सेव  
 में रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो जरोसो साचा गुरू रे, प्रभु  
 विना जगत मिथ्या सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा म  
 नमां रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गम्या रे ॥ म्हा० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ सवालाख टकानी जाये एक धनी, स० ॥  
 ए संसार जेसा सांजिला, धरुपण आया घोने चढी ॥ मांगी तूंगीने  
 वत्र धरायो, केहनो कंदोरो केहनी कनी ॥ स० १ ॥ साधो जार्द

जिनने संजारो, जन्मदशा जिम आवी चढी ॥ कहे लींवे ज्ञज  
 तूं जगवंतने, मोक्ष जवानी यह वात खरी । स० २ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ आबोशनी प्यारा नेम अम घर आवो रे, तुम जगत  
 बडल जगवंत नाथ स्ये नावो रे ॥ प्रजु केहवी अइ तकसीर कही  
 ने सुणावो रे, इम विन गुनेहे दीनानाथ मूंकी न जावो रे ॥ आ०  
 १ ॥ सखी हलधर गिरधर वीर चतुर कहावो रे, मारो रूठो ठवी  
 सो कंत कोइ तो मनावो रे ॥ आ० २ ॥ केतो मोती चुगता इंस  
 के लंघन राचे रे, सपी आंवातणी जे रुहारु, आंवलिये न माचे रे,  
 आ० ३ ॥ हूं तो मोही तुज दीदार नहीं तुज जोमे रे, इण जग  
 में जोतां कंत कहूं वूं थोमे रे ॥ आ० ४ ॥ जगमें ठीलरिया मिं  
 त ते प्रीत निकामी रे, जे रेसम रंगे गांठ ते मांहे न खामी रे ॥  
 आ० ५ ॥ बीजा जादव केइ लाल मनमें न जावे रे, जो माहरो  
 साजन होय तो नेम मिलावे रे ॥ आ० ६ ॥ इम करतां बांधीप्रीत  
 राजुल साची रे, जे नेहनो नावै ठेह इक चित राची रे ॥ आ० ७  
 ॥ इम रुद्धसारनी बाण चित्तमें धरजो रे, प्रजु नेम राजुल सी प्री  
 त मुगति पद वरज्यो रे ॥ आ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारु ॥ ऊजो जमुनाके तीर ॥ ए चाल ॥ मनमो  
 हन पारस प्यारा रे, चित चाहे रे दीदार ॥ तन मन हंदा वागमें  
 रे, नैण अनोपम फूल ॥ चंचल चित पल ठिन घनी रे,  
 मत मन प्रजुकूं जूल रे, चि० म० १ ॥ स्पाम घटा तन शोभता  
 रे, दमक दामनी रंग ॥ जुगवाला इक तूं धणी रे, लागी लगन  
 अजंग रे ॥ चि० २ ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी रे, पुरुपोत्तम  
 जयदेव ॥ वेपरवाही वालमा रे, सारुं तुमारी सेवरे ॥ चि० ३ ॥  
 श्रीफलवधीपुर तिलक ज्युं रे ॥ आप विराजो नाथ ॥ निगुण दा  
 स पर साहिबा रे ॥ हित कर दीजै हाथ रे ॥ चि० ४ ॥ श्रीजि

नचंड शुद्धातमा रे, नंद योग मधुमाश ॥ निधि ईडु शित सप्तमी रे,  
 रुद्धिसार सुख रास रे ॥ चि० ५ ॥ इति पदं ॥ मेरे मन जाव  
 नकी, ठवि नीकी जी ॥ मेरे० ॥ चरण कमल चित हितकर चाहुं,  
 लागी लगन गुण गावणकी ॥ ठ० १ ॥ सांमली सूरत लटक चटक  
 पर, वरसे घटा जैसे सावणकी ॥ ठ० २ ॥ बालपणे प्रभु हम संम  
 खैले, अब तो नइ विसरावणकी ॥ ठ० ३ ॥ याद करो जिन पू  
 रव प्रीती, वखत वनी हे दिल लावणकी ॥ ठ० ४ ॥ मोहे जरो  
 सो हे बहुतेरो, आप कहो ललचावनकी ॥ ठ० ५ ॥ सहजानंदी  
 एक लहरमें, दीजै सुख दुख जावनकी ॥ ठ० ६ ॥ पारस जेट रहे  
 जो लोहा, होवै लोक हस्तावणकी ॥ ठ० ७ ॥ राम निवास आश  
 प्रभुजैसे, रुद्धिसार पद पावनकी ॥ ठ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेम जिनंदजीसें आंखमली ॥ ए चाल ॥ साहिव सुगुण  
 सुपारससें, मेरी अजब अनोपम प्रीत नइ रे ॥ सा० ॥ जिन मुख  
 चंड चंद्रिका निरमल, चंचल नैण चकोरमई रे ॥ सा० १ ॥ डुर न  
 कीजै निज चरणसें, सुरतरुकी बांह गही रे ॥ सा० ॥ दिवजर  
 प्रभुसें अरस परस अब, वतिया दुखकी आण कही रे ॥ सा० २ ॥  
 विक्रमधारी जग उपगारी, मेरी सूध क्युं विसार दई रे ॥ सा० ३ ॥  
 ॥ शांति सुधारश नाथ दयानिध, रुद्धिसार लय लाग रही रे ॥  
 सा० ४ ॥ इति पदं ॥

कृपानिध वीनती अवधारो ॥ ए चाल ॥ सांवरिया पास  
 जी सुख दीजै, प्रभु अरजी दिलजर लीजै ॥ सा० ॥ मनमोहन  
 मूरति थारी, आतम अनुभव उपगारी, सुध लीज्यो नाथ हमारी ॥  
 सा० १ ॥ करुणारस अमृत कूंपी, लखवीन सुधानंद रूपी ॥ तन मन  
 पद पंकज सूंपी ॥ सा० २ ॥ जब पारस नाम उचारयो, रघुपति  
 को कारज सारयो, प्रभु धरणीधर निसतारयो ॥ सा० ३ ॥ शिव-

शंकरं रमणविहारी, प्रभु महिमा अगणित धारी, श्रीपतिकी चिंता  
 धारी ॥ सां० ४ ॥ कुंगर सिंघ विक्रमराजा, उपदेश सुमति दिये  
 साजा, जिनजुवन करावण काजा ॥ सां० ५ ॥ शिववामी सुंदर ठां  
 जै, जिनमंदिर शरत विराजै, हरिहर मंदिर विच गाजै, सां० ६  
 ॥ नरनारी दरशन आवै, शुभ पूजन युगति रचावै, प्रभुजीसँ प्रे  
 म लय लावै ॥ सां० ७ ॥ अजिनव श्रीनवल जिनंदा, जंगजीवन  
 वामानंदा, प्रभु दीज्यो परम आनंदा ॥ सां० ८ ॥ उगणीसे उग  
 णपचासे, सुवि पांचम यतन विलासै, प्रभु माधव माश हुलासै  
 ॥ सां० ९ ॥ हितवखन प्रभु गुण संगी, निधि कुशलसु अमृत  
 रंगी, रुद्रसार कहे नवरंगी ॥ सां० १० ॥ इति शिववामी सुम  
 तेश्वरपार्श्वनाथ स्तवनं ॥ अथ रूपजदेव स्तवनं ॥

॥ मोहे ठेरु चला विणजरा ॥ ए चाल ॥ तुम जो रूप  
 प्रभु प्यारा, जगजीवन नाथ हमारा ॥ नहीं करु पलकजर  
 न्यारा, लग रही लगन इकतारा ॥ ज० ॥ प्रभु मोहन सुरतिवारी, कंद  
 रपदप विषयारी ॥ लयलीन योग आधारी, सुर असुर नमत नरनारी;  
 प्रभु जए जगतसँ न्यारा ॥ ज० १ ॥ केवलकमला संग लीने, पी  
 घूप सहज सुखजीने ॥ माया ठाया तज दीने, आगम गम अंतर  
 चीने, जया तीन लोक उजियारा ॥ ज० २ ॥ क्या बाह्य विभूष  
 त्यापी, अध्यात्म रटना जागी ॥ प्रभु उपादान शिवपांगी, वर  
 ध्यान धरे अनुरागी ॥ शैलेसी करणकुं धारा ॥ ज० ३ ॥ वीक्रम  
 धर नयर जिणंदा, प्रभु आनन सुरतठ कंदा ॥ तुम जगत उजागर  
 कंदा, दील रंजनमें तुम बंदा, प्रभु सुखसंपति दातारा ॥ ज० तु० ४  
 ॥ चिंतामणि कल्प समाना, जिन रूपे कुशलनिधाना ॥ रुद्रसार  
 करत गुण गाना, प्रभु कीजेआप समाना ॥ अथ जगमिग ज्योतिस  
 तारा ॥ ज० तु० ५ ॥ इति पदं ॥



॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी.

॥ अग्रमंडुंश् वाजै चोधना, सवाइ मंका साहेबका ॥ ठननंर  
अवाज होता, महेल वनाया गगनोका ॥ कड्याणपारसनाथ ना  
मका, नितर वाजै चोधना ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिव, पार्श्व  
नाथ अवतार वना ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता  
वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोन्ने, जैसा सरद पूनमचंदा ॥  
स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीस कोरु देवता  
मिलकर, ओठव करणेकुं आवै ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ  
नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चंड सूरज करता सेवा  
॥ केइ सुरनर साहेबके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरूपको  
पार न पावै, जिनका गुण हे सबसें वना ॥ ३ ॥ दूर देससें आया  
जोगी, वने जोर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, वने  
जोके खाता, बारे वरसकी उमर प्रचुकी, ओटेपनमें वहोत कला  
॥ बरोबरीके लिये सोवती, तपशीकूं देखण चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देख  
के बोले जोगीसें, एसी तपस्या कूं करता, उ जोगी तेरे वने लक  
नेमें, वना नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहता,  
तोबी जोगी नहिं सुणता, लकने दिये फेंक जंगलमें, लोक तमा  
सा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने, वना नागकूं जला  
दिया, दिया सार नवकार नागकूं, धरणीधर पदवी पाया ॥ वनी  
उमेदसें आया साहिव, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी  
आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज ओरुके चले जं  
गलमें, जुगतीसें काउसगग किया ॥ वने धीर गंजीर प्रचूने, तीन  
लोकमें नाम किया ॥ उण्णकालकी वनी धूपमें, नीरंजन निराका  
र खना, कमठासुरने किया कनाका, नजमंरुल बादल चना ॥ ७

॥ उसी दिग्गको कमगासुरने, पिठला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी  
 सेना लेकर, जलकूँ जलदीबुलवाया ॥ वना किया धनघोर जोरसें,  
 पवन चलाया मतवाला ॥ करुकर कर हुआ कमाका, चमक बी  
 जका उजवाला ॥ ७ ॥ मूसलधारा मेघ वरसता, गगन गाजता  
 चोताला ॥ सात खूटकी वनी ऊनीमें, प्रचु खमा है मतवाला ॥  
 नाक वरोवर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर वना, पराजय नहिं  
 होय जिनूँका, एसा प्रचुका ध्यान चढा ॥ ८ ॥ संकटसें सिंहासण  
 मोला, हुवा घंटका आधाजा, अवधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धान्द  
 घरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पदमावतीकूँ संग लिया,  
 पदमावतीने लिये शीस पर ॥ शेषनागने उत्र किया ॥ १० ॥  
 क्रोर ऊपाय तो किया कमठनें, कुठवी इलाज नही चलता ॥ तर  
 णेवाला साहिव उनकूँ, ठलणेवाला क्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज  
 हारके, कमठ हाथ दो जोर खमा ॥ धरणीधर साहिवके आगे, अरजी क  
 रता खमा ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपदकूँ पहुंचै, पार्श्वनाथ शुज  
 मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपे तेजका अजुवाला  
 ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल बनाया तेताला ॥ वने देवलमें  
 इंदर सोहै, घंट वाजता चोताला ॥ १२ ॥ वनी जुगतसें सिंहा  
 सण कर, कोट बनाया देवलका ॥ जगौर पर शिखर चढाया,  
 दरवाजा शुज केवलका ॥ ज्ञामंरुलके आगे शोजता, मूल गुंजा  
 रा आरसका ॥ पीठे पञ्चीस देरिया सोजित, सिरे काम सिंहा  
 सणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोहै, सहस्रफणा प्रचु पार  
 सका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, बहू काम है सारसका ॥  
 अटारसे पैसठ सवाई, मुहुर्च फागण मास जला ॥ सुदी तीजकूँ  
 तखते बैठै, जगो ५ पर नाम चला ॥ १४ ॥ देशर के संघ बहु  
 मिलकर, तेरे दर्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वनी

तेरी अकलमाया ॥ धर्मचंद जोरता सवाईने, वरु साहमी वा-  
त्सल्य किया ॥ सकल संघकी आशा लेकर, वरु शिखर निशान  
दीया ॥ १५ ॥ करमचंद ने देवचंद ने, खेमचंदने खुब किया ॥  
पारसनाथकूं तखत वैठाकर, जगोर पर नाम किया ॥ कीर्तिवि-  
जय गुरुराजकूं प्रणमूं, पाय गुरुका राज वरु ॥ गुलाबचंद सादेव  
के आगे, जिनसासनका काम वरु ॥ १६ ॥ तेजा गाता चंग रंग  
में, ग्यान ध्यानसें खरुए, हाथ जोरकै अरजी करता, पारसनाथ  
जी तूंही वरु ॥ वरु काम तेरे है साहिब, मुखसें नहि कहणे  
आता ॥ शिवरमणीकूं वरी है जिनजी, नविजनकूं सुखके  
दाता ॥ १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आखातीजकी लावणी ॥

रुषज तेरी सूरतका प्यासा, लगी मोहे दरशनकी आसा ॥  
वंश इक्काकू नन्नचंदा, नूमिपति नाजीके नंदा ॥ मात मरुदेवा  
सुखकंदा, प्रगट जये जगजन आनंदा ॥ (इहा-साखी) रेणु पूंज पर  
थापकै, गये मिथुन जल लैन ॥ आसन कंप जयो सचिपतिको,  
आयो तिलक पद दैन ॥ नाथ जये वसुधर सुखरासा ॥ ल० १ ॥  
सौखि पर कनक मुगट राजै, मालगल मोतियनकी ठाजै ॥ श्रवण  
शुग कुंमल अति साजै, निरख ठबि कोटि ज्ञानलाजै ॥ (इहा-साखी)  
हीर वीर सौजावणी, आप ताप ऊलकंत ॥ युगल अलंकृत देख  
प्रभूकूं, चरण तीर वरसंत ॥ विनीता धनदपुरी वासा ॥ ल० २ ॥  
सुनंदा सुमंगला राणी, जोगसें योग प्रीत ठानी ॥ जये शत पूत्र  
सुगुण खाणी, प्रभूने दिया राजधानी ॥ (इहा-साखी) चौसठ विद्या  
नारकी, पुरुष बहोत्तर ग्यान ॥ जग विवहार चलाया प्रभूने, प्रजा-  
पती अजिधान ॥ मुनि हुय तजै जगत फासा ॥ ल० ३ ॥ लान  
अंतराय ऊदै आया ॥ बरसदिन जोजन नहि पाया, नेटमणिकंचन

सब लाया ॥ प्रभु निरममती गतमाया ॥ ( उहा-साखी ) इस्तिना-  
 गपुर नगरमें, श्रीश्रेयांशकुमार ॥ इकुरस प्रभुकुं वहिराया, देव कर-  
 त जयकार ॥ अक्षयतृतिया जई परकासा ॥ ल० ४ ॥ करम इन  
 केवल चिदरासी, नाथ जये अविचलअविनासी ॥ शिखर केलाश  
 आप वाशी, नाम शिव ब्रह्मा विष्णु ज्ञासी ॥ ( उहा-साखी ) ॥  
 कुंदण काया सोहनी, परम धरम जिनचंद ॥ जमी  
 धनी मनमोहन मुरति, लखमी धरत आनंद ॥ फूल रही  
 मीना उजियासा ॥ ल० ५ ॥ कृश्र घनस्याम भूरति नीकी, सजल  
 घन घटा प्रभुजीकी ॥ नयण अरिविंद जमरकीकी, जक्तिरस कुं  
 ल पुर सीखी ॥ ( उहा-साखी ) ॥ उगणीशय अमृतालमें, ज्ञानपंच  
 मीरंग ॥ कूम कपटतज जेट जई जिन, सुंदर कमलासंग ॥ कुशल  
 रुक्षार चरण दासा ॥ ल० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दीवाली लावणी ॥

प्रभु वीर धीर मणि हीर दरस वहिहारी, प्रभु पावापुर  
 निर्वाण संघ सुखकारी ॥ प्रभु केवल ज्ञान प्रकाश तत्व दरसाये,  
 प्रभु चउद सदस मुनिराज संघ सुखदाये ॥ प्रभु चरम समय  
 निज देख पावापुर आये, तव सुरवर सुखकर समवसरण विरंचाये  
 ॥ क्या सघन तरुगत शोक रमण ठवि ठाये, जामंरुल धजवर  
 उंडुनि नाद सुणाये, मणि कनक रतनका बीच सिंहासन जारी  
 ॥ प्रभु पावा० १ ॥ तव इस्तपाल नरपति सुरपतिके आगै, प्रभु  
 शोले पहर धुनि अमृत उपम लागे ॥ पंचम आरेके ज्ञाव प्रगट ग-  
 त रागे ॥ ज्ञापै सिद्धारथनंद सुणात भ्रमजागे ॥ तिहां नरपति सु-  
 रपति खगपति सेवा मागे, जय२ श्रीजगपति नाथ सरस रस जागे  
 ॥ गौतमकूं जेजा प्रतिबोधन उपगारी ॥ प्रभु पा० २ ॥ अम्मावडा पिठली  
 रैन मुगतिपद लीने, इंद्रादिक मिलकर अधिक महोच्चवकीने ॥ गौ

तमने सुणकर वीतरागपद चीने, तव जगत प्रकाशन ग्यान सुधा  
 रस पीने ॥ मेरी धन्य धनी दिन आज दरश मोहि दीने, मेरे हि  
 यरा हरष न माय फरकता सीने ॥ ऋई दीवादी जग वीच तन्नीसे  
 जारी ॥ प्र० ३ ॥ तहां देवादिकने रदन सदनमें धारी, कोटाकोटी रज ऊ  
 गालिया नरानरी ॥ तहां जया सरोवर महिमा अपरंपारी, नंदीवरधन  
 ने किया ज़ुवन विस्तारी ॥ प्रजु जलमंदिर गरदाव कमलकी क्यारी, प्रजु  
 दो मंदरमें मूरति मोहनगारी ॥ जिन चरणकमल ठवि ज़विकूं लागत  
 प्यारी ॥ प्रजु० ४ ॥ प्रजु धरमचंड हो आप आप जस राजा ॥  
 क्या कांति अनोपम फूल महकते ताजा ॥ मीनाकुंदनसे जमाव  
 अंगिया साजा, प्रजु मुन्नी चुन्नी अविचल वाजत वाजा ॥ सन  
 जगणीसे अमृताल कृष्ण पख गाजा, जये कार्तिक दिन निर्वाण  
 जेट माहाराजा ॥ प्रजु लखमी प्रेमसे कुशल निधी रुह्तारी ॥  
 प्रजु पा० ५ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीमंधरजिन लावणी ॥

श्री सीमंधर जिनराज अरज सुण लीजै, प्रजु रहम नजर  
 कर दिलजर दरसण दीजै ॥ मोहे लगन तुमारे वदन दरसकी  
 लागी, मेरे जिगर ज्यानमें रीत प्रीतकी जागी ॥ क्या करूं नाथ  
 तुम दूर वसे वरुजागी ॥ नहि पोंहचत पतिया पास तुमारे पागी  
 ॥ नहि इस डुनिया दरम्यान पंथका थागी ॥ मेरे रात दिवस इक  
 ध्यान जया अनुरागी ॥ जो पल जर पाउं संग अमृतरस पीजै ॥  
 प्रजु रह० १ ॥ में जररथणीके वीच सुपन पजु पाया, पजु अर  
 स परस जिनराज दरस दिखलाया, मेरे रोमर आनंद हरख जर  
 आया ॥ क्या प्यारी सूरत मूरति कंचन काया ॥ जो परतिख  
 देखूं नाथ चरणकी ठाया, मेरा जनम सफल हो जाय करूं दिल  
 चाया ॥ तुम जाणत हो घट वात ढील नहि कीजै ॥ पजु र० १ ॥

धन२ वो सहर मुकाम जिहां जिनराजै, धन२ वो नर नर नार सुख-  
 त धुन साजै ॥ जो पर पात्रं इक वार मिलणके काजै ॥ तो आउं  
 जिन तुम पाश देख डख जाजै ॥ ये सुण जिन मेर<sup>१</sup> स्वाल कुटि  
 लता लाजै, प्रभु मतकर देरी तुरत चढा शिव पाजै ॥ तुम वचन  
 मालती फूल जमर मन रीजै ॥ प्रभु र० १ ॥ क्या समवसरण  
 सोनापद पदम उजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥  
 प्रभु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रभु सत्यकी जननी नीर  
 मीन खुलियाला ॥ अत्र दीजै कुशल निवान सदा सुविशाला, में  
 चाहुं संग अजंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन जक्ति जकी रुद्धसार  
 नाथ वगसीजै ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगंजमें रामवाग लावणी ॥

जिनचंद्र करण आनंद हरख धन वरसण, श्रीसांवरिया म-  
 हाराज तीहारे दरशन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश बनारस गाजै, जहां  
 अथशेन वरशैल सुदर्शन राजै ॥ वामोदर कंदर प्रभु पंचानन गाजै,  
 प्रभु नरहरि दीनदयाल मदन मद जाजै ॥ प्रभु कमठ दीन उप  
 देश दयाके काजै, प्रभु धरे जोग तज जोग अचलपद साजै ॥ पा  
 रसके संगत लोह फनक जयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वर-  
 णूं साहिव तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि  
 प्रकाशी ॥ श्रीअन्नयदेव सूरी गण खरतर वाशी, तुम शांतिक जल  
 सैं गये अरुज सब नाशी ॥ श्रीरामचंद्र सेतु वर पाज सराशी,  
 श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम सूरत निरखण लग  
 रही अंखियां तरसन ॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुधिर  
 सुविलासी, नित आनंद उठव होत धर्म उजियासी ॥ प्रभु रामवाग  
 विच भुवन वणयो केलासी, क्या अदभुत महिमा चंडकिरण  
 परकासी, जिन ध्यान सरूपी लगी लगन अविनासी, प्रभु डरजन

फंदा तोम मोहकी फासी ॥ जिनचंद्र सूरेश्वर विजयराजके सर  
सन ॥ श्रीसां० ३ ॥ पाठक हितवह्न जैत्य प्रतिष्ठा कीनी, श्री  
संघ सदा कल्याण जक्ति बुध दीनी ॥ तन् उगणी सय अमताव  
माघ सुद लीनी, सुन्न वस्तपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ ल  
हमी वरदायक श्रीपारस पद चीनी, रुद्धसार कहै सुखकार जक्तिरस  
पीनी ॥ जइ कंषन काया प्रज्नु चरणनके फरसन ॥ श्रीसां० ४इति ॥

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजै, मेहुं दासी चरणोंकी, तोरण  
आये फेर मत जान, तुमकुं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान  
लेइ तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ ठप्पन्न कोरु जादव  
मिल आए, ए अवसर नही फिरणोकी ॥ ने० २ ॥ रथ फेरी गिर-  
वरकुं सिधाए, हमकुं ठांमी नव जवकी ॥ मेरे सामरे स्याम सबू  
णे, में इहां नही अब रहणोकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी में तो-  
कुं कहतहुं, देखूं शोजा गिरवरकी ॥ मातापिता वाधव सब ठंमी ॥  
जासुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जोरके वीनवै राजुल,  
बात सुणो पियु मुऊ घरकी, हमकुं ठोम चलै निरधारी,  
अब हे पीतम सरणोकी ॥ ने० ५ ॥ नेम कहे तुम सु-  
ण हो राजुल, विषयारस हे विष सरणी ॥ यह संसार असार निरं-  
तर, कर करणी यह तरणोकी ॥ ने० ६ ॥ पियुजी पासै संयम  
लीयो, जिनसें कारज सरणोकी ॥ तपस्या करीने उत्तम कीनी, यह  
जव पार ऊतरणोकी ॥ ने० ७ ॥ पियुजी पहलां राजुल नारी, पो-  
हता सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए, येही शोजा  
हे जिनकी ॥ ने० ८ ॥ चतुर कुशल या कही लावणी, जिनसें  
काया उद्धरणोकी ॥ अरिहंत ध्यान धरे दिल मांहे, फिर फेरा नहि  
फिरनेकी ॥ ने० ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अर्थ जिनदासजी कृत १० धन तथा लावणीओ ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, जीनोसें उतरोगे जव पार  
 ॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले अपनो अंश  
 ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाणं डख की एहे संसार  
 ॥ करो प्रभु निहाल अजी जिनदास, रखो प्रभु मुज चरणोके पा  
 ॥ १ ॥ सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई लाली ॥ सोवत  
 समताकी में टाली, आतमा तपमें नहिं घाली ॥ अनंत जव वीतगया  
 खाली, वेदना निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदास मंगे, सदा पद प्र  
 भुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाजिनंदन, चरण पर चढै  
 केशर चंदन ॥ करंत सब इंद्रादिक बंदन, कटत हे कर्मोका फंदन  
 ॥ साधो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकूं सुख कंदन ॥ जिनंद  
 गुण जिनदास गावै, शीश चरणोंसें नमावै ॥ ३ ॥ बोलत हे हि  
 या मेरा हसकर, चढावुं चंदन चूआ घसकर ॥ पैठामें धर्मोंमें ध  
 सकर, पाप दल दूर गया खसकर, चेतन हुवा खरुा कमर कसकर,  
 दटाया कर्मोका लसकर ॥ श्रीजिनराज जिहाज खासा, शरण जिनदास  
 लिया वासा ॥ ४ ॥ समज मन मेरा मतवाला, तुजे नहिं कौइ इट  
 कणवाला ॥ बस्या तेरे हिये कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिकु ता  
 ला ॥ फेर तो ममताकी माला, वाद तो जगवंत पर जाला ॥ द  
 यासें दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ कीया में  
 गणधर प्रेमपती, मुजे वरदायक हे सरसती ॥ करी निर्मल निर्ध  
 यमती ॥ पूठ पर खमे जागता जती ॥ मुजे बलवंत जई शोल सती,  
 मटी मेरी दुर्गतिकी सब गती, एसा धन जिन दास गावै, अचल  
 पद जक्तिसें पावै ॥ ६ ॥ विकट घट दुर्गतिका जारी, नीर  
 ज्यां जरती कुमति नारी ॥ वरगी उन नेणोंकी मारी, मुब्या कैइ  
 कामी संतारी ॥ इनोकी हो रहियै खुआरी, जीता कोइ सत्य



धरमधारी ॥ प्रभु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आ  
या ॥ ७ ॥ चैत नर निगोदका वासी, कराई जगमें तें हांसी ॥  
कुमतिकी पत्नी गले फांसी, सुमतिसुं रखी हे उदासी ॥ कुमतिकी  
वसी सेज खासी, मान रह्यो ममताकूं मासी ॥ हियो  
खोल अरिहंतकूं परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ८ ॥

अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी नहिं मानी ॥ किया  
नही गुरु निग्रंथज्ञानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें ऊत  
रं गया पानी, गती तेरी डुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास  
वाजै, सुधारोगे तुमही काजै ॥ ए ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी,  
शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निग्रंथज्ञानी, कानसें  
लगी सुमति राणी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पाणी, गती तेरी  
सुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही  
काजै ॥ १० ॥ इति ॥

पुनः लावणी ॥ चल चेतन अब उठकर अपणें, जिन मंदिर जइये ॥  
कीसीकी झूंनी ना कहियै रे, किसी० चल० ॥ चरण जिनवरजी  
का नेटो रे च०, जवर संचित पाप करम सब तन मनका मेटो  
॥ सुकृत कीजै—महाराज सु० ॥ जिनवरका गुण जज कीजै, सम  
कित अमृतरस पीजै ॥ लाज जिनजत्कीका लहिये रे—लाज० ॥  
चल० १ ॥ करो मत मुखसे बभाई, करो०, तज तामस तन मनका  
सुमति कर घर रहणा जाई ॥ रीतसे बोलो—मेरी जान री० ॥  
आत्म समतामें तोलो, मत जरम पारका खोलो ॥ मौनकर तन  
मनसें रहियेरे—मो० ॥ च० २ ॥ जोवन दिन च्यारतणा संगी रे  
जो० ॥ अंत समें चेतन उठ चाढ्यो, काया पत्नी नंगी ॥ प्रीत सब  
तूटी—मेरी ज्या० प्री० ॥ आजखेकी खरची खूटी, चेतनसें काया  
रूठी ॥ सुख दुःख आप किया सहियैरे—सुख दुः० ॥ च० ॥ ३ ॥

जगतमें रहता उदासी रे ज०, परख्या में जिनराज कटी मेरी डुर  
 गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा—मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख  
 पूनमचंदा, जिनदास तुमारा बंदा ॥ मेरे एक जिन दर्शनः चहियै  
 रे—मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ तुम जजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे—मु० ॥  
 अब अचल अखंति ज्योति सदा सुखदाईरे ॥ में रुढ्यो चोरासी  
 मांदि जूढ्यो में जरम, जूढ्यो० ॥ महारे उदय अनंता डुख वांध्या  
 जब कर्म ॥ में कदियक डूठ रंक फिरयो तज शरम, फि० ॥ अरु  
 कदियक राजा जयो गरयको गरम ॥ जब गरव आणिकर बोढ्यो  
 पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनु  
 प्य जनममें चेत घनी शुज आई रे, घ० ॥ अब० १ ॥ में सुरनर  
 का सुख वार अनंती पाया, अनं० ॥ मारे शिव समताका सुख  
 दाथ नहिं आया ॥ में कुगुरु अने कुदेव जला कर ध्याया, जला०  
 ॥ में उलढ्यो अनादि अज्ञान विषय जोग जाया ॥ में पन्था  
 जोजके फंद जोरुतो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय  
 कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म०  
 अब० २ ॥ अब डुलज अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥  
 अब दानशील तप जाव हीयामें धर रे, तुं करमकी माला काट  
 पाप परिहर रे, पा० ॥ अब वार २ कहुं तोय जगतसे तर रे ॥ तुं  
 निर्मल नयणे देख जगतसे नर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान  
 अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान वेन अर जाई रे ॥  
 अब० ३ ॥ अब जिनवर मुज मन जायो सदा गुण गाउं,  
 सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो नरक नही जातें ॥ अब जवर  
 मांही देव जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ में मन वच काया करी चरण  
 चित छपाउं ॥ ए दयाधरम हितकार, सदा में चाउं ॥ स० ॥ ए

चौरासी के माहि फेर नही आउं ॥ यूं अरज करै जिनदास, कीरत  
एगई रे ॥ की० अब० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति कुमतिकी लावणी ॥ हारे तूं कुमति कलेसण  
मार, लगी क्युं केमे, ल० ॥ चल सरक खनी रह दूर तुजें कुण  
वेमे ॥ हारे तूं सुमतीको जरमायो, सुजे क्युं ठोमी, सुजे० ॥ मेरी सदा  
शाश्वती प्रीत ठिन कमें तोमी ॥ तुज विन सूनी मेरी सेज, कहुं करजोमी,  
क० ॥ उठ चलो हमारी संग सुखे रहो पोढी ॥ युं फुरए कुमति  
आंसुआंखसे रेमे, आं० च० १ ॥ हारे तेरी नरक निगोदकी सेज, सेति  
में रुवो, सेति० ॥ पकड़यो साचो जिनराज, संग तेरो टूटो ॥ तेरो  
मूरख माने वात, हियाको फूटो, हिया० ॥ में सहज हुवो हुं दूर  
हार तेरो टूटो ॥ तुम करो दूरसे वात आव मत नेमे, आ० च०  
२ ॥ मेरी अनंतकालकी प्रीत पलक नहिं पाली, पल० ॥ सुमती  
के लागो संग मुजें क्यों टाली ॥ तूं सुमतीको सिरदार, सुणावे  
गाली, सु० ॥ तेरी हंम दोनूं हे नार गोरो उर काली ॥ तूं हम  
कुं ठेले दूर सुमतिकुं तेमे, सु० च० ॥ ३ ॥ अब कुमतीको लल  
चायो, रती नहिं निगियो, र० ॥ सुणकर सूत्रनकी शीख, साच होय  
झगियो ॥ चेतन कुमतीकी सेज, दूरसुं जगियो, दू० ॥ जिनराज  
बचनको ग्यान, हिये में जगियो ॥ जिनदास कुमति तूं वात खोटी  
मन खेमे, खो० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ तुम तजो जगतका खयाल, इसकका गाना, इस०  
तेरी अल्प कुमर खूट जाय, नरक उठ जाणा ॥ तें दिना चार  
छुग बीच लिया हे वासा, खि० ॥ तेरे सिर पर वैवा काल, कहे  
हे हासा ॥ में बोलूं साची वात, ऊठ नहिं मासा, ऊ० ॥ तूं सूता  
हे कुण निंद, किसी कर आसा ॥ अब सेव देव जिनराज खलक  
में खासा, खल० ॥ तेरे जीवन पतंगका रंग, ऊठ सब

आसा ॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समज रे दिवाना, स० तु० ॥  
 १ ॥ अब बुरी जली सब वात, मोन कर रीजे, मो० ॥ ए मुख मी  
 वा संसार जेद नहीं दीजै ॥ कर वीतराग विसवास्त, हिये धर ली  
 जै, हिये० ॥ पण नीच नारका संग मांहे मत ज़ीजै ॥ अब सात  
 विसनको संग, प्रीत मत कीजै, प्री० ॥ तोहे डुरगति दे पोहचाय  
 तेरो तन गीजै ॥ तुं सुख डखका सिरदार, रंक नह राना, रं० तुं० २  
 ॥ तुं विसरगया जुग वीच, नाम जिनवरका, ना० ॥ पच रह्या कु  
 टंबके काज, किया फंद घरका ॥ तें दया धरम विन खोया, जनम  
 सब नरका, ज० ॥ तेरे पखे बांध्या पाप, कसाई सरखा, अब लि  
 या नहीं तें लाज, वखत पर करका, व० ॥ तेरी वीती वात सब जा  
 य जनम युं खरका ॥ अब सुणो शीख सूतरकी सुलट रे  
 स्याना, सु० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोढ्या, आनंद  
 दिल आया, आ० ॥ मेरी ज़गी जूख सब प्यास सुधारस पाया ॥  
 मेरे सिर पर तुम शिरदार, जिनेसर राया, जि० ॥ में चाहुं खर  
 णकी सेव सफल कर काया ॥ अब द्यो दोलत दरसनकी, मेरे ए  
 हि माया, मे० ॥ यूं अरज करै जिनदास अलख गुण गाया ॥ अब  
 घुरा कुगुरु उपदेश सुणो मत काना, सु० तुम० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः नेमनाथजी की लावणी ॥ दे गया दगा दिलदार,  
 सुणो मेरी माई, सु० ॥ जग रही नेम दरसनकी, सरस  
 असनाइ ॥ अब अजब अली जो नेम, मेरे शिर गजै ॥  
 ॥ मे० ॥ जादवकी देखी ज्ञान, जगत सब लाजै ॥ एतो नेम  
 नेवल इक वीद, अनोखो वाजै, अ० ॥ सुरनर सब गावै गीत, गनन  
 में गाजै ॥ अब दोरु२ सब डुनियां, देखणे आई, दे० ॥ दे०  
 १ ॥ अब चढा नेम तोरणकूं, आनंद दिल धरकर, आ० ॥ सज  
 आयै सुरंगा साज, किलोलां करकर ॥ में पायो परमानंद, हरख

हिया ज़रकर, ह० ॥ ले गयो पती नेमनाथ, मेरो मत हरकर ॥  
 सखी सुख संपत अंगणमें, आज चल आई, आ० दे० २ ॥ अब  
 इण अवसरमें सूरत, स्यामकी लागी, श्या० ॥ पशुअनकी सुणी  
 पुकार, दया दिल जागी ॥ जिन ली परवतकी वाट, तृष्णाकूं त्या-  
 गी, शिवरमणीके शिर वींद, वणयो वैरागी ॥ अब महल चढी रा-  
 जुलकूं, खनी भिटकाई, ख० दे० ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें, टिके  
 नही पाणी, टि० ॥ जिनगुण गाया नहीं जाय, अल्प जिंदगानी ॥  
 अब कठन जीव डुरगतको, बन्यो मेंदानी, ब० ॥ जिनदास करो  
 जव पार, दया दिल आणी ॥ अब शरण सतीके बैठ लावणी  
 गई ॥ ला० ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मगसी पार्श्वनाथकी लावणी ॥

मुलक बीच मगसी पारसका बाज रह्या रुंका, मुगति गढ  
 जीत लिया वंका रे, मु० ॥ मुल० ॥ करमदल बलकूं क्य कीया रे,  
 क० ॥ मुगतिमहलमें केलि करै, अनुजव अमृत पीया ॥ शाशता  
 जीया, महाराज शा० ॥ कल्याणक कारज कीया, अमरापुर पद-  
 वी लीया, कमठ जसका करगये फंका रे, क० ॥ मुल० १ ॥ प्रजु  
 पारस जजले जाई रे, प्रजु पा० ॥ जाव जमरकामेट जोत तेरी जगमें  
 सवाई ॥ टेककूं टालो, महाराज टे० ॥ चंचल चितसे मत चालो, गुमान  
 गरबकूं गालो, गरबसे धूम मिली लंका रे, ग० ॥ मु० २ ॥ मेरे  
 शुज जाग्य उदय आया रे, मेरे० ॥ इण पंचम आरा मांहि प्रजु  
 मगसी पाया, पापसे रुरता, महाराज पाप० ॥ जवि जीव ध्यान  
 दिल धरता, श्रावक नित समरण करता, मरण डुख मिट्या मेरे  
 अंगका रे, म० ॥ मु० ३ ॥ महिमा मगसीकी अब जाणी रे,  
 म० ॥ नहि ऊचनी मेरी आंख विलोयां परब विना पाणी ॥ में  
 जिनवर जाज्या, महाराज में जि० ॥ जिनदास जिनदसें राच्या, म-

गसीपारश हे साचा, करो मत मनमें कोइ संका रे ॥ क० सु० ४ ॥  
 ॥ उपदेश लावणी ॥ सुकृतकी वात तेरे हाथ रती नारही  
 रे, पुदगलमें मान्यो सुस्क कलपना कही रे ॥ सु० ॥ जग मांहे  
 जैन निज सार संघाते आत्रै, संघा० ॥ इसकुं तजकर क्युं वैगो,  
 विषय गुण गावै ॥ अमृतकुं अलगो ढोल, विसन विष खावै, वि० ॥  
 मुगतीको मारग मेट, उवटमें जावै ॥ थारी तुम्ह जिंदगानी मांहि, विक-  
 ल बुध जई रे ॥ पु० १ ॥ थारे धन दोलत जंभार जरयाहे मोती, ज-  
 रया० ॥ सत्रु सज्जन सब बने, जगत हुय गोती ॥ कोइ मसले तेल  
 फूलेल, धोवे कोइ धोती, धो० ॥ सन्मुख उठ आवै, अबला तेरो मुख  
 जोती ॥ एसी संपत विन मांहि सरब क्य जई रे, स० ॥ पुद० ॥  
 २ ॥ तें खटरस खाया खूब, खजाना खोया, ख० ॥ निसदिन सु-  
 खजर सुंदरकी, सेजमें सोया ॥ सजिया शोले सणगार, नारिसें  
 मोह्या, ना० ॥ तें अंतरघटका मैल रती ना धोया ॥ या नरक नि-  
 गोदकी वाट, पकम कर लही रे, प० ॥ पु० ३ ॥ मन मातो  
 आठ मद मांहि, गरबसें बोले, ग० ॥ में सुख संपतको नाथ,  
 भेरे कुषा तोले । डुर्वल करता पोकार, पलक नही खोलै, प० ॥  
 चाकर हुय रया हजूर चमर सिर ढोलै, अब अवसर आ  
 यो हाथ, चेत तूं सही रे, चे० ॥ पु० ४ ॥ कायासें कीयो लाम बना  
 इ चंगी, व० ॥ पलजर परवारयो पुन्यतणो तिदां जंगी ॥ पकमी  
 परजवकी वाट, होय कुण संगी, हो० ॥ तेरो दंत गयो आकाश  
 काया पनी नंगी ॥ जिनदास कहे करमोंसें जोर तेरा नही रे, जो०  
 ॥ पु० ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ नेमजिन लावणी ॥  
 तुम तजकर राजुल नार, तजा सब घर रे, तजा० ॥  
 में नमुं नेमके पांय गया गिरवर रे ॥ में प्रीत पियाकी कर कर  
 पखे लागी, तुम त्याग चलै वनखंरु जये वैरागी ॥ अब राजुलसी

सत्त्वन्ती जावसै त्यागी, ज्ञा० ॥ थारे अंतरघटमें ज्यौत ज्ञानकी  
जागी ॥ यूं रोती राजुल नार नेण जर रे, नेणामें० १ ॥ में अरज  
करुं करजोरु, करो मन परसन, करो० ॥ मेरे सिर पर तुम सिरदार,  
देजो मोहे दरसन ॥ अब सुख सखियनका देख, लग्यो मन तरसन,  
ल० ॥ मेरे आवै नयणमें नीर लग्यो नित वरसन ॥ मेरे नेम मिल-  
नकी आस, मिलूं क्युं कर रे, मि० ॥ में० २ ॥ में नहि कीनी त  
कसीर, चले क्युं रूठै, च० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार चार दिस  
चूटे ॥ में रहूं जो घरके मांहि, जोवन जम लूटे, जो० ॥ में चलुं  
पियाके संग, प्रीत क्युं तूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं उर, जगतमें वर  
रे, ज० ॥ में० ३ ॥ तुम तारी राजुल नार, सुगतमें मेली, सु० ॥  
पीठै नेम गये निरवाण, करम सब ठेली ॥ में नित ऊठे परजात,  
नमुं पद पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नहि उर जगतमें बेली ॥ युं  
अरज करे जिनदास सुपो जिनवर रे, सु० ॥ में० ४ ॥ इति पद ॥

पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समजका घर नहि पाया, दूजेकुं क्या  
समजावै ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, हीयो हाथमें नहि आवै ॥  
दरस सवाद चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आय लगे, इंद्रिका  
परबसमें पनियो, ग्यानकला कहो कैसें जगें ॥ तृष्णाने जग लूट  
लियो हे, कपट करी परधनकुं ठगै ॥ खायर लोही मांस वधायो,  
प्राणी किस विध चले पगे ॥ विषय विपतकी करै चूंयणी, चरचासै  
चित नही लावै ॥ वं० ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकुं नही देखै,  
दूजाका अवगुण जाखै ॥ हिंसाहीमे हूओ हजुरी, दया दूर दिलसै  
नाखै ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन, अवगुणके रसकुं चाखै ॥  
तीनूही प्रणमें राग धरामें, सरणे जिनवर किम राखे ॥ उग फा-  
सीगर चोर अन्याई, धनके मिस इनकुं ध्यावै ॥ वं० ही० आ० ॥  
१ ॥ अवगुणकी मेरी खान आतमा, अजान होय सो मोहि पूजै ॥

नही गाममे रुख अंबको, एरुं अंब सरिखो सूजे ॥ पारख नही  
 हे हीये ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुजे, गानर देख कहे मुज  
 घरमें, कामधेनु इतनी दूजे ॥ ऐसी मेरी अविनीत आतमा, अव-  
 गुण किम गाया जावै ॥ वं ० ही० आप० ३ ॥ क्रोध मान मायामें  
 आतो, लोभ मांहे छपटयो रहतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी,  
 पीरु पारकी नहिं सदतो ॥ जगति नही गुरु देव घरमकी, कठन  
 बचन मुखसें कहतो, अंतर आंठ न खुलै दियाकी, पूठ परमपदकूं  
 वेतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, मांल मुलकको ठंग खावै ॥  
 वं ० ही० आप ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु नियंत्रकूं, वे जिन  
 मुझधारी हे ॥ पुलज ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे  
 ॥ न० १ ॥ गरव गालकर गुपति गोपवे, गत नियंत्रकी न्यारी हे ॥  
 कनक कामनीके नही जोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० २ ॥ उ  
 कापके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काटकर के-  
 वल पावै, ज्ञानगरथ गुण जारी हे ॥ न० ३ ॥ शुध्व अक्षासें सुम-  
 ती सेवी, निज आतमकूं तारी हे ॥ जिनवरकूं जिनदास वीनवै,  
 उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ करूं२ में ऐसे सदगुरु, शिंवर कढप जिन धारी हे ॥  
 सरथा शुध्व सदा उपदेशी, जिविजनके उपगारी हे ॥ करूं२  
 में० १ ॥ ज्यार निकेपे सत जंग नय, देश काल आचारी हे ॥  
 विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी हे ॥ करूं२ में० २ ॥  
 त्प सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी हे ॥ निन्नव अरु  
 पाखंरु खंरुते, जैनधर्म जयकारी हे ॥ करूं२ में० ३ ॥ संवेगी  
 अरु संवेगपकी, मुनी जती गुणकारी हे ॥ ग्यान ध्यानसें शिवपद  
 ताधै, कहे पाठक रुद्रसारी हे ॥ करूं२ में० ४ ॥ इति पदं ॥



॥ अथ कुगुरूकी लावणी ॥ तजुं२ में उन कुगुरूकुं, कनक का-  
मनी धारी हे ॥ ज्ञान ध्यानकी वात न जाणे, अष्ट करमसें नारी  
हे ॥ तजुं० १ ॥ करी कपाल वज्रूत लपेटी, शिर पर जटा वधा-  
री हे ॥ कान फामकर मुद्रा पहरे, उसके घरमें नारी हे ॥ तजुं०  
२ ॥ जोग लेइ जग जीव विणासै, वे मद मांस आहारी हे ॥  
कूना पंथ जगतकूं करतां, मुखसें कहे आचारी हे ॥ तजुं० ३ ॥  
कहूं उगुण कुगुरूकां कब लग, साध नही संसारी हे ॥ आप सुवै  
नरनकूं सूबावै, दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ तजुं० ४ ॥ समकित  
श्रद्धा जैनधर्मकी, नहीं कुगुरूकूं प्यारीरे, जिनवरकूं जिनदास वीन-  
वै, कुगुरू संग खुआरी हे ॥ तजुं० ५ ॥ इति ॥

आत्मलघुता लिख्यते ॥ यो जिनदास जूगे रे जूगे, येने  
लेइ लाकनी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहीं नरतो, ग्यान  
हियाको खूटो ॥ सुधारयो सुधरे नही यरतां, जैसो लकनको ठुंगो  
॥ यो० १ ॥ नणवा गुणवाका गुण नहिं आधा, कोरोही पन्थ  
रुयो पूगो ॥ गपोना सुणकर लोक पूजता, ए अलग मालको ठुंगो  
॥ यो० २ ॥ पंथित गुरुकी सोबत पाई, चेत्यो ना हीयाको फूटो,  
साचा नरको संग न करतो, कूम कपट नहीं ठूटो ॥ यो० ३ ॥  
जूगोही बोले जूगोही चालै, कपट करे एक मूगो ॥ साचो एह अ-  
सार देखके, जिनदास सबसुं रूगो ॥ यो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी लि० ॥ जब तन दोस्ती है इह म-  
स्ती, काया मंगलकी ॥ सासोस्वास समर ले साहिब, आन घटे  
तनकी ॥ खबर नही हे जुगमें पलकी, सुकृत करणा होय सो क  
रले, कुण जाणे कलकी ॥ ख० १ ॥ तारामंजल रवी चंडमा,  
सत्री चलाचलकी ॥ दिवस च्यारका चमत्कारहे, बीजलियां  
नलकी ॥ ख० ॥ सु० ॥ २ ॥ यो जग हे सुपणेकी माया, उस

बूंद जल ही ॥ विणस जावता वार न लागै, डुनिया जाय  
 खलकी ॥ ख० ३ ॥ हंसा या देहीमें जब लग, खुसी हे मंगल-  
 की ॥ हंसा ठाम चले जब देही, मिटिया जंगलकी ॥ ख० ४ ॥  
 मनमावत तन चंचलदस्ती, मस्ती हे बलकी ॥ सदगुरु श्रंकुश  
 दीया आनके, वातां जई अलकी ॥ ख० ५ ॥ मात पिता सुत बं-  
 धव जई, सब जन मुतलवकी ॥ काया माया सवे कारमी ॥ ए  
 तेरे कवकी ॥ ख० ६ ॥ ऊठ कपट कर माया जोनी, कर वातां  
 बलकी ॥ बोजकी गांठ बंधी सिर तेरे, केसे होय हलकी ॥ ख०  
 ७ ॥ देव धरम साहिवका समरण, ऐ वाता सलकी ॥ राग द्वेष ऊ  
 पजै नही जिनकूं, वीनती अखैमलकी ॥ ख० ८ ॥ इति पदं ॥

पुनः। अरज हमारी सुणो, दीनपति, कोन जांत तिरणा ॥  
 हम डुखी फिरत संसार चतुर गति, सो तुमसें निरणा, दीनपति  
 को० ६० ? ॥ घेराघोर तरकके नीतर, नानाडख जरना ॥ मा-  
 रन तारुन वेदन जेदन, उर देह धरणा ॥ दीनप० १ ॥ कबहुक  
 तिरयंच जोनि पायके, गलै फास परना ॥ क्रुधा तृषा अरु शीत  
 उष्णता, मार मार करना ॥ दी० ३ ॥ देव विञ्जति पायके सुंदर,  
 देसुं जूरना ॥ जब माला मुरजावण जागी, सोच किये मरणा ॥  
 दीनप० ४ ॥ मनुष्या जनम पायके जक्यो, कहुं नांही थिरना ॥  
 साहिव तुम सरणागत राखो, जनम मरण हरना ॥ दीनप० ५ ॥

॥ मुक्ति जाणेकी डिगरी ॥

दूहा ॥ तीर्थेकर महावीरने, कौशल गणधर साज ॥ कानून  
 भरुपा हे दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप  
 ज्ञावना, असल खुलासा सार, जिण पुरपां धारण किया, पोह्य्या  
 सुगति मजार ॥ २ ॥ चवदै सदस साधु हुआ, आर्या ठचीस ह-  
 कार, लाखा श्रावक श्राविका, पाया जवजल पार ॥३॥ (चाल-हीर

रंजके ख्यालकी) मेरी अदावत प्रभुजी कीजीयै ॥ जिनशासन ना-  
 यक, मुगती जाणेकी निगरी दीलियै ॥ जि० ॥ खुद चेतन मुद्द-  
 ई बनादे, आठुं करम मुदावा ॥ दावा रसता मुगति मारगका,  
 धोखा दे जाय टाला जी ॥ जि० १ ॥ तप कागद इष्टांम लिया, त-  
 लबाणा कृमा विचारी ॥ सिझाय ध्यान मजबून वणाकर, अरजी  
 श्रान गुजारी जी ॥ जि० २ ॥ में जाता था मुक्तिमारगमें, करमोने  
 आघेरा ॥ धोखा देकर राह चुदाया, लूट लिया सब मेरा जी ॥ जि०  
 ३ ॥ बहोत खराब किया करमोने, चौरासीके मांही ॥ दुस्क अ-  
 नंता पाया मेने, अंत पार कतु नांही जी ॥ जि० ४ ॥ सच्चे मिले  
 घकील कानूनी, पंच महाव्रतधारी ॥ सूत्र देख मसोदा कीना, तब  
 में अरजी मारी जी ॥ जि० ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्ति ए, आ-  
 ठुं गवा बुलावो ॥ शील असेसर वमा चौधरी, उसकूं पूव भंगावो  
 जी ॥ जि० ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, हूआ सफीना जारी ॥  
 हाजर आवो जुआव लिखावो, लावो साबूती सारी जी ॥  
 जि० ७ ॥ आठुं मुदा लै हाजर आवे, मोह मुगत्यार  
 बुलाये ॥ ज्यार कषायरु आवे मदकूं, साथ गवाहीमें लाये  
 जी ॥ जि० ८ ॥ ( टेर मुदायलैकी ) ॥ जिनशासन ना-  
 यक, जूठा दावा हे चेतन जीवका, जि० ॥ हमनें नही वहकाया  
 इसकूं, ए हमरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, एसा फरेब  
 मचाया जी ॥ जि० ९ ॥ विषयजोगमें रमिया चेतन, घाटा नफा  
 न जाणा ॥ करजदार जब लारे लागा, तब लागा पिस्ताना जी ॥  
 जि० १० ॥ हाजर खरे गवाह हमारे, पूठियै हाल जु सारा ॥  
 बिना लियां करजा चेतनसें, कैसें करे किनारा जी ॥ जि० ११ ॥  
 ( टेर मुदीकी ) ॥ चेतन कदै सताबी मांही, सुण शास-  
 न सिद्धार ॥ इमानदार हैं गवाह मारै, जाणे सब संसार जी ॥

जि० मे० १२ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रजूजी, करम फरेवी ज़ारी ॥  
 जीव अनंते राह चलतकुं, लूट चोरासीमें नारी जी ॥ जि० मे०  
 १३ ॥ बनेर पंक्ति इन लूटे, एसा दम बतलाया ॥ धरम कहा  
 उर पाप कराया, एसा करज चढ़ाया जी ॥ जि० मे० १४ ॥ अ-  
 सल एन सरकारी सूत्रमें, मन मत अर्थ धसाया ॥ धर्म एनमें  
 हिंसा कहकर, उलटा जीव फसाया जी ॥ जि० मे० १५ ॥ जेव  
 अर्थसे वेद पढ़ाया, हिंसक यज्ञ बताया ॥ इसके फलसे स्वर्ग दि-  
 खाकर, एसा मुजे सतायाजी, जि० मे० १६ ॥ हिंसा मांहे धर्म  
 बताया, तपस्या सेती निगाया, इंसिय सुखमें मगन करीनै, जूठा  
 जाल फेलाया जी ॥ जि० मे० १७ ॥ एसा करो इनसाफ प्रजूजी,  
 अपील होण न पावे ॥ इकरसी चेतनकी होवे, जन्म मरण मिट  
 जावे जी ॥ जि० मे० १८ ॥ ग्यान दर्शन करी मुनसफी, दोनो-  
 को समजाया ॥ चेतनकी निगरी कर दीनी, करमूका करज बता-  
 या जी ॥ जि० मे० १९ ॥ असल करज जो था कर्मोका, चेतन  
 सेती दिलाया, जि० ॥ सुध संजम जब करी जमानत, चेतन निगरी  
 भाई ॥ फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सत् उगणीस अठाई जी,  
 जि० मे० २० ॥ इति ॥

॥ अथ अनुभव पद डिगरी ॥

साहब अदालत पर बैठ, श्रीपारस प्रवीण एन उत्तम च-  
 खाए है ॥ शील हे सिरदार और दान हे दरोगा जाके, दयारूपी  
 वारण सत् श्रावण पर आए है ॥ ग्यान हे चपरासी ताको ल-  
 ग्यो हे मोहोसल ताकी, माल जामनीमें श्रीजिनवरजी लिखाए  
 है ॥ रोसकी रसम उर कमीसन लगे कर्मनकुं, मोहको म्याद इ-  
 सत्पार लटकाये है ॥ १ ॥ बैठके लिखेगा जब जीवकी जुवानबं-  
 धी, तबके कुठ स्वाल जवाब सतगुरुने बताए हैं ॥ ठोकर सा-

जी पायो पकच्यो अरिहंतजीको, अनुभव पद पायवेकी मिगरी  
कराय लाये है ॥ अबतो दरकास मेनें करी हे तुमारे पास, साहब  
जिनराज अरज मेरी सुण लीजीयै ॥ अष्ट करम आतुं जाम करत  
हे कार साजी, साहब बुलाय इसें पिसेमान कीजीयै ॥ २ ॥  
मेंतो हूं गरीब मेरी करेगा नकीली कोन, पारस प्रवीण मेरी मि-  
सल आज कीजीयै ॥ हारुं तो हाजर हजुरीमें रह्या करुं, जीतूं  
तो लगाय जुगल चरणनेमें लीजीयै ॥ अब तो फरियाद नाथ  
करी हे तुमारे पास, मेरी दाद दीजीयै तो रावरी वमाई हे ॥ मु-  
नसबकी बात ओर मामलत अदालतकी, अब तो अफील मान अ-  
रजी लगई हे ॥ जूठमूठकार साजी करत हे पांच तीन, साचो  
मत जैन जाकी अैन अधिकाइहे ॥ मेरेही पांच लोक मोहीकों जू-  
ठावत हे, जाते ग्वाही श्रीजिनराजकी लिखाई है ॥ ठोरुकार सा-  
जी पायो पकच्यो अरिहंतजीको, अनुभव पद पायवेकी मिगरी  
कराय लाए है ॥ ४ ॥ इति मिगरी संपूर्ण ॥

॥ नेमनाथजीकी लावणी ॥

नेमकी जान बणी ज्ञारी, देखनकूं आवै नर नारी ॥ अनं-  
ता घोना उर हाथी, मिनखकी गिणती नही आती ॥ उंठ पर  
धजा जो फरराती, धमकसैं धरती अरराती (डहा-साखी) समुद्रवि-  
जयजीका लामला, नेम उनोंका नाम ॥ राजुलदेकूं आया परणवा,  
उग्रसेन धर ठाम ॥ प्रसन जई नगरी जब सारी ॥ नेमकी० १ ॥  
कसुंबल वागा अति ज्ञारी, काने कुंमल ठवि है न्यारी ॥ किलंगी  
तुररासुखकारी, माल गलमोतियनकी मारी ॥ (डहा-साखी) काने  
कुंमल जगमगे, शीश मुगट ऊलकार ॥ कोमि ज्ञानुकी करुं उप-  
मा, शोक्षा अधिक अपार ॥ वाज रह्या वाजा टंकसारी ॥ नेम०  
२ ॥ वूट रही उत्तकी ठरराई, व्याहमें आये वने ज्ञाई ॥ ऊरोखे

राजुलदे आई, जानकुं देखी सुखपाई ॥ (इहा-साखी) उग्रसेनजी  
 देखके, मनमें करे विचार ॥ बढ़ोत जीव करि एकठा, वामो नः  
 र्यो अपार ॥ करी सब जोजनकी त्यारी ॥ नेम० ३ ॥ नेमजी  
 तोरण पर आये, पशुजीव सबही कुरलाए ॥ नेमजी वचन फुर-  
 माये, पशुजीव काहेकूं लाये ॥ (इहा-साखी) याको जोजक होवसी,  
 जान वासते एह ॥ एह वचन सुणी नेमजी, थरहर कांपे देह ॥  
 जावसें चढ गये गिरनारी ॥ नेम० ४ ॥ पीठेसें राजुलदे आई, हाथ  
 जब पंकरयो गिन मांही ॥ कहां तूं जावै मेरी जाई, उर वर हेरूं  
 सुकताई ॥ (इहा-साखी) मेरे तो वर एकही, हो गया नेमकुमार ॥  
 और जुवनमें वर नही, कोटी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलने  
 थारी ॥ नेम० ५ ॥ सहेड्यां सबही समजावै, हियै राजुलके न-  
 हि आवै ॥ जगत सब जूठो दरसावै, मेरे मन नेमकुमार जावै ॥  
 (इहा-साखी) तोरुया कांकण दोरना, तोरुया नवंसर हार ॥ काजल  
 टीकी पान सुपारी, त्याग्यो सब सिणगार ॥ सहेड्यां सबही विल-  
 खाणी ॥ नेम० ६ ॥ तज्यां सब शोले सिणगारा, आनूपण रत्न-  
 जमित सारा ॥ लगे मोहे सबही सुख खारा, गोरुकर चाली निर-  
 धारा ॥ (इहा-साखी) मातपिता परवारकूं, तजतां न लागी वार ॥  
 वियोग करके चली आपसुं, जाय चढि गिरनार ॥ जूरति गोरु मा-  
 प्यारी ॥ नेम० ७ ॥ दया दिल पशुवनकि आई, त्याग जब किनो  
 गिन मांहि ॥ नेमि जिन गिरनारे जाई, पशुवनके बंधन ठुमबाई  
 (इहा-साखि) नेम राजुल गिरनारपें, किनो संजमवान ॥ नवलराम  
 यह करि लावणी, ऊपन्यो केवलग्यान ॥ जिनोकि किरिया बुध  
 सारी ॥ नेम० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेमनाथजीका चोमासा लिख्यते ॥

बाई घटा गगनमें कारि, राजुलकुं विरह डख जासि

॥ गी० ॥ चौमासा लग्या रस जिना, अलि अषाढ रंग  
 महिना ॥ ध्यारुं तरफसें वादल पिना, बिजलिने चमकणा  
 किना ॥ दिल होत धरुकता सिना, में अबला स्खी  
 पति हीना ॥ ( उमाना ) सररररर चलत समीर, घररररर  
 करत सरीर ॥ मररररर मरत समीर ॥ अलि केसी करुं तदबीर,  
 बुरी तकदीर, पीया विन प्यारी ॥ राजुलकूं वि० १ ॥ आवषमें  
 श्याम धनघोर, जरजोर बोलते मोर ॥ दाडुर मिल करते दोर,  
 पित्र पपश्या सोर ॥ ऊरु लग्यो वूंद ऊमऊोर, विच चमके दा  
 मनी कोर ॥ ( उमावनी ) खरुकरुकरु रवधनमाला, तरुकरुकरु  
 जल परनाला, अरुकरुकरु नाला खाला, में डुखी हुई बेहाल, हीयेंमें  
 साल, हुई जलधारी ॥ राजु० २ ॥ जाद्रवमें पवन प्राचीना, बाद  
 लमें धनुष रंगीना ॥ जंगलमें नदी स्वर जीणा, ज्युं बाजै मनोहर  
 बीणा ॥ अब एसें कहे क्या जीना, प्रीतमनें मुजे डुख दीना ॥  
 ( उमाना ) युं विलपत मुख मुरजाई, सखियन मिल दौरु जगाई,  
 युं विलखत वचन सुनाई ॥ सखी देखो पीयाकी रीत, तोरुके प्री  
 त, गये गिरनारी ॥ रा० ३ ॥ आश्विनमें जरा नही धीर, याडुचंद  
 जये वे पीर ॥ ऊठचली नेमके तीर, काटनकूं कर्म जंजीर ॥ प्रीतमसें  
 लीयो अकसीर, व्रत संजम समकित हीर ॥ ( उमाना ) शिव राजुल  
 नेम सिधाए, इंद्रादिक जसु गुण गाये, विजिन मिल शीश नमाए ॥  
 सुनि कहे कपूराचंद, प्रेमसे ठंद, जाऊं बलिहारि ॥ राजु० ४ ॥

॥ सुमति कुमतिकी विवादरूप लावणी ॥

चिदानंद महाराज राज हे, प्रितम दोनुं प्यारीका ॥ जगमा  
 दिल धरकर सुण लेणा, सुमति कुमति दोनुं नारीका० ॥ वि० ॥  
 कहंति सुमता सुणारी शोकन मोह लिया प्रितम प्यारा, अविरत उ  
 र कषाय इस्कमें झूल गया सुधबुध सारा ॥ तूं वैरण हे जनम२की

तेरा संग लगे खारा, तेरे वसमें हो गया प्रीतम पलक नही होता ।  
 न्यारा ॥ कहुं खराबी कव लगे तेरी तेरा चरत बंदगारीका ॥  
 जगमा दि० १ ॥ कहती कुमता सुणरी सुमता मेरा संग  
 अनादीका, वो मेरा प्रीतम इस्क जमर दे, इंद्रि पांच सवादीका  
 ॥ कर सिणगार कसाय सेलेके राग रंग उनमादीका, मेंहुं मोह  
 रायकी ललनी वो प्रीतम सहजादीका ॥ तेरे पाश नही आवेगा  
 वालम वो दे फूल हजारीका ॥ ज० २ ॥ सुण रे वैरत वात इ  
 मारी तेरे संग डुख पावेगा, तेरा मइल पाताललोकमें जहां वो  
 घास वसावेगा ॥ संगतके फल उसकूं लगेगा फिर पीठै पठतावेगा,  
 आखिर वेद देवेगी वैरण कैसे प्रीत निजावेगा ॥ में समजाउंगी  
 प्रीतम मेरा जो माने दिलदारीका ॥ ज० ३ ॥ कुमता बोली वात  
 सुमतसें तेरे संग क्या होणा दे, नही जहां वस्ती सूना मंदिर सुख  
 डुख दोउं खोणा दे ॥ खाणा पीणा नही जहां पर राग रंग नही  
 खोणा दे, नही ऊजावा नही अंधेरा शिखा सहज विठोना दे ॥  
 एसा मेरा जोग बोकके सहे न डुख अणगारीका ॥ ज० ४ ॥  
 कहती सुमता सुण भेरे प्रीतम इतकी संगत नही करणा, हुक  
 बक सोच करो दिल जीतर भेरी अरज दिलमें धरना ॥ निगोद  
 इस्की बोत कठिन दे समजके बूजके नहि पटना, पहली सुखसें  
 फिर डुख उपजै वो सुखसें चातुर मरशा ॥ रतन तीनका तूं दे  
 जोगी मुगति महल सिणगारीका ॥ ज० ५ ॥ एसे बोल सुणे  
 सुमताके चिदानंद उठके चह्ला, नेणोमें आंतु जर रोती प्रीतमका  
 ककया पछा ॥ मत ना वेद दिखावो साजन सोकणकी सुणके  
 पछा, में अबलासें दगा करोगे कैसे होय तुमरा जह्ला ॥ मेंहुं  
 दासी जनम२की मानो वचन करारीका ॥ ज० ६ ॥ तजके संग  
 कुमतनारीका सुमता प्रेम जगाया दे, संजमसे सिणगार चणाके



नहि खोलै, या दुनिया मुतलबकी गरजी बिन मुतलब मुख नहि  
 खोले ॥ सहज प्रीतकी रीत लगाणी फिर निजणी मुसकल होलै,  
 धन मानव जो प्रीत निजावै तरर अधकी रंगरोलै ॥ अरज वीनती  
 करकै राजुल वचन रसीला अणमोलै, जलदी आयजो नेमकुमरजी  
 मुगतिमहलमें रमजोलै ॥ ( नुमावणी ) हेवा चंदकपूर अपूरब  
 ख्याल वणावै, हेवा नरनारी मन रंग रागसुं गावै ॥ हेवा जांज  
 ताल रुफ होल मृदंग वजावै, हेवा आनंद हर्ष वधावै हे जी मन  
 वंछितफल पाजोगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोइ  
 देख्या रे हो सांवलिया सादिव धारा लागे रे० ॥ अश्वशेन घर  
 जनम लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरेण सुखकारी रे, चंद  
 वदन मनमोहन मूरति धारी रे ॥ हारे० सु० कोइप १ ॥ वातपणे  
 प्रभु अदभुत ग्यान सवाई रे, कमठ महा शठ मान हरयो दुखदाई  
 रे, मंत्र दियो हितकारी नाग सहाई रे ॥ हां० नाग० को० २ ॥ सिर पर  
 मुगट श्रवण कुंकुल हद जारी रे, कर श्रीफल जुजबंध जलक ठिक  
 धारी रे, गल मोतियनको द्वार बणयो गुलजारी रे ॥ हारे गु०  
 को० ३ ॥ पतित उधारण तारण विरुद बरुई रे, पारसर नाम  
 जपो वरुदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम वधाई रे ॥ हारे प्रे० को० ४ ॥  
 ॥ अथ केसरियानाथ लावणी ॥

सुणजो वातां राव सदाशिव, मत चढ जाणा धूलेवा ॥  
 गढ़पति उनका वरु अरुंगा, मत ठेसो तुम उन देवा ॥ सु० १ ॥  
 सकतावत चंदावत बोलै, हमही नोकर उनहीका ॥ हींउपति वाकूं  
 हाथ जोरै, तीन जुवन शिर हे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु  
 पाताल सबही, सुरनर वाकूं ध्यावत हे ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन  
 आवै, मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ३ ॥ गया राज उनहीसिं  
 आवै, निर्धनियाकूं धन देवै ॥ बांज खिलावै सुंदर लरुका, सदा

सुखी जो प्रभु सेवे ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग  
निवारे जवशकां ॥ नूप नृजंग महार करि नदियां, चोरन बंधनं  
अरिदवका ॥ सु० ५ ॥ धौ धौ धौ धौ धौसा वांजै, दशो दिशामें  
हिंका ॥ जात तातिया नहीं जलाइ मतें वतलाओ गढ़ वंका ॥  
॥ सु० ६ ॥ राणाजीके कुमरावकी, मानत नहिं हेये वातां ॥  
आंरा कीया श्रेहीज पावो, म्हे नहिं आंवां आं साथां ॥ सु० ७ ॥  
मूंठ मरोन चढां अजिमाने, जहर जरा है निजरूममें ॥ रुपनदेव  
हे साहिब सन्ना, देख तमासां फजरूममें ॥ सु० ८ ॥ मयाराम सुत  
जणे मूलचंद, वने सितंबर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घर र घोमां,  
खजा राखो तुम देवा ॥ सु० ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ केसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जिनंद जित्त-  
राज ॥ धुलेवनाथ जाचो धणी, वरुण श्रीमहाराज ॥ १ ॥ ( चाल  
लावणी ) काश्यपगोत इन्द्रवाकु वंशमें, मरुदेवा जननी जायो ॥  
नाजि नरेसर वंश उजालन, आदि धर्म जस प्रगटायो ॥ २ ॥  
चोसठ सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरपे न्हवरायो ॥ इसी  
रुपन निधि प्रगट कल्पतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ ३ ॥  
खरगदेशमें नगर धुलेवे, जास ददामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा  
अपरंपारा, कविजन कीरत करता हे ॥ ४ ॥ आदौ मुरत काल  
असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद  
युग, बलि पूजत सूरज चंदा ॥ ५ ॥ लाख इग्यार हजार पंचाली,  
वरस पांचसे पचासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पूजित रावण  
गुणारासा ॥ ६ ॥ रामचंद्र शीता अरु लवमन, ए मुरत पूजन  
लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अर्धविच, नयर उकेरी वहराए  
॥ ७ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, वा-

पकरम अरु आपकरमकी, जई लमाई मरमनकी ॥ ३ ॥ आपक-  
 रमके ऊपर नृपने कुष्टो वरपे परणाई ॥ मयणा चिते काई नवाई,  
 करम लिखी सो बन आई ॥ ७ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन,  
 आई श्रीजिनमंदिरपे ॥ वंदन पूजन करके इक चित, ध्यान धरै  
 मनकंदरपे ॥ ८ ॥ ( मोतीदाम ठंड ) तूंहि अरिहंत तूंहि  
 जगवंत, तूंहि जिनराज तूंही जग संत ॥ तूंहि जगनाथ तूंहि  
 प्रतिपाल, तूंही मनमोहन तूंही दयाल ॥ १ ॥ तूंहि जवजंजन  
 ज्ञाव सरूप, तूंहि अरिगंजन रंजन जूप, तूंही अविनासी  
 तूंही वीतराग, तूंही माहाराज तूंही वरुजाग ॥ २ ॥ तूंही गुण-  
 धाम तूंहि विसराम, तूंहि नवनिद्ध तूंहि वरु नाम ॥ तूंही अघ-  
 नाश तूंहि अविनाश, तूंही मतिवंत तूंही मतिवास ॥ ३ ॥ तूंही  
 गुण केवलरूप अनंत, तूंही जगतारन तारण संत ॥ तूंही जग ध्येय  
 तूंही जग ध्यान, तूंही चिदरूप तूंही जगवान ॥ ४ ॥ तूंही मम  
 तात तूंही मम मात, तूंही मम बात तूंही मम बात ॥ तूंही  
 सरणागत राखणहार, तूंही दुख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥ (चाव  
 लावणी) ॥ करुं अरज एक तोपे जिनपति, कंत कुष्टसें नही मरते  
 ॥ पूरब करमके लिखत लेख जे, किसके टारे नहीं टरते ॥ ६ ॥  
 पण तुऊ शासन जगत हेलना, जगत ढंढेरा वाजत हे ॥ आपकर्म  
 अरु जैनधर्मके, फल पाई यों लाजत हे ॥ ७ ॥ यो दुख मोसें  
 सह्यो जात नही, आदिनाथ जग रखपाला ॥ करुणाकरके रोग  
 निवारण, गुण कीजै जग प्रतिपाला ॥ ८ ॥ यह प्रसन्न हुय फल  
 बीजोरो, हाथतणो फल तब दीनो ॥ मयणा तब उद्धास जई  
 मन, चिते सब कारज सीनो ॥ ९ ॥ नौ दिन नमण नीर तनु  
 फरसें, कुष्टरोग सब नासत हे ॥ कामदेव अरु अमर समोवरु,  
 नृप श्रीपाल सोहानत हे ॥ १० ॥ या कीरत प्रभु तिहारी चूतल,

प्रगट प्रबल हे जस तेरो ॥ आसू चैत्र मासमें महिमा, देशमें  
 प्रजु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागुदेश वमोद नगरमें, जंग पर प्रजु क-  
 रणा कीनी ॥ कितने वरस लग महीमें महिमा, अविचल जूतल  
 रुद्धि दीनी ॥ ७ ॥ दिल्ली पर तुरकान जयो तव, पातस्याह ल-  
 रवा आयो ॥ वूत जूत पत्यरकी मूरत, जरुमुल्लासें उखरायो ॥  
 ॥ ८ ॥ बहुत दीनां लग की विलराइ, आको यों वाचा बोले ॥ देव  
 हिंदको वमो जागतो, यूं बोलत फिर मोले ॥ ९ ॥ सुनो वात  
 काजी मुल्लां तुम, एक वातसें त्रासेगा ॥ गौ ब्राह्मण प्रतिपाल क-  
 हाई, गो वधसें ये नासेगा ॥ १० ॥ गो वध करण लगे जब निज  
 रे, देख सके क्यों प्रतिपाला ॥ करण युद्ध जब जये महाबल,  
 शत्रु ऊनोऊन विकराला ॥ ११ ॥ ( दूहा ) महा युद्ध करणे लगे,  
 धाव चोरासी अंग ॥ करी मलोखा गारुली, आये धुलेव सुरंग ॥ १२ ॥  
 ( चाल लावणी ॥ ) गांव धूलेवां वंशजालमें, गुप्त रहे हैं प्रजु  
 भरती ॥ गाय एक कोमी वनियनकी, आइ वाहां चरती २ ॥ खवे  
 तिहां पयधारा शिर पर, सांज समें फिर नही दूजै ॥ रीत करी  
 तव गोपालन पर, गौपाल थरहर धूजै ॥ दूजे दिन गौ लारे आयो,  
 लह्यो जेद कह्यो वनियनपें ॥ शेठ आय जब नजरे देख्यो, चकित  
 जयो हे तन मनपें ॥ ३ ॥ मध्यरातमें सुपनो दीनो, रूपजनाथकी  
 मूरत हे ॥ बहिर निकासो करो लापसी, जीतर मूरत पूरत हे ॥ ४  
 ॥ नव दिनमें सब धाव मिलासी, मत कांढे तूं नव दिनमें ॥ कियो  
 सेठने हुकम प्रमाणे, आये संघ बहु ठ दिनमें ॥ ५ ॥ केइ उपवांसी  
 केइ व्रतधारी, केइ अलुआणे पांव चलै ॥ केइ लोककूं उ-  
 कर वाधा, कव प्रजुको दरशन मिले ॥ ६ ॥ यूं सब लोकां दरस  
 तरसकी, कहे लोक मूरति काढो ॥ लाओर महाराजकी मूरत,  
 संघ सबे लीनो आमो ॥ ७ ॥ जवरदस्तसें दिवस सातमें, लापसी

बाहिर तब कीने, अंतर जर वरण रहाए, संव लोक दर्शन दीने ॥  
 ॥ ८ ॥ फिर सुपनेमें डव्य दिखायो, संघे मिल देवल कीनो ॥  
 मध्य विराजै रुषज तखतपर, कलियुगमें यो जस लीनो ॥ ९ ॥  
 ( दूहा ) संवत अढ़ारे तेसठे, जानु सदाशिव राय ॥ कियो धंगानो  
 डुष्टने, जाखूं वरण बताय ॥ १ ॥ ( मोतीदाम ठंड ॥ ) सदा-  
 शिव राय चिते मन एह, लूटे बहु धाम जमी पर जेह ॥ जिह्वां  
 पति नाथ धुलेव कहाय, लखो लग डव्य जंजार सुणाय ॥ १ ॥  
 जावां अब लूटेण गाम धुलेव, ग्रहं सब माल जई ततखेव ॥ आयो  
 निज फोज लेई बल गाज, तोपां दोय साथ लिया बहु साज ॥ २ ॥  
 कंपु दोय लार लिये फिरंगाण, जंग जर साथ लिया कोकवाण ॥  
 तवां बहु लोक कहे महाराज, नही इह कारण कृत्य अकाज ॥  
 ॥ ३ ॥ एतो वह जाजल देव कहाय, रहे नहीं लाज ति  
 हारिय काय ॥ तवां फिर बोले सदाशिव रूप, ग्रहां सब माल  
 अवां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत डुष्ट कछर, कियो नज  
 राणह नाथ हजूर ॥ राखयो नही नाथ तवे नजराण, जयो मन  
 चकितमान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चित जंजारी बुलाय, मीठे  
 वच बोल सबे ललचाय ॥ लई संग आय मुकाम मजार, कियो  
 तब कूच लई सब लार ॥ ६ ॥ करे तब गाम पुकार, जंजारी सबे  
 इ पुकार ॥ करे अब बाहर नाथ दयाल ॥ गयो किहां आज  
 गरीब निवाज ॥ चढो अब बाहर राखण लाज ॥ ७ ॥ ( दुहा )  
 उण समे कोउ सेठको, बाहण तारण काज ॥ मये अधिष्टायक  
 नाथजी, जेरुं गये वहागाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी  
 सहेर धुलेव मजार ॥ कियो अकारज डुष्टने, शीघ्र चलो जन तार  
 ॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा जन संजात ॥ दो घौमे  
 दोनुं चढे, जेरुं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ जिह्वा कोप आपे कियो, द-

धा दिशि फौज हजारें ॥ मारत चो तरफतें, जई लमाई तयारें ॥  
 ४ ॥ ( जुजंग प्रयात वंद ) कूकू कुकू कुकू वहे कोकवाणें, संखा-  
 णें सणणें तीरें तरकस्त वाणें ॥ धुवाके धमाके वहे नील गोला,  
 जिसा कर्कसा जम्मरा नयनमोजा ॥ १ ॥ किते अंगपें शखरा  
 धाव लागे, किते मारतें कंपते दूर जागे ॥ किते दंतपें तिरण लेवे  
 वराका, कितें थरथरे त्रास होवे तिराका ॥ २ ॥ किते रसुद्धाई-  
 लछ्मा पुकारे, किते दीन होके खुदापें संजारे ॥ कितें नाथपें केस-  
 रा खून माणें, किते नाथकूं जागती ज्योत जाणें ॥ ३ ॥ सदाशि-  
 वनें धाव लागे अटारो, पुनी ज्ञान जसवंत दोनुं संहारो ॥ वनो  
 कोप जाणी सवे फोज ज्ञाजी, दुई केशरीनाथकी जोत वाजी ॥ ४ ॥  
 सदाशिवने आखनी अटक लोनो, सवापांचसें रकमरो खून दीनो ॥  
 इसो नाथ धुलेवरो मर्दगाजी, सदा केशरानाथरी जोत वाजी ॥ ५ ॥  
 ( दूहा ) या विद्य कलियुग जग जणा, तारया केई जिनराज ॥  
 दीपविजय कविराजकूं, महेर करो महाराज ॥ १ ॥ ( मोतीदाम  
 वंद ) तूंही नवनिद्ध तूंही अमसिद्ध, तूंही मनवंठित वंठित रुद्ध ॥  
 तूंही तिरदार तूंही किरतार, तूंही सरणागत दीनवयाल ॥ २ ॥  
 तूंही कामकुंज तूंही कामधेन, तूंही सुरवृद्ध तूंही मम शेन ॥  
 तूंही दक्षिणावर्त दायक देव, तूंही वितराम तूंही वरु सेव  
 ॥ ३ ॥ तूंही मम प्राण आधार जरूर, तूंही मम इच्छित दायक  
 नूर ॥ तूंही मम झूप तूंही पतसाह, तूंही मम कंध फंमार अगाह  
 ॥ ४ ॥ तूंही मम मंत्र तूंही मम यंत्र, तूंही मम सत्य तूंही मम  
 तंत्र ॥ तूंही गणनायक तूंही श्रीपूज्य, तूंही मम पूज्यतूंही जग-  
 पूज्य ॥ ५ ॥ ( लावणी चाल ) नाथ धुलेवा कीरत सुणके, देश  
 नृप आवत हे, केशरमें गरकाव रहते, केशरनाथ कहावत हे  
 ॥ १ ॥ सहर परगणे देश दिशावर, फिरे उदाई नाथनकी ॥ दिंड

मूसल वरु राणा हाजर, पूरै इच्छित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट  
 अलवट वाटघाटमें, रण रावल डुख दूर हरै, इक चित्त ध्याने जे  
 नित समरे, अखय खजाना अजर जरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप  
 धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गरुगरु दौ गरुगरु दौ गरु-  
 गरु, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह ऊदेपुर, ज्जीम-  
 सिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें  
 ॥ ५ ॥ संवत अठार पञ्चोत्तर वर्षे, फागुण सुदि तेरश दिवसै ॥  
 मंगलके दिन दीपविजयकूं, दर्शन परशन दो उलसे ॥ ६ ॥ (क-  
 लश-ठप्पय ठंड ) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल  
 हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, जरण पौष पावन करन ॥ जुगलधर्म  
 नीती हरन, सब करम उंघ घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि दरन, सु-  
 कनु वरन शुद्ध चरन, इंड़ चंड पदजुगल सेवन, जगत विरुद्ध तार-  
 नतरन ॥ दीपविजय कविराज बहाडुर, ऋषजनाथ असरनशरन  
 ॥ १ ॥ ऋषजनाथ महाराज, सबे डुख दालिड़ जंजन ॥ ऋषजनाथ  
 महाराज, सबे नूप मनरंजन ॥ ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, समरथो  
 बाहर धाये, ऋषजनाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय  
 कविराज बहाडुर ॥ खलक मुलक हाजर रहै, कलिजुग जयो देव तुं,  
 सुरनर सब कीरत कहै ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रन्नकी, जन्म बनारशी हे जिनका, घ-  
 ननं घननं वाजै घंटघण, एसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥  
 जब कमठासुर कोप कियो तब, स्यामघटा बिजुरी चमका ॥ गिरु  
 आ गाज जल मूसलधारा, धरु धरु काजन शंका ॥ आ० २ ॥  
 अरर आशन कंफे सुरको, तब धरणीधर चित्त चमका ॥ फण  
 विस्तार हजार किया तब, जमक जाय प्रभु तन टंका ॥ आ० ३ ॥

जब पदमावती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ ध्रमकश्  
 धौं मादल वाजत, धननं धुग्घरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी-धी-धी  
 कट नौवत वाजै, धौं धौं कट डुंडुंजि धौंका ॥ या विध गीत संगीत  
 बजन सब, गंधर्व गान करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररर तंत  
 ताल सब, रफ मौं मौं करते मंका, जेरण फेरणके जनकारे,  
 जागरुदी जालरके जंका ॥ आ० ६ ॥ सुरनर इंडु सब जै जै करते,  
 जीवत सफल जया जिनका ॥ अमृत उदय तिण वेर जयो  
 सुख, को विस्तार कहै तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलनी ॥ आ० ॥  
 घना एकसो आठ जेलनी, रस जरिया ठै नीका ॥ उलटजाव  
 श्रेयांश वहिरावै, मांरु दिवीआठूकरे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंडुजी  
 वाज रही है, सोनइयारी वरखा ॥ वारे माससूं कियो पारणो,  
 गई जूप सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ रुद्रि सिद्धि कारज मनोका-  
 मना ॥ घरर मंगलाचार ॥ डुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा  
 त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेतूंजा सिद्धेत्त्र हे, मोटो कहिये  
 धाम ॥ श्रीसंधका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥  
 संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ वे करजोनी  
 नानु कहता, रूपजदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजितनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर  
 जी ॥ सेवक शिरनाभे, तने उच्चारे अरजी ॥ कर माफी मारा  
 बांक, रजलियो रांक, अनंता जवमें ॥ अ० ॥ आब्यो तुं तारा  
 शरण, बली दुख दवमें ॥ क्रोधाधिक धुकता चार, खरेखर खार,  
 लग्या मुऊ केने ॥ ल० ॥ बली पापी म्हारो नाथ, वेक गंठेने



॥ आ मुजरो मुज जगवान, करुं गुणगान, ध्यानमां धरजी ॥ धा०  
॥ सेवक० १ ॥ में पूर्ण कर्यां वै पाप, सुणजो आप, करुं  
करजोमी ॥ क० ॥ मुज जूंमां जगवान, जूल नही थोमी ॥ जो  
वहिंसा अपरंपार, करी किरतार, हवे सुं करवुं ॥ ह० ॥ जूं बहु  
बोली, साचने सुं हरवुं ॥ तुज खोलामां मुज शीश, जाण जगदा  
श, गमे ते करजी ॥ ग० ॥ सेवक० २ ॥ में किया बहुत कुकर्म,  
धरी तहि धर्म, पूर्ण हुं पापी ॥ पू० ॥ अवलो अइ थारी आण में  
ज उत्थापी ॥ में मुरख निंदा घणी, मुनि पर तणी, करी हरखायो  
॥ क० ॥ परदारा देखी लवान, हुं ललचायो ॥ किंकर कहे केशव  
खाल, आणीनें व्हाल, डःख तुं हरजी ॥ ड० सेवक० ३ इति पदं ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी लावणी ॥

पिया मेरा हो गिरनार सिधाए, हम संग मोह निवारयो रे  
॥ समुद्रविजै सुत नेमजी रे, सब जादव सिरताज ॥ नायक ती-  
नों लोकके रे, गुणनिध गरीबनिवाज ॥ मो० १ ॥ बहोत हगंसुं  
ध्याह मनायो, हलधर कृष्ण मुरार ॥ षट्पंचाश कुल कोटि प्र-  
माणे, जादव उनके लार ॥ मो० २ ॥ खूब वरात वणायके रे,  
छग्रशेन दरबार ॥ आए प्रजुजी हरखसूरे, चढगये गिरनार ॥ मो०  
३ ॥ पशुवन पर कीनी दया रे, मो पर कीनो रोस ॥ बिन अब  
गुण बोमो मती रे, कोइ नही वै दोस ॥ मो० ४ ॥ सावण सुद  
पधी दिने रे, इंड चंड परिवार ॥ दीक्षा लीधी शुज मनै रे, करम  
दिया सहु जार ॥ मो० ५ ॥ नेत्र हुताशन नंदकू रे, चैत्र शुक्ल  
शुज वार ॥ श्रीजिनहंस सूरीसरू रे, श्रीखरतर गणधार ॥ मो०  
६ ॥ राजुल पहली नेमसुं रे, मुगतिमहलमें जाय ॥ प्रीत निजाई  
जुगतसुं रे, रुद्रसार गुण गाय ॥ मो० ७ ॥ इति पदं ॥

दूहा ॥ इक पोथी अरु पदमनी, नहिं दीजै पर इत्थ, वा

विग्नै पंक्ति विना, वा विग्नै पर सत्र ॥ १ ॥

॥ अथ दिवाली स्तवनं ॥

धन२ मंगल एह सकल दिन, पूजा प्रजाते चाली रे ॥  
 आज म्हारे दीवाली अञ्जुवाली ॥ १ ॥ गावो गीत वधावो गुरुने,  
 मोतोमे थाल पूरावो ॥ चार२ आगे चतुर सुहागण, चरण कमल  
 चित्त सारी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ धन धूज धनतेरस दिवसे, काले चव  
 दश काली ॥ पाप हरणने पोसो कीजै, कर्म मेलो संव टाली रे ॥  
 आ० २ ॥ अमावसकी परव दिवाली, फरती जाकज्जमाली, धर२  
 तो दीवलिया जलके, रात दीसै अञ्जुवाली रे ॥ आ० ३ ॥ अम्मा  
 वंशकी पिठली राते, अवि कर्म सब टाली, श्रीमहावीर निरवाणे  
 पोइता, अजरामर सुखकारी रे ॥ आ० ४ ॥ पन्निवाने दिन जुहा  
 रंपटोला, ए रत रूनी सारी ॥ गुरु गौतमना चरण पखाली, रीज  
 पामी रहियाली रे ॥ आ० ५ ॥ बीजे तो वली जावन्नीजरु, वे  
 नरुली अति वाहाली ॥ ए पांचे दिन होया रे पनोता, एवे२ ह  
 रखे गाई रे ॥ आ० ६ ॥ हरख विजय पंक्ति इम बोले, करो स  
 हु सेव सुहाली ॥ रूपविजय पंक्ति गुण गावै, जय२ बाजै ताली  
 रे ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे दीवाली रे अई  
 आज, प्रभुमुख जोवाने, सख्या२ रे सेवकना काज, जवडुःख खो  
 वाने १ ॥ महावीरस्वामी मुगते पुइता, गौतम केवलज्ञान रे ॥  
 धन अमावस्या धन दीवाली म्हारे, वीरप्रभु निरवाण ॥ जिन मु०  
 २ ॥ चारित्र पाढ्या निर्मलाने, टाढ्या ते विषय कप्राय रे ॥ एह  
 वा प्रभुने वांदिथेतो, उतारे जव पार ॥ जिन मु० ३ ॥ वाकुला  
 वदोस्या वीरजीने, तारी चंदनवाल रे ॥ केवल लइ प्रभु मुक्ते पो  
 इता, पाम्या जवनो पार ॥ जिन मु० ४ ॥ एवा मुनिने वांदिथे  
 जे, पंचम ज्ञानने धरता रे ॥ समवसरण देइ देशना रे, प्रभु ता

स्था नरने नार ॥ जि० ५ ॥ चोवीशमा जिनेसरू रे, मुकतितणा  
दातार रे ॥ करजोकी कवियण एम जणे, मारो जवनो फेरो टाळ  
॥ जिन मु० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेव स्तवनं ॥

॥ पोढोर जी रुषज विहारी, निद्रा वश नयण तिहारे ॥  
पो० ॥ प्रजु आलस अंग हुलसाई, पूठै मरूदेवा माई ॥ पो० १ ॥  
प्रजु नंदा सुमंगला राणी, उन रुचर सेज विठाणी ॥ पो० २ ॥ प्र  
जु नवलसु नेह सनेहा, प्रजु मनवंठित फल देहा ॥ पो० ३ ॥  
प्यारे सेवक हितकर गावै, मनवंठित फल पावै ॥ पो० ४ ॥ अ  
जर अमर पद पावै, करजोकी शीश नमावै ॥ पो० ५ ॥ इति ॥

॥ मंगल स्तवन ॥ राग सामेरी ॥

॥ कीजै मंगल च्यार, आज घरे नाथ पधास्था ॥ कीजै० ॥  
पहिले मंगल प्रजुजीकूं पूजूं, घसी केसर घनसार ॥ आ० १ ॥  
वीजुं मंगल अगर् उखेवुं, कंठै ठवुं फूलहार ॥ आ० २ ॥ त्रीजे  
मंगल आरती कृताहं, घंट वजाणं रणकार ॥ आ० ३ ॥ चौथे मं  
गल प्रजुगुण गाणं, नाचू थै थैकार ॥ आ० ४ ॥ रूपचंद कहै ना  
थ निरंजन, चरण कमल जाणं वार ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि जेटो रे, जविजन सुखकारा ॥ सि० ॥  
प्रथम जिनंदे ए गिरिना गुण, जारुया विविध प्रकारा ॥ इण गिरि  
साधु अनंता सीधा, एदनी हुं बलिहारा रे ॥ ज० सि० १ ॥ रु  
पज्ज जिनेश्वर पूर्व निनाणूं, समवसरया सुखकारा ॥ रायण तल  
पगला प्रजु जेव्या, पाप पंक मल हारा रे ॥ ज० सि० २ ॥  
चोमुख विंव मनोहर अदजुत, दरशण अतही उदारा ॥ मूलना  
यक श्रीआदजिनेश्वर, पूजत डख सहु वारा रे ॥ ज० सि० ३ ॥

मात चक्रेशरी गिरवर ऊपर, चक्र हस्त विच धारा ॥ उष्ट  
 निवारण सुमति वधारण, राजत संघ रखवाला रे ॥ ज० सि० ॥  
 ४ ॥ खरतर गच्छ नायक सुख दायक, कोरत जग विस्तारा ॥ गु  
 ण आगर राजत अति सुंदर, हंस सूरि गुणधारा रे । ज० सि० ५  
 ॥ संवत उगण वत्तीसे कार्तिक, शुक्ल पक्ष मनुहारा ॥ पंचमी दिन  
 मनै हर्ष धरीने, जात्र करी जयकारा रे ॥ ज० सि० ६ ॥ वर्मशील प  
 दपंकज सेवक, कुशल निधान उदारा ॥ तास पशाये गिरवरना  
 गुण, पन्नणे मुनि रुस्तारा रे ॥ ज० सि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपदजीकी लावणी ॥

जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले नारी ॥ प्रथम  
 पद तीर्थपती राजै, दोष अष्टादशकूं त्याजै ॥ आठ प्रातीहारज  
 नजै, जगत प्रभु गुण धारै साजै ॥ ( दोहा-साखी ) अष्ट करम-  
 दल जीतके, सकल सिद्ध ते धाय ॥ सिद्ध अनंता नजो बीजे पद,  
 एक समय शिव जाय ॥ प्रगट नयो निज स्वरूप नारी ॥ ज०  
 १ ॥ सूरिपदमें गौतम केशी, उपमा घंड सूरज जेशी ॥ उमारयो  
 राजा परदेशी, एक नव मांहे शिव लेशी ॥ ( दोहा-साखी )  
 चोथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी उवझाय ॥ सद्य साहु पंचम पदे,  
 धन धनो मुनिराय ॥ वखाणयो वीरजिणंद नारी ॥ ज० २ ॥ द्र  
 व्य पट्टकी श्रद्धा आवै, सम संवेगादिक पावै ॥ विना यह ग्यान  
 नही किरिया, जैनदरशनलें सब तिरिया ॥ ( उहा-साखी ) ज्ञा  
 न पदारथ सातमें, पदमें आतमराम ॥ रमता रम्य अध्यातमें,  
 निजपद साये काम ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ ज० ३ ॥ जो  
 गकी महिमा बहु जाणी, चक्रधर गोनी सब राणी ॥ यती दश ध  
 रम करी सोदो, मुनि श्रावक सब मन मोदो ॥ ( उहा-साखी )  
 करम निकाचित कापवा, तप कुठार कर ध्याय ॥ रुमा युत नव-

सा पद धरै, कर्म मूल कट जाय ॥ नजो तुम नवपद सुखकारी ॥  
 ज० ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र नजो नार्ई, अचामल तप विधिसें आई ॥  
 पाप त्रिहुं जोगे परिहरजो, नाव श्रीपाल परे करजो ॥ ( दूहा-  
 साखी ) संवत जगणीस सतरा समें, जैपुर श्रोजिन पाश ॥ चैत्र  
 धवल पूनम दिने, सफल फली मुऊ आश ॥ बाल कहै नवपद  
 ठवि प्यारी ॥ ज० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चाल इंसजाकी ॥  
 ध्यान धरो नवपदका चेतन, दूर करो मद मान ॥ नवपद जे  
 सा जगसें तारण, मिलणा नही असान ॥ १ ॥ हृदयकमलमें  
 जिसने ध्याया, सो पाया निर्वाण ॥ रुद्धि वृद्धि रमणी सुत संपत,  
 इनका कौनकथान ॥ २ ॥ कुष्ठ जगंदर राजरोग सब, जूत प्रेत  
 बल नाश ॥ नवपद जैसा निरजध शरणा, फेर करो क्या आश  
 ॥ ३ ॥ अष्ट कमलदल रचना सोहं, अर्है पद अरिहंत ॥ सिद्धसूरि  
 जवजाय मुनीश्वर, दर्शन ज्ञान महंत ॥ ४ ॥ चारित्र तप इस नव  
 पदके विच, सब जगका अवतार ॥ जिन अनंत हो गये फिर  
 होंगे, कोइय न पाया पार ॥ ५ ॥ इनको महिमा कहां लग बरण,  
 मेंतो अधम अज्ञान ॥ महिर नजर कर दीजिये, परमानंद सुधान  
 ॥ ६ ॥ चैत्र माश आश्विन सुदि सातम, आंधिल व्रत उजमाक ॥  
 सुरनर जूपति सेव करत हे, महिमा सुण श्रीपाल ॥ ७ ॥ श्रीवि-  
 मलेश्वर यह सहार्ई, वरचक्रसरि मात ॥ उठव विविध करै मन  
 शुद्धसें, त्रिजुवन होत विख्यात ॥ ८ ॥ कर्म दलन अब मिलन  
 जिनंदसें, में पाया आधार ॥ कुशल निधान कृपासें आनंद, जयश  
 श्रीरुद्रसार ॥ ए॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ (रथ चढ जडुनंदन  
 आवत हे ॥ ए चाल) ॥ चलो शखी जिनमंदिरमें, जग नवपद  
 महिमा गाजत हे रे ॥ च० ॥ रूप अनूप तस्किंति प्रज, मदन  
 चंड ठवि लाजत हे रे ॥ च० १ ॥ सिद्धचक्र धुर तीन तरासें, व-

सुधा पीठ विराजत हे, तीर्थनाथ सिद्ध पद सूरी, पाठक मुनि  
कर वाजत हे रे ॥ च० २ ॥ श्रद्धा शुद्ध प्रकाशक चिदधन, चरण  
निरजरा साजत हे ॥ परम करण मन वंशित दायक, अतुल सु-  
जश जग वाजत हे रे ॥ च० ३ ॥ नरवर रमापाल तुम गुणरश,  
ज्ञाति अरुज सब ज्ञाजत हे ॥ ध्यान रंग मन संग एकसे, जग  
दानंद निवाजत हे रे ॥ च० ४ ॥ शंभुव ज्ञुवन पुरी वासुचर,  
अंतरंग अरि दाजत हे ॥ शंकर बृहदेव तुम ध्यावै, गोविंद चरण  
भाजत हे रे ॥ च० ५ ॥ शिखर हरख माणक अरु तारा, तन द्युति  
उपम काजत हे ॥ मंत्र मणी तुम जफ़ी नामकी, लखमी लोक  
पराजत हे रे ॥ च० ६ ॥ दीजे कुशल निधान जक्तिजर, रुद्रसार  
सुख राजत हे रे ॥ च० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पार्श्वनाथकी होरी ॥

सांवरो लागे प्यारो, प्रभु मनमोहनगारो ॥ सां० ॥ अश्वशेन अ-  
शंज कुल दिनमणि, अधम उधारणहारो ॥ प्रभु सूरत निरखणतें  
प्रगढ्यो, आनंद हरख अपारो, दयानिधि जक्तकूं तारो ॥ सां० १ ॥  
चंद चकोर प्रेमरश आतुर, ज्युं जितराज द्वीदारो ॥ लगन तिहारो  
दरश शरसकी, केसें नाथ विसारो, तुंही प्रभु प्राण आधारो ॥  
सां० २ ॥ सुंदर रूप चंद्र चदनामृत, नयणकमल उजियारो ॥  
धनर आज दिवशाकी महिमा, जीवन नाथ जुहारो, बन्यो रंग  
सरस हजारो ॥ सां० ३ ॥ गंज अजीम सुवस थिर श्रीसंध, करत  
सदा जयकारो ॥ रामवाग विच इंद्रजुवन ज्युं, मंदिर सरस तिहारो,  
बन्यो अति सुख दातारो ॥ सां० ४ ॥ उगणीसें अरुतालीश शुभ  
दिन, वस्तपंचमी धारो ॥ पाठक हितवृत्त बहु विधतें, चैत्य  
प्रतिष्ठा सारो, कुशल निधी कहै रुद्रसारो ॥ सां० ५ ॥ इति पदं ॥  
पुनः ॥ (हमकूं गान चले ॥ इति चालमें होरी) ॥ आज

सुरंग घन वरसत होरी, पारसप्रभुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत  
 बाग गगन जिनमंदिर, सजल घटा सुविलास रे ॥ श्याम मनोहर  
 तन बवि दमकत, चमकत दामनी ज्ञास रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु  
 आनन अमृतरश धारा, ऊनी लगी शक राश रे ॥ चात्रक रटत  
 वचन मन मेरो, प्राण प्रभुकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कवाण  
 इंधनुषनकी, हिलमिल जमर उजास रे ॥ अपठर गान करत  
 सुर वनिता, कोयल वचन उद्धाश रे ॥ आ० ३ ॥ धिर चित्त  
 लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अबिर सुवाश रे ॥ तन मन प्रीत  
 जरी पिचकारी, बेलूं प्रभुसैं कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गु-  
 लाब फूल चुन चौसर, गुंभ्र मणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान धरो  
 बतियनपैं, रुद्धसार प्रभु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका बारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा रुषभ गया क्युं व-  
 नमें, प्रथम महीना जी लग्या आशाढ चोमाशा, इंद्र वरषणकी  
 आशा ॥ मरुदेवाजी मनमें जई उदासा, प्रभु रुषभ गये वनवासा  
 ॥ ( दूहा-साखी ) रुषभ प्रभु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥  
 जरतादिक सौ पूत्रकूं, वांट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सबही जी  
 मगन होय रहे धनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी फिरमिर  
 मेहला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ जरतादिक जी सौ पूत्र-  
 नके रुसैं, मेरा नंद निकल गया घरसे ॥ ( दूहा-साखी ) नगर  
 अयोध्या युं जरै, गये कहां महाराज ॥ दे नलंजा जरतकूं, मेरा  
 पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी  
 गिनमें ॥ मे० २ ॥ जादू महिना जी तज धन दोलत माया, वो  
 गया शकेली काया ॥ जरतादिक रे तुम मनमें हरखाया, राज ये  
 विना कमाये पाया ॥ ( दूहा-साखी ) नित नव नाटक होत हे,

कर रहै जोगविलास ॥ सब माया या रूपनकी, गोरु गया वन-  
 वास ॥ हेजी जगतारण जी डुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३ ॥ आ  
 सू महीने जी सूरतकी ठिव लागी, वो होयगया वैरागी ॥ धनके  
 सब लोत्री जी पूत्र जये नीरागी, कत्री खबर न लो वरुजागी ॥  
 ( दूहा-साखी ) जरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप  
 ॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रजु आप ॥ इंड पद सेवे जी  
 नहीं दे रती विघनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महीना जी कब वो रू-  
 पन घर आवै, मोहे नेणा आण वतावै ॥ नही कागद जी मुऊकूं  
 पूत्र पठावै, मेरा जीव बहोत डुख पावै ॥ ( दूहा-साखी ) जुरती  
 निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ उरकर मिलती रूपनसें,  
 जो देत विधाता पांख ॥ मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते घनमे ॥  
 मे० ५ ॥ मिंगसर महीना जी जरत बाहुवल जाई, आपसमें करे  
 लमाई ॥ जरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढ-  
 कर आई ॥ ( दूहा-साखी ) वारा वरस लरते जये, इंद दिये सम  
 जाय ॥ चक्रवर्ति वनता गये, जये चंद्रपश राय ॥ हे जी तो तप  
 कारण जी खमे बाहुवल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महीना जी  
 पमे ठंरुका पाला, रुत आया कठिन सियाला ॥ कहां होगा  
 जी रूपन जगत प्रतिपाला, में रटुं रूपनकी माला ॥ ( दूहा-साखी )  
 कोइ परवतकी उंदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंरु तापकी विपतमें, सहै  
 बहोत डुख धंद ॥ जरत मेरे सुतका जी नही फिकर तेरे मनमें ॥  
 मे० ७ ॥ माहका महीना जी किसैं कहुं डुख मेरा, सब पूत्र विना  
 अंधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे रूपनका  
 बेरा ॥ ( दूहा-साखी ) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥  
 राज रमणकी संपदा, वो गया ठिनकमें गोरु ॥ एसा निरमोही जी  
 पटका विरह दहनमें ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें



ज़रती, सूने मन घरमें फिरती ॥ ज़रत यूं केता जी सोच फिकर  
 क्युं करती, रहे निशदिन मुजसै लरती ॥ (दूहा-साखी) ज़रत विविध  
 तर ज्ञांतसों, कहता वात वनाय ॥ वनपालक नयानके, दीवी वधाइ  
 आय ॥ प्रज्ञू पनधारे जी सेवित हे मुनिजनमें ॥ मे० ए ॥ चैतका  
 महीना जी ह्ये गय रथ सब त्यारी, सिणगारी सेन्या सारी ॥  
 ज़रत कर जोमे जी मरुदेवा मनुहारी, चल देख पूत्र सुखकारी ॥  
 (दोहा-साखी) इंद्रध्वज आगे चले, जामंरुल हे लार ॥ चोसठ  
 चमर सुरपति करै, डुंडुनी गगन मजार ॥ एसो सुत तेरो जी  
 विलसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ माश वैशाखां जी मरुदेवा  
 मन हरखै, जब रुषजप्रज्ञू मुख निरखै ॥ नैणपट नयन्या जी वीति  
 राग पद सरखै, चढ शुक्ल ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा-साखी) गज ऊपर  
 मुगती गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पहली शिव जननी दई, एसें रु-  
 षज सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रज्ञू मगनमें ॥ मे०  
 ११ ॥ जेवका महीना जी रुत गरमीकी आई, में रुषज चरण  
 खई खई, दरस नित तेरो जी मुजकूं हे सुखदाई ॥ शिवा प्रेम  
 सदा मन ज्ञाई ॥ (दूहा-साखी) धरम शील आधारसै, कुशल  
 सदा आनंद ॥ रुद्धसार जिन नामसै, हरे डुरित डुख धंद ॥ हे  
 जी तो मन सुध कर जी राखौ जिन चरणनमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अथ नैमनाथजीका बारे मासा ॥

(मोह लियो माहाराज कूबरी वीमथुरावाली एवाल) ॥ सावण  
 महीने नैम पिया मोहे व्याहनकूं आये, नयशेन घर बटत वधाई  
 सब मंगल गाये ॥ संग हे राम कृष्ण ज्ञाई, तोरणसै रथ फेर सि-  
 धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोक करे हासी-मोह लियो  
 शिवरमणी शोकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ ज्ञादू महीने गगन  
 बीच पीया इंद्र चढ आयो, वैरण बीज खीज रही मोपे जेवन

गरणायो ॥ सखी मोकूँ विरहा संतायो, मोर पपइया बोले पापी,  
 मदन सदन ठायो ॥ तीज विन प्रीतम यूँ जासी ॥ मोह लि० २॥  
 आसू महीने आश पीयाको मिलणेकी लागी, तेल चढी मोकूँ डि-  
 टकाई दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही सागी, विना गुने  
 तकशीर कंत मोहे, कैसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी मारी गले फासी—  
 मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खबर नहीं लीनी,  
 छत्तम प्रीत रीत नही साजन ये तुम क्या कीनी ॥ पशुनकी दयापे  
 चित दीनी, रूस चले मादाराज गुने विन, अंतरंग जनीनी ॥ स्वाम  
 तोकूँ मति ये क्या ज्ञासी—मोह लि० ४ ॥ मिगसर मोहन तीन  
 लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत  
 त्यारी ॥ पिया तुम चढगये गिरनारी, अनंत लोग जोगी सो काम-  
 ण, लगी तुमें प्यारी ॥ पीया में चरणनकी दासी—मोह लि० ५ ॥ पोश  
 पीया उलंजा देती हिये नहीं धारो, नहीं ठोमूंगी संग नाथ अब चाहे  
 सो कर धारो ॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक बेर घर अंगण आवो  
 फेर तजूँ लारो ॥ शखी सब मिलकर समजासी—मो० ६ ॥ माह  
 महीने रुत सरदीकी ठंठ वडोत वाजै, सेज लगे नागण सी मु-  
 जकों नेम नही लाजै ॥ मदनको कटक कोण ज्ञाजै, नहीं वरुन  
 कूँ गैरत कितकी, तुमकूँ यह वाजै ॥ पिया विन करुं में गति  
 काशी—मो० ७ ॥ फागण फाग-धरोधर खेले दंपति सुख माणै,  
 में अबला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानै ॥ कौन संग में  
 खेलूं होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं वाला जोरी ॥  
 कंत में दरशनकी प्यासी—मो० ८ ॥ चेत मात फूली बनराई  
 कोयल सोर करै, ऐसे निरमोहीसे करके कही कुण फंद पने ॥  
 प्रीत जिन नव जवकी तोरी, राजुल तज सिखगार द्वार कूँ मदन  
 मान मोनी ॥ नेम विन हो रही ऊदासी—मो० ९ ॥ माश

वैशाख आंख यूं उलजै प्रीतमकी मनमें, उग्रशेन महाराज डला-  
री गइ सहसावनमें ॥ देखण शिवादेवीके नंदा, इंद्र चंद्र शेषित  
पदपंकज मुख पूनमचंदा ॥ आज राखी प्रीतम घर आसी-मो०  
१० ॥ जेठ मास गरमी रुत लूआं बाजै कंत बुरी, नदी रैण मुख  
चैन राखीरी चल रही प्रेमठुरी ॥ पाप कोइ पूरव उदै आया,  
गोम चलै घनस्याम आज में दरशण सुख पाया ॥ तजी में सब  
घरकी फासी-मो० ११ ॥ मास असाढ राखी संग राजुल नेम  
चरणा जेठ्या, धर करणी जव तिरणी होकर थंड सन्नी मेठ्या ॥  
प्रीत तुम अजर अमर राखी, रुखसार आधार तुमारो प्रेम शिवा  
शाखी ॥ जगत जन गुण तेरा गासी-मो० १२ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ छुटकर स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ अथ श्री शीतलजिन स्तोत्र ॥

सकल मंगल कैलि निवेशिनं, सहृदयं हृदयं गम देशनं ॥ अजिन  
तोत्तम जक्ति सुरेश्वरं, नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहज  
सुंदर सकृणमंदिरं, विमल केवल बोध विकेश्वरं ॥ अति सुवर्ण  
सुवर्ण समद्युतं, प्रवर बंधुर लक्षण संयुतं ॥ २ ॥ युग्मं ॥ यदिय  
जक्तिर्नविनां जवेजवे, जवेदन्नीष्टार्थ निदानमद्भुतं ॥ सएव नंदा-  
त्म समुद्भवो जिनः, समर्चनीयः खलु शीतलः प्रभु ॥ ३ ॥ कर्मा  
जितघान् जवितः सुशीतलान्, कुर्वन्मुदा वाक् सुधया दयापरः ॥  
सदेव देवो जवतात् सदैवमे, सदिष्ट सिद्धये जिनराज शीतलः ॥  
४ ॥ अधिगत शिवशर्मा वीत मोहादि कर्मा, दृढरथ तनुं जन्मा  
सर्वतः साध धर्मा ॥ त्रिदश महित मूर्तिः स्फुर्तिमत् पुण्यकीर्तिः,  
जयतु गत जवार्तिः शीतलः सौम्यमूर्तिः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ विशदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो, दलित डुरित राशि

विश्व विश्वावदातः ॥ प्रकट महिमरम्यो दुर्मती नाम गम्यो, जयं  
 तु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली  
 मूल मुन्मूल यन्ती, पदम रुत पदाप्जेयस्य चृंगीव पद्मा ॥ अवि  
 रुतमात कायोत्सर्ग मुद्गान्वितोसौ, जगति बहुमतोस्मान् पातु  
 वामांग जन्मा ॥ २ ॥ अविचल मणि विभ्रत् सत्फलानां सहस्रं,  
 बहुल विमल ज्ञास्वद्रूपणोत्तमि गात्रः ॥ गुरुतर वर ज्ञन्या सक्त  
 चित्ताङ्गजां, जवतु शिव समृद्धयै चाश्वसे निर्जिनेन्द्रः ॥ ३ ॥  
 कुपित करि मृगेश व्याल दावानलाब्धि, प्रहरणगदगुह्यातंक शंका  
 पदर्त्ता ॥ विकशित मुख पद्मः सत्पुरेसूरताख्ये, अयतु जुजगं  
 लक्ष्मी भ्राजमानो जिनेन्द्रः ॥ ४ ॥

॥ अथ समस्यामयी शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तुतिः ॥

यस्य ज्ञान दया सिंधो, दर्शनं श्रेय से ध्रुवं ॥ सश्रीमान्या  
 र्श्व तीर्थेशो, निपेय्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामा सूनोर्यशः पुंजै,  
 रयाधस्या नघा गुणः ॥ स्मर्यते येन सस्मार्यो, जवेत् प्राचीन वर्हि  
 पां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान्, संसारिक सुरासुरान् ॥ सेव्यता  
 मक्षयो धीराः, पार्श्वदेवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सवार्थ दानेन,  
 येन कल्पद्रुमा अपि ॥ जवेदन्यर्चितो लोके, स श्रिये चामृताय च  
 ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः, जैन लाज प्रदायकः ॥ कल्याण  
 कारको ज्ञूयात्, श्रीमान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ विधिव यमक युक्त श्रीपार्श्व जिन स्तुतिः ॥

लक्ष्मी निदानं गुरु कर्मदानं, सद्धर्म दानं जगते ददानं ॥  
 यकेश पार्श्वो शित पाद पार्श्व ॥ नुवामी पार्श्वं जवजेद् पार्श्वं ॥ १ ॥  
 स्मेरातसी मून सम प्रज्ञावा, सम प्रज्ञावा जवदीय मूर्तिः ॥ वि-  
 ज्ञाति वामां प्रज्ञव त्रिलोके, जव त्रिलोकेन समर्चनीयः ॥ २ ॥  
 तवेश पत्पंकज मादरेण, हृद्यादधाना जनतादरेण ॥ मुक्ता जवेदेक

पदे पराया, निर्वैश वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेषं जूवर्षित  
दान वारि, र्यन्मानसेत्वं ध्रियसे सदैव ॥ सएव गव्युत्तम दानवारो,  
प्रोच्चारितोदाम यशाः सदैवः ॥ ४ ॥ देवाधिदेवाधि हरस्त्वमेव,  
सुज्ञान सुज्ञानत्रिबुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांगवितीर्णजूयः, कळयाण  
कळयाण कृदं गज्जाजां ॥ ५ ॥ यैर्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोजिरा-  
मैः सुमनोजिरामै ॥ कर्मात्रिधै रुद्धित जूघनास्ते, विसारि लोकेश  
विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्यंते जिन पुंगवस्य जगवन् प्रोदाम धामा  
न्वितं, पादाण्जं परजाग जृत् त्रिजुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दहं  
कर्म विपक्व पक्व दलने ज्ञव्या ज्वंतु कृमाः, कळयाणाश्रय मुक्ति  
माप्नु मखिलंतीर्त्वा ज्ञवाज्ञोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शंखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी वंदः ॥ गौमीग्रामे स्तंजने चारु तीर्थे, जीराव-  
ल्या पत्तने लोड्वाख्ये ॥ वाणारस्यां चापि विख्यात कीर्ति, श्रीपा-  
श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्यं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, कामा  
देव्या नंदनं देव वंद्यं ॥ स्वर्गे जूमौ नागलोके प्रशिद्धं ॥ श्री पा० ॥  
२ ॥ जित्वा ज्ञेयं कर्म जालं विशालं, प्राप्यानन्तं ज्ञान रत्नं  
चिरत्नं ॥ लब्धा मंदातंद निर्वाण शौख्यं ॥ श्रीपार्श्व० ३ ॥ विश्वाधी  
शं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्ष लक्ष्मी कत्रत्रं ॥ अंजोजाहं  
सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्रीपार्श्व० ४ ॥ वर्षे रम्यं खंग दोर्त्नाग चंद्र, संख्ये  
मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा०  
५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन सोत्रं ॥

विशद सद्गुण राजि विराजितं, धनयना धननाद विज्ञाजि-  
तं ॥ जजत जक्ति जरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्व जिनेश मनेश्वरं  
॥१॥ विविध वर्ण विज्जुषित विग्रहाः, विहित दुर्दम दुर्पक निग्रहाः ॥

धंसु युगोक्तं मिताः सुकृताकराः, जिनवराः प्रज्ञवंतु शिवंकरा ॥ २ ॥  
 रुचरवर्णा निवद्ध मनिन्दितं, सुमनसा प्रकरै रज्जिवंदितं ॥ निखिल  
 साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतां चितशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल  
 ज्ञव्य सरोजं विकाशिका, कुमति संतमसौच्चय नाशिका ॥ जिन-  
 वरानन पद्म गतोन्मुदा, ज्ञवंतु वाग्जिनलाजं शुजार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्व नाथ जिनं स्तौत्रः ॥

श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्य विलसद्ज्ञानामृतांजोनिधेः, संज्ञा-  
 धेन परस्वरूप विरते मुक्त्यास्पदेतस्थुपः ॥ सञ्जुत प्रतिविंब तस्तु-  
 सुतरां गोनीपुरोद्भासिनः, सोद्भासंप्रणपत्य सत्यमनसां तत्रैव नित्यं  
 स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो ज्ञव्याव्रजंतो ध्वनि,  
 स्पृश्यंतेन हि छुष्टजंतुनिवदे वन्यैर्नवातस्करैः ॥ नैवोज्वालदवानलै  
 र्जलचराकीर्णैर्जलैजातुनो, सःश्रीपार्श्वविज्जुर्धचिन्त्यमहिमा वृश्यो-  
 नकेपांजवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तःकरणद्भुतं कुटिलतां मोहादिनोद्भा-  
 वितां, धृत्वानिर्मलजावनांचविधिनायद्रक्तिमातन्विता ॥ लज्जन्ते  
 नरराज निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपिसैवशुद्धमनसां  
 संसेव्यतांविश्वयाः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवनं ॥

॥ आद्यः श्रीरूपज्ञस्ततो जितजिनः, श्रीशंजवस्तीर्थकृत् ॥  
 सुश्रीमान्जिनंदनश्चसुमतिः, श्रीसन्नपद्मप्रज्ञः ॥ पृथ्वीकुक्षिजवसुपा  
 र्श्व, जिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रज्ञः ॥ सर्वज्ञःसुविधिर्जिनोमुनिमतः, श्री  
 शीतलसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांशप्रज्ञुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः,  
 ज्ञानिःकुंभुररस्ततो जितरिपुर्भद्विर्जिनःसुव्रतः ॥ अर्द्धतो नमिनेमिशुद्ध  
 मुनिपौत्रिवेत्रेयेविश्रुतो, श्रीमत्पार्श्वजिनःप्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान  
 प्रज्ञः ॥ २ ॥ एतेश्रीजिनपुङ्गवाःपरमश्रद्धूपाश्रतुर्विंशति, निर्दिशेषो-  
 त्तमज्ञव्यजंतुहृदयांजौजप्रबोधयताः ॥ वंद्यन्तेसुरवृंदवद्यविशदशतो

कव्रजानिर्जय, श्रीसंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसद्भक्तितःप्रत्यहं ॥ ३ ॥

॥ अथ मंगलाष्टकलिख्यते ॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रज्ञा, ज्ञास्वत्पादनखेदव-  
प्रवचनांज्ञोधौव्यवस्थायिनः ॥ येसर्वेजिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठका-  
साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्वपंचगुरवःकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्दर्-  
शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयंपावनं, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते स्व-  
र्गापवर्गप्रदः ॥ धर्मःसूक्तिसुधाश्वैत्यमखिलं जैनालयंश्रयालयं  
प्रोक्तंत्त्रिविधंचतुर्विधममीकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ २ ॥ नाज्ञेयादिजिना  
धिपा स्त्रिज्जुवनेख्याताश्वतुर्विंशतिः, श्रीमन्तोन्नरतेश्वरप्रच्युतयोयेच  
क्रिणो द्वादश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्ताधिकाविंशती,  
त्रैलोक्येजयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशेवृषजस्य  
निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशे  
लेहतां ॥ शेषाणामपिचोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो, निर्वाणा  
बिनयःप्रसिद्धविज्जवाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरज्ञावनाम  
रगृहे मेरौकुलाज्ञैस्थिता, जंबुशाळमलिचैत्यशाखिषुतथावहाररूप्या  
दिषु ॥ इहवाकारगिरौचकुंरुलनगेष्ठीपेचनंदीश्वरे, गौलेयेमनुजोत्तरे  
जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगज्ञवितरोजयत्यर्हतांजन्माज्ञि-  
षेकोत्सवे, योजातः परिनिक्रमेवचज्ञवो यःकेवलज्ञानज्ञाक् ॥ यःकै-  
वल्यपुरप्रवेशमहिमा संज्ञावितः स्वर्गिज्ञिः, कळ्याणानिचतानिपंच  
सततंकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ६ ॥ येपंचोषधिरुद्धयः श्रुततपोरुद्धिंगतापंचये,  
येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्वयेपि  
बलिनोयेबुद्धीरुद्धीश्वरा, सप्तैतेसकलाश्वतेगणच्युताकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ७ ॥  
देव्याश्चाष्टजयादिकाद्विगुणिताविद्यादिकादेवता, श्रीतीर्थेकरमातृका-  
श्वजनकायक्षाश्वयक्षीश्वराः द्वात्रिंशत्त्रिदशायहानिधिसुरा दिक्कन्यका  
श्चाष्टधा, दिक्पालादशइत्यमीसुरगणाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं

श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं कल्याणकालेर्दत्तां, पूर्वाण्डेपिमहोत्सवेपिस-  
ततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येऽगृण्वन्तिपठन्ति तैश्चमनुजैर्द्वैमार्थिकामा-  
न्विता, लक्ष्मीराश्रयतेविपायरहिताः कुर्वन्तुमेमङ्गलं ॥ ए ॥ इति  
मङ्गलाष्टकं संपूर्णं ॥

॥ अथ परमात्मा स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबन्धु नकर्म नकर्ता ॥  
न भ्रंगं नसंगं नश्चा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥  
नबन्धो नमोक्षो नरागादि लोकं, नजोगं नज्ञोगं नव्याधि नजोकं ॥  
नक्रोधं नमानं नमाया नलोचनं ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ  
नघ्राणं नजिह्वा, नचक्षुर्नकर्णौ नवक्त्रं ननिज्ञ, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं  
नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोदं नचिन्ता, नहुत्सु  
नज्ञोतं नरुष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नञ्जृत्यं नदेवो नमर्त्या, चि० ४ ॥  
त्रिदंमे त्रिखंमे हरे विश्वव्यापं, रूपीकेश विद्वंस कर्म्मरिजालं  
॥ नपुण्यं नपापं नअज्ञानप्राणं, चि० ॥ ५ ॥ नवाढ्यं नवृक्षं  
नविद्धि नमूढा, नवेद्यं नज्ञेद्यं नमूर्तिर्नमीहा ॥ नरुष्यं नशुक्लं नमोदं  
नतंज्ञ, चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमन्त्यं नमन्या, नड्वयं नक्षेत्रं  
नदृष्टो नज्ञव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥  
इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्त्ववेदी, नपूर्णा नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्यो  
न्निजिष्णं नपरमार्थमेकं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणानि  
विश्वैतन्यरत्नाकरं, सर्वेञ्जुतगतागते सुख दुःख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥  
त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायन्ति योगेश्वराः, वन्देते हरिवं-  
श इयं हृदयं श्रीमानञ्जुदच्युतः ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्रं ॥

अथ नमस्कार स्तोत्रं ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं,  
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेज्ञाणां, साधूनां वन्दनेन च ॥



ततिष्ठति चिरं पापं, मिड हस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्य  
 स्य, संसार ध्वांतनाशनं ॥ बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाश  
 कं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्मांमृत वर्षणं ॥ जन्मदाय वि  
 नाशाय, वृंहणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेऽक्तिर, जिनेऽक्ति दिनेर  
 ॥ सदामेस्तुर, सदामेस्तु ज्ञवेश ॥ ५ ॥ नहित्राताश्, नहित्रा  
 ता जगत्रये ॥ वीतराग समोदेवो, नञूतो नञविष्यति ॥ ६ ॥  
 अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेन,  
 रक्षर जिनैश्वर ॥ ७ ॥ वीतराग मुखंदृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रज्ञं ॥  
 नैकजन्म कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नि  
 त्यं, सिद्धा जगति मंगलं ॥ मंगलं साधवो मुक्तं, धर्मः सर्वत्र  
 मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा इहार्हंतः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लो  
 कोत्तमो यतीशानां, धर्मोलोकोत्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदार्हं  
 तः, शिद्धा शरणं मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्म शरणं सर्व  
 तां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्र संपूर्णं ॥

॥ अथ तपगच्छ समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोचन वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ स  
 कुह सामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिजुवनपति त्रि  
 स्रवातणो, नंदन गुण गंजरीर ॥ शासननायक जगजयो, वर्द्धमान  
 धरुवीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिनंदनें, चरणे करी परिणाम ॥  
 न्नविक जीवना हित ज्ञानी, पूढै गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगति मा  
 र्ग आराधियै, कहौ किण पर अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन  
 रत्न, ज्ञाखे भीजगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार आलोश्यै, व्रत धरीये गु  
 रु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चौरासी लाख ॥ ५ ॥  
 विधिमुं वलि वोसराविये, पाप स्थानक अठार ॥ च्यार शरण नित

अनुसरै, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुद्ध करणी अनुमोदियै, ज्ञा  
 व जलो मन आणि ॥ अणशण अवसर आदरी, नवपद जपो सु  
 ज्ञाण ॥ ७ ॥ शुद्धगति आराधनतणा, ए ठै दश अधिकार ॥ चि  
 त्त आणीने आदरो, जिम पामो जव पार ॥ ८ ॥ ( ढाल ॥ १ ॥  
 ए विन्नी किहां राखी ॥ इत्त चालमें ) ज्ञान दरिशाण चारित्र तपः  
 वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह जव पर जवना, आलोइये  
 अतीचार रे ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी, वीर वदे इम वाणी  
 रे ॥ प्रा० ज्ञा० १ ॥ गुरु जलविये नही गुरु विनयें, कालै घरी बहु  
 मान ॥ सूत्र अर्थ तज्जय करी सूधा, जणिये वही उपधान रे ॥  
 प्रा० ज्ञा० २ ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ एह  
 तणी कीधी आजातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ प्रा० ज्ञा० ॥  
 ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ जव पः  
 र जव. वलिय जवोजव, मिच्छाडकम तेहरे ॥ प्रा० समकितः  
 ल्यो शुद्ध ज्ञाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजै, नवि परमत  
 अजिलाप ॥ साधुनणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥  
 प्रा० स० ५ ॥ मूढपणूं ठंमो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ सा  
 हमीने धर्म करि थिरता, जगति प्रज्ञावना करिये रे ॥ प्रा० स०  
 ६ ॥ संघ चैत्य प्राशादतणो जे, अर्वावाव मन लेख्यो ॥ द्रव्य दे  
 वको जे विणसाब्धो, विणसंतां जवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इ-  
 त्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंर्युं जेह ॥ आ जव प०,  
 मि० ॥ प्रा० चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण  
 गुति विराधी, आठे प्रवचनमाय ॥ साधुतणे घरमे प्रमादे, अशुद्ध  
 वचन मन काय रे ॥ प्रा० चा० ९ ॥ आवकने धर्म सामायक, पो  
 सहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जेआठे, प्रवचनमायन पाली  
 रे ॥ प्रा० चा० १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र रुहोळ्युं

जेह ॥ आज्ञव०, मिह्या० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ वारे जेहे तप नवि  
 कीधो, उते योगे निज शकते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि  
 फोरविउं जगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण पर,  
 विविध विराध्या जेह ॥ आज्ञव०, मिह्यामि० ॥ प्रा० चा० १३ ॥  
 वलिय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोइये ॥ वीरजिनेसर व  
 चन सुणीने, पाप मैल सवि धोइये रे ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (ढाल२)  
 पृथ्वी पाणी तेज, वाज वनस्पती, ए पांचे थावर कहा ए ॥ करी  
 करसण आरंज, खेत्र जे खेतीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥१॥  
 घर आरंज अनेक, टांका जोयरां, मेनी माल चिणाविया ए ॥  
 लीपण गुंण काज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥  
 २ ॥ धोयण नाहण पाणी, जीलण अप्पकाय, ठोती धोती कर दू  
 हव्या ए ॥ ज्ञाठीगर कुंजार, लोह सोवनगरा, ज्ञानजुंजा लिहालागरा  
 ए ॥३॥ तापल सेकण काजे, वस्त्र निखारण, रंगण रांधण रसवती ए ॥ इ  
 णि परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेज वाज विराधिया ए ॥४॥ चामी  
 वन आराम, वावी वनस्पती, पान फूल फल चूटीया ए ॥ पौंदक  
 पापनि शाक, सेक्या सूकव्या, ठेया ठूंया आश्रिया ए ॥५॥ अल  
 शीने एरंरु, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलू  
 मांदि, पीली सेलनी, कंद मूल फल वेचीया ए ॥ ६ ॥ इम एकें-  
 डी जीव, हणया हणाविया, हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आज्ञव  
 परजव जेह, वलिय जवोजव, ते मुऊ मिह्यामिडुक्कं ए ॥ ७ ॥  
 क्रमी सरमिया कीमा, गारु गंमोला, इअल पूरा अलशीआ ए ॥  
 वाला जलो चूमेल, विचलितरसतणा, वलि अथाणा प्रमुखना ए ॥  
 ८ ॥ इम बेइंडी जीव, जे में दूहव्या, ते मुऊ मि० ॥ उहेही जूं  
 लीख, मांकरु मंकोमा, चांचरु कीनी कंथुआ ए ॥ ९ ॥ गदहिया  
 धीवेल, कानखजुरमा, गींमोला धनेरीयां ए ॥ इम तेइंडी जीव,

जे में दूहव्या, ते मुऊ मिष्ठा० ॥ १० ॥ माखी मञ्जर नास, मला  
 पतंगिया, कंसारी कोलियावना ए ॥ ढीकण विठु तीर, जमरा  
 जमरीय, कौता बग खरुमांकनी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेद्री जीव,  
 जे में दूहव्या, ते मुऊ० ॥ जलमां नाखी जाल, जलचर दूहव्या;  
 चनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीरुया पंखी जीव, पानो पा-  
 समां, पोपट घाड्या पांजेरे ए ॥ इम पंचेडी जीव, जे में दू०, ते  
 मुऊ० ॥ १३ ॥ ( दास ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी ॥ ए  
 चाल ) क्रोध लोभ ज्ञय हासथी जी, बोला वचन असत्य ॥  
 क्रूर करी धन पारका जी, लोधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी  
 मिष्ठामि डुक्कर आज, तुम्ह साखे महाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥  
 देई सारू काज रे ॥ जिनजी मि० ॥ १ ॥ देव मनुज तिर्यचना जी;  
 मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, धणुं विटंब्यो देह  
 रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, ज्वर मेळी आधि ॥  
 जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोश्य न आवै साथ रे ॥ जि० ३  
 ॥ रयणी जोजन जे कर्षा जी, कीधा जक अनक ॥ रसना र  
 सनी लालचें जी, पाप कर्षा परतक रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई  
 वीसारीया जी, बलि जांग्या पञ्चस्काण ॥ कपट हेणुं किरिया करी  
 जी, कीधा थाप वखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी,  
 आलोया अतीचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहिलो अ-  
 धिकार रे ॥ जि० ६ ॥ ( ढाल ४ ॥ साहेलनीनी देशी ॥ ) पंच  
 महाव्रत आदरो, साहेलनी रे ॥ अथवा ट्यो व्रत वार तो ॥ यथा  
 शक्ति व्रत आदरो, सा० ॥ पालो निरतीचार तो ॥ १ ॥ व्रत लिया  
 संजारीयै, सा० ॥ हीयमै धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधन-  
 तणो, सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सवै खमात्रियै  
 सा० ॥ योनि चोरासी लाल तो ॥ मनशुद्धे करो खामणा, सा० ॥

कोइसुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चितवौ, सा० ॥  
 कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ कीजै  
 जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहमी संघ खमावियै, सा० ॥ जे उप  
 नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनशा  
 सन रीत तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमावियै, सा० ॥ एहीज धर्म  
 नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजो अधि  
 कार तो ॥ ६ ॥ मूषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ धन मुर्बा मैशुन्न  
 तो ॥ क्रोध मान माया तूष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥ ७ ॥  
 निंदा कलह न कीजीयै, सा० ॥ कूमा न दीजै आल तो ॥ रती  
 अरती मिथ्या तजो, सा० ॥ माया मोल जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रि-  
 विधर दोसरावियै, सा० ॥ पाप स्थान अठार तो ॥ शिवगति आ  
 राधनतणो, सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥ ( ढाल ए मी  
 ॥ हवै निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए चाल ॥ ) जनम जरा मर-  
 णे करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्या कर्म सहु अनुभवै ए,  
 कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ उरण एक अरिहंतनु ए, शरण  
 सिद्धजगवंत तो ॥ शरण धर्म अजैननो ए, साधु शरण गुणवंत  
 तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार उरण चित्त धार  
 तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥  
 आज्ञव परज्ञव जे कस्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म  
 साखे निंदिये ए, पम्किमियै गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामत  
 वर्ताविआ ए, जे जाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वले ए,  
 बलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५ ॥ घम्या घम्या जे घणा ए, घरटी  
 हल हशियार तो ॥ ज्वर मेली मूकीया ए, करतां जीव संहार  
 तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीया ए, जनमर परिवार तो ॥ जन-  
 मांतर पोहतां पठी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आज्ञव

परन्तुव जे कर्या ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविधे वीसि  
 शविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ७ ॥ दुःकृत निंदा इम  
 करी ए, पाप कर्या परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए  
 ठो अधिकार तो ॥ ए ॥ ( ढाल ठो ॥ आदि तुं जोशने आपणी  
 ॥ ए चाल ॥ ) धन२ ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान  
 शीयल तप आदरी, टाढ्या दुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शेरुंजादिक तीर्थ  
 नी, जे कीधी यात्र ॥ युगते जिनवर पूजिया, वलि पोण्या पात्र ॥  
 ध० २ ॥ पुस्तकं ज्ञान लिखाविया, जिणहर चिन चैत्य ॥ संघ चतु  
 विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पन्धिकमणा सुपै कर्या,  
 अनुकंपा दान ॥ साधू सूरि उवझायने, दीधा वहुमान ॥ ध० ४ ॥  
 धर्मकारज अनुमोदियै, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो,  
 सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ जाव जलो मन आणीयै, चित्त अ  
 णी ठाम ॥ समता जावे जाविये, ए आतमराम ॥ ध० ६ ॥ सुख  
 दुख कारण जीवने, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचर्या,  
 जोगविये सोध ॥ ध० ७ ॥ समता दिश जे अनुसरे, प्राणी पुन्य  
 काम ॥ गरि ऊपर ते लीपणू, जाखर चित्राम ॥ ध० ८ ॥ जाव  
 जली परे जाविये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो,  
 आठमो अधिकार ॥ ध० ९ ॥ ( ढाल उ मी ॥ रैवत गिरि ऊपर  
 ॥ ए चाल ) हवै अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अशासण  
 आदरिये पञ्चस्की ज्यार आहार ॥ ललुता सवि मूकी गंभी ममता  
 अंग, ए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति ज्यारे कीधा आ  
 हार अनंत निःशंक, पण तृपति न पाम्यो जीव लालचीउरक ॥ इसहो  
 ए वली२ अणशणनो परिणाम, एहथी पामीजै शिवपद सुरपद ठाम  
 ॥ २ ॥ धन धना शालिज्ज खंयो मेघकुमार, अणशण आराधी पाम्या  
 प्रवनो पार ॥ शिवमंदिर जास्यै करी एक अवतार, आराधन करे

॥ ए ॥ वंजी सुंदरी रूपिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई  
दोवई धारणी, कलावई पुष्पचूलाय ॥ १० ॥ उपमावईय गोरी,  
गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सञ्जामा, रूपिणी कन्हड  
महितीत ॥ ११ ॥ जस्काय जस्कदिना, जूआतह चव जूअ वि-  
स्नाय ॥ सेणा वेणारेणा, जअणीओ थूलजदस्स ॥ १२ ॥ इच्चाई महा-  
सईओ, जयंती अकलंक शील कलिआत ॥ अऊ विवऊई जातिं,  
जस परुहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीतनी सिझाय

॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥

मन्हजिणाणंआणं, मिहंपरिहरहधरसम्मत्तं ॥ ठव्हिहआव-  
स्सयंमि, उज्जुत्तोहोइपयदिवसं ॥ १ ॥ पवेसुपोसहवयं, दाणंशीलं  
तवोअजावोअ ॥ सझायनमुक्कारो, प्ररोवयारोअजयणाअ ॥  
२ ॥ जिणपूआजिणथुणिलं, गुरुथुअसाहम्मिआणवत्तलं ॥  
धवहारस्तयसुद्धी, रहयत्तात्तियत्ताय ॥ ३ ॥ उवजामविवेकसंवर,  
जासासमिईवज्जीवकरुणाय ॥ धम्मियजणसंसग्गो, करणदमोच-  
रणपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरिअहुमाणो, पुत्थयत्तिहणंपजावणा  
त्तिये ॥ सद्धाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवणसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोम, जिनवर नामे मंगल कोम ॥ पहेले  
स्वर्गे लाख बत्तीस, जिनवर चैत्य नमुं निशदीश ॥ १ ॥ बीजै लाख  
अहावीश कल्या, त्रीजै बार लाख सरदह्या ॥ चोथे स्वर्गे अरु लाख  
धार, पांचमें वांदूं लाखज ब्यार ॥ २ ॥ षठे स्वर्गे सहस पंचास,  
सातमें चाळीस सहस प्राशाद ॥ आठमें स्वर्गे ठ हजार, नव द-  
शमें वंदू शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमें त्रणसे सार, नव ग्रैवे  
षके त्रणसे अठार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोरासी अधि-  
का बली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणु त्रेवीस सार, जिनवरनुवनतणो

अधिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पञ्चास उंचा वडोत्तर धार ॥ १॥  
 एकसो असी विंव परिमाण, सत्ता सहित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोरु  
 बावन कोरु संजाल, लाख चोराणुं सहस चोआल ॥ ६ ॥ सातसे उपर  
 साठ विसाल, सवी विंव प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोरुने वडो-  
 उत्तर लाख, जुवनपतीमां देवल नारव ॥ ७ ॥ एकशो अशी विंव  
 प्रमाण, इकर चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोरु निव्याशी कोरु,  
 साठ लाख वंदू करजोरु ॥ ८ ॥ घत्रीशे ने अगणसाठ, तिर्वा-  
 लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते  
 विंव जुहार ॥ ९ ॥ अंतर ज्योतपीमां वलि जेह, शाश्वता जिनवर  
 वंदू तेह ॥ रूपजा चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-  
 शेष ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥  
 विमलाचल ने गढगिरनार, आवू ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥  
 शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-  
 काणो पाश, जीराचलो ने अंजणपाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर  
 पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदू जित  
 वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी घीपमां जे अण-  
 गार, अढार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार,  
 पावे पलावै पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अच्यंतर तप उजमाल, ते  
 मुनि वंदू गुणमणि माल ॥ नितर ऊठी कीर्तिकरुं, जीव कहे जव-  
 सायर तरुं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अय सकलार्हत स्तोत्र ॥

सकलार्हतप्रतिष्ठान, मधिष्ठानंशिवश्रियः ॥ नृर्जुवःस्वस्वयी-  
 शान, मादित्यंप्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यज्ञावैः, पुनतःस्त्रिज-  
 गङ्गनं ॥ क्षेत्रेकालेचसर्वस्मिन्, नर्दतःतमुपास्महे ॥ २ ॥ आदि-  
 मंपृथ्वीनाथ, मादिमंनिःपरिग्रह ॥ मादिमंतीर्षनाथंच, रूपज्ञस्वा-



मिनेस्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हतमजितंविश्व, कमलाकरज्ञास्करं ॥ अस्वान-  
 केवलादर्श, संक्रांतजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वज्ञव्यजनाराम, कुड्या-  
 तुड्याजयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः, श्रीशंज्ञवजगत्पतेः ॥ ५ ॥  
 अनेकांतमतांज्ञोधि, समुद्धाशनचंडमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, जगवान-  
 जिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युशत्कीरीटशाणाग्रो, तेजितांजिनखावलिः ॥  
 जगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वज्जिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रज्ञप्रज्ञोर्देह,  
 ज्ञासःपुष्पंतुवः श्रियं ॥ अंतरंगारिमअने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥  
 श्रीसुपार्श्वजिनेंज्ञाय, महेंद्रमहितांज्ञये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगना-  
 ज्ञोगज्ञास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रज्ञप्रज्ञोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला ॥ मुर्ति-  
 मुर्ति सितध्यान, निर्मितेवश्रियेस्तुवः ॥ १० ॥ करामज्ञकवद्विश्वं, कल-  
 यन्केवलश्रियां ॥ अचिंत्यमहात्म्यनिधिः, सुविधिर्वोधयेस्तुवः ॥ ११ ॥  
 सत्वानांपरमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्दादामृतनिस्यंदी, शीतलः  
 पातुवोजिन ॥ १२ ॥ ज्वरोगार्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ निः-  
 श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांसः श्रेयसेस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीञ्जूत,  
 तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यःपुनातुवः ॥ १४ ॥  
 विमलस्वामिनोवाचः, कृतकहोदसोदराः ॥ जयंतित्रिजगच्चेतो,  
 जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंज्ञूरमणस्पर्धि, करुणारसवारिणा ॥  
 अनंतजिदनंताव, प्रयत्नतुसुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पज्जुमसधर्माण,  
 मिष्टप्राप्तौशरीरिणां ॥ चातुर्ध्याधर्मदेष्टारं, धर्मनाशंमुपास्महे ॥ १७ ॥  
 सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतदिग्मुखः ॥ मृगलक्ष्म्यातमःशांत्यै,  
 शांतिनाथजिनोस्तुवः ॥ १८ ॥ श्रीकुंभुनाथोजगवान्, सनाथोतिशयर्धि-  
 ज्ञिः ॥ सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तुवःश्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तुज-  
 गवां, शत्रुर्धारनज्ञोरविः ॥ शत्रुर्धुर्पुरुषार्थश्री, विलासंवितनोतुवः ॥ २० ॥  
 सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदं ॥ कर्मदून्मूलनेहस्ति, मल्लंमल्लिमज्जि-  
 शुमः ॥ २१ ॥ जगन्महामोहनिज्ञा, प्रत्युषसमथोपमं ॥ मुनिसुव्रतनाथस्य,

देशनावचनंस्तुमः ॥ २२ ॥ लुठंतोनमतांमूष्णि, निर्मलीकारकारिणं ॥  
 वारिष्णवाइवनमेः, पांतुंपादनखांशवः ॥ २३ ॥ यडुवंशसमुद्भुः,  
 कर्मककृद्गुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्जगवान्, ज्ञयाहोऽरिष्टनाशनः ॥  
 ॥ २४ ॥ कमठेधरणेद्रेच, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनो  
 वृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथा  
 याद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मराळायाईतेनमः ॥ २६ ॥ कृता  
 पराधेपिजने, रूपामंधरतारयोः ॥ ईपद्वाप्पार्दयोर्जद्र, श्रीवीरजिनने  
 त्रयोः ॥ २७ ॥ जयतिविजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्री  
 मान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचूरामणिर्जगवान् ॥ २८ ॥  
 वीरः सर्वसुरासुरेभ्यमहितो, वीरंबुधाः संश्रिता ॥ वीरेणाग्निहतः स्वक  
 र्मेनिचयो, वीराय नित्यं नमः ॥ वीरात्पीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वी  
 रस्यघोरंतपो ॥ वीरेश्रीधृतिकीर्ति कांतिनिचयः, श्रीवीरज्ञईदिशः ॥  
 ॥ २९ ॥ श्रवणितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवनगतानां दिव्यं  
 त्रैमानिकानां ॥ इहमनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानां  
 ज्ञावतोईनमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्र लिख्यते ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइदायारं ॥ समरामिन्नत्त-  
 पालगं, निवाणीगरुक्कयसेवं ॥ १ ॥ नैसनमो विप्पोसहिपत्ताणं,  
 संतिसामि पायाणं ॥ ज्जैस्वाहा मंतेणं, सत्ताशिवडुरिअंदरणाणं  
 । २ ॥ नैसंतिनमुक्कारो, खेलोसहि माइलद्धिपत्ताणं ॥ सोह्नीनमो  
 उवोसहि, पत्ताणं चं देइसिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणत्तामिणी, सिरि-  
 वीजस्करायगणिपिरुगा ॥ गहदिसिपालसुरिंदा, सयाविरक्कंनुजि-  
 त्तत्ते ॥ ४ ॥ रक्कंतुममरोहिणी, पन्नत्तीवक्कसिखलासया ॥ व-  
 क्कं कुसिचक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥ ५ ॥ गोरीतहगं-  
 गरी, महाजाला माणवीअ वरकृटा ॥ अत्तुत्तामाणसिआ, माहा-

भाणसिआनं देवीनं ॥ ६ ॥ जस्कागोमुहमहाजस्का, तिमुहजस्के  
 सुतुंबरुकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिनं, वंजोमाणुनंसुरकुमारो ॥ ७ ॥  
 ठम्मुहपायालकिन्नरं, गरुडोंगंधवतहयजरिंदो ॥ कुबेरवरुणोत्तिनमी  
 गोमेहोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीउचकेसरी, अजिआडुरिआरि  
 कालीमहाकाली ॥ अचुअसंताजावा, सुतारयासोअसिरिवत्ता ॥ ९ ॥  
 चंनाविजयंकुसिपन्नइत्ति, निवाणिअचुआधरणी ॥ वइरुट्टु-  
 त्तगंधारी, अंबपनमावईसिध्वा ॥ १० ॥ इयतित्थरस्करणया,  
 अन्नेविसुरासुरीचक्रहावि ॥ व्यंतरजोइसिपमुहा, कुणंतुरस्कंसयाअ  
 म्हां ॥ ११ ॥ एवंसुदिठिसुरगण, सहिओसंघस्ससंतिजिणचंदो ॥  
 मझविकरेउरस्कं, मुणिसुंदरसूरिअहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिना  
 हसम्मदिठी, रस्कंसरइतिकालंजो ॥ सवोवइवरहिओ, सलहइसुह  
 संपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगञ्जगयलदिणयर, जुगवरत्तिरिसोमसुंदरगुरु  
 णं ॥ सुपसायलद्वगणहर, विज्जासिद्धिंजणइसीसो ॥ १४ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमात्मा, शिवसुखना दाता ॥ पुरस्कलवई विज्ज  
 ये जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंदरीगणी, नयरी  
 ये सोहे ॥ श्रीश्रेयांश राजा तिहां, जविषणना मन मोहे ॥ ३ ॥  
 चण्ड सुपन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंथु अर जिन  
 अंतरै, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रजु जनमिया, वली  
 योवन पावै ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमणी परणावै ॥ ४ ॥  
 जोगवी सुख संसारना, संजम मन लावै, मुनिसुव्रत नमी अंतरै,  
 दीक्षा प्रजु पावै ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्य करी, पाम्या कैवल  
 नांण ॥ वृषज लंठने शोभता, सर्व ज्ञावना जाणा ॥ ६ ॥ चौराशी जस  
 गणधरा, मुनिवर एकसो कोमी ॥ त्रण ज्ञुवनमां जोअतां, नहि  
 कोई एहनी जोमी ॥ ७ ॥ दश लाख कथा केवली, प्रजुजीनो

परिवारं ॥ एकं समयं त्रण कालना, जायै सर्व विचारं ॥ ८ ॥  
 छंद्य पैढाल जिनांतरे ए, प्राशै जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरुं  
 प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीव ॥ ए॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः  
 ॥ आसामंधर जगधणी, आ जरते आवो ॥ करुणावंत करुणा  
 करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल जक्त तुमे धणी ए, जो होवे  
 अम नाथ ॥ जवोजव हूं ठूं ताहरो, नहीं मेळूं इवे साथ ॥ २ ॥  
 सयल संग ठंकी करी ए, चरित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने,  
 शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुऊने घणो ए, पूरो सोमं-  
 धरदेव ॥ इहांअकी हूं वीनवूं, अवधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरो चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन दिनकरं ॥  
 सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल  
 गिरिवर शृंग मंरुण, प्रवर गुणगण जूधरं ॥ सुर असुर किन्नर  
 कोमि सेवित, नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जि-  
 नेगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमें अहनिशि, नमो० ॥ ३ ॥ पुंन-  
 रीक गणपति सिद्धि साधी, कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल  
 गिरिवर शृंग सीधा, नमो० ॥ ४ ॥ निजं साध्य साधन सुरिंद  
 मुनिवर, कोमिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्तिरमणी वस्था रंगै, नमो० ॥  
 ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक मांडी, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि  
 अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो० ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर  
 शिखर मंरुण, दुःख विहंरुण ध्याईये ॥ निज शुद्ध सत्ता साध-  
 नार्थे, परम ज्योतिनेंपाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विगोह निज,  
 परम पद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मवि-  
 लयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीशत्रुंजय  
 सिद्धक्षेत्र, दीठै दुर्गति वारै ॥ जाव घरीनें जे चढे, तेने जव पाइ

ऊतारै ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥  
पूर्व नवाणूं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुंभ  
सोहामणो, कवचयक्ष अन्निराम ॥ नान्निराया कुलमंणो, जिन-  
वर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेश्वर परमात्मा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधि  
देव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा  
रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण  
अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कळ्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन  
ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसोमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमात्म पासो जावजो ॥ मुज  
वीनतरु, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संजलावजो ॥ जे त्रएथ जुवन  
ना नायक ठै, जस चोसठ इंदर पायक ठै, नाण दरशण जेहना  
हायक ठै ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया ठै, जश धोरी  
लंठन पाया ठै, पुंमरीगणी नगरीनो राया ठै ॥ सुणो० ॥ २ ॥  
बार पर्वदा मांहि विराजै ठै, जश चोत्रीश अतिशय ठाजै ठै,  
गुण पेंत्रीस वाणीयें गाजै ठै ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ जविजनने ते पन्निबोहे  
ठै, तुम अधिक शीतलगुण सोहे ठै, रूप देखी जविजन मोहे ठै ॥  
सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो ठूं, पण जरतमां ठूरै वसि  
ओ ठूं, महा मोहराय कर फसियो ठूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण  
साहिब चित्तमां धरियो ठै, तुम आणा खरुग कर ग्रहियो ठै, तब  
कांइक मुजथी रुरियो ठै ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे  
पूरो, कहै पद्मविजय आऊं शूरो, तो बाधे मुज मन अति नूरो ॥  
सु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आंखनिये रे में आज सेत्रुंजो दीगो रे, सवालाख टकानो  
 दिहामो रे, लागे मुने मीगो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो ऊमा  
 हो, वालामारा, जवनो संशय जाग्यो रे ॥ नरक तिर्यच गति दूर  
 निवारी, चरणे प्रज्जुजीने लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवजवनो  
 लाहो लीधो, वाला० देहमी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपाने फू-  
 लमे वधावी, प्रेमे प्रदक्षणा दीधी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूधमे पखालीने  
 केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे  
 जोतां, पापमेवासी ध्रुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सु-  
 रपति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे ॥ त्रण जुवनमां तीरथ  
 मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ४ ॥ इइ सरीखा ए  
 तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल  
 टालै, सूरजकुंममां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ५ ॥ कांकरेश श्रीसिद्धकेत्रे,  
 वा० साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अ-  
 नंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाजिराया सुत नयणे जोतां, वा०  
 मेह अमीरश वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहै आज म्हारे पोते, श्री  
 आदीश्वर तूठ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुनः ॥ विमलाचल नित वंदियै, कीजै एहनी सेवा ॥ मानू  
 हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उक्ताज जिन गृहमंमली,  
 तिहां दीपे उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विन्नमें ॥ आई अंवर गंगा ॥ वि०  
 २ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि  
 आगलै, श्रीसीमंथर बोलै ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ कर्या,  
 जात्राफल लहियै, तेहथी ए गिरि जेटतां, शतगणुं फल लहियै ॥  
 वि० ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश  
 विजय संपद लहे, ते नर चिरवंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥

देखीने रे, जौन करी जावोर मजार रे ॥ आन० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचतोर्या चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरूं तारूं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रति  
मा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शेत्रुंजय श्रीआदिदेव,  
नेम नमूं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आवू रुषन्न जूहार  
॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरै, जिन चोवीशी जोय ॥ मखिमय  
मूरति मानसुं, नरते नरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ  
वरूं, ज्यां बीजे जिन पाय ॥ वैज्जारकगिरि ऊपरै, श्रीवीर जिने  
श्वरराय ॥ ४ ॥ मांरुवगढनो राजियो, नामे देव सुपाश ॥ रुषन्न  
कहै जिन समरतां, पोहचै मननी आश ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवंदन ॥

दु विध धर्म जिन उपदिश्यो, चोआ अजिनंदन ॥ बीजे  
जन्म्या ते प्रभु, नवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ दु विध ध्यान तुम्हे  
परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमतिजिन, ते चकिया  
बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहने नवि तजिये ॥  
सुऊ परे शीतल जिन कहै, बीज दिन शिव नजिये ॥ ३ ॥ जी  
वाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिने वासुपूज्य परे,  
लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न  
अहिये ॥ अरजिन बीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहिये ॥  
॥ ५ ॥ वर्तमान चोवीशीये, एम जिनकट्याण ॥ बीज दिने केइ  
पामिया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीये, हुआ  
बहुत कट्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुर  
खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपंचमीको चैत्यवंदन ॥

त्रिगनै वैग वीरजिन, नारखै नविजन आगै ॥ त्रिकरणसुं त्रिह

लोक जन, निसुयो मनरागे ॥ १ ॥ आराधो ज्ञवि ज्ञावसे, पांचम  
 अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, येहज तित्थि निहाली ॥ २ ॥  
 ज्ञान विना पशु साहिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी  
 लहुं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कहा;  
 काशकुशम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक प्मधान  
 ॥ ४ ॥ ज्ञानी सातोसासमें, करै कर्मनो खेह ॥ पूर्व कानी वरसा  
 लगे, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व  
 आराधक ज्ञान ॥ ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान ॥ ६ ॥  
 पंच माश लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच  
 भाशनी, पंचमी करो शुभ दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए,  
 काजसग लोगस्त केरो, कजमणूं करो ज्ञावगुं ए, टाले जव फेरो  
 ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणी ज्ञाव अपार ॥ वरदत्त  
 गुणमंजरी वरे, रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति पंचमी चैत्य-  
 वंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो, तेम फागुण  
 चदि आठमें, संजव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें,  
 जनम्या रुपज्जिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम  
 मुनिचंद ॥ २ ॥ मावव सुदि आठम दिने, आठ कर्म करचा दूर ॥  
 अजिनंदन चौथा प्रजू, पास्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम  
 कजली, जनम्या सुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हव-  
 रावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रतस्वामी ॥  
 नेम आपाढ सुदि आठमें, पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण  
 वदिनी आठमें, नमि जन्म्या जगज्जाण ॥ तिम श्रावण सुदि आठमें,  
 पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ ज्ञाववा वदि आठम दिने, चविया



रण तनु शोभतो ए, मुख शारदको चंद्र तो ॥ सहस वरस प्रभु  
 आठखो ए, ब्रह्मचारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए,  
 पोहता मुक्ति मजार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्या  
 मुक्ति मजार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार  
 तो ॥ पावापुरी नगरीमां वली ए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत-  
 शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥  
 नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, ज्ञाखे सार वचन तो ॥ जीवदया गुण  
 वेदनी ए, कीजै तास जतन तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए,  
 चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थकर इम कहे ए, परहरियै  
 परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यक्ष जलो ए, देवी श्रीअंबिका  
 नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै वलि धर्मना काम तो ॥  
 तपगठ नायक गुण निदो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिष-  
 जदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, ज्ञाव धरी सुरराजाजी ॥  
 आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावै जिनराजा जी ॥ वीरजिने  
 श्वर जन्म महोत्वस, करतां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनुं तप  
 करतां अम घर, मंगलकमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी  
 गजगंजन, अष्टापद परें बलीया जी ॥ आठमें आठसुरूप विचारी,  
 मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुंचता जिनवर,  
 फरस आठ नहि अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य  
 वाधे रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजै, समवसरण  
 जिन राजै जी ॥ आठमे आठ सो आगम ज्ञाखी, जवि मन संशय  
 ज्ञाजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पालै निरतीचारो जी ॥  
 आठमने दिन अष्ट प्रकारै, जीव दया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट

प्रकारी पूजा कराने, मानवजव फल लीजे जी ॥ सिद्धाई देवी  
जिनवरं सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजेजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे,  
निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, तपश्री,  
कोम कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रूवनी, गोविंद पूठे नेम ॥ कोण कारण  
ए पर्व मोटुं, कहो मुऊसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणक अति-  
घणा, एकशो ने पञ्चास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोटोहुं, करो मौन  
उपवाश ॥ १ ॥ अगिआर आवकतणी प्रतिमा, कहै ते जिनवर  
देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चौवीश  
जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल  
नीर जेइवुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग लखाविये,  
अगियार पाठां सार ॥ अगियार कवलो विंटणा, ठवशी पूंजणी  
सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी  
इम ऊजमो, जेम यामिये जव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी  
कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ नुजमंन चंम अखंम  
जेइनें, तमरतां सुख आय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि  
दुर्घ पंभित शीश, शासनदेवो विघन निवारो, संघतणा निश  
दीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शय्याविज्ञोः शैशवै ॥ रूपा-  
लोकनविस्मया, हृतरसत्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टंनयनप्रज्ञा  
धवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्रंपस्यपुनःपुनःसजयति, श्रीवर्ध-  
मानोजिनः ॥ १ ॥ इंसांसाइतपद्मरेणुकपिशा, क्षीरार्णवांजोचृतैः ॥  
कुंजैरप्सरस्तांपयोधरजर, प्रस्पर्धिज्जिःकांचनेः ॥ येषांमंदररत्नशैल-

शिखरे जन्मान्निषकेऋतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणै, स्तेषांनतोदं  
 क्रमान् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्रप्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगंविशालं ॥  
 चिप्रंबव्दर्थयुक्तंमुनिगणवृष्यै, धारितं बुद्धिमन्निः ॥ मोक्षाप्रद्वारज्ञ-  
 तंत्रलचरणफलं, ज्ञेयज्ञावप्रदीपं ॥ ज्ञक्त्यानित्यंप्रपद्ये श्रुतमहमखिलं,  
 सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचं-  
 द्राज्जदंष्ट्रं ॥ मत्तर्घटारवेशप्रसृतमदजलं, पूरयंतं समंतात् ॥ आरूढो-  
 दिव्यनागंविचरतिगगने, कामदः कामरूपी ॥ यद्गः सर्वात्तुञ्जुति दिश-  
 तुममसदा, सर्वकार्येषु सिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकंद सर्वदिन स्तुति ॥

कल्याणकंदं पढमं जिणंदं, संतित्तु नेमजिणं सुणिंदं ॥ पासं  
 पयासं सुगणिक्कणाणं, ज्ञत्तीइव्दे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥ अपार  
 संसार समुद्वपारं, पत्ताशिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणंदा सुर-  
 विंद विंदा, कल्याणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजा  
 ण कप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ॥ मयंजिणाणं सरणं बुहाणं  
 ॥ नमामि निच्चंतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंडींइ गोखीर तुसारवन्ना,  
 सरोज हत्ता कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुठयवग्ग हत्ता ॥ सुहा  
 यसा अम्ह सयापसत्ता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, गिरवरमांहे जिम मेरु उदार,  
 ह्याकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणूं, तारामांहे जिम  
 चंइ वखाणूं, जलधर मांहे जल जाणूं ॥ पंखीमांहे जिम उत्तम  
 ईश, कुलमांहे जिम रुषन्नो वंश, नाजितणो जे अंश ॥ क्कमा-  
 वंतमांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजयगिरि गु-  
 णवंता ॥ १ ॥ रुषन्न अजित संजव अजिनंदा, सुमतिनाथ मुख  
 धूमचंदा, पद्मप्रज्ञ सखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रज्ञ सुविधी, श्रुतल

श्रेयास सेवो बहु बृद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत  
 जिन धर्म ए शांती, कुंशु अर मद्धि नमुं एकांती, मुनिसुव्रत सुद  
 पंथी ॥ नमी पास ने वीर चौबीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश,  
 सिद्धगिरि आख्या ईश ॥ १ ॥ ज्ञरतराय जिन साथै बोलै, स्वामी  
 शत्रुंजयगिरि तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रूपन्न कहै सुणो ज्ञर  
 तराय, ठहरी पालंता जे नर जाय, पातिक नूको थाय ॥ पशु पं  
 खी जे इण गिरि आवै, ज्ञववीजे ते सिद्ध ज आवै, अजरामर  
 पद पावै ॥ जिनमतमें सेत्रुंजो बखाण्यो, ते में आगम दिलमांहे  
 आण्यो, सुषाता सुख उर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति ज्ञरत नरेसर  
 आवै, सोवनतणां प्रासाद करावै, मणिमय मूरति ठावै, नाजिरा-  
 य मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बहिन विख्याता, मूर्ति नवाणुं  
 आता ॥ गोमुख नें चक्रेसरदीवी, शत्रुंजय सार करै नित्यमेवी,  
 तपगठ ऊपर देवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वरराया, श्रीविजयदेव  
 सूरी प्रणामी पाया, रूपन्नदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तुतिः ॥

महाविदेह क्षेत्रं सीमंधरस्वामी, सोनाना सिंहासना जी,  
 रूपाना कोशीसा विराजै रत्नना दीवा दीपै जी ॥ कुंकुमवर्णी  
 गहंली विराजै मोतीना अकृत सार जी, त्यां वैठा सीमंधरस्वामी  
 बोलै मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ केसरचंदन ज्ञरी रे कचोली क  
 स्तूरी वराज्ञ जी, पहलीरे पूजा अमारी रे होजो ऊगमते परज्ञात जी ॥

॥ अथ पंचिदिय संवरणो ॥

॥ पंचेदिय संवरणो, तह नव विह वंजचेर गुत्तिधरो ॥ च  
 उबिह कसाय मुको, इय अठारस गुणेहि संजुतो ॥ १ ॥ पंच म  
 इवय जुतो, पंच विहायारपालण समत्थो ॥ पंच समईतिगुतो,  
 ग्नीस गुणेहिं गुरुमज्ञ ॥ २ ॥

॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

॥ सामाश्यवयजुत्तो, जावमणोहोशनियमसंजुत्तो ॥ विन्नइअ सुहंकम्मं, सामाश्यजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाश्यंमिउकए, समणो इवसावन्नहवइज्झा ॥ एएणकारणेषं, बहुसोसामाश्यंकुजा ॥ २ ॥ सामायक विधे लीधु विधे पारिउं विधि करतां जे अविधि हुओ होइ ते सबे हुं मन वचन कायायें करी मिञ्चामि उक्कं ॥ दश म नना-दश वचनना बारै कायाना एवं वत्तीस दूषणामांहे जे कोइ दूषण लागो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिञ्चामि उक्कं ॥

॥ अथ पोसह पारवानो गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंदवमिसोसुदंसणोवन्नो ॥ जेसिंपोसह पन्निमा, अखंमिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहणिजा, सुवसा आणंदकामदेवाय ॥ जेसिंपसंसइज्जयवं, दह्वयंतंमहावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधे लीधुं विधे पारियुं विधि करतां जो कोइ अविधि हुउ होय ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिञ्चामि उक्कं ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यंवदन ॥

॥ इञ्जाकारेण संदिस्सह जगवन् चैत्यंवदन करुं, इत्तं ॥ जग चिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरक्खण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह, जगजाव विथक्खण ॥ अठावय संठविअरूव, कम्मठ विणासण ॥ चउवीसं पि जिणवर जयंतु, अप्पमिहथ शाशण ॥ १ ॥ कम्मजू-मिहिं२ पढम संघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरं त लअई ॥ नवकोमिहिं केवल्लिण, कोमि सहस्स नव साहू गम्मई ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोमिहिं वरणाण ॥ समणहकोमी सहस दोअ, धुणि जअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउसामी२ रिसहसंतुंजि उज्जित पहू नेमजिण ॥ जयउ वीर सच्च उरमंणण, जरुअअहि मुणिसुवय ॥ महुरियसा

बुद्ध पुरिय खंण, अवर विदेहिं तित्थयरा ॥ चिहुं विसि विदिसि  
जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंडु जिण सवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ  
सहस्ता, लस्का उपन्न अठ कोनीउ, वत्तीसय वासीआइ, तिय  
लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोमि सयाइं, कोनी वायाल लस्क  
अरुवन्ना ॥ उत्तीस सहस असियाइं, सासय विंवाइ पणमा-  
मि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि ॥  
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणिउ ॥ १ ॥ काले विणए  
बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तडुजय,  
अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निक्कंखिअ, निधि ति  
गिअ अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वच्चल पजावणे अठ  
॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस  
चरित्ता यारो, अठविहो होइनायवो ॥ ४ ॥ वारसविहंमिवि तवे, अ  
प्रितर वाहिरे कुगल दिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायवा सो त  
वायारो ॥ ५ ॥ अणसण सुणो यरिआ, वित्ती संखेवणं रसच्चाउ  
काय किलेसो संली ए याय, वज्जो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायच्चित्तं वि  
णउ, वेयावच्चं तहेव सज्जाउ ॥ जाणं उस्सग्गोविय, अप्रितर उ त  
वो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ वल विरिओ, परिकमइ जो जहुत्त मा  
ऊत्तो ॥ जुंजइअ जहाथामं, नायवो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यदंतांशुकेशरं ॥ प्रातर्वीरजिनैद्रस्य,  
मुखपद्मंपुनातुवः ॥ १ ॥ येषामग्निपेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षजरात्  
सुखं सुरैः ॥ तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते  
जिनैः ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुअसनं सदोदयं ॥

अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रज्ञापितं, दिनागमे नौमिबुवैर्नमस्कृतं ॥३॥ इति॥

॥ अथ सुयदेवतानो स्तुतिः ॥

सुअ देवयाए करेमि कानसग्गं० सुअ देवया जगवई, ना  
णावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसिं खवेज्ज सययं, जेसिं सुअसायरे जत्ती ?

॥ अथ खेत्रदेवतानो स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सइएहिं ॥ साहं  
ति मुक्कमग्गं, सा देवी हरज्ज डुरियाइं ॥ १ ॥ इति

॥ अथ साम्नायकलेवानो विधि ॥

॥ प्रथम नुंचे आसणे पुस्तक प्रमुखनी थापना मूकीने आ  
वक आविका कटासणुं मुहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वस्त्र पहरी ज  
ग्या पूंजी कटासण ऊपर बैशी मुहपत्ती नावा हाथमां मुख पास  
राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणी  
( पंचिंदिअ ) कही इत्थामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी  
अन्नजससिएणं कहै, १ लोगस्सको अथवा ज्यार नवकारनो कान  
सग्ग करै ( पारी ) प्रगट लोगस्स कहै, खमासमण देई इत्थाका  
रेण संदिस्सह जगवन् सामायक मुहपत्ती पन्निहेहुं इत्थं । इम कही  
मुहपत्ती तथा अंगनी पन्निहेहणना पचास बोल कही मुहपत्ती प  
न्निहेहीए पढी खमासमण देई इत्थाकारेण संदिस्सह जगवन् सामा  
यक संदिस्सानं इत्थं । वली खमासमण देई इत्था० सामायकठानं  
इत्थं । एम कही बे हाथ जोनी एक नवकार गणी इत्थाकार जग  
वन् पसाय करी सामायकदंरुक्क उच्चरावोजी, पढी गुरु प्रमुख व  
नेल करेमिज्जंते कहे, पढी खमासमण देई इत्था० वैसणो संदिसा  
नं । खमा० इत्था० वैसणोठानं, खमा० इत्था० सिज्जाय, संदिस्सानं  
खमा० इत्था० सिज्जाय कहं इत्थं, एम कही जण नवकार गणावा । पढी  
बे घनी सज्जाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानी विधि ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधिः ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पन्तिकम्याथी ( यावत् ) लो  
गस्त सूत्री कही खमा० इच्छा० मुंहपत्ती पन्तिकेहुं एम कही मुंह  
पत्ती पन्तिकेही खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं यथाशक्ति,  
वली खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं तद्वत्ती कही पठी ज  
मणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नव  
कार गणी सामाश्यवयजुत्तो० कहिए, पठी जमणो हाथ थापना  
सामो तवलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पार  
वानो विधि ॥

॥ अथ दैवरिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम सामायक लीजै, पठी पाणी वावरुं होय तो मुंहपत्ती  
पन्तिकेही अने आहार वावरयो होय तो वांदणा वे देवा, तिहं  
वीजा वांदणामां आवस्तिवाए ए पाठ नही कहिवो. पठी यथाशक्ति  
पञ्चकाण करुं, पठी खमासमण देई इच्छा० कही वंमेरायें अथवा  
पोते चेत्यवंदन कहवुं, पठी जंकिंचि० नमोत्तुणं० कही ऊजा अर्शने  
अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो काउसगग करी नमोर्हत्० क  
हीनें प्रथम थुई कहवी, पठी लोगस्त० सबलोए अरिहंतचेइयाणं  
कही एक नवकारनो काउसगग पारीनें वीजी थुई कहवी, पठी  
पुस्करवरवी० कही सुअस्तज्ञगवत्त करेमिकाउसगगं वंदण० कही  
एक नवकारनो काउसगग पारी वीजी थुई कहवी पठी सिक्षाणं वुक्षाणं०  
कही वेवाचञ्जगराणं० करेमि काउसगगं अनत्तु० कही एक नवका  
रनो काउसगग पारी नमोर्हत्कही चोथी थुई कहवी पठी वैसीनें  
नमोत्तुणं कही, पठी चार खमासमण देवापूर्वक जगवान् आचार्य  
उपाध्याय सर्वसाधुच्यः प्रते प्रोन्नवंदन करीयै. पठी इच्छाकारेण०  
दैवतिक प्रतिक्रमणगठानं एम कही जमणोहाथ चवला अथवा कटा-



सणा ऊपर थापीने इच्छं सवस्सवि देवसियं कहेवुं, पढी ऊजा थई  
 करेमिज्जंते इच्छामिठामिकानसग्गं जोमेदेवसिनुं तस्सउत्तरीं कहीने  
 अतीचारनी आठ गाथानो कानसग्ग करवो, आठ गाथा न आवदे  
 तो आठ नवकारनो कानसग्ग करवो, ते कानसग्ग पारीने लोगस्स  
 कहेवुं, पढी बैसीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पणिलेहीने वांदणा  
 बे देवा, पढी ऊजा थईने इच्छाकरेणं देवसियं आलोउं इच्छं आलो  
 एमि जोमेदेवसिनुं कहीने सातलाख कहवा. पढी अठार पाप  
 स्थानकआलोइये, सवस्सविदेवसिअ कहीने बेसवुं, बेसीने एक नव  
 कार गणी करेमिज्जंते इच्छामिठामिपणिकमिनुं कहीने वंदित्तु कहेवुं  
 पढी वांदणा बे देवा, पढी अपुठ्ठिअमिअपित्तर देवसिअं खामीने  
 वांदणा बे देवा, पढी ऊजा थई आचरियउवद्याए कहीने करेमि-  
 ज्जंते इच्छामिठामिं जोमेदेवसिनुं तस्सउत्तरीं कही बे  
 लोगस्स अथवा आठ नवकारनो कानसग्ग करवो, ते पारीने लोगस्स  
 कही सवल्लोए अरिहंतचेइयाणं वंदणावत्तिं कही एक लोगस्स  
 अथवा च्यार नवकारनो कानसग्ग पारीने पुस्करवरदीं सुअस्सज्ज  
 गवउ करेमिकानसग्गं वंदणां कहीने एक लोगस्स अथवा च्यार  
 नवकारनो कानसग्ग करवो, ते पारीने सिद्धाणं बुद्धाणं कही सुय-  
 देवयाए करेमिकानसग्गं अनत्तुं कही एक नवकारनो कानसग्ग  
 करवो, ते पारी नमोऽर्हत्कही पुरुषे सुयदेवयानी पहली थुई कहवी  
 अने स्त्रिये कमलदलनी पहली थुई कहवी. पढी खेत्रदेवतानी  
 बीजी थुई स्त्रिये तथा पुरुषे बन्नेए एकज कहवी. पढी ? नवकार  
 प्रगट गुणी बैसीने ठठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पणिलेहीने बे  
 वांदणा दीजै, पढी सामायक चउवीसठो वंदनक पणिकमणुं कान-  
 सग्ग अने पच्चरकाण करुवुंजी एम ए ठए आवश्यक संज्जारवा. पढी  
 इच्छामो अणुसठिं नमोखमासमणाणं कही नमोऽर्हत् कही पुरुष



नमोऽस्तुवर्द्धमानाय कहे अने स्त्रिया संतारदावानी व्रण धुई कहे  
 पठी नमोऽस्तुशं कही स्तवन कहवुं, पठी वरकनक कही जगवान  
 आदे वांदवा, पठी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी अढाइजेसु क-  
 हेवुं, पठी देवसिअपायञ्चित्तनो कानसग्न च्यार लोगस्त अथवा  
 गोलनवकारनो करवो, कानसग्न पारी प्रगट लोगस्त कही बेसोने  
 खमासमण देई इच्छा० सिञ्चायसंदिस्तांत्रं, बीजुं खमासमण देई  
 इच्छा० सिञ्चायज्ञणूं एम सिञ्चायनो आदेश मांगी एक नवकार गणी  
 सिञ्चाय कही, पठी एक नवकार गणी खमासमण देई उःस्कक-  
 नकम्मस्कनो कानसग्न च्यार लोगस्तनो संपूर्ण अथवा शोल  
 नवकारनो करवो, ते एक वरेरे अथवा पोत पारीने नमोऽईत्कही  
 लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्त कहे, पठी श्रियावही० तस्तत्र-  
 चरी० कही एक लोगस्त अथवा च्यार नवकारनो कानसग्न करी  
 प्रगट लोगस्त कहेवो, पठी चउकसाय० नमोऽस्तुशं० कही जावति  
 वे कहीने उवसग्नहरं० जयवीरराय कही मुंहपत्ती परित्रेहवो पठी  
 इच्छामि० इच्छाका० सामायक रासं यथाशक्ति इच्छामि० इच्छाका०  
 सामायकपास्युं तद्वत्ति कही पठी जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी  
 एक नवकार गणीने सामाश्यवयजुत्तो० कहेवुं, पठी थापेत्री आ-  
 पना होयतो एक नवकार गणी उठे, ए देवसि प्रतिक्रमण विधि  
 कयो, बाकी अंतरविधि मोहटाथी समजवो ॥ इति देवशी प्रति-  
 क्रमण विधिः ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम पूवली रीते सामायक लेवुं पठी इच्छामि० इच्छाका०  
 कही कुसमिणनो उतमिणनो च्यार लोगस्तनो अथवा शोल  
 नवकारनो कानसग्न करी पारी प्रगट लोगस्त कहेवो, पठी खमास-  
 मण देई जगचितामणीनुं चेत्यवंदन जयवीरराय सूधी कहेवुं, पठी

च्यार खमासमणपूर्वक जगवान आचार्य उपाध्याय अने सर्वसाधू प्र-  
 त्येके वांदवा, पठी खमासमण वे देई सध्यायनो आदेश मांगी एक  
 नवकार जणीने जरहेसरनी सध्याय कहीने फरी ? नवकार गण-  
 वो, पठी इठकारसुहराईनो पाठ कहवो, पठी इठ्ठाका० राईपदि-  
 क्कमणोठाउं कहीने जमणो हाथ ऊपधी ऊपर आपीने पठी इठं  
 सबस्सविराईय इच्चितिय० कही नमोत्थुणं तथा करेमिजंतं कही  
 इठ्ठामिठामिकाउसगं० तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा  
 च्यार नवकारनो काउसग पारीने प्रगट लोगस्स कही सबलोएअ-  
 रिहंत० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग करवो,  
 पठी पुस्करवरदी० सुअस्स० वंदणव० कही अतीचारनी आठ गा-  
 थानो अथवा न आवदे तो आठ नवकारनो काउसग पारी सि-  
 ष्ठाणंबुद्धाणं कहीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पणिलेही वांदणा  
 वे देवा तिहांथी लेनें अप्पुठ्ठिमिखामी बांदणा वे दीजै तिहां सूधी  
 देवशीनी रीते जाणवुं, पण जे ठिकाणे देवसियं आवै ते ठिकाणे  
 राईयं कहेवुं, पठी आयरियनवध्याए० करेमिजंतं० इठ्ठामिठामि०  
 तस्सउत्तरी कही तपचितामणी करतां न आवदे तो च्यार लोगस्स  
 अथवा शोल नवकारनो काउसग करवो, ते पारी प्रगट लोगस्स  
 कही उठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पणिलेही बांदणा वे देवा, पठी स-  
 कल तीर्थवंदन करीने यथाशक्तियें पञ्चक्राण करवुं, पठी इठ्ठा-  
 कारेण संदिस्सह जगवन् सामायकचनवीसत्थो वंदनक पणिक्कमण  
 काउसग पञ्चक्राण करवुं ठेजी, एम ठ आवश्यक संज्जारवा, पठी  
 पञ्चक्राण करवुं होयतो करवुं ठेजी अने धारवुं होयतो धारवुं ठेजी,  
 एम कहवुं, पठी इठ्ठामोअणुसदिं० नमोखमासमणाणं० नमोईत्तं०  
 कहीने विशाललोचन० नमोत्तुणं० अरिहंतचेइयाणं० कही एक  
 नवकारनो काउसग पारी नमोईत्तकही कट्टयाणकंदनी प्रथम थोय

कहवी, पठी लोगस्त० पुरस्करवरी० सिद्धाणांबुद्धाणां कही अनु-  
क्रमे च्यार थोयो कहवी, पठी नमोत्रुणं कही जगवान् आदि चारने  
च्यार खमासणे वांदवा, पठी जमणो हाथ ऊपधि ऊपर थापी अ-  
द्दाइजेसु कहेवुं पठी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवी-  
राय० कान्तसग० थोय पर्यंत कहीये तिहांसुधी करवुं, पठी खमा-  
सणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय कान्त-  
सग० अने थोय कहवी, पठी सामायक पारवानी विधियें सामा-  
यक पारवुं इति ॥

॥ अथ परकी प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवतिक प्रतिक्रमणमां वंदितु कही रदियै तिहांसूधी  
सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलाईतनुं कहेवुं अने थोयो स्नात-  
स्यानी कहेवी, पठी खमासमण देरने इच्छाकारेण संदिस्तद जग-  
वान् देवसिधं आलोश्यंपनिक्कंता इच्छा० परिक्रयमुंहपत्ती पनिलेहुं  
एम कही मुंहपत्ती पनिलेहीये, पठी वांदणा वे दीजे, पठी इच्छा-  
कारेण० संबुद्धाखामणेणं अणुण्डिइं अण्णितर परिक्रयंखामेणं इच्छं  
खामेमिपरिक्रयं पन्नरत्तदिवसाणं पन्नरत्तराइयाणं जंकिंचिअप्पत्तियं०  
कही इच्छाकारेणसं० परिक्रयंआलोएमि इच्छं आलोएमि जोसेपरिक्र-  
यंअइयारोकणं कही इच्छा० परकी अतीचार आलोऊं. एम कही  
वृद्ध अतीचार कहीये, पठी एवंकारे आवकतणें घर्मे श्रीसमकितमृ-  
तवारव्रत एकसो चोवीस अतीचारमांहे जे कोई अतीचार पदुदि-  
चसमांहे सृद्धम वादर जाणतां अजाणतां दुण होय ते सबे हुं  
मनकर वचनकर कायार्थेकरी मिठामिडकनं ॥ सबस्तविपरिक्रय  
उच्चित्तिअ उग्रसिय उच्चिदिय इच्छाकारेण संदिस्तद जगवन् तस्त  
मिठामिडकनं ॥ इच्छाकारिजगवन् पसाण करी परकी तपप्रशाद  
कराण जी, एम उच्चार करीने आवी रीते कहीये, चउत्प्रेणं एकउ-

पचाश बेआंबिल त्रणनीवि च्यारएकाशणा आठवेआसणा वेहजार  
 सझाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश करयो होयतो पड्ठी कहीए,  
 करवो होयतो तदत्ति कहीये, न करवो होयतो अणबोड्या रहीये  
 पठी वांदणा बे दीजै, पठी इच्छाकारे० पत्तेयखामणेणं अप्पुठिनहं  
 अप्पिंतर पस्किअं खामेणं इच्छं खामेमिपस्किअं पन्नरसदिवसाणं  
 पन्नरसराइआणं जंकिंचिअप्पत्तियं० पठी वांदणा बे दीजै पठी देव-  
 सियआलोइयपन्किंता इच्छाका० जगवन् पस्किअंपन्किअं समपन्कि  
 कमामि इच्छं एम कही करेमिजंतेसामाइयं० कही इच्छामिपन्कि  
 मिजं जोमेपस्किन० कहवो पठी खमासमण देई इच्छाका० प  
 स्कीसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु न होयतो त्रण  
 नवकार गणीने आवक वंदित्तु कहै, पठी सुयदेवयानी शोय कहवी  
 पठी हेवा बैसी जमणोठीचण ऊन्नो राखो एक नवकार गणी क  
 रेमिजंते० इच्छामिपन्कि० कही वंदित्तु कहेवुं०, पठी करेमिजंते इ  
 च्छामिठामिकाउसग्गं जोमेपस्किन० तस्सनत्तरी० अन्नबू० कहाने  
 (१२) अर लोगस्सनो काउसग्ग करवो, ते लोगस्स चंदंसुनिम्मल  
 यरा सूधी कहवा अथवा अरुतालीस नवकारनो काउसग्ग करी  
 पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही मुंइपत्ती पन्दिहेहीने वांदणा  
 बे दीजै, पठी इच्छाका० समासिखामणेणं अप्पुठिनहं अप्पिंतर०  
 पस्किअंखामेणं इच्छं खामेमिपस्किअं पन्नरसदि० कही पठी खमा  
 सण देई इच्छाका० कही पस्कीखामणाखामूं एम कही खामणा  
 च्यार खामवा पठी दैवसीप्रतिकमणां वंदित्तु कया पठी बे वां  
 दणा देईने तिहांथी ते सामायक पारीये तिहांसूधी सर्व दैवसीनी  
 पेठे जाणवु, पण सुयदेवयानी शुईने ठिकाणे ज्ञानादि शोयो कहवी  
 स्तवन अजितशांतिनुं कहवुं, सझायने ठिकाणे उवसग्गहरं तथा  
 संसारदावानी शुई च्यार कहेवी अने लघुशांतिने ठिकाणे मोइटी

शांति कहेवी ॥ इति परकी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरना कह्या प्रमाणे सर्व विधी करची पण एटलो वि  
शेष, चार लोगस्सना काउसग्गने ठिकाणे चीत लोगस्सनो काउ  
सग्ग करवो अने परकीना आगारने ठिकाणे चउमाशीना कहवा,  
यथातपने ठेकाणे ठेकां वे उपवास च्यार आंवल ठनीवी आठ ए-  
काशणा शोल वेआसणा च्यारहजारसज्ञाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लख्या मुजव एटलो विशेष पण परकीना  
चार लोगस्सने ठिकाणे चालीश लोगस्सनो काउसग्ग अथवा एक  
शो शाठ नवकारनो काउसग्ग करवो, अने तपने ठिकाणे अठमत्त  
एटले त्रणउपवाश ठआंवल नवनीवी चारएकाशण चोवीश वेआ-  
सणा अने ठहजार सिज्ञाय ए रीते कहवुं अने परकीना आगारने  
ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पहिलेहण करवानो विधी ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावही पन्तिक्रमवी. थापना हो-  
य तो नवकार पंचिंदिय न कहवुं, पठी उस्सउत्तरी कही एक लो  
गस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही  
उत्ते पगे बैसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीउं कंदोरो  
आदिनुं पन्तिकेहण करवुं, पठी काजो काढी जीव कलेवर सञ्चित  
आदि जोवुं, पठी काजो काढनार थापनाजी सन्मुख उत्तो रही  
इरियावही पन्तिक्रमे पठी काजो परठववा जग्या सोधी त्रणवार  
अणुजाणहजस्सुगो कही काजो परठवे, पठी त्रण चार बोसिरे  
कहे ॥ इति पन्तिकेहण करवानो विधी ॥

राग ने द्वेष दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति उद्धट  
 धरे जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुभक्ति, विमय करी सेवो सदा जी  
 ॥ पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ इति  
 बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥  
 ( ॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥ ) सुत सिद्धारथ  
 चूपनो रे, सिद्धारथ जगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, जाखे  
 श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ ज्ञविषण चित्त धरो ॥ मन वच काय  
 अमायो रे, ज्ञान भक्ति करो ॥ एआंकणी ॥ गुण अनंत आतमत-  
 लारि, मुख्यपणे तिहां द्योय ॥ तेमां पण ज्ञानज वसुं रे, जिणथी  
 दंसण होय रे ॥ ज० २ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने  
 उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने धिवरपणुं लहे रे, आचारज उवज्ञाय रे  
 ॥ ज० ३ ॥ ज्ञानी श्वासोवासां रे, कठिण करम करे नाश ॥  
 वह्नि जेम इंधन दहे रे, क्षणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ज० ४ ॥  
 प्रथम ज्ञान पढे दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुणवाणांग  
 पगथालीये रे, जेम चढे मोह आवासोरे ॥ ज० ५ ॥ मइ सुअ  
 उहि मणपऊवा रे, पंचम केवलज्ञान ॥ चत्र मुंगा भुत एक  
 ठे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ ज० ६ ॥ तेहना साधन जे  
 कथा रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावै साचवैरे, धर्मी धरी  
 अप्रमादो रे, ॥ ज० ७ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, ज्ञातां  
 करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोवना रे, मुंगा पांगुल थाय रे  
 ॥ ज० ८ ॥ ज्ञातां गुणातां न आवने रे, न मले वद्धज चीज ॥  
 गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ज० ९ ॥ प्रेम  
 पूढे परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे,  
 करो अधिकार पसायो रे ॥ ज० १० ॥ इति ॥

( ॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए० देशी ॥ )  
 जंबुद्वेपना नरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजित-  
 सेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आ-  
 राधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए  
 आकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें  
 जणवा मूंकित्त रे, आठ वरस जव हुंतरे ॥ प्रा० २ ॥ पंक्ति  
 यत्न करे घणो रे, मात्र जणावण देत ॥ अकर एक न आवणे रे,  
 अग्रतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोठें व्यापी देहनी रे, राजा  
 राणी सचित ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे  
 ॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका गेहनी रे, शीले शोजित अंग ॥ गुण  
 मंजरी तस बेटनी रे, मुंगी रोगे अंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शील  
 वरसनी सा थई रे, पामी यौवनवेश ॥ दुर्जग पण परणे नही रे,  
 सात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणे अवसरे उद्यानमां रे,  
 विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रत-  
 धार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक नूपालने रे, दीध वधाइ जाम ॥  
 चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्म-  
 देशना सांजले रे, पुरजने सहित नरेश ॥ विकशत नयन वंदन  
 मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ९ ॥ ज्ञान विराधन परजवे रे,  
 मूरख पर आधीन ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, वीसै दुःखीयां दीन  
 रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख देत ॥  
 ज्ञान विना जगजीवना रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥  
 श्रेष्ठी पूठे मुणिदने रे, जाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुज अंग-  
 जा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥  
 ( ढाल ३ ॥ सूरती महिनाती देशीमां )  
 धानकीखंफना नरतमां, खेटक नयर सुवाम ॥ व्यवहारी



ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहो किम आवने ॥ गुरु कहे  
तपथी पाप नासै, टाढ जेम घन तावने ॥ जूप पज्जणें पूत्रने प्रजु,  
तपनी शक्ति न एवनी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधा, संपदा  
दियो बेवनी ॥ १० ॥ इति ॥

( ढाल पांचमी ॥ मैदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥ )

सजुरु वयण सुधारसे रे, जेदीसाते धात ॥ तपसुं रंग लागो,  
गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिथ्यात्व ॥ त० १ ॥ पंचमी तप  
महिमा घणो रे, पसरथो महियल मांही ॥ त० ॥ कन्या सहस  
सयंवरा रे, वरदत्त परणयो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ जूपें कीधो पाट  
वी रे, आप थयो मुनि जूप ॥ त० ॥ ज्ञीम कांत गुणें करी रे, वर  
दत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, जोगवै  
जोग अखंरु ॥ त० ॥ वरसेंश ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचंरु ॥ त०  
॥ ४ ॥ जुक्तजोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥ त० ॥  
गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावै निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख  
विलसी थई साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण  
ऊप्रनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे  
रे, गुणवंत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्षण लकित रायने रे, पुण्यें  
कीधो जेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या ज  
रतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥  
त० ॥ ८ ॥ तिहां पण ते तप आदरथुं रे, लोक सहित जूपाल ॥  
त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पालै राज्य ऊदार ॥ त० ॥ ९ ॥  
चार महाव्रत चुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि  
मुक्ते गयो रे, सादिअनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शु  
जापुरी रे, जंबुविदेह मऊर ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे,  
अमरावती धरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी चवी रे, गुणमं-

जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानससर जेम हंसलो रे, नाम धरथु सु  
 ग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ बीसे चरसे राजवी रे, सहस चोरासी पूत्र ॥  
 त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥  
 पंचमी तप महिमा विपे रे, जायै निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणें  
 जेदधी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

( ढाल छठो ॥ करकडुने करुं वंदना ॥ ए देशी )

चोवीश दंरुक वारवा, हूं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे,  
 हूं वारी लात ॥ प्रगढ्यो प्राणतस्वर्गयी, हुं० ॥ त्रिसला उर  
 सुखकंद रे ॥ हुं० १ ॥ माहावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आ-  
 कणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विलाश रे,  
 हुं० ॥ माहानिशीथ सिद्धांतमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे,  
 हुं० मा० २ ॥ अपराधी पण अधर्यो, हुं० ॥ चंरुकोसियो साप रे,  
 हुं० ॥ यज्ञ करंता वांजणा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हुं० मा०  
 ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिपनदत्त वली विप्रे, हुं० ॥  
 व्यासी दिवश संबंधधी, हुं० ॥ कामित पूरयो क्षिप्र रे ॥ हुं०  
 मा० ४ ॥ कर्मरोगने टालवा, हुं० ॥ सवि औपधनो जाण रे,  
 हुं० ॥ आदर्यो में आसा घरो, हुं० ॥ मुऊ ऊपर हित आणि रे,  
 ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयलिह सुरीसनो, हुं०, सत्यविजय पन्यास  
 रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हुं० ॥ चंद किरण जस जात  
 रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पंचासरा सान्निधे, हुं० ॥ खिमाविजय  
 गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुऊ हजो, हुं० ॥ पंचमी  
 तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ ( कलश ) इग वीर लायक  
 विश्व नायक सिद्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोरु  
 गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे सत्तरत्राणुं संवत्सरे,  
 श्रीपार्थ जन्मकट्याण दिवसें सकल जिवि संगल करे ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हारं मारे ठाम्म धरमना साढापचवीश देश जो, दोषे रे  
 त्या देस मगध सहुमां शिरे रे लो ॥ हारं मारे नगरी तेहमां राज-  
 गृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजै गज परे रे लो ॥१॥  
 हारं मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां  
 आवी वीर समोसरया रे लो ॥ हां० चन्द्रसहस्रमुनिवरना साथे साथ  
 जो, सूधा रे तप संयम शिथले अलंकरया रे लो ॥ २ ॥ हां० फूड्या  
 रसन्नर जूड्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुण शालिवन हसि  
 रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अविखंब जो,  
 वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतु-  
 र्विध आवै कोमाकोम जो, त्रिगुं रे मणि हेम रजतनुं ते रवे रे  
 लो ॥ हां० चोसठ सुरपति सेवे होमाहोरु जो, आगे रे रस लागे  
 इंद्राणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासण बेग  
 आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरतनें जम्या रे लो ॥ हां०  
 सुणतां डुंडुजि नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस  
 जानू अम्या रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजे तेजे गाजे धन जेम लूंब  
 जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० निरखी  
 हरखी आवै जन मन लूंब जो, पोषे रे रस न पके धोषे जर्ममां  
 रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो,  
 आव्यो रे परवरियो हय गय रथ पायगे रे लो ॥ हां० दइ प्रद-  
 क्षिणा वंदी वैठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे ज्ञायगे रे  
 लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिभूवननायक लायक तब जगवंत जो, आणी  
 रेजन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सहज विरोध विसारी  
 जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो ॥ ८ ॥  
 इति ॥ (॥ ढाल बीजी ॥ बालम वहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥)

वीर जिनवर एम उपदिसै, सांजलो चतुरसुजाण रे ॥  
 मोहनी नीदमां कां पनो, उलखो धर्मनां ठाण रे ॥ १ ॥ विरति  
 ए सुमति घरी आदरो, ( ए आंकशी ) परिहरो विषय कयाय रे ॥  
 वापना पंच परमादथी, कां पनो कुगतमां धाय रे ॥ वि० २ ॥  
 करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले  
 करी नवि सको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ  
 पर्व खटना कह्या, फल घणा आगमं जोय रे ॥ वचन अनुसारे आ  
 राधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु  
 परजवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणी एह आराव  
 तां, प्राणिउ सद्वृत्ति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल  
 तिहां, पूवै गौतमस्वामि रे ॥ जविक जीव जाणवा कारणे, कहे  
 वीरप्रभु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, सं-  
 यदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण  
 सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ लाज होय आठ पन्दिहारनो, अठ पवयण  
 फल होय रे ॥ नाश अठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे  
 ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्म क-  
 ढ्याण रे ॥ अवन संजवतणो एह तिथे, अजिनंदन निर्वाण रे ॥  
 ॥ वि० ॥ ९ ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमोया, नेमनो मुक्ति दिन  
 जाण रे ॥ पातजिन एह तिथे सिद्धा, सातमा जिन अवन माण  
 रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि सायतो राजिउ, दंभवीरज लह्यो  
 मुक्ति रे ॥ कर्म दणवा जणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि०  
 ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केर केर कढ्याण  
 रे ॥ एह तिथे बलि घणा संजर्मा, पामते पद निर्वाण रे ॥ वि०  
 ॥ १२ ॥ धर्म वाजित पशु पंखिया, एह तिथे करे ऊपवान रे ॥  
 व्रतधारी जीव पोसो करे, जेहने धर्म अन्पात रे ॥ वि० ॥ १३ ॥

दशमी दिन आठ, पहरो पोतो धरे री ॥ १३ ॥ डनि ॥ ( हाल जी  
 जी ) पत्नी संयुते पोसह लीगो, सुव्रतजेठे अन्यदा जी ॥ अवरर  
 जाणी तस्कर आया, घरमां धन लुटे तदा जी ॥ १ ॥ शासनन  
 के देवीशक्ते, घंजाणा ते वापमा जी ॥ कौलादत्त सुणि कोटवाल  
 आया, नूप आगल धरया संकमा जी ॥ २ ॥ पोसहपारी देव जुडारी,  
 दयावंत लेइ जेटणा जी ॥ रायने प्रणमी चोर मृत्तावी, अंठे की  
 धा पारणा जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवडा विख्यातल लागो, सोरीपुरमा  
 आकरो जी ॥ सेठजी पोसह समरत वेग ॥ लोक कहे इठ कां  
 करो जी ॥ ४ ॥ पुण्ये दाट बखारो शैठनी, उगरी सह प्रबंसा  
 करे जी ॥ हरखे सेठजी तप ऊजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥  
 ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो जार जलावी, संवर्गी शिर सेदरो जी ॥ च-  
 उ नाणी विजय शेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक  
 खटमासी ज्यार घोमाजी, दांतव ठठ सो अछम करे जी ॥ बीजा तप  
 पिण बहुश्रुत सुव्रत, मौनएकादशी व्रत धरे जी ॥ ७ ॥ एक अ-  
 भ सुर मिथ्यादृष्टि, देवतासुव्रतसाधुने जी ॥ पूर्वोपाजितकर्म उदरी,  
 अंगे वधारे व्याधिने जी ॥ ८ ॥ कर्म नमियो पापे जमियो, सुर क-  
 है जाठ औपधजणी जी ॥ साधु न जाये रोप जरागे, पाटु प्रदारे  
 हणयो मुनि जी ॥ ९ ॥ मुनि मन वचन काय त्रिधोगे, ध्यान अनल  
 दहे कर्मने जी ॥ केवल पामी जितपदरामी, सुव्रत नेम कहे  
 श्यामने जी ॥ १० ॥ ( हाल चौथी ) कान पर्यपै नेमने ए, धन्य २  
 यादव वंश, जिहां प्रभु अवतरया ए ॥ मुक मन मानस वंस, ज  
 यो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवादेवी मावमी ए, समुद्रविज  
 य धन्य तात, सुजात जगतगुरु ए ॥ रत्नत्रयी अवदात ॥  
 ज० २ ॥ चरण विराधी ऊपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो० ॥  
 तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥

हाथी नेम कादव गढ्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ ज० ॥ तोपण  
 हुं न करी सकुं ए, डुव कर्मना ज्ञेय ॥ ज० ॥ ४ ॥ पण सरणो  
 बलियातणो ए, कीजै सीजे काज ॥ ज० ॥ एहवा वचनने सांज  
 ली ए, वांइ ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए,  
 समकित युत आराध ॥ ज० ॥ आईस जिनवर वारमो ए, ज्ञावी  
 चोवीशीये लाय ॥ जयो० ६ ॥ (कलगा) इय नेम जिनवर नित्य  
 पुरंवर रेवताचल मंरुणो, वाण नंद मुनि चंद वरसे रा  
 जनगरे संश्रुण्यो ॥ संवेग रंग तरंग जलनिधि सत्यविजय  
 गुरु अनुसरी, कपूरविजय कवि क्रमाविजय गणि, जिनविजय ज  
 यसिरी वरी ॥ १ इति ॥

अथ माहावीरस्वामीतुं हालरिजं प्रारंभ ॥

माता त्रिशला जुलावै पुत्र पालणें, गावे हालो हालो हाल  
 रुवानां गीत, सोना रूपानें वली रत्नें जमियुं पालणुं, रेसम दोरी  
 धूयरी वागे ठुमठुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने  
 ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्वप्रज्जुथी वरस अढीशें अंतरे, होसे चोवीशमो  
 तीर्थकर जिन परमाण ॥ केशीस्वामी मुखश्री एवी वाणी सांजली,  
 साची साची हुइ ते मारे अमृतवाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वप्ने  
 होवै चक्री के जिनराज, वीता वारे चक्री नहि हुवै चक्रीराज ॥  
 जिनजी पास प्रज्जुना श्रीकेशी गणधार, तेहने वचनें जाण्या चो-  
 वीशमा जिनराज ॥ मारी कूखे आव्या तारण तरण जिहाज,  
 मारी कूखें आव्या जण्य ज्वन सिरताज ॥ मारी कूखें आव्या  
 संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्यपनोती इंद्राणी थई आज ॥ हा० ॥  
 ॥ ३ ॥ मुऊने मोहलो उपण्यो जे वेसुं गलअंवाकीये, सिंहासण पर  
 वेसुं चामर उत्र धराय ॥ ए सहु लक्षण मुऊने नंदन तादरा ते-  
 जनां, ते दिन संजारुनें आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ कर-

तब पगतल लक्षण एक हजार नें आठ वै, तेहथी निश्चय जाण्य  
 जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणी जंगे लंबन सिंह विराजतो,  
 में पहले सुपने दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला  
 बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन जोजाशयोना देवर ठो सुकमाल, ह  
 ससे जोजाशयो कही देवर माहरा लामका, इसशे रमशे नें वली  
 चूटी खणशे गाल ॥ इसशे रमशे नें वली तुंसा देसे गाल ॥ हा०  
 ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेनाराजाना ज्ञाणेज ठो, नंदन नवला पां-  
 चसें मामीना ज्ञाणेज ठो, नंदन मामलियाना ज्ञाणेजा सुकमाल ॥  
 इसशे हाथे उन्नाली कहीने नाहना ज्ञाणेजा, आंख्युं आंजीनें  
 वली टवकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे  
 टोपी आंगलां, रतने जमिया ऊलर मोती कशवीकोर ॥ नीला  
 पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकि  
 शोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखनलो सहु लावशे  
 नंदन गजुवे जरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन सुखना जोईने लेशे  
 मामी ज्ञामणा, नंदन मामी कदेशे जीवो सुख जरपूर ॥ हा० ॥  
 ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेना मामानी साते सती, मारी जत्रीजी ने  
 बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूजे जरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें  
 जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे  
 लावशे लाखटकानो घूघरो, वली शूना मेंना पोपट नें गजराज ॥  
 सारस हंस कोयल तीतर नें वलि मोरजी, मामी लावशे रमवा  
 नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ ठप्पन कुमरी अमरी जलकलशें  
 नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरती मांहि ॥ फूलनी  
 वृष्टि कीथी योजन एकने मंरले, बहु चिरंजीवो आशीष  
 दीथी तुमने त्यांहि ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमनें भेरुगिरिवर सुरपतिये नव-  
 राविआ, निरखी हरखी सुकृत लाज कमाय ॥ सुखना ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंडमा, बली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥  
 हा० १३ ॥ नंदन नवला जणवा नीशाले पण मूरुशुं, गज पर  
 अंधानी बेसानी मोहोटे साज ॥ पसलो जरशुं श्रीफल फोफल  
 नागरवेलशुं, सूखरुली लेशुं नीशालीअने काज ॥ हा० १४ ॥  
 नंदन नवला मोहोटा आशोने परणावशुं, बहु वर सरखी जोनी  
 सावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूने पधरावशुं, वर बहु  
 पोखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मा-  
 रा वेजं पक ऊजला, माहरी कूखे आठ्या तात पनोता नंद, मा-  
 हरे आंगण वृथा अमृत दुधे मेऊला ॥ माहरे आंगण फलिया  
 सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला  
 सुतनुं पालणुं, जे कोइ भाशे लेशे पूत्रतणा साम्राज ॥ विलीमोरा  
 नगरे वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जयर मंगल होजो दीपविजय  
 कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिंहाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोळ्या महा  
 पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे  
 मायवाप रे ॥ निं १ ॥ डुर वलंती कां देखो तुस्हे रे, पगमां वं  
 लती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलामें धोया लूगमां रे, कद्दो केम  
 ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,  
 नींदानी मूको परी टेव रे, ॥ थोमे घणे अवगुणे सहु जरघा रे, के-  
 इना नलिया चूए केइना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते  
 थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-  
 जो आपणी रे, जेम वूटकवारो आय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-  
 जो सहुको तणो रे, जेइमां देखो एक विचार रे ॥ रुप्या परे सुख  
 णाशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥



अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथम इरियावही पम्किमवाथी मांकीने यावत् लोगस्त  
कही पठी उत्तरासण करी चैत्यवंदन नमोत्पुणं कही अरुधुं जयवी  
राय आन्नवमखंता सूधी हाथ जोनी कहै, वली चैत्यवंदन कहीने  
नमोत्पुणं कही यावत् चार थोयो कहीये तीये तिहां सूधी बधू क  
हेवुं, पठी नमोत्पुणं कही वली च्यार थोयो कहीये त्यांसूधी बधू  
कहेवुं, पठी नमोत्पुणं तथा बे जावंती कही स्तवन कही अरुधुं ज  
यवीअराय आन्नवमखंता सूधी कही पठी चैत्यवंदन कही नमोत्पुणं  
कही आखो जयवीअराय कहेवो. इहां सवारे देववांदवा तेमां मन्ह  
जिणाणंती सज्ञाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा सांजें देववांदवामां  
सज्ञाय न कहेवी ॥ इति देववांदवानो विधिः ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजी कृत चउमाशी देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम इरियावही पम्किमी कान्तसग्न करी लोगस्त० क  
ही एक खमासमण देइ इहाका० श्रीरुषन्नजिन आराधनार्थं चैत्य  
वंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन करै ॥ ( श्री आदिजिन चैत्यवंदन  
लिखयते ) ॥ प्रथम जिनेसर रुषन्नदेव, सबठथी चविया ॥ वदि  
चउथें आषाढनी, शक्रे संस्तविया ॥ अठमी चैत्रह वदितणी, दि  
वसे प्रजु जाया ॥ दीक्षा पिण तिणहिज दिनें, चउ नाणी आया  
॥ फागुण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुन्न ध्यान ॥ महा वदि ते  
रउे शिव लह्या, परमानंद निधान ॥ १ ॥ इहां नमोत्पुणं० अरिहंत  
चेइयाणं० वंदणवत्तिया कही एक नवकारनो कान्तसग्न पारी शुइ  
क्रमथी कहिये ते लखिये तीये ॥ ( ॥ अथ थोय जोनी प्रारंज ॥ )  
रुषन्नजिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला  
जास जाया ॥ वृषन्न लंछन पाया देव नर नारी गाया, पणसय  
धणु गाया ते प्रजु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

प्रेवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसरया । नरघोर ॥ गिरि  
 कर्मणो आया पोदता गढ गिरनार, चैत्रीपूनमः दिने ते वंदू जयकार  
 ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे श्रंतगन् सूत्र मजार, सिद्धाचले सीधा  
 बोड्या बहु अणंगार ॥ ते माटे ए गिरि सवि तीरथः सिरदार ।  
 जिन जेठे प्रावे सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्रेसरी शा  
 सननी रखवाल, ए तीरथ केरी सांनिध करै संजाल ॥ गिरुओ  
 जस महिमा संप्रति कालै जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि नामे  
 लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोत्प्युणं जावती वे कही  
 नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशो ॥

आदिकरन अरिहंत जी, उन्नगनी अवधार ललना ॥ प्रथम  
 जिनेसर प्रणमीये, वंठित फल दातार ललना ॥ आदिकरण अ०  
 ॥ १ ॥ उपगारी अवनीतले, गुण अनंत जगवान ललना ॥ अवि-  
 नाशी अक्षय कलां, वरते अतिशय धाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥  
 गृहवासे पण जेहने, अमृतफलनो आहार ललना ॥ ते अमृतफलने  
 लहे, ए जुगतुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इकाग वै जे  
 हनो, चढतो रश सुविशेष ललना ॥ जरतादिक प्रया केवली, अ-  
 नुभव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाजिराय कुलमंरुणो,  
 मस्देवी सर हंस ललना ॥ रूपजदेव नित वंदिये, ज्ञानविमल  
 अवतंस ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री रूपजजिन स्तवनं ॥  
 पवी जयवीअराय अर्धो कहेवुं, एक खमासमण देई ॥ इच्छा० श्री  
 अजितनाथजी आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ॥  
 ॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥  
 शुदि वैशाखनी तेरशें, चत्रिया विजयंत ॥ माह शुदि आ-  
 र्धे जनमिया, त्रीजा श्री अजित ॥ माह शुदि नवमे मुनि प्रया,

हिम महि प्रकाशे, सातमा श्रीसुपासे ॥ सुरनर जस दास, संप  
 दानो निवाश ॥ गाय ज्ञवि गुणरास, जेहना धरी उच्चास ॥ १ ॥  
 इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रज्ञजिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रज्ञ जिन आ  
 ठमा, चंद्रप्रज्ञ शम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चै  
 त्रेह ॥ पोष वदि बारसें जनमिया, तस तेरसे साध ॥ फागुण व  
 दिनी सातमें, केवल निराबाध ॥ ज्ञाद्रव सातस शिव लह्या ए, पूरी  
 पूरण ध्यान ॥ अठ महासिद्धि संपजै, नय कहै जिनअभिधान ॥ १  
 ॥ अथ शोष प्रारच्यते ॥ ॥ शुभ नरगति धामी, उद्यमें  
 धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रज्ञ नाम स्वामी ॥ सुऊ  
 अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति इरगामी, सेवन  
 पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधनाथचैत्यवंदन ॥  
 गोरा सुविधि जिणंद नाम, बीजुं पुष्पदंत ॥ फागुण वदि न  
 यमें चव्या, महेली सुर आनंत ॥ मृगशिर वदि पंचमे जण्या, तस  
 ठठे दिक्का ॥ काती शुदि त्रीजें केवली, द्विये बहु परें शिक्षा ॥ शु  
 दि नवमी ज्ञाडवा तणी ए, अजर अमर पद दोष ॥ धीर दिमल  
 सेवक कहे, ए नमतां सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ शो  
 ष प्रारच्यते ॥ सुविधि जिन जडंत, नाम वलि पुष्प  
 दंत ॥ सुमति तरुणि कंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म  
 डरंत, लछि लीला वरंत ॥ जव जलधि तरंत, ते तमीजे  
 भहंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथचैत्यवंदन ॥  
 प्राणतकल्पप्रकी चव्या, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी ठ  
 है, जाणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ माहा वदि बारस जनम दिख्या,  
 तस बारसें लीध ॥ वदि पोष चवदशा दिने, केवली परसिद्ध ॥ व  
 दि बीजै वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिन  
 राजथी, सीजे सगला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ शोष

प्रारज्यते ॥ ॥ सुण शीतल देवा, वाजही तुङ्ग सेवा ॥ जेमी  
 गज मन रेवा, तूही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, राम ठै नित्य  
 मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु उःस्क खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥  
 ॥ अथ श्रीश्रेयांग जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पप्रकी-  
 षव्या, श्रेयांग जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस ठेठे, करत बहु आ  
 नंद ॥ फागुण वदि वारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माह  
 अमावसि, देशन चंदनरस ॥ वदि श्रावण त्रीजे लह्या ए, शिवसु  
 ख अक्षय अनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहै ए जगवंत ॥ १ ॥  
 इति ॥ ॥ अथ शोच प्रारज्यते ॥ ॥ सवि जिन अवतंस,  
 जास इहागवंत ॥ विजित मदन कंश, शुद्ध चारित्र हंग ॥ कृतज्ञय  
 विध्वंस, तीर्थनाथ श्रेयांग ॥ वृषज ककुद अंश, ते नमुं पुन्य वंश  
 ॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ ॥ प्राणतथी इहां आविया,  
 ज्येष्ठ सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावसी संजम ॥  
 माह शुद्धी त्रीजे केवली, चौदसि आपाढी ॥ शुद्धि शिव पाम्या क  
 र्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन वारमा ए, विदुमरंगे  
 काय ॥ श्रीनयविमल कहे इंसुं, जिन नमतां सुख घाय ॥ ३ ॥  
 ॥ अथ शोच प्रारज्यते ॥ ॥ वासुदेव नृप तात, श्रीज  
 योदेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंठन विख्यात ॥ जस  
 गुण श्रवदात, गीत जाणें निवात ॥ होय नित सुख गात, ध्याव  
 तां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवं  
 दन ॥ ॥ अठम कल्पप्रकी चव्या, माघव सुद्धि वारस ॥ शु  
 द्धि महा त्रीजे जण्या, तस चोथें व्रत रस, शुद्धि पोप ठेठे लह्या,  
 वर निर्मल केवल ॥ वदि सातमि आपाढनी, पाम्या पद अविचल  
 ॥ विमल जिणोसर वंदिथै ए, ज्ञानविमल करी चित्त ॥ ॥ तेरसमो  
 जिन नितु दिवे, पुण्य परिषल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ

शोय प्रारच्यते ॥ विमलश्चावे, वेदतां दुख जावै ॥ नव  
 निधि घर आवै, विश्वमां मान पावै ॥ सुपर लंठन कावै, नोमि  
 न्नरस्वेद आवै ॥ मनु विनति जणावै, स्वामिनुं ध्यान ध्यावै ॥ १ इति ॥  
 ॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतथकी चविया इहां,  
 श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चवदसें व्रत ॥  
 वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी  
 दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चउदमए, कीथा इ  
 ध्मन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामथी, तेज प्रताप अनंत ॥ १४ ॥  
 ॥ अथ शोय प्रारच्यते ॥ अनंत जिन नमीजै, कर्मनी कोटि ठीजै ॥  
 शिवसुख फल लीजै, सिद्धि लीला वरीजै ॥ बोधिबीज मोह दीजै,  
 एटलुं काज कीजै ॥ सुऊ मन अति रीजै, स्वामिनुं कार्य सीऊ ॥  
 ॥ १ ॥ ॥ अथ धर्मनाथ जितचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि  
 सातमें, चविया श्रीधर्म ॥ विजयथकी माहमाशनी, शुदि त्रीजें  
 जनम ॥ तेरसमाही ऊजली, लिये संजमन्नार ॥ पोषिपूनमें के  
 वली, गुणनां न्नार ॥ जेठी पांचम ऊजलीए, शिवपद पाम्या  
 जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥  
 ॥ अथ शोय प्रारच्यते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमांइ  
 नीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिभुवन सुख  
 कीनो, लंठने वज्र दीनो, नवि होय ते दीनो, जेहने तूं वसीनो ॥  
 ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ न्नाद्रवा  
 वदि सातम दिने, सबध्थी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जएया, उः  
 खदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥  
 केवल उऊलपोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवना ए  
 शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरशें शिव लह्या, नय कहे सारो  
 काज ॥ १६ ॥ ॥ अथ शोय प्रारच्यते ॥ जिनपति

जयकारी, पंचमो-चक्रधारी ॥ त्रिभुवन सुखकारी, लक्ष जय इति  
 वारी ॥ सहस्र चतुस्रि नारी, चन्द्र रत्नाधिकारी ॥ जिन शांति  
 जीतारी, मोहे-हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर धोली, मांहे क-  
 पूर् चोली ॥ पेहरी शीत पटोली, वातियें गंध धूली ॥ जरी पुष्प  
 पटोली, टाळीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीयें जाव  
 लोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार, तेम उपांग द्वार ॥ बलि मूल  
 सूत्र चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ दश पयन्न उदार, वेद खट वृत्ति  
 सार ॥ प्रवचन विस्तार, ज्ञाप्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय  
 जय नंदा, जैन दृष्टी सुरिंदा ॥ करै परमानंदा, टालता दुःख धंदा ॥  
 ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंदकंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्या  
 नधी नित्य जहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥  
 मोतीमानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतरुकंदा, शांतिकरण  
 श्री शांतिजिपांदा ॥ साहिवा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज  
 हमारा ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुज विलगो, पलक मात्र  
 न रहुं हिव अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे,  
 ठंम्यो पण तुम्हे नवि ठंमाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशुं नेह न  
 लावो, वीतराग कही सवि समजावो ॥ सा० ॥ २ ॥ वीजा अवर  
 कहे एम समजे, पण वीरु दीधार्थी रीजे ॥ सा० ॥ बालकना  
 हवथी नवि चालै, जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ जक्ति  
 खांची मनमांहे आण्यो, सहज स्वजावें पण में जाण्यो ॥ सा० ॥  
 माहरे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ सा० ॥  
 ४ ॥ कबजे आव्या तो वृटीजे, जेह मुंह मांगे तेहिज दीजे ॥  
 सा० ॥ अजेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभु तो नीकल-  
 शो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अकयजाव निधी तुम पाश, आपी दासने  
 पूरो आश ॥ ज्ञानविमल समकित प्रभुताई, दीधी साहब एह व

माई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंभुनाथ चैत्य-  
 वंदनं ॥ श्रावण वदि नवमी दिने, सबछयी चविया ॥ वदि  
 चवदश वैशाखनी, जिन कुंभु जणिया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी,  
 लीये संजमजार ॥ शुदि त्राजे चैत्रहतली, लहे केवल सार ॥ प  
 निवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल ठाण ॥ ठठा चक्री जय  
 करू, ज्ञानविमल सुखखाण ॥ १७ ॥ ॥ अथ श्लोक प्रारभ्यते ॥  
 जिन कुंभु दयाला, ठाग लंठन सुहाला ॥ जश गुण शुभमाला,  
 कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति नवि त्रिकाला, मंगल श्रेणी माला  
 ॥ त्रिभुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति श्लोक ॥

॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवाश्चश्री आविया,  
 फागुण शुदि बीजे ॥ मृगशिर शुदि दशमी जणया, अरदेव नमी  
 जे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरियो ॥ काती उज्जल  
 वारसें, केवलगुण बरिज ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद  
 लहे जिननाथ ॥ सातमचक्रानें नभूं, नय कहे जोमी हाथ ॥ १८  
 ॥ ॥ अथ श्लोक प्रारभ्यते ॥ ॥ अरजिन ए जुहारूं, क  
 र्मनो ह्हेग वारूं ॥ अहनिश संनारूं, ताहरो नाम धारूं ॥ कृत ज  
 यजयकारूं, प्राप्त संसार सारूं ॥ नवि होय ते सारूं, आपणो आप  
 तारूं ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमद्विनाथ चैत्यवंदन ॥  
 चव्या जयंतविमानथी, फागुण शुदि चतुर्थे ॥ मृगशिर सुदि श्या  
 रसें, जनम्या निग्रथे ॥ ज्ञान लह्या एकादिने, कळयाणक तीने ॥  
 फागुण शुदि वारसें, लहे शिव सदन अदीने ॥ मद्वि जिनेसर  
 नीलमा ए, उगणीशमा जिनराज ॥ अणपरण्या अणनूपपद, नव  
 जल तरण जिहाज ॥ १९ ॥ ॥ अथ श्लोक प्रारभ्यते ॥  
 जिन मद्वी महिला, वान ठै जेह नीला, ए अचरज लीला, स्त्री  
 पणें नाम पीला ॥ इस्मन सवि पीळया, स्वामि जो ठै वसीला ॥

अविचल सुखदीपा, दीजिये सुण रंगीजा ॥ १ए ॥ इति महि  
 स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपरा  
 जितथी आविया, श्रावण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारमी,  
 थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि वारसें व्रत, वदि वारसें ज्ञान ॥  
 फागुणानी तेम जेठ नवमी, कृष्णे निर्वाण ॥ वर्षा श्याम गुण ज-  
 जला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमलजिनराजना, सुरनरन-  
 यक दास ॥ २ ॥ ॥ अथ थोय प्रारच्यते ॥ मुनिसुव्र  
 तस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुऊ अंतरजामी कामदाता अका-  
 मी ॥ दुःखदोहग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्भ्या सर्वदारामी  
 राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचै  
 त्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ श्रा  
 वण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आपाढ  
 नी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि श्यारसें, वर केवल  
 धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अस्त्रय अनंता सुक ॥ नय कहे  
 श्रीजिन नामथी, नाशे दोहग दुःस्क ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रा  
 रच्यते ॥ नमी जिनवर मानो, जेह नही विश्वगानो ॥ सुत वप्रा मानो,  
 पुण्यकेरो खजानो ॥ कनककमल वानो, कुंज ठे जे रूपानो ॥ स  
 वि च्चुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ ११ ॥ ॥ अथ श्रीने  
 िनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अपराजितथी आविया, काली वदि  
 ारस ॥ श्रावण शुदि पंचमी जण्या, यादव अवतंस ॥ श्रावण  
 शुदि ठे संजमी; आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आपाढनी  
 म्भे, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिठनेमी अणपरणीया ए,  
 मतीना कंत ॥ ज्ञानविमलगुण एहना, लोकोत्तरवृत्तं ॥ २२ ॥  
 ॥ ॥ अथ थोय प्रारच्यते ॥ गया शस्त्रागारे,  
 निज हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, विश्व कंध्यो तिवारे ॥



संशय धारे, एहनी कोइ सारे ॥ जयो नेमकुमारै, ब्राह्मणी ब्रह्मचारे ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरु धातकीखंभे, सुरनर सारे सेव ॥ अरु पुष्करअरधे, इणि परें वीश जिनेश ॥ संप्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, ज्वजलनिधिने तारे ॥ कोहादिक मोटा, मञ्जतणा ज्ञय वारे ॥ जिहां जीवदियारस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ ज्ञवि ज्ञाव धरीने चित्त करीने चाख्यो ॥ ३ ॥ जिनशाशन सानिध्य, कारी विघन विमारे ॥ समकित दृष्टी सुर, महिमा जाल वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो ज्ञव पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो घनीयां, दो घनीयां दो चार घनीयां ॥ रहो रहो ० ॥ मोज महिराण शिवादेवी जाया, तुमें ठो आधार अरुवमियां ॥ रहो ० १ ॥ नाह विवाह चाह करी आए, क्युं जावत फिर रथ चमियां ॥ रहो ० २ ॥ पशुय पुकार सुणीय कीय करुणा, ठोरुदीएपशुपंखी चिमियां ॥ रहो ० ३ ॥ गोद विठानं में बली जानं, करुं वीनती चरणे पमियां ॥ रहो ० ४ ॥ पीयुं विन दीहा ते वरिस समोवरु, न गमे स्वपनमें सेजमियां ॥ रहो ० ५ ॥ विरह दिवानी विलपति जोधन, वानी वन घर सेरमियां ॥ रहो ० ६ ॥ अष्ट ज्ञवांतर नेह निज्ञावत, नवमें ज्ञव ते वीठनीयां ॥ रहो ० ७ ॥ सहसावनमांहे स्वामी सुणीने, राजुल रेवतगिर चमियां ॥ रहो ० ८ ॥ पीयु करे निज शिरे हाथे देवा, व्रत चाखे चारित्र सेलमियां ॥ रहो ० ९ ॥ जादव वंश विज्जुषण नेमजी, राजुल मीठी वेलमियां ॥ रहो ० १० ॥ ज्ञान विमल गुणे दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखनीयां ॥ रहो ० ११ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कृष्ण चौथ चैत्रहतणी, प्राणतथी आथा ॥ पोष वदिदशमी ज-

तम, त्रिभुवन सुख पावा ॥ प्रोप वदि इग्यारसें, लहै मुनिवर पंथ ॥  
 कमठासुर-उपसर्गनो, टाढयो पलीमंथ ॥ चैत्र-कृष्ण चोथद दिनें  
 ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ श्रावण शुदि आठमें लह्या, अविचल  
 सुख नरपूर ॥ २३ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रौय प्रारब्धते ॥ जलधर  
 अनुकारे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत-सुकृत संचारे, विघनने जे-विना  
 रे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनी कोमि वारे ॥ मुऊ प्राणाधारे, मात  
 त्रामा मद्धारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावै ॥ अ  
 नुभव लय लावै, केवलज्ञान पावै ॥ पट् जे कड्याण, संप्रति जे  
 प्रमाणे ॥ सवि जिनवर ज्ञाण, श्रीनिवासादि ठाण ॥ २ ॥ दशवि  
 धि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सप्त प्रकार, पञ्चका  
 णादि विचार ॥ मुनि-दश गुणधार, जे जया जिहा उदार ॥ ते  
 प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला,  
 जे महा-लोगपाला ॥ सुरनर महिमाला, शुद्धदृष्टी कृपाला, नयवि  
 मल विशाला, ज्ञान लखी मयाला ॥ जय मंगलमाला, प्राप्त नामे  
 सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ थारे मा  
 थे पंचरंगी पाग सोनानो ठोगलो मारुजी ॥ प्रभु प्राप्त जिनेसर  
 भुवन दिनेसर संकरो, साहिवजी ॥ लीला अलवेतर धीरममंदिर  
 नूथरो ॥ साहिवजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो,  
 सा० ॥ पद नमित्त पुरंदर तनुठवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥  
 तूं अक्षय अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमां, सा० ॥ ध्याये जे जोगी  
 तुम गुण जोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी  
 निजमतें, सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमतें ॥  
 सा० २ ॥ पट् दर्शन ज्ञासे युक्ति निरासे शासनें, सा० ॥ स्याद-  
 वाद विशाले सहज समाजे जावने ॥ सा० ॥ तूं ज्ञानने ज्ञान  
 आतमध्याने आतमा, सा० ॥ परमागम वेदी जेद अजेद नही त-

अध्यात्म गुणवाण ॥ १ ॥ ( सद्गी ए नयो जिणाणं ) २ ( ए  
 आकणी ) विहुंतेर लस्क सगकोमि नवणवई, सासय जिण  
 हर माणं ॥ तेरशें नव्याशी कोमी, लगस ६ विंवह परिमाणं ॥  
 सद्गी० ॥३॥ मेरु वैताढ्य वस्कारा कंचन, यमक कुंम इह जाणुं ॥  
 एकत्रीश ओगण्यासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥  
 त्रिलख इक्याशी सहस चारसो, त्र्यासी अधिक विंव जाणुं ॥ रुच  
 क कुंमल नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥ ५ ॥ अरु  
 शत सय सहस चालोसा, विंवहणुं परिमाणं ॥ सरवाले वत्तीससैं  
 गुणसठी, तिर्यक्लोके चेइयाणं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख  
 सहस एकाणुं, चउ सय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौवारा अवर  
 त्रिवारा, रुचक कुंम नंदी ठाणं ॥ स० ॥ ७ ॥ वार देवलोके नव  
 त्रैवेयकें, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रै  
 वीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं,  
 सहस चमावीस आणुं ॥ सातशें साठ ऊपर उर्द्धलोके, जिन प-  
 दिमा मन आणुं ॥ स० ॥ ९ ॥ त्रिचुवनमांहे सासय जिनहर,  
 सगवन्न लस्क वसैं व्यासी ॥ आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या, सु  
 णजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोमी वैतालीश  
 कोमी, तेम अघावन्न लस्का ॥ ठत्रीश सहस अशी वलि साधिक,  
 सासयविंबनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिवारे प्रति  
 मा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सत्ता तिहां साठ वधारो, एकश  
 त अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ रुषन्न चंडानन नें वर्द्धमान, वा  
 रिखेण चउ नामे ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पदि-  
 मा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर ज्ञावना ज्ञावै, समकि  
 तगुण दीपावै ॥ परित्त संसार करी शिव जावै ॥ कुमति ते मन  
 ज्ञावै ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताले ने तिर्यक्लोके, पणसय धणु परि

जाण ॥ सं० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष वली शास्य विष्णु, सेतुंजादि  
 क बहुला ॥ ते सविहूने त्रिविधे नमतां, पातक जाये सगला ॥  
 सं० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रभु नाम जपंता, लहिये कोमि कळ्या  
 ण ॥ मनह मनोरथ सगला सीजे, जनम सफल सुविदाण ॥ सं०  
 ॥ १७ ॥ जयहर जगवताणं जयचुर, नमो जिणाणं सही ए ॥  
 नमो अविचल आदिगराणं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥  
 ॥ १८ ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोग  
 स्तको काउसग चंदेसुनिम्मलचरा सूधी एक जण करे, ते काउसं  
 ग पारी पठी चार थोयो कहेवी ते लखिये ठिये ॥  
 ॥ अथ थोय प्रारच्यते ॥ रूपजदेवे नमुं गुण निर्मला, डध-  
 माहे जिन जेदी सीतोपला ॥ विमल शीलतणा सिणगार वै,  
 प्रवर मुऊने चित्ते रुचै ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली,  
 जेह हसे विचरंता जे वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे,  
 जिन पदिमा प्रणमुं नित जगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम कोर  
 महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ जविक देह सदा पावन  
 करे, डुरित तापर जोमल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन ज्ञासन  
 कारिका, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुताये  
 दीपता, डुरित डुष्टतणा जय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशा-  
 श्वत जिनस्तुति ॥ ॥ अथ विधिः ॥ इहां एक जण  
 मोटी शांति कहे ( अने ) बीजा सर्व काउसगमां सांजलै ॥  
 पठी सर्वे जणा काउसग पारीने प्रगट एक लोगस्त पुरो कहे ॥  
 पठी वैसीने एकवीश नवकार प्रगटपणे सर्व जण गणे, पठी सर्वे  
 जण मुखथकी आवी रीते कहे- श्रीशेतुंजायनमः १ श्री पुंरुकीका  
 यनमः २ श्रीसिद्धकेत्रायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री  
 सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

पर्वतायनमः ८ श्रीपर्वतेश्वरानामः ९ श्रीमहातीर्थानामः १० श्री  
 शाश्वतानामः ११ श्रीदृढशक्तयेनमः १२ श्रीमुक्तिनिदायनमः १३  
 श्रीपुष्पदन्तानामः १४ श्रीमहापद्मानामः १५ श्रीपृथ्वीपीठाय  
 नमः १६ श्रीसूरजगिरयेनमः १७ श्रीकेलाशगिरयेनमः १८ श्री  
 पातालमूलायनमः १९ श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा  
 यनमः २१ ॥ ए सिद्धगिरीना २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने  
 षठे पांचतीर्थना पांच स्तवन कहवा ते लखिये ठिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशो ॥

नीलमी रायणतरूतले, साहेलकियां ॥ पीलका प्रभुजीन  
 पाय, गुणमंजरीया ॥ ऊजले ध्याने ध्याइये, सा० ॥ एहीज मुग  
 ति उपाय ॥ गु० १ ॥ शीतमी ठायये वैसीये, सा० ॥ रातमो  
 करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल अई, सा० ॥ पहेरी व  
 ह्नादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजिये सोवन फूलके, सा० ॥ नेह  
 धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे जवे शिव लहे, सा० ॥ आये निर्म  
 ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षणा, सा० ॥ दीए एहने जे  
 सार ॥ गु० ॥ अन्नंग प्रीति होए जेहने, सा० ॥ जवश् तुम आ  
 धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे, सा० ॥ शाखा धरु  
 ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाअठै, सा० ॥ तीरधने अनुकूल ॥  
 ॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरध ध्यान धरी मने, सा० ॥ सेवो एहने उछाह  
 ॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु ज्ञाखियो, सा० ॥ शत्रुंजा महातम  
 मांदि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीशत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीगिरिनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामनी दोय के कामे व्यापियो, होलाण कामे० ॥ ए  
 चाल ॥ नेम निरंजन देव के सेव सदा करुं, हो लाल के ॥ सेव० ॥

अद्विज तादृहं ध्यान के दिल मांहे धरुं हो लाल, दि० ॥ शंख  
 लंठन गुणखाण के अंजन वान वै हो लाल के अं० ॥ राजिम-  
 तीना कंत के परया विष्णुअ वै हो० प० ॥ १ ॥ तूहीज जीवन-  
 प्राण के आतमराम वै हो० आ० ॥ मादरे परम आधार के तादृहं  
 नाम वै हो० ता० ॥ समुद्रविजयना नंदन नितु नितु वंदता हो०  
 नि० ॥ कीजाये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥  
 जोत्या मनमय राज रही गढ़ ऊपरै हो० र० ॥ पदरी शील  
 सनाइ उदास एसी धरै हो० ऊदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि  
 तुझे अधिकुं करयुं हो० तु० ॥ कुमरपणे धरी धोर महावन  
 उचरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ जवांतर नेह जे तेह उवेखीने  
 हो० ते० ॥ करुणा कीधी केवल पशुवां देखीने हो० पशु० ॥  
 पूरण पाली प्रीत-वली निज नारने हो० व० ॥ आपी संजमजारं  
 पदोचामी पारभे हो० पो० ॥ ४ ॥ जण जणगुं जे प्रीत करे ते  
 जन वणा हो० करे० ॥ निरवादे धरी नेह के ते घिरला सुएवा  
 हो० ते वि० ॥ राज, मतीनो कंत वखाणे कविजना हो व० ॥  
 तुझे तो दीवा नेह के तेहना थिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जाद-  
 वनाथ सनाथ करो मुऊने सदा हो० क० ॥ दिउ मुऊ शिर दाथ  
 होये जम संपदा हो० हो० ॥ जलि२ मरे पतंग दीवाने मन नंदी  
 हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोसा दोने सही हो० घो० ॥ ६ ॥  
 सज्जा साथे प्रीत निवलने नवि कही हो० नि० ॥ विण लागी  
 जे थोमी किदां जाथे वही हो० कि० ॥ जे सऊनसुं होय ते जीन  
 न जंजीये हो० जी० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होए तो कर्मने  
 मंजीये हो० क० ॥ ७ ॥ तां दुसमन होय दूर कोणे नवि  
 गंजीये हो० का० ॥ प्राणाधार पवित्र के दर्शन दीर्जात्रे हो०  
 द० ॥ ज्ञाननिमल सुख पूर मलीने कीजाये होला० म० ॥

॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीआवृतीर्थ स्तवन ॥

॥ चादो चादोने राज गिरधर रमवा जइयै ॥ ए चाल ॥  
॥ आवो आवोने राज श्रीअर्बुद गिरिवर जइयै ॥ श्रीजिनवरनी  
जक्ति करीने, आतम निर्मल अइये ॥ आवो० ॥ विमलवसीना  
प्रथम जिनेसर, मुख निरखे सुख पइये ॥ चंपक केतकी प्रमुख  
कुसमवर, कंठे टोकर ठविये ॥ आ० ॥ १ ॥ जिमणें पासे लूणग  
वसही, श्रीनेमीसर नमिये ॥ राजीमतीवर नयणे निरखी, दुःख दो  
हग सवि गमिये ॥ आ० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्रीरूपज्ञ जिनेसर, रैवत  
नेम समरिये ॥ अरे दो वसीनी यात्रा करतां, विहुं तीरथ चित्तधरिये ॥  
आ० ३ ॥ मंरुप मंरुप विविधि कोरणी, निरखी हियमै ठरिये ॥  
श्रीजिनवरना विंव निहाली, नरन्नव सफलो करिये ॥ आ० ४ ॥  
अविचलगढ आदीश्वर प्रणमी, अशुन्नकरम सब हरिये ॥ पाश शां  
ति निरखी जब नयणें, मन मोह्यो रुंगरीयें ॥ आ० ५ ॥ पाजे  
चढतां भुजम बाधै, जेम धोमे पाखरीयें ॥ सकल जिनेसर पूजी के  
शर, पापपंरुल सवि हरियें ॥ आ० ६ ॥ एकल ध्यानें प्रचुनें ध्या  
तां, मनमांहे नवि रुरिये, ज्ञानविमल कहै प्रचु सुपशायें, सकल  
संघ सुख करियें ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापद गिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरी आया ॥ पु  
ष्पक नामें विमाने बैशी, मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्रीजिन पूजियें  
लाल, समकित निर्मल कीजै ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरन्नव  
सफलो कीजै ॥ हीयमै हरखी लाल, समता संग करीजै ॥ ( आं  
कणी ) चउमुख चउगति हरण प्रशादें, चउवीशें जिन बैठा ॥ च  
उदिशि सिंहासन सम नाशा, पूरव दिशि दौय जिठा ॥ श्री० १

॥ संज्ञव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि उ  
 त्तरदिशि जाणो, एवं जिन चउवीशा ॥ श्री० ३ ॥ वैठा सिद्धतणे  
 आकारै, जिनहर चरते कीथा ॥ रयणाविंव मूरत प्रापीने, जग ज  
 शवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक, रावण  
 तांत वजावै ॥ मादल वीणा ताल तंबूरो, पगरव ठमठमकावै ॥  
 श्री० ५ ॥ नक्तिजावै एम नाटक करतां, तूटो तंत विचालै ॥  
 सांधी आप नसा निजकरनी, लघुकलासुं ततकालें ॥ श्री० ६ ॥  
 द्रव्य जावशुं नक्ति न खंभी, तो अक्षयपद साध्युं ॥ समकित सुर-  
 तरु फल पामांने, तथैकर पद लाध्युं ॥ श्री० ७ ॥ इण परे न  
 विजन जे जिन आगे, बहुपरे जावताजावै ॥ ज्ञानविमल गुण ते  
 इना अहनिश, सुरनर नायक गावै ॥ श्री० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसमेतशिखर स्तवनं ॥

॥ समेतशिखरगिरि जेटीये रे, मटवा जवना पास ॥ आत  
 मसुख वरवा जणी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ जवियां  
 सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुणगेह रे ॥ जवि० से० १ ॥ (आंक  
 णी ) समेतशिखर कल्पे कह्यो रे, वीश टुंऊ अधिकार ॥ वीश त)  
 थैकर शिव वरचा रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ ज० से० २ ॥ सि  
 ष्केत्र मांहे वस्या रे, जाखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरूप-  
 मारे रे, दोष नय प्रजुजीना साररे ॥ ज० से० ३ ॥ आगमयचन वि  
 चारतां रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्व जिणे जाणिये रे, ते  
 आगम स्याद्वाद रे ॥ ज० से० ४ ॥ जयरश्रावतणी परे, जात्रा  
 करो मनरंग ॥ जवडुःखने देह अंजली रे, आयें सिद्धवधूनो संग रे  
 ॥ ज० से० ५ ॥ समकितयुत यात्रा करे रे, तो शिव हेतु आय  
 ॥ जवहेतु किरिया त्यागश्री रे, आतमगुण प्रगटाय रे ॥ ज० से०  
 ६ ॥ जेइ समें समकित थयो रे, तेइ समये दोष नाण ॥ ज्ञान



विमल गुरु ज्ञाखियो रे, आवश्यकज्ञाप्यनी वाण रे ॥ ज्ञ० से०  
॥ ७ ॥ इति चौमाशी देववन्दन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणयव स्तुति ॥

॥ सत्तरजेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोच्चव कीजै जी  
॥ होल दमामा जेरी नफेरी, ऊद्धरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन  
आगल ज्ञावना ज्ञावी, मानवजव फल लीजै जी ॥ परब पजूसण  
पूरब पुन्ये, आव्या इम जाणीजै जी ॥ १ ॥ माल पास वजो द-  
शम डुवालश, चत्तारी अठ कीजै जी ॥ ऊपर वलि दश दोय क  
रीनें, जिन चौबीश पूजीजै जी ॥ वरुाकल्पनो ठठ करीनें, वीर-  
वखाण सुणीजै जी ॥ परुवानें दिन जन्म महोच्चव, धवल मंगल  
वरतीजै जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावी, अठमनुं  
तप कीजै जी ॥ नागकेतुनी परै केवल लहियै, जो शुभ्र जावै  
रहेये जी ॥ तेलाधर दिन त्रण्य कल्याणक, गणधरवाद वदीजै  
जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजै, रुषज चरित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥  
वारशें सूत्र नें सप्ताचारी, संवत्सरी पन्तिकमिये जी ॥ चैत्यप्र-  
वानी विधिसुं कीजै, सकल जंतुनें खामीजै जी ॥ पारणानें दिन  
सामीवञ्चल, कीजै अधिक वमाई जी ॥ मानविजय कहे सकल  
मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको बारामासो ॥

॥ सीयाले खाटू जली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोर-  
णथी रथ फेरीयो रे लाल, नीतुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पद-  
मणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रंगीला नेम सुण माहरी  
अरदाश ॥ १ ॥ सहीवांसुं राजुल कहे हो लाल, मगसिर नाथो  
पीठ ॥ प्रीतम विन हिव माहरो हो लाल, धीरज न धरै जीव ॥  
होण २ ॥ पोस महीनो आवियो हो लाल, आयो मो डुख दैण ॥

तो सूरतने सांवल्ला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३ ॥  
 माहमहीने सी पमे हो लाल, प्रीत संग पोहै नारी ॥ प्रीतम वि  
 ण हूं एकली रे लाल, केम रंझूं निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले  
 हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हूं किएसुं खेलूं हिवे हो  
 लाल, पाश नही जरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहीने चांदणी रे ला  
 ल, संजोगण सुख दैण ॥ विरहणनें वालम विना रे लाल, रोवत  
 जावै रैण ॥ हो० ६ ॥ वनदरिया वैशाखमें रे लाल, मांजर रही  
 मद्काय ॥ अरज सुणी अवला तणी हो लाल, तपत मिटावो  
 आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाऊ कोम  
 लगात ॥ ससनेही साहिब विना हो लाल, कुण पूवै मुऊ  
 वात ॥ हो० ८ ॥ आसाहे काली घटा हो लाल, ऊनमि आयो  
 मेह ॥ कंत मिट्या निज नारसुं रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥  
 हो० ९ ॥ आवण चमके दामनी हो लाल, धन वरसे ऊमला-  
 ५ ॥ इण रुत सूनां एकली हो लाल, क्यूं कर रैण विहाई ॥ हो०  
 १० ॥ काली कालाहण मिलो हो लाल, ज्ञाञ्चकै वर खंत ॥  
 अरज सुणीनें साहिवा हो लाल, पूरो मो मन खंत ॥ हो० ११ ॥  
 आसोजै आंसू ऊरै हो लाल, नाह विना निसदीश ॥ सार न  
 पूवो साहिवे हो लाल, राखि रह्यो मन रीश ॥ हो० १२ ॥  
 काती दृढ ठाती करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख  
 निज नाहनो हो लाल, सफल गिले अवतार ॥ हो० १३ ॥  
 संयम ले पित्र सेंद्रे हो लाल, पामे जवनो पार ॥ इण पर पाले  
 प्रीतनी हो लाल, धन २ ते नर नारि ॥ हो० १४ ॥ जे कीधी  
 पशु ऊपरे हो लाल, मो पर करज्यो देव ॥ चंद जणो द्यो करि  
 दया हो लाल, प्रजु चरणारी सेव ॥ हो० १५ ॥ इति श्रीनेम  
 राजुंज वारेमासो संपूर्ण ॥

॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपठरा करती आरती जिन आगै, हारे जिन आगे रे जिन  
 आगे, हारे ए तो अविचल सुखना भागै, हारे नाञ्जीनंदन पाश ॥  
 ॥ अप० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमकै, हारे दोय च-  
 रणे जांजर ऊमकै ॥ हारे सोवनना घूघरी घमके, हारे लेती फूद-  
 रु। बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांशल। रुफ वीणा, हारे  
 रूमा गावंती स्वर जोणा ॥ हारे मधुर सुरासुर नयणां, हारे जो-  
 ती मुखमुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रज्जु जा-  
 या, हारे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हारे मे तो पूरव पून्ये पाया,  
 हारे तोरो देखयो दीदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रज्जु  
 प्यारो, हारे प्रज्जु सेवक हूं वुं तारो, हारे ज्ञवो ज्ञवना दुखना  
 वारो, हारे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो  
 चित्त धरजो, हारे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हारे सुनि मा-  
 णक सुखिउ करजो, हारे जाणी पोतानुं बाल ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ नेम राजोमती सिद्धाय ॥ देशो उमादे भट्टीयाणोरी ॥

पहली तो समरुं हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा, लागुं गुरां  
 रे पाय ॥ प्रज्जुगुण गास्यां हो नेमीसर साहिब जिनतणा, सुज्जमत  
 आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोर पुरहुंती हो नेमीसर साहिब अ-  
 चठ्या, जान करी याडाय ॥ हसतो तो सिणगास्या हो नेमसर  
 साहिब अे ज्ञदा, धोरुदारी गिणती न काय ॥ २ ॥ वाजा तो अ-  
 धिका हो नेमीसर साहिब वाजता, आया तोरण बार ॥ महिला  
 चढीने हो राजुल जोवे हरखसुं, मनमाहे हरख अपार ॥ ३ ॥  
 आंख फरुके हो सहेली मारी जीमणी, फिरताइ दीसे वै ज्ञरता-  
 र ॥ वामो तो ज्ञरीयो हो नेमीसर साहिब जीवनो, पशुवाणी  
 पुणी रे पुकार ॥ ४ ॥ ऊजो तो रघनें हो नेमीसर साहिब राखी-

यो, ए पशु बांध्या वै किये काज ॥ गीरो तो होसी हो नेमीसर  
 साहिव तुमंतणो, सारथी कहे वै महाराज ॥ ५ ॥ थोका तो  
 सुखने हो इण राजुल नारीरे कारणे, होसी हो जीवानो सहार ॥  
 जीव वंध्याने हो नेमीसर साहिव गोनिया, जीव सवे तिण वार  
 ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुल हो नेमीसर साहिव गोमने, जाय  
 चढ्या गिरनार ॥ आठे तो करमांसु हो नेमीसर साहिव जीतवा,  
 लीघो संजमजार ॥ ७ ॥ राजुल तो जूरे हो नेमीसर साहिव  
 एकली, जल विन मठली जेम ॥ नव नवारो हो नेमीसर साहि-  
 व गोमने, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समजावै हो  
 राजुल दुःख मत करो, एतो कालो वै जरतार ॥ पाठो तो राजुल  
 जापे हो सहेली मारी थे सुणो, इण नव ए जरतार ॥ ९ ॥ रा-  
 जुल तो चाली हो नेमीसर साहिव वांढवा, साथे तो घणुं रे परि-  
 वार ॥ गिरनारे चढतां हो सब आगे पाठे नीकड्या, एकली रही  
 वै राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिव अ-  
 तियणा, नोज्या वै सवि तिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल  
 नारी अति जली, चीर निचोवै राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो  
 वाज्या हो राजुलनारीरे अंगना, घुघरनां ऊणकार ॥ ऊणकां तो  
 सुणियां हो रहनेमी वैठे ध्यानमें, खोली वै पलक तिणवार ॥ १२ ॥  
 रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी वैठो ध्यानमें, कहे सुंदर करो मोसुं  
 प्यार ॥ बोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढांकियो, माने गोमी वै  
 नेमजरतार ॥ १३ ॥ नोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखानो,  
 उलटी करे नांखें तेम ॥ वेनें तो माणस हो रहनेम पाठो नही  
 जखे, जखली काग कुता जेम ॥ १४ ॥ हू तो माता हो रहनेम  
 थारे सारखी, हुं वमा जाईनी नार ॥ पाय तो धरस्यां हो रहनेम  
 माहरे ऊपरां, तो परस्यां थे नैरक मजार ॥ १५ ॥ एहवां तो व-

चने हो रहनेम राजुल पाए नश्यो, पाप खमावै वारंदार ॥ कपमा  
तो पहस्या हो राजुलनारी आपणा, पुहती वै प्रज्नु दरवार ॥ १६ ॥  
राजुल तो हरखे हो नेमीसर साहिब वांदिया, वांदीने लीयो सं-  
जमजार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिब निरमलो, पुहती  
वै सुगति मजार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिब आग-  
लै, मिलिया वै सुगति मजार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहिब  
गाईयो, म्हारा आवागमल निवार ॥ १८ ॥ इति सिद्धाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिद्धाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूठा करे, विनय करी शीस नमाय प्रज्जूजी ॥  
अविचल आनक में सुएयो, कृपा करी मोय बताय प्रज्जूजी ॥ शिव-  
पुरनगर सोहामणुं ॥ १ ॥ आठ करम अलगा करी, सारया  
आतम काज प्रज्जूजी ॥ ठूटा संसारना दुख थकी, रहवानो  
किहां ठाम प्रज्जूजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उई लोकमां,  
सिद्धशिलातणो ठाम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने उपरे,  
तेहना बारे नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस  
जोजना, लांबी पोहली जाण हो गोतम ॥ आठ जोजन जाकी  
विचै, बेने भाखीपंख माण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ ऊजला हार  
मोतीतणा, गोडुध संख प्रमाण हो गोतम ॥ ते थकी ऊजली  
अन्धिणी, उलटो उत्र संठाण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजन-  
स्वर्ण शम दापती, घठारी मठारी जाण हो गोतम, फटकरतन  
थकी निरमली, सुआली अतंत वखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥  
सिद्धशिला उलंधी गया, अधर रह्या सिद्धगज हो गोतम ॥  
अलोकसुं जाई अरया, सारया आतकाज हो गोतम ॥ शि०  
॥ ७ ॥ जनम नहीं मरणो नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो गोतम ॥  
बैरी नहीं मित्रो नहीं, नहीं संजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ७ ॥ झूख नहीं तिरखा नही, हरख नहीं नहीं सोक हो गौतम ॥  
 तम ॥ करम नहीं काया नहीं, विपवारस नहीं योग हो गौतम ॥  
 शि० ए ॥ शब्द रूप रस गंध नही, फरस नहीं नही वेद हो  
 गौतम ॥ बोले नही चाले नही, मोनपणू नही खेद हो गौतम ॥  
 ॥ शि० १० ॥ गाम नगर ए को नहीं, वसती नही ऊजान हो गौतम ॥  
 काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो गौतम ॥ शि०  
 ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नही ठाकुर नहीं दास हो गौतम  
 ॥ मुक्तिमें गुरु चेलो नहीं, नहीं लघु वरुई वास हो गौतम ॥  
 शि० १२ ॥ अनंता सुखमें जिलरह्या; अरूपी ज्योत प्रकाश हो  
 गौतम ॥ सदुकोईनें सुख सारिखा; संगलाने अविचल राज हो  
 गौतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगते गया, बली अनंता जाय  
 हो गौतम ॥ अवर जग्या रूधे नही, जोतमां जोत समाय हो गो  
 तम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित वै, केवलदर्शन खास हो  
 गौतम, हायकसमकित दीपता, कदय न होवै ऊदांश हो गौतम ॥  
 शि० १५ ॥ सिद्धस्वरूप जे उलखे, आणी मन वैराग हो गौतम ॥  
 शिवरमणी वेगे बली, नवि कहे सुख अथाग हो गौतम ॥ शि०  
 १६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिद्धाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीरो सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपते राणी, विघन टालो द्यो अविरल  
 वाणी ॥ कहुं सिलोको नेमिनाथकेरो, जादववंस मांदि बनेरो ॥ १ ॥  
 नगरी सोरीपुर पृथ्वीमें दीपे, रिद्वै लमूद्धे अलकानें जीपे ॥ राजा समुद्र  
 विजै शिवादे राणी ॥ सीलै रूपे कर अधिकी बखाणी ॥ २ ॥  
 तिहनोजी अंगज नेमजीनाथो, मुगतरमणसुं घाले वैवाथो ॥ आणंद  
 घणें वसंत आयो, कुली वृत्तीसै फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमवाजा  
 सारू चलिया गोपालो ॥ रुफ चंग वाजै रेरे गुलाबो ॥ रुखनपा

राणी रथा सतजामा, बीजाही गोपी मिलर रीमा ॥ ४ ॥ नेम-  
 नाथजीरो व्याह मंदायो, कुमरी राजुलनो संगपण करायो ॥  
 राजाने परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधाई,  
 जादवरायरी जानज आई ॥ ढोलने वरघू सखरी सरणाई, जुंगलने  
 जेरी सखरी सजाई ॥ ६ ॥ ताल कंसाल कुहके करनाला, गोरी  
 जी गावै गीत रसाला ॥ रथ वहलै वाजै धूधरमाला, मदऊरता  
 मंगल जाकऊमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुंवरी परणन आयो, ला  
 की राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोती मांग जराई ॥ सीस  
 फूलांरी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविसाले जालै टीकोजी सोहै, अ  
 लियाली आंण्यां काजल मोहै ॥ काने हंकोटा जमावकेरा, नकवे-  
 सर मोती जलके जलेरा ॥ ९ ॥ दामिमकुलियां दांत वत्तासे, वदनी  
 बोळै सार उत्तीसै ॥ डुलनी तिलनी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर  
 कसिया कुच रसाला ॥ १० ॥ चूने नें गहणें जाइ न वखाणी, रू  
 पैकर गोरी जीपे इंशाणी ॥ जांऊरनें नेवर धूधर धमकंती, हंसा तो जीपे  
 सुंदर हालंती ॥ ११ ॥ हाथेजी पगे पोथीजी दीधी, सुधामे देही गर  
 काब कीधी ॥ फावते कपडै सखियां वणाई, राजूल राखी नार न  
 काई ॥ १२ ॥ मृगानैणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखियां ति  
 ण विचालो ॥ इण विधसुं पदमण परणन आयो, मदसिरी रूपें  
 मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता राता करता गहगाटो, कोमेजी  
 ग्यानं जादव आटो ॥ घणुं मठराला महा अजिमानि ॥ केसरिये वागै  
 मिलिया ठै जानी ॥ १४ ॥ डुरदंत कुंवर हरिवंस केरा, बीजाही  
 जानी जूपति जलेरा ॥ धक्को मारे तो मेरु धूजामै, जातां कालने  
 जाल पठ नै ॥ १५ ॥ तिहां मांहे नेमजी महाबलवंती ॥ अनंता  
 सुरपतिसुं उर अनंतो ॥ तारागणमांहे शोत्रे जु चंदो, तिण विध  
 मांहे नेमजिणंदो ॥ १६ ॥ तिण वेला देखी पसुअ बुढाया, अण-

परगया नेमजी पाठाजी आया ॥ धिग्ं संसार मायाजंजालो,  
जामणने मरण महा विकरालो ॥ १७ ॥ ७५ अनुक्रम नेमजी  
चारत लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल बाल  
ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम  
नाथजीरो सिलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ चोढालिया प्रारंभ ॥  
॥ विजयसेठ विजयासेठाणीका चोढालिया लिख्यते ॥  
प्रह ऊठी रे पंच परमेष्टि सदा नमूं, मनसूये रे तेहने चरणे नित  
नमूं ॥ धुरि तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणियै, आचारज रे उपा-  
ध्याय मन आणियै ॥ ( उद्दालो ) आणियै निज मन जाव सुद्धे,  
उपाध्याय नमूं वली ॥ जे पनरह करमजूमिमांहे, साधु प्रणमूं ते  
वली ॥ जिम कृष्णपद नें शुक्र पद वलि शील पाठ्यो ते  
सुणो, जरतारने लो विन्दे तेहनो चरित जावेसुं जणो ॥ १ ॥  
( ढाल ) जरतकैत्रे रे समुद्र तीर, दक्षिणदिसै, कण्ठसे रे विजय-  
सेठ श्रावक वसै, शीलव्रत रे अंधारापदनो लियो, वाला रणै रे ए-  
हवो निश्चै मन कियो ॥ ( उद्दालो ) मन कियो एहवो तेण निश्चै  
पद अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुज विषय जेवा टाल-  
स्युं ॥ इकअठै सुंदर रूप विजया नाम कन्या ते वली, पिए शुक्र  
पदनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ ( ढाल ) कर्म-  
जोगे रे मांहेमांहे विहुंतणो, शुभ दिवसे रे हुज विवाह सुहाम-  
णो ॥ तव विजया रे सोले अंगारजला करी, पिउ मंदर रे पोइती मन  
उद्धट धरी ॥ ( उद्दालो ) मन धरी उद्धट अधिक पढुतो पिया  
पासे सुंदरी, ते देखि दरखे सेठ बोलै शील निश्चो संजरी ॥ मुज  
शील निश्चो पखअंधारे तेहना दिन तीन ठै, ते नेम पालो शुक्र  
पदके हुं जोग जोगविस्युं पवै ॥ ३ ॥ ( चाल ) इति सान्जल रे वि-



गांव ॥ जग्गूपुरोहित धन तज नीसरयो, राजारै धन लेवा  
 चाव ॥ सांजल हे राणी हुकम करो तो कोइ गामो इहां धरां ॥  
 ३ ॥ बेटां तो तिणरा संजम लियो, वरज्यो घएयोही पितामात ॥  
 ते पिण चारित्र लेवा ऊमह्या, जग्गू जसा तिरें मोह ललचात ॥  
 सांजल हे रा० ॥ ४ ॥ इम सुण कमलावतीराणी इम कहै, इहां  
 तो कमी नहीं काय ॥ सांजलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म  
 मता नही ठाय ॥ सां० दासी राजानें ए वातां जुगती नही ॥ ५  
 ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई ठै राजारे हजूर ॥ वचन कहै  
 राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोलै सूर ॥ सां० हो राजा  
 ब्राह्मण ठोमी रुद्धि क्युं आदरो ॥ ६ ॥ करजोमी कमला कहै, सां  
 जल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे रुद्धि परिहरि, ते तो घर बाहि म  
 त आण ॥ सांजल हो राजा० ७ ॥ ए रुद्धिसुं अपणे कांइ घणो हुसी,  
 राजारा मोटा ठै जग ॥ वमियें आहाररी वांछा कुण करै, कै कुतरा  
 कै काग ॥ सांजल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीठो नर नखै,  
 नही परसंसवा जोग ॥ जग्गूपुरोहित रुद्धि तज नीसरयो, थे  
 जाणयो ठै असी म्हारे जोग ॥ सां० राजा० ॥ ९ ॥ संक-  
 लपियोमो पाठो किम लियै, सांजल हो महाराज ॥ दान दि-  
 यो थे पहिलां हाथसुं, ते पूठो लेतां नावै थाने लाज ॥ सांजल  
 रा० १० ॥ निहञ्जे तो मरणो राजा इक दिने, ठोमीनें काम विशेष  
 ॥ बीजो तो जगमें सरणो को नही, तरै जिनजीरो धर्म एक ॥  
 सांजल हो रा० ११ ॥ सगलै जगंतरो धन नैलो करी, थे घालो  
 जंझारारे मांहि ॥ तोपिण ब्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनको  
 थाय ॥ सांजल हो राजा० १२ ॥ सांजलनें इखुकारराजा बोलीयो,  
 तूं जाषैनी वचन संजाल ॥ का तनें राणी जोलो वाजियो, का  
 काई कीधी मतवाल ॥ सांजल हो राणी राजानें करमा वचन

न बोलीयै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी जोलो वाजीयो, ना कोइ  
 कीधी मतवाल ॥ ब्राह्मणरो वंमियो धन थे आदरो, वरजण  
 आई हो जूपाळ ॥ सांजल हो रा० १४ ॥ बलतो राजा राणीने  
 इम कहै, इसनी वैरागण आय ॥ अजू तो निलरां आवै नही, तूं  
 बैठो वै घर मांय ॥ सांजल हे राणी० १५ ॥ उत्तरवाली तो दीसि  
 नही, इसनी आई वै मतवाल ॥ हुंतो घर ठोमने नीसरी, थे  
 पिण ठोमो हो जूपाळ ॥ सांजल हो राजा आग्या देवो तो संजम  
 आदरुं ॥ १६ ॥ रतन जमंतरो राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पणियो  
 फंद ॥ इण रीतै हूं थारे राजमें, रहिने पांमु आणंद ॥ सांजल  
 हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूपीया तांतण तोमने, आरंज  
 धनसुं रहस्यां दूर ॥ विरकत अई मौनपणें रह्या, थे पिण होयज्यो  
 सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दव तो लागी हो राजा वन मऊ,  
 हिरण ससा बले मांय ॥ गिरवपंखी ज्युं आमिप देखनें, मनमां-  
 हे हरखित आय ॥ सां० रा० राग देवरा जांगा लग रह्या ॥ १९ ॥  
 मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ दुस्मन  
 तो मनमें हरख पाम्यो घणो, जाणे ते माहरो मिटयो सां० ॥  
 सां० राजा राग द्वे० २० ॥ इण दृथांते लोञ्जी मूरख अका, मुरऊ  
 रह्या जोगमांहि ॥ पहिलाने उखियो देखी चेतें नही, लागी रांग  
 द्वेवरी लाय ॥ सांजल हो राजा रा० २१ ॥ मांसरी वोटी  
 पंखीरी चांचमें, नर पासै पंखी पणियो आय ॥ आमिप संम  
 जोग ठोमनें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांजल रे प्राणी संय  
 मथ्री सुख पामिये २२ ॥ महल पिलंगादिक अशिर वै, ते पाम्यां ठे  
 आपणे दाथ ॥ कामजोगमें रकत होय रह्या, ते तजदोय सांनाथ ॥  
 सांजलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंद्रियारा जोग ठोमने, इय जावै  
 दलक आय ॥ सहज वायु पंखीनी परें, विचरस्यां आपणी दाय ॥

सांजल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपंखी ज्युं जोग जाणज्यो, ए काम  
 बधारे संसार ॥ साय ज्युं मोर धकी मरतो रहै, ज्युं पापसुं संक-  
 स्यां इण वार ॥ सांजल रे प्रा० २५ ॥ शोक तजी संतोषसुं, लेस्यां  
 संयमजार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्यां नय विहार ॥ सांजल  
 रे प्रा० २६ ॥ तन धन जोवन कारमो, चंचल वीज समान ॥ खिण २  
 खूटै आनखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांजल रे प्रा० २७ ॥  
 हस्ती ज्युं बंधण तोरनें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबंध तूटै संयम  
 लियां, सुणो कहुं बुं महाराय ॥ सांजल हो रा० सं० २८ ॥ इम  
 सुणनें इखुकारराजा चेतियो, बोरीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो  
 ए तजतां दोहिलो, विप्र सहित सारयां काज ॥ सांजल हो राणी  
 सं० ॥ २९ ॥ मोहन राखयो परिग्रह बोरीकै, पायो जिनध-  
 रम सुजाण ॥ तपस्या सगलांही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥  
 ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३० ॥ सुध संयम पालै सदा, सुमति गुपति  
 दयाल ॥ जमरानी परै करै गोचरी, रिषि टालै दोष बयाल ॥ सां०  
 प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाजुं बै, ज्ञव्यजीवनें उतरै  
 पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पास्या श्रीकार ॥ सां० प्रा० सं०  
 ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समऊनें, निरमल जावना ज्ञाव ॥  
 बएजणा थोला कालमें, सुगति विराज्या जाय ॥ सां० प्रा० सं० ॥  
 ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, जूगुपुरोहित जसा नार ॥  
 जूगुप्रोहितना दोय दीकरा, शिवसुख पास्यो सार ॥ सां० प्रा० सं०  
 ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा जूगुप्रोहित अधिकार संपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥

॥ ३५ ॥ प्रथम जिनेसर पाय नमी, पासी सुगुरु प्रशाद ॥ दान  
 शील तप जावना, बोलिस बहु संवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोसस्या  
 राजगृही बुधान ॥ समवसरण देवे रच्यो, बैठा श्रीवर्धमान ॥ २ ॥

बैठी धीरे परखदा, सुणवा जिलावर बाण, दान कहे प्रभु हुं वमौ;  
 मुऊने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो सहुको तुमै, कुण वै मुऊ  
 समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, थापे पहिखुं दान ॥ ४ ॥  
 प्रथम पहुर दातारनो, ले सहु कोई नाम ॥ दीघांरी देवल चढै,  
 सीधै वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थकरनें पारणे, कुण करस्यै मुऊ  
 होरु ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीघारे कोमि ॥ ६ ॥ हुं जग  
 सगलो वस करुं, मुऊ मोटी वै वात ॥ कुणर दानशकी तिरथा;  
 ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥  
 धनसारशवाद् साधुनें, दीधुं घृतनो दान ललना ॥ तीर्थकर पद में  
 दियो, तिणें मुऊनें अजिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हुं  
 वनो, मुऊ सरिखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा;  
 दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती,  
 पन्डिताज्यो अणगार ललना ॥ कुमर सुवाहू सुख लदै, ते तो मुऊ  
 उपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणनें पारणे, पन्डिताज्यो  
 रुपिराय ललना ॥ शालिज्जइ सुख जोगवे, दानतणें सुपसाय ल-  
 लना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पांचसें मुनिनें पारणो, देतो वोहरी आण  
 ललना ॥ जतरत श्रयो चक्रवर्ति जलो, ते पण मुऊ फल जाण ल-  
 लना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उरुदना वाकला, उत्तम पात्र विशेष  
 ललना ॥ मूलदेव राजा श्रयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥  
 ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयांशकुमार ललना ॥ सेलनी-  
 रस वहरावियो, पाम्यो जवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ धंद-  
 नवाला वाकुला, पन्डिताज्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट  
 श्रया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव जव  
 पारेवहुं, शरणें राख्युं सूर ललना ॥ तीर्थकर चक्रव-  
 र्तिपणें, प्रगटयो पुन्य पहुर ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥ गजजव शिशजो

राखीयो, करुणा कीधी सार ललना ॥ श्रेणिकने घर अ  
 वतरयो, अंगज मेघकुमार ललना ॥ दा० १० ॥ इम अनेक में  
 ऊधर्या, कहतां नावे पार ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, मुऊ  
 पहिलो अधिकार ललना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहे सुष दा-  
 न तुं, किस्यो करै अहंकार ॥ आंवर आवै पहुर, याचकसुं विव-  
 हार ॥ १ ॥ अंतराय बलि ताहरै, जोगकरम संसार ॥ जिनवर  
 कर नीचो करै, तुऊने पनो धिकार ॥ २ ॥ गर्व स कर रे दान  
 तूं, मुऊ पूठै सऊ कोय ॥ चाकर चावै आगले, तो स्युं राजा  
 होय ॥ ३ ॥ जिनमंदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोटी  
 दानदिये, शीयल समो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीले संकट सऊ टले,  
 शीले जश शोभाग ॥ शीलेसुर सानिध करै, शील बनो वेराग ॥ ५ ॥  
 शीलै सर्प न आज्ञमै, शीले शीतल आग ॥ शीलै अरिकरी केसरी,  
 जय जावै सब ज्ञाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना जय अकी, में ठोम  
 व्या अनेक ॥ नाम कहूं हिव तेहना, सांजलजो सुविवेक ॥ ७ ॥  
 ॥ दाव २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील कहे  
 जग हूं बरु, मुऊ वात सुणो अंत मीठी रे ॥ लालच लावै लो  
 कने, में दानतणी वात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण जग  
 जाणीये, बलि विरती नही पण कांई रे ॥ ते नारद में स्तीऊव्या,  
 मुऊ जुठ ए अधिकार रे ॥ शी० २ ॥ बांहे पहिर्या वैरखा, शं  
 खराजा दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते में नवपद्धव  
 कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीता रही, तो रामचंडै घर आणो  
 रे ॥ शीतानो कलंक उतारीयो, में पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी०  
 ४ ॥ चंपावार उघामिया, बली चलणिये काढ्युं नीरो रे ॥ सतीय  
 सुजद्रा जस अयो, में तसु कीधी जरीरो रे ॥ शी० ५ ॥ राजा मा-  
 रण मांझियो, राणी अजयये दूषण दाख्या रे ॥ शूलो सिंहासण

में कियो, में श्रेष्ठ सुदर्शन राख्यो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सत्राह  
 मंत्रीसरे, अ वतां अरिदल अंज्यो रे ॥ तिहां पिण सानिय में करी,  
 वला धरम काज आरंज्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पहिरण चौर प्रगट  
 किया, में अत्रेतरसो वारो रे ॥ पांनवनारी जैपदी, में राखी मा-  
 मः उारो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनवालिका, वलि शीलवती  
 दयवंती रे ॥ चेमानी साते सुत, राजीमती सुंदर कुंती रे ॥ शी०  
 ९ ॥ इत्यादिक में ऊवरचा, नर नारीना वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्र  
 नु वीरजी, पहिले मुऊ आनंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥  
 तप बोढ्यो त्रटकी करी, दानने तूं अवहील, पिण मुऊ आगल तुं  
 किसुं, सांजल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा जोजन तें तड्या; जगमें  
 मीग नाद ॥ देहतणी शोजा तजी, तुऊमां कियो सवाद ॥ २ ॥  
 नारी अकी मरतो रहे, कायर कियुं वखाण, कूरु कपट वहुं के  
 लवी, जिम तिम राखै प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुऊ आदरै, ठंठी  
 सहु संसार ॥ आप एक तूं जांजतो, बाजा जांजे चार ॥ ४ ॥ क  
 रम निकाचित तोर्या, जांजु जवजय जीम ॥ अरिहत मुऊने  
 आदरै, वरस ठम्मासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीतर ऊपरै, मुऊ  
 लवधै मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारै शाश्वता, आनंद अंग न माय ॥  
 ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंथु आकार ॥ हय गय रथ पा  
 चकतणा, रूप करै अणगार ॥ ७ ॥ मुऊ कर फरसै उपशमै, कु  
 षादिकना रोग ॥ लब्धि अठवीस ऊपजै, उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥  
 जे में तार्या ते कहुं, सुणजो मन उद्वास ॥ चमत्कार चित पाम  
 सो, देशो मुऊ सावास ॥ ९ ॥ ॥ दाल ३ ॥ नरावलरी दे  
 शी ॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कोधी चार हो सुंदर ॥ ते  
 पिण तिण जव ऊपरयो, मूढयो मुगति मजार हो सुंदर ॥ १ ॥  
 तप सरखो जग को नही; तप करै कर्धनूं सूनु हो सुंदर ॥ तप

करवूं अति दोहिलूं, तपमां नही को कून हो सुंदर ॥ त० २ ॥  
 सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन  
 माती में ऊधरयो, ठेया कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नंदिपे  
 णनें में कियो, स्त्रीवद्धनवसुदेव हो सुंदर ॥ बहुतर सहस अतेउरी,  
 सुख जोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप कालो घ  
 णो, हरिकेशी चंमाल हो सुंदर ॥ सुरनर कोमी सेवा करै, ते में  
 कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लवधे कियुं, ला  
 ख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंध केरे कारणे, ए मुज शक्ति  
 अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वांध्या जिन्  
 चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिवूज्यो, तिण मुज अधिव  
 जगीस हो सुंदर ॥ त० ७ ॥ चौद सहस अणगारमां, श्रीधनो ३  
 णगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, ए पण मुज अधिका  
 हो सुंदर ॥ त० ८ ॥ कृष्ण बरेसर आगलै, उकरकारक एह हो सु  
 दर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुज महिमा सवि तेह हो सुंदर ॥ त०  
 ९ ॥ नंदिपेण विहरण गयो, गणिका कीती हास हो सुंदर ॥ वृष्टिकरी सोव  
 नतणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १० ॥ इम बलजद्रप्रमुख  
 बहू, तारया तपसी जीव हो सुंदर ॥ समयसुंदर प्रजु वीरजी,  
 पहिलो मुज प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ११ ॥ दूहा ॥ जाव कहै  
 तप तूं किसुं, ठेरुं करै कषाय ॥ पूर्वकोमी जो तप तपै, कृष्णमां  
 खैरुं थाय ॥ १ ॥ खंधक आचारज प्रतें, तें बाढ्यो सवि देश ॥  
 अशुज नियाणो तूं करै, कृमा नही लवलेश ॥ २ ॥ द्वीपायन  
 रुषि दूहव्या, सांभ प्रद्युन्न सनाह ॥ तें तब क्रोध करी तिहां, कियौ  
 चारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शील तप सांजलो, स करो जूठ गुमान ॥  
 लोक सहूको साख दे, धर्म जाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक बो  
 त्रिण्हे, ये व्याकरणी साख ॥ काम सरे नहि कोइनुं, जाव ज्ञणे में

पाख ॥५॥ रस विन कनक न नीपजै, जल विन तरुअर वृद्ध ॥ रस-  
 वंति रस नही लवण विण, तिम मुज विण नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र  
 मणि औपधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ ज्ञाव विना ते सवि वृथा, ज्ञाव फलै  
 नितमेव ॥७॥ दान शिल तप जे तुमें, विधश्कह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो  
 ज्ञाव न हुंततो, कोई सिद्धी नव हुंत ॥८॥ ज्ञाव कहे में एकले,  
 तारथा बहु नर नार ॥ सावधान अइ सांजलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥  
 ( दाल शौधी ॥ कपूर हुवै अति उजलो रे, एदेशी ) ॥ काननमें का  
 उसग रह्यो रे, प्रअचंद रुशिराय ॥ ते में कीधो केवली रे, तत-  
 खिण करम खषाय ॥ १ ॥ सोजागी सुंदर, ज्ञाव वनो संसार ॥  
 एतो बीजो मुज परिवार, सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे,  
 पोहचाडूं जवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एला-  
 पूत्र अपार ॥ केवलज्ञानी भें कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो०  
 ३ ॥ जूख तृषा खमें अतिघणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल  
 महिमा सुर करै रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाजथी लोज  
 बाधे घणो रे, आयथो मन वैराग ॥ कपिल अयो मुनि केवली रे,  
 ते मुजनें सोजाग ॥ सो० ५ ॥ अणिकासुत गन्नो धणी रे,  
 खीणजंघा वलि जाण, कीधो अंतगरु केवली रे, गंगाजल गुण  
 खाण ॥ सो० ६ ॥ पनरेसें तापसजणी रे, दीधी गौतम दिख ॥  
 ततखिण कीधा केवली रे, जो मुज मांनी सीख ॥ सो० ७ ॥  
 पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणथी  
 गोरुव्या रे, आपे मुज आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंरुइने चालतारे,  
 दीधो दंरु प्रहार ॥ नवदीक्षित अयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी  
 वार ॥ सो० ९ ॥ धनरथकारक साधुनें रे, पमिलांयो जलास ॥  
 मृगलो ज्ञावना ज्ञावतो रे, पोहतो स्वर्ग आकास ॥ सो० १० ॥  
 निज अपराध खमावती रे, मूकयो मनथी मान ॥ मृगावतीने



में दिशुं रे, निर्मल केवलज्ञान ॥ सो० ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरें  
 रे, देखी पूत्रनी रुद्रि ॥ मुऊने मनमाहि धर्योरे, ततखिण पामी  
 सिद्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वंदन चाढ्यो मारगे रे, चांप्यो चपल  
 तुरंग ॥ दर्डुर नामे देवता रे, तेह थयो मुऊ संग ॥ सो० ॥ १३ ॥  
 प्रभु पाय पूजन नीसरी रे, दुर्गला नामे नार ॥ कालधर्म विचमां  
 करी रे, पोहती स्वर्ग मजार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोत्रा  
 कारमी रे, रूप किसुं अजिमान ॥ नरत आरीलाभुवनमां रे ॥  
 पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढजूति कलानिलो रे, प्र  
 गढ्यो नरतसरूप ॥ नाटक करतां पामियो रे, केवल ज्ञान अनूप  
 ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन काउसग्ग रह्यो रे, गजसुकमाल म-  
 साण ॥ सोमल शीस प्रजालीयो रे, सिद्धि गयो शुभ्र जाण ॥ सो०  
 ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवली रे, सांजल पृथ्वीचंद ॥ पोते  
 केवल पामियो रे, सेव करै सुर इंद्र ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक  
 में ऊधर्या रे, मूक्या शिवपुरवास ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी रे,  
 मुऊने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर  
 कहै तुमें सांजलो, दान शील तप ज्ञाव ॥ निंदा ठै अति पापणी,  
 धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिंदा करतां थकां, पापे पिंन नरा-  
 थ ॥ वेह राम वाधै घणी, दुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक स-  
 रिखो पापीयो, जूंनो कोइय न दिठ ॥ बलि चंदाव समो कह्यो,  
 निंदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी, करतो इंद्र  
 नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासै निजगुण वंद ॥ ४ ॥ को  
 केहनी म करो तुम्हे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणें ठामे रहो,  
 सहुको जलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अधको ज्ञाव ठै, एकाकी  
 समरत्य ॥ दान शील तप त्रिणें जला, पण ज्ञाव विना अकथत्र  
 ॥ ६ ॥ अंजन आंखै आंजता, अधिको आणी रेख ॥ रजमांहे

तज काढतां, अधिको ज्ञाव विशेष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ जंजण  
 जणी, चारे समान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चव विध  
 धर्म जणंत ॥ ८ ॥ ॥ ढाल ए मी ॥ ॥ वीर जिणेसर  
 इम जणे रे, वैठी परखदा वार, धर्म करो तुमं प्राणिया रे, जिम  
 पामो जव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे,  
 जवियण सांजलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म० ॥ धर्मथकी  
 धन संपजै रे, धर्मथकी सुख होय, धर्मथकी आरति टले रे, धर्म  
 समो नहि कोय रे ॥ ध० ॥ २ ॥ दुर्गति पन्तां प्राणिया रे, राखै  
 श्रीजिनधर्म ॥ कुटंब सहुको कारमो रे, मति जूलो जवि जर्म रे ॥  
 ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, वलि होसे वै जेह ॥  
 ते जिनवरना धर्मथी रे, मत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥  
 सोलेसे गसठ समे रे, सांगानेर मजार, प्रद्वप्रजु सुपसाजले रे,  
 एह जण्यो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे,  
 खरतर गढ कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मु-  
 नींद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयवंत ज-  
 सवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ ध० ॥  
 ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शीस ॥ स-  
 मयसुंदर वाचक जणे रे, संघ सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ८ ॥  
 दान शीयल तप ज्ञावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ जणतां गुणतां  
 ज्ञावसुं रे, रुद्रि समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति दान शील  
 तप ज्ञाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अय महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधने मन्नथी दूर  
 वारो ॥ संतोपवृत्ती धरो चित्तमांही, रग द्वेषथी दूर थाउ उभाही ॥  
 ॥ १ ॥ पढ्या मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्धतत्त्वनी वात तेणे न

जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमो गो, जैनमार्ग वंती जुलां  
 कां जमो गो ॥ २ ॥ अलोत्ती अमानी निरागी तजो गो, सलोत्ती  
 समानी सरागी जजो गो ॥ हरि हरादि अन्यथी सुं रमो गो, नदीगंग  
 मुकी गलीमां पमो गो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ  
 देव घाते गले हंममाला ॥ केइ देव नत्संगे राखेठे वामा, केइ  
 देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ  
 मांस जह्नी माहा विक्राला, केइ योगणी जोगिणी जोग मांगे,  
 केइ रुद्रणी गगनो जोग मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश रा  
 खै, सदा मुक्तिने सुखने केम चाखे ॥ ६ ॥ जदा लोत्तना थोकतो पार  
 नाव्यो, तदा मथनो विंडुत मन जाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपणी  
 आस राखे, तेह पिंनने मन्नसुं लेअ चाखे ॥ दीन हीननी ज्नीर  
 ते केम जाजे, फूटो ढोल होवे कहो केम वाजै ॥ ७ ॥ अरे मूढ  
 भ्राता जजो मोहदाता, अलोत्ती प्रजुने जजो विश्वख्याता ॥ र  
 लचिंतामणी सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंनसुं मत  
 राचो ॥ ८ ॥ मंदबुद्धि जेह प्राणी कहेवै, सवि धर्म एकत्व जूलो  
 जमेवै ॥ किहां सर्पवाने किहां शेरधीरं, किहां कायराने किहां शू  
 रवीरं ॥ ९ ॥ किहां स्वर्णधालं किहां कुंजखंमं ॥ किहां कोडवान  
 किहां हीरमंमं ॥ किहां हीरसिंधु किहां हारनीरं, किहां कामधेनु  
 किहां गगखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां कूमवाणी, किहां  
 रंकनारी किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने किहां देवजोगी, किहां  
 इंद्रदेही किहां कुष्ठरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्म घाती किहां कर्म  
 धारी, नमो वीरस्वामी जजो अन्य वारी ॥ जिती सेजसां स्वप्न  
 थी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धी धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अग्रि  
 सुक संसारमां मन्न माचे, जना मूढमां श्रेष्ठसुं श्रेष्ठ गजै ॥ तजो  
 मोह माया हरो वंज रोसो, सजो पुण्य पोसी जजो ते अरोसो

॥ १३ ॥ गति चारं संसारं अपार पामी, आख्या आस धारी प्रभु  
 पाय स्वामी ॥ तूँही२ तुँही प्रभु परमरागी, जवफेरनी शंखला मोह  
 ज्ञागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी ठै एक अर्ज मेरी, दीजै दासकूं  
 सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य उदय हुआ गुरु आज मेरो, विवेकें  
 लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छंद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ वंचित पूरे विविधपर, श्रीजिनसासन सार ॥  
 निश्चे श्रीनवकार नित, जपतां जैजकार ॥ १ ॥ अरुसठ अक्षर  
 अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ वीतराग सैमुख वदे, पंच  
 परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समस्यां संपति  
 धाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल  
 मंत्र सिर मुकटमणि, सद्गुरु ज्ञापित सार, सोजविद्यां मन शुद्धसे,  
 नित जपिये नवकार ॥ ४ ॥ ( छंद द्वाटकी ) नवकार अकी  
 श्रीपाल नरेसर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समसान विषे शिव नाम कु  
 मरने सोवनपुरुषो सिद्ध ॥ नवलाख जपता नरक निवारै, पामे ज  
 वनो पार ॥ सो जविद्यां जते चोखे चित्ते नित जपिये नवकार ॥ ५  
 ॥ बांधी वनसाखा ठीके वैसी देवल कुंभहुताश, तस्करने बलि मं  
 त्र सम्प्यो श्रावक उज्यो तेह आकाश ॥ विधि रीते जप्यां विप  
 धर विप टालेढाले अमृतधार ॥ सो० ६ ॥ बीजोरा कारण राय महा  
 बल व्यंतर छुट विरोध, जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यह प्र  
 तिबोध ॥ नवलाख जपता आयै जिनवर एहवों ठै अधिकार ॥  
 सो० ७ ॥ पत्नीपति सीख्यो मुनिवर पासें महामंत्र मन शुद्ध,  
 परजव ते राजसिंह पृथ्वीपति पाम्यो परघल सिद्ध ॥ ए मंत्रअकी  
 अमरापुर पुहुतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ८ ॥ सन्यासी कासी  
 तप साधंतो पंचाग्नि परजाले, दीगं श्रीपासकुमारे पन्नग अथवलता

ते टाले ॥ संज्ञलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इन्द्रुवन अवतार ॥  
 सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण  
 ध्याने कुष्ट दृष्ट्युं नंबरनुं रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपतां नव-  
 निधि आयै धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमांहे कृष्णजुजंगम  
 घाट्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रज्ञावे हारफूलनो, वसुधा-  
 मांहि विहात ॥ कमलावतिथें पिंगल कीधो पापतणो परिहार ॥  
 सो० ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहणी पानी वाण प्रहार,  
 पद पंच सुणंता पांरुपतधर ते अइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख  
 महिमा मंदिर जवडुख जंजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संबल  
 कादव काढ्या सकट पांचसें माल, दीधे नवकारे गया देवलोके  
 विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रशकी संपति वसुधामां लही विलसे  
 जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीली हुइ अनंती होसे वार  
 अनंत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम ज्ञाखै जगवंत ॥  
 पूरबदिसि चारै आदि प्रपंचे समरथां संपति सार ॥ सो० १४ ॥  
 परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कगोर, पुंरगिरि ऊपर  
 प्रत्यक्ष पेरयो मणिधर नें इक मोर ॥ सहगुरु सन्मुख विधिथें  
 समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० १५ ॥ सूली आरोपण तस्कर  
 कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहां सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अ-  
 मरनी रुद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनुहार  
 ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्टी ज्ञानेज पंचह पंच दान चारित्र, पंच  
 सिंजाय महाव्रत पंचहुं पंचसमति समकित्त, पंच प्रमाद विषय तजो  
 पंचह पादो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ ( कलश ॥ ठप्पय ) नित्य  
 जपिथे नवकार सार संपति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो  
 एम जंपे जगनायक ॥ श्रीअरिहंत सुसिद्ध सुद आचार्य ज्ञानीजै,  
 श्रीउवज्ञाय सुसाधु पंच परमेष्टि शुणीजै ॥ नवकार सार संसार

वै कुशल लाज वाचक कहै, एक चित्तै आराधता रुद्रिसिद्धि वंशित  
लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणी लिख्यते ॥

सुख संपत्ति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥  
जाकी ठवि कांति अनोपम उषित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-  
ज्योति जिगामिग जिगमगर, पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप  
वखाणाहि झूपत, तूही त्रिजुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर  
लोक सबे मिल, जाका जस्त थुणंदा हे ॥ तेरी खिजमत्त करे  
इकचित्तसुं तो सेवक धरणिंदा हे ॥ ते जलता आगनिकाड्या नाग,  
किया वरुजाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणां आय रह्या लपटाय, कला  
अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रन वन पंचांगनि,  
ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी उद्दाधारी, अल्प अहार  
खियंदा हे ॥ सब जेप सन्यासी रहे उदासी, अविनासी घ्याचंदा  
हे ॥ दिसि च्यारां दिढी बले अंगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥  
महिमा बद्धारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण  
वत्तां धरिय उकत्तां, पुत्तां पास जिनंदा हे ॥ वामादे अरुके कुण तो  
परके, मेरा हूंस पूरंदा हे ॥ तिहां चावो पुत्तां जिहां अवधुत्तां, जो  
गारंज जगंदा हे ॥ ४ ॥ जननी मन आसा पूरण पासा, शैरापत्ति  
सजंदा हे ॥ गल घग्घरमाला जाण हेमाला, दंताला उषंदा हे ॥  
वर वीर घंटावा मंद मतवाला, जोवाली जलकंदा हे ॥ ५ ॥  
पंचरंगी परकर सजी सस्कर, ढालांसु ढलकंदा हे ॥ धतकरे धत्ता मत्ता  
अंकुस, मावत शीस दियंदा हे ॥ गंगातट आये खरे रहाए, प्रजु  
ज्ञानी आस्कंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अज्जिमानो तप अज्ञानी, पावक  
जीव जलंदा हे ॥ तिहां फारु उफारु दिखाले लकरु, वरु फणधर  
नागंदा हे ॥ नवकार सुणाया सुरपद पाया, तापस जस घटंदा हे ॥

तिण किया निघाणा तप खजाणा, कोमी सट्टे वेचिंदा हे ॥ ७ ॥  
 हुयके क्रोधातुर आतुर सो कमठासुर धुर उपजंदा हे ॥ अश्वसेन  
 सुतन महाराज विषय डुख, जाणत आप तजंदा हे ॥ पंचमुठी  
 लोच किया आलोच, मनासुं सोच अफंदा हे ॥ प्रभु अप्रतिबंध वि-  
 हार कियो तव, रनवन वास वसंदा हे ॥ ८ ॥ उपशम अणगारे  
 कानसग मजारे, कमठासुर दाव लहंदा हे ॥ वना असुराणा बली  
 हेराणा, पिठाण विलोक धुखंदा हे ॥ करि आतस क्रोध विचार  
 विरोध, महा अग्निमान धरंदा हे ॥ वानल मतवाली नीली काली,  
 वायु महा वाजिंदा हे ॥ ९ ॥ रवि किरणा कोट रही रज ओट,  
 दिवाकर तेज ठिपंदा हे ॥ कर घोर घटा चिकटा उमटी, अरु बाजू  
 गाजंदा हे ॥ गरमाटा वाटा सुणिया आटा, ऐरापति लाजंदा हे ॥  
 दुआ अकाला धुर वरसाला, बीजलिया षीवंदा हे ॥ १० ॥ मोटी  
 धारांसुं आरावांसुं, यों अंबू वरसंदा हे ॥ चल्हे जल खाला नदियां  
 नाला, हेमाला हालंदा हे ॥ दरियाव उलट्टां केतो फुट्टां, पाणी नहि  
 मावंदा हे ॥ दिगपाल दहल्लां धरिय नत्थल्लां, खोणीपत्ति खिसंदा  
 हे ॥ ११ ॥ वने पाहामां जंगी जामां, सजामां ढाहंदा हे ॥ सम  
 दाहंदी रेल वहंदी, जाणक जग रेलंदा हे ॥ बहु वासर वूढा जाण  
 किरुवा, जूठा मन असुरेंदा हे ॥ तेवीशम राया वनमें पाया, कान  
 सग कहा करंदा हे ॥ १२ ॥ उवसगाहंदी केल करंदी, पाठा  
 नांहि मुमंदा हे ॥ धरि मनमें ध्याना क्रोध न माना, निश्चल ध्यान  
 धरंदा हे ॥ प्रभु नासा तांइ नदी आई, तोही नांहि खुजंदा हे ॥  
 देवारज जेसा धीर पएसा, पावस पीन सहंदा हे ॥ १३ ॥ तिण  
 अवसर वरदां धरणी धरदां, आसण वेग चलंदा हे ॥ तिण अवधि  
 प्रयुंजी दीठे प्रभुजी, तन मन अति उलसंदा हे ॥ तिहां पदमा-  
 वती देव सकती, सुं मिल वेग वहंदा हे ॥ हुयके हेराना वैठ वि

माना; पांवां आय लगंदा हे ॥ १४ ॥ फणनाग हजारों कर वित्त  
 तारा, उत्तर ज्युं ठावंदा हे ॥ ले आपण खंधे प्रेम निबंधे, पूरव  
 प्रीत सुखंदा हे ॥ इंझणीनारो सब सिणगारी, जोवन अंग जिल  
 कंदा हे ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणी, सुंदर रूप सो  
 हंदा हे ॥ अणियाला कज्जल जलके विज्जल; खूब वणाव वणंदा  
 हे ॥ नकवेसर नत्थां लाल सुकत्थां, विच मोती जलकंदा हे ॥ उठण  
 पाटंवर जीणी अंधर, आजूपण जलकंदा हे ॥ १६ ॥ उर कंचु क  
 सिया तन उल्लसिया, कामघटा गहरंदा हे ॥ पहिरण तन खूवा  
 हरिया दूवा, सोलेही सोहंदा हे ॥ कटिमेखल कनियां सोने जनि  
 यां, हीरा बीच हलकंदा हे ॥ १७ ॥ घमके घूरियां पाए धरियां,  
 पग नेवर रणकंदा हे ॥ ले जांजर ताला ताल कंसाला, परकावज  
 वाजंदा हे ॥ कुहके करनाला बीच रसाला, जंगी ढोल घुरंदा हे ॥  
 वाजे सरणार्ई सखरी घार्ई, नगारा रोमंदा हे ॥ १८ ॥ पठमा वै  
 रुटा आण उलटां, नाटिक मिल नाचंदा हे ॥ तत्ताथेइर तान त  
 रुंदा, रस जेद रमंदा हे ॥ दिन तीन वितीता तोहि न वीता, पा  
 वस जल पसरंदा हे ॥ १९ ॥ धरणीधर जाण्या ग्यान पिठाण्या,  
 कमवासुर कोपंदा हे ॥ नागादी पत्तो आंख्या रत्ती, किन्ती रीस  
 आवंदा हे ॥ रे मुठा घिठा चित्त विणठा, क्युं नांही समजंदा हे ॥  
 साहिव बलवंता जोर अनंता, तूं तो नहि जाणंदा हे ॥ २० ॥ ए  
 क्मासागर गुणके आगर, तीनुं लोक नमंदा हे ॥ असमांन खमाई  
 रीस ज़राई, हिक्काइ वजरंदा हे ॥ किन्ती बहु गह्वां पमै दहह्वां,  
 धरुहरु देह धुजंदा हे ॥ धरणेंद्र रुराया तव ते आया, पावां आय  
 लगंदा हे ॥ २१ ॥ कर जोनि खमाया सीस नमाया, जगनायक  
 जिनचंदा हे ॥ तूं साहिव सच्चा तो गुण रच्चा, मेरा दिल खुलंदा  
 हे ॥ तें रीस न धरियां क्णही विरियां, तूंही अचल गिरंदा हे ॥



कमठासुर किती बहु विनती, निज अपराध खमंदा हे ॥ २१ ॥  
 सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रचुके गुण समरंदा हे ॥ सुध सं  
 जम पाले दोष निहाले, तव केवल उपजंदा हे ॥ लम्मेतशिखर पर  
 चढकै ऊपर, सिद्धपुरी पोहचंदा हे ॥ तेरी कीरती जग ऊयती, फार  
 न को पावंदा हे ॥ २३ ॥ तूं सच्चा रस्के जेद परस्के, गुमानी मो  
 रंदा हे ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव करंदा हे ॥ तूं  
 दीवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा हे ॥ तूं अछ्वा पीर फकीर  
 मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा हे ॥ २४ ॥ तूं काजी मुख्वां मरद अ  
 टछ्वां, तूंही शेष फरींदा हे ॥ तेंही ऊपाया धंदे लाया, मायामें मु  
 लकंदा हे ॥ तूं बूढा वाला मद मतवाला, तूं पक्का वाजंदा हे ॥ तूं  
 कच्चा कवला सबतें सबला, सच्चा मऊ रहंदा हे ॥ २५ ॥ वावागो-  
 साईं जेद न पाई, ज्नीरु पड्यां आवंदा हे ॥ तूं नारायण जोगपरा-  
 यण, माधव तूंही मुकंदा हे ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतारी, तूं देवा  
 देवंदा हे ॥ तूं एकां अप्पे एक उधप्पे, थिति निज सुध थापंदा हे  
 ॥ २६ ॥ तो देवल मझां लोकति संझा, सीरणिया वाटंश  
 हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत ज्ञासे, जीणे सुर गावंदा हे  
 ॥ कालागरु अगरसुं मलयागर, धूपेना धुखंदा हे ॥ कुंकुम कसतूरी  
 केसर पूरी, चंदनसुं चरचंदा हे ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुंदा फूला  
 हंदा, टोरुर कंठ ठवंदा हे ॥ चंपा गुलावां जरीया ठावां, परमल  
 तिहां वासंदा हे ॥ कसाकोई चंगी रचिये अंगी, फूलां बीच फावं  
 दा हे ॥ आचूषण धरियां तन ऊपरियां, कुंमल कान जिगंदा हे ॥  
 २८ ॥ सूरत सोहंदा मूरत हंदा, दीगां नैण ठरंदा हे ॥ तेरी बलि  
 जातं मोजां पातं, वीनती तूंहि सुणंदा हे ॥ २९ ॥ क्या कथ्यूं ग  
 छां हुकम अदछ्वां, समकित मन नलसंदा हे ॥ सिद्धांदा वासा तिहा  
 रहासा, तुज सेवक विलसंदा हे ॥ घग्घर नीसांणी पास बखाणी

गुण जिनहर्ष कहंदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीधर्म नीताणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विलशे रुद्रि समृद्धि मिली, शुभ योगै पुण्यदशा सफली  
 ॥ जिन कुशल सूरि गुरु अतुलवली, मनवंगित आपै दादो रंग  
 रली ॥ १ ॥ मंगल लील समें विपुला, नवनवा महोच्चव राजेला ॥ सुप-  
 सायै गुरु चढती कला, सुकलीणी पूत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही  
 दिन आयै सबला, सद वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ  
 पायक बहुला, किछोख करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वीजै चमर नि  
 साण घुरै, नर वै दरवार खनां पुहरै ॥ जय२ करजोमी उचरै, सां  
 निद्ध गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा जोजन पान सदा, डख  
 रोग डुकाव न होय कदा ॥ अविचल ऊलट अंग मुदा, गुरु कूरम  
 दृष्टि प्रशन्न सदा ॥ ५ ॥ धमधम मादल नाद घुमें, बत्तीसे नाटक  
 रङ्गरमै ॥ प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियण ते आय नमें  
 ॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणै, पहिरै वेलाजल होयरनें ॥ ध्या  
 वी कुशल गुरु एक मनै, जूजक सुर मंदिर जरै धनें ॥ ७ ॥ तत  
 खण घण खंव्यो आवै, करि स्वांमघटां मेह वरसावै ॥ तिसीयां  
 तोय तुरत पावै, जलदाता त्रिजग सुजश गावै ॥ ८ ॥ लहिरयां  
 जल कछोख करै, प्रवहण जवसायरं मझ रुरै ॥ वूरुता वाहण जे  
 समरै, ते आपद निश्वेसुं उवरै ॥ ९ ॥ खरुखरु खरुग प्रहार वहै,  
 सो दामनि जिम समसेल सहै ॥ कुशल२ गुरु नाम कहै, ते खे-  
 मकुशल रिण मझ लहै ॥ १० ॥ शुभ सकल परचा पूरै, श्रीनाग  
 पूरै संकट चुरै ॥ मंगलोर अधिके नरै, देरावर जय टालै दूरै ॥ ११ ॥  
 वीरमपुर वानै सुधरै, खंजायतपुर विक्रमनयरै ॥ जिणचंद सूर पा  
 टे पवरै, जसु कीरति महीमंजल पसरै ॥ १२ ॥ पूरव पश्चिम द  
 क्कण आयै, उत्तर गुरु दीपै शंजागै ॥ दहदिशि जन सेवा मागै,

श्रीखरतरगञ्जनी महिमा जागै ॥१३॥ पुर पट्टण जनपद ठामे, गा  
ईजै कुशल नयर गामै ॥ पूजै जे नर हितकामे, ते चक्रवर्ति पद  
वी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखै, सेवकजनने सुखिया  
राखै ॥ समस्यां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाठक ज्ञाखै  
॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सङ्गुरु उत्पत्ति स्तवन ॥

॥ वर लाठ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनरी आश  
फलै ॥ दोषी दुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संपति आश फलै ॥ १ ॥  
॥ जय२ जिनदत्त सूरिंद यती, शुतधार कृपालक शीलवती ॥ ज-  
सु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमांहे अती ॥ २ ॥  
शुभ्र मंगल लील विलाश सदा, दुख रोर दुकाल न होय कदा ॥  
आराध्यां आवै सुगुरु मुझ, सुप्रशन हाजर होय जदा तदा ॥ ३ ॥  
जिण जीती चोसठ जोगणियां, वश वावन खेतलवीर कियां ॥  
जसु नामे न पने वीजलियां, जूत प्रेत न कर सके ठलवलियां  
॥ ४ ॥ जिण सिंध सवालख दिस साधी, पंच पीर नदी जिण  
पुल बांधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसात लीयां गुरु  
सिद्ध वाधी ॥ ५ ॥ सुत सुगल कियो सरजीत बहु, पाये लागी  
नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या बेशलहू ॥ प्रतिबाधी श्रावक  
कीध सहू ॥ ६ ॥ वरुनगरे ब्राह्मण द्वेष धरी, मृत गाय लइ जिण  
चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्रबले जीवत उधरी, विप्रवेष सहू गुरु पाय  
परी ॥ ७ ॥ वज्रमय अंत्रो दोय खंन कियो, पोथी परगट परजा  
व थियो ॥ विद्या सोवनवरणे सफियो, वर नयर उज्जेली सुजश  
लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुंवरु वंसे जीवदशा, मंत्री वाठग परसिद्ध  
थया ॥ बाहरुदे कूखै जनम जणूं, ते चवदे विद्या जाण घणूं  
॥ ९ ॥ इग्यार वत्तीसै जनम जणूं, इग्यार इगतालै दिहू शुणूं ॥

युगवर इग्यारै गुणहत्तरै, स्वर्गे वारेतै इग्यारै ॥ १० ॥ जिनवल्लभ  
 सूरी पटोधरणं, परजावः उदेसर जयहरणं ॥ नवनिधि खठमी  
 संपति करणं, बलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ युञ्ज  
 सकल श्रीअजमेरे, गढसंनो वर वीकानेरे ॥ सुखदायक श्रीजेशल  
 मेरे, दीपे गुरु गाजीखान मेरे ॥ १२ ॥ सुखतान नगर महिमा  
 सागै, जावठ दालिद्र दूरे जागै ॥ मेरे असमालखानके सोजागे,  
 गुरु पुरश्में कीरति जागै ॥ १३ ॥ धनः जे सहुरु ध्यान धरे,  
 तेरनवन पूजा जेह करै ॥ गढ खरतरनी महिमा पतरै, कवि  
 सूरि उदय जिनकीरति करै ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सहुरु श्रीजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसइ जिनेसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव  
 वंदिय पायकमल, जग सहू पूरै आस ॥ १ ॥ ( चोपार्इ ) चंद  
 कुलावर पूनमचंद, बंदो श्रीजिनकुशल मुणिंद्र ॥ नाम मंत्र जसु  
 महिम निवास, जो समरै तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंजल सवि-  
 याणो गाम, धण कण कंचन अति अजिराम ॥ जिहां वसै जि-  
 ष्टागर मंत्र, जैतसिरी जसु धरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे  
 तीसे जम्म, सेताले सिरिसंजम रम्म ॥ पाटण सतहत्तरे जसु पाट  
 निव्यासियै तसु सुरगे वाट ॥ ४ ॥ जूमंजल सरगें पायाल, अचि-  
 राचिर युग इण कलिकाल ॥ प्रज्जु प्रताप नवि माने सोय, में नवि  
 नयणें दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरयन लहे धन धन्न सुवन्न, पुत्रहीण  
 पामें बहु पुत्र ॥ असुखी पामे सुख शंतान, एक मनां करतां गुरु  
 ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि टलै, सयल संति सुख संप-  
 ति मिलै ॥ आधी व्याधी चिंता संताप, ते ठंनि नवि मंमै व्याप ॥  
 ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां, गुरु समरण उलंकठा जिहां ॥  
 सेवंता सुरतरुनी गंइ, निभ्रै दालिद्र मेठे वाहि ॥ ८ ॥ रिसइ

विसनर विस नरनाह, जूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह ॥ प्रजु नामें ते न  
 वरै पीर, जाजै जावठ जवजय जीर ॥ ए ॥ रोग सोग सवि  
 नासै दूर, अंधकार जिम जगै सूर ॥ मूरख फीटी पंक्ति थाय,  
 प्रजु पसाय डुख डुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिज २ जिजसासन उ-  
 द्योत, जिहांअठै जवसायर पोत ॥ सो सदगुरु में जेव्यो आज,  
 रलियरंग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ आज घरअं-  
 गण सुरतरु फलियो, चिंतामणि करकमलै मिलियो, उदयो पर-  
 मानंद धरै ॥ १२ ॥ आज दीह में धने गणियो, जुगषवरागम जो  
 में शुणियो, चंद्रगढ महिमा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी  
 पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो कांइ मने ॥ १४ ॥  
 वार १ एक चित्त जणीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै, सरै काज  
 आयास विन ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै, मुलक वादण  
 पुरमें मन हरसै, अजिय जिणोसर पर जुवणें ॥ १६ ॥ कीयो क  
 वित्त ए मंगल कारण, विघन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत  
 संसो धरो मनें ॥ १७ ॥ जिम २ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल  
 मुनीसर पाया, जयसागर उवझाय शुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु  
 गुण अजिनंदै, रुद्धि समृद्धै सो चिरनंदै, मनवंडित फल मुऊ हुवो  
 ए ॥ १९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ आयो सहु श्रीसंघ  
 आश धरे, गुरु भोन ग्रह्यां कहो केम सरे ॥ दरशन वहितो सद  
 गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इय विखमी  
 विरियां आयवणी, केहवी करिये तुऊ अरज घणी ॥ हिव अलगा  
 वो तो वेगा आवो, हिव ढील घनीजर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद  
 गुरु खरतर गढ साचो, कोइय न जाणे तुऊने काचो ॥ इण संक  
 टमें आलश म करो, दादा इसमननें दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक  
 पनी सदगुरु हमसुं, तो ज्युं कहसो तिण पर खमसुं ॥ हिवणा हठ

धे मत ताणो, निधे पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया सव  
 श्रीसंघ अठा लगे, पाठा किम जावा इणे पगे ॥ इण पर करिये  
 गुरु अरज इसी, दिव सगला भेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुश  
 ल सूरीसर जग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद ले  
 उजवालो, परघल निज ठोरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुण गाम गमाधे  
 ए गावो, सुणतां सदगुरु वेगो आयो ॥ राजी हुय सगला रंगरली;  
 जिनचंदनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
 सदगुरुजी धे सांजलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सांनिध  
 करो, पूरो मनदं जगीस हो ॥ १ ॥ दोलति दो हो दादाजी संप  
 ति दो ॥ आंकणी ॥ दोलत दो गुरु माहरा, थांहरा विरुद अने  
 क दो ॥ थां समरथां संकट टलै, एहीज दादाजी ताहरी टेक हो  
 ॥ दो० २ ॥ जीती चोसठ जोगणी, वस कियां बावन वीर हो ॥  
 सिंधमांहे तें साधीया, पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥  
 पन्किमणामांहे बीजली, वलीर ज्वकाय हो ॥ धे मंत्री  
 राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उच्चवं क  
 रतां उच्चमें, मूठ मुगलरो पूत हो ॥ जाप करीनें जीवानियो, संघ  
 मांहे राख्यो दादे सूत हो ॥ दो० ५ ॥ वरुनगररे ब्राह्मणें, देहरे  
 धरी मृतगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या बलै, पिशुन लगाया दादे पा  
 य हो ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूरकोया तें सहू डुःस्क  
 हो ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सहुनें दियो दादे सुस्क हो ॥ दो०  
 ७ ॥ अंबरु हाथे अकरै, धे प्रगट्या ततखेव हो ॥ जुगप्रधान जग  
 तूं जयो, आखै अंधिकादेव हो ॥ दो० ॥ ८ ॥ थांजो वज्र विदारनें,  
 पोथी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअकरे, उक्केरीमांदि लीध  
 हो ॥ दो० ॥ ९ ॥ इम विरुद घणा ठे ताहारा, कइतां नाथे पार  
 हो ॥ जगसंजोगे दादो जेठियो, अरुवकियां आधार हो ॥ दो० ॥ १०

॥ १० ॥ हूं हूं सेवक ताहरो, थे आपो धन ऊह हो ॥ कनककीरत  
सुपसानलै, लाजउदय सुख सिद्ध हो ॥ दो० ११ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशणसदा देवो ॥  
दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरथां आपे सुखशाता, दादो

जगबंधव जगगुरु ब्राता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो परचा जगसगले पूरै,  
दादो सेवकनां संकट चूरै, दादो डुरित हरै सहूनी दूरै ॥ दा० ॥ २ ॥

दादो अलगांथी जात्री आवै, दादो देखीने ते सुख पावै, म्हारा  
दादाजीनी जोरु कोइ नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमांहे

राजै, जिहां सुजशनगारा नित वाजै, दादो ठोगालां सेहर वाजै,  
दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूकरु घोली, हाथे लेइ सोवन क

घोली, पूजो दादाजीनें मिलइ टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरति-  
यां आरति टालै, दादो सेवगजनने प्रतिपालै, दादो जिन

सासन नित उजवाळै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत  
सासन नित उजवाळै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत

माहाराजा, दादो राजै खरतर गव राजा, दादो समरथां सफल  
करै काजा ॥ दा० ॥ ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणधारी;

दादो परतिख सुरतरु अवतारी, जाडं दादाजीनी हूं वलिहारी ॥  
दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजै गुणियन ग

हगाटै, जसु थांन सोहे जग थिरघाटै ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महिर  
निजर मुऊ पर करियै, दादा आरति पीसा डुख हरियै, दादा जिम

जग जयकमला वरिये ॥ दा० ॥ १० ॥ दादा सेवाने सानिध कर  
ज्यो, दादा डुस्मणने दूरे हरज्यो, जिनचंदता मनवंठित फलज्यो ॥

दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः गाजै जिनकुशल गमालै,  
दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः गाजै जिनकुशल गमालै,

सेवकनां संकट टाले हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरै,  
सेवकनी चिंता चूरै हो ॥ गा० ॥ २ ॥ उतरीनितरी ठबि ठाजै,

विवमें थिर थुंन विराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ फूलरे यात्री मिल

आवै, दादोजी-दीर्घं सुखः पावे हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ केशर घस  
 चरिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ८ ॥ पूजो  
 पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ९ ॥  
 दादोजी डुखियां सुख देवै, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा०  
 ॥ १० ॥ हय हाथी स्थपति बहुला; गुरु नामे पामे कमलां हो ॥  
 ॥ गा० ॥ ११ ॥ सकजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी  
 हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ अलगांथी रोग गमावै; गुरु पूज्यां वंछित पावै  
 हो ॥ गा० ॥ १३ ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी; तिण  
 बेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ १४ ॥ ग्रह गोचर चोर  
 जंजालै; पीमा हुवै आलेमालै हो ॥ गा० ॥ १५ ॥ बाजै  
 जग जशना बाजा, राजै खरतर गृह राजा हो ॥ गा० ॥ १६ ॥  
 जसु जैतसिरी वर माता, जिब्हा गरमंत्र विख्याता हो ॥  
 गा० ॥ १७ ॥ संवत सतरेसे इक्यासी, कातीपूनम परकांती हो ॥  
 गा० १८ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै, अधिके हर हेत उल्लासे  
 हो ॥ गा० ॥ १९ ॥ इम यात्रा करी आणंदे, जिनंजक्ति जतीतर  
 वंदे हो ॥ गा० ॥ २० ॥ इति पदं ॥ पुनः सदाइ मेरे श्रीजि-  
 नकुशल गुरु ॥ कुशल करण कलिमांहे प्रगटयो; खरतर गृह वरु  
 ॥ स० ॥ वावनोचंदन मृगमद मेली, पूजो प्रेम जरु ॥ स० १ ॥  
 चिंता चूरण विघ्न विमारण, दालिइ दूरदरु ॥ स० २ ॥ दिन  
 साहिब चढते वानें, ध्यावो ग्यानधरु ॥ स० ३ ॥ बाजै जेहना  
 जशना बाजा, ठावी ठामे जरु ॥ स० ४ ॥ संवत अठारसमें  
 अरुसठै, मिगतरमाश थिरु ॥ स० ५ ॥ संघ सहित श्रीसदगुरु जेदे,  
 श्रीजिनदर्प सरु ॥ स० ६ ॥ गाम गफालै चरण नमंता, तूवो  
 कळपतरु ॥ स० ७ ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिनें, उदयरत्न करु ॥  
 स० ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः आयो आयो जी, समरंता दादोजी



ज्ञा, आशा पूरो सुख करणकी ॥ वा० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
 अब मोहि दरसन हीजै, कुशलगुरु अ० ॥ एसी ज्ञात क  
 रो मेरे सदगुरु, ज्युं मन सूढ पतीजै ॥ अ० १ ॥  
 जलदातार विरुद अमृतरस, श्रवण अंजलनर पीजै ॥ सुरतरु  
 शम दरसन विन देख्यां, कहो नयण किम रीजै ॥ कु०  
 ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपांनिधि, इतनी अरज सुणीजै ॥  
 परमज्ञगत जिनराज तुमारो, अपणो कर जाणीजै ॥ कु० ॥ ३ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः कुशलगुरु कुशल करो नरपूर, सेवकजन मन  
 वंछित पूरण, समर्यां होत हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रे  
 मरस पूरण, अशुभ हरण जये दूर ॥ संघ उदोकर सदगुरु मेरा,  
 वीनवै श्री जिनचंद सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल  
 लवरकी ॥ सदगुरु पूजा जावस्यां, म्हेतो कुशल सूरिंद गुण  
 गावस्यां हे माय ॥ स० ॥ श्रीफल जेट चढावस्यां, म्हेतो चरणारी  
 पूजा रचावस्यां हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारुदेशमें सोजता, नगरवी  
 काणे राजे हे माय ॥ गाम गढालै दीपता, ज्यांरी महियल महि  
 मा ठाजे हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समर्यां संकट चूरता, कुशल करण  
 अवतारी हे माय ॥ सुखदायक श्रीसंघनें, खरतर गढ अधिकारी  
 हे माय ॥ सा० ३ ॥ दूर देशांतरथी घणा, हिलमिल यात्री आवे हे  
 माय ॥ लुलश शीत नमावता, संत सुजश मिल गावे हे माय ॥  
 स० ४ ॥ सज्ज लिंगार मनोहरू, ठमर पाय ठमकावे हे माय ॥  
 तन मन प्राण लोनावती, गोरी मंगल गावे हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥  
 चिठ्ठ्या साजन मेलवे, अनमी पाय नमावे हे माय ॥ मनरा मनो  
 रथ पूरवै, परघल लखमी ल्यावे हे माय ॥ स० ६ ॥ विषमी वे  
 ला वाटमें, समर्यां सानिध आवे हे माय ॥ जूखां जोजन मेलवै,  
 तिसियां नीर पितावे हे माय ॥ स० ७ ॥ यात्री आवै नित नवां,

ध्यान आगल थिर थाट हे माय ॥ सीरणीयां नित सामवा, गावै  
 गुण गहगाट हे माय ॥ स० ॥ ७ ॥ कुशलसूरिंद गुरु आगलै,  
 जवि मिल जावना जावे हे माय ॥ चंद फते मुनि नित नमै, पर  
 मानंद सुख पावे हे माय ॥ स० ॥ ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥  
 श्रीसदगुरुजीसैं वीनती रे, आयो सरण तुमारी ॥ दादासाहिब अ  
 रज सुणीज्यो मारी ॥ दीनदयाल विरुद सुण आयो, तन मन सु-  
 घकर ध्यान लगायो ॥ महिर निजर अब कीजाये जी, चरणक  
 मल बलिहारी ॥ दादा० ॥ १ ॥ आधि व्याधि संकट डुख मेटो,  
 सोमवार पूनम दिन जेटो ॥ अन धन लक्ष्मी चोगुणी रे, वधती  
 संपद सारी ॥ दादा० ॥ २ ॥ नर नारी अपगर मिल आवै, अतर  
 गुलाब केवमो व्यावे ॥ पूजै मृगमद पुष्पसे रे, खुल रही केसर  
 क्यारी ॥ दादा० ॥ ३ ॥ कलयुगमें परचा तूं पूरै, चिंता दोखी ड  
 स्मन चूरै ॥ धनश सदगुरु जगजयो रे, सहसं किरण अवतारी ॥  
 दा० ॥ ४ ॥ उगणीसे अठावन वरसै, कातीपूनम दिन जलसै ॥  
 गद्यपति कीर्ति सूरिसरू रे, वदै वार हजारी ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस  
 परस दरशण अब दीजै, अपणो दास मुजै समजीजै ॥ जगमें सु  
 रतरु सारखो रे, कीरति ठारही थारी ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रगटपणें व  
 रयाता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेख्यो ॥ श्रीजिनकुशल  
 सूरिंद धणी रे, कहै रामरुदिसारी ॥ दा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ पुनः ॥ ॥ चाल जरतरीकी ॥ सदगुरु दीनदयाल, गद्यपति  
 दिनकर तुम धणी ॥ सेवकजन प्रतिपाल, डुखतमहारण दिनम  
 णी ॥ १ ॥ गंध सवियाणे जी देश, गजेरु कुल उदयाचले ॥  
 जिह्वासाह पितेश, जैतसिरी अंबर जलै ॥ २ ॥ गद्यपति चंदमु  
 णादि, पाट तिलक किरणावली ॥ खरतर कमल आणंद, तेज प्र  
 काशन मनरली ॥ ३ ॥ पुर पतन सब देश, जगमिग ज्योती जी

दान विशाल लहायजी ॥ स० ६ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ जिनकुश  
लसूरिंद गुरु सदा नमो, जी० ॥ सुख संपत्ति रिद्धि सिद्धि सब  
होजर, देश देशांतर कांश् जमो ॥ जी० १ ॥ वाट घाट अरु  
विखमी विरिया, विघन बुराई दूर गमो ॥ जि० २ ॥ अहनिशि  
नाम मंत्र नर धारो, सुगुरु चरण चित रमो रमो ॥ जि० ३ ॥  
इक मन ध्यावो वंठित पावो, विपत व्यथा सब दमोदमो  
॥ जि० ४ ॥ अन्नय महा सुख संपत्ति पामो, सुधिर आंनक शित  
जमोजमो ॥ जि० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ठत्रपती आरे पाय  
नमें जी, सुरनर सारे सेव ॥ ज्योत आरी जग जागती जी, दुनि  
यांमे परतिख देव ॥ १ ॥ हुंतो मोहि रह्यो जी, ह्यारा राज दादरे  
दरवार ॥ केसर अंबर केवमो जी कस्तूरी कपूर ॥ चंपो चंदन राय  
चंपेदी, जक्ति करूं जरपूर ॥ हुं० १ ॥ पांगूलियांने पांख समावै,  
आंधलियांने आंख ॥ रूपहीणाने रूप देवे दादा, पांखहीणाने पांख  
॥ हुं० २ ॥ चंद पाटोधर साहिबा जी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥  
आठ पहर आंने नंदगे जी, रंग बणे राजिंद ॥ हुं० ४ ॥ इति पदं ॥  
पुनः सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी, स० ॥ पहली काम क्रिये  
बहुतेरे, अपणा विरुद विचारी ॥ पल २ चूक परी सदगुरुजी, में  
मुतलबका गरजी ॥ स० १ ॥ ध्यान तुमारो कबहुं न ध्यायो,  
पूजा करी नही तेरी ॥ तोही सेवक वंठित पूर्या, आही आंरी  
मरजी ॥ स० २ ॥ निश्चसेती तुमगुण गावै, तुरत कटत डख  
वेनी ॥ जक्त उधार कहावत जगमें, ताहे करत हुं अरजी ॥  
स० ३ ॥ और देवकूं में नही ध्यावं, शरण अही में तेरी, दूरयको  
में जेटण आयो, विपतदशा सब तरजी ॥ स० ४ ॥ कुशल गुरुका  
में हुं सेवक, लोक जाणे सबकोई ॥ हमारतकी वीनती  
सुयाके, दरशण दियो सदगुरुजी ॥ स० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ होरीकी चाल ॥ सदगुरुके चरण चित  
 लाय ॥ जिनदत्त सुरिंद गुरु करो रे पसाय ॥ सद० ॥ वा-  
 वन वीर अने बलि चौसठ, जोगण वस कीनी हर्ष लाय ॥ विद्या  
 पुस्तक सोवन अकर, आंजो वज्र विमार प्राय ॥ सद० १ ॥  
 मुलतानमें पंच पीर महाबल, पंचनदी साथी चित लाय ॥  
 इत्यादिक बहु परचा पूरक, गुरु समरथा सब डख जाय ॥ त० २ ॥  
 गुरुके नामसे अरुसिद्ध नवनिद्ध, गुरुगुण गावो सबही धाय ॥  
 श्रीजिनसौजाग्य सूरि सुगुरु पर, महिर करो गुरु सुखदाय  
 ॥ सद० ॥ ३ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ होरी खेलो जविक सदगुरुके  
 संग, नित आनंद उद्यव होत रंग ॥ हो० ॥ मस्त महीना फागुण  
 आया, श्रीसंघसे हिलमिलके संग ॥ हो० ॥ कोयल सबद करत  
 स्वर जीणा, अली कलीके संग जंग ॥ हो० ॥ १ ॥ रूत वसंत  
 आनंद पिया संग, गोरी गावत वजत चंग ॥ हो० ॥ एसे साज  
 समाज जक्तिसें, गुण गुलाल लिये गुरुके अजंग ॥ हो० ॥ २ ॥  
 निरमल मन मकरंद सुधाकर, अतर पुष्पसे चरचो अंग ॥ हो० ॥  
 ध्यान पिचकारी अजब सुधारी, गिरको महकत सुरजिगंग  
 ॥ हो० ॥ ३ ॥ करत धैन दरसणसे नैण, रामरुहीसार के चित  
 उमंग ॥ हो० ४ इति पद ॥ पुनः ॥ नेमस्थामसे कहियो मेरी ॥  
 इस चालमें ॥ गुरु पूज रचो रे सुजानी, जली हिये जक्ति जराणी  
 ॥ गु० ॥ श्रीजिनकुसल सूरिसर साहिब, खरतरगठरा जानी ॥  
 देशदेशमें आनक गुरुका, सोजा जग पहिचानी, सदा रवि तेज  
 समानी ॥ गु० ॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद जेली, चरणारी पूज  
 रचानी ॥ धूप दीप बलि आगल ढोवी, बहु विध पुष्प चढानी,  
 जला फल जेट धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ वाट घाटमें परचा पूरक,  
 हाजर होत सहानी ॥ श्रीजिनसौजाग्य सूरिके साहिब, बंठत

काज करानी, सदा गुरु महिर लखानी ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ होरी ॥ सदगुरुजीके द्वार मची होरी ॥ स० ॥ आये  
 श्रीसंघ सब हिलमिलके, संग लिये वालाजोरी ॥ स० ॥ दीनद  
 यालकेसनमुख ठामै, पठत मधुरधुन गुण गोरी ॥ स० ॥ १ ॥ केशर  
 घोली जरी रे कचोली, पूजत हे वारीजोरी ॥ स० ॥ रंग गुलाब  
 मच्यो सदगुरुके, अबीर उमावत जरजोरी ॥ स० ॥ २ ॥ धनश्  
 ज्ञाग्य हमारे प्रगटे, सदगुरुनें पकनी मोरी ॥ स० ॥ अती मनरं  
 जण दुसमन गंजन, बलिहारी चरणा तोरी ॥ स० ॥ ३ ॥ कामि  
 तदाता जगके आता, अरजी हय सुनले मोरी ॥ स० ॥ कइत  
 रामरुद्धिसार सुपाठक, वंदत हे डुय करजोरी ॥ स० ॥ ४ ॥  
 इति पदं ॥ राग प्रजाती ॥ केसे२ अवतरमें गुरु रस्की लाज  
 हमारी ॥ के० ॥ मोकूं सबल जरोसा तेरा, चंद सूर  
 पठधारी ॥ के० १ ॥ तुम विन अवर न कोई मेरे, या  
 जगमें हितकारी ॥ मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी  
 ॥ के० २ ॥ आगे तो केई बेर हमारी, चिंता दूर निवारी ॥  
 अबकी विरिया जूल मत जावो, सदगुरु परउपगारी ॥ के० ३ ॥  
 अबके आप लाज गुजरकी, रखिये गुरु जशधारी ॥ मेरे कुशल  
 सूरिंद गुरु तेरा, वना जरोसा जारी ॥ के० ४ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ श्रीजिनकुशल सूरिंतर साहिव, तुम हो परउपगारी ॥ श्री० ॥  
 खरतर गठ नायक गुणलायक, जिनचंद सूरि पठधारी ॥ श्री०  
 १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण, ज्रीरुजंजण अति जारी ॥  
 नाम तुमारो कुशल करण जग, वारीजांन वार हजारि ॥ श्री० २ ॥  
 जगवञ्जल तुमही हो जगतगुरु, करुणानिध करतारी ॥ कहे जिन  
 चंद मेरे हो सदगुरु, हम हैं सरण तिहारी ॥ श्री० ३ ॥ इति  
 पदं ॥ पुः ॥ श्रीगणेश्वर गुरु कुशल सूरिंदके, चरणकमल पर

चारी ॥ श्री० ॥ केशर चंदन अक्षत कुंकुम, जलज्वर कंचनजारी ॥  
 देवके आगे मंगलदीपक, फूल धरूं फूलवारी ॥ श्री० १ ॥ एशी  
 ज्ञांति करूं विध पूजा, आशके चित्त इकतारी ॥ राज कहत मेरे  
 परमगुरुकी, वेर वलिदारी ॥ श्री० २ ॥ इति पदं ॥ राग रेखता ॥  
 कुशलगुरु देखके दरशाण, मेरा दिख होत हे परशान ॥  
 जगतमें या शमो कोई, न देख्या नयण ज्वर जोई ॥  
 १ ॥ विरुद जूमंरुले गाजै, फरशातां पाप सब जाजै ॥  
 पूजतां संपदा पावै, अर्चिती लज्ज घर आवै ॥ २ ॥ इके मुख  
 गुण कहूं केता, मुझे हिये ग्यान नही एता ॥ लालचंदकी अरज  
 सुण जाजै, चरणकी सेव मोहि दीजे ॥ ३ ॥ इति पदं ॥  
 राम कहरवो ॥ कुशलगुरु दरशाण दीजै हो ॥ कु० ॥ खरतर  
 गठपति कुशल सुरिंद गुरु, मुज पर महरि धरीजे हो ॥ कु० १ ॥  
 पतित नधारण विरुद तुहारो, इतनी अरज सुणीजै हो ॥ कु० २ ॥  
 आधि व्याधी अरु दोखी इतमन, ए सब दूर हरीजै हो ॥ कु० ३ ॥  
 खेमरतन सेवगकूं निशदिन, सदगुरु सानिध कीजै हो ॥ कु० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ पूजो जजो रे जाई, गुरु महिमा  
 ज्योत सवाई ॥ पू० ॥ १ ॥ मृगमद केशर चंदन अरचो, सुंदर  
 पुष्प चढाई ॥ पू० ॥ २ ॥ जविक जीव मिल गुरुगुण गावै, वाके  
 सदगुरु होत सहाई ॥ ३ ॥ श्रीजिनसौजाग्य सूरि सुगुरु मेरे, नि  
 शदिन हर्ष बधाई ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हूंतो  
 अरज करूं करजोमने जी, म्हारी अरज सुणो गुरुराय ॥ सदगुरु ॥  
 विरुद घणा बै राजरा जी काई, सूरि सकल सिरताज ॥ स० ॥  
 सुनिजर जोयजो साहिबा ॥ १ ॥ आरे रावल राणा राजवी जी,  
 थारा पूनम पूजै पाय ॥ सु० ॥ केशर अगर नैं कुमकुमा जी,  
 काई मृगमद रही महकाय ॥ स० सु० २ ॥ आरे घुमलां रे आगल

धूमरा जी, कांइ हूलत चमर गजदाल ॥ स० ॥ कारण सेवे काम  
 नी जी, कांइ निरख करै जी निहाल ॥ स० सु० ३ ॥ थारी गवी  
 गोमे थापना जी, कांइ उदयापूर आवेर ॥ स० महिमा जली  
 गुरु मेमते जी, कांइ सालूमेवाली सांगानेर ॥ स० सु० ४ ॥ थारी  
 ज्योति घणी गुरु जिगमिगे जी, कांइ वधती गढ वीकाण ॥ स० ॥  
 आसा पूरण आवजो जी, थेलो देरावररा दीवाण ॥ स० ५ ॥  
 म्हारी वीनतनी जलै मानज्यो जी, कांइ दादाजी दीनदयाल ॥  
 स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, कांइ पाटोधर प्रतिपाल ॥ स०  
 सु० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सांगानेर विराजै, गुरु परतिख  
 तिहां राजै रे ॥ म्हारा सदगुरुजीनी वलिहारी ॥ मनवंठित पूरो  
 म्हारा, म्हेतो चरण पखावां थारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन जरिय  
 कचोली, मांहे वलि मृगमड घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सदगुरु  
 पाया, पूज्यां सब पाप पुलायारे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमने सोमवारा,  
 थारे जात्री आवै अपारा रे ॥ म्हा० ॥ सुख खन पूजा कीजै, डुख  
 दोहग दूर हरीजे रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलियुगमां  
 हे तारी, कीरत चिहुं दिशिमांहे सारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सभ अ  
 वर न कोई, दीगो में परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूमेवा  
 ली सांगानेरे, जिहां राज करै नितमेवरे ॥ म्हा० ॥ श्रीसंघ मिल  
 तिहां आवै, जिहां लूशियां गेठ रचावे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यान  
 सार गुरुराजा, ज्यांरा वाजै सदाइना वाजारे ॥ म्हा० ॥ कमानंद-  
 न गुण गावै, करजोनी शीस नमावै रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दादाजीकी लावणी संग्रह ॥

सदगुरुजी म्हारा, दरशण दीज्यो जी गठपति साहिबा ॥

॥ स० ॥ कुशल सूरि वंठितके दाता, देवो बुद्धि दिखयाता ॥ सद

गुरु महर करीज्यो मूऊपर, ज्युं निंजनकं माता हो ॥ स० ॥ १ ॥

खरतर राजचंद्र पटधारी, सेवकजन आधार ॥ विषमवाटमें तं  
 कट काटै, संय सकल सुखकार हो ॥ स० ॥ २ ॥ जगमांहे परचा  
 अधिकारि, जाये सब संसार ॥ जरदरियांमे ज्याज उगारी, जिन हु  
 स्की बलिहार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणांबुज दरशणतेती, पा  
 पतिमर दृष्ट जाय ॥ गुरु परमात्म सुगुण शोभागी, गुरुगुण कैम  
 कहाय हो ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनेणी नेत्र ठणकाती, लिये अदो  
 षडु लार ॥ नृत्य जक्ति गुरु अत्र विचक्षण, मृड समीर ऊखकार  
 हो ॥ स० ॥ ५ ॥ मदमस्ती हस्ती वर राजत, श्रीसद्गुरु दरश  
 र ॥ इंद नरिंद नमे पदपंकज, हरखित चित्त उदार हो ॥ स० ॥  
 ॥ ६ ॥ रुद्र सिद्धके आगर सद्गुरु, जो ध्यावे सो पावे ॥ जांती  
 आवै जात्र करणकू, केशर रंग मचावै हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पेम पीन  
 अर्चने सद्गुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाद्यनि नाद तूर पुन ऊ  
 लार, करै सुविध सुविचार हो ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्नि वर संवत्  
 सुखकर, नंद चंद्र शशि वार ॥ स्तैप माश प्रतिपत् दिन जेव्या,  
 शुक्ल पक्ष शुक्ल वार हो ॥ स० ॥ ९ ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोवै,  
 तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद्र जिम हंस सूरीसर, खरतर इंद्र  
 वार हो स० ॥ १० ॥ सद्गुरु धर्मशील परजावै, कुशल दोन दिन  
 साय ॥ रुद्रिसारपें महिर करीनें, अविचल लील वंताय हो ॥ स०  
 ॥ ११ ॥ इति ॥ पुनः ॥ मोरी सखी सदेख्यां सुख  
 चालोनी गुरु वंदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद्र पाट अधिकारी, श्री  
 नकुशल सूरिंद ॥ परचा जगमें निरमलासरे, दीपत पूनमचंद्र  
 ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगञ्जना राजवीसरे, सेवकजन प्रतिपाद  
 इष्ट कष्ट जय दूर करीनें, देवो सुख विशाल हे ॥ मो० ॥ २ ॥  
 पूनमश् जक्ति धरीनें, आवै संघ अपार ॥ केशर चंद्रन सुगुण  
 धोली, पूजै विविध प्रकार हे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सद्गुरु



सरे, सऊ शौले सिणगार ॥ नाटक करती बहु गुणवंती, पग नेत्र  
 ऊणकार हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशथी संघ चतुर्विध, आवै चित्त  
 उलशाय ॥ श्रीसदगुरुना दरशणसेती, आनंद अंग न माय हे ॥  
 मो० ॥ ५ ॥ रसना एके किम कहवाये, गुरुगुण अधिक अपार ॥  
 बलिहारी गुरुनामनीसरे, शरीजाउं वार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥  
 संवत जगण वत्तीसे कार्तिक, पूनम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गाम  
 गमाळामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगठ  
 सुखकर सोजागी, कीरत जग विस्तार ॥ गुण आगर दीपत शशि  
 अजिनव, हंससूरि गणधार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील चरणांबुज  
 सेवक, कुशल सदा सुखकार ॥ रुस्तार गुरु गुणगण ऊपर, नित  
 प्रति हुं बलिहार हे ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥  
 कामित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥ मनसुध साह  
 अकवर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर  
 मंमल सम सूरि, दीपत वदन ठवी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंमल  
 मांहे महिमा जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमा  
 णिक्य सूरि पाट उदयगिरि, श्रीजिनचंड रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पे  
 खतही हरखित जयो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥ ५ ॥  
 इति पदं ॥ ॥ चाल पणहारीकी ॥ श्रीसौजाग्य सूरिसरु,  
 गुरु गठपति हो, खरतर गठ सुखकार ॥ साहिवजी ॥ कोठारी  
 कुल दीपता, गुरु गठपति हो, तात करमचंद सार ॥ सा० ॥ १ ॥  
 करुणादेवी कूखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ संवत  
 अठारे बासठै, गु० जन्म समय वर धार ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारेसे  
 सीतोत्तरे, गु० पंच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरस अठारे वाणमें,  
 गु० पद प्रजाकर जाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षांत्यादिक गुण सोजता,  
 गु० करता जग उपगार ॥ सा० ॥ परचा जगमें नवनवा, गु० क-

हता नावै पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष पटोधरू, गु० दीपत  
 गुणमणी खाण ॥ सा० ॥ जगणीस सतरे समं, गु० पायो द्ववि  
 मान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद वन्दि निधि. अनुपती, गु० माघमाश  
 सुखदाय ॥ सा० ॥ स्वत पकू तूर्या तिथि, गु० प्रेम घण हरखाय  
 ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहंस सूरिसरू, गु० वंदे वारवार ॥ सा० ॥  
 कुशल कला नित नेहसे, गु० प्रणमं इम रुद्रसार ॥ सा० ॥ ७ ॥  
 इति सौत्राग्र्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी दिये ठे देशना रे, त्रिजुवन जन हितकारज ॥ पर  
 खद बारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रजु  
 मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ ज्य मधु-  
 र तो ज्ञावशी रे, पान करै आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अज  
 रपणं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पसाय ॥ प्रजु वचनामृत पान  
 थी रे, अजर अमर पद थाय ॥ वी० ॥ ३ ॥ मधुरपणं मनमोहनी  
 रे, अनुपम वाणि उदार ॥ सांजले ज्य लहे सही रे, जिन पर  
 ज्ञाव विचार ॥ वी० ४ ॥ जिहां पट द्रव्य विचारणारे, नय निकेप  
 अज्ञंग ॥ चोविह धर्मपरूपणा रे, सतजंगी अति चंग ॥ वी० ५ ॥  
 शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलधरनी पर  
 वरसतारे, ज्वि चातिक हितकार ॥ वी० ६ ॥ श्रीजिनलाज पसा  
 यशी रे, जिन आतम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश  
 जणें कढयाण ॥ वी० ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुणनिधि  
 श्रीजिनचंद्र मुण्डा, मुख सोहे पुनमचंदा ॥ मोह्या सत्र सुरनर  
 वृंदा, सुगुरु म्हारा देशना दिव दीजे ॥ थारी देशना सुण मन  
 रीजे ॥ सु० ॥ १ ॥ दिनकर परकाश सवायो, जमदल ऊपर  
 गयो ॥ कमलादि सकल मन ज्ञायो, सु० ॥ २ ॥ वेलाजल देव-

गंधार, वलि नैरव राग मजार ॥ गायन गावै सुखकार, सु० ॥३॥  
 पंच सबद गहिर ध्वनि गाजै, जिनवर घर जालर वाजै ॥ सह  
 लज्ज थया धर्म काजै, सु० ॥ ४ ॥ हिव वहिदा पाट धधारो,  
 श्रीसंघना कारज सारो ॥ मधुरै स्वर वचन उच्चारो, सु० ॥ ५ ॥  
 सुण विनंती वचनविशेष, गुरु आपै धर्म उपदेश ॥ टालो ज्ञाव  
 कोज कलेश, सु० ॥ ६ ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी, उपदेश सुणो  
 ज्ञविप्राणी ॥ सुणतां मन अतहि सुहाणी, सु० ॥ ७ ॥ गुरु प्रत  
 पो ज्युं शशि सूर, दिनप्रति वधते नूर ॥ हरो संघ सकल दुख  
 हूर, सु० ८ ॥ गौरी मिल मंगल गावै, जर मोतियां आल वधावै ॥  
 दावण्यकमल सुख पावै, सु० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वधावो ॥

मृगापूत्र गोखे रतन जमाव हो ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनचंद  
 दूरीसरु, सुगुण म्हारा श्रीखरतर गहाराय हो ॥ श्रीजिनलाज पा  
 दोषरु, सुगुरु म्हारा दिन २ साजे सवाय हो ॥ म्हारा सहिज सो  
 ज्ञाधी, म्हारा शुज गुण रागी, म्हारा हितधरु ॥ १ ॥ सुगुरु म्हारा  
 देशना द्यो मनरंग हो ॥ संघ सह उठक अयो, सु० सुणवा अमृ-  
 तवास हो ॥ वहिला वंठित पूर हो ॥ सु० अ ठो अवसर जाण  
 हो ॥ म्हा० २ ॥ सूर किरण धर संचरया, सु० विकस्या कमल  
 कलाप हो ॥ राग विज्ञास प्रमुखतणा, सु० होय रया आलाप  
 हो ॥ म्हा० ३ ॥ पंचसबद जालरतणा, सु० मंगल नाद उच्चार  
 हो ॥ इम बहु विध जूमंरुलै, सु० वरत्या जयशकार हो ॥ म्हा०  
 ४ ॥ संघ सकल जगते करी, सु० जोवै आंरी वाट हो ॥ नचि  
 धररो गठपती, सु० द्यो दरिशाण गहगाट हो ॥ म्हा० ५ ॥ तिण  
 अवसर सिधासणें, सु० पावधारै उलसंत हो ॥ जलधर ज्युं गहैरै  
 ररु, सु० वांचै सूत्र सिधांत हो ॥ म्हा० ६ ॥ बहु जविषण प्रति-

ब्रूजै, सु० वयण सुधारत योग हो ॥ उत्तम धरम प्रकाशता, सु०  
 टालै जवडख जोग हो ॥ म्हा० ७ ॥ तेज तरणी जिम दितमणी,  
 सु० गुण उतीस निवास हो ॥ मोहन मुद्रा तुमतणी, सु० निर  
 ख्यां मन उच्चास हो ॥ म्हा० ८ ॥ थे चिरजीवो गठपती, सु०  
 राज करो इक आण हो, इम बोलै मुनि सुध सदा, सु० वाणी  
 क्कमाकट्याण हो ॥ म्हा० ९ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यात्रा  
 निनाणूं करियै ॥ ए चाल ॥ एहवा सदगुरु वांदियै, जविकजनं  
 ॥ एहवा ० ॥ आप तरै उरनकूं तरै, शरण तिहारी गहियै ॥  
 ज० १ ॥ जिम सारथपति साथीजनकूं, वंठित देशें बहियै ॥  
 ज० २ ॥ तिम सदगुरु अमृतउपदेशें, लहै जविक सुख कहियै ॥ ज०  
 ३ ॥ गोप समा गुरु गुण नित धारे, राखै गोजन महियै ॥ ज० ४ ॥  
 वलि निर्यामक उपमा धारै, जिम नाधिक नौ तरियै ॥ ज० ५ ॥  
 एक असंजम दोय विधि बंधन, त्रिविध दंभ परिहरियै ॥ ज० ६ ॥  
 चार कपाय निवारक तारक, पंच महाव्रत धरियै ॥ ज० ७ ॥ पट्ट  
 काय रक्क महाजय जीपक, अशरण शरण कहीजियै ॥ ज० ८ ॥  
 एहवा सदगुरुनी बलिहारी, शरण ग्रही निशतरियै ॥ ज० ९ ॥  
 गोतमस्वामि समा मुनि उत्तम, सर्व जीव शम धरियै ॥ ज० १० ॥  
 रिदयकमल नितप्रति राखोजै, आनंद शिवपद लहिय ॥ ज०  
 ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः जवि तुह्य वंदो रे शीतल जिनपती रे ॥  
 ए चाल ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थकर रे, वरधमान जिनरा  
 ज ॥ दरशण जेहनो रे दरपण ज्युं दिप रे, शोजत तेज समाज ॥  
 जविकजन वंदो रे जावै गठपती रे ॥ १ ॥ तसु पट राजे रे सुध-  
 रम गणधर रे, ज्ञाता द्वादश अंग ॥ जंबूस्वामी रे शिष्य सोदा  
 मणो रे, चवद पूरधर चंग ॥ ज० २ ॥ प्रजव सज्यंजव जगम  
 परगना रे, श्रीशोजन मुनिंद ॥ श्रीतंजुतविजय. जच्च हुजी रे,

श्रीधूलज्जड दिण्ड ॥ ज० ३ ॥ एम अनुक्रम दश पूरवधरू रे, हुवर  
 वयर मुणीश ॥ श्रीजिनमत दीपायो जूनले रे, सुरनर नामत शिस ॥  
 ज० ४ ॥ तास परंपर चंद्रकुवे जला रे, श्रीकोटिक गणधार ॥ श्री  
 उद्योतन सूरि सोहामणा रे, वयगी साख मऊर ॥ ज० ५ ॥ वरधमान  
 परमुख शिष्य जेहनारे, चार अशी परिमाण ॥ गड चोराशी प्रगट्या  
 तिहायकी रे, जाणे चतुरसुजाण ॥ ज० ६ ॥ तास शीस जिने  
 श्वर सूरिजी रे, दुर्लजराय समक ॥ खरतर विरुद लह्यो ते रूवमो  
 रे, गडपति जीत प्रत्यक ॥ ज० ७ ॥ नव अंग वृत्तिकारक दीपता  
 रे, श्रीअजयदेव सूरिराय ॥ श्रीजिनवद्वज्ज जिनदत्त गडपती रे,  
 श्रीजिनकुशल अमाय ॥ ज० ८ ॥ परम प्रज्ञावक इण गडमें थ  
 या रे, आचारज गुणवंत ॥ शु० सामाचारी जग तेहनी रे, सुणि  
 हरखंत होय संत ॥ ज० ९ ॥ शु० परंपरमां यया अनुक्रमे रे, श्री  
 जिनलाज्ज सूरिश ॥ तास पटोथर जगमां परगमा रे, श्रीजिनचंद्र  
 मुणीश ॥ ज० १० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणी रे, सौम्यपणे  
 द्विजपति ॥ गंजरीगुण सागरनें जीतियो रे, सुर सेवे दिन रत्ति ॥  
 ज० ११ ॥ स्याद्वाद जिनधर्म वखाणता रे, नय निक्षेप विचार ॥  
 ज० १२ ॥ पदारथ अति विस्तारसें रे, जाखे जवि हितकार ॥ ज० १३ ॥  
 ॥ ग्यान पूरव क्रिया साधे ज्ञानी रे, जिनवाणी अनुसार ॥ एहने  
 सेवो रे क्युं जूला जमो रे, थाय सफल अवतार ॥ ज० १४ ॥  
 सुरतरु ठंढी वांवल आदर रे, काइ नर मूढ गिमार ॥ ए मुखानो  
 साचो मत करो रे, लहि एहवो गणधार ॥ ज० १५ ॥ नाम धार-  
 क आचारज ठै थणा रे, पंचम काल मऊर ॥ पिण इण सरिखो  
 जगमां को नही रे, स्व पर तारणहार ॥ ज० १६ ॥ वाचक लाव  
 एयकमल पसायथी रे, कमलसुंदरनी वाणि ॥ जे मानसी ते सुख  
 पामस रे, पातिकनी करि हाण ॥ ज० १७ ॥ इति वधावा ॥

पुनः ॥ श्रावण पावस ऋतस्थो ॥ ए चाल ॥ मोतियने मेह  
 वरसीयो, सखि आज हुँ आणंद ॥ पूज पधारथा विहरता, नामे  
 सौजाग्यसूरिंद रे ॥ जिनहर्ष सूरिंदनो नंद रे, सदगुरु सुरतरुनो  
 कंद रे ॥ मुख सोहे पूनमचंद रे, सखी मोती ॥ १ ॥ क्रांतिगुणे  
 करी शोभता, सखि पंच महाव्रतधार ॥ वर छतीस गुणे सदा,  
 विचरे जे निरतीचार रे ॥ रसियां जे पर उपगार रे, उपशमरशना  
 जंभार रे ॥ पाले पंचाचार रे, सखी ० २ ॥ मेघतणी पर गांजता,  
 सखि मीठी जेहनी वाण ॥ आप तरे पर तारता, गुण रतनारी  
 खाण रे ॥ सहु आगमना जे जाण रे, प्रतपे जिम जलदल जाण  
 रे ॥ जेहनों अतिशय विज्ञाण रे, सखि ० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु  
 सारिखा, सखि इण पंचम काल ॥ साथै जेहने शोभता, मुनिवर  
 जिम मोतीमाल रे ॥ कोइ थिवर ने कोइ बाल रे, वंदीजे तेह त्रि  
 काल रे, सखि ० ४ ॥ सूरि सकल सिर सेंदरो, सखि खरतर गह  
 सिणगार ॥ जैनधरम दीपावता, महिमा जेहनी अणपार रे ॥ स  
 हु संघतणा सिरदार रे, सखि सुमहितणा जंभार रे ॥ जेहने प्र  
 क्षमे नरनार रे, सखि ० ॥ ५ ॥ सूत्र अरथ विसतारता, सखि दे  
 ता धर्मोपदेश ॥ दान शीयल तप जावना, वारे जावन सुविशेष  
 रे ॥ द्रव्यादिक अर्थ निशेष रे, गुण अरु पर्याय प्रदेश रे ॥ सखि ०  
 ॥ ६ ॥ सुणतां अजिनराजना, सखि अमृतवचन विलाश ॥ कृण  
 मे कर्म समूहनो, सखि निश्चै होवे नाश रे ॥ आय निज ज्ञान प्र  
 काश रे ॥ कहे बाल सुगुरु सहवास रे, करतां निज रूप सुजाप  
 रे ॥ सखि ० ७ ॥ इति वधावो ॥

॥ अथ गुंडली लिख्यते ॥

॥ नणंदल विदली दे ॥ ए चाल ॥ जिनशासन जयकारी,  
 जगगुरु गोतम गणधारी रे ॥ सहियां गुंडली करो ॥ गुंडली करो

## ॥ अथ श्रीखरतर वृहद्गर्भकी सिद्धांत शुद्ध सामाचारी लिख्यते ॥

जो एकमतिथि १ कम होय तो प्रतिपदाका पञ्चस्काण व्रत पहली अष्टावास्या ३० तिथिओं परे, ८ अष्टमी कम होय तो अष्टमीका व्रत सप्तमीओं परे, ९ जो चउदस कम होय तो १४ का उपवास अमावस या पूनमजो परे, इसका कारण यह हे की यह दोनों तिथि परावर पर्य हे, चौदश पर्यदिक हें तेसरे अमावस पूनम ज्ञी चिरंतन पहलीका दिन हे, यह दोनों दिन धर्मकृत्य करेके हें, कारण उत्तरपारणे धर्मका उद्योत करे ॥ इस वखत जैनी पंचांगकी प्रवर्ति नही, अन्य धर्मियोंके पंचांग परसे तिथियां गिणनेमें आती हे, जैन पंचांगमें संवत्सरी आदिक पर्वोंका क्रय वृद्धि नहि होता, जंबूद्वीपपन्नतीमें पांच संवत्सर कहे हें, उसमें स आजि कर्द्धन संवत्सर सिध्यात्विकोने प्रचलित कर रक्का हे, लेकि नू लूर्यरुबत्तर तीजसे सवापसठ दिनका होता हे, इस वास्ते जै नागमसे यह पत्रा यथार्थ नही एकांत नयवाद हेतुसे, इस वास्ते जो चौदश कृष्ण हो तो उपवास तथा परकी प्रतिक्रमण निस्संदेह पूनम तथा अमावसके दिन करे, लेकिन् तेरस तथा चौदस कृष्ण तिथिके वितत्येको न करे, ७ जो बेला करे तोहरीगोमेतो दोनों दिन त्यागपक्रमें ग्राह्य हे ॥ अब कोइ वखत संवत्सरीकी चोथ कम हो तो पांचमके दिन संवत्सरी प्रतिक्रमण करे, लेकिन् तीजके दिन कदापि काले ज्ञी नहि करे, ७ जो चोथ दो होय तो पहली चोथकी संवत्सरी करे, ओर कोइ ज्ञी तिथि दो होयतो पहली तिथि माननीय हे, दूसरी लोमतिथि हे, दुसरा यह प्रमाण हे, साठ घनीकी तिथि गोरुके दुसरी घनी अथघनीकी तिथि मानणा

बुद्धिमानोका काम नहीं, इस पर कोई ऐसा कहे की अपने तो  
 उदयतिथि मान्य है, सूर्य उदय होय जहाँ तक कोई जी तिथि  
 होयतो उस दिन वोहा तिथि मानते है, इस हास्ते जो दुसरी  
 तिथि अथघनी उदयके वखत होय ता माननेमें क्या दोष है?  
 इस प्रश्नका उत्तर—हे ज्ञव्य, जो पहले दिन तिज मानी है, उर ती  
 जके दिन चौथ बहुत घनी जुगतेगा, लेकिन वह तिथि तीजही  
 मानीजेगा, इसी तरे चौथके दिन सूर्य उदयकी वखत घनी अ  
 थघनी चाय होणेंसं चौथ मानीजेगा, लेकिन जो तिथी दो होगी  
 उसमें पहली तिथि सूर्य उदय उर अस्त दोनोंमें रहेगी, तबतो  
 एसी संशुण तिथिकों ठामके दुसरी थोनीसी तिथिकूं व्रत करणा  
 लाजम नहीं. कार्तिक मास बढ तो पहले कार्तिक चोमासो करे.  
 फाल्गुण तो बढताही नहीं, अगर बढतो दुसरे फाल्गुणमें चोमा  
 सा करे. असाढ दो होयतो दुसरे असाढमें चोमासा करे. असाढ  
 चोमासेकी चौदससँ पच्चास गुणपच्चासमे दिन चाथकूं संवत्सरी  
 करे, चाथ कम होयतो पाँचमके दिन संवत्सरी करे, श्रावण जा  
 दवा आसोज बढतो पंचमासी चोमासा करे. श्रावणमास दो हो  
 यतो दुसरे सावण सुद ४ कूं संवत्सरी करे, चोमासेकी चौदससे  
 पच्चास दिन लांघके संवत्सरी पर्व कदापिकाले न करे, यह श्रीक  
 ळसूत्रजीके पहिली समाचारीमें पाठ है, उर जो दो महीना  
 होय उसमें पहिले महीनेका वदिपह दुसरे बढे महीनाका शुक्ल  
 पक्ष एसँ कल्याणकतिथिका व्रत एक महीनेमें करणा, पहिलेका  
 सुदपह दुसरेका वदिपह एवं ३० दिन लंरु जानना, इन ३०  
 दिनोंमें कल्याणकतिथिका व्रत पञ्चस्काण नहि करे, यह तिथियो  
 का प्रमाण श्रीहरिज्ञसूरजी कृत तत्त्वतरंगणी ग्रंथमें प्रसिद्ध है,  
 सो किंचित्प्रमाण गाथा लिखे है ॥ तिहिपदमेपुबतिही, कयबा



जुत्तधम्मकज्जेय ॥ चान्हसीविलोवो, पुत्तमियपस्सिपस्सिकम्मणं ॥ १ ॥  
 तन्नेवपोसहविही, कायव्वासव्वगेहिसुद्धहेज ॥ नहुतेरसीइकीरुई, ज  
 म्हानाणाइणोदोसा ॥ २ ॥ सूरुोदयपस्सियायावी, तेरसीहुंतिनप  
 स्सिकयंकुजा, चउम्मासियकरणे, एसविहीदेस्सिज्जसमणा ॥ ३ ॥ ति  
 हिवुद्धीएपुव्वा, गहियापस्सिपुत्तज्जोगसंयुत्ता, इयराविष्माणणिज्जा, परं  
 थोवत्तितत्तुत्ता ॥ ४ ॥ ( तेसेइ ज्योतिष्करं पयन्नेमें ज्ञी एसाही  
 लिखा हे ) ॥ बहिसहियानअठमी, तेरसिसहियानपस्सियाहोई ॥ प  
 स्सिवेसहियानकयावि, इइज्जणियावीयरगेण ॥ १ ॥ अठमिदिनंमि  
 थार्यं, कायव्वाअठमीयपाएण ॥ कइयाविसत्तमंमि, नवमीठवीनका  
 यव्वा ॥ २ ॥ पनरसस्मियदिवसे, कायवंपस्सिकयंतुपाएण ॥ चान्हसे  
 विकइया, नहुतेरसिसोलसमेकहवि ॥ ३ ॥ तथा श्रावक साम्नायक करे  
 तब पहली साम्नायकदंरुक ३ वीर उच्चरके पीठे इरियावही पस्सिकमें,  
 क्योकी आत्मारथी आचार्य श्रीज्जद्रबाहूस्वामी, श्रीहरिज्जद्रसूरजी,  
 तथा श्राद्धविधिके कर्ता तपागढी श्रीरत्नशेखरसूरजी, तथा कमला  
 गढी नद्यपद प्रकरण कर्ता श्री सूरिः प्रमुख आचार्योंके बनाये  
 ग्रंथोंमें पहले करेसिज्जते सा० कहके फेर इरियावहीका पाठ हे ॥  
 तथा श्रीमहावीरस्वामीके ठव कड्याणक मान्य हे, इस वातका  
 कडपसूत्रादिक अनेक ग्रंथोंमें पाठ हे; खरतरगह, तपगह के आचा  
 र्योंने ग्रंथोंमें प्रगटपणे वर्णन किया हे, जो आश्चर्यकारी संबंध जा  
 एके ठवा कड्याणक न मानते हे उनोको सिंगवरकी तरे मद्धि  
 नाथस्वामीको ज्ञी स्त्रीपणें माणना नहि चाहिये, क्युंकी वो ज्ञी  
 आश्चर्यकारी संबंध समानत्वही हे, उसरा अपणे मनकडिपतपणेंसे  
 न माणनेसे अपणेही पूर्वाचार्य गुरुवोकी आज्ञा लोपन होती हे  
 तेसें सर्वे पोषध अष्टमी चतुर्दशी कड्याणकादिक पर्वतिथिको करे,  
 लेकिन विनापर्व सामान्य तिथिमें पोसह करणेका कथन कित

सिद्धातमें जी नहीं है, पर्युत्तणमें कल्पसूत्रकी नव वाचनाही करणी एसा वंघाण नहीं, अथकी जी करे । तथा आंखिलमें एक अन्नद्वय दुसरा उष्णजलद्रव्य यह दो द्रव्यही ग्रहण करणेका कथन है इस वास्ते जीव्हाका लोलपीपणे करके अधिक द्रव्य ग्रहण करणा नहिं चाहिये । तथा तरुण स्त्रीकुं मूलनायकजीकी पूजा करणी प्रमाणीक आचार्योंने मना किया है, कारण इस कालमें प्रार्थे स्त्रियोंमें अविवेकपणा तथा अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगट होना दीखरहा है, तथा आवककूं पञ्चस्काणमें पाणस्सलेणवाका पाठ कहणा युक्त नही, यह पाठ साधूका है, तथा दिनप्रति एक उपवाश पञ्चस्कावे, जो अधिक तपकी इच्छा होय तो अपने दिलमें धारणा रखे, लेकिन पञ्चस्काण नित्य सूर्योदयकी वखतही करे । तथा जिस धान्यकी दो फारु होय सो सब विद्वलकी गिणतीमें है, इस द्विद्वलधान्यकूं गोरस दही ठाठके साथ नक्षण नहिं करे, तथा मरण जन्मका सतक जिस घरमें होय उस घरका आहार पाणी साधू वर्जन करे, लेकिन संपूर्ण कुल गोत्रका सूतक नहीं माने, इत्यादि इहां संक्षेप मात्र खरतरकी सामाचारी लिखी है, अनेक ग्रंथ खरतर सामाचारीके है जिसमें सरल शुद्धोपयोगी समयसुंदरोपाध्याय विरचित सामाचारीशतक पंचांगी प्रमाण सूत्रोंके पाठ संयुक्त है सो अनेकांती बुद्धिवानोंने गुरुगमसें देखके धारणा ॥ यह खरतरगठमेंसे चोरासी गठ जया है, जिस वास्ते खरतरगठमें चोरासी नंदि है, उद्योतनसूरजी, नेमचंद्रसूरजी के निजशिष्य थे, इस उद्योतनसूरजीने ७३ विद्यार्थी शिष्य उर ८४ में निजशिष्य श्रीवर्द्धमानसूरिः एवं ७४ को आचार्यपद दिया, वर्द्धमानसूरिके शिष्य जिनेश्वरसूरजीने सं० १०७० को शालमें अणहिलपुरपत्तनमें चैत्यवाशी उपकेशी गणवालाकूं ज्ञान उर क्रिया